# अथ विज्ञापन

राम वाम दिशि वाम जानकी शोभाधाम रूप गुणखान ।
लषण दाहिनीदिशि गजानन शुचि जनकल्यान करनयह ध्यान ॥
ध्याय गजानन गुरुगोविंद पद शेश महेश सिद्धि आगार ।
वन्दि अनंदिन वहु गावत कहि ज्यहिविधि भयो ग्रंथअवतार ॥
सुयश उजागर गुण नागर वर विदित जहान मध्य मतिधाम ।
सुखद भार्गवकुल भास्कर इव नवलकिशोर नाम अभिराम ॥
शहर लखनऊ के वासी शुचि शील प्रताप तेजकी खानि ।
जक्त विदित है यंत्रालय ज्यहि लक्ष्मी अप्रमान अधिकानि ॥
इक दिन समया लाग आइ आगि जमक्यो महासघन दरबार ।
साचिव सलाही सनगाही सव बैठे निकट बुद्धि आगार ॥
वर्षा ऋतुको रह औसर वह नभ घन घटा छटा रहि छाय ।
वहां मुहल्ला महँ समया वहि आल्हाख्यो एक जन गाय ॥
कान शब्द सो परसे सवन के तब अस लगे फेरि वतलान ।
अब रुचि पुरुषन की आल्हा पर है वहु परत वानयह जान ॥
पै यह आल्हा जन गावत हैं ताको ना कछु ठीक ठिकान ।
लिख्यो न कतहूं क्यहू ग्रंथनमहँ ताकछु मिलत ठीक परमान ॥
छांड़ि नरायण यश नरयश को गावत सुनत नीक कछु नाहिं ।
इनको स्वारथ परमारथ उत कछु न दिखाय परत यहिमाहिं ॥
यतन चाहिये अस याको अव होवै यहाँ भांति को गान ।
पै यश होवै नारायण को जासे दुहूं ओर कल्यान ॥
अस विचारि कै उर मुंशी जी कीन्ह्यो अगाध हृदय महँ ध्यान ।
पुनि तदनंतर वहि औसर पर हँसि अस उचित वानय [illegible] ॥
एक ख्यात हम शोचा चित जो कछु अस उपाय [illegible] ।

तौ यहि आल्हाको गावत फिरि जगसे सहज माहिं उठिजाय ॥
इतको स्वारथ परमारथ उत गावत सुनत माहिं अभिराम ।
लोक सिधरिहैं द्वउ नीकी विधि ह्वैहै एक पंथ दुइ काम ॥
कथा मनोहर रामायणकी तुलसी दास कीनि निर्मान ।
जा महँ उत्तम यश रघुबर को जग को करन हार कल्यान ॥
जौने ढंग पर यहु आल्हा है सोई छंद बनाई जाय ।
फिरि मुद्रित कै यंत्रालय महँ जाहिर कीन जाय जग भाय ॥
सुनै सुनावै अरु गावै सब होवै जगत केर उपकार ।
यहि उपाय ते बढ़ि दूसर अरु कोई देखि परत नहिंयार ॥
मुंशीजी को यह सम्मत शुभ सबको हृदय माहिं प्रियलाग ।
तब वहि औसर पर मुंशी जी मोसन कह्यो सहित अनुराग ॥
यहि रामायण को विरचौ तुम आल्हा रीति प्रीति सरसाय ।
याहिके बदले महँ तुम कहँ हम मुद्रा देब पांच शत भाय ॥
यह अनुशासन श्रीमुंशीको मैं स्वइ लीन शीश पर धार ।
लग्यो बनावन रामायण को अपने ज्ञान बुद्धि अनुसार ॥
भयो न पूरण यह आल्हासब बीचहि हाल कीन असराम ।
स्वजन सुखारी उपकारी पर नवलकिशोर गये सुरधाम ॥
पुनि तदनंतर श्रीमुंशी के पूत सपूत बुद्धि आगार ।
सत मति पूरे द्युति रूरे अति सज्जन गुणिन मानदातार ॥
क्षमा छबीले युत शीले बहु दायक संत द्विजहि सत्कार ।
ज्ञान सरोवर श्री भार्गव कुल तामहँ अमलकमल अवतार ॥
प्राग नरायन सुखदायन अति तिन यह पूर कीनि सबकाम ।
जस अभिलाषा रह मुंशीकी तैसे भयो सकल इतमाम ॥
सप्तकाण्ड शुचि रामायण स्वइ पूरण यथायोग्य बनवाय ।
निज यंत्रालय महँ मुद्रित करि दीन्ह्यो जगत रामयश छाय ॥
मति समभाष्यो यह रघुपति यश जस कलुहती चित्तकीसाध ।
सुनैं सुनावैं जन गावैं जे ते मम क्षमा करैं अपराध ॥

सवैया। जानत काव्य न एकहु अंग न ढंगहै छंद प्रबंध बनाइबो।
है बल बुद्धि विवेक नहीं विधि जानत नाहिं न लोक रिझाइबो॥
संग लह्यों न कहूं गुणियानको बंदि न चातुरीको दरशाइबो।
राह बताय दई गुरु एक यथा मति गोबिंद को गुण गाइबो॥

( कविवंशतथानामग्रामवर्णन )

छंदककुभा

अवध देश महँ शुचि प्रदेश जाहिर उद्दामा। त्याहि अन्तर्गत बसत लसत प्रसवासी ग्रामा॥
चारि वर्ण मति रास बास जहँ करत घनेरा। धर्म धुरी शुभ कुरी शिव पुरी सम द्युति हेरा॥
सवैया। दक्षिण में सुर आपग राजत धारसो नाशत भारधराका।
पूरब कोण तड़ाग तटस्थ अनंदित मंदिर श्री दुरगाका॥
पश्चिम नंद अधीश औ उत्तर गोकुलनाथ धरे वरनाका।
मंदिर मंजु रमापति को सुलसै बिलसै माधि ग्राम के बांका॥
दोहा। तौन ग्राम अभिराम में बनो मोरहू धाम।
पुरिखन तहँ वर बास लिय जानि सुथल अभिराम॥

छंदककुभा

ललऊ नाम ललाम अहै प्रपितामहँ केरो। रामदीन मति बीन पितामह श्री शिवचेरो॥
भानुलाल बिशाल अहै मम पितुकर नामा। चंदीदीन प्रवीन मोर पितृव्य ललामा॥
अग्रगण्य जे भये मनीषिन महँ त्याहि पुरमें। श्रीमद्रामप्रसाद विबुध एकहि बुध कुरमें॥
तिनसे विद्यालह्यो अनूपम गुरू बनायो। श्रीमद्राम प्रसाद सुयश उज्ज्वल तहँ छायो॥
बंदीदीन सुनाम धर्‌यो गुरु मोर विचारी। विप्रबंश अबतंस दीक्षितास्पद अधिकारी॥
शिवनारायण गुरू मोर त्याहि थल विख्याता। संभव वंश त्रिपाठि विप्रकुल प्रवर कहाता॥
चारि वेद षटशास्त्र कथनमहँ जिन अतिशक्ती। जन अनंद व्रजचंद चरणकी हियबहुभक्ती॥
अष्टादशहु पुराण जासु जिह्वा पर छाजैं। काव्यमाहिं जनु कालिदास अस दूसरराजैं॥
गान विधान निधान चित्र एकही बनावैं। कथाकहनके समय द्वितिय व्यासहिसमभावैं॥
तिन दिय विद्यादान चरणसेवक शिशुजानी। परमोदार अपार बुद्धि श्री गुरु विज्ञानी॥
यह रामायण रची तासु पद पंकज दाया। भाषा छंद प्रबंध माहिं रघुपति यश गाया॥
भूल चूकलखि क्षमहिं दोष मतिमान सुजाना। हौं मैं अति निर्बुद्धि नहीं कविता कर ज्ञाना॥
दोहरा। संवत् शशि[१] शर[५] नंद[९] चंद[१] में भयो ग्रंथ अवतार।
पुनि गुण शायक नन्द चन्द में भई पूर्णता यार॥

मत्तसवैया

आको पिंगल महँ भाषत कहि मात्रिक मत्त सवैया नाम।
मात्रा इकतिस को इकपद है जानत छंद विज्ञ मति धाम॥

रीति यथावत लहि आल्हाकी वहि धारणा माहिं कियगान।
जासे गावहिं सब सज्जन जन करिकै साज बाज को ठान ॥
यह रामायण संपूरण करि जस मति दई शारदा माय।
प्रागनरायण की अनुमति लहि बंदीदीन बखान्यो गाय ॥
श्री रघुनंदन की कीरति यह जो कोउ पढ़ै सुनै मन लाय।
कलिमल नाशै परकाशै बुधि ऋधिसिधि बसैभौनत्यहिआय ॥
पर्व पर्वमहँ शुचि मानुष जो करि है श्रवण याहि धरि ध्यान।
पाप नशैहै सुर पुर पैहै ह्वैहै सदा तासु कल्यान ॥
पितृ श्राद्धमहँ जो सुनिहै यहि करि एकाग्र चित्त मतिमान।
मुक्ति होइहै त्यहि पितृन की बसिहैं जाय अमर अस्थान ॥
तन मन इन्द्रिन को पावन करि दिन महँ करै जौन यहिगान।
दिन कृत पातक त्यहि मानुषके विनशैं अवशि सत्यपरमान ॥
करै निशामहँ जो पातक नर औ यहि श्रवण करै मन लाय।
देर न लागै अघभागै त्यहि प्रापत होय सिद्धि कर आय ॥
विप्र जो बांचै यहि मंशाकरि होवै महा ज्ञान आगार।
सुनै जो भूपति यहि चितहितकरि लहैसो विजययुद्धअधिकार॥
नारि गर्भिणी जो सुनिहै यहि पैहै तनय सुष्टु मतिमान।
स्वर्ग मँगइया स्वर्गौ पैहैं जैहैं हर्षि देव अस्थान ॥
कन्या सुनिकै पति पैहै शुभ बंध्या अवशि पाइहै बाल।
संपति अर्थी संपति पैहै गैहै याहि जौन सब काल ॥
बुध्र पारायण जो बँचिहैं यहि वक्ता होयँ ज्ञान की खानि।
जो कोउ सुनि है यह राघव यश होइ है महा द्रव्य की दानि ॥
कामधेनु कहि यहि भाषत सब याके पढ़े होय अति ज्ञान।
कीरति बाढ़ै त्यहि दुनियाँ महँ होवै सब प्रकार कल्यान ॥

इति

( मसवासी निवासी पण्डित
बंदीदीन कवि )

# अथ श्रीविजयराघवखंडे

## बालकाण्डप्रारम्भः

सुमिरण ॥

मैं पदबन्दौं गणनायक के घायक विघन सघन खरिहान ।
दास सहायक सब लायक सो दायक बुधि विवेक विज्ञान ॥
अशुभ विनाशक परकाशक शुभ भासक सर्वकाल कल्यान ।
सुमति विलासक अरित्रासक विभु दासक देनहार वरदान ॥

स० क्षार करै दुखदोष पहार उदार महाश्रुति चार बतावत ।
मूस सवार अपार बली गुण पारन बंदि विशारद पावत ॥
देवन को सरदार गणाधिप सिद्धि अगार सदा कहलावत ।
ध्याय महेश कुमार ख्वई अवधेश कुमार कि कीरतिगावत ॥

सविधि मनावों पद ध्यावों तुव शंकर सदा शुभंकर नाम ।
पावों अभिमत बर गावों ज्यहि रामचरित्र चित्त अभिराम ॥
तुम आचारज यहि मानस के आयसु देहु हर्षि उर नाथ ।
छन्द प्रबंधित करिगावों त्यहि ग्रन्थ प्रपूर पन्थ तव हाथ ॥

स० चितमें नितमोद जगावनको ममता मदमोह भगावनको।
बहुव्याधि उपाधि नशावनको जगकेमगफेरि न आवनको॥
अभिराम अरामके पावनको मन भावन के गुण गावन को।
हम ध्यावन मारनशावनके द्वउ पावन पंकज पावनको॥

सुन्दर वानीसों बिनती करि ध्यावों तुम्हें भवानी माय।
अहो बखानी बरदानी अति भाषत वेद भेद बतलाय॥
विधि जगढालत हरिपालत त्यहि घालत शम्भु शक्ति तुवपाय।
यहै भरोसा धरि हिरदै तुव चाहत बन्दि राम गुण गाय॥

स० जाहि मनाय बनाय प्रपंच विरंचि रच्यो विरच्यो जगती को।
विष्णुकरैंपुनि लालन पालनपाय सहायअलच्यगतीको॥
शंकर सृष्टि सँहारत तावल हारत बंदि न एक रती को।
ध्यावतहौं त्यहि सारसतीको उदार मती श्रीपारवती को॥

देवि सरस्वति तुम का ध्यावों लावों हृदय माहिं शुभ ध्यान।
पावों उत्तम सिधि विद्या बुधि बिनय विवेक नेक वरदान॥
चहत थहावन मन भावन को सुयश अपार अमित विस्तार।
मैया नैया यह सेवक की तुमहीं खेय लगावहु पार॥

स० जासुकला अमला उर आवतही तमयावत होत नदारद।
छावत नेक विवेक विचार न लावत बार अपार कि पारद॥
गारद कै दुख दारद दूषण पूषण तुल्य प्रभा अधिकारद।
गावतनारद आदि बिशारद बंदिसदा हितकारद शारद॥

उत्तम पायक रघुनायक के लायक सब प्रकार हनुमान।
दास सहायक सुखदायक तुम घायक कुमति कुगति अज्ञान॥
राम सुयश के सुनवैया तुम सब दिन पवन कन्हैया यार।
बंदि गवैया आनन्दित त्यहि टारहु विघन उतारहु पार॥

स० हे हनुमन्त अनन्त बली जन बंदि बिनै उर अन्तर धारहु।
मारहु मोह मदादि विकार महातम भार अँध्यार निवारहु॥
सारहु दास कि आस दयाकरि आनिपरैस्बइ संकट टारहु।

गावत राम चरित्र उदार अपार समुद्र के पार उतारहु ॥
राम चरित्र अपार समुद्रहि चाहत मैं अति क्षुद्र तरैया।
आवत है न उपाय कछू करि पावत हौं न सहाय करैया ॥
है हथबाँसन पास भुजाबल झाँझरिहै अतिही मति नैया।
बंदि अनाथ को हाथगहौ अरु पार उतारहु यार खेवैया ॥
गुरू नरायन के पाँयन पर शिरधरि बिनय करौं सबिधान।
गावन चाहत गुण राघव को करहु सहाय दिव्य दै ज्ञान ॥
पुनिपग प्रणवौं वाल्मीकि के जिन किय रामचन्द्र गुणगान।
यहि भव सागर के उतरन को दीन बनाय दिव्य जल यान ॥
पुनिपद बंदौ तुलसिदास के जिन के राम नाम आधार।
कामधेनु इव रामायण रचि कीन्ह्यौं जगत केर उपकार ॥
संत महन्तन के पाँयन महँ बारम्बार करौं परणाम।
मोर मनोरथ परि पूरण हित आशिष देउ हर्षि जस नाम ॥
—स० सिद्ध असिद्ध प्रसिद्ध सुरासुर जीव चराचर हैं जगयावत।
भक्तअभक्त गुणी निगुणी सबके पदशीश नवायमनावत ॥
है न कछू म्वहिं बुद्धि भरोस परोस परे ठग सो घबरावत।
बंदिसहाय करौमन लाय यथामति कीरति रामकिगावत ॥
गायो शंकर जस गिरिजा ते औ खगपतिहि सुनायो काग।
याज्ञवल्क मुनि भरद्वाज ते कहिहों स्वइ सहित अनुराग ॥
श्री रघुनंदन पद बंदन करि लक्ष्मण भरत शत्रुहन ध्याय।
अति सुखदैया सिय मैया के करत प्रणाम माथ महिनाय ॥
ज्ञान बुद्धि नहिं कछु सेवक को चाहत करन स्वामि गुणगान।
बंदि मनोरथ परिपूरण हित हित सह हर्षि देहु बरदान ॥
पुनि २ सब के पद बंदन करि उर मुद धारिटारि दुख दंभ।
श्री मन भावन को पावन यश गावन चहत कहत आरंभ ॥
रुचि सह पूंछ्यो भरद्वाज जिमि मुनिवर याज्ञवल्क ढिगजाय।
प्रथमैं भाषत अभिलाषत स्वइ सुन्दर सिया राम यशगाय ॥

भक्त शिरोमणि भरद्वाज मुनि करैं प्रयाग राज महँ बास।
अतिशै प्रेमी प्रभुपायँन के सब दिन सुनै रामयश खास॥
परम तपस्वी अरु इंद्रिय जित दया निधान ज्ञानगुण खानि।
जिनके दर्शन ते आजौं लगि होत अपार दोष दुख हानि॥
माघ महीना महँ आवत जब सुंदर मकर राशि पर भानु।
सब जन आवततब मज्जन हित तीरथ पति पुनीत अस्थानु॥
दैत्य देवता नर किन्नर सब करैं त्रिवेणि माहिं असनान।
बेणी माधव के पाँयन की पूजन करैं धरैं उर ध्यान॥
करैं अछैबट के दर्शन पुनि भेंटैं हिय लगाय सुखपाय।
भरद्वाज के शुचि आश्रम में जुरैं समाज मुनिन की आय॥
न्हाय धोय कै तिरबेणी में पुनि सब करैं राम गुण गान।
ब्रह्म निरूपण की चर्चा बहु ज्ञान बिराग भक्ति को छान॥
लौकिक वैदिक की बातैं बहु औरौ धर्म कर्म की रीति।
सुनैं सुनावैं कहि गावैं सब पावैं अति अनंद सह प्रीति॥
एक महीना लग याही विधि सब कोउ तहां करै असनान।
अपने अपने घर जावैं पुनि उर मुद भरत धरत प्रभु ध्यान॥
साल साल प्रति यहि भांतिनते होय प्रयाग माहिं उतसाह।
एक महीना बसि तीरथ महँ पुनि निज घरन जाहिं मुनिनाह॥
एक समैया के अवसर पुनि मेला पत्यो मकर को आय।
आये मज्जन तब तीरथ महँ बहु मुनि आदि सिद्ध समुदाय॥
माघ महीना भरि रहिकै तहँ पुनि सब गये आपने धाम।
जाय न दीन्ह्यों याज्ञवल्क्य कहँ मुनिवर भरद्वाज जिन नाम॥
पायँ पखारे अति आदरसों आसन स्वच्छ लीन बैठाय।
करिकै पूजा विधि विधान सों पुनि अस बचन कह्यो हर्षाय॥
है इक संशय बड़ मोरे उर तुमसन कहौं नाथ सतिभाव।
तत्त्व वेदकर तुम जानत सब ज्ञान विराग बुद्धि दरियाव॥
लज्जा लागत त्यहि कहिबे महँ होय अकाज कहे बिन स्वामि।

नेक विवेकहि नहिं पावत उर गुरुसन किहे कपट अनुगामि ॥
अस बिचारिकै प्रभु हिरदैमहँ जाहिर करौं अपन अज्ञान।
त्यहि सुनि मनमहँ गुनि स्वामी पुनि उचित बुझाय करहु कल्यान॥
महिमा अतिशै राम नाम की सज्जन श्रुति पुराण कर गान।
जपत निरन्तर निज मानसमहँ प्रेम समेत शंभु भगवान॥
जीव चराचर हैं यावत जग चारिउ खानि माहिं मुनिराय।
सो तन त्यागेते काशीमहँ होत विशोक मुक्तिपद पाय॥
सोऊ महिमा प्रभु रामै की नाम सुनाय देत शिव कान।
कौन राम सो प्रभु पूंछौं त्वहिं कहहु बुझाय मोहिं भगवान॥
रामचंद्र इक सुत दशरथ के तिनकर चरित विदित संसार।
तिय वियोगते लहि भारी दुख रावण आदि कीन संहार॥
वई राम की प्रभु औरौ कउ जिनको सदा जपैं त्रिपुरारि।
भेद यथावत तुम जानत यह मोसन कहौ विवेक विचारि॥
मिटै हमारो भ्रम जौनी विधि सोई कथा कहहु विस्तारि।
सुनि यह बानी भरद्वाज की बोले याज्ञवल्क्य मुदधारि॥
रामचंद्र की प्रभुताई सब जाहिर तुम्हैं अहै भलिभांति।
मन क्रम बानीसों ज्ञानी मुनि तुम रघुनाथ भक्त अतिख्याति॥
हम लखिपाई चतुराई तुव चाहत सुनन राम गुण यार।
पूंछ्यो मोसन कहि ऐसी विधि जस कउ कहै मूढ़ शिशुधार॥
कथा मनोहर रघुनायक की सादर सुनौ तात मन लाय।
प्रीति तुम्हारी लखि भाषत मैं राखत कछु छिपाय नहिंभाय॥
महा मोह है यह महिषासुर रघुपति कथा कालिका जानु।
मारि पछारत हिय हारत नहिं निश्चय भरद्वाज मन मानु॥
सुखद चंद्रमाकी किरणन सम रघुपति कथा अमीरस खानि।
पियत सर्वदा त्यहि सज्जनचक सब दुखदोष होत हठि हानि॥
सुनौ यथावंत त्यहि आनँद सह करि एकाग्र चित्तधरि ध्यान।
ऐसेहि संशय शिवरानी किय तब यह कथा कीनि शिवगान॥

सोई मतिसम कहि भाषत मैं सुंदर उमा शंभु संवाद।
भोज्यहि कारण ज्यहि अवसरपर सुनिसुनिमिटै तुम्हारबिषाद॥
त्रेता युग में शिवशंकर प्रभु इक दिन गे अगस्त्य के पास।
सती भवानी रहें साथै महँ जगदम्बिका रूप गुणरास॥
लियोसहादर ऋषि आगेचलि आसन स्वच्छ बिठायोआनि।
पूजन कीन्ह्यों विधि विधानते शिव को विश्वनाथ अनुमानि॥
कथा यथामति ऋषि भाषी पुनि सुनी महेश परम सुखपाय।
भक्ति रामकी ऋषि पूंछ्यो स्वउ शंकर कही सही मन लाय॥
सुनत सुनावत रघुनायक गुण कछु दिन तहां रहे गिरिनाथ।
बिदा मांगिकै पुनि अगस्त्य सों हरघर चले सती लै साथ॥
तेही अवसर पर उदार हरि टारन हेत भूमि को भार।
भक्त उधारन खल मारन हित रघुकुल माहिं लीन अवतार॥
पिता बचनके प्रति पालन हित तजि सुखसाज राज सो राम।
बिचरत इतउत बनदण्डकमहँ नरइव करतचरित अभिराम॥
जात बिचारत हर हिरदै महँ पावों दरश कौन विधि हाय।
गुप्तरूप सों प्रभु आयो महि मोरे गये जानि सब जाय॥
क्षोभ समान्यो उर शंकर के पायो सती भेद नाहिं जांनि।
नैन लालची प्रभु दर्शन के मन महँ रहे महाडर ठानि॥
मीचु आपनी खल रावन ने माँगी रहै मनुज के हाथ।
बचन बिधाता मुख भाषे स्वइ सांचे कीन चहैं रघुनाथ॥
जाउँ सन्निकट नाहिं अवसर यहि तौ पछिताव रहै हिय माहिं।
यहि विधिशोचतजलमोचतदृग करत बनाव बनत कछुनाहिं॥
त्यही समइया पर रावण खल लैमारीच नीच को साथ।
करि छललायो हरि सीता को गीता सरिस जासु शुचिगाथ॥
प्रभुकी प्रभुता को जानत नहिं मानत नृप कुमार कर्तार।
ज्ञान न आनत कछु हिरदै महँ है अति होन हार बरियार॥
मारि कुरंगहि लघुबंधव सह आये ठाम माहिं जब राम।

सिय विन आश्रम लखि सूना तब दूना लग्यो शोकको धाम ॥
छाये आंशू कल नयनन महँ वैनन सकें चैन सह भाषि।
जागी उरमें विरहागी अति जाय न धीर पीर में राखि ॥
नर इव भाई रघुराई द्वउ खोजत ठाम ठाम प्रिय वाम।
डोलत इत उत घन जंगल में दीन मलीन पुरुष सम राम ॥

स० योग वियोगन शोग सँयोगन रोगन भोग कवौं कछु जाके।
राग विरागन लागत जामहँ जागत है न कछू भ्रम वाके ॥
रोषन धोष अदोषन दूषण पूषण तुल्यप्रभावर छाके।
बंदि निरंजन बाजि रहा जो विराजि रहा विरहा दुख ताके ॥

अद्भुत कौतुक यह राघवको जानहिं अति सुजान जन भाय।
परे मोहवश जे मूरुख खल ते हिय धरैं और कछु लाय ॥
रामचन्द्र को त्यहि अवसर पर नैन निहारि दीख त्रिपुरारि।
उपजा आनँद बहु हियरे महँ सो सुख कहत जात मतिहारि ॥
सुयश उजागर छविसागर को शिवभरि नैन दीख सुखपाय।
जानि कुअवसर श्री रघुबर से कीनि न मुलाकाति ढिगजाय ॥
जय मन भावन जगपावन प्रभु जय सच्चिदानन्द भगवान।
काम नशावन अस भाषणकरि चलिभे तुरत धारि उरध्यान ॥
चले जात शिवं शिवरानी सह पुलकित गात तात हर्षात।
महा मग्नमन नहिं चेतन तन मुखते कहि न जात कछुबात ॥
दशा बिलोकत सो शंकर की भा संदेह सती उर माहिं।
भ्रमतम बाढ़ो अति गाढ़ोतव समुझत क्यहुप्रकार मननाहिं ॥
जगत पूज्य ये शिवशंकर प्रभु सदा अनाथ बिश्व के नाथ।
सुरमुनि यावत नर दुनियां महँ सब कोउ इन्हें नवावत माथ ॥
राज कुमारहि तिन बंद्यो कहि जय सच्चिदानंद परधाम।
लखि त्यहि शोभामनलोभाअति रतिसह जपत जातमुखनाम ॥
ब्रह्मअजन्मा है व्यापक जो ताके भेद खेद कछु नाहिं।
देह गेह नहिं त्यहि ईश्वर के माया रहित वेद बत लाहिं ॥

सो क्यहि कारण नर देही धरि डोलै ठाम ठाम में आम ।
भटको घूमैं बनजंगल में अटको कहा तासु को काम ॥
यदि सुरकारज के साधक प्रभु नरतनु धरे विष्णुये आयँ ।
अंतरयामी स्वउ नामी अति हैं सर्वज्ञ शम्भु की नायँ ॥
सो अज्ञानी इवज्ञानी प्रभु क्यों तिय खोज रहे बन माहिं ।
क्यहि बिधि होवै निर्द्धारण यह कारण कछु बुझात है नाहिं ॥
होय न झूठी शिव वाणी पुनि वउ सर्वज्ञ तज्ञ सब भांति ।
ठानी संशय शिवरानी अस आनी हिय न बोधकी पांति ॥
कियो भवानी नाहिं जाहिर त्यहि यद्यपि तदपि लीनशिवजानि ।
लगे बुझावन जगदम्बाको कहि मृदुबानि शम्भु गुणखानि ॥
प्राकृत तिरियन की नाईं में सती सुभाव लीन तुव जानि ।
मिथ्या संशय अस हिरदै महँ कबहुँ न धरौ बानि मम मानि ॥
कथा सुनाई ज्यहि स्वामीकी मोकहँ ऋषि अगस्त्य बहुभाषि ।
भक्ति बताई मैं कुम्भज को भाषत वेद सत्य ज्यहि साखि ॥
स्वइ सुखदाई रघुराई ये हमरे इष्ट देव भगवान ।
हैं सब देवत पग सेवत ज्यहि धारत हृदय माहिं मुनि ध्यान ॥

स० वेद अखेद सदा गुण गावत पावत भेद न रंचक जाको ।
सिद्ध समाधिलगावतध्यावतलावतध्यानअमानहै ताको ॥
ब्रह्मनिरंजन राम उदार सो भार उतारनहार धरा को ।
भक्त उधारन मारन को खल धारत हैं अवतार नराको ॥

बहुविधि कहि कै समुझायो शिव आयो सती हिये नहिं ज्ञान ।
जानि ब्यतिक्रम यह मायाको पुनि असकह्यो शंभु भगवान ॥
गयो न शिक्षाते संशय यदि तौ किन लउपरिक्षा जाय ।
होय तुम्हारी तिय इच्छा जो सोई उपाय करौ हरषाय ॥
हौं बटछाहीं महँ बैठो मैं जब तक तुम न आइहौ फेरि ।
मिटै मोह भ्रम यह जौनी विधि सोई यतन करौ हित हेरि ॥
पाय सुआयसु शिव शंकर को गमनी सती तहां ते धाय ।

शोचन लागीं तब मारग महँ करौं उपाय कौन तहँ जाय ॥
उत अनुमानत मन शंकर अस होय न सती केर कल्यान ।
बोध न आयो समुझायो मम ठन्यो विरंचि व्यतिक्रम ठान ॥

स० केतक धाय उपाय करै कोउ जाय वृथा सब रायबताये ।
माय प्रपंच दिखाय बली बहु नित्तहि चित्त रहै भरमाये ॥
कौन गती कुमती जनकी बहु धीरयती विरती ठगिखाये ।
तर्कतमाम धरै न सरै कछु राम रचै सोबचै न बचाये ॥

गुनि अस मन मा पुनि शंकर प्रभु लागे हृदैजपन हरिनाम ।
जाय पहूंची जगदम्बा उत हैं सुखधाम राम ज्यहि ठाम ॥
हृदय चिंतवन करि नीकी विधि धरि सियरूप सहित उत्साह ।
चलीं अगारी ह्वै वाही मग आवत जौन राह सुर नाह ॥
कपट वेष लखि शिवरानी को लक्ष्मण हृदय गई भ्रम छाय ।
भेद बतायो नहिं भाई ते जानत अति प्रभाव मुनिराय ॥
रामहुँ जान्यो अनुमान्यो सो जो छल कीन सती महरानि ।
अन्तर्यामी सुर स्वामी ते छलकरि कैंन लीन फल हानि ॥
अति बलतोल्यो निज मायाको बोल्यो बिहँसि राम सुखधाम ।
नमस्कार करि मति उदार हरि पिता समेत लीन निज नाम ॥
गोय न राख्यो फिरि भाख्यो अस छांड्यो सती शंभु केहिठाम ।
फिरौ अकेली क्यहि कारणं इत जंगल माहँ काह तुव काम ॥
गूढ़बार्ता यह राघव की सुनि कै सती गईं सरमाय ।
ज्वाब न दीन्ह्यों भयं कीन्ह्यों उरशोचतचलीं जहां गिरिराय ॥
कहो न मान्यो मैं शंकर को निज अज्ञान राम पहँ आनि ।
वृथा बेसाह्यों बड़ि आपतिको अब दिखराय परत बड़िहानि ॥
काह बतैहौं अब शंकर को आवत कछु न शोचि हिय बात ।
बाढ़ो गाढ़ो दुख औसर त्यहि धीर न धरत गात अकुलात ॥
सती अतीको दुख पायो यह पायो जानि राम रघुराय ।
आपनि महिमा करि जाहिर कछु मगमें सतिहि दीनि दिखराय ॥

सती तमाशा तब दीख्यो यक मारग माहिं जात मुनिराय ।
जात अगारी वहि रस्ता महँ सीता सहित राम द्वउ भाय ॥
पाछे चितवा तौ देखा पुनि सह सिय लषण राम छवि धाम ।
भई भवानी संदेहित अति कौतुक अजब देखि वहि ठाम ॥
दृष्टि पसारें पुनि जौनी दिशि तौनी ओर बिराजे राम ।
सिद्ध मुनीश्वर अरु देवतसब सेवत चरण कमल अभिराम ॥
विष्णु विधाता शिव देखे बहु इक ते एक अमित परभाव ।
विविध बेष के सुर देखे सब सेवत सहज भाव रघुराव ॥
सती सावित्री औ लक्ष्मी बहु लखी अनूपरूप मुनिराय ।
सुर ब्रह्मादिक ज्यहि वेषन महँ तस उनहुन के परे दिखाय ॥
जितने रघुपति अवलोके तहँ तितने देव शक्ति निज साथ ।
जीव चराचर जग यावत ते निरखे प्रभुहि नवावत माथ ॥
धरे अनेकन तन देउतागन प्रभुकी सेव करत मनलाय ।
भांति अनेकनके जीवहु सब देखे तहां भवानी माय ॥
सीता लक्ष्मण सह देखे बहु शोभा धाम राम भगवान ।
वेष सवाँरे सब एकै सम दीख न सती रूप प्रभु आन ॥
सोई लक्ष्मण रामचन्द्र स्वइ स्वइ जानकी एक सम आहिं ।
देखि भवानी भय आनी बहु बैठीं नैन मूंदि मग माहिं ॥
रहीं न तनकौ सुधि देही की कांपत गात मनौ तरु पात ।
नैन उघार्‍यो कछु बेरा महँ फेरि न कुछौ तहाँ दिखरात ॥
चलीं तहां ते शिवशंकर ढिग पुनि पुनि शीश राम पद नाय ।
इतै हकीकति अस बीतति भै उतकी दशा सुनौ मुनिराय ॥
आय पहूँचीं जब अंतिक महँ पूंछी बिहँसि शम्भु कुशलात ।
लिह्यो परिक्षा तुम कौनी विधि मोसन कहौ सत्य सब बात ॥
सती समुझिकै प्रभु प्रभावको जो कछु चरित कीन तहँजाय ।
तौन छिपायो शिवशंकर ते भय बश लगीं झूठ बतलाय ॥
लिह्यौं परिक्षा नाहिं स्वामी कछु किह्यों प्रणाम तुम्हारिहिनायँ ।

झूठ न होवै जो भाष्यो तुम मोरे मन प्रतीति अस आयें ॥
ध्यान धारिकै तब देख्यो शिव कर्तबलीनि सती की जानि।
फिरि प्रभु माया को नाया शिर सतिहि कहाइ झूठ जैं बानि ॥
हृदय विचारत तब शंकर अस भावी महा होत बलवान।
जो कछु इच्छा नारायण की होवै स्वई सत्य नहिं आन ॥
बेष सतीने सियको धास्यो यहि हित शम्भु बहुत बिलखान।
भाव भवानी में आनौं जो तौ अब मिटै भक्ति पंथान ॥
बढ़ो प्रेम सो नहिं जावै तजि कीन्हें प्रेम होय बड़ पाप।
करत न जाहिर शिवशंकर कछु हियमें भयो अधिक संताप ॥
पुनि शिरनायो प्रभु पायँ न महँ कीन्ह्यों हृदय माहिं शुभध्यान।
रहे विचारत द्वै घटिका लग फिरि अस कीन लीन अनुमान ॥
सतिहि न भेंटौं यहि तनमा अब नातरु भक्ति भंग ह्वै जाय।
कीन संकलप दृढ़ मनमा अस पुनि घर चले जपत रघुराय ॥
जानि संकलप अस शंकर को नभसुर गिरा भई तत काल।
भक्ति दृढ़ायो भलिशंकर तुम जै गुण ज्ञानआल शशिभाल ॥
तुम विन ऐसो प्रण ठानैको समरथ राम भक्त भगवान।
धन्य तुम्हारे पुरुषारथको है धनि धन्य तुम्हारो ज्ञान ॥
सती सयानी नभवानी सुनि विस्मय करन लगीं मन माहिं।
सकुचत पूछ्यो पुनि शंकरते का प्रण कीन नाथ यहि ठाहिं ॥
मोहिं बतावो कहिगावो प्रभु दीन दयाल सत्य के धाम।
सुनि असबानी शिवरानी की कछू न कह्यो काम के बाम ॥
सती विचास्यो तब हिरदै मा शिव सर्वज्ञ लीन सब जानि।
मैं छल कीन्ह्यों जग स्वामी ते सहज अयानि नारि हठ ठानि ॥
यहिहित त्याग्यो म्वहिं स्वामीने कारणद्वितिय और कछु नाहिं।
यह अनुमानत गति जानत अति बाढ्यो शोच सती उर माहिं ॥

स० प्रीतिकिरीति प्रतीतिकरौ उरनीति पुनीति यहै बतलावत।
आवतहै अनुमान यही मन संत सुजान सही कहि गावत ॥

पानि मिलावत दूधबिकै सम जानिनपावत ज्ञानिथहावत ।
रंचपरे छलचूक त्यहीमहँ भिन्नकराय रसौ विनशावत ॥

सती विसूरें बहु हिरदै में करणी शोचि शोचि पछितायँ ।
ऐसिउ आपति के पाये ते पापी प्राण निसरि नहिं जायँ ॥
कृपासिंधु शिव सब जान्यो यह पै गंभीर धीर मन माहिं ।
मौन सिधारी त्यहि कारण ते दूषण मोर बतावत नाहिं ॥
लख्यो भवानी शिवशंकररुख जान्यो अवशि दीन म्वहिंत्यागि ।
अति अकुलानी तब हिरदै में चिंता अमित चित्तगै पागि ॥
पाप आपने के समुझत ते भाषत बनै नाहिं कछु बात ।
परै न साबित पग मारग महँ सुलगै अवाँ सरिस सबगात ॥
सती सशंकित लखि शंकर प्रभु लागे कहन नवल इतिहास ।
कछुक अबेरा महँ चलिकै पुनि पहुंचे विश्वनाथ कैलास ॥
तहां आपनो प्रणसुमिरण करि रघुपति भक्त शंभु भगवान ।
करि कमलासन तरु बरगद तर बैठे हृदय धारि कै ध्यान ॥
रूप सँभारयो स्वाभाविक शिव प्राणायाम केर आधार ।
श्वास साधिकै निरुपाधित सो लागि समाधि अखण्डअपार ॥
शोच भवानी के बाढ्यो तब अकिले बसन लगीं कैलास ।
भेदन कोऊ कछु जानै यह बीतत युगसमान दिनखास ॥
याही शोचत नित बीतै दिन कब यह नाश होय दुख म्वार ।
करणी अपनी को पायों फल दीन्ह्यों उचित दण्ड कर्तार ॥
कीन निरादर मैं रघुपति को मान्यों मृषा कंत की बानि ।
याते मोको सब वाजिब है यावत मिलै हानि औ ग्लानि ॥
अब न विधाता त्वहिं चाहिय अस शंकर विमुख रहैं ममप्रान ।
असकहि मनमा संकोचित ह्वै सुमिरन लगीं राम भगवान ॥

स० जो प्रभु दीनदयाल महादुखजाल विघालकहै कहलावत ।
नारद शारद शेष विशारद वेद अखेद सुकीरति गावत ॥
तौकिनमोरिविनैसुनिकान विनिन्दित प्राननकोविनशावत ।

छूटत हानि गलानिते जामहँ जीकलपावत ते कलपावत ॥

प्रीति जो मोरी शिव पायँनमें मन क्रम बचन सत्य तिहुँकाल ।
तौ सम दर्शी प्रभु चाहत यह मांगे मिलै मीचु अबहाल ॥
दुखित भवानी यहि भांतिन बहु दारुण विपति कहीना जाय ।
राति न निद्रा दिन भोजन नहिं अतिशै शोचिशोचि पछिताय ॥
सहस सतासी गत संबत में तब शिवशंकर तजी समाधि ।
इतने औसर के भीतर महँ पाई सती मातु बहु व्याधि ॥
सुमिरण लागे रामनाम शिव शब्दसो पस्यो सती के कान ।
तब यह जान्यो मन अपने मा जागे महादेव भगवान ॥
जाय सन्निकट शिर नायो अरु कीन्ह्यों हाथ जोरि परणाम ।
सन्मुख आसन दैआनँद सों सतिहि विठाय लीन भगधाम ॥
कथा मनोहर सिय सोहरकी लागे कहन प्रेम उपजाय ।
तौने अवसर पर कायम भे भूपति दक्ष प्रजापति राय ॥
दीख्यो दक्षहि सब लायक विधि नायक प्रजापतिन कोकीन ।
दक्षहु उत्तम पद पायो जब तब अभिमान हृदय धरि लीन ॥
नहिं कोउ जन्म्यों अस दुनियाँमें प्रभुता पाय जाहि मदनाहिं ।
कौन चलावै जननीचनकी जब अस होतं देवतन माहिं ॥
दक्ष बुलायो तब मुनियन को लागे करन बड़ी बहु याग ।
नेउता दीन्ह्यों उन देवन को पावत रहे जौन मख भाग ॥
चारन किन्नर अरु विद्याधर यावत सिद्ध नाग गंधर्व ।
छांड़ि विधाता हरिशंकर को बधुअन सहित चले सुरसर्व ॥
सती निहास्यो तब अंबर में जात उड़ात यान अप्रमान ।
गावैं सुरतिय स्वर छावैं कल छूटैं सुनत मुनिन के ध्यान ॥
कारण पूंछ्यो यह शंकर सों तिन सब हाल दीन बतलाय ।
पिता तुम्हारे मख कीन्ह्यों है तहँ ये रहे देव सब जाय ॥
पितायज्ञ सुनि आनंदित ह्वै कीन्ह्यों सती हृदय असख्याल ।
देहिं जो आयसु शिव शंकर तौ पितु घर रहौं जाय कछुकाल ॥

यही बहाने ते औसर कछु गुजरै पिता भवन में जाय ।
दुःख समैया में मैयाअस उर में रहीं ख्याल दौड़ाय ॥
पति परित्यागे को भारी दुख ताते शोचि २ रहिजायँ ।
अपने दूषण को चिंतन कै शिवते कहत माहिं सरमायँ ॥
धरि उर धीरज कहि भाष्यो पुनि भय संकोच प्रेम युत बानि ।
दृष्टि न जोरैं शिवसन्मुख में अहै समानि हृदय में ग्लानि ॥
है पितुघर में यहि औसरपर स्वामी ठनो घनो उतसाह ।
अज्ञा पाऊं तौ जाऊं मैं देखन चरित तौन तहँ नाह ॥
तब यह भाष्यो शिवशंकर ने शोचिउ सती नीकि तुम बात ।
दक्ष निमंत्रण पठवायो नहिं अनुचित यही एक दिखरात ॥
और बोलायो सब कन्यन को अकिले तुम्हें दीन बिसराय ।
अमरष मोते कछु मानत हैं कारण सुनौ तासु मन लाय ॥
यकदिन ब्रह्माकी संसदि में हमऔ विष्णु सहित सुर भ्झारि ।
बैठ यथोचित अस्थानन में जो सुर जहां केर अधिकारि ॥
आय पहूंचे त्यहि संसदि में तौलगि दक्ष तुम्हारे बाप ।
भये देवता उठि ठाढ़े सब जानि प्रजेश दक्ष की थाप ॥
तीनि देवता हम ब्रह्मा हरि ये नहिं उठे स्वआसन त्यागि ।
दक्षहि नीको यह लाग्यो ना जाग्यो हृदय क्रोध जिमि आगि ॥
बुरा मानिगे वहि अवसर ते लीन्ह्यों बैरभाव उरठानि ।
बिना बुलाये तुम जैहौ तौ पैहौ महा ग्लानि औ हानि ॥
कानि नशैहौ प्रभुताई की खैहौ धोष लेउ मनमानि ।
आखिर ह्वै हौ फिरि आपति वश कहौं भवानि सत्य यह बानि ॥
यद्यपि वाजिब मत याहू है गुरु पितु मित्र स्वामि औ भाय ।
आय परेते कछु कारज के इन घर बिना बोलाये जाय ॥
तद्यपि अमरष जहँ मानै कोउ होय न तहां गये कल्यान ।
यहि विधि शंभू समझायो बहु आयो सती हिये नाहिं ज्ञान ॥
फिरि असभाष्यो त्रिपुरारी ने जाहु जो बिना बोलाये धाम ।

हमरे मनमातौ आवत अस है यह अवशि नकारो काम ॥
बहुत भांति ते कहिदेखा शिव मानी सती बात इक नाहिं।
बिदादई कै तब शंकर ने दै गण चारि मुख्य सँग माहिं ॥
चलि जगदम्बा गिरि ऊपरते पहुंचीं पिता भवन में जाय।
कथा अपूरब त्यहि औसर की सुनिये भरद्वाज मन लाय ॥
दक्ष त्रास ते शिवरानी को काहु न कछू कीन सन्मान।
मिली सहोदर ते माता इक बहिनी लगीं देखि मुसक्यान ॥
खैर कुशलता कछु पूंछीना उन के बाप दक्ष महराज।
सतिहि विलोकत अति क्रोधितभे इनको कौन भौनमम काज ॥
सती निहार्यो तब यज्ञस्थल कतहुं न दीख शंभु को भाग।
पिता आपने को अनुचित यह कर्म बिलोकि नीक नाहिं लाग ॥
तब सुधि आई उन बातन की जो कछु कह्यो रहै शिवनाह।
देखि निरादर प्रभुअपने को भो बहु सती हृदय में दाह ॥
पाछिलि विपदा अस व्यापीना जस यह भयो हृदय दुखठान।
यद्यपि दारुण दुख नाना जग सबते कठिन जाति अपमान ॥
क्रोध समान्यो हिय शोचत यह कहि बहु भांति सुझायोमातु।
शंभु निरादर के दीखेते हिय में धीर धरो नहिं जातु ॥
नैन तिरीछे करि ताही क्षण हठिकै सकल सभाको डाटि।
क्रोधित बैनन सों बोलीं तब अति रिस गई हृदय में पाटि ॥
सुनौ मंत्रियो अरु मुनियो सब यावत अहौ सभाके माहिं।
शंकर निन्दा जिन कीन्ही है ते फल नीक पाइ हैं नाहिं ॥
पितौ हमारे पछितैहैं बहु जिन यह कीन शंभु अपमान।
इन्हैं वाजिबी अस चाहियना भे अभिमान वश्य अज्ञान ॥
शंकर श्रीपति औ संतन की निन्दा होति होय ज्यहि ठाम।
तहँ पर करिबो अस वाजिब है भाषत श्रुतिपुराण यह आम ॥
काटै रसना वहि निन्दक की जो बल अपन चलै वहि ठायँ।
नांतरु कानन में अँगुरी दै तुरतै त्यागि तौन थल जायँ ॥

सब सुखराशी अविनाशी शिव सब को करनहार कल्यान।
पिता दुष्ट मति त्यहि निंदत है ह्वै अभिमान वश्य अज्ञान॥
दक्ष बीज ते तन संभव यह तजिहौं अवशि आजु यहि ठाम।
निन्दालखिहौं नहिं शंकर की निश्चय यही उचित परिणाम॥
शोचि भवानी अस हिरदै में धरिकै शंभु पगन में ध्यान।
योग अग्निसों तनु जार्‌यो निज जहँ वह रह्यो यज्ञ अस्थान॥
श्रीजगदम्बा के जरतै खन हाहाकार भयो मख माहिं।
भये सशंकित सुर यावत तहँ भो यह काम उचित इतनाहिं॥
सुनौ हकीकति शिव दूतन की जे उत गये सती के साथ।
तज्यो भवानी तनु सुनतै यह पीटन लगे माथ द्वउ हाथ॥
आय पहूंचे मख मण्डल महँ लागे करन अमित उतपात।
मखकी सामा उत यावत सब चूरण कीनि लात की घात॥
रक्षा कीन्ह्यौं भृगुनायक कछु दूतन शांतकीन समुझाय।
भयो अगारी फिरि कौतुक जो सुनिये भरद्वाज मनलाय॥
तहँ उपस्थितरहैं नारद मुनि तिन सब दीख यज्ञ को हाल।
ते कैलासहि चलि आये पुनि जहँ पर रहैं स्वामि शशिभाल॥
आवत दीख्यो शिवनारद को उठिकै मिले मोद सरसाय।
लाय सहादर बैठार्‌यो पुनि अपने निकट प्रीति सहभाय॥
पूंछि कुशलता शिवशंकरने फिरि अस कह्यो भाषि मृदुबानि।
कहँते आवत यहि अवसर तुम अहो मुनीश महागुणखानि॥
बुद्धि बिशारद मुनि नारद तब शिवसों कहन लगे असहाल।
दक्षयज्ञ ते मैं आवत हौं यहि क्षन अहो चंद्रधर भाल॥
हाल न मालुम कछु रावर को उत भो आजु महाउतपात।
सती भवानी ने क्रोधित ह्वै जार्‌यो यज्ञ बीच निजगात॥
कारण याको सुनि लीजै प्रभु मैं सब अबहिं देत बतलाय।
गईं भवानी चलि इतते जब पहुंचीं पिताभवन में जाय॥
बात न पूंछी तहँ काहूने अकिले मिलीं प्रेम सों माय।

देखि निरादर इमि आपन तहँ प्रथमें हृदय गईं रिसि आय ॥
जाय बिलोक्यो पुनि यज्ञस्थल तहां न दीख तुम्हारो भाग।
दूसर निन्दा सुनि राउर की अतिशै क्रोध सती को लाग ॥
याही कारण ते स्वामी उत दीन्ह्यो सती अपन तनजारि।
गणों तुम्हारे तहँ क्रोधित भे काढ्यो तिन्हैं यज्ञ ते मारि ॥
देर न धरिये अबयामें प्रभु करिये कछु उपाय त्रिपुरारि।
दण्ड दीजिये उन दुष्टन को मानिय इतनी बात हमारि ॥
सुनी कैफियत यह शंकर जब नख शिख पूरि गई रिस भ्रात।
छाय लालरी गै नैनन मा लगे चबाय ओंठ धरि दांत ॥
प्रलय काल में जस धारत शिव रुद्र स्वरूप महा बिकराल।
तैसियहालति वहि समया पर प्रापत भई आय खगपाल ॥
क्रोध संभारे नहिं सँभस्यो तब भुइँ महँ जटा दीन फटकारि।
निसस्यो ताते गण तुरतै इक अति बिकराल रूपभयकारि ॥
सहजे देखत डरलागै ज्यहि है त्यहि वीरभद्र अस नाम।
आय सामुहें सो ठाढ़ो भो कीन्हेसि हाथ जोरि परणाम ॥
काह आज्ञाहै स्वामी की सो मैं करों तुरत धरि माथ।
सुनि अस बानी बीरभद्र की बोले तबहिं गौरिके नाथ ॥
देर न लावो चलि जावो तुम अबहीं दुष्ट दक्ष के धाम।
तनक मुलाहिजा तहँ कीन्ह्योंना कीन्ह्यों कहो मोर यहकाम ॥
शीश काटि कै वहि पापी को दीन्ह्यों अग्नि कुण्ड में डारि।
भलकै मास्यो फिरि उनहुँन को यावत तहां यज्ञ अधिकारि ॥
यज्ञ विध्वंस्यो सब आछी विधि मेल्यो धूरि माहिं सामान।
बचै न एको विनमारे तहँ इतना वचन करौ परमान ॥
सुनि अस भाषण शिव शंकर को गण वह महा भयंकर गात।
डगस्यो तुरतै गिरि ऊपरते लैकै भूत प्रेत बहु साथ ॥
दशा को वरणै वहि सैनाकी निरखत प्रान जाय कढ़िभाय।
कालहु भागै भयलागै उर गनती कहा और की आय ॥

चले भयंकर तनधारन करि अगणित भूत प्रेत बैताल।
लाले काले पट धारे कोउ डारे हृदय आंत की माल॥
मनुज खोपरी यक हाथे महँ पीवत रुधिर बजावत गाल।
गर्जत बादर सम उच्चस्वर कादर भगें देखि तत काल॥
धारे मूसरु कोउ काँधे महँ बाँधे फेंट पेट महँ सांप।
गदा घुमावत कोउआवत है अंगन छपी रुधिर की छाप॥
शूल सुधारे कोउ हाथे महँ माथे माहिं लगाये राख।
नैन रँगाये दोउ शोणित से गावत जात बजावत कांख॥
शोभा सबरी कहि गावै को पावै कहां इतो बड़ ज्ञान।
देर न लाये चलि आये सब जहँ पर रहै यज्ञ अस्थान॥
पहिले अउतै वीरभद्र ने पकर्यो हुमकि दक्ष के बार।
पुनि त्रिशूलते शिरकाट्यो अरु दीन्ह्यों अग्नि कुण्ड में डार॥
बिगरी सैना तब प्रेतन की लागी करन महा उतपात।
धरि धरि झोंटा सुर मुनियन को मार्यो बहुत लात की घात॥
डाढ़ी नोच्यो भृगुनायक की घूंसन पकै दीन सब गात।
यावत सुर मुनि उत प्रापत रहैं एकन बच्यो मारु विन भ्रात॥
मारि निकार्यो सब विप्रन को दै दक्षिणा मुष्टिका लात।
भल विध्वंस्यो पुनि यज्ञस्थल देर न लगी बात की बात॥
आये जे कोउ न्योतहरी उत भागे सकल हिये भय खाय।
शंकर निन्दा को वाजिब फल सब को मिल्यो तहां मुनिराय॥
देत हजारन नर गारी तहँ कीन्ह्यों दक्ष नीक नाहिं काम।
निन्दा कीन्हे शिव शंकर की निश्चय यही होत परिणाम॥
इतै हकीकति असि बीतति भै सुनिये अग्र चरित मुनिराय।
भागे देउता भय पागे जे ते विधि निकट पहूँचे जाय॥
भाषि सुनायो सब आछी विधि जो इत भयो यज्ञ को हाल।
मिल्यो दक्षिणा बतलायो सो गायो शंभु गणन को ख्याल॥
कही दुर्दशा सब दक्षो की अपनिउँ देह दीनि दिखराय।

लागे मुका शिव दूतन के सबरे अंग रहे उसुआय ॥
सुनी कैफियत यह ब्रह्मै सब तब देउतन ते कह्यो बुझाय।
निन्दा कीन्ह्यों उत शंकर की तुम सब धर्म कर्म बिसराय ॥
भाग न राख्यो शिव शंकर को दक्षहु हृदय कीन अभिमान।
बैर बेसाह्यो जगनायक ते जो सब सुरन माहिं परधान ॥
तैसै वाजिब फल पायो सब आयो मोहिं सुनावन काह।
यहू ते अधिकी फल पैहौ अब रोइहौ राह राह धरि धाह ॥
सुनि अस बानी बिधि ज्ञानी की सुरमुनि हिये महा भयखाय।
हाथ जोरि कै पुनि भाषत भे करिये कछु उपाय जगराय ॥
दोष हमारो मिटिजावै ज्यहि आवै अब न ब्याधि कछु पास।
सुनि अस भाषण सुरमुनियनको बोले पुनि बिरंचि मतिरास ॥
और यतन ते बरिऐहौ ना पैहौ खैर एक विधि भाय।
विनय सुनावो शिव शंकर को आतुर चरण शरण में जाय ॥
जाउन ऐसे भय लावो जो तौ मैं चलौं तुम्हारे साथ।
आरत बानी सुनि दूषण सब करि हैं क्षमा उमा के नाथ ॥
कहि असबानी मुनि देवनते पुनि विधि हृदय शोचि ततकाल।
डगरे सगरे लै साथै महँ जहँ कैलास बास शशि भाल ॥
देर न लाये चलि आये सब जहँ सुखरास मेरु कैलास।
शोभा तहँ की कहिगावै को जहँ पर सदा शंभु को बास ॥
चारिसै योजन को ऊंचा अरु योजन तीनि शतक फैलाव।
अगणित खानी मणि रतनन की दिव्य प्रकाश होत सब ठावँ ॥
ताल तलैया बहु सोहैं तहँ झरना झरैं बारि सुख कारि।
खग मृग डोलैं कल्लोलैं बहु बोलैं मधुर बानि अति प्यारि ॥
अंबुज फूले बहु रंगन के भूले भवँर करैं गुंजार।
देखत भूले मन मुनियन के तब कह दशा और की यार ॥
बात सुगंधित के झूंकन सों श्रम हरिजात गात को आत।
सिद्ध गंधरब अरु विद्याधर करत बिहार तहां दिन रात ॥

वृक्ष अपूरब तहँ बरगद को ऊंचो कोस चारिसै क्यार ।
अहैंबिराजे त्यहि छाया में आसन किये सती भर्तार ॥
इकदिशि बैठे सनकादिक हैं ज्ञान अगार ब्रह्म आधार ।
कथा मनोहर सिय सोहर की भाषत शंभु सुनत सो यार ॥
जाय पहूंचे चतुरानन तहँ लीन्हे देव मुनिन को साथ ।
हाथ जोरिकै शिव शंकर को कियो प्रणाम नाय महि माथ ॥
पुनि सब देवन अरु मुनियनने कीन्ह्यों शम्भु पगन परणाम ।
आशिष दैकै तब शंकर ने विधिहिं बिठाय लीन वहि ठाम ॥
पाय यथोचित अस्थानन को बैठे अपर देव मुनि झारि ।
ह्वै आनंदित पुनि ब्रह्मा ते पूछी खैर कुशल त्रिपुरारि ॥
कौने कारण चलि आयो इत मो ढिग कहौ तौन सब हाल ।
सुनि अस बानी शिवज्ञानी की कह्यो बिरंचि नाय पद भाल ॥
दुष्ट दक्षने मखठानी ती ह्वै अभिमान वश्य अज्ञान ।
भाग न राख्यो तहँ राउर को औ सब भांति कीन अपमान ॥
सती भवानी तनत्याग्यो तहँ रिस उपजाय हेतु यह पाय ।
जाय तुम्हारे पुनि दूतन ने मख विध्वंस कीन गिरि राय ॥
शीश काटि कै वहि पापी को दीन्ह्यों अग्नि कुण्ड में डारि ।
भलकै मार्यो सुर मुनियन को जे तहँ रहे यज्ञ अधिकारि ॥
करणी अपनी को पायो फल वाजिब यहै रहै त्यहि नाथ ।
खल बिनताड़न के मानत नाहिं है यह विदित जक्त में बात ॥
वहि अज्ञानिहिं यह सूझी ना क्यहि सन रह्यों बैर में ठानि ।
अहै चराचर को नायक सो लायक सब प्रकार गुण खानि ॥
जाहि विरोधे ते दुनियाँ में लहै न पुरुष कबहुँ कल्यान ।
शिव अविनाशी सुखराशी सो॰ है सब देव माहिं परधान ॥
विनय हमारी अबसुनिये प्रभु गुनिये नाहिं तासु अपराधु ।
क्योंकर टारै कोउ भावी को भाषत बली जाहि श्रुति साधु ॥
शरण तुम्हारी चलि आये हैं ये सब देव मुनीश्वर झारि ।

येऊ बहु विधि तहँ मारेगे इन पर क्षमा करौ त्रिपुरारि ॥
कहा हमारो उर धारो प्रभु तुम्हैंदयालु कहत सब कोय।
क्रोध निवारौ अब हिरदय ते तौ कल्याण दक्ष कर होय ॥
चरण पधारौ मख मण्डल में दक्षहि देउ जीव को दान।
पूरि करावो मख बाकी फिरि बहु यश होय तोर भगवान ॥
भले भलाई को छाँड़त नहिं दुष्ट न तजै दुष्टता बानि।
देर न करिये पगधरिये उत इतनी अर्ज गर्ज मम मानि ॥
ब्रह्माजी की यह वाणी सुनि कह्यो दयाल चन्द्रधर भाल।
है तुव आयसु मम माथे पर करिहौं अवशि तासुप्रतिपाल ॥
असकहि झट्टै उठि ठाढ़े भे ब्रह्मा सहित शंभु भगवान।
सुर मुनि सगरे लैडगरे तब आये जहां यज्ञ अस्थान ॥
निरख्यो हालति वहि अस्थल की सबरो अंग भंग दरशात।
परे देवता मुनि घायलबहु अति अकुलात शिथिल सबगात ॥
पर्यो रुण्डहै तहँ दक्षहु को मर्दा गर्दा माहिं बनाय।
दायालागी शिव शंकर को क्षण महँ क्रोध दीन विसराय ॥
सुधा दृष्टि सों अवलोक्यो पुनि स्वामी चन्द्रभाल ततकाल।
घाय पूरिगे मुनि देवन के हालहि भागि गयो दुख जाल ॥
यज्ञ बोकरवा की डाढ़ी लै भृगुनायक के दीनि लगाय।
गहरु लगाई नहिं आईजभि मानहुँ प्रथम केरि कच आय ॥
भयो विध्वंसित मख मण्डल सो वैसै फेरि गयो ह्वै भाय।
दाखिल ह्वैगे सामग्री सब दूतन दीनि जौनि बिथराय ॥
बिनती कीन्ही तब ब्रह्मा ने करिये यहौ एक प्रभु काम।
प्रान जिआवो अब दक्षहु के इतना लेहु जगत में नाम ॥
बिनय विधाता की सुनिकै यह गुनिकै कह्यो शम्भु भगवान।
शीश हुताशन में जरिगो जो सो नाहिं होय फेरि निर्मान ॥
होय तुम्हारी जो अज्ञा तौ मखपशु मुण्ड रुण्ड जुड़वाय।
अबहिं जिलाऊं मैं दक्षहु को सम्मत उचित देहु बतलाय ॥

सुनि यह बानी हरदानी की मानी हृदय घात यह बात।
यतन तड़ाका शिव कीन्ह्यों सो भे उठि ठाढ़ दक्ष हर्षात॥
लखि यह महिमा शिव शंकर की यावत रहे तहां नर नारि।
उर अभिलाषत अस भाषतभे हैं धनिधन्य स्वामि त्रिपुरारि॥
सकुचे दक्षहु बहु हिरदै में लखि यहु शंभु केर परताप।
शीश नवायो शिव पायँन में करिये प्रभुकसूर मम माफ॥
मैं अज्ञानी नहिं जानी तुव महिमा यहि प्रकार की नाथ।
हौ जगनायक सब लायक तुम संभव नाश तुम्हारे हाथ॥
अर्जीगर्जी सुनि सेवक की उर ते क्रोध देउ विसराय।
दीन दयाकर त्वहिं भाषैं सब हे सच्चिदानंद गिरिराय॥

स० हेशशिभाल दयाल विभो शिव हेजगढालक पालक घालक।
कालकरालकेकाल अहो प्रभुआपतिजालविशालकेटालक॥
केहरिखालक व्यालकभूषण बालजटाशि रमाल कपालक।
बंदिअनंदितकै जनबालक होहु निहाल अहो रिपुशालक॥

ससुर आपने की विनती अस सुनि कै शंभु गये हरषाय।
मख आरंभन की अज्ञा दै आहुति पूर्ण दीनि करवाय॥
अग्निकुण्ड ते तब ताही क्षण निकसे यज्ञ पुरुष भगवान।
दर्शन पायो सब काहूने अस्तुति सुरन कीनि धरि ध्यान॥
दक्षहु विनती बहु कीन्ह्यों जब बारंबार कीन परणाम।
यज्ञ पुरुष तब आनंदित ह्वै भाषत भये वचन अभिराम॥
दक्ष अयानी अति कीन्हीं तुम दीन्हीं वेद बानि विसराय।
बने विनिन्दक शिवशंकर के वृथा गरूर कूर उरलाय॥

स० हैअविनाशी उदासीमहा औविनासीमहादुख कालकिफांसी।
सिद्धि सुदासी बनी पग सेवति लेवति है कबहूं न उसांसी॥
भूरिक्षमा छहरै ज्यहिमा फहरै महिमा महिमा कि अकासी।
बंदिसुसेवकको सुखरासी विलासी सदाशिव काशी निवासी॥

शिव की सेवा बिन होवै नहिं कबहूं क्यहू केर कल्यान।

होय बिरोधी जो शंकर को सो नरमहा मूढ़ अज्ञान ॥
अब जनि भूलिहु बिसरायो तुम कबहूँ महादेव पद ध्यान।
नातरु नीको फल पैहौ ना रहौ विपति माहिं लपट्यान ॥
यज्ञ पुरुष की यह बानी सुनि भे सब देव वृन्द आनन्द।
उर अभिलाषत शुचिभाषत भे जै खल काल भालधर चन्द ॥
नभ ते बर्षा भै फूलन की अतिशै नारि पुरुष हर्षान।
सब के देखत ततकालै पुनि अन्तर्द्धान भये भगवान ॥
सुर ब्रह्मादिक भृगु आदिक ऋषि निज २ धाम गये हर्षाय।
दक्षहु आये निज मन्दिर को उरमहँ जपत शम्भु गिरिराय ॥
कथा मनोहर यह शंकर की जो कोउ सुनै गुनै सहुलास।
बन्दि अनन्दित जग छावै सो पावै अन्त बास कैलास ॥
कबहुँ न ब्यापै दुख संकट त्यहि आपै आप मिलै सुख धाय।
श्री रघुराया की दाया ते पूरण भयो प्रथम अध्याय ॥

इतिश्री भार्गववंशावतंसश्रीमान्मुंशीनवलकिशोरात्मजस्यश्रीमुंशी प्रयागनारायणस्याज्ञाभिगामीउन्नामप्रदेशान्तर्गतमसवासी ग्रामनिवासीपंडित बंदीदीन दीक्षित निर्मितश्रीविजयराघव खण्डेबालकाण्डेप्रथमोध्यायः १ ॥

मदन निकन्दन को बंदन करि श्री रघुनंदन चरण मनाय।
कथा अगारी की प्यारी अति भाषत बंदि अनंदित गाय ॥
मरत कि बेरा जगदम्बा ने माँग्यो रहै यहै वरदान।
प्रेम हमारो शिव पायँन में होवै जन्म जन्म भगवान ॥
शंभु विरह ते संतापित अरु दुसरे जरीं अग्नि में जाय।
तौने कारण हिम पर्बत घर जन्मीं पारबती तनु पाय ॥
उमा भवानी प्रगटानी जब सुंदर शैलराज घर आय।
ऋधिसिधि शोभाअरु सम्पातिसुख अतिशैगयोतहांपरछाय ॥
मुनिन सुआश्रम बहु कीन्हें तहँ दीन्हें उचित बास हिमवान।
परमानन्दित जड़ जंगम सब थल थल महामोद अधिकान ॥

द्रुम सब सब दिन फलसंयुत उत तने वितान लतानन छाय।
खानी मणि की प्रगटानी बहु सहज सुभाय तहां मुनिराय॥
बहैं अनूपम जल नदियां सब खग मृग मधुप सुखी सब काल।
वैर छांड़िकै स्वाभाविक सब जीव असीवँ भये खुशियाल॥
घर महँ गिरिजा के आये ते पाये भूरि विभव गिरिराय।
जस सुखसम्पति ते सोहत अति मानुष रामभक्ति को पाय॥
नूतन मंगल नित ताके घर छाके रहैं कोटि परकार।
सुर ब्रह्मादिक यश गावत शुभ पावत नित्त नये अधिकार॥
मिली खबरिया यह नारद को हिमघर सुता भई जगमात।
सहज स्वभावहि चलिआये सो हिमगिरि गेह माहिं हर्षात॥
आवत दीख्यो मुनि नारद को अतिशै खुशी भये हिमवान।
मिले सहादर भरि अंकम द्वउ आसन उचित बिठायो आन॥
चरण धोय कै चरणोदक लै सबरो भवन दीन सिंचवाय।
प्रेम नेम सों पद पूजन करि दंपति निकट बैठ हरषाय॥
हाथ जोरिकै हिम बोले तब हे हरिभक्त देव ऋषि स्वामि।
आजु अचानक म्वहिं दर्शन दै कीन प्रसन्न जानि अनुगामि॥
करों बड़ाई कह आपनि मैं प्रकटी अमित जन्म की भागि।
जो घर बैठे मुनिनायक के पायों दरश परश अनुरागि॥
अस कहि गिरिजै बोलवायो पुनि मुनिकै पगन नवायो ताहि।
बचन मनोहर कहि भाषत भे हे मुनि सुता मोरि यह आहि॥
याके लक्षण बतलावो म्वहिं कहि विधि रेख लेख जो भाल।
ज्ञान शिरोमणि मुनि सुजान तुम जानत तीनिकाल को हाल॥
बुद्धि विशादर श्रीनारद मुनि सुनि अस शैलराज की बानि।
लाग बतावन गुण कन्या कै धन्या जो महेश की रानि॥
शील सयानी गुणखानी अति सुन्दरि सहज सिद्धि की धाम।
सब सुख दानी भवरानी यह हैं बहु उमा अम्बिका नाम॥
शुभ्र सुलक्षण परिपूरित यह पियहि पियारि होय सब भांति।

यहिते पैहैं यश माता पितु सब दिन सदा रहै अहिवाति ॥
सब जग पूजै यहि पायँन को गायन करैं गुणन को गान।
होय न दुर्लभ यहि सेवत कछु इतना वचन करौ परमान ॥
सती शिरोमणि यहि जानौ गिरि मानौ देनहारि फल चारि।
यहि कर सुमिरण करि दुनिया में पतिव्रत धर्म साधिहैं नारि ॥
शैल सुलक्षणि यह कन्या तुव धन्या आदिशक्ति अविकारि।
भाषि सुनावों अब याके तन जे अवगुणौं अहैं दुइ चारि ॥
अगुण अमानी शैलानी अति जाके माय बाप कोउ नाहिं।
परम उदासी सुखरासी सो बासी सदा मेरु घर माहिं ॥
जगत बियोगी अरु योगी वर धाम न काम अमंगल वेख।
मिलिहै स्वामी निष्कामी यहि हाथे माहिं परी अस रेख ॥
सुनि अस वानी मुनि ज्ञानी की जानी सत्य शैल हिमवान।
विस्मय आनी तब हिरदै में दंपति बहुत लाग पछितान ॥
खुशी समानी मन गिरिजा के आयो उमगि प्रेम सों गात।
निश्चय मानी मुनि बानी को ह्वैहै अवशि शंभु सों नात ॥
प्रथम न जान्यो नारदहू ने की यह आय सती अवतार।
दशा मिलाई जब शंकर की तब सब भेद भयो निर्द्धार ॥
सखी सहेली सब गिरिजा की मैना मातु सहित हिमवान।
ह्वै संदेहित अरु खेदित मन शोचत बार बार धरि ध्यान ॥
बड़ी भागिते यक कन्या भै सब गुण खानि तुल्यनाहिं आन।
कांह जानिकै त्यहि रेखा महँ बर बौरहा लिख्यो भगवान ॥
मृषा न होवै मुनि बानी यह होवै अवशि सत्य स्वइ बात।
धरि उर धीरज पुनि नारद सों पूंछन लग्यो शैल सकुचात ॥
यतन बताओ कछु याकी प्रभु सो तदबीर करौं मन लाय।
मिलै न गिरिजै बरबौरा अस रेखा क्यहु प्रकार टरि जाय ॥
तब समुझायो मुनि नारद ने सुनु हिमवन्त हमारी बात।
अमिट करैया बिधि रेखा को कोउ न जगत माहिं दिखरात ॥

तदपि बतावों तदबीरों यक दैव सहाय करै जो भाय।
अरु ह्वै सपरै यहि कन्या ते शायद तौ उपाय बनिजाय॥
जस बरु तुमको बतलायों मैं सो यहि मिलै अवशि शक नाहिं।
दोष बखाने जे बर के मैं ते सब दखि परत शिव माहिं॥
होय सगाई जो शंकर ते यहि कन्यका केरि हिमवान।
तौ फिरि अनुचित कछु नाहीं है समरथ सदा शम्भु भगवान॥
भूषण उन के दूषण हूं हैं पूषण तुल्य प्रभाधर गात।
रूप अमंगल है मंगल कर मानहुँ सत्य शैल यह बात॥
हरिनित सोवत अहि शय्या पर तिन्हें न दोष देत मतिमान।
बस्तु अपावन अरु पावन को भानु कृशानु करत रसपान॥
बहै अशुद्धौ अरु शुद्धौ जल सब दिन देवआपगा माहिं।
इन्हें बतावै नहिं दूषित कोउ ताते दोष समर्थहिं नाहिं॥
जो अस ईर्षा मन लावै कोउ ह्वै अभिमान बश्य अज्ञान।
परै कल्प भरि सो रौरव महँ ईश समान जीव नहिं जान॥
मिलवै मदिरा महँ गंगा जल कबहुं न सन्त करैं त्यहि पान।
वही बारुणी मिलि गंगा महँ होत पवित्र दोष नहि मान॥
तैसे ईश्वर अरु जीवहु महँ भाषत भेद वेद गोहराय।
जीव अपावन है मदिरा सम ईशहि मिले पाक ह्वै जाय॥
शिव स्वाभाविकही समरथ हैं अति मतिमान शुद्ध भगवान।
उन्हें वियाहे यहि कन्या कर होवै सब प्रकार कल्यान॥
मिलैं कठिनता ते शंकर पै इतनी बात अहै हिमवान।
क्लेश उठाये ते शीघ्रै पुनि होत प्रसन्न देत बरदान॥
करै तपस्या जो कन्या तुव भाविउ मेटि सकैं त्रिपुरारि।
यद्यपि बर हैं बहु दुनियाँ महँ है यह शिवहि केरि अधिकारि॥
सुजन सहायक वरदायक शिव घायक सकल विपति के जाल।
जन मन रंजन विघन विभंजन गंजन हार काल विकराल॥
हृदय मनोरथ शिव सेवा बिन पूर न होत कोटि परकार।

यहिते सिखवो तुम कन्या को तप करि लहै शंभु भरतार ॥
अस कहि नारद मुनि गिरिजा को दै आशीष हर्ष उरलाय।
ब्रह्म लोकको चलि आवत भे आगिल चरित सुनौ मुनिराय ॥
पाय अकेले पति अपने को मैना कहन लगी सकुचाय।
मुनि की बातै मैं समुझिउँ ना का यह गये पवाँरा गाय ॥
खोजौ घर वर अरु अच्छा कुल कन्या तुल्य होय जहँ नाथ।
तहां वियाहौ पति गिरिजा को अति उत्साह चाह के साथ ॥
नातरु कन्या वरु क्वांरी रहै इतना कहा लेउ मम मानि।
उमा पियारी म्वहिं प्राणहुं ते व्याहिय ताहि योग्य वर जानि ॥
मिलै न गिरिजा के लायक वर तौ पिय भंग होय हियआस।
सहजै गिरि को जड़ भाषैं सब होवै जगत माहिं उपहास ॥
सो विचारिकै पति हिरदैमा खोजौ कतहुँ योग्य वर जाय।
हितसह व्याहौ त्यहिगिरिजाको ज्यहि न बहोरिमिलैदुखआय ॥
अस कहि धरिकै शिर पायन में मैना रही मौन उरधारि।
हित करि भूधर पति बोले तब बात हमारि मानु मन प्यारि ॥
झरै चंद्रमा ते आगी बरु रवि छिपि जायँ बरुकु तम माहिं।
बहै सुरसरी बरु उल्टी गति नारद वचन अन्यथा नाहिं ॥
शोच विसारौ अस निश्चै करि सुमिरौ हृदय माहिं भगवान।
पैदा कीन्ह्यों जिन गिरिजा को सोई प्रिया कराहिं कल्यान ॥
प्रीति तुम्हारी जो कन्या पर तौ अस देहु जाय समुझाय।
करै तपस्या ज्यहि पावै शिव और उपाय नाहिं दिखराय ॥
गुप्त बार्ता है नारद की आवत सहज समुझ में नाहिं।
उनसब बातन को मतलबयह दूषण तनक नाहिं शिवमाहिं ॥
सुनि पति बानी मुद आनी उर मैना गई भवानी पास।
लैबैठारयो त्यहि कनियाँ मा लागीं ढुरन नैन ते आंस ॥
कण्ठ घुंचघुचा भरि आयो पुनि मुखते कहि न जातकछुबात।
देखि देखि के मुख गिरिजा को बारम्बार लगावत गात ॥

अन्तर्यामी जगदम्बा तब जननी हृदय बात गईं जानि ।
हँसिकै बोलीं तब माता ते सुन्दर बानि प्रेम रस सानि ॥
माता स्वपना में दीख्यों इक सो सब भाषि सुनावत तोहिं ।
गोरे तनको बर ब्राह्मण इक सिखवत भयो आय अस मोहिं ॥
करौ तपस्या गिरि कन्या तुम नारद बचन सत्य सब मानि ।
बिना तपस्या के इच्छित बर मिलै न दीख यतन बहुठानि ॥
सृष्टि बनावैं बिधि तपके बल तपबल बिष्णु जगत रखवार ।
तपबल शंकर संहारत त्यहि तपबल धरैं शेश महिभार ॥
अहै तपस्या के आश्रित सब यावत सृष्टि और संसार ।
अस बिचारि कै तप साधौ तुम जा महँ मिलैं शम्भु भर्तार ॥
त्रिभुवन धन्या बर कन्या की सुनि अस बानि शैल की रानि ।
अति सन्देहित ह्वै हिरदे में शोचत बिबिध भांति अनुमानि ॥
फिरि बुलवायो हिमवानो कहँ औ सब कह्यो स्वप्न को हाल ।
यह मत भायो पुनि दोउनको तप सुखकरन हरन दुख जाल ॥
लखि यह इच्छा पितु माता की उर हर्षाय तिन्हैं समुझाय ।
चलीं भवानी तप करिबे कहँ बरिबे हेत शम्भु गिरिराय ॥
पुरजन परिजन औ माता पितु अतिशै दुखी भये मन माहिं ।
संग सहेलिन अलबेलिन के बेली सरिस गात मुर्झाहिं ॥
वेदशिरा मुनि चलि आये तहँ सबहिं बुझाय दीनसमुझाय ।
सुनि कै महिमा जगदंबाकी भे सब सावधान मुनि राय ॥
जायकै जंगलमहँ मंगल सह धरि शिव चरणकमल उर ध्यान ।
लगीं तपस्या को साधन तहँ आराधन महेश भगवान ॥
अति सुकुमारी तपलायक नहिं तद्यपि सकल भोग बिसराय ।
सुमिरण लागीं पति चरणन को वर्णन कीन प्रेम नहिं जाय ॥

स० नित्तनयो अनुरागबढ़्यो षटरागरढ़्यो जगको सब जीते ।
दीन तपस्यहिके मगमें पग साधन सम्यक शोधि सहीते ॥
देहरु गेह सनेह तज्यो हठिभोग सँयोग भये सब रीते ।

जीते वही अरु हीते वही चितचीते वही शिव प्राण पिरीते ॥

पहिले फल दल अरु मूलनभखि कीनब्यतीत हजारक साल।
फिरि सौ संवत लग शाकै को कीन अहार लीन तप चाल ॥
कछु दिन पानी अरु पवनै के भोजन कीन हीन करि आस।
फेरि गुजाख्यो इमि समयो कछु शिवहि अराधि साधि उपवास ॥
बितये संबत त्रै सहस्र पुनि सूखे विल्व पत्र को खाय।
सूख्यउ पत्ता तजि दीन्हें पुनि कीन्हे कृशित अंग अरु काय ॥
नाम अपर्णा तब गिरिजा को परिगो वही दिवस ते भाय।
चरित अगारी को सुनिये अब मुनिवर भरद्वाज मन लाय ॥
देखि तपस्या वश दुर्वल तन सब विधि धरे शिवहि परध्यान।
भै सुर बानी तब अंबर ते गिरिजा करहु वचन परमान ॥
भयो मनोरथ तुव पूरण सब औ तप सिद्धि भयो सब भांति।
क्लेश निवारौ उर धारौ अस मिलिहैं अवशि त्रिपुर आराति ॥
कीनि तपस्या असि काहू नहिं भये अनेक धीर मुनि ज्ञानि।
धरौ भवानी सुर बानी उर सन्तत सदा सत्य शुचि जानि ॥
पिता बुलावै तुव आवै जब जायो तबहिं छोंड़ि हठ धाम।
काम तपस्या को नाहीं अब निश्चय भइउ शंभु की बाम ॥
आवैं सातौ ऋषि तुम्हरे ढिग औ कछु करैं वार्तालाप।
तब यहि ब्रह्मा की बाणी को मान्यों अवशि सत्य करि आप ॥
गगन बखानी सुरबानी इमि सुनिकै सविधि भवानी माय।
बहु हरषानी उर आनी मुद अंगन पुलक छाय गइ भाय ॥
तबहुं तपस्या को त्याग्यो नहिं जाग्यो शंभु चरण अनुराग।
रंच न भाग्यो मन साधन ते आराधनहिं माहिं चित लाग ॥
चरित मनोहर यह गिरिजा को तुम ते कह्यों बुद्धि अनुसार।
सुनौ तमाशा अब शंकर को खांसा करन हार दुख क्षार ॥
सती आपनो तन त्याग्यो जब तब शिव धख्यो चित्त वैराग।
जपैं निरन्तर रघुनायक के गुण गण नाम सहित अनुराग ॥

सुनें जाय कै कहुँ स्वामी की सुंदर कथा वार्ता कान।
जप तप संयम की बातै अरु ज्ञानी मुनिन सुनावें ज्ञान॥
काम धाम मद मोहादिक ते सदा विरक्त शंभु शुचि धाम।
बिचरैं आनँद सों पृथ्वी महँ सुमिरैं राम नाम अभिराम॥
यदपि कामना कछु नाहीं उर तद्यपि दयावान भगधाम।
भक्त भावते को दुःखित लखि आपौ दुखी रहत सब याम॥
याविधि औसर बहु बीतत भो निन नव होय राम पद प्रीति।
नेम प्रेम यह लखि शंकर को अविचल हृदय भक्तिकी रीति॥
रूप उजागर गुण आगर प्रभु सागर शील दया दरियाव।
अतिशै नागर सुख सुखमा घर प्रगटे रामचन्द्र रघुराव॥
करी बड़ाई बहु शंकर की तुम सम शीलवान भगवान।
शुचि सत्यब्रत अरु करुणारत नाहिं न भक्त जक्त महँ आन॥
मैं आनन्दित अति राउर सों लखि कै सत्यसार व्यवहार।
तुम सों बाहर नाहिं कौनिउँ बिधि कबहूं क्यहू काल महँ यार॥
दुःखनिकन्दन रघुनन्दनप्रभु कहि यहि भांति शिवहि समुझाय।
जन्म सुनायो पुनि गिरिजाको औ सब कह्यो हकीकति गाय॥
फेरि नम्रता सों भाष्यो यह हे शिव बिनय सुनो इक मोरि।
करौ प्रपूरण पुनि आतुर त्यहि कहौं निहोरि हाथ दुउ जोरि॥
जो म्वहिं मानौ अरु जानौ कछु आनौ हृदय माहिं मेमनेहु।
जाय बियाहौ तुम गिरिजा को मांगे मोहिं बात यह देहु॥
शारँग पानी की बानी सुनि बोले भूतनाथ हित साथ।
यद्यपि वाजिब अब नाहीं अस तद्यपि नाथ हुक्म मम माथ॥
धर्म हमारो है याही प्रभु स्वामि निदेश वेश उरमानि।
हित सह पालौं नहिंटालौं त्यहि सबदिन सबप्रकार सुखआनि।
गुरु अरु मातापितु स्वामीकी बानी बिन विचार भलिजानि॥
हित सह पालै नहिं टालै जो कबहुं न होय तासु हित हानि।
तुम हितकारी सब भांतिन मम आयसु कस न करौं स्वीकार॥

सदा सर्वदा सब प्रकार ते मैं हौं खास दास प्रभु त्वार ॥
सुनि अस बानी निर्वानी की सानी भक्ति धर्म पथ माहिं।
अति मुद मानी धनु पानी ने ज्ञानी शंभु सरिस कोउ नाहिं ॥
पुनि मृदुबानी ते बोले प्रभु शंकर सही रही तुव टेक।
अब न बिसाऱ्यो उर धाऱ्यो सो मैं जो विनय कीनि सविवेक ॥
दै अस शिक्षा शिव सुजान को अंतरध्यान भये भगवान।
सोई मूरति शुचि सूरति को शंकर धरयो हृदय महँ ध्यान ॥
आये सातौ ऋषि ताही क्षण तिनते कह्यो शंभु यह बात।
जाउ बेगिही तुम गिरिजा पहँ लेवहु प्रेम परिक्षा तात ॥
पठै पर्वतै पुनि गिरिजा ढिग पठयो भवन ताहि समुझाय।
सुनि अस आयसु शिवशंकर को चलिभे सप्तऋषी शिरनाय ॥
आय पहूंचे पुनि गिरिजा ढिग दर्शन कियो प्रेम उपजाय।
मनहुं तपस्या तन धारण करि कानन माहिं विराजी आय ॥
सुंदर बाणी सों बोले मुनि सुनिये शैलसुता इक बात।
कौने कारण तप भारी यह तुम करि रहिउ धारि दुखगात ॥
कौन देवतै आराधौ तुम साधौ हृदय मनोरथ काह।
याको कारण बतलावो सब हम सन भाषि सत्य की राह ॥
सुनि अस बानी उन ऋषियन की बोलीं विहँसि भवानीमाय।
भेद बतावत मन सकुचत है मानहुं सत्य वचन ऋषिराय ॥
हँसिहौ हमरी जड़ताई सुनि याते कहि न जात कछु हाल।
सीखन मानै मन ठानै हठ जल पर रचो चहत दीवाल ॥
कहिबो नारद को मान्यो सच आन्यो हृदय माहिं स्वइबात।
चहत उड़ावा बिन पंखन मैं यह अबिबेक विलोकौ तात ॥
जगत बियोगी शिव योगी को बरिबो चहौं यही जिय आश।
रहौं कुवाँरी नतु सारी बय तपही माहिं होय तन नाश ॥
सुनत भवानी की बानी अस ऋषियन कह्यो फेरि मुसकाय।
जन्म तुम्हारो है पर्वत ते जड़ तौ जड़ै तुम्हारी आय ॥

सीख मानि कै मुनि नारद की कहिये बस्यो कौन फिरि धाम।
रारि लगाउब भरकाउब तजि उन के और कौन है काम॥
दक्ष बालकन को दीन्ह्यों शिख उन बैराग लीन घर त्यागि।
चित्रकेतु कर घर घाल्यो पुनि अजहूं रही बात जग जागि॥
हाल जाहिरै हरणाकुश को लागी पिता पुत्र महँ रारि।
मानै कहना जो नारद को घरताजि अवशि होय भिखियारि॥
भीतर कपटी अरु ऊपर ते सज्जन सरिस बनाये रूप।
बात हमारी सच मानौ तुम जानौ ताहि ठगन को भूप॥
त्यहि के बैनन को मान्यो तुम आन्यो हृदय माहिं बिश्वास।
अब हम जानी मन अपने मा तुम्हरिउ भई बुद्धि सब नास॥
महा निर्गुणी नहिं जानत जो तनकौ जगत केर व्यवहार।
करै बसेरो वनपर्वत मा ना घर द्वार बंधु परिवार॥
पता न जाके पितु माता को साथी भूत प्रेत बैताल।
वेष अमंगल सब भांतिन ते ताको कहैं कहां लग हाल॥
जटा रखाये शिर भौवा भरि तिन मा बहै गंगकी धार।
जूरा बाँधे है सांपन को जिन की जहर भरी फुफकार॥
कानन कुण्डल स्वउकाले के लाले नैन रहैं सब याम।
वक्र चंद्रमा है माथे महँ गल में गरल धरे बेकाम॥
माला खोपरिन की पहिरे बहु औ उपवीत भुजंगम क्यार।
भांग धतूरा विष आदिकलै सब दिन यही केर आहार॥

स० नंगधड़ंग न झांपत अंगन ब्यंग अलापत तापत कौरा।
भंग जमावत आवत ढंग न भावत संग न जंगजमौरा॥
क्षार चिता तन बैलसवार पहार कि गैल फिरै नित दौरा।
गौरा बतावहु भाषि भला तुम काकरिहौ असलै बरबौरा॥

कासुख पैहौ वरु पाये अस इतना हमें देव बतलाय।
ठग नारद के परि फंगन महँ तुमहूं उमा गइउ बौराय॥
इनहिंन पंचन के कहिबे ते सती बियाहि दीनि गे ताहि।

पुनि भरकायनि मरवायनि त्यहि जाहिर सबप्रकार जगमाहिं ॥
अब सुख सोवत नहिंसंशय कछु इतउत भीखमांगिभत्रखाहिं।
सहज एकाकिन के मंदिर महँ तिया खटाहिं ढंग अस नाहिं ॥
अबहुं तुम्हारो कछु बिगरो नहिं कहा हमार मानि ल्यो ठीक।
झगड़ा झंझट यह छोंड़ौसब हम बरु तुम्हैं बिचारयो नीक ॥
अतिशै सुंदर सुखदायक शुचि महा सुशील ज्ञान गुणखानि।
बेद बखानत हैं जाको यश अस बरु तुम्हैं मिलाउब आनि ॥
रंचक दूषण नाहिं तामें कछु शुद्ध स्वभाव दया दरियाव।
पावन गति मति श्री लक्ष्मीपति है बैकुण्ठ धाम शुचिठावँ ॥
सुनि अस बानी उन मुनियन की भाषन लगीं भवानी फेरि।
कही तुम्हारी हैं सांची सब गिरिभव अहै देह यह मेरि ॥
जड़ता हम में स्वाभाविक है यह तुम कही चुक्यो मुनिराय।
जो हठ ऊटी सो छूटी ना चाहै बरुकु देह छुटि जाय ॥
होत सुवर्णौ पुनि पत्थर ते कितनौं जारि फूंके त्यहि देउ।
तजै न अपनोस्वाभाविक गुण इतनी बात मानि मुनि लेउ ॥
कहो न नारद को छँड़िहौं मैं उजरै बसै भवन डर नाहिं।
सत्य न मानी गुरु बानी जैं सुख सिधि ताहिं नाहिं जगमाहिं ॥
यद्यपि शंकर घर अवगुण के औहैं विष्णु सकल गुणधाम।
रमै जाहि सन मन जाको जग जानहुँ ताहि ताहि सन काम ॥
तुमहीं मिलत्योजो पहिलेम्वहिं तुम्हरिहि सीखलेत मनमानि।
अबतौ शिवहित यह हारिउँ तन देखै कौन दोष गुण छानि ॥
जो यहि बांतन्न मा ज्यादा हठ तुम्हरे हृदय अहै मुनिराय।
टाल मटौला के कीन्हे बिन तुम ते रहि न जाय जो भाय ॥
तौ कौतुकिअनको आलस नहिं देखौ और ठौर कहुँ धाय।
हैं कन्यावर बहु दुनियां में तिनके ब्याह करावहु जाय ॥
कोटि जन्म तक हठरैहै यह कीतौ करौं शंभु सँग ब्याह।
नातरु क्वांरी रहि साधौं तप तुम्हरे कहे होत अब काह ॥

शिक्षा नारद की त्यागौं ना जो शिव आपु कहैं सौ बार ।
तौ फिरि गनती कह राउर की जो करि लेउँ कहहु स्वीकार ॥
तुम को आये इत देरी भै मेरी बिनय मानि घर जाउ ।
सीख तुम्हारी इत चलिहै ना बकि बकि वृथा चहै पछिताउ ॥

स० ज्ञानी बतावत बानी यहै निगमागमहूं कहै सीख सयानी ।
लौकिकहूमें भवानी यहै औ प्रधानीअहै सब बातमें छानी ॥
हाटऔ बाट बिकानी यहै चहै होय जवानी कि लेखबखानी ।
हैअसिलेकिनिशानीयहैमनमानीसोमानीनमानीनमानी ॥
आनि परैकिन संकठ कोटि अँगोटि धरै पछरै तबहूंना ।
हानि गलानिहुं जानि परै तौ सयानि करै पैटरै तबहूंना ॥
रारिअरै तौ लरै सुखसे चहै हारिहुजाय डरै तबहूंना ।
बंदि असील किबानि यहै जो कहै सोकरै मुकरैकबहूंना ॥

प्रेम देखि कै अस गिरिजा को बोले ऋषय बहुरि हरषाय ।
जै शिव रानी गुणखानी जै जै अंबिका भवानी माय ॥
हौ सुखदाया शिवमाया तुम आया हमैं सबिधि बिश्वास ।
मोह नशाया उरछाया जो पाया भेद जानि हम खास ॥
तुम अरु दाया कर शंकर प्रभु हौ सब जगत केर पितु मात ।
क्षमिये दूषण अनजानत को अनुचित कही रही बहु बात ॥
अस कहि मुनियन पुनि गिरिजा के पायँन माहिं नवायोमाथ ।
चले अनंदित ह्वै तहँवाँ ते आये जहां रहत गिरिनाथ ॥
तिन्हैं बुझायो समुझायो बहु पठयो फेरि उमा के पास ।
सोलै आये घर गिरिजा को भै दृढ़ शंभु मिलन की आस ॥
शिव पहँ आये फिरि सातौ ऋषि भाष्यनि कथाउमाकी गाय ।
प्रेमपरिक्षा सुनि गिरिजा की भै मन महा मगन गिरिराय ॥
बंदि अनंदित मुनि सातौ पुनि शिवसन बिदा माँगि गे धाम ।
कथा अगारी की प्यारी अरु सुनिये भरद्वाज अभिराम ॥
मन थिर कैकै तब शंकर प्रभु लागे करन राम को ध्यान ।

त्यही समइया के अवसर महँ तारक असुर भयो बलवान ॥
लोक लोकपति सबजीते त्यहिं हारे सकल देव दिगपाल ।
भे सुख संपति ते रीते सुर पायनि महा दुःख वहि काल ॥
गये गोहारी तब ब्रह्मा की तिनते विपति कहेनि सब गाय ।
देखि दुखारी बहु देवन को ब्रह्मा वचन कह्यो समुझाय ॥
नाश राक्षस को ह्वैहै तब यामें तनिक अँदेशा नाहिं ।
शिव के बीरज ते जन्मैं सुत जीतै तौन वाहि रण माहिं ॥
कहो हमारो यह धारो उर करौ उपाय जाय सो धाय ।
देर न ह्वैहै ह्वै जैहै सो करी सहाय ईश्वरहु भाय ॥
सती भवानी तन जाय्यो जो पहिले दक्ष यज्ञ में जाय ।
स्वई हिमाचल घर जन्मीं अब सुंदर पारबती तनु पाय ॥
कीनि तपस्या त्यहिं शंकर हित शंकर सबतजि गही समाधि ।
यद्यपि भारी असमंजस यह तद्यपि करो यत्न तुम साधि ॥
जाय बुझाओ तुम कामहिं अब सो शिवपास बेगि चलि जाय ।
करै न उनको मैं क्षोभै मन यही उपाय सहज है भाय ॥
फिरि हम जैबे समुझैबे भल मनिहैं महादेव ज्यहि भांति ।
व्याह कराउब बरियाईं हम पाईं तबहिं मोद सुर जाति ॥
ब्रह्माजी को यह भाषण सुनि सबहिन कहा नीकि यह बात ।
फिरि सब देउता एकत्रित ह्वै अस्तुति करन लाग अति भ्रात ॥
देर न लागी दावागी सम तुरतै प्रकट भयो तब काम ।
हाल बुझायो तब देउतन ने कहि निज विपति केर इतमाम ॥
सो सुनि गुनिकै पुनि हिरदैमा लाग्यो कामदेव बतलान ।
किहे शत्रुता शिवशंकर ते कौनिउँ बिधि न मोर कल्यान ॥
तदपि तुम्हारो यह कारज मैं करिहौं अवशि बुद्धि अनुसार ।
वेद बड़ाई कहि गाई यह है जग परम धरम उपकार ॥
तजैं पराये हित देही जो सरहत तिन्हैं सविधि मतिमान ।
अस कहि सब के पद बंदन करि धरिकर सुमन केर धनुबान ॥

साथ आपनी सब सैना लै आतुर चल्यो तबहिं रतिनाथ।
आय पहूंच्यो शिवशंकर ढिग प्रथमैं तिन्हैं नवायो माथ॥
पुनि अस शोचा मन पोचा करि शिव के बैर खैर मम नाहिं।
काज देवतन को करिहौं पै निश्चै चहै प्राण अब जाहिं॥
गुनि असमनमा पुनि क्षनमा त्यहिं अपन प्रभाव कीन विस्तार।
देर न लागी हतभागी ने वश करि लीन सकल संसार॥
भो मकरध्वज मन क्रोधित जब क्षण महँ मिटी वेद मर्याद।
ठाम ठाम महँ कामदेव के होत प्रताप केर बहु बाद॥
व्रत अरु संयम ब्रह्मचर्य लै धीरज धर्म ज्ञान विज्ञान।
शुद्ध आचरण जप योगादिक भग्यो विवेक कटक लै प्रान॥
रह्यो न सन्मुख भट ठाढ़ो कउ भागे युद्ध भूमि सब त्यागि।
लुके जाय कै गिरिकंदर महँ उत्तम ग्रंथ महाभय पागि॥
खलभलि परिगै सब दुनिया मा का अब होनहार कर्तार।
कामदेव की क्रोधागिनि महँ कोउ न देखि परत रखवार॥
को दुइ माथेका दुनियाँ महँ दीख्यसि महा सुभट रतिनाथ।
जाहि पछारन अरु मारन हित धारन कीन बान धनु हाथ॥
कहँलग गाई प्रभुताई फिरि वहिक्षन वीर मदन की भाय।
जीव चराचर जग यावत सब भे सब तासु वश्य भयखाय॥
सबके हिरदै महँ जाग्यो अति वहि खल मार केर व्यवहार।
देखि लतानन को कानन महँ लागे वृक्ष नवावन डार॥
सरिता सबरी उमड़ाईं अरु धाईं जलधि ओर हहराय।
ताल तलाईं मिलि आपुस महँ संगम करन लाग हरषाय॥
भई जड़नकी जब हालति अस तब काकहैं सचेतन हाल।
जल थल अंबर के बासी सब कीन्हें कामदेव बेहाल॥
लोकहु सिगरे कामांधित ह्वै व्याकुल भये गये बउराय।
निशि दिन चकवा अवलोकत नहिं दंपति मिलतभये सुखपाय॥
दैत्य देवता नर किन्नर अहि प्रेत पिशाच भूत बैताल।

सब दिन सेवक ये कामहिं के इन कर कहाँ भाषि का हाल ॥
सिद्ध तपस्वी बैरागी अरु योगी रहे महामुनि जौन।
त्यागि आपनी वरकरणी को भये वियोगि कामवश तौन ॥
अतिव प्रमानी न ज्ञानी जे तेऊ भये काम वश माहिं।
दशा को बरणै तब नीचन की जे सुनि काम नाम हरषाहिं ॥
लखैं ब्रह्ममय जे दुनियां को तिनकर भयो आनि असहाल।
जीव चराचर हैं यावत जग ते सब लखैं बाल करि ख्याल ॥
अबला देखहिं जग पूरुष मय पूरुष लखैं तिया मय झारि।
उभै दण्ड भरि ब्रह्म अण्ड महँ दीन्हयासि मदन मोहनी डारि ॥
धरा न धीरज उर काहू ने मन सब केर हेर हर काम।
उबरे ओई नर औसर वहि रक्षक भये जासु के राम ॥
भयो तमाशा द्वै घटिका अस जब लगि गयो शंभुपहँ मार।
शिवहि बिलोकत घबरान्यो वहु भो तब सावधान संसार ॥
जीव अनंदित भे ताही क्षन जिमि मद उतरि गये मतवार।
रूप भयंकर लखि शंकर को गयो डेराय बहुतु मन मार ॥
लज्जा लागति है लौटे ते छेंड़े शिवहि प्रान की हानि।
मरण ठानिकै पुनि जियरेमा किह्यसि उपायवेश अनुमानि ॥
रुचिर वसंतहि प्रगटायसि तब बिरवा नयो तुरत फुलियान।
बन अरु उपवन फुलवारी लै बाग तड़ाग दिव्यदरशान ॥
दशौ दिशा महँ सुघराई शुभ छाई जोन वरणि मुख जाय।
प्रेम तरंगें उमड़ानीं जनु शोभा ठाम ठाम रहि छाय ॥
ज्ञानिन त्यांग्यो ज्ञान ध्यान लखि जाग्यो नपुंसकन मनकाम।
बनसुंदरता कहि आवत नहिं पावत सबहि चित्त विसराम ॥

स० शीतल मन्द सुगन्ध सुवायु बहैं मदनागि बढ़ावनहारी।
छाय छटाकि घटा रहिकानन ज्ञान गुमान रढ़ावनहारी ॥
तालनं अंबुज जाल खिले छबिहै चितचाव चढ़ावनहारी।
कीरन की ललकार अपार मुयेमन मार मढ़ावनहारी ॥
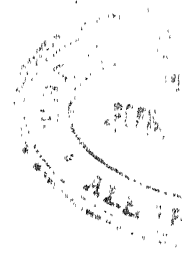
झुण्ड अप्सरन के नाचैं बहु करि करि गान अलापैं तान ।
गति बतलावै को कामिन की ज्ञानिन तजे ज्ञान औध्यान ॥
कला करोरिन करि कोटिन विधि हारयो सेन सहित रतिनाथ ।
चली समाधि न शिवशंकर की कोप्यो हृदय फेरि धुनि माथ ॥
डाल रसालकि चढ़िबैठ्यो तब मनमा अतिवकीन अभिमान ।
सुमन शरासन संधान्यो कर कानन लगे तानि बलवान ॥
तीक्षण बाणन सों मार्यो तकि लागे शंभु हृदय सों जाय ।
छुटि समाधि गइ तब ताही क्षण जागे हक बकाय गिरिराय ॥
भयो क्षोभबहु शिवशंकरमन सबदिशि लख्यो खोलिकै आँखि ।
सौरभ शाखापर कामहिं लखि कीन्हयों कोप अतिवमन माखि ॥

छं० तीसर नैन उघारि पुरारि विलोक्यो जबहीं ।
भयो मार जरि छार बार लागी नहिं तबहीं ॥
हाहा कार अपार भयो ब्रह्मण्ड मँझारी ।
गये देवता डरपि भये सब दैत्य सुखारी ॥
भोगीमन शोचनलगे समुझि कामसुख आशगै ।
योगी मुद गोंचन लगे निकसि कुकंटक फाँसगै ॥

रतिअतिमुर्च्छितभैपतिगतिसुनि उरदुखभरतिकरतिबिललाप ।
गई सन्निकट शिव शंकरके मन महँ करत तासु गुण जाप ॥
कीन्हयसि विनती बहु भांतिन ते सन्मुख खड़ी जोरिद्वउहाथ ।
पड़ी दण्डवत गिरि पायँन महँ हौं मैं बड़ी दुखित गिरिनाथ ॥
सजा आपनी को पायो शठ हठ करि किहयसि बड़नसोंरारि ।
अबतो दाया करि दुखियापर मम उपकार करिय त्रिपुरारि ॥
रती बीनती जब कीन्हीं इमि शिवहि प्रसन्न होत का देर ।
अबला लखिकै इमिबोले तब सुंदर दया दृष्टि सों हेर ॥
हे रति अबते तुव स्वामी कर होय अनंग नाम विख्यात ।
बिनतन व्यापै मनसबही के सुनु निज मिलन केरि अबबात ॥
भार उतारन हित वसुधाको जब यदुबंश कृष्ण अवतार ।

ह्वैहै द्वापर के आखिर में पैहै कृष्ण पुत्र भरतार॥
बात हमारी यह झूंठी नाहिं तीनिउँ काल माहिं हे बाम।
सुनि अस बानी शिव शंकर की रति चलि गई आपने धाम॥
रति अरु रति पति की करणी यह तुमसन कहीगायमुनिराय।
हाल अगारी को भाषों अब मति सम सुनहुँ तौनमन लाय॥
मार जरेके समाचार जब पाये सांचु देवतन जानि।
तब वैकुंठै ब्रह्मादिक गे भाष्यो विष्णु पास यह बानि॥
ब्रह्म विष्णु सह पुनि देउता सब गे कैलास जहां शिव बास।
न्यारी न्यारी करि विनती सब पहुँचे शंभु पास सह त्रास॥
सुनिकै विनती उन देउतन की भये प्रसन्न चन्द्र धर भाल।
पूछ्यो तिन सन तुम आयो कहँ देउतौ कहौ आपनो हाल॥
बोले ब्रह्मा तब औसर त्यहि अंतरयामि यदपि तुम स्वामि।
तदपि भक्ति वश मैं विनवतहौं करिये कृपा ज्ञानि अनुगामि॥
सबरे देउतन के हिरदय मा ह्वै रहि यह उछाह सुर नाह।
देखाचाहैं निज नैनन सों सहित विधान रावरो व्याह॥
सोढँग डरिये मुद भरिये मन धरिये दास विनय पर ध्यान।
देर न करिये अनुसरिये अब आयसु जाहि होय कल्यान॥
काम जरायो रतिपायो बर यहु बड़ नीक कीन भगधाम।
सांसति करिकै पुनि पालैं त्यहि येई नाथ बड़ेन के काम॥
पारवती ने तप साध्यो बहु अंगीकार करौ अब ताहि।
सुनि विधि बानी शिव ज्ञानी तब बोले सकल सुरन उतसाहि॥
जो तुम भाषत अभिलाषत मन होइहै अवशि तौनशक नाहिं।
बजे नगारा तब देवनके वरषे सुमन हर्षि मन माहिं॥
लैलै अज्ञा पुनि गमने सब जैजै कार करत निज धाम।
जानि समैया ऋषि सातौ तब आये ब्रह्म देवके ठाम॥
तिन्हैं तुरंतै पठवायो विधि आतुर जहां रहत हिमवान।
प्रथम सो आये लग गिरिजाके बोले मधुर बचन छलसान॥

सिखये नारदके लागिउ तब कहा हमार सुन्यो ना कान ।
अब तौ तुम्हरो प्रण झूठा भो जार्यो काम शंभु भगवान ॥
सुनि अस बानी उन ऋषियनकी बोलीं विहँसि भवानी माय ।
झूठ न या महँ कछु भाषौ तुम जो कछु कहौ सत्य सबआय ॥
तुम्हरे लेखे तौ शंकर शिव जार्यो कामदेव अब आय ।
रहे विकारी अब ताईं वे तुम्हरे हृदय रह्यो यह छाय ॥
हमरे लेखे शिव शंकर प्रभु योगी निर्विकार तप आल ।
अरु जअभोगी अजव्यापकविभु समरथ सुकृतमान सबकाल ॥
ऐस जानि जो शिव सेयों मैं मन वच कर्म सहित अनुराग ।
तौ प्रण मेरो करि सांचो प्रभु डरिहैं मेटि अनुत्तम भाग ॥
जार्यो असमर हर भाष्यो तुम सो यहबाढ़ि मूर्खता तुम्हारि ।
किह्यो चिंतवन नहिं हिरदय मा बाजत बड़ेज्ञान अधिकारि ॥
गुण स्वाभाविकयह अग्नीकर हिमनाहिं कबहुँ जाय त्यहिपास ।
गयेते पासै हठि नासै सो जस हर निकट काम भो नाश ॥
सुनि जगदम्बा की बाणी इमि भे मुनिअतिव खुशी मनमाहिं ।
भलके दृढ़ता लखि प्रीतिउ महँ रीतिउ जासु अन्यथा नाहिं ॥
नाय भवानी के पायँन शिर चलि भे मुदित हिमाचल पास ।
कथा सुनायो कहि गायो सो ज्यहि विधि भयो कामको नाश ॥
काम जरब सुनि हिम दुःखित भे यह नहिं भई नीकि कछुबात ।
रति वर दानहुँ पुनिभाष्यो मुनि सो सुनि सुखी भये कछुगात ॥
शिव प्रभुताई हिय विचारिकै सादर मुनिवर लिये बोलाय ।
शुभ्र महूरत महँ आछी विधि दीन्हीं लगन मगन धरवाय ॥
दै सो पत्री सप्तऋषिन को गहि पग विनय हिमाचल कीनि ।
आय ब्रह्मपुर पुनि मुनियन ने पत्रीकर विरंचि के दीनि ॥
ह्वै आनंदित विधि बाँच्यो त्यहि सुर मुनियन को दई सुनाय ।
भई खुशाली बहु देवन के नभते फूल दीन बरसाय ॥
बजे नगारा धुधकारा करि तुरही शंख घंट घरियार ।

साजे मंगल घट दशहू दिशि बंदनवार द्वार प्रति द्वार ॥
लगे सवाँरन सुर वाहन वर स्वच्छ विमान यान सविधान।
सुखद बधावा बाजन लागे रंभा करत नाच ऑगान ॥
महामगन मन गण शंभूके शिवको करन लाग शिंगार।
सो कहि गावत उर आवत जस शारद दया बुद्धि अनुसार ॥
प्रथमें निर्मल भरि गंगाजल शिवहि कराय दीन असनान।
आनि चौकपर बैठाय्यो पुनि कीन्हयों उचित रीति सविधान ॥
देव पितर की पूजादिक के सुंदर कीन मंगलाचार।
पुनि तदनंतर शिवशंकर कर साजन लगे उचित शृंगार ॥
मुकुट मनोहर शिर जटान को ऊपर गंगधार हहराय।
मौर सँवारयो तहँ साँपन को शोभा सुभग वरणि नहिं जाय ॥
कानन कुण्डल सोउ साँपन के सोहैं बाल चंद्रमा भाल।
अलकैं झलकें वरव्यालन की गलविष हृदय मुंडकी माल ॥
कण्ठम कण्ठा बरजतियन के बीछिन केरि गुंज गलमाहिं।
कंध जनेऊ स्त्रउनागन को भूषण रहित अंग कोउ नाहिं ॥
त्रिनयन अंजित रजअंजनशुभ दीपति अयनरहे छबिछाय।
भसम लपेटी सब देही महँ नखशिख दिव्यप्रभा दरशाय ॥
बाहुबजुल्ला बिसखपरन के कंकण खनखजूर के हाथ।
पहुँची दुमुहिंन की सोहत हैं मोहत छटा देखि रतिनाथ ॥
लाली बिच्छुन की ऑगुरिन महँ छल्ला मुंदरी दई सजाय।
वस्त्रबघम्बर की शोभा लखि पटरेशमी जाय सरमाय ॥
लसै करगत्ता कटि गोहंन को अहै लँगोट नागफन क्यार।
वेष अमंगल शिव मंगल कर दासहि देनहार फल चार ॥
डमरू धारण करि हाथे इक रिपु उन्मूल शूल इक हाथ।
वाहन नन्दी पर बैठे चढ़ि बन्दि अनन्द दानि शिव नाथ ॥

स० भूत बिताल कपाल लिये कर गाल औताल बजावत बाजे।
मंगलचार उचारत योगिनि नेग औ योग चैलन साजे ॥

बंदि पिशाचिनी राई औ लोन उतारत दीठि निवारण काजे ।
पान खवावत खांसी खबीसिनि देखिसमाज सबै सुरलाजे ॥
शोभा लखिकै शिव दूलहकी देवांगना बहुत मुसकाहिं ।
दूलह लायक अस सुंदरि तौ दुलहिनि तिहूंलोकमहँ नाहिं ॥
बिष्णु बिधातादिक देउता सब निज निज यान बिमानन साजि ।
चले बरातैं शिवशंकरकी शोभा कहत जात मति लाजि ॥
यदपिअनूपम सुरमण्डल सब ज्यहि लखि मोहिजातमनकाम ।
तदपि दूलहकी उपमा सम नहिंन बरात केर इतमाम ॥
तबइंद्रादिक दिगपालन ते हँसि अस कही विष्णु ने बात ।
निज निज सैना सब न्यारीकरि मगमहँ चलहु भिन्न ह्वैतात ॥
दूलह लायक नहिं बरात यह इतना कहा लेव मम मानि ।
जाय परारे पुर भीतर महँ कापरिहास करैहौ जानि ॥
विष्णु वचनसुनि सबदेउतागण हँसिनिजसेन सहितबिलगान ।
हँसे महेशौ तब मनहीं मन करि हरिव्यंग वचन अनुमान ॥
निरखि हँसौआ नारायण को शृंगबजाय शंभु सुखधाम ।
तुर्त बोलायो निज सैना को जाकर कहि न जाय इतमाम ॥
सुनि अनुशासन शिव स्वामी को आये सकल भूत बैताल ।
नाय नाय शिर शिव पायँनमहँ लागे रचन अनूपम ख्याल ॥
शंकर सैना की शोभा कछु तुम सन कहौं भाषि मुनिराय ।
दल बहुतेरे हैं ताहू महँ तिन तद्रूप छटा रहि छाय ॥
इक दल भूतन अरु प्रेतन को इक बैताल पिशाचन क्यार ।
खड़ो खबीसन को इक दिशिदल बिहँसत करत उच्च किलकार ॥
इक दिशि अगणित दलआये लै भैरवँ प्रमथ गुह्य परधान ।
नाचत गावत गाल बजावत आवत खात खवावत ज्वान ॥
झुण्ड चुरैलन को न्यारो इक जाकी दशा बरणि नहिं जाय ।
परम कुतूहल कर योगिनि दल इकदिशिरह्यो शोभ सरसाय ॥
दिव्ययोगिनी महा योगिनी औ हैं सिद्ध योगिनी नाम ।

अहै गणेश्वरि जूंभारी अरु काली कालरात्रि द्युति धाम ॥
भूत डम्बरी ह्रींकारी अरु नर भोजनी डाकिनी माय।
मुण्डधारिणी बाराही अरु प्रेतासिनी कराली काय ॥
ऊद्र्ध्व केशिनी शुष्कांगी अरु त्रिपुरान्तकी भाशुरी जानि।
विरूपाक्षी रक्ताक्षी अरु निशिचरि प्रेत वाहिनी मानि ॥
ऊद्र्ध्व विताली कंकाली सह है राक्षसी भयंकर गात।
वीरी क्रोधी कौमारी अरु भुवनेश्वरी ग्रामणी तात ॥
विश्वरूपिणी चामुण्डा लै आई मंत्र योगिनी आदि।
रक्त वेताली भीमारी तन देखत डरौ लेय डर लादि ॥
दुर्मुखि चक्री खट्वांगी अरु दीरघ लंब ओष्ठिनी आहि।
निजनिज आयुधकर साजेबर करत कलोल लोल चितचाहि ॥
काल अग्रिणी फटकारी अरु कलह प्रिया कण्टकी नाम।
विकटी घोरा धूम्राक्षी अरु विषलंघिनी आदि अभिराम ॥
सहस्राक्षी यमदूती सह यक्षी और मर्दिनी मान।
कामप्रचारणि अधोआननी खेटिनि करालिनी ये जान ॥
महाकपाली कामदण्डिनी औ नाटकी दीनि बतलाय।
अस्मर लोभा औ धूर्जटि सह चौंसठि कही योगिनी गाय ॥
अपने अपने चढ़ि वांहन पर आई महादेव के पास।
इनकी शोभा कहि गावै सब अस हैं कहां ज्ञान परकास ॥
नाना बाहन इन सबहिन के नाना वेष रहे दरशाय।
हाल यथावत् सो भांषे सब बहुतक ग्रंथ जाय बढ़ि भाय ॥

स० कोउ संवार सियार पै यार औ कोउ नहे गदहे रथमाहीं।
श्वानपैआसनज्वानकिंये कोउऋक्षचढ़ेकितन्योंदरशाहीं ॥
कोउ चढ़े अरना हरना पर सह वराह चढ़े कोउ जाहीं।
कोऊ अजाअजपै गजपैथित देव समाज विलोकिसिहाहीं ॥

कोउ बिन मुखके बहु मुखके कोउ कोउ बिन हाथ पावँको आय।
बहु कर पावन को दरशै कोउ बरसै छटा यथा तन भाय ॥

हैं बहुतेरे बिन नैनन के बहुतक बहुत नैन के ज्वान।
कोऊ तोंदारे तन दुर्बल कोउ अगणित वरण केर बलवान॥
कोउ गर्दभ मुख कोउ शूकर मुख कोउ बाँदर मुख परै दिखाय।
कोउ महिषानन वृषभानन कोउ बहुतक मेख मुखी भट भाय॥
मनुज कपालन अरु व्यालनकी माला लटकि रहीं हिय माहिं।
रुधिर लगाये सब अंगन महँ नंगे बदन लाज कछु नाहिं॥
लिहे खोपरी कर आमिष अरु शोणित पियत खात मग जात।
देखि आपनी असि सैना सब मनहीं मन महेश मुसकात॥
जैसी शोभा रह दूलह की तैसी सजी बराती आत।
होत कुतूहल बहु रस्ता महँ देखत अति अनंद दरशात॥
इतै हकीकति अस बीतति भै उत कर हाल सुनौ मन लाय।
रच्यो हिमाचलहू सामा शुभ माड़व अति अनूप सजवाय॥
कहिबे योग न सुंदरता त्यहि जनु निज हाथ वनायो मार।
चौक पुराई गज मोतिन की बंदनवार बँधाये द्वार॥
ध्वजा पताका परकोटन पर चहुँ दिशि झूमिझूमि बलखात।
मंगल कलशा भरि गंगाजल द्वारे धरे शोभ सरसात॥
यावत पर्वत हैं दुनियाँ महँ छोटे बड़े गिने नाहिं जायँ।
ताल तलैया नद नदिया अरु यावत सिन्धु बाग बन आयँ॥
नेउता दीन्ह्यों हिम सबहीको जस कछु रीतिभांति जगमाहिं।
धरि धरि सुंदर तन आये सब सहित समाज शेष कोउ नाहिं॥
आये लखिकै नेउतहरिन को हिमगिरि सहित मान सन्मान।
धाम सवाँरे ते प्रथमैं जे तिनमहँ यथायोग दियथान॥
पुर सुंदरता लखि लागै लघु कारीगरी विधाता केरि।
ताल बावली बन उपबन सब मानहुँ रहे सुघरता घेरि॥
केतु पताका घर घर सोहैं मंगल द्रव्य सुखद सामान।
चतुर निहारी नर नारी सब सुन्दर रूपवान गुणमान॥
जहाँ अवतरी जगदम्बा बर सो पुर बरणि कौन विधि जाय।

ऋधि सिधिसम्पतिसुखसामासबदिनप्रतिअधिक२अधिकाय॥
नगर किनारे चलि आई जब शंभु बरात सुनौ मुनिराय।
परी खलभली सब बस्ती महँ जहँ तहँ मोद रह्यो उमगाय॥
अपनी अपनी असवारी सजि सुभग बनाव बनाय बनाय।
चले लेन को अगवानी तब आदर सहित चाव उपजाय॥
देखि देवतन की सेना अरु शोभा विष्णु केरि सुखपांति।
भये अनंदित पुरबासी सब जान्यो सब बरात यहि भांति॥
शंभु समाजहि फिरि देख्यो जब तब अस ख्यालभयो खगराय।
विजुके बाहन छुटि भागे सब बालक भगे हृदय भय खाय॥
रहे सयाने धरि धीरज तहँ भौचाकि रहे देखि शिव साज।
छिपे लरिकवा भजि भौनन महँ मुखते कढ़त नाहिं आवाज॥
पूछैं माता पितु तिनते अस तुम कस भगे पूत भय खाय।
कहैं हकीकति तब लरिका सब कांपत जात गात थहराय॥
हाल बतावन हम तुमते कह मुखते कहि न जात कछु बात।
नगर किनारे चलि आये सो भूत पस्यात किधौं बरियात॥
वरौ बौरहा सम लागत है अंग उघार बरद असवार।
माल कपालन अरु व्यालन के भूषण बदन रमाये क्षार॥
वस्त्र के नाते बाघम्बर है सांपन केर सकल शृंगार।
भूत चुरैले सँग सोहैं बहु निश्चर प्रेत हजारन यार॥
ज़ीवत रैहै जो बरात लखि तिनकी अतिव पुण्य की भागि।
ब्याह देखि है सो गिरिजा को लरिकन कह्यो ऐस भय पागि॥
सुनि अस बातै उन लरिकनकी शम्भु समाज भयंकर जानि।
कहि समुझायो शिशु नीकीविधिसुतजनि डरौ बृथाभयमानि॥
उत अगवानी लै आदर सह दीन्ह्यौ सब सुपास जनवास।
आरति साजी इत मैना ने मंगलचार करत सहुलास॥
कञ्चन थारा लै हाथे महँ युवती सुहागिनी सब साथ।
परिछनि करिबे हित दूलह की आईं द्वार उपर हरषात॥

लाये दूलह को द्वारे पर करिबे हेत द्वार को चार।
सामा सबरी जुटि आईं तहँ होने हेत रीति ब्यवहार॥
नारद आये विष्णु पास तब औ यह बात कह्यो समुझाय।
शिव दिशि पुरिखा कोउ नाहीं हैं सो पद तुमहिं लेउ हर्षाय॥
चलौ करावहु द्वारचार अब समया गई आय नगिचाय।
सुनिमुनि आयसु अस लक्ष्मीपति चढ़िकै चले गरुड़ परभाय॥
आय पहूँचे पुनि द्वारे पर बैठे जहां शंभु गिरिराय।
गरुड़हि देखत खन नैनन ते भागे सकल सांप भय खाय॥
खुल्यो लँगोटा तब शंकर को छैंगे नाँग नाग गे भागि।
सकुचि मेहरिया सब भागीं तब आंखी मूँदि लाज बहु लागि॥
देखि तमाशा यहु शंकर को मनमहँ विष्णु लाग मुसक्याय।
हँसी करावन हित नारद तुम हमकहँ लायो इतै लेवाय॥
पुरुषहु सबरे सकुचाने मन भयो न द्वारचार व्यवहार।
देखि रमापति की करणी यह मन मुसक्यात बरद असवार॥
लखे दिगम्बर शिवशंकर तन अबलन हृदय लाज गइछाय।
भागि अगारन महँ पैठीं सब दशा सो कछू वरणि नहिं जाय॥
बरढिग पहुँचब बहु मुश्किल भा परिछनि होय कौन विधि भाय।
लौटे शंकर फिरि द्वारे ते औ जनवास पहूँचे जाय॥
बहु दुख बाढ़यो हिय मैना के कन्यैं लिह्यो गोद बैठारि।
नैनन आंशू बरसन लागे बोली बहु सनेह विस्तारि॥
ज्यहिंविधितुमकहँ सुंदरता असि दीन्ह्यसि सबप्रकार सुखसार।
त्यहिं जड़ बाउरवर कीन्ह्योंकस यह गुनिदुखी होत चितम्वार॥
जो फल चाहिय कल्पबृक्ष महँ सो हठि लगै बबुर की डार।
अरे निर्दयी विधि कीन्हे कह बार हजार तोहिं धिरकार॥
त्वहिं लै गिरिहौं गिरि ऊपरते नातरु अगिनिमांझ जरिजावँ।
या बहिमरिहौं कहुँ सागर महँ चाहै बरुकु होय बदनावँ॥
जियति आपने बर बाउर सँग करहुँ न सुता तुम्हारो व्याह।

रहौ कुवाँरी बरु सारी बय काले करौ बौरहा नाह॥
देखि दुखारी गिरिनारी को नारी सकल बिकल ह्वै जायँ।
रोवत धोवत चष आंशुन सों सुता सनेह शोचि विलखायँ॥
काह बिगारा मैं नारद का घटिहा जलम क्यार दहिजार।
दया न छुइगै कछु वाके तन कीन्ह्यसि घरु उजारि वहिंग्वार॥
आय सिखायसि मम कन्या को करि तपु गारिदीन वहिंगात।
मिल्यो बौरहा बर ताको फल महिंते कहि न जात कछु बात॥
मोह न माया कछु वाके जिय है अति निठुर करेजे क्यार।
आपु उदासी परघर नासी नहिं धन धाम बाम परिवार॥
पीर गर्भिणी की जाने का युवती जौन सदा की बांझ।
दिया बुझायसि घर मोरे का कीन्ह्यसि अन्धकार की सांझ॥
देखि दुखारी महतारी इमि बानी मृदुल भवानी माय।
बोलीं वाजिब जस चाहिय तस सबहि सुनाय सुधा बर्साय॥
बदी बिधाता की टरिहै ना माता हृदय मानु अस राह।
लिखा कर्म मम जो बाउर बर तौ फिरि दोष और को काह॥
तुम्हरे मेटे ते मिटिहैं ना अंक जो लिखे हमारे भाल।
दुःख बढ़ाये पछिताये अब ह्वै है कछु न लेहु करि ख्याल॥

स० करुना करुना मनमातु मृषा कुकलंकशिखा शिरपै धरुना।
परुना भ्रम में ग्रममें जरुना तम सागरमाहिं तथा तरुना॥
हरुनामति आपनि औखहुकी असनेह बढ़ाय बृथाडरुना।
बरुनांग उघार लिलार लिखा हठि पाउब सो यहितेटरुना॥

सुनत भवानी की बानीं अस यावत बाम वृन्द वहि ठाम।
दोष विधाता को दैदै सब शोचैं नयन आंशु भरि आम॥
तेही अवसर पर नारद मुनि आये सप्त ऋषिन लै साथ।
कहि समुझायो बहु मैना को जस कछु उचित रहै मुनिनाथ॥
सांची मानहुँ मम बानी तुम मैना समुझि शोचि मनमाहिं।
सुता तुम्हारी जगदम्बा यह शंकर प्रिया सहज शक नाहिं॥

स० शक्तिअनादिअजाविरजा सिरजाजगजैंसबही घटवासिनि।
विश्वविलासिनिआनँदराशिजयाविजयाडुखदासविनाशिनि॥
इच्छानुरूप स्वरूपप्रकासिनि वेदअखेदकहैंअविनासिनि।
वंदिविकासिनिबुद्धिविवेकसदाशिवकीअर्द्धंगनिवासिनि॥

पहिले जनमी दक्ष गेह महँ तब यहि भयो सती अस नाम।
तहाँ वियाही गै शंकर को कथा प्रसिद्ध सकल जग आम॥
इक दिन आवत मग शिवके सँग देख्यो तहां राम सुखधाम।
मोह बढ़ायो मन अपने महँ धरि तन भई रामकी बाम॥
त्याग्यो शंकर त्यहि कारण ते मान्यो नहीं कही शिव बात।
नाह जुदाई ते जरिगै सो पितु मख योग अग्नि महँ मात॥
जनमि तुम्हारे घर अबकी बहिं निज पतिहेत कीन तपभारि।
दुःख न मानौं जिय जानौं अस गिरिजासदाशम्भुकी नारि॥
कही बतकही सुनि नारद की तब सबही कर मिटा विषाद।
क्षणमहँ ब्याप्यो पुर अन्तर महँ घर घर यह बिचित्र संबाद॥
भये अनंदित अति मैना हिम बन्दे पारबती के पायँ।
भे सुखरासी पुरबासी सब यावत नारि पुरुष शिशु आयँ॥
घर घर मंगल की सामा सब साजे नाच गान सविधान।
द्वार द्वार प्रति धरि कंचन घट कीन्हे अति विचित्र निर्मान॥
विविध भांति की भई रोशइयाँ जसकछु सूप शास्त्र व्यवहार।
बसैं भवानी जहँ अच्छत तन तहँ की कहै कौन जेवनार॥
तुरत बरातिन बोलवायो हिम विष्णु बिरंचि देव सब जाति।
आसन दै दै बैठाख्यो सब बैठीं भिन्न भिन्न बहु पाँति॥
चतुर सुआर परोसन लागे व्यंजन बहु प्रकार के भाय।
जेंवन लागे सब देउता गण अति आनंद रही तहँ छाय॥
नारी गारी गावन लागीं करि करि विविध भांति परिहास।
सुनि सुनि देउता सुख पावत बहु वरणै कौन तौन मुदरास॥
भोजन करिभे जब नीकी विधि तब अँचवाय खवायो पान।

गये बराती जनवासे फिरि जाकर जहां बास अस्थान ॥
पुनि तदनन्तर मुनि आये चलि हिमको लगन जनाई आय।
व्याह समइया लखि ताही क्षण पठये सकल देव बुलवाय ॥
सबहि यथोचित दै आसन वर माड़व मध्य दीन बैठाय।
वेद रीति ते रचि वेदी शुभ लागे करन योग्य जस आय ॥
वेद कारिका बुध जन बाँचै युवती करैं मंगलाचार।
जाय न वरणो वहि समया कर व्याह उछाह मोद व्यवहार ॥
सुंदर कंचन सिंहासन पर बैठे शंभु द्विजन शिरनाय।
जानि सुअवसर तब मुनियनने गिरिजहि तहां लीन बुलवाय ॥
साथ सहेली लै आईं तहँ करि शुभ अंग अंग शृंगार।
रूप निहारत सुर मोहें सब कहि छवि लहै कौन कवि पार ॥
जन सुखदाता जगमाता यहि सब गुणखानि शंभुतिय जानि।
देव दण्डवत कै मनहीं मन निरखन लगे शोभ सुख मानि ॥
शुचि सुंदरता जगदम्बा की आनन कोटि कही ना जाय।
बुद्धि विशारद श्रुति शारद अहि वरणत हृदय माहिं सकुचाय ॥
गईं सहेली लै शिव के लग माड़व मध्य बैठ जहँ नाथ।
दै वर आसन तहँ बाईं दिशि दियो विठाय युक्ति के साथ ॥
पति पद पंकज अवलोकन को जिय ललचाय हीय सकुचाय।
कानि मानि कै बड़ ज्येठन की पै मन मधुप तहैं मड़राय ॥
मुनि अनुशासन ते गणपति को पूज्यो प्रथम शम्भु भवरानि।
करै न संशय सुनि यामहँ कोउ देवतासव अनादि जियजानि ॥
जस बिवाहकी विधि गाई श्रुति औ जसलोक माहिं व्यवहार।
सो करवायो सब मुनियन ने भले प्रकार सहित विस्तार ॥
गहि कुश कन्या कर पर्वत पुनि सौंप्यो शिवहि भवानीजानि।
पकर्यो करसों कर शंकर जब तब देवन उर खुशी समानि ॥

स० वेद उचारत मोद भरे मुनि देव पुकारत जै जै बानी।
उच्च अवाजन वाजन वाजहिं साजहिंमंगल गानसयानी ॥

फूल झरैं नभते द्विज बंदि अनंद महा पुरबासिन मानी।
शंभु शिवाकर व्याहभयो सोउछाह दिशादशहू प्रगटानी॥

घोड़ा हाथी बहु जातिन के सुंदर बस्त्र आभरण साजि।
उत्तम कंचन रथ शोभागथ जोते बहुत मोल के बाजि॥
पाटरेशमी मणि भूषण वर हीरा लाल जवाहिर माल।
अन्न प्रपूरण करि हाटक घट दासी दास दीन बहु जाल॥
यहि विधि दायज दै भूधर पति शिव सन कह्यो जोरिदुउहाथ।
हौं परि पूरण सब प्रकारते तुम कहँ काह देउँ मैं नाथ॥
गह्यों भरोसो पद कंजन को जस मन चहौ करौ निर्बाह।
तुम्हरे देबे के लायक मैं नाहिंन क्यहु प्रकार सुरनाह॥
श्वसुर बीनती सुनि शंकर प्रभु कीन्ह्यों समाधान सब भांति।
सासु आनिकै पग लागी पुनि प्रेम प्रवाह हृदय उमगाति॥
उमा हमारे प्रिय प्राणन सम घर किंकरी कस्यो त्यहि स्वामि।
कियो क्षमापन अब दूषण सब यह बरदेहु चहत अनुगामि॥
बहु समुझायो शिव सासौं कहँ सो घर गइ चरण शिरनाय।
उमै बोलिकै तब आदर सह लीन्ह्यों तुरत गोद बैठाय॥
लगी सिखावन फिरि सुन्दरशिख जसकछु धर्म मेहरियन क्यार।
पूज्यो सब दिन शिव पंकज पद पतिब्रत यहीं मुख्य व्यवहार॥
नैनन आंशू भरि भाषत बच लीन्हीं सुता बहुरि उरलाय।
वृथा बनाई तिय ब्रह्मैं जग परबश सुख न जाहि जग आय॥
भई दुखारी महतारी बहु प्रेम प्रवाह हृदय उमगानि।
अतिव बुझाये समुझाये ते धीरज धस्यो कुऔसर जानि॥
फिरि फिरि भेंटत गहि गिरिजा को कहीन प्रेम प्रीति सो जाय।
औरिउ युवती मिलि भेंटी पुनि दीनि अशीष सबहिं हर्षाय॥
गईं सहेली लै शंकर ढिग शिविका सुभग दीन बैठाय।
कीन अयाचक शिव याचक गण परजन नेग योग बताय॥
चले भवानी भर्त्र भवनहिं पुनि भई बरात बिदा सुखपाय।

नभते बर्षा करि फूलनकी हरषं हृदय देव समुदाय ॥
चले हिमाचल पहुंचावन कहँ आये बहुत दूरि जब साथ।
विविध भांतिते परितोषित करि कीन्ह्यो बिदातिन्हैं शिवनाथ ॥
लौटि हिमाचल घर आये जब तब सब बोलि शैलसर बाग।
दान मान युत पुनि सबही को कीन्ह्यों बिदासहित अनुराग ॥
शिव कैलाशहि चलि आये तब सुरसब बिदा मांगिगे धाम।
यहाँ हकीकति अस बीतति भै सुनिये अग्र चरित अभिराम ॥
जक्त मातु पितु भवरानी भव त्यहि शृंगार न कहौं बखानि।
करैं विविध विधि सुख भोगन कहँ भरैं अनंद कर्म मनबानि ॥
बहु दिन बीते हर गिरिजा को करत बिहार बिविध परकार।
भये षड़ानन तब पैदा जिन तारक असुर कीन संहार ॥
है निगमागम महँ बर्णित अरु विस्तृत लिखा पुराणनमाहिं।
जाहिर जगहू महँ आछी विधि षटमुख जन्म कर्म जोआहिं ॥
यहि हित थोरहि कहि भाष्यों मैं शंकर पुत्र चरित मुनिराय।
कथा मनोहर हर गिरिजा की मति सम तुम्हैं सुनाई गाय ॥

स० ब्याह उछाह शिवा शिवको यह जेनर नारि कहैं अरु गावैं।
प्रेम समेत निकेत यथा विधि मंगल माहिं सुनैं औ सुनावैं॥
ते मन वांछित सिद्धि समृद्धि सदा सुख सम्पति दंपति पावैं।
बंदि अनंदित या जग में रहि अंत शिवा शिव अंतिक जावैं॥

इतिश्रीभार्गबवंशावतंसश्रीमान्मुंशीनवलकिशोरात्मजस्य
श्रीमुंशीप्रयागनारायणस्याज्ञाभिगामी उन्नामप्रदेशान्तर्गत
मसवासीग्रामनिवासीपण्डितबंदीदीनदीक्षित
निर्मितश्रीविजयराघवखण्डेबालकाण्डे
द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

सिद्धि विनायक दिननायक हर गिरिजा गिरा गुरू पद ध्याय।
कथा अगारी की प्यारी अब मति अनुसार कहौं फिरिगाय ॥
चरित मनोहर सुनि शंकर को पायो भरद्वाज सुख भूरि।

तन रोमावलि भलि ठाढ़ी भइ गे चष प्रेम नीर सों पूरि ॥
बढ़ी लालसा बहुतु कथा पर बानी कढ़त प्रेम वश नाहिं।
दशा देखियह भरद्वाज की पुनि पुनि याज्ञवल्क्य हरषाहिं॥
धन्य जन्म है मुनि नायक तुव तुमहिं पियार शंभु जसगान।
शिवयश तुमकहँ प्रियलाग्यो बहु धन्य तुम्हार बुद्धिऔ ज्ञान॥
प्रीति न जाकी शिव पाँयन महँ तापर दया करैं नहिं राम।
राम भक्तके शुभ लक्षण यह अति प्रिय लगैं शंभु सुख धाम॥
रघुपति व्रतधर को शंकरसम बिनुअघ तजी सती असिनारि।
रामहिं प्यारो को शंकर सम जिन गुण कहत जात मतिहारि॥
प्रण करि कीन्हीं दृढ़ हिरदय महँ रघुपति भक्ति जक्त सुखदाय।
सुजन सुखारी त्रिपुरारी को शुभ यश कहत व्याधि भजि जाय॥
वर्णन करिकै सो प्रथमैं मैं लीन्ह्यों मर्म तुम्हारो जानि।
तुम शुचि सेवक रघुनंदनके औगुण रहित सुष्ठु गुण खानि॥
सविधि शीलता गुण राउर के भले प्रकार लीन मैं जानि।
बरणौं रघुपति की लीला अब सादर सुनहुँ तात सुख मानि॥
तोर समागम लहि मुनिवर सुनु जोमुद लह्यो कह्यो नहिंजाय।
यहीते महिमा सतसंगति की वर्णन करत वेद सकुचाय॥
रामचंद्र के गुण अगणित हैं कहिना सकैं कोटि शत शेश।
तदपि सुन्यों जस कहि भाषौं तस ध्याय गणेश शम्भु कमलेश॥
अहै शारदा कठपुतरी सम अन्तर्यामि सूत्रधरराम।
जापर दाया करैं जानि जन त्यहि उर अजिर नचावैं आम॥
स्वइ दायाकर रघुनायक को करौं प्रणाम माथ महिनाय।
मति समता के गुण वरणौं पुनि सुनिये सावधान मनलाय॥
परम मनोहर छबि सोहर वर सोहत धवल मेरु कैलास।
सुखमा बरसै नभ परसै जनु तहँ सब दिन शिव उमा निवास॥
सिद्ध तपस्वी अरु योगी जन सुर गंधर्व आदि मुनिवृन्द।
चारण किन्नर लै सुकृती सब बासि तहँ भजैं शंभु सुख कन्द॥

हरिहर द्रोही अरु पापी जन तहां न कबहुँ स्वप्न महँ जाहिं।
वह सुखदायक उन पुरुषन को जे शुचि निरत धर्म पथमाहिं॥
तापर बरगद को बिरवा इक महा बिशाल नयो सब काल।
त्रिविध पवन अरु छाँह शीतली बैठें तहां चन्द्रधर भाल॥
इकदिन त्यहि तरगे शंकर शिव तरु लखि खुशीभये बहु गात।
डासि बघंबर निज हाथे प्रभु सहजहि बैठि गये हर्षात॥
कुंद इंदु अरु दर तद्वत वर गौर शरीर बाहु आजानु।
तनमुनिवल्कल पग अंबुजसम नख द्युतिभक्त हृदयनभ भानु॥
भस्म भुजंगम आभूषण अरु आनन शरद चंद अनुहारि।
जटा मुकुट अरु सुर सरिता शिर लोचन नव सरोज छविवारि॥
कंठ श्यामता युत राजत शुभ सोहत बाल चंद्रमा भाल।
मानहुँ बैठो तन सुंदर धरि अति द्युति मान शांतरस आल॥
मातु भवानी भलि बेरिया लखि शंभु समीप गईं हरषाय।
प्रिया जानि कै करि आदर तब बाईं ओर लीन बैठाय॥
बैठीं शिव ढिग आनंदित ह्वै तब कछु पूर्व जन्म को हाल।
भयो अस्मरण जगदम्बाको हँसे सोशिवहृ हृदयकरि ख्याल॥
प्रीति अधिकतालखि स्वामी की बोली उमा बिहँसि मृदुबानि।
सकल लोक की हित कारी सो पूंछो चहैं कथा सुख खानि॥
अंतर्यामी शिव स्वामी मम तुव यश तीनि लोक विख्यात।
जीव चराचर अमर नाग नर सेवैं पद तुम्हार जलजात॥
अतिशै समरथ हौ जानत सब विद्याकला सर्व गुण धाम।
योग ज्ञान अरु विराग सागर दुखियन हेत कल्प तरु नाम॥
जो आनंदित हौ मोपर प्रभु जानत अपनि टहलुई मोहिं।
तौ अज्ञान मोर हरिये अब कहि हरि कथा निहोरौं तोहिं॥
ज्यहि के घरमा होय कल्प तरु सो क्यों सहै दरिद्र कि व्याधि।
अस विचारिकै शशिभूषणहिय मति भ्रमहरौ करौ निरुपाधि॥
मुनि परमारथ के वादी जे ब्रह्म अनादि कहैं ते राम।

शेष शारदा श्रुति पुराण सब गावैं रामचन्द्र गुण ग्राम ॥
तुमहुँ राति दिन राम नाम को सादर जपौ हृदय लव लाय ।
करौ बड़ाई बहु क्षण क्षण प्रति मन बच कर्मप्रीति दरशाय ॥
सोहँ बालक अवध राजेक की अज अगुण अलख गतिकोय ।
मोमन थिरता इमि पावत नहिं कछु संदेह हृदय महँ होय ॥

स० जोनृपबालकतौकिमिब्रह्म अनादिअनंत जिन्हैंकहिगावहु ।
रूप न रेख अलेख अशेष अभेद अखेद सदासमुझावहु ॥
बंदिअनंदित जोविभु व्यापक जासु पृथा निरुपाधिबतावहु ।
सोकिमिनारिवियोगलहैदुख मोहिंयथाविधिभाषिबुझावहु ॥

जानि अयानी रिस आनौ जनि करौसो मिटैमोह ज्यहिभांति ।
चरण निहोरों कर जोरों प्रभु यहि महँ बुद्धि मोरि भ्रमखाति ॥
जो प्रभुताई रघुराई की निरख्यों अछत जाय बन माहिं ।
सो सब कारण निर्द्धारण करि भय वश तुम्हैं सुनायों नाहिं ॥
तदपि न बोध्यो मम मलीन मन पायों फलौ तासु भलिभांति ।
अजहूं संशय कछु मोरे मन नाशहु तौन त्रिपुर आराति ॥
बहु समुझायो प्रभु तबहूं म्वहिं क्रोध न करौ समुझिसोनाथ ।
मोहप्रथम कर असनाहीं म्वहिं बिनवों बार बार धरिमाथ ॥
बड़ी लालसा है मोरे मन रघुपति कथा सुनन को स्वामि ।
सोकहि गावहु समुझावहुमोहिं श्रुति सिद्धांतशोधि उरजामि ॥
यद्यपि नारी अधिकारी नहिं रघुपति कथा सुनन को नाथ ।
तद्यपि मन वच क्रम दासी तुव प्रणवों चरण जोरि युग हाथ ॥
साधु छिपावें नहिं गूढ़ौ मत पावें जहां दुखी अधिकारि ।
मैं अति आरत ह्वै पूछौं प्रभु भाषौ राम कथा त्रिपुरारि ॥
पहिले कहिये वह कारण जिमि निर्गुण ब्रह्म धर्‌यो नर देह ।
रामचंद्र को अवतारहु पुनि वरणौ बाल चरित सह नेह ॥
कहौ जानकी हरि व्याही जिमि छांड़्यो राज दोष कहपाय ।
बनमा बसिकै जिमि राघव प्रभु कीन्ह्यों अमित चरित सुखदाय ॥

ज्यहि विधि रावण को माखो हरि सोऊ कहहु सहित विस्तार ।
राजि बैठिकै जिमि लीला बहु कीन्ह्यों रमा रमण कर्त्तार ॥
फिरि वह करुणा कर भाषौ कहिं अचरज जौन कीन श्रीराम ।
सहित आपने पुर परजन के किमि चलि गये आपने धाम ॥
तत्त्व बतावहु पुनि स्वामी वह ज्ञानी मगन रहत ज्यहि जान ।
भिन्न भिन्न कहि बतलावहु पुनि भक्ति विराग ज्ञान विज्ञान ॥
छिपे राम के गुण औरौजे सो सब मोहिं कहहु समुझाय ।
भ्रमतम नाशै परकाशै ज्यहि उर पुर विमल बुद्धि ह्वै जाय ॥
जौनों बातैं मैं पूंछी नहिं राखौस्वउ छिपाय जनि स्वामि ।
अंतर्यामी तुम जानत सब हौं मैं सब प्रकार अनुगामि ॥
तुम कहँ त्रिभुवन गुरु भाषैं श्रुति जानै नीच जीव को आन ।
दाया करिकै कहि गावो सब जाते होय मोर कल्यान ॥
प्रश्नउमा के स्वाभाविक वर सुंदर छल विहीन सुनि कान ।
भे आनंदित अति नंदीपति कहत न बनै तौन हरियान ॥
हिय उमगानी प्रभुलीला सब पुलकित प्रेम नीर चषपूरि ।
ध्यान धारिकै उर रघुपतिको पायो मोद सजीवन मूरि ॥
रहे मगन मन द्वै घटिका लग पुनि ह्वै सावधान सविधान ।
वर्णन लागे रघुनंदन गुण ज्यहि सुनि नशैं पाप के घान ॥
ज्यहि के जाने बिनु झूठौ स्वउ सांचु समान परै दिखराय ।
यथा दावँरी पहिंचान बिनु लागै सांप सरिस भय दाय ॥
पुनि ज्यहिजाने पहिंचाने ते जगत हिराय जाय इमि बाम ।
मिटै स्वप्न भ्रम जस जागे ते बन्दौं बाल रूप स्वइ राम ॥
सहज सब तरहं जगलागत है जिनकर जपत नाम सुखधाम ।
विविध अमंगल हरमंगल कर है त्यहि बार बार परणाम ॥

स० मार लजावनहार उदार अपार प्रभाधर दास सुखारी ।
शोभ भँडार शिंगार सुकीरति मोदपगार पृथा अविकारी ॥
बंदि अनंदित भक्त अधार स्वइच्छावतार धरा धुरि धारी ।

होहु प्रसन्न सो राम कुमार सदा अवधेश अगार बिहारी ॥

करि इमि बंदन रघुनंदन को आनँद कंद चंद धर भाल ।
बोले बानी सुख खानी पुनि परम दयाल काल के काल ॥
धन्य धन्य तर प्रिय गिरिजा तुम धन्य तुम्हार बुद्धि औ ज्ञान ।
तुम सम दूसर उपकारी जग मोरे हिय न होत अनुमान ॥
पूछ्यो रघुपति यश गाथा तुम पावन करन हार संसार ।
हो अति प्रेमी प्रभु पायँन की तुम कल्याण कीन जग क्यार ॥
राम कृपा ते गिरि कन्या अब सपन्यहुँ तव उदार मनमाहिं ।
शोक मोह अरु भ्रम संशय तम यावत मनविचार कछुनाहिं ॥
तदपिअशंका यहकीन्ह्यों स्वउ भाषत सुनतसकल हितहोय ।
सुनो यथामति कहि गैहों में तुम सम हितू और नहिंकोय ॥
सुनी हरि कथा जिन कानन नाहिं बाँबी सरिस अहैं ते कान ।
लख्यो न नैनन जिन संतन को ते चष मोर पंख अनुमान ॥
ते शिर मानहुँ कटुतोंबी सम हरि गुरु पगन नमत जे नाहिं ।
जिनहरि भक्तीहिय आनी नाहिं शवसम जियत तौन जग माहिं ॥
रामचंद्र के गुण गावै नहिं जीभसो दादुर जीभ समान ।
प्रभु चरित्र सुनि जो हरषै ना सो उर निठुर यथा पाखान ॥
सो रघुनंदन की लीला प्रिय सुनिये सावधान धरि ध्यान ।
सुरन सुहावनि मन भावनि अति असुरन मोह बढ़ावनि जान ॥
कथा रामकी काम धेनु सम सेवत सबहिं सर्व सुख दानि ।
सभा सज्जनन की सुर पुर सम को नाहिं सुनै गुनै असजानि ॥
कथा रामकी करतारी सम संशय विहँग उड़ावन हारि ।
पुनिस्वइ कलियुग तरु काटनको गिरिजा जानहुँ पैनिकुल्हारि ॥
मन लगाय कै सुनु सादर त्यहि मतिसम कहौंतोहिं समुझाय ।
रामचंद्र के जन्म कर्म गुण नाम अनन्त कहैं श्रुति गाय ॥
जस अनन्त हैं रघुनंदन प्रभु तथा अनन्त कथा गुण नाम ।
तद्यपि यावत सुनि पायों मैं मति सम तौन भाषिहौं बाम ॥

प्रश्न तुम्हारी सुख कारी शुभ प्यारी लगी मोहिं हिय माहिं।
नीकि लागि नाहिं एक बात म्वहिं यद्यपि कह्यो मोह वशताहि॥
तुम जो कह्यो कि राम और कोउ की अज अगुण ब्रह्म भगवान।
वई राम हैं सुत दशरथ के ज्यहि श्रुति गावधरहिं मुनिध्यान॥
कहैं सुनैं अस खल मानुष जग जिनको ग्रसे अयान पिशाच।
हरिपद द्रोही पाखण्डी शठ जानत नहीं झूठ औ सांच॥
अंध अकोविद अज्ञानी अरु मानी जासु फूटि गइ भागि।
छली कसाई अन्यायी ज्यहि काई विषै मुकुर मन लागि॥
लंपट कपटी मय लपटी ज्यहिं सपन्यहुँ सन्त सभा नहिंदीखि।
वेद असम्मत ते भाषैं नर जिनहिं न हानि लाभ की सीखि॥
मैलो दर्पन मन नैनन हत निरखैं राम रूप क्यहि भांति।
अगुणसगुणको ज्यहिविचारनाहिं कल्पित वचनबकैं दिनराति॥
भ्रमैं जक्तमहँ हरि माया वश अघटित तिन्हैं कहत कछु नाहिं।
अस बिचारिकै फिरगिरिजा जनि आनहुँ वृथा बात मुखमाहिं॥
भूत बयारी बश बातुल नर अथवा खल गवाँर मतवार।
बचन शोचिकै ये बोलैंना है कुविचार मंत्र इन क्यार॥
कियेपान जिन महा मोह मद तिनका कहा करिय नहिं कान।
अस विचारि कै तजु गिरिजा भ्रम भजु रघुनाथ चरण धरिध्यान॥
भेद न कछु है अगुण सगुण मा गावैं मुनि पुराण बुध वेद।
हैं ये बातैं अज्ञानिनकी जिनके हृदय भरो भ्रम भेद॥
अगुण अजन्मा अलखरूप बिन ईश्वर ब्रह्म कहावत जौन।
भक्त प्रेम वश सो. करुणाकर धरि तन सगुन होत जग तौन॥
ब्रह्म गुणनते है न्यारो जो सो कस सगुण रूप दिखरात।
पाला पानी अरु ओला जिमि बिलग दिखात एक ह्वै जात॥
भ्रम तम नाशन परकाशन को सूरज सरिस जासु बरनाम।
तहँ अज्ञानता अरु संशय को गिरिजा कहौ कौन है काम॥
राम सच्चिदानंद सूर्यवत् तहँ लवलेश मोह निशि नाहिं।

सहज प्रकाशी भगराशी सो ज्ञान विहान नाहिं त्यहि माहिं ॥
आनँद भरिबो दुख करिबो अरु धरिबो हृदय अहं अभिमान ।
जीव धर्म सब यह यावत जग परत दिखाय ज्ञान अज्ञान ॥
सर्वव्यापक राम ब्रह्म प्रभु परमानन्द परेश पुरान ।
सहज बिलासी अविनासी विभु दासन करनहार कल्यान ॥
तेजतमारी अविकारी हरि पुरुष प्रसिद्ध परावरनाथ ।
रघुकुलनामी ममस्वामी सो अस कहि शम्भु नवायो माथ ॥
निजभ्रम समुझैं ना मूरुख नर प्रभु पर धरैं मोह अज्ञान ।
जैसे अंबर महँ बादर लखि कहैं कि मूंदि गयो घनभान ॥
चितवत चंदा तन बाजे जन नैनन माहिं अंगुली लाय ।
ताको कारण तौ जानत नाहिं कहैं कि दुइ शशि परैं दिखाय ॥
विषयी पुरुषन को गिरिजा इमि आवत राम माहिं अज्ञान ।
जैसे गर्दा अरु धूवाँ को नभ महँ अंधकार को भान ॥
करनेवाली जे विषयनकी इन्द्रिय देह माहिं दरशायँ ।
तिनके देउता अरु जीवहु लै इकते इक सचेत ह्वै जायँ ॥
परम प्रकाशक इन सबहीकर राम अनादि अवधपति तौन ।
जगत प्रकाश्य प्रकाशक सो प्रभु मायाधीश ज्ञान गुण भौन ॥
जासु सत्यताते माया जड़ जग महँ सांचु सरिस दिखराय ।
भ्रम उपजावनि मोहबढ़ावनि औहै द्वैत बुद्धि की माय ॥
भास सीप महँ जस चांदी को औ जस भानु किरण महँ बारि ।
यदपि झूठ है तिहुँ कालन महँ तद्यपि भ्रम न सकै कोउ टारि ॥
जगत आसरे है हरिके इमि यद्यपि झूठ तदपि दुख देत ।
ज्यों सपने महँ शिर काटै कोइ हटै न तौन दुःख बिन चेत ॥
मिटै ऐस भ्रम ज्यहि दाया ते गिरिजा सो दयाल रघुराय ।
आदि अन्त ज्यहि कोहुँ पायो ना मति सम रहे शास्त्र गुण गाय ॥
डोलै दशहू दिशि पायँन बिन सब दिन शब्द सुनै बिन कान ।
करै कर्म बहु बिन हाथन के बिन मुख करै सर्व रस पान ॥

है बिन बाणी को बक्ता बड़ आँखिन बिना लखत संसार ।
सूंघै नाशा बिन गंधहु सब तन बिन महा पर्श अधिकार ॥
कर्म अलौकिक यहि भांतिन सब महिमा जासु बरणि ना जाय ।
शेश महेशहु गुण हारे कहि अमित अनंत रहे श्रुति गाय ॥
बुधजन गावैं ज्यहि उज्ज्वल यश मुनि गण धरैं जासु उर ध्यान ।
सोई दशरथ सुत भक्तनहित भे प्रभु कौशलेश भगवान ॥
मरत जीव लखि पुर काशी महँ करौं बिशोक जासु बलपाय ।
अहै चराचर को मालिक सो अन्तर्यामि स्वामि रघुराय ॥
विवशहु जाके गुण गाये ते दहैं अनेक जन्म के पाप ।
सादर सुमिरे भवसागर नर गोपद सरिस तरै बिनताप ॥
रामचंद्र प्रभु परमात्मा सो तहँ भ्रम अति असत्य तुव बानि ।
संशय लावत अस हिरदै महँ होय विराग ज्ञान गुण हानि ॥
शंभु निरंजन दुख गंजन की सुनि भ्रम भंजन बानि भवानि ।
महा अनंदित भइ हिरदै महँ गै मिटि सब कुतर्क की थानि ॥
दुष्ट निकंदन रघुनंदन के पाँयन भयो प्रीति विश्वास ।
संशय दुविधा खेद भेद भ्रम सबरे भये सहज में नास ॥
बार बार गहि प्रभु पंकज पद सविधि निहोरि जोरि द्वउपानि ।
सुंदर बानी शिवरानी तब बोलीं मनहुँ प्रेम रस सानि ॥
सुखद चंद्रमा की किरणन सम अंतर्यामि स्वामि की बानि ।
सुनि शरदा तप समभारी मम मिटिगो महा मोह भ्रमखानि ॥
दाया मंदिर तुम नाश्यो सब संशय मोर चोर चित क्यार ।
राम रूप मैं पहिंचान्यों अब भयो विषाद माद जरि छार ॥
बहु सुख पायो हरषायो हिय गायो जो न जाय क्यहु भांति ।
सब विधि दाया अब दासी पर स्वामि दयालु केरि दरशाति ॥
है इक विनती यह मेरी अब चेरी चरण कमल की जानि ।
यद्यपि सहज्यो हौं मूरुख मैं नारिनकारि भारि अज्ञानि ॥
तद्यपि मोपर जो प्रसन्न प्रभु सब अपराध कीन मम माफ ।

तौ मैं पूंछा जो पहिले कहि सो सब भाषि बतावहु साफ॥
ब्रह्म उदासी अविनासी प्रभु भासी सर्व आतमा राम।
स्वबशविलासी सुखरासीविभु नरतनु धस्यो नाथक्यहिकाम॥
कोमल बाणी सुनि गिरिजा की सब विधि प्रेम रामपर जानि।
अतिव बड़ाई करि बोले तब शंकर शूल पानि सुख खानि॥

स० भाषत राम कथा सुयथामति आपति नाशनि वेद बखानी।
मानस राम चरित्र विचित्र पवित्र पदारथ चारिहु दानी॥
कागभुशुण्डि कहीजोसही खगनाथसुनी गुनीअमृतवानी।
पान करौ रस सो उमगान अमान धरौ उर ध्यान भवानी॥

भई बतकही सो जौनी विधि अतिव उदारु चारु संवाद।
गुप्त न राखब कहि भाषब सो ज्यहिसुनि मिटैतुम्हार विषाद॥
पहिले सुनिये मन गुनिये अब सुन्दर रामचंद अवतार।
जौने कारण तन धारण करि चरित अपार कीन संसार॥
पार न पायो कहि गायो ज्यहिं शारद नारदादि वक्तार।
हारि मानिगे सब हिरदै मा भाषत तौन बुद्धि अनुसार॥
हेतु यथा तथ कहि जावै नाहिं ज्यहि हित होय राम अवतार।
मनसा वाचा अरु कर्महुँ ते राम अतर्क अमित विस्तार॥
मत हमार तौ है प्यारी अस तद्यपि श्रुति पुरान मति मान।
भाषि बतावत तस गावत मैं अपने ज्ञान बुद्धि अनुमान॥

स० धर्म सुकर्म घटै जबहीं जब भर्म पटै औ कटै श्रुतिबानी।
पाप अधर्म अटै धरती महँ लाज लटै उलटै जग कानी॥
पुण्य प्रताप प्रभा पलटै प्रगटै खलनीच निशाचर मानी।
धारत हैं अवतार तबै तब राम हरैं भुविभार भवानी॥

असुरन घालैं सुरपालैं जग राखैं अपनि वेद मर्याद।
महि विस्तारहिं अति उज्ज्वल यश भक्तन सदा देत अहलाद॥
गाय गाय कै सो उज्ज्वल यश भव निधि तरैं भक्त सहुलास।
जन हित दाया कर धारत तन टारत दुःख फांस अनयास॥

राम जन्म के बहु कारण प्रिय परम विचित्र एक ते एक।
इक दुइ कारण सो भाषों कहि सुनिये सह विवेक करि टेक॥
द्वारपाल दुइ नारायण के जय अरु विजय नाम जिन क्यार।
विप्र शापते द्वउ भाई तिन पाई असुर देह तमसार॥
हिरण्याक्ष अरु हरणाकुश द्वउ जग महँ विदित इन्द्र मदहारि।
समर लड़ाँके अति बांके भट मास्यो इक बराह तन धारि॥
नर हरि तन धरि हरणाकुश कहँ मास्यो सुयश कीन विस्तार।
आरत टास्यो कायाधव को आपन भक्त जानि कर्तार॥
भये निशाचर ते दोऊ फिरि रावण कुम्भकरण अस नाम।
बड़े लड़ैया द्वउ भैया जिन देवन जीति लीन संग्राम॥
मुक्तन तेऊ भे मारे प्रभु द्विज कर तीनि जन्म को शाप।
तिन हित कारण तन धारण करि प्रगटे एक बार प्रभु आप॥
कश्यप अदिती पितु माता तहँ दशरथ कौशल्या विख्यात।
एक कल्प महँ अवतारण प्रभु यहि विधि भये भक्त सुखदात॥
लड़े जलन्धर सन देउता जब भे अति दुखी पराजय पाय।
तब दुख नाशन हित देवन को प्रभु यक कल्प धस्यो नर काय॥
किह्यो घोर रन शिव दानव सन सो अति बली न पायो मारि।
वहि दानव पति जालन्धर की अतिशय पतिव्रता रह नारि॥
त्यहि बल शंकर जालन्धर को पायो जीति समर में नाहिं।
छल करि टास्यो प्रभु ताको व्रत है यह विदित बात जग माहिं॥
काज देवतनको कीन्ह्यों हरि जब यह मर्म लीन त्यहिं जानि।
शाप क्रोध करि तब दीन्ह्यों वहिं त्यहि स्वीकार कीन धनुपानि॥
तहां जलन्धर भो रावण त्यहि रण हति राम दीन परधाम।
एक जन्म को यह कारण है प्रभु धरि देह कीन सुरकाम॥
सुनि सुनि वरणी सो कवियन बहु प्रति अवतार कथा प्रभु केरि।
गाय गाय के ज्यहि सज्जन जन आखिर लेत राम पद हेरि॥
क्रोधित ह्वै के नारायण को नारद शाप दीन यकबार।

सांचो करिबे हित ताको प्रभु लीन्ह्यों एक कल्प अवतार ॥
उमा भवानी सुनि वानी यह चकित बहुतु भई मन माहिं ।
सब गुण खानी अति ज्ञानी मुनि सांचे विष्णु भक्त शठ नाहिं ॥
तिन क्यहि कारण नारायण को दीन्ह्यों शाप क्रोध उर आनि ।
का अस बिगस्यो रमानाथ ते कहौ सो शूलपानि अनुमानि ॥
तबतौ शंकर हँसि बोले अस ज्ञानी मूढ़ प्रिया कोउ नाहिं ।
जब हरि करिबौ ज्यहि चाहैं जस तब त्यहि तैस होय क्षण माहिं॥
सादर सुनिये भरद्वाज सो मति सम कहौं राम गुण गाथ ।
सदा निरंजन भव भंजन प्रभु गंजन कोह मोह रघुनाथ ॥
अतिशै पावनि मन भावनि इक हिमगिरिगुहा महा सुखसार ।
बहै सुहावनि त्यहि निकटै महँ विमल तरंग गंग की धार ॥
परम मनोहर लखि आश्रम अस नारद ऋषिहि नीक बहुलाग ।
रमे अनंदित ह्वै ताही थल प्रभु पद प्रकट भयो अनुराग ॥
मिटी शापगति हरि सुमिरणते सहज समाधि लागित्यहिठाम ।
दशा देखिकै मुनि नायक की इन्द्र डेराय बोलायहु काम ॥
आदर करिकै समुझायो त्यहि मुनिकी तप समाधि को हाल ।
संग अंगना लैजावहु तुम तहँ कछु करौ बिघन को चाल ॥
मुनि तप खंडित ह्वै जावै जो तौ सब सुधरिजाय मम काज ।
सुनि असशासन सुरनायकको चलि भो काम साजि सबसाज ॥
इन्द्र डराने यहि कारन मन मम पुर लीन चहत मुनिराज ।
याते पठयो रति नायक को मुनि मन बिघन करे के काज ॥
जेजन कामी खल लोलुप जन सब सन डरैं काग की नायँ ।
यहै विचारत मन अपने महँ मम भषुयेन टारि लैजायँ ॥
सूखहाड़ लै शठ कुत्ता जिमि भागै डरै देखि मृगराज ।
छीनि न लेवै मन देवै अस तिमि सुर राजन लागत लाज ॥
चलि फिरि तहँवां ते आतुर जब आयो तौन ठाम महँ काम ।
अपनी माया सों निर्मित करि रच्यो वसंत तन्त अभिराम ॥

भांति भांति के तरु फूले बहु भूले भ्रमर करैं गुंजार।
पिक अरु कोकिल किलकारैं मुनिको अस ज्यहि न पछारैं मार॥
मंद सुगंधित अरु शीतल अति डोलन लगी बाय सुखदाय।
जोंनि बढ़ावै कामागिनि हठि जो तन तनकि जाय छुइभाय॥
स० काम कला अभिराम सबै सुखाम विराम डगावन लागीं।
गान विधान करैं स्वरतान सोंज्ञान गुमान भगावन लागीं॥
पानि उठाय नचैं बहुभायसों काम कृशानु जगावन लागीं।
रूप छटा दरशाय सुभाय बलाय किलाग लगावन लागीं॥
देखि सहायक हरषान्यो मन रचै प्रपंच लाग बहु मार।
कला करोरिन करि हारयो तब मुनि उर कछुन भयो बेकार॥
डरयो मनो भव अपनेहीं डर अपनहिं देनलाग धिरकार।
चापि सकै ना कोउ ताकी हद जाके रमानाथ रखवार॥
रहीं सहायक रंभादिक जे तिन सह हारि मानि मन मैन।
परयो जाय कै मुनि पायँन महँ कीन्ह्यासि विनय भाषिदुखबैन॥
क्रोध न आयो कछु नारद मन कीन्ह्यों सावधान बहु काम।
नाय पायँ शिरलै आयसु तब सहित सहाय गयो निजधाम॥
मुनिसुशीलता अरु करणी निज सुरपति सभाबखान्योजाय।
अचरज मान्यो सुनि सबहीने यह प्रभुभक्ति केरफलआय॥
इतै हकीकत अस बीतति भै उत नारद को सुनौ हवाल।
काम जीतितै भै अहमिति मन गमने जहां चंद्रधर भाल॥
मार चरितसब बिस्तारित करि शिवहि सुनाय दीनसविधान।
सो सुनि शंकर उर जान्यो अस मुनि मन बढ्यो बहुत अभिमान॥
कहि समझायो तब शंकर ने मानौ विनय मोरि मुनिराय।
कथा सुनायो जस मो कहँ यह तस जनि हरिहि सुनायो जाय॥
चले प्रसंगौ यह कबहूं कहुं तुम ना कह्यो कोटि परकार।
नाहिंत नीको कछु होइहै ना मान्यो मोर कहब यह यार॥
दीन सिखापन हितकारी शिव सो नहिं नीक नारदहि लाग।

कौतुक सुनिये भरद्वाज सो करिकै राम पगन अनुराग ॥
करिबो चाहैं रघुनन्दन जो सोई अवशि होय तिहुँकाल ।
मेटन वालो कोउ नाहीं त्यहि है यह सत्य बात खगपाल ॥
मुनि मन भाई नहिं शंकर सिख तब गे ब्रह्मलोक को धाय ।
हाल बतायो कहि बापौते कछु दिन तहां रहे सुखपाय ॥
इक दिन करतलवरबीणा लै सुख सह करत स्वामि गुणगान ।
क्षीरसिंधु गे मुनिनायक तब जहँ पर सदा बसत भगवान ॥
मिले अनंदित उठि लक्ष्मीपति आसन स्वच्छ लीन बैठाय ।
पूजि यथोचित मुनि स्वागत करि बोले बिहँसि चराचर राय ॥
बहुत दिननपर करि दाया इत दर्शन दियो आय मुनिनाथ ।
आयसु दीजै मम लायक सो पूरण करौं सविधि धरिमाथ ॥
बुद्धि बिशारद ऋषि नारद तब बोले बैन सहित अभिमान ।
यद्यपि बर्ज्यो पहिलेही शिव तद्यपि मार चरित सविधान ॥
भाषि सुनायो नारायण को माया राम केरि बलवान ।
जाहिन मोहै जग कोहै अस सुनिये भरद्वाज मतिमान ॥
रूखो चेहरा करि औसर त्यहि कोमल वचन कह्यो भगवान ।
मिटैं तुम्हारो सुमिरेही ते सबरे मोह मार मद मान ॥
मोह होत है मन ताके मुनि जाके हिय न ज्ञान बैराग ।
ब्रह्मचर्य्य व्रतरत ज्ञानी तुम काकरि सकै काम खटराग ॥
फिरिउ गरूरै युत बोले मुनि तुम्हरी दया आय भगवान ।
हृदय विचार्‌यो तब दायानिधि मुनि उर प्रकट भयो अभिमान ॥
मेटि डारिहौं सो आतुर मैं मो प्रण करब दास कल्यान ।
मोर तमासा मुनि नायक हित करिहौं अवशि तौन सविधान ॥
शोचि रमापति अस लीन्ह्यों मन मुनि सन कह्यो भाषि सोनाहिं ।
हरि पद बंदन करि नारद पुनि गमने बड़ गरूर मन माहिं ॥
श्रीपति माया निज प्रेरी तब औ सब हाल दीन समुझाय ।
देर न लाई चलि आई सो जौनी राह जात मुनिराय ॥

नगर अनायासि तहँ आगे यककरिकै अतिअपार बिस्तार।
रचना उत्तम बैकुण्ठौते देखत मोहिजात मनमार॥
बसैं तहांपर नरनारी बहु जनु तनुधरे अमित रतिकाम।
शोभा सरसै छबिबरसै बर निमने बने अनेकन धाम॥
तौनी नगरी महँ राजा जो ताको अहै शीलनिधि नाम।
अगणित सेना हय हाथी अरु राजसमाज केर इतमाम॥
बिभव बिलास्यो सो सुरपति सम नीतिनिवास तेजबलरासि।
विश्वमोहनी त्यहि कन्या यक मोहै रूपदेखि श्री खाँसि॥
सब गुणराया हरिमाया सो शोभा तासुकही किमिजाय।
करै स्वयंबर पितुताको तहँ आये बहुत भूप उमराय॥
गे नारदहू चलितौनेपुर देख्यो अति अनूप इतमाम।
नगर निवासिनसों पूंछ्यो पुनि आये चरित जानि नृपधाम॥
पूजन करिकै बहु भाँतिनते भूपति मुनिहिं लीन बैठाय।
त्रिभुवन धन्या निजकन्या सो लीन्हीं मुनि समीप बोलवाय॥
हाथ जोरिकै नृपभाष्यो तब हे मुनिराय दयाउरलाय।
सब गुण दूषण यहि कन्याके कहि म्वहिं सांचुदेहु बतलाय॥
लखि सुंदरता नृपकन्या की नारद भूलि गये बैराग।
रहे निहारत बड़ी बारलगि बाढ़ो उरअपार अनुराग॥
लक्षणताके लखिभूले मन गई अनंद वृन्द उरछाय।
जो नरव्याहै यहि कन्याको निश्चय तौन अमर ह्वै जाय॥
जीति न पावै त्यहि रणमाकोउ सेवैं सकल चराचर ताहि।
सब सुखपावै सो दुनिया मा व्याहै सुता सुंदरी जाहि॥
शोचि सुलक्षण सबराखे उर भूपहि कछु बनाय बतलाय।
सुता सुलक्षणि सब भाँतिन तुक यह कहि विदाभये मुनिराय॥
शोच समान्यो बहुनारद मन करौं उपाय तौन मैं जाय।
त्रिभुवन धन्या यह कन्या म्वहिं व्याहै ज्यहि प्रकार हरषाय॥
यहिक्षन जपतप कछुहोवैना हेबिधि मिलै कौन बिधि बाल।

मम तन शोभा आसिनाहीं है रूप अनूप चही यहिकाल ॥
रीझै कन्या ज्यहि देखेते उर महँ डारि देहि जयमाल ।
होय मनोरथ परिपूरण तब किमि कै जाय युक्ति ततकाल ॥
हरिसन मांगों सुन्दरता तौ लगिहै देर तहांपर जात ।
हितू न हरिसम मम दूसरकोउ पुरवैं वई मोरि यह बात ॥
वहिक्षन विनती बहुकीन्हीं मुनिसो सुनि प्रकटभये भगवान ।
प्रभुहि देखिकै मुनि हर्षेतब होइहि अब हमार कल्यान ॥
कथा सुनाई सब दुःखित कै होहु सहाय दया दरिआय ।
रूप आपनोदै अवसर यहि मोर बिवाह देउ करवाय ॥
और भाँतिते वहि पैहौं ना इतना कहा मानिलेउ म्वार ।
ज्यहि बिधिमंशा परिपूरै मम बेगिसो करौ दासमैं त्वार ॥
लखि बड़ाबिक्रम निजमायाको बोले हरिदयालु मुसक्याय ।
करौ न संशय कछु हिरदय मा मानहुँ मोर बचन मुनिराय ॥
तुवहित होई हठि जौनीबिधि करिहौं युक्ति तौनि मनलाय ।
तुम समप्यारो भक्तहमारो जग महँ द्वितिय नाहिं दिखराय ॥
रोगी माँगै जस कुत्सित पथ वैद्य न देत जानि त्यहि हानि ।
यहिबिधि तुम्हरो हितकरिहौं मैं कहि असगुप्तभये धनु पानि ॥
भये मूढ़ मुनि प्रभु मायाबश समुझि न सके गूढ़ हरि बानि ।
होनहार तौ कछु औरै है सो हठि हुआ चहै भवरानि ॥
चलिभे नारद फिरि तहँवाँ को जहँ पर रची स्वयंबर भूमि ।
निज निज आसनपर बैठे नृप सहित समाज साज सों भूमि ॥
मुनिउँ विराजे इक आसनपर बहु हर्षाय हृदय अलसाय ।
रूप अनूपम है मेरो अब म्वहिं तजि बरै आन नहिं जाय ॥
मुनि हितकारण हरि करुणाकर दीन कुरूप न जाय बखानि ।
काहुँ न पायो लखि कौतुक सो सब जन रहे देव ऋषि जानि ॥
रहे तहां पर दुइ शंकर गण जानैं सकल तौन यह हाल ।
फिरैं तमाशा अवलोकत दुउ धारे विप्र रूप सुविशाल ॥

बैठे नारद ज्यहि अस्थलपर कीन्हें हृदय रूप अभिमान।
तहँ महेश्वर गण बैठे द्वउ जानत नहीं बात यह आन॥
करें हँसौआ ते नारदकर परे सुनाय मुनिहिं सो भाय।
सुन्दरताई भलि दीन्ही हरि रूप अनूप बरणि नहिं जाय॥
रीझिहि कन्या छबि देखत खन इनको बरी जानि भगवान।
हँसें शंभुगण यहि भाँतिन कहि मुनिहिं न सूझ नष्ट भो ज्ञान॥
लख्यो न काहू ने कौतुक सो सुनिये अग्र चरित हरियान।
जब नृपकन्या जयमाला लै आई रंगभूमि अस्थान॥
रूप बिलोका त्यहिं नारदको तुरतै गयो क्रोध उरछाय।
बांदरकोसो मुखलागत अरु देह कराल रही दरशाय॥
संग सहेली लै कन्या तब गमनी नृप मराल की चाल।
देखत डोलै सब राजन को लीन्हें कर सरोज जयमाल॥
ज्यहि दिशिबैठ मुनि फूलेमन भूलि न लख्यो तौन दिशिबाल।
पुनिपुनि उचकैं मुनि आकुल ह्वै शिवगण हँसें देखिसो ख्याल॥
गे तहँ नृपतन धरि लक्ष्मीपति रूप बिशाल महा छबिआल।
राजकुमारी लखि वारी सो तुरतहि डारिदीन जयमाल॥
दुलहिनि लैगे तब कमलापति राजसमाज भई बिन आस।
मुनि अति व्याकुल भेऔसर त्यहि कीन्ह्यों मोहज्ञान बुधिनास॥
छूटिगिरै जसमणि गांठीतें ताके शोच रंक बिलखाय।
दशा तैसिही भै नारदकै वरणी जो न जाय खगराय॥
हरगण हँसिकै तबबोले अस निज मुख मुकुर निहारौ जाय।
असकहि भागे भयपागे द्वउ सुनु प्रिय अग्रचरित मनलाय॥
झाँकि बारिमहँ मुखदेख्यो मुनि वेष बिलोकि गई रिसछाय।
दियो शाप तब शिव दूतनको जो अति कठिन कहो नहिं जाय॥
जाय निशाचर तुम होवो शठ कपटी पाप रूप द्वउभाय।
हमरे हँसिवे कर लेवहु फल अब जनि हँस्यो बहुरि मुनिपाय॥
जाय विलोक्यो फिरि पानी महँ आपन रूप पस्यो दिखराय।

तद्यपि धीरज उर आयो ना भावी अति बलिष्ठ सबठायँ॥
ओंठ फरकत मुख बकत बहु तीखी तकनि क्रोध मनमाहिं।
क्षीरसिंधु की गहि रस्ता तब आतुर चले रमापति पाहिं॥
शापित करिहौं की मरिहौं हरि जग महँ मोर करायो हास।
होय शत्रुता अरु याते कस भो विसवास माहिं हितनास॥
मिले रमासह बिच मारग हरि लीन्हें राजसुता स्वइ साथ।
मीठी बानी सों बोले प्रभु व्याकुल कहाँ चले मुनिनाथ॥
सुनि प्रभुबानी रिस आनी मुनि माया बश न रह्यो उरज्ञान।
लाग सुनावन नारायणको निन्दित बचन भरे अभिमान॥
देखि सकौना परसंपति तुम इर्षा छल तुम्हार व्यवहार।
भला दूसरे कर चाहौ ना थाहौ हृदय गर्व अधिकार॥
सिंधु मथत महँ बौरायो शिव दीन्ह्यों जहर पान करवाय।
मदिरा दैत्यन को दीन्ह्यों हठि लीन्ह्यों आपु रमा मणिजाय॥
अपन स्वारथीहो सांचेतुम यह हम जानि लीन भलिभांति।
स्वेच्छाचारी अपकारी बहु जानि न जाति जाति अरुपांति॥
भलेहि नकारा तुम डारोकरि औ भलकरौ जौन बेकार।
बिस्मय हर्षन कछु आनौ मन जानौ नहिं असार औसार॥
डहकि डहकिकै सब काहू को तुम अब परकि गयो मनमाहिं।
तनकिउ शंका उरधारौना परहित हितू बिचारौ नाहिं॥
कर्म शुभाशुभ करि डारो तुम तेउन तुम्हैं देयँ दुख हानि।
सीधाकीन्ह्यों नहिं काहूने अबलगि तुम्हैं लीन हम जानि॥
बायन दीन्ह्यों अब नीके घर पैहौ अपन कीन फलताहि।
बंच्यो मोकहँ धरिदेही जो सोतन धरौ शाप मम याहि॥
कीनि हमारी कपि आकृति तुम सोकपिकरैं सहाय तुम्हारि।
निन्दा भारी तुम कीन्ह्यों मम ताते हरै तुम्हारिउ नारि॥
हम दुखपावा जसतियके हित तसतुम दुखी होउ बनजाय।
सुनि असबानी मुनि नारदकी हरि शिर धस्यो शाप हरषाय॥

मोह नशावन हित नारदको प्रभु यह चरित कीन अभिराम।
फेरि प्रबलता निज मायाकी तुरत खैंचिलीन भगधाम॥
दूरि निवारी हरिमाया जब तबतहँ रमा न राजकुमारि।
मोह पलान्यो मुनि नारदको जनु कोहुँ दीन नेत्रतम टारि॥
तब उर डरिकै हरिपग परिकै धरिकै माथ जोरि द्वउ हाथ।
बिनवन लागे नारायण को हे जनप्रणत कल्पतरु नाथ॥
पाहिपाहि हौं तुव शरणागत क्षमौ दयालु मोर अपराध।
कह्यों दुर्बचन बहुतेरे मैं क्यहि बिधि मिटै पापकी बाध॥
शाप सुनायों जो स्वामी को सो क्यहु भांति झूठ ह्वैजाय।
तब अस भाष्यो नारायण ने यह सबभयो मोर मनपाय॥
करौ चिंतवन जनि याको मुनि अब तुमजपौ शंभुसतनाम।
मोह नशाइहि मिटिजाइहि दुख आइहि हृदय तुरतबिश्राम॥
शिव सम प्यारो कोउ नाहीं म्वहिं अस जनितजौभूलि बिश्वास।
तिनको कहना तुम मान्यो न काहे न लहौ बिपति अनयास॥
दया न जापर शिव लावत हैं पावत सो नहिं भक्ति हमारि।
अस उरधरिकै दुख परिहरिकै बिचरौ जगत स्वइच्छाचारि॥
अब न तुम्हारे लग माया मम ऐहै कबौं सुनौ मुनिराय।
मोह सतैहै ना कबहूं त्वहिं जैहै सब बिकार दुरिआय॥
मुनिहिं सिखावन दै याबिधि पुनि अंतर्द्धान भये भगवान।
सत्यलोक को गे नारद चलि मगमहँ करत रामगुण गान॥
मुनिहिं बिलोक्यो शिव दूतन तब मगमहँ जात हर्ष के साथ।
कांपतउर महँ चलिआये ढिग बोले बैन जोरि द्वउहाथ॥
बिप्र न आहिन हम शिवके गण मानिय सत्य बात मुनिराय।
कीन्ह्यों दूषण बिन जाने तुव ताको फलहु लीन हम पाय॥
शाप अनुग्रह कहिभाषौ अब उरते क्रोधभाव बिसराय।
सुनिकै बिनती शिवदूतन की मुनि असकह्यो दयादरशाय॥
होउ निशाचर तुम दोऊ जन बल ऐश्वर्य तेज आगार।

अपने भुजबल जग जितिहौ जब तब हरिधरहिंमनुजअवतार॥
रणमहँ मरिहौ हरिहाथे ते धरिहौ फेरि जन्म जगनाहिं।
सुनि असबानी मुनिनायक की शिवगण खुशीभये मनमाहिं॥
माथनायकै मुनिपायन महँ गे चलि द्वऊ शम्भुगण भाय।
काल पायकै भे निश्चरबर जस कछु कह्यो रहै मुनिराय॥
एक कल्प महँ यहि कारण प्रभु धारणकीनमनुज अवतार।
देव उधारन खलदल दारन टारन हेत भूमि को भार॥
अहैं अनेकन जन्म कर्म इमि हरिके अति बिचित्र सुखदाय।
गाय गायकै ज्यहि सज्जन जन भवनिधिपार होत हरषाय॥
कल्प कल्प प्रति प्रभुदायाकर धारत भक्तहेत अवतार।
सुंदर कौतुक करि नाना विधि टारत अमित धरित्रीभार॥
कथा मनोहर तब तबकी ये मुनियन प्रगट करी बहुगाय।
छन्द प्रबंधित करि सोई अब कबियन ग्रंथ दीन दरशाय॥
अचरज मानै ना चातुरजन है यह सत्य बात सबकाल।
हरि अनंत हरि कथा अनंतहु श्रुति अरु संतकहत यहहाल॥
चरित मनोहर रघुनायक को कल्प करोरि गाय ना जाय।
मतिसम भाष्यो सो बंदीद्विज जस शिवशिवै कह्यो समुझाय॥
यहि हित भाष्यों यह प्रसंग में तुमते भरद्वाज मतिमान।
मोहैं ज्ञानी मुनि माया महँ तबका नीच जीवहै आन॥
प्रभु खेलवारी अविकारी अरु दासन करनहार कल्यान।
सेवत सहजे दुखनाशक अरु उरपुर बिमल प्रकाशक ज्ञान॥
सुरमुनि मानव कोउ नाहीं अस माया प्रबल न मोहै जाहि।
अस विचारि कै मन अपने महँ मायापतिहि भजो चितचाहि॥
दूसर कारण सुनु गिरिजा पुनि कहौं विचित्र कथा विस्तारि।
ब्रह्म निरंजन अज अनुपमने ज्यहि हित लीन राम तन धारि॥
बन महँ घूमत ज्यहि देख्यो हम भाय समेत किये मुनिभाय।
जासु चरित के अवलोके तुम सती शरीर गइउ बौराय॥

मिटी न छाया सो अजहूं लग हमहूं बहुत कहा समुझाय।
भ्रम रजुहारी सुनु प्यारी अब सो रघुराय चरित सुखदाय॥
यावत लीला तिन कीन्हीं जग धरिकै अति उदार अवतार।
गोय न रखिहौं मैं भषिहौं सब अपने ज्ञान बुद्धि अनुसार॥
सुनि शिव शंकर की बानी इमि मन सकुचानि भवानी माय।
रति सरसानी हरषानी उर लागी सुनन कथा मनलाय॥
भाषन लागे महादेव फिरि सो अवतार भयो ज्यहि काज।
सो मैं तुमसन कहि गावतहौं सुनिये भरद्वाज खगराज॥
स्वायंभुव मनु शतरूपा द्वउ राजा रानि जक्त बिख्यात।
जिनते अनुपम नरसृष्टी भै मानहुँ कही सत्य यह बात॥
धर्म आचरण भलदम्पतिमहँ अजहूं सुयशरहे श्रुतिगाय।
जेठो बालक तिन राजाको है उत्तानपाद महिराय॥
विष्णु भक्त सुत ध्रुवताके हैं कीरति जासु कही ना जाय।
उत्तम पदवी को पावत भो जहां न जाय सकै कोउ भाय॥
नाम प्रियब्रत लघु बालकको वेद पुराण प्रशंसत जाहि।
सुतासुंदरी सुरहूती है मुनि कर्दमैं दीनि जो व्याहि॥
आदि देवता प्रभुदायाकर जाके जठर धर्‍यो अवतार।
नाम मनोहर कपिल देवजी जिन किय सांख्यशास्त्र विस्तार॥
तिन स्वयंभुवमनु आनँदसह कीन्हीं बहुतकाल लगिराज।
आयसु पाल्यो बहुस्वामी को पोष्यो प्रजासहित सुखसाज॥
घरमहँ निबसति भो चतुर्थपन होय न बिषय माहिं बैराग।
जन्म बादिगो हरिभक्ती बिनु गुनि असहदय बहुतु दुखलाग॥
राज जबरई दै सुतको तब नारि समेत वेष मुनि धारि।
गे बन तीरथ बर नैमिष कहँ जो साधकहि देत फलचारि॥
बसैं जहांपर मुनि सज्जनजन सिद्धसमाज तपस्वी भारि
चले अनंदित नृप तहँवाँको जगजंजाल ख्याल सबटारि
जात रास्ता महँ सोहैं कस दम्पति द्वउ स्वरूप आग

ज्ञानभक्ति जनु तनुधारे द्वउ गमनत जात हर्ष अधिकार ॥
जाय गोमती तट पहुंचे तब किय असनान ध्यान हरषाय।
हल्ला होइगा तब नैमिष महँ श्री मनुराज गये इत आय ॥
सिद्ध मुनीश्वर अरु ज्ञानीजन आये मिलनहेत नृपपाहिं।
भेंट्यो आनँदसह भूपतिको दम्पति खुशीभये मन माहिं ॥
रहे जहां जहँ बरतीरथ तहँ सो सब मुनिन दीन करवाय।
भे विश्रामित पुनि नैमिष महँ सुनिये अग्रचरित मनलाय ॥
दुर्बल तन महँ धरि बल्कल पट सन्तसभा नित सुनैं पुरान।
जपैं मंत्रवर ब्रिधि बिधानसों धरि हरि चरण माहँ द्वउ ध्यान ॥
शाक कन्द अरु फल भोजन करि सुमिरैं ब्रह्म सच्चिदानंद।
भाग्यो सबबिधि मन विषयनते त्याग्यो सकल द्वंद अरुफंद ॥
हरिहित लागे तपसाधन पुनि बारि अहार मूलफल त्यागि।
होय निरंतर यह आशाउर देखियनयन स्वामि अनुरागि ॥
निर्गुण निरुपम परिपूरण जो कहैं अनंत अनादिउ जाहि।
करैं चिंतवन ज्यहि ज्ञानीउर मानत और जक्त सब बादि ॥
नेतिनेति कहि श्रुतिभाषैं ज्यहि है सच्चिदानंद निरुपाधि।
स्वबस बिलासी अविनासी सो परम प्रकाश रूप बिनव्याधि ॥
जासु अंशते बहु उपजत हैं शंभु बिरंचि विष्णु भगवान।
ऐसो स्वामी ह्वै सेवक बश जग महँ करत रूप निर्मान ॥
जो यह सांची श्रुति भाषतहैं गुण गण संतकरैं परकाश।
तौ सुखराशी दुखनाशी प्रभु पूरण करैं हमारी आश ॥
धरि अभिलाषा असिहिरदयमा केवल करत बारि आहार।
हरिहि अराधत तप साधत महँ भयेव्यतीत वर्ष छहजार ॥
पवन पानकरि पुनिठान्यो तप सातहजार बर्ष हरियान।
बर्ष सहसदश सोउत्यागन करि इकपगठाढ़रहे धरिध्यान ॥
कठिन तपस्या यहिभाँतिन लखि शम्भुबिरंचि बिष्णुभगवान।
मनुढिग आये समुझाये बहु मनभावतो लेहु बरदान ॥

लोभ दिखायो त्रयदेवनने मनुको बहुत भाँति बचभाखि।
तदपि न डोल्यो मन दंपतिको धीर धुरीण धीर उरराखि॥
रही हड़ावरि भरि देही महँ तदपि न रंच पीर मनमाहिं।
हरिके पायँन महँ लागो जिय हियमहँ सुगति दूसरी नाहिं॥
अंतर्यामी शुचि स्वामीने लीन्ह्यों सत्य दास निज जानि।
मांगो मांगो वरबानी यह नभ महँ भई कृपामृत खानि॥
मृतक जियावनि सुख छावनि सो बानी प्रविशि कानकी राह।
आई छाई उर भीतर जब तब मन भई अधिक उत्साह॥
रुष्ट पुष्ट भे तन वाही क्षन घरते अबहिं मनौगे आय।
बनै न वर्णत वहि समयाको दम्पति प्रेम मनो बचकाय॥
कानन अमृत सम बाणी सुनि भो अति पुलक प्रफुल्लितगात।
नमस्कार करि मनु बोले तब हृदय न हर्ष प्रेम समियात॥
सुनिये सेवक सुखकारक प्रभु सुरतरु कामधेनु अभिराम।
पदरज बंदत आनंदत नित विधि शिव बिष्णु आदि सबयाम॥

स० सेवत शुद्ध स्वभाव सदा सहज्यो सुठि सेवक को सुखदायक।
पूरण प्रेम पियूष प्रपोषक तोषक दीन सुदास सहायक॥
बंदि अनंद स्वरूप अनूपम नाथ अनाथहितू सब लायक।
चारु चरित्र कहैं श्रुति गायक चातुर चित्त चराचर नायक॥

जोहै दाया हम दुखियन पर तौ यह बिनै सुनौ भगवान।
हमरी मंशाके मोफ़िक तुम हमकहँ देहु एक बरदान॥

स० जौनस्वरूप बसै शिवके मन ढूंढ़त जाहिगये मुनिहारी।
कागभुशुण्डि हृदै शरहंस प्रशंसत जाहि सदा श्रुतिचारी॥
बंदत बंदि अनंदित जाकहँ संत महंत अनंत पुकारी।
रूप अनूपम सो निरखैं हम अच्छत आँखिन दृष्टिपसारी॥

भूपति रानीकी बानी मृदु सुनिकै हरिहि नीकि बहुलागि।
मानहुँ सानी शुचि अमृत भे औ नम्रता माहिं दइपागि॥
देर न लागी तब ताहीक्षण प्रगटे भक्तवछल भगवान।

जिनकी उत्तम सुंदरता सम नाहिंन तिहूँलोक महँ आन ॥
नील सरोरुह अरु नीलीमणि नीलेमेघ सरिस तन श्याम।
सुंदर शोभा लखि लाजतहैं मनमहँ कोटि कोटि शतकाम ॥
शरद चंद्रमा सम राजत मुख छबिमर्याद मनहुं दरशाय।
दाढ़ी दरशै द्युति खाढ़ी सी गाल बिशाल प्रभारहि छाय ॥
हैं शुचि सीवाँ दरग्रीवाँसम अधरन रही लालरी राजि।
कुन्दकलीसी रद अवली बर नासा निरखि कीर गे लाजि ॥
हास मनोहर कहि जावै किमि करै जो चंदकिरण को हास।
सुखकी सखियाँसम अँखियाँद्वउ मानहुँ अमलकमल परकास ॥
जन मनभावनि बिनशावनि दुख चारु चितौनि चपलताऔनि।
मिलै न उपमा सम अंगनकी भाषौं कौनि न भाषौं कौनि ॥
हैं युगभौंहैं तिरछौंहैं ते मानहुँ मदन चापकी छाप।
तिलक बिराजै बर माथेमहँ पाथे जनु प्रताप की थाप ॥
कुण्डल कानन महँ मकराकृत शिरपर क्रीट मुकुट दरशाय।
केश सुकाले घुंघुराले घन मानहुं जुरे मधुप गन आय ॥
उरमहँ सोहत जगमोहत सो वर श्रीवत्स रुचिर वनमाल।
हार अदूषण मणि भूषण युत चौकी जड़ी रतन की जाल ॥
ऊंचे कंधर जस केहरिके पहिने यज्ञ जनेऊ चारु।
हस्ति शुंड सम भुजदण्डै द्वउ बल कर कौन करै बिस्तारु ॥
सरकस तरकस करिहायें महँ लीन्हे हाथ धनुष औ बान।
तड़ित लजावन छबि छावन तन सोहत पीतवस्त्र सबिधान ॥
त्रिवली पेटे महँ राजै कस मानहुँ बँधी सुघरता हद्द।
नाभि अनूपम छबि कूपम जनु यमुना भवँर दिखावत रद्द ॥
कहि न जाय छबि पगकमलनकी मुनिमनभ्रमर बसैंजिनमाहिं।
सब विधि ध्यावत उर लावत ते तनमहँ रहत तापत्रय नाहिं ॥
शोभित बाईं दिशि आभासी सुंदर आदिशक्ति छबिधाम।
क्षणमहँ बिरचै प्रभु आयसु ते जो सब जगत केर इतमाम ॥

जासु अंशते अवतंसित हैं अगणित उमा रमा ब्रह्मानि।
राम बामदिशि सो सोहत है सीता सकल रूपगुण खानि॥
स० सुंदरताको पहार मनौ हरि रूप अनूप उदार अपार।
हजार दिवाकर वारतयार प्रभासों तिहूंपुरमें उजियार॥
भुवार विलोकि कै सार शिंगार धिकारत मारहि बारहि बार।
निहारतही रहिगे यकतारन टारत मारत नैन किवाँर॥
महामगन मन भे दम्पति दुउ दशा सो कही कौनविधि जाय।
परे दण्डइव गहि पंकज पद सुधि बुधि सबै दीनि बिसराय॥
चरण आपनो शिर परस्यो प्रभु लीन उठाय हाथ गहिभाय।
बोले करुणाकर औसर त्यहि कोमल बचन मंद मुसकाय॥
जानि अनंदित अति भूपति म्वहिं सबरे शोच सकोचहि भानि।
मन अभिलाषित वर माँगहु तुम मोकहँ महादानि अनुमानि॥
बैन मनोहर सुनि स्वामी के मनु नृप मुदित जोरि दुउपानि।
धीरज राखत अस भाषत भे सुनिये महादानि ममबानि॥
देखि तुम्हारे पदपंकज प्रभु हमरे पूर भये सबकाम।
बड़ी लालसा इक मनमाहे अतिशै सुगम अगम भगधाम॥
कही जात सो नहिं आनन ते औ बिन कहे बनै कछुनाहिं।
याते करुणाकर सेवक के होत सकोच पोच मनमाहिं॥
तुम्हैं देत महँ तौ स्वामी वह बहुतुइ सहज वस्तु दिखराय।
हमरेलेखे तौ मुश्किलहै निज सूमता लागि सुनु सायँ॥
यथा दरिद्री पुरुष भाग्यवश सुन्दर कल्प वृक्ष को पाय।
बहुधन संपति को माँगतमहँ हिय सकुचाय कहा नाजाय॥
तैसै संशय मम हिरदै महँ बारम्बार होत भगवान।
अन्तर्यामी सो जानहु तुम मोकहँ देहु मनोरथ दान॥
सुनि असबानी मुनि ज्ञानीकी बोले दीनबंधु मृदुभाषि।
सकुच छाँड़िकै नृप माँगौतुम जो कछु रह्यो हृदय अभिलाषि॥
वस्तु पियारी असिनाहीं कोइ जो देसकौं तुम्हैं नृप नाहिं।

जन प्रन राखनको भाखन अस सुनि नृप खुशी भये मनमाहिं ॥
दानि शिरोमणि प्रभु दायानिधि सबबिधि भाषि कहौं सतिभाव ।
तुमसम आपन सुत चाहौं मैं है यक यही हृदय महँ चाव ॥
प्रीति देखिकै इमि भूपतिकी बचन अमोल श्रवण करिकान ।
ह्वै आनंदित तब हिरदय महँ बोले एवमस्तु भगवान ॥
खोजौं दूसर कहँ अपने सम नृप तुव पुत्र होब मैं आय ।
सकुच बिसारो अब जियरेते पुरिहैं आश तोरि महिराय ॥
यहिबिधि धीरज दै राजाको रानिहि लख्यो फेरि भगवान ।
दोउकरजोरे तहँ ठाढ़ी हैं हिय अति प्रेम वारि उमगान ॥
तबतौ करुणानिधि बोले अस जो रुचि होय देवि सो माँगु ।
देर न ह्वैहै बर पैहै सो उर संकोच शोचको त्यागु ॥
रानि अनूपा शतरूपा तब भाषत भई नाय पगमाथ ।
राजैं मांगा बरलागा सो हमख्यो हृदय माहिं प्रियनाथ ॥
यद्यपि तुम कहँ भल लागत है करिबो भक्त केर कल्यान ।
होत ढिठाई है यामहँ बहु तद्यपि विनय सुनो भगवान ॥
तुम पितु ब्रह्मादिक देवनके औ सब भुवनकेर भर्तार ।
जानन वाले उर अंतरकी ब्रह्म अनंद रूप अविकार ॥
संशय आवत अस लावत मन उत तुव बचन केर बिश्वास ।
याते धीरज उर पावतहै ताते कहौं भाषि स्वउ आस ॥
भक्त तुम्हारे जे प्यारे जग जिनके हृदय तुम्हारो ध्यान ।
ते सुख सद्गति यश पावैं जस औ सब भाँति परम कल्यान ॥
स्वइसुख सद्गति अरु भक्तीस्वइ सोई नाथ चरण को नेहु ।
टेक विवेकहु स्वइ उत्तमढँग मोकहँ दया दृष्टि करिदेहु ॥
गूढ़ नम्रतायुत सुन्दर अति सबगुण खानि रानिकी बानि ।
सुनिकै गुनिकै मन अपने महँ बोले फेरि स्वामि धनुपानि ॥
रहैं मनोरथ तुव मनमाजो सो मैं सकल दीन हरषाय ।
अपने उरते अनुमोदित ह्वै इकवर और देत त्यहिं माय ॥

ज्ञान अलौकिक यह तेरो अब मिटिहै क्यहू जन्म महँ नाहिं।
सुनि असबानी धनुपानी की रानी खुशी भई मनमाहिं॥
फेरि दण्डवत करि बोले मनु हमरिउ बिनय औरि यकस्वामि।
सुनि उरलैये फुरमैये सो सब बिधि मोहिं जानि अनुगामि॥
प्राकृत पुरुषन की जैसी प्रभु सुत महँ होत प्रीति अरुप्यार।
होय तैसिही तुव पायँन मम बरुकिन मूढ़कहै संसार॥
जैसे मणि बिन फणिपावै दुख जल बिन मीन दीन ह्वै जाय।
तैसे जीवन जगराउर बिन इकक्षन मोर नाहिं दिखराय॥
माँगि ऐसवर मनु भूपति पुनि गहि रहिगये चरण द्वउहाथ।
एवमस्तु प्रभु कहि भाष्यो तब परस्यो हाथ भूपके माथ॥
मानि हमारो अब आयसु तुम निवसौ इन्द्रपुरी महँ जाय।
भोगौ देवनके दुर्लभ सुख सब दिन हृदय माहिं हर्षाय॥
पुनि तदनंतर कछु औसरके बीते सुनहुँ महा महिपाल।
होहु अयोध्याके राजा तुम तब हम होब तुम्हारे बाल॥
नरतन धारे निज इच्छा मय होइहौं प्रकट तुम्हारे धाम।
सहित आपने सब अंशनके करिहौं चरित भक्त अभिराम॥
जाको सुनिकै नर आदर सह तजि मद मोह आदि बेकार।
देर न लागी अनुरागी ह्वै जैहैं भव अपार के पार॥
जग उपजावा यश छावा ज्यहि सुन्दर आदिशक्ति गुणखानि।
सोउ अवतरिहै यह माया मम मानहुँ सत्य बानि नृपरानि॥
तुव अभिलाषा हम पुरवब अब भाषा जौन जौन जस गाय।
है त्रिकाल महँ प्रण साँचो मम करौ प्रतीति मनो वचकाय॥
बार बार अस कहि औसर त्यहि अंतर्ध्यान भये भगवान।
भक्त मनोरथ को दाता अस प्रभु तजि कौन जक्त महँ आन॥
पुनि त्यहिपाछे वेदम्पति द्वउ उर प्रभु भक्ति धारि सबिधान।
रहे कछू दिन त्यहि आश्रम में धारे रामचरणमें ध्यान॥
समय पायकै तन त्यागन करि कीन्ह्यों जाय इन्द्रपुर बास।

भोगन लागे सुर भोगन कहँ पूरण भई हृदयकी आस ॥
कह्यो भवानी ते शंकर यह सुखद पुनीत शुद्ध इतिहास।
मतिसम गायो सो बंदीद्विज पायो अतिव ज्ञान परकास ॥
सुनै सुनावै कहिगावै जो अतिव अनूप भूप यश गान।
देर न लावै फल पावै सब बहु कल्यान करें भगवान ॥

इतिश्रीभार्गवबंशावतंसश्रीमान्मुंशीनवलकिशोरात्मजस्यश्रीमुंशी
प्रयागनारायणस्याज्ञाभिगामीउन्नामप्रदेशान्तर्गतमसवासीग्राम
निवासीपण्डितबंदीदीनदीक्षितनिर्मितविजयराघवखण्डे
बालकाण्डेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

गिरा गजानन पंचानन अरु गुरु गोबिंद चरण द्वउ ध्याय।
श्री रघुनन्दनको सुन्दर यश मतिसम बन्दि बखानत गाय ॥
ह्वै आनंदित याज्ञवल्क्य पुनि बोले भरद्वाज सन बात।
दूसर कारण राम जन्म को सुनिये और ध्यान धरि तात ॥
कह्यो शिवासन शिवशंकर जस औखगपतिहि सुनायो काग।
सोई मतिसम मैं भाषतहौं देखि तुम्हार परम अनुराग ॥
जगमहँ जाहिरहै नीकी विधि केकय देश बेश मतिधाम।
तहँ पर निबसत है राजा जो ताकर सत्यकेतु असनाम ॥
धर्म धुरन्धर नय निधान सो तेज प्रताप शीलबल खानि।
त्यहिके लरिका दुइ पैदाभे सब गुणधाम न जायँ बखानि ॥
राजदीनिगे सुतजेठे को नाम प्रतापभानु अस ताहि।
दूसर बालक अरिमर्दन है भटमहँ प्रथम रेख जगजाहि ॥
परम मित्रता द्वउ भाइन महँ प्रीति प्रतीति बरणि ना जाय।
बैमनस्यता नहिं स्वपन्यो महँ इकसम सदा दुहुन की राय ॥
राजदेय कै सुतज्येठे को बनको गयो आपु भुविपाल।
ध्यान धारिकै प्रभु पायँन महँ साध्यो तपहि त्यागि जंजाल ॥
जब प्रतापरबि महिपालकभो देशम फिरी दोहाई तासु।
राजी कीन्ह्यासि बहु रय्यतको कतहुं न रही व्याधिकी बासु ॥

अति हितकारी रह राजाको मंत्री चतुर धर्मरुचि नाम।
तुल्य मंत्रिहीके भाई लघु अतिबल बीर धीर गुणधाम॥
अपनौ राजा परतापी अति नाम समान महा बलवान।
समर लड़ाँके बहु बाँके भट चतुरंगिनी अनी अप्रमान॥
देखि आपनी बरसैनाको राउ सुजान हृदय हरषान।
आयसु दीन्हयसि मनकीन्ह्यासिरन बजे निशान महाघमसान॥
बाजो डंका अहतंकाको मौहरि अरु दमाम करनाल।
सुनि विन शंकाते बंकाभट सजिगे हाल बाल हे बाल॥
हाथी घोड़ा रथ पैदर युत चतुरंगिनी अनी सबिधान।
देर न लागी प्रलयागीसी सजिगे क्षणैं माहिं हरियान॥
शोधि महूरत तब भूपति सों सुन्दर समय पाय हरषाय।
चल्यो जीतिबे हित राजनको जे अभिमान रहे उरछाय॥
कहैं हकीकति अब ज्यादहको जहँ तहँ भये बिबिध संग्राम।
कीन पराजय सब राजनको भूप प्रतापभानु बलधाम॥
अपने भुजबल सों कीन्हें बश सातौद्वीप केर अवनीप।
छाँड़्योलैले कर सबहिन को दीपित कियो सुयश को दीप॥
सब भुविमण्डलपर औसर त्यहि एक प्रतापभानु महिपाल।
अमल बड़ाई उमड़ाई बहु गाई जो न जात क्यहु काल॥
स्ववश विश्वकरि भुजबिक्रम सों आयो लौटि आपने धाम।
धर्म अर्थ अरु कामादिक सुख सेवैं सबै भूपकहँ आम॥
पाय पराक्रम नृप प्रताप को धरती कामधेनु भै भाय।
प्रजा सुखारी सब भाँतिनते कतहुँ न दुख दरिद्र दिखराय॥
पुरमहँ यावत नर नारी सब सुन्दर धर्मशील गुणधाम।
उत्तम कर्मन को साधत सब कतौं न आधि व्याधि को नाम॥
रह्यो धर्मरुचि नृपमंत्री जो ताकर सुनौ हाल खगपाल।
महा सुधर्मी शुभकर्मी सो सिखवत नृपहि नीति सबकाल॥
सांचो सेवक रघुनन्दनको बन्दन करै विप्र गुरु पायँ।

त्यहूते चढ़ि बढ़िकै उत्तम गुण वहि महिपाल माहिं दिखरायँ ॥
स० पूजत देव सदा शुचि भेवसों सेवत सन्त गुरू द्विज गायन ।
नित्त उछाह भरो सतराहसों पोषत पितृ पुराण परायन ॥
चालत सम्मत शुद्ध श्रुतीनको पालत दीन प्रजा चित चायन ।
दान विधान अमान ह्वै ठानत आनत भूलि गुमान सुभायन ॥
कूप अनूपम अरु बापी सर दीन्हों ठावँ ठावँ खोदवाय ।
सुमन सवाँरी फुलवारी अरु अगणित बाग दीन लगवाय ॥
तीरथ तीरथ प्रति देवन के धाम ललाम दये बनवाय ।
काम अनेकन अस कीन्हें नृप भाषौं कहांलगे मैं गाय ॥
वेद पुराणन कहि भाषी जो जहँलगि एक एक सब याग ।
बार हजारन सो कीन्हीं नृप सहित विधान ठानि अनुराग ॥
इन सतकर्मनके करिबे की फल अभिलाष कछू हियनाहिं ।
अतिव विवेकी अरु नेकीरत परहितकरन माहिं दिनजाहिं ॥
मनसा वाचाते ज्ञानी नृप करै जो धर्म कर्म सविधान ।
सो सब अर्पै वासुदेव कहँ सब दिन रहै विचारत ज्ञान ॥
इकदिन घोड़ेपर चढ़िकै सो साजि शिकार हेत हथियार ।
कढ़िकै पुरते गो बढ़िकै तहँ बिंध्य पहार पार जहँ हार ॥
जीव जंगली बहु मारत भो है यह अति अमंगली काम ।
तद्यपि राजनको वाजिबहै सुनिये भरद्वाज मतिधाम ॥
डोलत डोलत वहि जंगल महँ दीख्यो भूप एक बाराहु ।
पकरि चन्द्रमाको मुखते जनु बनमहँ छिप्यो आय्र कै राहु ॥
बिंब चन्द्रमाको भारी है ताते नाहिं अमात मुखमाहिं ।
मानि शत्रुता क्रोधातुर ह्वै मानहुँ ताहि उगिलतौ नाहिं ॥
त्यहि के थूथुन अरु दांतनकी यह छबि गाय दीनि बतलाय ।
महा भयंकर अरु मोटा तन मानहुँ शृंग मेरुकर आय ॥
बाजि टापको रवपाये ते अतिशै घुर्घुरात है भाय ।
चितवत चक्रित ह्वै चारिउ दिशि कान उठाय क्रोध छहराय ॥

काले पर्वत के कँगुरा सम बड़ा बराह देखि भुविनाह।
हांकि कै कोड़ा से घोड़ा को आतुर चले ताकि स्वइ राह॥
बचै न भागिउ कै जामें यह अस उर नृपति कीन अनुमान।
सुनो अगारीकर कौतुक अब करिमन सावधान हरियान॥
धावत आवत लखि घोड़ा को चला बराह पौन गति भाजि।
ताहि देखि कै नृप कीन्ह्यों त्वर शर संधान शरासन साजि॥
बान बिलोकत मिलि महिमा गो कृत्रिम कपट रूप बाराह।
छांड़े शरकी निष्फलताते कोपित बहुतु भयो भुविनाह॥
फिरि शर तकितकि बहु मारतभो छलकरि तौन निवारतजाय।
घाउ न आवत भो देही महँ नृप मन बार बार रिसिआय॥

स० जाहिरह्वै दरशातकबौं कबहूं छिपिजात दिखात न प्यारी।
हैकै खड़ो सहिंताकबौं अरु आतुर भागत जान अगारी॥
भूपतिहू न तजै सँग को मगसो गहि धावत बाजि हँकारी।
याविधि गो बनमध्य बराह जहां नहिं राह निबाहनहारी॥

यदपि इकाकी नहिं ताकीमग बन अति अगम रह्यो दिखराय।
पीछा करिबो वहि शूकर कर छोड़त नहीं तदपि नृप भाय॥
बाजि बढ़ावत नृपआवत लखि घुसिगो गुहा माहिं बाराह॥
राह न तामहँ हय जैबे की तब पछिताय लाग नरनाह॥
हारि मानि हय पलटावत भो तब घन बनमा गयो भुलाय।
राह न पावत घबरावत जिय लागी क्षुधा प्यास दुखदाय॥
अतिशै दुःखित नृपबाजी सह खोजत फिरत नदी औ ताल।
रंचक पानी कहुँ पायो ना भयो भुवाल हाल बेहाल॥
घूमत वाही घन जंगल महँ निरख्यो एक मनोहर धाम।
कपटी राजा तहँ बैठो है कीन्हें मुनिन केर इतमाम॥
देश जासुको हरि लीन्ह्यों है भूप प्रतापभानु बरिआय।
रणते सेनां तजि भाग्यो है रह्यो छिपाय बिपिन महँ आय॥
समय जानिकै रविप्रतापको असमय अपनजानि अनुमानि।

ग्लानि मानिकै घरगमन्यो ना औ ना मिल्यो नृपहिको आनि ॥
क्रोध मारिकै मन दुखिया सम बन में बसै मुनिन की नायँ।
जाय पहूँचे लग ताही के भूप प्रतापभानु त्यहिठायँ ॥
सो पहिंचानत भो तुरतै यहि भूप प्रतापभानु यह आय।
पै इन ताको पहिंचान्यो ना देखि सुवेष भूलि गे भाय ॥
दूसर भूँखे अरु प्यासे हैं ताते बुद्धि रही घबराय।
तिसरे होना कछु औरै है चीन्हैं क्यहि प्रकार मुनिराय ॥
उतरि तुरंगम ते तुरतै नृप कीन प्रणाम माथ महिनाय।
नाम आपनो बतलायो ना इतनी तहां कीनि चतुराय ॥
प्यासो लखिकै त्यहिं राजा को सरवर विमल दीन दिखराय।
तहां जाय कै नृप घोड़ा सह मज्जन पान कीन हरषाय ॥
गयो परिश्रम मिटि ताही क्षण तब मन सुखी भयो महिपाल।
लैगा तपसी निज आश्रम मा आसन देय बिठायसि बाल ॥
अस्त जानिकै रवि औसर त्यहि तपसी कहै लाग मृदुबानि।
घात आपनी को ताकत है बदला लेन हेत भव रानि ॥
को तुम आहिउ बतलावो कहि कस बन फिरौ अकेले भाय।
युवा अवस्था युत सुंदर तन शोभा अंग अंग रहि छाय ॥
कछू न शंका त्वहिं जीवन की डोलत कठिन ठावँ अस आय।
चिह्न तुम्हारे चक्रवर्ति के देखत दया लगत म्वहिं भाय ॥
कपटी मुनिकी सुनिबानी असि ज्ञानी भूप लाग बतलाय।
है प्रतापरवि अवनीपति यक मैं हौं तासु सचिव मुनिराय ॥
मृगया खेलन हित आयों बन गयों भुलाय भर्म वश राह।
भागिहु जागी कछु सुकृत ते देख्यों आय तोहिं मुनिनाह ॥
दर्श तुम्हारो अति दुर्लभ म्वहिं सो मिलि गयो आजु अनयास।
याते मनमहँ अस जानत हौं है कछु होनहार भलि आस ॥
कह्यो मुनीश्वर अवनीश्वर प्रति अबतौ भयो तात अँधियार।
क्यहि बिधि जैहौ दुख पैहौ मग सत्तरि योजन नग्र तुम्हार ॥

रैनि अमंगल कर जंगल घन सूझि न परै पन्थ मतिमान।
ऐस जानिकै निशि बसिये इत जायो उठि बिहान उयेभान॥
होय हांवैयाँ जसि भावी जब तैसिहि मिलै सहायहु आय।
कीतौ आपुहि चलि आवै तहँ कीतौ ताहि तहां लैजाय॥
आछो सम्मत प्रभु भाष्यो तुम अस कहि तासु सीख धरिमाथ।
बाँधि तुरंगम इक बिरवा महँ त्यहिढिग बैठ आय नरनाथ॥
कीनि बड़ाई बहु ताकी नृप पाख्यो पगन माहिं परणाम।
भागि सराही अपनीहूं बहु कहत न बनै तौन मतिधाम॥
कोमल वाणी सों बोल्यो फिरि सविधि निहोरि जोरि दुउपानि।
पिता जानिकै कछु पूंछत हौं करि धृष्टता चित्त अनुमानि॥
जानि आपनो सुत सेवक म्वहिं आपन नाम देहु बतलाय।
सुनि इमि बानी नृप ज्ञानी की तापस मनहिं लाग मुसकाय॥
भूप न जान्यो अनुमान्यो त्यहि ठान्यो सुहृदपने को भाव।
नृपहि सो जानत अनुमानत है ठानत कपट शत्रु को दाव॥
इकतौ बैरी अरु क्षत्री पुनि राजा चतुर अहै सबभांति।
छलबल करिकै निज कारज को साधो चहत जानि आराति॥
समुझि राजको सुख दुःखित है सुलगत नित्त अवाँ सो गात।
घात आपनी को ताकत है सांची जानि लेहु यह बात॥
सीधी बानी सुनि भूपति की बैर सँभारि हृदय हरषान।
बचन मुलायम कहि भाषत भो छलयुत युक्ति साधि सविधान॥
नाम हमारो भिखियांरी अब निर्धन रहित ग्राम अरु धाम।
काह बताई समुझाई त्वहिं केवल एक राम सों काम॥
कहि अस भाष्यो तब भूपति ने तुम समान जे ज्ञाननिधान।
रंच न छुइगा मोह मान मन सब दिन धरत स्वामि पद ध्यान॥
सदा छिपाये रहँ वैभव निज सबविधि कुशल कुवेषहि धारि।
बसैं यकाकी बन खोहन महँ मन को विषय व्याधि ते टारि॥
य्यहीते भाषैं श्रुति सज्जन यह औ आँखिनहूं परै दिखाय।

परम दरिद्री जन यावत जग हरिहि पियार लगत बहु भाय ॥
तुम सम निर्धन भिखियारिन को जिनके देह नेह नहिं गेह ।
तेज विलोकत स्वाभाविक में होत विरंचि शिवहि संदेह ॥
जोहौ सोहौ काकहिबे महँ है तुव चरण माहिं परणाम ।
करुणाकरिये मम ऊपर अब निज जन जानि मानि अभिराम ॥
प्रीति शुद्धता लखि भूपतिकी आपुन विषे अधिक बिश्वास ।
परम अपनपौ कहँ जाहिरकै बोल्यो करि सनेह परकाश ॥
तुमते सांची कहि भाषतहौं सुनु महिपाल यथावत हाल ।
बसत अकेले यहि जंगल महँ मोकहँ बीति गयो बहुकाल ॥
मिल्यो आजुलगि म्वहिं कोऊना नामैं मर्म जनायों काहु ।
लोक बड़ाई तप आगीसम त्यहि करि कियों विपिन में दाहु ॥
वेष मनोहर लखि काहूको भूलै मूढ़ चतुर नर नाहिं ।
सुंदर पखना वच अमृत सम ते शिखि सदा सांप भखुखाहिं ॥
छिपो रहतहौं यहि कारण में इक भगवान भजन को छांड़ि ।
और प्रयोजन नहिं काहू सों जग मान्यता माहिं बहु भाँड़ि ॥
बिनहिं जनाये प्रभुजानत सब तब का लोक रिझाये काम ।
विभव दिखाये तें दुनियाँ कहँ आखिर धरो जात है नाम ॥
मित्र हमारे अति प्यारे तुम सुमति सुशील ज्ञान गुण राशि ॥
नीकी बिधिते यह जान्यों मैं मोपर भये आपु बिसवासि ॥
बात छिपावों जो तुमते कछु तौ म्वहिं होय दोष अरु पाप ॥
भेद न चाहिय कछु सज्जन ते यह मैं हृदय विचारत आप ॥
उदासीनता की बातैं इमि ज्यों ज्यों कहै तपस्वी वाम ।
त्यों त्यों भूपति के हिरदय महँ होत प्रतीति जाय मतिधाम ॥
मंशा वाचा अरु कर्मन ते लखि आपने वश्य महिरौन ।
कपटी तापस फिरि बोलत भो बकसम ध्यान लगाये जौन ॥
सुनु नृप त्वहिते बतलावत हौं अहै हमार एक तनु नाम ।
हाथ जोरिकै नृप पूंछ्यो तब याको अर्थ काह मतिधाम ॥

सोकहि मोकहँ समुझाओ प्रभु सब विधि दास आपनो जानि।
सुनि असबानी नृप ज्ञानी की कपटी कहन लाग हँसि बानि॥
सृष्टि आदि की जब उपजीती पैदा हमहुँ भये तब भाय।
नाम एक तनु यहि कारण ते फेरि न धरी दूसरी काय॥
यामहँ अचरज कछु मानौ ना करु बिश्वास भूप मन माहिं।
सविधि तपस्या के साधे ते दुर्लभ जगत वस्तु कछु नाहिं॥
रचैं विधाना जग तप के बल तपबल विष्णु ताहि रखवार।
त्यहि संहारत शिव तपके बल तपबल शेश धरे महि भार॥
तपते अगम न कछु दुनियाँ महँ इतना मानि लेहु महिपाल।
सुनि इमिबानी बकध्यानी की नृप उर अतिव प्रेम भो बाल॥
कथा पुरानी पुनि भाषी तेहिं बहुतक कर्म धर्म इतिहास।
करै निरूपण बड़वक्ता सम ज्ञान विराग जक्त भव नास॥
औरौ अचरज की बातैं बहु भाष्यसि विविध भाँति हरियान।
सो सुनि भूपति वश ताके ह्वै आपन भूलि गयो सब ज्ञान॥
नाम ग्राम निज बतलायो तब औ सबहाल कह्यो समुझाय।
युक्ति आपनी परिपूरण लखि बोला छली फेरि मुसकाय॥
मैं त्वहिं जानत हौं नीकी विधि है जग सुयश तोर विख्यात।
कपट तुम्हारो प्रिय लागो म्वहिं है चतुराय केरि यह बात॥
नीति महीपति ऐसीही है जहँ तहँ नृपन बखानैं नाम।
लाभ अनेकन अस कीन्हे ते है यह चतुर पुरुष को काम॥
नाम तुम्हारो तौ प्रतापरवि औ है सत्यकतु तुव बाप।
गुरु की दायाते जानौं सब कहौं न हानि जानि कै आप॥
सहज सुधाई लखि तेरी सुन प्रीति प्रतीति नीति चतुराय।
उपजी ममता मन मोरे महँ ताते कथा कह्यौं निज गाय॥
अब प्रसन्न मैं नृप तोसे बहु संशय रंच याहिमहँ नाहिं।
ह्वै आनंदित बरमांगौ त्वर भावै भूप जौन मनमाहिं॥
सुष्ठु वचन सुनि हरषान्यो नृप ठान्यो विनय जोरि द्वउ हाथ।

माथ नायके मुनि पायँन महँ लाग्यो कहन मनोरथ गाथ ॥
तुम्हरे दर्शन ते दाया कर मोरे हाथ पदारथ चारि ।
है अभिलाषा नाहिं काहू की भाषत सत्य बात निर्द्धारि ॥
तदपि अनंदित लखि स्वामी को मांगत एक अगम बरदान ।
शोक न होवै फिरि जाते कछु यह हियमाहिं होत अनुमान ॥
मृत्यु बुढ़ापा दुख व्याधिन ते मोतन रहित होय मुनिराय ।
जीति न पावै कोउ संगर मा आवैं नाहिं रंच तनघाय ॥
शत्रु न बाकी रह दुनिया महँ होवैं एक छत्र महिराज ।
कल्प सैकरा लगि चाहत सो यह वर देहु नाथ मम काज ॥
कह्यो तपस्वी सुनु भूपति बर ऐसे अवशि होय शक नाहिं ।
कारणमुश्किल यक यामहँ है त्यहि बिन किये बादि सबजाहिं ॥
कालहु नावै शिर पायँन तुव केवल एक बिप्र कुल छांड़ि ।
सदा तपस्या ते उद्भट सो तिनके कोप लेय को आड़ि ॥
याते पहिले बश करिये द्विज तौ सब काज सहज बनिजाय ।
विप्रन केरे वश कीन्हे ते शिव विधि विष्णु होहिं वश धाय ॥
चलै जबरई नहिं विप्रन ते मैं प्रण रोपि कहौं यह बात ।
विप्र शाप बिन यहि दुनियां महँ कबहुँन नाश होय तुवतात ॥
याविधि बानी छलसानी सुनि बोल्यो राउ हृदय हरषाय ।
नाश न मेरो अब होइहै प्रभु तुम्हरे पग प्रसाद को पाय ॥
एवमस्तु कहि सो कपटी मुनि नृपते फेरि लाग बतलाय ।
युक्ति बतावत त्वहिं भूपति यक सो सुनु सावधान मन लाय ॥
आपन भूलबु यहि जंगल महँ औ मम मुलाकाति को हाल ।
कह्यो न काहूते कहिहौ तौ मोरि न खोरि दियो महिपाल ॥
ताते तोकहँ मैं बर्जत हौं याके कहे होय तुव हानि ।
छठयें कानै महँ परतै यह नाश तुम्हार सत्य मम बानि ॥
कितौ बतकही यह प्रकटे ते अथवा लहे विप्र को शाप ।
नाश तुम्हारो दुइ भाँतिन ते सुनिये भूप भानुपरताप ॥

और भाँतिते तुम नशिहौना जो हरि शंभु जाहिं रिसिआय ।
पद गहि भाष्यो तब भूपतिने है यह सत्य बात मुनिराय ॥
विधिके कोपेते राखै गुरु गुरु द्विज कोप कौन रखवार ।
कहे तुम्हारे जो चलिबे ना तौ हम अवशि होब जरि क्षार ॥
एकहि डरसों मन मेरो प्रभु डरपत धरत धीर अब नाहिं ।
शाप भयंकर अति भूसुर को है अब यही शोच मन माहिं ॥
होहिं विप्र वश क्यहि युक्ती ते करिकै दया बतावहु सोउ ।
तुम तजि दूसर यहि दुनियाँ महँ आपन हितू न देखौं कोउ ॥
सुनिकै विनती अवनीपतिकी भाषन लग्यो फेरि मुनिराय ।
बहु तदबीरें हैं दुनियाँ महँ वेदन कहे भेद सब गाय ॥
तिनकर साधबु बहु मुश्किल है होयँ न होयँ जानि नहिंजाय ।
बहुते सीधी यक युक्ती है तहां परन्तु एक कठिनाय ॥
मोरे कीन्हेंते ह्वैहै वह पै तुव नगर जाउँ मैं नाहिं ।
जबते उपज्यों अरु आजहु लगि गयों न काहु ग्राम घर माहिं ॥
जो न जाउँ तौ तुव कारज फिरि होय न क्यहुप्रकार महिपाल ।
भयो आजु यह असमंजस अति शोचों कौन युक्ति यहिकाल ॥
सुनि मृदुबानी ते बोल्यो नृप भाषत निगम नीति असनाथ ।
मयाकरति हैं बड़ छोटेनपर धारत सदा तृणहिं गिरिमाथ ॥
बहै समुंदर के मस्तक पर फेना विदित सकल संसार ।
धरा निरन्तर रज धारैशिर कोउ न कबहुँ देत त्यहिटार ॥
असकहि पायँन पर परिगो नृप अब दाया कर होहु दयाल ।
यह दुख सहियेप्रभु मोरे हित करिये दीन विनय परख्याल ॥
तबतो तपसी बहु हर्षितभा निज आधीन महीपहि जानि ।
उरमुद खोलत हँसि बोलत भो छलयुत महामुलायम बानि ॥
सांची भाषत हौं तोसे नृप दुलर्भ जगत मोहिं कछु नाहिं ।
काम तुम्हारो हठि करिहौं मैं संशय कछु न मानु यहि माहिं ॥
मन क्रम बानीते जानी मैं अबतैं भये सत्य मम दास ।

सुनु अब तोकहँ बतलावत हौं तापर अवशि आनु बिसवास॥
मंत्र तपस्या अरु सम्मत वर अरु योगादि युक्ति परभाव।
ये सब तबहीं फलिआवत हैं जब सबही ते करै दुराव॥
करों रसोइया जो भूपति मैं अकिले तुमहिं परोसौ ताहि।
जानि न पावै कोउ मोकहँ तहँ जो जो अन्न तौन नृप खाहि॥
सो सो आयसु प्रतिपालै तुव होय न विमुख कबहुँ क्यहुकाल।
तिनके घरमा जो जेंवै पुनि सो तुव वश्य होय महिपाल॥
रचौ जायकै यह उपाय नृप करि संकल्प सालभरिक्यार।
नित्त नवीने सौहजार द्विज न्योत्यौ सह कुटुम्ब परिवार॥
पूरहोन हित प्रण तेरो नृप करिहौं दिनहि माहिं जेवनार।
मोकहँ देरी कछु लगिहैना सांची मानु धरा भर्तार॥
कष्ट रंचकहि महँ भूपति इमि तुव वश होहिं सर्व द्विजराज।
मख होमादिकते करिहैं द्विज त्यहिते वश्य सकल सुरसाज॥
औरि बात यक बतलावौं त्वहिं भले प्रकार लेहु त्यहिजानि।
कबहुं न ऐहौं गृह तोरेमहँ ऐसे वेषमाहिं नृपज्ञानि॥
अपनी मायाते लैहौं हरि तोरे पुरोहितै यहि ठाम।
तप बल ताको निज सदृश करि रखिहौं एक साल यहिधाम॥
तासु वेषधरि मैं राजा उत सब बिधि तोर संवाँरब काम।
राति बीतिगै बहु बातन महँ अब तुम करहु जाय विश्राम॥
आजुके तिसरेदिन तोसन मैं करिहौं मुलाकाति उत आय।
मैं त्वहिं घोड़ा सह तपकेबल सोउतै घरै देहौं पहुँचाय॥
धरि उपरोहित तन ऐहौं मैं तब तुम लियो मोहिं पहिचानि।
कथा सुनैहौं जब पाछिलि सब तोहिं एकान्त बोलि नृपज्ञानि॥
सुनि अनुशासन इमि कपटी को कीन्ह्यों शयन जाय महिराय।
मुनिहुँ बिराज्यो निज आसन पर सुनु प्रिय अग्रचरित मनलाय॥
परतै भूपति भो निद्रावश तनको चेत रह्यो तन नाहिं।
कैसे सोवै सो कपटी मुनि अतिशै शोच जासु मन माहिं॥

चोर पहरुवा अरु कामीनर चिंता बसी जासु उरमाहिं।
विरहिनि विरही अरु चकोरलै इनकहँ नींद परत निशि नाहिं॥
आयो निशिचर कालकेतु तहँ मायाकार माहिं हुशियार।
दीन भुलावा ज्यहिं भूपति को धरि बाराह रूप विकरार॥
बड़ो मित्र है वह तपसी को जानत कपट रीति बहुभांति।
त्यहि के सौ सुत औ भाई दश तेऊ महादुष्ट उतपाति॥
दुखी देखि कै सुर भूसुर बहु औ लखि तिन्हैं करत अन्याय।
प्रथमैं मार्‍यो तिन दुष्टन कहँ रणमहँ रविप्रताप नरराय॥
बैर सँभार्‍यो सो पाछिल खल मिलि तापासिहि कीनि सल्लाह।
जामहँ बैरी नृप नाशै हठि रच्यो उपाय तौन खगनाह॥
भूप न जान्यो सो भावी वश की ये शत्रु हमारे आयँ।
पाय समैया सो सम्मत करि रहे चलाय आपने दायँ॥
शत्रु अकेलो तेजस्वी अति कबहुँ न छोट बिचारौ ताहु।
अजौं देत दुख शशि सूरज को केवल मुण्ड रुण्ड बिनराहु॥
सखा आपने को आया लखि तपसी मिल्यो मुदित लपटाय।
आसन दैकै पुनि आदिहि ते सबरी कथा कही समुझाय॥
बोल्यो निश्चर आनंदित ह्वै सुनिये बचन मोर नरराय।
शत्रु मिटावन की घातै सब अब बनिगईं सहज में आय॥
युक्ति साधि हौं सहजेही में तुमहूं भले दीन समुझाय।
बिना दवाइहि रुजखोयो विधि अबतुम शोच देउ बिसराय॥
सहकुटुम्बके जड़ बैरीकी खोदि बहाय सहज में भाय।
आय भेंटिहौं त्वाहिं चौथे दिन मानहुँ सत्य बात नरराय॥
यहि विधि धीरज दै तपसी को कपटी चला क्रोध उपजाय।
सहित तुरंगम रविप्रताप को सोउतै घरै दिहेसि पहुंचाय॥
नृपहि सोवायासि महरानी ढिग बांधेसि घोड़ुजाय हयसार।
राजा केरे उपरोहित कहँ हरि लैगयो भवन ते यार॥
करिकै भोरी मति माया ते राख्यसि जाय खोह महँ ताहि।

आपु धारिकै उपरोहित तन त्यहि घर पस्यो सेज अवगाहि ॥
बाकी रहिगै जब थोरी निशि सोवन पस्यो जागि महिराय।
अचरज मान्यो बहु देखत घर जान्यो यह प्रभाव मुनिराय ॥
उठिकै धीरज महँ पलँगाते जामहँ जानि न पावै रानि।
ताही घोड़ा पर चढ़िकै पुनि बन चलि गयो चित्तअनुमानि ॥
ग्राम निवासिहु कोहुँ देख्यो ना भूपहि बनहिं जात हरियान।
रह्यो दुपहरी तक कानन महँ आयो भवन फेरि मतिमान ॥
बजी बधाई तब घरघरमहँ सबहिन कीन अधिक उत्साह।
भई खुशाली रनिवासे महँ बनते आय गयो नरनाह ॥
लख्यो पुरोहित को राजै जब तब अति चकितभयो मनमाहिं।
भयो अस्मरण उन बातन को तपसी बचन झूठ कछु नाहिं ॥
युग सम बीते दिन तीनिउँ वे कपटी भूप बुद्धि हरिलीन।
समय जानिकै उपरोहित सो नृप ढिग आय गयो परबीन ॥
हाल बुझायो कहि राजाको राजा मुदित भयो गुरुजानि।
भ्रम वश वाहू क्षण चेत्योना भावी महा होति बलवानि ॥
मानि तुरंतै त्यहि आयसु पुनि लीन्हे भृत्य बोलि यकबार।
नेवति बुलायो बर विप्रन कहँ सौ हज्जार सहित परिवार ॥
कीनि रोसइयाँ उपरोहित ने छह रस चारिभाँति ते साजि।
सालन विरचे बहु माया मय सो सब धरे राजि की राजि ॥
जीव जंगलिन को आमिष बहु रांध्यसि विप्रमास त्यहिमाहिं।
विप्र बोलाये सब जेंवन कहँ आये सकल शेष कोउ नाहिं ॥
पद पखारि कै बैठाये सब सादर भूप परोसन लाग।
त्यही समइया के औसर महँ नभ ते भई मनोहर बाग ॥
सुनियो सबरे द्विजराजौ तुम उठि उठि धाम आपने जाहु।
हानि तुम्हारी है यामहँ बड़ि भूलिहु यह अनाज मति खाहु ॥
अहै रसोई यह मायामय रांधो गयो द्विजन को मास।
सुनि नभ बानी द्विज ज्ञानी ते तुरतै उठ मानि विश्वास ॥

अतिशै व्याकुल मति भूपति की गई भुलाय मोहवश भाय
कढ़े न बानी मुख भावीवश लाग्यो हृदय माहिं पछिताय ॥
क्रोधित कैकै द्विज बोले तब कीन न कछु विचार उर यार।
देर न लागै होनिश्चर तैं रेनृप मूढ़ सहित परिवार ॥
अरे नीच तैं मन शांचे का जो सब विप्र सकुल बोलवाय।
भ्रष्ट करन को अनुमाने मन रेखल तोर बुरा ह्वै जाय ॥
धर्म हमारो हठि राख्यो प्रभु नातरु होत महा अन्याय।
याते संवत के अंतर महँ सह कुल तोर नाश ह्वै जाय ॥
रहै न बाकी जलदाता कोउ सुनि असगो सुखाय नरराय।
सुनि असबानी उन विप्रनकी फिरि नभबानि भई घहराय ॥
कछु न विचार्यो उर विप्रहु तुम अनहक दियो भूपकहँ शाप।
दोष न यामें कछु नरपति को मानहुँ सत्य बचन यह आप ॥
चकित विप्रभे नभ बानी सुनि शोचनलगे सकल हियमाहिं।
पाकभवन महँ गो भूपति तब देखै तहां वस्तु कछुनाहिं ॥
अरु पुरोहितहु वह नाहीं तहँ जौने कीन पाक निर्मान।
तबतो राजा अति शंकित ह्वै महि गिरि लग्यो महा बिलखान ॥
पुनि उर धीरज धरि विप्रन ते सबरी कथा कह्यो समुझाय।
विप्रबुझावन तब लागे त्यहि अब धरु धीर हृदय नरराय ॥
मिटै न भावी कयहु प्रकार ते यद्यपि तोर दोष कछु नाहिं।
बचन भूसुरन जो भाषे हैं सो अब झूठ किये नहिं जाहिं ॥
अस कहि धीरज दै भूपति को द्विज सब गये आपने धाम।
नगर निवासिन सुधि पाई यह शोचत ठाम ठाम सब आम ॥
कहैं विधाताको दूषण दै विरचत कियो हंस ज्यहिं काक।
ऐसे भूपति को चाहिय अस ये अघ कौन जन्म के पाक ॥
सुनौ हकीकति अब निश्चर की जैं यह कीन सकल छलआय।
घरै पठायसि उपरोहित कहँ तपसिहि खबरि जनायसि जाय ॥
त्यहिं खल जहँ तहँ लिखि भेजे खत ते सब समाचार को पाय।

सजि सजि सैना नृप धाये सब घेरेनि नगर भूप को आय ॥
भई लड़ाई बहुभांतिन तहँ जूझे समरभूमि सब ज्वान ।
राजहु जूझ्यो निज भाई सह है अति होनहार बलवान ॥
सत्यकेतु कुल कोउ उबस्यो ना क्योंकर झूठ होय द्विजशाप ।
शत्रु जीति के नृप घर घर गे नगर बसाय छाय परताप ॥
होय विधाता ज्यहि टेढ़ो जब सुनिये भरद्वाज मतिधाम ।
धूरि मेरु सम पितु अंतक सम लागत ताहि व्याल सम दाम ॥
समय पाय कै फिरि राजा स्वइ निश्चर भयो सहित परिवार ।
बीस बाहु अरु मुख ताके दश रावण नाम बीर बरियार ॥
छोटो भाई जो भूपति को मर्दन शत्रु नाम ज्यहिक्यार ।
भयो आनि सो कुंभकरण भट अतिशै धीर बीर आगार ॥
रहे धर्मरुचि नृप मंत्री जो सो इत भयो विभीषण आय ।
माय दूसरी ते पैदा भो रावण केर आय लघु भाय ॥
अति विज्ञानी विष्णुभक्त सो जगमहँ गयो जासु यश छाय ।
औरौ राजा के सेवक सुत ते सब भये निशाचर जाय ॥
कामी बामी उतपाती खल धारे महाभयंकर गात ।
स्वेच्छाचारी अघकारी अति निर्दय रूप भये सब तात ॥
यद्यपि उपजे कुल पुलस्त्य के पावन अमल अनूपम जौन ।
तदपि शाप वश महिदेवन के भेखल सकल पाप के भौन ॥
तीनिउँ भाइन तप कीन्ह्यो बहु अतिशय कठिन बरणिना जाय ।
देखि तपस्या विधि पहुंचे ढिग बोले बचन महाहर्षाय ॥
तुम्हरे तपते हम राजी हन मांगहु जौन होय रुचि तात ।
करिकै विनती परि पायँनमहँ दशमुख कहन लाग असिबात ॥
मरैं न मारे हम काहू के नर बानर बिहाय दुइ जाति ।
एवमस्तु कहि त्यहि रावण को राजी कीन ब्रह्म बहुभांति ॥
फेरि पहूँचे कुंभकरण ढिग ताकर देखि भयंकर गात ।
रहे बिचारत है घटिका लग विस्मय विविध धारि उरधात ॥

यह खल भोजन नितकरिहै जो तौ कहँ मिलिहि पूर आहार।
देर न लागिहै दिन थोरेहि महँ होइ है सब उजारि संसार॥
त्यहि क्षण शारद को प्रेरण करि ताकी बुद्धि दीनि फिरवाय।
माँग्यासि निद्रा छह महिना की सो विधि ताहि दीनि हर्षाय॥
पास विभीषण के पहुँच पुनि त्यहिते कह्यो पुत्र बरमांगु।
मनमहँ जागा बरमांगा सो हरि के चरण कमल अनुरागु॥
यहि विधि बरदै उन तीनिउँ को विधि विधिलोक पहूँचे जाय।
अपने घरमें चलि आये पुनि तीनिउँ भाय बडू हरषाय॥
नाम मँदोदरि मयकन्या जो अतिशय रूपवान गुणखानि।
आनि वियाही मयरावण कहँ भई सो यातुधान पनि रानि॥
पाय सुंदरी तिय हर्ष्यो बहु फिरि दूउ भाय विवाह्यसि जाय।
सुनौ अगारी को कौतुक अब करि मन सावधान मुनिराय॥
अतिशै दुर्गम अरु भारी बहु विधि निज हाथ सवाँरी जाहि।
सिंधु गरेरी चौगिर्दा ते फेरी चहूं ओर जनु खाहिं॥
गिरि त्रिकूट पर सो राजत है मय त्यहि सज्यो दूसरी बार।
भवन अनूपम मणि सोने के है सब भांति शोभ अधिकार॥
भोगावतिमें जस सांपन को अमरावती बास मघवान।
त्यहिते सुंदर अति बंका बर लंकापुरी असुर को थान॥
श्रीहरि प्रेरित जौन कल्प महँ जो कोउ होय निशाचर राय।
शूर प्रतापी बलथापी सो दल सह बसै तहां पर जाय॥
रहे तहां पर जे निश्चर भट ते सब हने सुरन रन माहिं।
रहैं करोरिन रखवारे अब भूप कुबेर केर त्यहि ठाहिं॥
खबरि रावणैं कहुँ पाई असि घेर्यासि सेन सहित गढ़ जाय।
मारि भगायसि तिन सबहिन को अपना बसा तहां सुखपाय॥
तहैं बनायसि रजधानी निज यावत रहे और निशिचारि।
दीन यथोचित घर सबहिन को राखेसि बहुप्रकार सतकारि॥
इक दिन चाढ़िगा धननायक पहँ लावा पुष्पकयान छँड़ाय।

अति मदमत्ता बलवत्ता बहु विक्रम जासु बरणि ना जाय ॥
सहज स्वभावहि शिवपर्वतकहँ लिहेसि उठाय भुजनपर जाय ।
मानहुँ तौल्यसि भुज विक्रमकहँ तहँते चला फेरि हर्षाय ।
सेन सहायक सुख संपति सुत जय परताप बुद्धि व्यवसाय ।
नित्त नवीने अस बाढ़त भे जस प्रतिलाभ लोभ अधिकाय ॥
भाई जाको कुंभकर्ण भट जासम धीर बीर कोउनाहिं ।
मदपी सोवै छह महिना लग जागे त्रास होय जगमाहिं ॥
खात कदाचित जो प्रतिदिन वह तौ जग उजरि वेगिहीजात ।
धीर लड़ाई महँ ऐसो है जाके सम न वीर दरशात ॥
जेठो लरिका त्यहि रावण को जाको मेघनाद अस नाम ।
प्रथम गनावत त्यहि योधन महँ सन्मुख कोउ न करै संग्राम ॥
धोख्यहु आवत सुनि पावत तौ देउता भागि भवन ते जात ।
लुकत कंदरन महँ काटत दिन कांपत गात महाभय खात ॥
इन्हैं छाँड़िकै बहु औरौ भट ठट समुदाय बरणि ना जाय ।
कुमुख अकम्पन बज्रदन्त लै अतिबल धूम्रकेतु अतिकाय ॥
जब जस चाहैं तन धारैं तस माया करन माहिं हुशियार ।
दया न छुइगै स्वपनेहूं महँ कसकस होत्त धर्म व्यवहार ॥
सो दशआनन खल आनँद सह बैठ्यो सभा आनि इकबार ।
देखेसि अगणित निशिचारिन कहँ बाढ़्यो बेशुमार परिवार ॥
नाति पूत अरु परिवारी बहु गनै को पार निशाचर जाति ।
अगणित सेना लखि गर्बी वह बोला वचन क्रोध महँ माति ॥
सुनौ निश्चरौ मम बानी यक हमरे शत्रु देव सब भारि ।
करैं लड़ाई ते सन्मुख नहिं रिपुलखि भगत शस्त्र कर डारि ॥
सुनौ बुझावत हौं सोई अब तिनकर मरण होय यकभांति ।
यहि तजि दूसर ढँग नाहीं है सहजहि निबल होय सुरजाति ॥
पितृ श्राध अरु द्विज भोजन मख होम विधान संत सन्मान ।
करन न पावै कोउ काहू विधि सब महँ करौ विघन को ठान ॥

क्षुधामलीने बल हीने सुर सहजहि मिलें फेरि इत आय।
तब मन आई जस करि हौं तस मरिहौं कितौ देहौं छँड़वाय ।
फिरिबोलवायसिमेघनादकहँ त्यहियहिभांतिदियसिसमुझाय॥
सुनु सुत तोकहँ बतलावत हौं स्वई उपाय साधु तैं जाय॥
समर जुझारे सुर सारे जे सब कोउ जिन्हैं कहत बलवान।
जिनके लरिबे अरु मरिबे कर है बहु हृदय माहिं अभिमान॥
जीति लड़ाई महँ तिनको सुत जल्दी बाँधिलाउ यहिठाम।
बाप आपने को आयसु सुनि आतुर चला वहौ बलधाम॥
यहिविधि सबही को अज्ञा दै अपनो चला गदा कर धारि।
चलत रावणा के डोलै महि गर्जे गर्भ स्रवैं सुर नारि॥
क्रोधित आवत सुनि रावण को सुर लैभगे आपने प्रान।
जाय लुकाने गिरि खोहन मा बनमा छिपे अनेकन ज्वान॥
फिरि दिगपालन के लोकन गा पाये सबै सून अस्थान।
सिंह गर्जना करि पुनि पुनि वह गारीदेत सुरन रिसियान॥
घूमत डोलै सब दुनियाँ महँ रण मद माहिं महा मतवार।
वीर बराबरि को पावत नहिं तातें होतजात बरियार॥
इकदिन मगमहँ मिलि नारदगे तिनसन कहनलाग मुसकाय।
अहैं देवता क्यहि अस्थल पर सो तुम हमैं देव बतलाय॥
यहि विधि बानी अभिमानी की नहिं नारदहिं नीकि कछुलागि।
श्वेतदीप कहँ पठवायो त्यहि तुरतै महा क्रोध महँ पागि॥
सिंधु नांघि जब वहि पारैगा तब तहँ भयो अजब इक ख्याल।
झुण्ड मेहरियनको दीख्यसि यक तिनते कहनलाग यहहाल॥
जाय जाय कै निज धामन सब भाषौ पतिन पाहिं यह बात।
आयो असुरन को राजा इक अति विक्रमी जगत विख्यात॥
जीति लड़ाई महँ तिनकहँ मैं लै तब तुम्हैं जाउँ निजधाम।
सुनि असि बानी अभिमानी की उर जरिउठी जरठ यकबाम॥
अति रिसाय कै पकरि पायँ द्वउ धाय उड़ाय चली आकाश।

देखि तमाशा यह रावण को तिरिया करन लगीं परिहास ॥
बहुत दूरि लग वह लैगे जब तब फिरित्यहि घुमाय धरिपायँ ।
दै झकझोरा बल कैकै बहु फेंकसि सिंधु मध्य खगराय ॥
गिर्यो पतालहु में अचेत ह्वै मर्यो न विप्र प्रसादहि पाय ।
सावधान ह्वै उठि चलिभो पुनि हिये न कछू हर्ष सकुचाय ॥
झारिकै जीतेसि पुर नागन को फिरि बलिलोक पहूंचा जाय ।
भयो तमाशा तहँ जौनी बिधि सो सुनिलेउ बीर खगराय ॥
बावन रावनको आवत लखि प्रथमैं जानि लीन करि ध्यान ।
कीन्हयसि बातैं यहिं नारद से खल बलकेर ठानि अभिमान ॥
खेलत बालक जे नगरी महँ निज बल तिन्हैं दीन भगवान ।
पकरि लै आये ते रावण कहँ सहजहि नगर माहिं मतिमान ॥
खबरि पायकै पुरवासी सब देखन चले नारि नर धाय ।
बीसबाहु अरु दशकंधर लखि अचरजपर्यो सबहि दिखराय ॥
अद्भुत रचना यह ब्रह्माकी आजुइ लखी दृष्टि सों भाय ।
जीव जंगली है कोऊ यह नर आकार परैं दरशाय ॥
बाँधि गेरइयाँ मारास्यनि त्यहि लरिकन कीन तमाशा चारु ।
नाम आपनो बतलावैना बरुनित सहै गारि औ मारु ॥
लज्जित दीख्यो बहुवामन प्रभु तब करि दया दीन छोंड़वाय ।
चला बेशरम फिरि तहँवाँते सबरी लाज शंक बिसराय ॥
जहँ कहुँ घूमत महँ पावै लखि ब्राह्मण तपी जपी मुनिराय ।
उधुम मचावै डेरवावै बहु मांगै दण्ड देय नहिं जाय ॥
यहि विधि डोलै दिशिचारिउ महँ निशिदिन करै महा उतपात ।
पम्पापुर में चलिआवा फिरि जहँपर बालि बीर बिख्यात ॥
जाय बिलोकेसि इक सरवर की शोभारही अनूपम छाय ।
कमल फुलाने बहु रंगन के कूजत सारसादि सुखपाय ॥
तहँपर पूजन करै बालि भट सो रावणहिं देखि मुसकान ।
क्रोधितह्वैकै तब बोला वह का शठ ठानिरहे बकध्यान ॥

तोरि बीरता सुनि आयों मैं पायों नहीं पराक्रम जानि।
तजु कादरता अब हिरदय ते दे म्वहिं युद्ध दान इत आनि॥
मोहिं लड़ाई महँ जीते बिन है यह वृथा तोर बक ध्यान।
पस्यो न पाला कोहु योधाते याते सबै कहत बलवान॥
सुनि इमि बानी अभिमानी की आनी नहिं अमर्षता बालि।
हँसि कै रावण ते भाषत भो हौ तुम महावीर बल शालि॥
सुयश तुम्हारो दिशि चारिउ महँ फैलो भली भांति सब ठाम।
अनहक हम सों क्यों बाजत हौ रारि निवारि जाहु चलिधाम॥
यद्यपि यहिविधि समुझावा कपि तद्यपि गयो क्रोध उरव्यापि।
मारि झपट्टा तब बालीने कर गहि लीन कांख में चापि॥
फिरि कछु अवसरके बीतेपर बालिहि बिसरि गई सुधि तासु।
रहा दबावा खल काँखरि महँ गे अनयास बीति षट मासु॥
देन अंजुली कपि लाग्यो जब इक दिन रबिहि हाथ फैलाय।
तब कढ़ि भागो शठ कांखरिते लगी न तनक लाज खगराय॥
फिरि चलिआवा वहि अस्थलपर जहँपर सहसबाहु बलवान।
संग अंगनन के आनँद सो जल महँ करत केलि असनान॥
तहां दुष्टता यहिं कीन्हीं असि सर महँ पैठि दूरि कछु आय।
अपनी बाहुन ते रोंकेसि जल तब वह भो अथाह उमड़ाय॥
डूबे साथी सहसबाहु के तब वहिं हृदय कीन अनुमान।
काह पायकै जल बाढ़्यो यह क्षण महँ लग्यो ताल उमड़ान॥
आय विलोकै तौ देखै कह यह खल गहे भुजन सों बारि।
तबतो अतिशय उरक्रोधित भा पकस्यासि झपटि ताहिदै गारि॥
बाँधि लयावा फिरियुवतिन पहँ कहि सबतिन्हैं बतायासि हाल।
करन हँसौआ तिय लागीं तब मारैं ताकि मुक्क भे गाल॥
फिरि लै आवा त्यहि नगरी महँ राखेसि बाँधि जहां हयशाल।
करैं तमाशा तहँ बालक गण मारैं लात बजावैं ताल॥
सहै कष्ट बहु गहै मष्ट तब कहै न कछू रहै रिस मारि।

नाम बतावै नाहिं पूँछयहु पर कौतुक लखैं नित्त नर नारि ॥
नाच होय जब नृप समाज महँ तब दश दिया धरैं दशमाथ ।
जाय छोंड़ावा मुनिपुलस्त्य त्यहि सविधि निहोरि जोरिकै हाथ ॥
तबहुँ बेशरम शरमान्यों नाहिं आन्यों नाहिं कुचालमें ग्लानि ।
इकदिन शापहुको पायसि शठ पकस्यासि धनद पुत्र तिय पानि ॥
सुनि शिववानी शिवरानी इमि बोलीं अहो चंद्रधर स्वामि ।
कथाविस्तरित बतलाओ यह मोकहँ जानि आपनि अनुगामि ॥
तब शिवशंकर फिरि भाषत भे सुनु प्रिय एक दिवसको हाल ।
गमनत मारग महँ रावणने निरखी महा सुघर यक बाल ॥
चाल मरालसि चलि आवत सो आवत शोभ लिये जनुसाथ ।
जातति पूजन गौरिनाथ को चंदन पुष्प पत्र लिये हाथ ॥
लखि सकुचानी सो रावण को तब यह कहन लाग मृदुबानि ।
अहो सयानी मन मानी तुम कहँपर भौन कौन की रानि ॥
कौन कामको इतजाती हो अकिले मोहिं देउ बतलाय ।
उतरु न दीन्हा वहिं लज्जावश यहिं तब गहा हाथ बरिआय ॥
कछु न विचारयसि कामातुर ह्वै पुनि पहिंचानि शंकउर आनि ।
आनि ग्लानि मन गोलंका कहँ इत वह तिया महा रिसियानि ॥
तुर्तहि अलकापुर आई चलि नल कूबरै बुझायसि हाल ।
तब उन क्रोधित ह्वै रावण को दीन कराल शाप ततकाल ॥
थोड़ेहि औसर में निशचर को सब परिवार होय संहार ।
शाप सिधायो तब लंकाकहँ आयो जहां तासु दरबार ॥
आयकै रावण के सन्मुख सो ठाढ़ो भयो रूप विकरार ।
लखि सकुचाना भय आना मन पुनि करिलीन ताहिस्वीकार ॥
सुनौ हकीकति अब आगेकी करि मन सावधान हरियान ।
शाप पायकै दिन थोरेहि महँ खल अस हृदय कीन अनुमान ॥
दण्ड न पायों मैं ऋषियनते यह कछु नीक भयो नहिं काम ।
दूत पठायसि तब चारिक त्यहिं जहँ जहँ रहे मुनिनके धाम ॥

हाल बतायो तिन मुनियन को माँग्यो राज दण्ड हठ ठानि ।
व्याकुल ह्वै कै मुनि शोचे तब यह अभिमानि न मानी बानि ॥
बिन कछु दीन्हे बरिऐबे ना पैबे बार बार दुख गाथ ।
यह विचारि तन फारि फारिकै घटभरि रुधिर दीन तिनहाथ ॥
कह्यो सँदेशा पुनि दूतन ते नृप ते कह्यो जाय समुझाय ।
घट उघरतही क्षय ह्वै हैं सब तुम सह ससुर असुर समुदाय ॥
दूत पहूँचे चलि लंका महँ जहँ पर रहै राज दरबार ।
माथ नायकै महराजा को आगे धर्यो कलश सो यार ॥
कह्यो सँदेशा पुनि मुनियन को सुनि सो शाप भई उर ताप ।
हुकुम सुनायसि तब दूतनको लीन्ह्यसि हियविचारि सबआप ॥
घटलैजावो यह उत्तर दिशि आवो यत्न सहित महि गाड़ि ।
जानि न पावै कोउ काहू विधि तुमते कही बात यह आड़ि ॥
पाय सुआयसु अस ताको फिरि घटलै गये दूत स्वइ आप ।
मिथिलापुर महँ धरिआये सो खाँदिकै क्षेत्रमाहिं चुपचाप ॥
करीयज्ञ जब जनकराज ने जोती भूमि स्वर्णहल धारि ।
नसी लगेते घट खुलिगा वह ताते प्रगटभई सुकुमारि ॥
कन्या कहिकै वहि लीन्ह्यो नृप लहिकै महा मोद अभिराम ।
त्रिभुवन धन्या वहि कन्याके बहुतक भये अनूपम नाम ॥
महिते निकसी त्यहि कारणते यक महिसुता नाम बिख्यात ।
नाम जानकी यह कारणते जो नृप जनक जनकभे तात ॥
नसीके लागेते सीता अस सुंदर धर्यो देवऋषि नाम ।
सब सुखदाता जग माता सो जानहुँ आदिशक्ति गुणधाम ॥
सुनौ अगारी फिरि कौतुक वह जो कछु कीन दुष्ट दशमाथ ।
जाहि उधारन अरु मारन को धार्यो दिव्यरूप रघुनाथ ॥
सूर्य चंद्रमालै यावत सब वरुण कुवेर अग्नि यमकाल ।
सिद्ध गंधरब सुर किन्नर नर ऋषि मुनि आदि वृद्ध औबाल ॥
सो दुख दाता सब काहू को ख्याति फिरै धर्म की पारि ।

करुणा भूलिहु मन आनैना मानै नाहिं क्यहू विधि हारि॥
ब्रह्मसृष्टि के तनु धारिन महँ रावण वश्य सर्व नर नारि।
नित्त नवावैं शिर पायँन महँ मानैं हुकुम शीशपर धारि॥
जगवश कीह्यसिभुज विक्रमते कोउनस्वतंत्र परै दिखराय।
एक अकेलो महि मण्डल महँ भूप दिखाय निशाचर राय॥
यक्ष गंधरब नर किन्नर सुर नाग कुमारि सारि उर गारि।
जीति बियाही वल वाहुन के सहित उमाहु सुंदरी नारि॥
मेघनाद सन जो भाख्यो कछु सो जनु प्रथम कीन वहिंकाम।
जीत्यसि संगर महँ इंद्रहु को ताते भयो इंद्रजित नाम॥
पहिले पठयासि जिन दुष्टन को करिबे हेत धर्म को नास।
सुनौ हकीकति तिन कीन्हीं जो दीन्हीं सबै विपति अनयास॥
महा भयानक तन देखत महँ दुसरे सबै पाप के बाप।
फिरिउ असंख्यन दुइचारिउ नहिं सुर महिसुरनदेत परिताप॥
करैं उपद्रव बहु भांतिन के माया करैं धरैं बहु काय।
मिटै धर्म पथ विधि जौनीते वेद विरुद्ध करैं रवइ भाय॥
ज्यहि ज्यहि देशन महँ पावैं लखि ब्राह्मण गऊ संत समुदाय।
त्रास देखावैं लुटुवावैं घर पुर महँ आगि लगावैं धाय॥
नीक आचरण कहुँ होवैं ना खोवैं सकल रीति मर्याद।
वेद विप्र गुरु कोउ मानै ना ठानै एक एक सों बाद॥
कहूं न चर्चा हरि भक्ती को अर्चा सुरन केरि कसि आय।
योग यज्ञ जप कोउ पूछै ना छूछै धर्म कर्म दिखराय॥
दान मान की सुमति ज्ञानकी कोउन चलै भूलिहू राह।
श्रुति पुरानकी अरु कुरानकी तागति काह करै कोउ चाह॥
स्वपन्यों पावै सुनि कानन ते जो दशआनन ऐस हवाल।
विप्र फलाने सन्माने बहु तौ फिरि करै ताहि बेहाल॥
योग यज्ञ जप तप आदिक को पावै जानि होत वहि ठाम।
आपहु धावै उठि जावै तहँ करिकै विघन मिटावै नाम॥

छीनि लँगोटा पटलोटा घट सोंटा तीनि देय धड़काय।
छोटा मोटा कोउ छाँड़ै ना खोंटा कर्म लीन अपनाय॥
पुण्य परानी पाताले गै भ्रष्टाचार भयो संसार।
देश निकासै अरु त्रासै त्यहि जो कर श्रुति पुराण व्यवहार॥
कहँ लग गावैं कहि जावैं ना निश्चर करैं जौन अन्याय।
जिनको स्वारथ हिंसाही नित तिनके पाप सकै को गाय॥
चोर जुआरी खल बाढ़े बहु काढ़े गये सन्त मतिमान।
ताकैं परधन परनारी जे तिनके वृंदलाग अधिकान॥
माय बाप को कोउ मानै ना जानै नाहिं देव कस आयँ।
सेव करावैं द्विज साधुन ते चलत कुराह नाहिं सरमायँ॥
ऐस आचरण जिन प्राणिन महँ जानहु तिन्हैं असुरसमबाम।
एक दामके ते महँगेहैं मूढ़ हराम चाम बेकाम॥
धर्म निशानी कहुं देखी ना लेखी सविधि पुण्य की हानि।
आनि कानितजि तबगलानिवश परम सभीतधरा अकुलानि॥
सिंधुपहारन सर हारन को मोकहँ असन भार गरुआय।
जसम्वहिं गरुओ परद्रोहीइक यहिविधिशोचिशोचिअकुलाय॥
धर्म व्यतिक्रम सब देखें सब कहि नासकैं दुष्ट डरमानि।
रही न समरथि अस काहू मा जो त्यहि मना करै बल ठानि॥
धराविचारी धरि गोतन तब पहुंची जहां देव मुनि भारि।
रोय सुनायसि दुख आपन बहु अबमैं गइउँ बहुतुही हारि॥
व्यथाधरित्रीकी सुनिकै सब सुर मुनि करत भये सल्लाह।
काम न होई यह काहूले कठिनि दिखाय परत बहुराह॥
करि अस सम्मत सब इकमिलकै मुनि गंधर्व सिद्ध सुरभारि।
गोतनधारी महिप्यारी सँग पहुँचे ब्रह्मलोक उरगारि॥
करि अभिबादन ब्रह्मदेव कों सबरे हाथजोरि शिरनाय।
आपन आपन दुख गावतभे महा अधीर धरा बिलखाय॥
जानि हकीकति विधिस्वामी तब मनअनुमानि कह्योयह बानि।

यामहँ हमरो बश नाहीं कछु धीरज धरो कुऔसर जानि॥
जौने स्वामीकी दासी तुम सोई हमरो तोर सहाय।
स्वइ अविनाशी यहि फाँसी को काटनहार कहैं श्रुतिगाय॥
त्यहिके पायँन को सुमिरौ अब वाही शोक बिनाशनहार।
भार उधारन खल मारन को धारत युगन युगन अवतार॥
जनकी पीड़ाको जानत वह हरिहै अवशि कुसंकठ फाँस।
यामहँ संशय कछुनाहीं है आनौ हृदय माहिं विश्वास॥
यहिविधि बानी सुनि ब्रह्मा की बैठे सब सुर करैं विचार।
कहँ हम पाइय त्यहि स्वामी को ज्यहिसे कही बिपतिको भार॥
कोऊ चलिबो बैकुण्ठै कहैं कोउकहै क्षीरसिंधु महँ नाथ।
प्रीति भक्तिहै जासि जाके हिय प्रभु त्यहि सदा तैसही साथ॥
गिरिजा हमहूं त्यहि समाज महँ बैठे रहन देवतन माहिं।
समय पायकै कहिभाष्यों अस सोथल कहां जहां प्रभु नाहिं॥
यह मैं जाननहौं नीकी विधि प्रेमते प्रकट होयँ भगवान।
और भाँतिते वांमिलिहैं ना यह जिय धरौ करौ परमान॥
सर्व विश्वमय अरु सबहीते न्यारोरहै विरागी तौन।
काठके भीतर की आगी ज्यों प्रकटै तनक लगेते पौन॥
बचन हमारे ये सबही को प्यारे बहुतु लगे त्यहिकाल।
कीनि बड़ाई बहु ब्रह्मा ने सांची कह्यो चंद्रधर भाल॥
परम खुशालीभइ ब्रह्मामन तनमहँ पुलक नैनबह नीर।
हाथ जोरिकै बिनवन लागे ह्वै अति सावधान धरि धीर॥
जै सुरनायक जन सुखदायक दीनदयाल पाल भगधाम।
गो द्विज पालक खल दल घालक सुंदर सिंधुसुता पति राम॥
अद्भुत करणी द्युति तरणी सम धरणी भार उधारनहार।
भव भय हरणी वर वरणी श्रुति कीरति कृपा करहु कर्तार॥
जय अविनाशी सब घट बासी आनँद राशि दासदुख नाशि।
विश्व बिलासी जन सुख भासी बिदिशा दिशारह्यो परकाशि॥

स० एकहि रूप अनूप लसै बिलसै सबमें सबही ते नियारो।
रेखन वेस अलेख लखै नहिं कोऊ कितो कर दृष्टि पसारो॥
माया नछाया नजायाजरात्यहिरोगन शोगन नीकविकारो।
बंदि बिपत्ति विघायक सो बिभुहोय सहायक आय हमारो॥

अति अनुरागी बैरागी अरु मुनि जन मोह छाँड़ि कै जाहि।
निशिदिन ध्यावैं गुणगण गावैं जय सच्चिदानंद उत्साहि॥
तीनि रूपधरि जो सृष्टी यह सिरजै भजै करै संहार।
संग सहायक कोइ दूजो नहिं होयसो प्रभुहमार रखवार॥
भक्ति न पूजा हम जानैं कछु आनै हृदय माहिं विश्वास।
अवशि हमारी सुधि लेहै सो जाके चरण शरण की आश॥
छाँड़ि सयानी मन बानी क्रम आये शरण देव सब झारि।
देर न करिये दुख हरिये अब जै असुरारि जयति अविकारि॥
शेष शारदा श्रुति आदिक लै जाकहँ कोउ न जानगुणवान।
अतिव पियारे ज्यहि आरत जन होय प्रसन्न तौन भगवान॥
जो भवसागर महँ मन्दर सम दासन हेत देत आधार।
सबविधि सुंदर गुणमन्दिर सो होवै बंदिदीन रखवार॥
महा भयातुर ह्वै यावत सुर मुनि गंधर्व सिद्ध समुदाय।
बंदत प्रभुके पदकंजन कहँ रंजन करौ सेवकन आय॥
बानि नेहयुत सुनि ब्रह्मा की सुर मुनि भूमि भयातुर जानि।
शोकनशावनि सुख छावनि तब भई गँभीर धीर नभबानि॥
सुनियो सिद्धौ सुर मुनियो सब तनिक न डरौ हृदय भयलाय।
तुम्हैं उधारण खल मारण हित धारण करौं वेगि नरकाय॥
सूर्यवंश महँ सह अंशन के धरिहौं मनुज केर अवतार।
अपने दासन को भरिहौं सुख हरिहौं परम धरा को भार॥
कश्यप आदितीने कीन्हों तप दीन्हों तिन्हैं पूर्व बरदान।
ते नृप दशरथ कौशल्या ह्वै कौशलपुरी माहिं प्रगटान॥
तिनके घरमा अवतरिहौं मैं रघुकुल तिलक चारिहू भाय।

सांचे करिहौं बच नारद के धरिहौं परम शक्ति सहकाय॥
सही मानि कै मम बानी यह निर्भय होहु देव समुदाय।
रंचक शंका उरलावो ना जावो ओक शोक बिसराय॥
सुनिनभ बानी सब कानन ते सुर मुनि हृदय गये हरषाय।
बिधिहु बुझायो बहु पृथ्वी को निर्भय भइ भरोस उर लाय॥
फिरि चतुरानन निज लोकै गे देवन इहै हुकुम फुरमाय।
धरिकै बानर तन धरती महँ सेवहु स्वामि चरण तुम जाय॥
गये देवतहु फिरि निज निज घर पायो भूमि सहित विश्राम।
जो कछु आयसु दिय ब्रह्माने आनँद मानि कीन स्वइ काम॥
बानर देही धरि पृथ्वी पर संभव भये देव सब जाय।
अतिव प्रतापी बल ब्यापी तन बहुदल सकल कहै को गाय॥
तिनके आयुध नख पादप गिरि गात समान हाथ हथियार।
मारग ताकैं नारायण कै कबधौं धरा धरैं अवतार॥
बसे पहारन बन हारन महँ आपनि आपनि गोल बनाय।
जहँतहँ बिचरैं निज इच्छा रुचि दलफल फूल मूलको खाय॥
चारित मनोहर यह भाष्यों मैं तुमते भरद्वाज मन लाय।
सुनो अपूरब वह कौतुक अब जो छुटि गयो बीच महँ भाय॥
पुरी अयोध्या महँ रघुकुल मणि दशरथ भूप अनूपम नाम।
धर्म धुरन्धर गुण मन्दर बर शारँगपानि भक्ति को धाम॥
कौशल्यादिक तिय तिनकीजे शुचि आचरण सबै मतिमान।
अतिशय प्रेमी पति सेवा महँ धारैं स्वामि चरण में ध्यान॥
इक दिन मनमा महराजा के बहुत गलानि भई खगराय।
अबलगि एकौ सुत पायों ना है धिक राज साज सुख भाय॥
तब बोलवायो गुरु वशिष्ठको बासी नगर केर परधान।
आय कचेहरी महँ बैठे सब लहिकै यथायोग्य सन्मान॥
तिनते दुःखित नृप बोलत भो गुरु के पगन माहिं शिरनाय।
नृपता भोगत पन आयोयह दिनदिन थकतिजाति अबकाय॥

पुत्र एकहू मैं पायों ना आगे वंश बढ़ावन हार।
पुत्र न पावै जो गृहस्थ कोउ ताको पितृ देत धिरकार॥
तर्पण कीन्हों त्यहि हाथे को पावत देव पितृ कोउ नाहिं।
लिहे अंजुली महँ ठण्ढो जल तुरतै गर्म होत कर माहिं॥
मिलै न संतति ज्यहि दुनियाँमहँ त्यहिकी कुगति होत बहुभांति।
प्रात निपूते कर देखे मुख तन महँ पाप ताप अधिकाति॥
हे गुरु मेरो दुख मेटो यह होवै जौन भांति मति धाम।
हमरे पीछे हंस वंश को आगे कौन चलैहै नाम॥
सुनि इमिबानी नृप दशरथकी ज्ञानी मुनि वशिष्ठ करि ध्यान।
लाग बुझावन महराजा को होहु न उर अधीर मतिमान॥
शृंगीऋषि को बोलवावहु तुम तिनते सविधि करावहु याग।
तब तुम निश्चय सुत पावहु नृप महा गँभीर धीर बड़ भाग॥
पूछन लाग्यो तब राजा फिरि वे मुनि कहां बसत क्यहि ग्राम।
हाल हकीकति बतलावहु सब हमते भाषि नाथ सो आम॥
लगे बतावन मुनि बशिष्ठ तब शृंगीऋषि चारित्र विस्तारि।
अहैं विभांडक मुनि बनमें यक साधत तपहि धीर उर धारि॥
अतिशय ज्ञानी गुणखानी बहु महा प्रतापवान दरशायँ।
सब कोउ मानै डर तिनको उर दीन्हें शाप भस्म ह्वै जायँ॥
देखि तपस्या मुनि नायक की उर सुरनायक बहुत डेरान।
छीनि हमारो पद लैहैं ये निश्चय यही होत अनुमान॥
टेर्यो पवनहिं तब आतुर गति आये त्वरित इंद्र के पास।
इन्द्रपठायो मुनिनायक ढिग कहि परकाश कीनि निजआस॥
बाय आयके त्यहि जंगल में लगे उपाय करन स्वइ भाय।
जा महँ नाशै तप मुनिवर को तौ सुरराज काज बनिजाय॥
सकल सुधामय फल कीन्हें तहँ झुँकवन बहै सुगंधित बाय।
कंद मूल फल मुनि खाये जब देर न लगी पुष्ट भइ काय॥
भये प्रवलता युत अंगौ सब जस जलपाय धान हरिआय।

जग्यो मनोभव तब हिरदै में उपजी बिषय चाह बरिआय ॥
लगे विलोकन मुनि चारौ दिशि त्यहि क्षण एक उर्वसी आय ।
कनक छरीसी छवि पुतरीसी मुनि सामुहे ठाढ़ि भै जाय ॥
शोभ गसी सो दृगन फँसी सो मुनि उर वसी उरवसी तौन ।
रह्यो न काबू महँ चंचल मन अंचल तासु खोलि दिय पौन ॥
मन मथि डास्यो खल मन्मथ ने मुनि रज खलितभयो त्यहिठाम ।
बहन न पायो सो इतउत कहुँ मुनि लैलीन ताहि करबाम ॥
युक्तिसहित त्यहि धरि सरितातट आपन शुद्धकीन फिरिगात ।
बहु पछिताने सकुचाने मन फिरि तप करन लाग मुनिजात ॥
लिखी बिधाता की मेटै को होवै होनहार हठि यार ।
मृगीपियासी यक आई तहँ पीवन हेत नदी महँ बारि ॥
पानी पीकै पुनि हरणी वह लागी चरन तीर पर आय ।
वहि थल बीरज धरि आयेते दुर्वांतर लुकाय मुनिराय ॥
वह तृण खायो जब हरणी ने मुनिरज पस्यो पेट में जाय ।
मृगी ऋतुवती तौथीही नृप गो संयोग गर्भ को छाय ॥
गर्भ सो दिनादिन बाढ़न लागो गत षटमास भयो इक बाल ।
अंग तासुके सब मानुष सम केवल मृग संमान तन खाल ॥
शोचकुरंगी उर बाढ़यो बहु का यह दशा भई भगवान ।
ज्यहि भयडोलों में बनबन प्रति सो नर प्रगटभयो यह आन ॥
यह बिचारिकै त्यहि बालक को आपन शत्रु सरिस अनुमानि ।
छांड़ि अकेला त्यहि जंगल महँ आपु पलानि मानि उरग्लानि ॥
पकरि तृणांकुर कर चूसै शिशु रूसै रुदन करै बिलखाय ।
दैवयोगते मुनि विभांडकहु पहुँचे तौन ठाम में आय ॥
अद्भुत बालक अवलोक्यो तहँ बने कुरंग अंग छविधाम ।
त्वचा मुलायम जस मानुषकी अहै अनंग सरिस अभिराम ॥
ध्यान धारिकै मुनि देख्यो तब सबरो चरित लीन अनुमानि ।
पियो हमारो रज हरणीने त्यहिते भयो पुत्र यह आनि ॥

सांचो बालक है मेरो यह अस कहि लीन गोद महँ लाय।
फिरिचलि आये निजकूटी महँ पालन लगे ताहि सुखपाय॥
कोमल डाभन की शय्यारचि त्यहि पौढ़ाय दीन सविधान।
मधुर सुधासम रस फूलनको नित प्रति लाय करावत पान॥
सुखद चंद्रसम सो बालक वह दिनदिन बढ़नलाग शुचिगात।
महाअखण्डित मति मण्डित अति पण्डित भयो ग्रंथपढ़ितात॥
कढ़े सींग दुइ शुचिमाथे महँ ताते परो शृंगिऋषि नाम।
देय शापअरु वर जाको जस कबहुँन टरै तौन मति धाम॥
तिन तेजस्वी को कौतुक कछु औरौ सुनौ भूप मन लाय।
कहीभुशुण्डीजो खगपति प्रति औशिव कही शिवासन गाय॥
बसै मनोहर अंगदेश इक तहां नरेश वेश गुण धाम।
धर्म कर्म रत शुचि सज्जन मत भाषत रोमपाद त्यहि नाम॥
लालन पालन बहु रय्यत को आछी भाँति करै मन लाय।
भूलिन धारैपगकुत्सित मग कीरति विमल रही जग छाय॥
बीते औसर कछु आनँद सह कारण पर्यो एक तहँ आय।
देश भरे महँ जल बरस्योना बारह वर्ष बीति गईं भाय॥
प्रजा पखेरू पशु पीड़ित अति लागे मरन मिले बिन पानि।
शोक सताये चलि आये सब नृप ढिग कहन दुःख कीबानि॥
हाल जानि अस अवनिपाल ने लीन बुलाय धीर मतिमान।
सब विधि वक्ताजे ज्योतिष के जिनको तीनि काल को ज्ञान॥
तिन प्रति पूंछ्यो महराजा ने भाषौ अनावृष्टि को हाल।
युक्तिहु याकी बतलावो कहि जाते मिटै दुःख ततकाल॥
पाय सुआयसु इमि राजाको पण्डित ज्ञानि हेतु सो जानि।
लगे बतावन महराजा ते सुनिये नृप सुजान मम बानि॥
और न कारण कछु पायो हम केवल एक बात दिखराय।
सुता ऋतुवती इक राउर पुर सोई पाप रह्यो यह छाय॥
बारिन बरसै यहि कारण ते याकी युक्ति सुनौ भूपाल।

आवैं शृंगीऋषि कौनिउँ विधि जो इत मुनि विभांडके लाल॥
मिटै उपद्रव तौ तुरतै यह बरषै अति अपार जल धार।
प्रजा पखेरू पशु हरषै सब करषै दोष बात यह सार॥
पाय सुसम्मत अस गुनियन को नृप दुंदुभी दीनि बजवाय।
खबरि सुनाई पुरवासिन को शृंगीऋषिहि सकै को लाय॥
त्यहि परितोषिक में देहौं बहु सुनिअस हुकुम धरापति क्यार।
बूढ़ि मेहरिया चलि आई इक जहँ महराज केर दरबार॥
हाथ जोरि कै यह भाषति भै मांगौं तौन देहु सामान।
में लै आऊं ऋषिशृंगी को ज्यहि नाहिं नारि पुरुष को ज्ञान॥
लगे स्वच्छ फल जिन वृक्षन महँ ते इक नाव माहिं धरवाय।
और पदारथ दै उत्तम बहु ताको सविधि देहु सजवाय॥
बात मानिकै तिय वृद्धा की भूपति हुकुम दीन करवाय।
तरणी कंचनमय विरची छवि बरणी जो न क्यहू विधि जाय॥
ध्वजा पताका बहु रंगन के झालरि जटित जवाहिर लाल।
खुलैं न पलकें जेझलकें लखि ते मणि माल धरे साजि आल॥
धरी मिठाई बहु प्रकारकी व्यंजन खान पान पकवान।
इतर अरगजा कपूरादिक तेल फुलेल एल अरु पान॥
कंचन झारिन महँ गंगाजल सो भरवाय दीन धरवाय।
तार तँबूरा डफ भेरीले बाजा सकल दये गरवाय॥
तिया हजारन अरु बैठीं चढ़ि साजि आभरण और शृंगार।
जिनकी शोभा अवलोकत खन तुरतै मोहि जात मन मार॥
मुनि प्रताप सुनि वे युवती सब रोवन लगीं हृदय भय मानि।
तब वह वृद्धा अस भाषत भै सुनियो तियो हमारी बानि॥
मोरे सँगमा कोउ डरपौ जनि हर्षित चलौ मोर बल पाय।
रहौं जवानी ज्यहि औसर में सहसन बश्य कीन मुनिराय॥
अस कहि वृद्धा चढ़ि बैठति भै नैया चली नर्मदा माहिं।
वाही थलपर चलि पहुँचाति भै करत मुनीश बास ज्यहि ठाहिं॥

नैया रोंकी कर्णधार ने तटपर तुरत दीनि लगवाय।
करें तपस्या मुनि विभांड तहँ तिन कहँ लखि तिय गईं डेराय॥
कबहुँक नैनन ये पैहैं लखि देहैं शाप भस्म कै जान।
अस बिचारि कै चलि आईं उत हैं ऋषिशृंग जौन अस्थान॥
उतरि नाव ते तहँ नारी सब करि आलाप स्वरीली तान।
लगीं बजावन अरु गावन बर जस कोकिला कंठ परमान॥
पास पहूँचीं जब मुनिवर के औ वह तान गई परि कान।
ध्यान बिसार्यो मन धार्यो उत जिन्हैं न नारि पुरुष को ज्ञान॥
स्वर्ग निवासी सुर जान्यो सब आये उठि तड़ाक तिन पास।
प्रथम नवायो शिर वृद्धा को जान्यो देव राज त्यहि खास॥
फिरि सब तिरियन को बंदन करि पायँन माहिं गिरे अकुलाय।
झपटि तड़ाका तिय वृद्धा ने लीन उठाय अंक बैठाय॥
चूमन लागी मुख शृंगी को चौदह बरस केर जे बाल।
तब मुनि सबहिन को आन्यों गृह मान्यों देव दरश मुद माल॥
एकहि आसन रह मंदिर महँ सो बुढ़िया कहँ दीन बिछाय।
कंद मूल फल भरि दोनन महँ तुरतै धरे अगारी लाय॥
हाथ जोरिकै फिरि भाष्यो यह भोजन करिय नाथ सुख पाय।
दाया कीन्ह्यों बहु सेवक पर दर्शन दियो आजु इत आय॥
लखिफल बुढ़िया बिष्नु बिष्नुकरि धरेसि उठाय कानपर हाथ।
बिन हरि पूजन फल खानोकस जानौ म्वहिं न अन्यसम नाथ॥
अर्पण कीन्हें बिनु भगवत्त के जो करि लेत पुरुष आहार।
निश्चय जीवत पशु जानौ त्यहि मरे ते अवशि जात यमद्वार॥
सुनि कहनावति यह बुढ़ियाकी ऋषिसुत परम भक्त त्यहि जानि।
हाथ जोरिकै इमि भाषत भे करिये क्षमा दास म्वहिं मानि॥
दियो कुशासन पुनि दूजा त्यहि पूजा करौ आपु सुख पाय।
बैठि कुशासन पर वृद्धा तब लागी दंभ करन हरि ध्याय॥
नैन मूंदिकै कर नासा गहि श्वासा साधि लगायसि ध्यान।

दंभ देखिकै अस वृद्धा को मुनिसुत हृदय बहुतु हर्षान॥
जन्म कृतारथ भो आजुइ मम दुर्लभ दरश देवके पाय।
सफल तपस्या सब भांतिन अब भयों पवित्र वचन मन काय॥
कछुक ब्यार लग करि पूजाइमि दृगपुट खोलि दीन फिरि नारि।
कहि अस भाष्यासि मुनिबालकप्रति लेहुप्रसाद बिष्नुको वारि॥
हाथ उठायो ऋषिशृंगी ने तब वहि बाम कीन छल भाय।
दीन मोदकन फल ओढ़रते सो उन लीन खाय हर्षाय॥
परम मधुरता के पागे वै लागे नीक बहुत मन माहिं।
सरहन लागे मुद जागे तब यहि बन माहिं ऐस फल नाहिं॥
पुनि तदनंतर वहि वृद्धा ने शक्कर गंग बारि महँ सानि।
ताहि पिआयसि जल धोखे महँ लाग्यो मधुर महा स्वउ पानि॥
फेरि खवायो रस कामेश्वर मुनि सुत हृदय भयो उन्माद।
भाषन लागे तब वृद्धाते करिकै याद फलन को स्वाद॥
कौने बनमा फल उपजैं अस दीरघ महा मधुरता रासि।
बहु सुख पावै मुख खावै जो हैं धनि तौन विपिन के बासि॥
परम सयानी वहि बुढ़िया ने तब अस कह्यो तिन्हैं ललचाय।
इनते नीके फल पैहौ उत जो मम संग सिधैहौ भाय॥
मुनिसुत भाष्यो अभिलाष्यो यह चलिबे अवशि तुम्हारे साथ।
अस फल खैबे सुख पैबे उत पीबे महा मधुर बर पाथ॥
तब अनुमान्यो उन युवतिन ने मुनि सुत हृदय अंकुर्यो काम।
पास जाय कै तब सबहिन ने तन पट खोलि दीन मति धाम॥
हृदय लगायो इक नारी ने मुनिको कियो अधिक रस प्यार।
चूंबन लागी मुख प्यारी इक इकने अंक लीन बैठार॥

स० इक बाम उरोज सरोजन को परसावत कोमल हाथनते।
इकभौंह कमानपै तानत बान दृगै मुसक्यानके भाथनते॥
इक गावतबाज बजावत सो रस प्यावतहै श्रुति पाथनते।
यहिभाँतिमनोज कि घातनते न बच्योतनकौतननाथनते॥

इमि मुनिबालक को धोखादै नारिन हर्‍यो बुद्धि औ ज्ञान।
परम सयानी वहि बुढ़ियाने तब अस हृदयकीन अनुमान॥
आजु जाउँ लै जो बालक यह पावैं कहूं विभांडक जानि।
शापित करिहैं रिस धरिहैं उर तौ फिरि अवशि होय तन हानि॥
याते खाइय गम रजनी भरि सुत पितु रहैं एकही पास।
देखौं पितुते कह भाषत यह तब तस हृदय परै बिसवास॥
प्रेम बार्ता सुनि बालककी जो मुनि तजै अकेलो ताहि।
तौ फिरि निश्चय लैजैहौं मैं सम्मत शुद्ध परै लखि याहि॥
गुनि अस मनमा मुनि बालकते पुनि यह कहतभई हँसि बात।
शिष्य हमारे अब प्यारे तुम वर दिखरात तात यह नात॥
दूजे शिष्यहि मिलि आऊं मैं तुमको कालिह लै चलब साथ।
मुनि सुत बोलो तबदुःखित ह्वै अब जनि तजो दास कहँ नाथ॥
शिष्य मानिकै म्वहिं तजिहौ तौ लगिहै तुम्हैं विप्रवध पाप।
याते लेवहु सँग सेवकको इतनी दया करौ अब आप॥
मोहिं छांड़िकै जो जैहौ तुम तौ जरि मरौं अग्नि की ज्वाल।
प्रेम देखिकै अस शृंगी को बोली बिहँसि बुढ़वा बाल॥
करौ तपस्या सुत दिन भरि तुम शायंकाल फेरि इत आय।
त्वहिं सँग लैहौं चलि देहौं तब उरते शोक देहु बिसराय॥
यहि बिधि धीरज दै शृंगी को लै सब बाम साथ महिपाल।
आय नर्मदा तट नौका पर बैठत भई फेरि वह बाल॥
दिवस बितायो मुनि ज्यों त्यों करि शायंकाल देखि अकुलाय।
ताकन लागे मग चकित दृग आये नाहिं लौटि मुनिराय॥
बुद्धि विधाता हरि लीन्हों कह करते दिह्यों दिव्य मणि डारि।
दैकै अस सुख दुख दीन्ह्यो फिरि विधना बुद्धि तोरिगै मारि॥
अति उदास ह्वै मुनि बालक इमि रोवत माथ पीटि बिलखात।
मुनि विभांडकहु चलि आये तब देख्यो अति उदास सुतगात॥
लगे विचारन तब हिरदै महँ कारन काह भयो यह आज।

भयो बालकहि दुख दीरघ किमि रोवत अनायास क्यहिकाज ॥
पूछन लागे पुनि बालक ते रोवत कौन हेतु तुम तात ।
भाषि बतावहु सो हमते सब क्यहिं खल तुम्हें दीन दुखब्रात ॥
कह्यो जनक ते ऋषिशृंगी तब आये आजु देव इत बाप ।
पूजन भोजन बहु कीन्ह्यों इन मोहिं प्रसाद दीन तिन आप ॥
यह सुनि मुनिवर गे कूटी महँ कीन्ह्यों फलाहार सविधान ।
डारि कुशासन पुनि बैठे तहँ तब शृंगीऋषि कियो बखान ॥
जैसै गमन्यो पितु बनको तुम तैसै स्वर्ग लोकते आजु ।
बहुतक ऋषि गण चलिआये इत कीन्हें परम मनोहर साजु ॥
उनके सदृश मुनि दूजे नहिं हमको अब लगि परे दिखाय ।
हरि आराधन तिन कीन्ह्यों इत वाजिब जौन रीति जस आय ॥
भोग लगायो पुनि भगवत को बनफल हमें दियो परसाद ।
जानि प्रसादी ते पाये हम बहुतइ मिलो फलन में स्वाद ॥
बहु दिन बीते यहि जंगल महँ खाये कबहुँ ऐस फल नाहिं ।
इन सम कोउन मुनि त्रिभुवनमें कीन्ह्यों असबिचार मन माहिं ॥
जटा सँवारे शुभ शीशन महँ तिन बिच परी कुसुमकी माल ।
मृणमय टीका अति नीका सो शोभित किये मनोहर भाल ॥
आनन शोभा लखि लोभा मन को भा कहन योग छबि आल ।
मानहुँ दीपित नभ मण्डल महँ कश्यप बाल लालपहु काल ॥
नील पीत सित बहु रंगन के शोभित कंठ फलन के हार ।
सुंदर बृक्षन के बल्कल पट सोहत विविध रंग छविदार ॥
धारे पल्लव तरु कानन बिच तिन बिच सुमन गुच्छ रहे झूमि ।
रोमन जामे तिन अंगन महँ मानहुँ बनी चीकनी भूमि ॥
परम भागवत मुनि जाने वै मोसन नहीं बखाने जाहिं ।
कमल फूलसम मृदु मंजुल युग सोहत मांस पिंड उर माहिं ॥
परस कराये वे कर ते म्वहिं ताते मिल्यो बहुत सुख तात ।
ते मुनि मोकहँ तजि जबते गे तबते मोर चित्त अकुलात ॥

सुनि सुतबानी मुनिज्ञानीके भयो अपार शोच मन माहिं।
नारि पुरुष अरुगुण औगुणको कछू बिचार पुत्रको नाहिं॥
लगे बुझावन तब बालकको पुत्र अयान तोहिं नहिं ज्ञान।
धोख भुलायो जनि मुनियनके उनको नारि निशचरी जान॥
बन बन डोलैं मृदु बोलैं बच धारैं परम मनोहर गात।
तात भुलावादैं जंगल महँ प्रति दिन करैं जीव बहुघात॥
तुम्हैं लोभायो तिन दुष्टन ने उबरे आज हमारे भाग।
कहो न मान्यो अब उनको सुन आन्यो हिय न भूलि अनुराग॥
अबजो तुमको लखि पैहैं फिरि जैहैं नारि निशचरी मारि।
कित लैजैहैं हरि अन्ते कहुँ तुम कहँ मोह फांस में डारि॥
शृंगीऋषि के मन मानी ना बानी पिता केरि भूपाल।
पुनि गुणगाये उन मुनिश्न के छाये नैन अश्रु जल जाल॥
तात बात असि तुम भाषौ जनि तिन समको दयाल जगमाहिं।
मिलैं सबेरे जो दर्शन फिरि तौमैं अवशि जाहुँ तिन पाहिं॥
होत बतकही पितु बालक ते यहि विधि बीतिगई सबरात।
हास्यो मुनिवर संबोधन करि भयो प्रभात आय तब तात॥
मुनि बिभांडक हिय शोचे अस बालन बश्य भयो यह बाल।
कहो न मनिहै अबकाहू बिधि करौं उपाय कौन यहि काल॥
याहि रखावों जो घरमें रहि तौ अघ लगै धर्म बहिजाय।
मिथ्या नाता सब यावत यह काको पिता पुत्र को आय॥
सही नाम इक नारायण को औ यह सब असार संसार।
तामें परिकैं क्यों भरमौं मैं धरमौं अपन नशावों यार॥
यहि बिधि गुनिकै पुनि बालकको मुनि समुझाय कहीयहबात।
अपनि भलाई जो चाह्यो कछु उनके फंगपरयो जनितात॥
असकहि पूजनकी सामालै तपहित आपु गये बनमाहिं।
तब अनुमा यो वहि वृद्धाने अब गृह माहिं मुनीश्वर नाहिं॥
कहि असभाष्यो उन नारिन ते मुनिसुत चलौ लयावन आज।

गान तानते मनमोहन करि पूरणकरी राजको काज ॥
हृदय आस इमि करि वृद्धा वह तिय लैचली बाल मुनि पास ।
बीन बजावत धुनि छावत मृदु गावत गान तान सहुलास ॥
आय पहूंचीं ढिगकूटीके छूटी मनहुँ मैनकी सैन ।
नैन नचावत मटकावत भौं भाषत परम मनोहर बैन ॥
नाद बाद वह मुनि बालकके तुरतै पर्यो कान में जाय ।
ध्यान छाँड़िकै तब दौरे उत बरबस मिले आय अकुलाय ॥
पायँ पकरिकै तिय वृद्धा के गे लपटाय प्रेम उर छाय ।
हाथ जोरिकै पुनि बोले इमि म्वहिं तजि कहां गये मुनिराय ॥
तुम्हरे देखे बिन मोकहँ इत सबरी रात गई बिलखात ।
बात न आवे कहि आनन ते मरिकै मिलो आनि परभात ॥
मोद निशानी फल पानी वह अपन प्रसाद देहु म्वहिं नाथ ।
इक क्षण मो कहँ वे भूलत नहिं मलि मलि रह्यों रातिभरिहाथ ॥
जानि आपनो निज सेवक पुनि म्वहिं लैचलो आपने साथ ।
नातरु जीवन मम नाहीं इत पाये बिन तुम्हार फल पाथ ॥
मुनिसुत बानी सुनि कानन ते सबरी तिया गईं हरषाय ।
बोली बुढ़िया तब आनँद सों अब सुत शोच देहु बिसराय ॥
इच्छा तुम्हरी जो ऐसिहि है तौ किन चलौ हमारे साथ ।
इतते भारी सुख पैहौ उत खैहौ सुफल और भल पाथ ॥
असकहि रमनी सब गमनी पुनि लै मुनिबाल संग करिजाल ।
आय बिराजीं चढ़ि नौकापर केवट खेय चल्यो ततकाल ॥
चलब नाव को मुनि जानो नहिं मानो बैठ अहैं वहि ठाम ।
आय पहूंचे अंग देश महँ पूरण भयो भूपको काम ॥
जा दिन शृंगीऋषि आये पुर छाये उमड़ि मेघ नभ माहिं ।
जल बरसाये बर धारन सों बाकी रह्यो ठाम कोउ नाहिं ॥
जीव जन्तु सब हरषाये मन पाये समाचार महिपाल ।
तुरतहि धाये उठि आसन ते लाये भवन बोलि मुनिबाल ।

पूजि बिठाये शुभ आसन पर गाये गुण अपार मुख भाखि।
पुनि बनवाये शुचि भोजनसो मुनिसुत लीन मोद सह चाखि॥
बड़ आनंदित भो राजा तब सुंदर दीन बास अस्थान।
सुता शान्ता तुव भूपति घर सो उन ब्याहि दीनि सविधान॥
ताते तुम्हरे संबंधहु में लागें ऋष्यशृंग जामात।
बोलि पठावो तिन मुनिवर को तुम्हरी सिद्धि होय सब बात॥
श्रीगुरु ज्ञानी मुनि बशिष्ठकी बानी सुनि नरेश हरषाय।
कथा मनोहर पुनि पूंछत भे दूनौ हाथ जोरि शिर नाय॥
जब चलिआये इत शृंगाऋषि औ बसिरहे भूपके धाम।
उत बिभांडमुनि तब कीन्हो कह सुत बिन रहे कसस वहि ठाम॥
प्रश्न मनोहर यह दशरथको सुनिकै मुनि बशिष्ठ सुखपाय।
कथा यथाबिधि कहि भाषतभे सुनु सो भरद्वाज मनलाय॥
शृंगीऋषिको लै आई ती जो वह बृद्धबाल भूपाल।
कान लागिकै सो भूपतिके भाष्यासि मुनि बिभांडको हाल॥
जो वे कबहुँक सुनिपैहैं यह है नृप भवन माहिं मम बार।
शाप उचरिहैं रिसधरिहैं उर करिहैं तुम समेत पुर छार॥
खैर आपनी जो चाहौ नृप तौ तुम करौ शीघ्र यह काम।
जहँ तहँ महिषी अरु गौवैं बहु देहु बसाय धाम प्रतिधाम॥
मारग मंगल मय खांसो रचि बिच बिच गावँ देव बसवाय।
नाम धरावो ऋषिशृंगीपुर तौ नृप सबै बात बनिजाय॥
ऐहैं कबहुँक जो मुनिवर इत लखि हैं पुत्र नामके ग्राम।
क्रोध न लैहैं सुखपैहैं तौ जैहैं भूलि देखि इतमाम॥
नारि सयानी की बानी यह आनी हृदय सत्य महिपाल।
बोलि पठायो अधिकारिनको तिनको हुकुम दियो ततकाल॥
देर न लाये चलिआये वे मगमहँ ठाम ठाम अभिराम।
ग्राम बसाये दरशाये बहु शोभ सजाय धाम प्रति धाम॥
बृक्ष लगायो बहु भांतिनके सुन्दर पांति ग्राम प्रति ग्राम।

नाम धरायो ऋषिश्रृंगीपुर छायो ठाम ठाम आराम ॥
इतै हकीकति अस बानति भै उत अब सुनौ बिभांडक हाल ।
तपकरि संध्याको आये जब कूटी शून्य लखी बिनबाल ॥
व्याकुल ह्वैकै तब बोलत भे हे सुत पास हमारे आव ।
औरे दिवसनकी नाईं किन आजहु निगम नाद मुख गाव ॥
पुत्र पुत्र कहि बहु बारक इमि आकुल पर्णकुटी ढिगजाय ।
लख्यो न बालक दुखघालक तब दुःखित गिरेधरणि मुरझाय ॥
पर्यो कमंडल छुटिहाथे ते तनकी रही तनकि सुधि नाहिं ।
सुत बिरहागी उर जागी बहु होत अधीर पीर मन माहिं ॥
धीर धारिकै पुनि जियरे महँ हेरत चकित दीठि फैलाय ।
पुत्र पुत्र कहि त्यहि टेरत बहु घेरत जात मोह घबराय ॥
रहे हमारे सँग अबलग सुत अब कहँ गये मोह मम छाँड़ि ।
जाय छिपाने क्यहि अस्थल महँ ढूंढ़ा ठाम ठाम हम माड़ि ॥
को हारिलैगा त्वहिं दैगा म्वहिं यह दुख महा बुढ़ौती काल ।
बैगा बिरहाकी आगी उर कैगा कुटी शून्य बिन बाल ॥
यहीते सज्जन श्रुति भाषैं कहि निश्चय यह असार संसार ।
कोउ न काहूको बालक पितु सांचो कपट केर ब्यवहार ॥
यहिबिधि शोचा मन पोचाकरि घरते निसरिचले अकुलाय ।
पूछन लागे वन वृक्षनते तुम इत लख्यो मोर सुत भाय ॥
परहित कारन तन धारन करि बन महँ सहत दुःख दिनरात ।
याते तुमसन मैं पूछतहौं निरख्यो नहीं मोर इत तात ॥
हे बन जीवहु बहुजीवहु तुम हमैं बताय देव प्रिय बाल ।
गयो कौनमग अरु काके सँग निरख्यो नहीं नैनकरि ख्याल ॥
यहिबिधि रोवत सुत जोवत मुनि गमने कछुक दूरि धरि राह ।
आय अगारीपुर देख्यो इक छाई तहां सुभग उतसाह ॥
पूछन लागे पुरवासिन प्रति काको ग्राम काह यहि नाम ।
तबपुरलोगन ने भाष्यो यह सुनिये सत्य बचन तपधाम ॥

यहिपुर मालिक हैं शृंगऋषि उनके नाम ग्राम बिख्यात।
तिनकहँ आयो रोमपादनृप कन्या दीन कीन जामात॥
गाई भैंसी चाहिय तैसी दायज दीन साजि गजबाजि।
ग्राम अनेकन धराधाम धन दीन अराम राजिकी राजि॥
सुनि प्रभुताई सुत अपनेकी मुनि सब बिसरि गये दुखजाल।
अति आनंदित भे हिरदे महँ सो सुख कहि न जात महिपाल॥
पुनि मुनि मनमहँ अनुमान्यो अस सुतको नीकलाग जगराग।
अब जो ताको लै आऊं इत औ सब बिभव कराऊं त्याग॥
तौ अस अटको कह कारज मम सुत उर वृथा भराऊं ताप।
नाम धराऊं मैं आपन जग करि उर मोह कमाऊं पाप॥
यहि ते याही मत नीको अब चुप्पै लौटि चलौं निज धाम।
काम सवाँरें तप धारें निज सुत को करन देहुँ आराम॥
यह हकीकति सुनि पायों मैं दशरथ भूप करैं हैं याग।
तहां बुलै हैं ऋषिशृंगी को जैहौं महूं सहित अनुराग॥
तहँ मिलि लेहौं प्रिय बालक को तब लौं रहौं भवन में जाय।
अस बिचारिकै वहि अस्थल ते तुरतै लौटि गये मुनिराय॥
रोमपादपुर हैं शृंगीऋषि लावहु तिन्हैं बोलि मतिधाम।
यज्ञ करावहिं वेतुम कहँ इत तौ परिपूरहोय सब काम॥
सुनि इमिबानी गुरुज्ञानी की दशरथ हुकुमदीन करवाय।
मारग सामा साजि सैना सह गमने अंगदेश महिराय॥
नगर किनारे जब पहुँचे नृप पायो रोमपाद सुनिहाल।
आवत दशरथ नृपसैना सह आसन त्यागि चल्यो ततकाल॥
मिल्यो आयकै अवधराजको अति आनंद हृदय उमगाय।
साथहि लायो निज महलनको शिविरन सैनदई टिकवाय॥
आगत स्वागत बहुकीन्ह्यों नृप राजन योग्य उचित जसआय।
सजी रोसइयाँ शुचि महलन में भोजन कीन भूप सुखपाय॥
आनि विराजे तब संसदि महँ दोऊ भूप बिमल कुलकेतु।

तब अस पूंछ्यो रोमपाद ने आये इतै मित्र क्यहि हेतु ॥
कथा सुनाई तब दशरथ सब गे ज्यहिकाज तहां खगराज ।
रोमपाद लै सँगदशरथ कहँ आये जहाँ शृंगि ऋषिराज ॥
दर्शन करिकै ऋषिशृंगीके दोऊ नृपन नवायो माथ ।
लहि अनुशासन पुनिबैठे तहँ जोरे रोमपाद द्वउहाथ ॥
शृंगीऋषि ते कहि भाष्यो इमि ये हैं अवधराज महराज ।
पुत्र लालसाहै इनके उर मोरे परममित्र ऋषिराज ॥
किहेनि तयारी मखकरिबेकी आये आपु शरण महँ नाथ ।
जो करिदाया पगधारो उत तौ बहु सुयश होय तुव हाथ ॥
सुता शान्ता जोदीन्ह्यों मैं तुम्हैं बियाहि अहो मुनिराय ।
सो वह कन्या है इनहिन की मानहु मोरिबात मन लाय ॥
यहि संबंधहु ते राउर अरु ये द्वउ अहौ ससुर दामाद ।
याते वाजिब प्रभु ऐसोहै नृप कहँ अवशि देहु दायाद ॥
हैं उदास ये बिन बालक बहु ताते लिह्यनि शरण तुव आय ।
करि अनुकम्पा पग धारिय उत इनकहँ यज्ञ देहु करवाय ॥
सुनि असबानी रोमपाद की मुनि अनुमान कीन धरिध्यान ।
बचन प्रमाने मुनि अंधकके इनके प्रकट होहिं भगवान ॥
यह बिचारिकै मुनि शृंगी तब चलिबे हेत भये तय्यार ।
राजहु सजिकै तब सैना सह भो तय्यार न लायो बार ॥
सुता शान्ता सह शृंगी को लीन्ह्यों रथचढ़ाय हर्षाय ।
रोमपाद नृप सह हर्षित मन पहुँचे अवध पुरी में आय ॥
पुरी अयोध्या अवलोक्यो तब मुनि बहुखुशीभये मनमाहिं ।
जहँ पुरबासी सुखरासी सब हैं धर्मिष्ट दुष्ट कोउ नाहिं ॥
नगर निवासिन मुनिशृंगी को पूजन कियो हृदय सुखपाय ।
खबरिपायकै ऋषि आगमकी पहुंचे बशिष्ठादि मुनिआय ॥
हर्षित भेंटे सब आपुसमहँ कीन्ह्यों यथा योग्य सत्कार ।
योग्य आसनन पर बैठे सब जहँ महिपाल केर दरबार ॥

बोले शृंगीऋषि औसर त्यहि कोमलबैन चैन सरसाय।
यज्ञ मुहूरत अबकीजिय मुनि मुनि अरु बिप्रवृंद बोलवाय॥
लख्यो मुहूरत उपरोहित तब औमहिपालहि दियोबताय।
सुनिसो दशरथ नृपटेर्यो तब सेवक वृंद पहूंचे आय॥
दियोनिमंत्रण द्विज मुनियनको जो ज्यहिदेश नगर बनग्राम।
जाय जायकै तिनधामन प्रति सबते कहहु मोर परणाम॥
यज्ञ निमंत्रण दै सबही को दीन्हयों दिनमुहूर्त बतलाय।
पायसु आयसु महराजाको अनुचरगये चहूं दिशिधाय॥
रहे जहां जहँ मुनिभूसुरबर तहँ तहँ जायहाल बतलाय।
दियो निमंत्रण अवधरायको तेसबजुरे अवधमें आय॥
गयो निमंत्रण पुनिराजनको छोटे बड़े जौन जहँ आहिं।
सजि सजि आयेते कौशलपुर सबके कहेनाम किमिजाहिं॥
मुनिगण यावत चलिआये उत तिनके नाम कहत कछुगाय।
श्रीघट सम्भव अरु पुलस्त्यमुनि पुलहपुलोम आदि हर्षाय॥
श्री द्वैपायन अरुजैमिन मुनि गौतम सोम कण्व दुर्वास।
पिप्यल पाराशर आये चलि अत्रि मरीचि आदि तपरास॥
कौंडिल्य अरु मारकण्ड्य मुनि भृगुभरतादि महा मतिधाम।
दक्षराज अरु ऋषि सौभरिवर भारद्वाज नाम अभिराम।
गर्ग सुभर्गहु अरु कूरम मुनि अष्टावक्र महा श्रुतिवान।
मत्स्य सावर्णि चक्रवान अरु मुनि शरभंग संगस्वर्भान॥
कपिल दधीचिहु तेजवानवर नारद बालमीकि सनकादि।
ऋतुविभांडक मुनि पारावत अरु जाबालि अंगिरा गाधि॥
ऐसे अगणित अरु आये मुनि चारिहु बेद केर वक्तार।
फलजल भक्षत कोउ अक्षत बिन केवल वायु करत आहार॥
निगम उचारत जिनके मुखते पावक धारभरत दिखराय।
बलकलअंबर कोऊ दिगम्बर प्रतिक्षण रहे रामगुण गाय॥
आगत स्वागत बहु कीन्ह्योंनृप दीन्हयों उचित वासअस्थान।

पुनि नृप आये जे कौशलपुर तिनके नाम करौं कछु गान॥
जनक महीपति मिथिलापुरके काशीकेर मल्ल महिपाल।
अंगदेशके रोमपाद नृप अतिशै धीर बीर बलशाल॥
भूपपुरन्दर सम मरीचिपति बंग निवासि राज घनश्याम।
चंप पुरके चंपेश्वर नृप सुन्दर काम सरिस छबिधाम॥
भूप परन्तप मगधदेशको जोकर अतिव प्रजा प्रतिपाल।
पुरअवन्तिकाको अवनीपति औ महकाल देश भूपाल॥
कार्तवीर्य नृप अनुप देशको माहिष मति प्रताप नरराज।
नृप सुषेनपुर शूरसेनको आयो साजि अनूपम साज॥
इन्हैं आदिलै अरु राजाबहु द्राविड़ देश और करनाट।
जात गनाये नहिं आये साजि छाये धीर बीरके ठाट॥
उदय अस्तलग जे धरणीपति आये अवध नगर हरियान।
तिन्हैं टिकायो नृपनीकी विधि करिकै यथा योग सन्मान॥
पुनिमख मण्डलकी रचनाभै सुन्दर शोधि बोधि अस्थान।
सरयूसरि ताके उत्तरतट लाग्यो होन साज सामान॥
प्रथम धरातल समकरिकै सब पुनि वेदिका कीन निरमान।
पशु आलम्भनके कारण पुनि दिय मखखंभगाड़ि सबिधान॥
छहछह खंभा श्रीफलके कल अरुषट खदिरकेर गड़वाय।
छह पलाशके गेगाड़े तहँ अरु द्वै देवदारुके भाय॥
एक बहेराको खंभाबर गाड़ो गयो यथा अस्थान।
मढ़े सुवरण से चमकैं बहु शोभा करि न जात कछु गान॥
मन्दिर अनुपम बनवाये तहँ छाये पाक भवन भंडार।
तहां धराये उपचारहु बहु जस कछु लिखो शास्त्र व्यवहार॥
लंबी योजन इक्यासी अरु चौड़ी द्वादश योजन जान।
इतनो निर्मित मखमण्डल को कियो प्रमान बेदअनुमान॥
बर्ष एकजब परिपूरण भो छांड़े अश्व सुनहु हरियान।
शुभमुहूरत महँ वाही दिन लाग्यो होन यज्ञ सविधान॥

मुखिया जामहँ ऋषि शृंगी हैं उत्तम कर्म करावनहार।
औरो मुनिवर सब तत्पर भे निजनिज साधिसाधि अधिकार॥
बिधि बिधान सों मख पूरण करि पुर्णाहुती दीनि मुनिराय।
तत्क्षण प्रगटे अग्नि कुंडते चरुकरलिहे अग्नि हरषाय॥
कोमल बाणीसों बोले तब परम प्रसन्न अग्नि महराज।
जो अनुमान्यो मन बशिष्ठ मुनि सोसब सिद्धिभयो तुवकाज॥
लेहु अनंदित ह्वबि भूपति यह बांटहु यथा योग्य करिभाग।
भे अदृश्य असकहि पावक तब नृप उरभयो महा अनुराग॥
पुनि चलिआये रनिवासे महँ लैकर खीर कनकके थार।
तिय कौशल्या कैकेयीपर भूपति करतरहे बहुप्यार॥
परम पियारी तेनारी द्वउ दशरथ तुरतलई बुलवाय।
युगलभाग करि वहि पायसके दीन्ह्यों दुहुनहाथ हर्षाय॥
आपु पधारे मखमण्डल कहँ इतकर चरित सुनौमनलाय।
रानि सुमित्रा मनशोचतिभै उन कहँ बस्तुदेत लखिभाय॥
आंशू ढारत दोउ नैननते दीरघ श्वासलेत अकुलाय।
हृदय बिचारत निर्द्धारत पुनि यह अस कौन पदारथ आय॥
मोहिं न दीन्ह्यों जो धरणीपति इनकर कीन्ह्यों प्यार अपार।
ममहत भागी परजागी नाहिं पतिकी तनक मयाकीझार॥
ताको जीवन जग बिरथा है प्रेम न करै जासु भर्तार।
अस बिचारिकै कौशल्या प्रति बोली बैन नैन जलडार॥
बस्तु धरापति जोदीन्हीं यह म्वहिं तजि आपु अकेलेहिखाय।
बहिन न जानी धनपैहौका याते हिय हमार ललचाय॥
बचन सुमित्राके सुनिकै अस दायावंत कौशला माय।
बात अमोली उरतोली पुनि बोली अति सनेह दरशाय॥
भेद बुद्धि अस मनलावो जनि बहिना शोच देहु बिसराय।
हैं भगिनी सम हम तीनिहुँ तुम लेबे बांटि चूटि सबखाय॥
यहि बिधि कहिकै निजपायसते आधो भागलीन अलगाय।

फेरि सुमित्राते भाष्यो अस सुनु मम बात एक मनलाय॥
भाग आपने ते आधो त्यहिं करि यह शर्तदेत सहुलास।
होय तुम्हारो सुतहोवैसो हमरे पुत्रकेर प्रियदास॥
सुनि प्रियबाणी कौशल्याकी बोली बहुरि सुमित्रा माय।
तुव प्रसादते सुतपाऊं तौ तुव सुत अनुग करौंहर्षाय॥
पुत्र तुम्हारे की सेवा सो सबदिन करै बचन मनकाय।
सुनिअस आधीहबि हर्षित ह्वै दीन्हीं ताहि कौशला माय॥
लख्यो केकई यह कौतुक तब आयहु कपट भाव दरशाय।
आय सुमित्राके अन्तिक महँ बोली बचन प्रेमसरसाय॥
बस्तु आपनी ते आधी त्यहिं मैहूं देत ठानि यह बात।
यहिते उपजै जो बालक तुव वह फिरि रहै मोर सुत साथ॥
बचन बद्ध करि यहि प्रकार त्यहि आधो भाग केकइहु दीन।
मुद सह खायो त्यहि तीनिहुँ ने तत्क्षण हृदय गर्भ धरि लीन॥
उत मख पूरण करि भूपति ने दीन्हे द्विजन अनेकन दान।
आशिष दीन्हीं तिन हर्षितह्वै पावहु भूप सुभग संतान॥
बिदा मांगिकै पुनि राजाते मुनि द्विज गये आपने धाम।
कथा अपूरब मख मण्डल की बरणी बंदि बिप्र अभिराम॥
सुनैं सुनावैं जे पूरुष नित हित सह करैं चित्त धरि गान।
बंदि मनोरथ तिन पुरुषनके सब दिन पूर करैं भगवान॥
इतिश्रीभार्गववंशावतंसश्रीमान् मुंशीनवलकिशोरात्मजस्यश्रीमुंशीप्रयाग-
नारायणस्याज्ञाभिगामीउन्नामप्रदेशान्तर्गतमसवासीग्रामनिवासीप-
ण्डितबंदीदीनदीक्षितनिर्मितश्रीविजयराघवखण्डेबालकाण्डे
चतुर्थोल्लासः॥ ४॥
सबगुण दायक गणनायक गुरु गिरा गोबिंद चरण ह्वउध्याय।
कथा यथा मति रघुनंदन की भाषत बंदि अनंदित गाय॥
स० नारद शारद सिद्ध विशारद के भवपारद पायँ मनाऊं।
शेशगणेशउमेशरमेश औ श्रीअमरेशहुको हियध्याऊं॥

योगी यती विरती औ सती सबसों निज मंजुमनोरथ पाऊं ।
बंदअनंदित ह्वै ज्यहिमाहिं कथा सुयथामति रामकिगाऊं ॥

कथा मनोहर नृप दशरथ कृत मखकी सुनि खगेश मुसुकाय ।
बिनय भुशुण्डी ते कीन्ह्यो बहु दीन्ह्योपगन माहिं शिर नाय ॥
हे प्रभु तुम्हरे शशि आनन को करि यह कथा सुधारस पान ।
तृप्ति न मानत मन कौनिउँबिधि औ न अघात कानमतिमान ॥
याते दाया करि भाषहु पुनि ज्यहि सुनि होयँ दोष दुखछार ।
अघ पहार हर अति उदार बर सुन्दर रामचन्द्र अवतार ॥
सुनि हरि बाहन की बानीबर मानी परममोद उर काग ।
चरित मनोहर पुनि बर्णतभे करि हरि चरणकमल अनुराग ॥
सोई तुमसन कहिभाषौं मैं राखौं कछु छिपाय नहिं भाय ।
चितहित दीजै सुनिलीजै अब यहि शिव कह्यो शिवासनगाय ॥
पायस भखिकै वे तीनिहुँ तिय भईं सगर्भ महा हरषाय ।
रहे वृद्धतन ते नूतन ह्वै शोभा अंग अंग गइ छाय ॥
अमिट बिधाताकी कर्तब जग रवि सम दिपैं तीनिहूं रानि ।
गर्भ दिनोदिन बाढ़नलागे तब सब हिये मोद उमगानि ॥
चारि मासको भयो गर्भजब तब नृप हृदय भयो बिश्वास ।
दान दक्षिणा नित ठानतभे सुखसह पुत्र होनकी आस ॥
पँचयें महिनाके लागतखन सबरे चिह्न परे प्रगटाय ।
प्रथम गर्भते मन लज्जित तिय पूंछत कहत जायँ सकुचाय ॥
कदली आभा कस गातन की जस चन्द्रमा प्रात दरशाय ।
कुच मुखकारे पयवारे अरु दोहद उदर वृद्धि भइ भाय ॥
लगे पियारो मृदु भक्षण बहु आलस जंभ दृगन रहिछाय ।
सुख सनेह सरसाय आय ढिग पूंछत नित सुभाय नरराय ॥
तनकी दीपति अति पीलीभइ लागे अंग अंग अँगरान ।
खसन लाग तब आभूषणपट आनन सकुच युक्त मतिमान ॥
गर्भहि आये हरि जादिनते सब सुख गये जगत महँ छाय ।

नवयें महिना प्रभु प्रगटनको सुन्दर समय पहूंचो आय ॥
योग लग्न अरु ग्रह बासरतिथि सब अनुकूल काल सुखदाय ।
जीव चराचर भे हर्षित अति सुन्दर राम जन्म को पाय ॥
चैत महीना शुचि नौमी तिथि उज्ज्वल पक्ष चन्द्र सुतबार ।
ठीक दुपहरी शुभ अभिजित महँ लीन्ह्यौं रमारमण अवतार ॥

स० शीतल मंद सुगंधित पौन बहै सुखभौन मनोमल हारी ।
सन्तअनन्त अनंदित बंदि सुखी द्विजदेवक सेवक भारी ॥
जंगलमंगल दानिखिले गिरिखानि दिखानि सबै मणियारी ।
मानिमुदै अनुमानि हृदै हरिशारंगपानि भये अवतारी ॥

बहैं आपगा जल अमृत मय दशहू दिशा परम परकास ।
घर घर थर थर नर नारी सब भारी भये शोभ सुखरास ॥
सो शुभऔसर विधिजान्योजब तब सबसुरनसहित सजियान ।
चले गगन तन महा मगन मन गन गन्धर्ब करत गुणगान ॥

स० नाचत अंगना मोदभरी श्रुतिबांचत सिद्ध मुनीश सुखारी ।
सेवजनावत देव सबै गुण गावत बंदि अनंदित भारी ॥
बाज बजावत लावत सो बरसावत फूल सुफूल अपारी ।
भे अनुकूल अतूलमहा सबशूल मिटे. सुखमूल .पसारी ॥

सकलदेवता मुनि बिनती करि निज निज धाम गये मतिधाम ।
जन सुखदायक जग नायक तब प्रगटे रमा रमण श्रीराम ॥

स० सिद्धिनकी सिधि ऋद्धिनकी ऋधि निद्धिनकीनिधि बंदिदुरैपरी ।
ब्रह्मविभूति कला करतूति अकूतिन पूति औ पुण्यपुरैपरी ॥
धर्म कि धूह समूह सुकर्म कि पर्म अभर्म कि जूह जुरैपरी ।
कौशला कोषिते आनँद धार अपार मनौ यकबार कुरैपरी ॥
श्री अवधेशके सिद्धिसुवेश औ कौशला हौशलाके हितकारी ।
बिश्वबिहारी भये अवतंसित वेद प्रशंसित कीरति भारी ॥
रूप अनूप प्रभा उजियारी भले भुजचारी सुआयुध धारी ।
शोभ पियारी छ्य छबिवारी निहारी भई महतारी सुखारी ॥

अंग अदूषण भूषण जाल मनो शशि पूषण ज्योति पसारी ।
नैन विशाल हृदै बनमाल सुभाल में केशरि खौरि सवाँरी ॥
घूंघुरवाल सुबाल लसैं शिर है तन श्याम घटा घनकारी ।
शोभ पियारी छटा छबिवारी निहारी भई महतारी सुखारी ॥
बोरि अमीरस घोरि प्रेम तब सबिधि निहोरि जोरि द्वउ हाथ ।
माथ मोरिकै आनंदित मन माता बिनय करत मुनि नाथ ॥

स० हे श्रुति संत के पालनहार उदार कला बिमला बदन द्युति ।
शोभ शिंगार दयाकेअगार प्रतापपगार महामति अद्भुति ॥
इन्दिराकन्त महागुणवन्त अनन्त बलावत भाषि सदा श्रुति ।
मार मनोहर रूपअपार सु कौन प्रकार करौं तुव अस्तुति ॥

माया निर्मित ब्रह्म अंड सब जाके रोम रोम रहे छाय ।
सो अविनासी उरबासी मम हासी केरि बात यह आय ॥
इतना कहते भयो अस्मरण पूरब जन्म केर बर ज्ञान ।
अद्भुत करणी लखि माता की तब भगवान बहुतु मुसकान ॥
कथा गायकै पुनि पूरब की सब बिधि दियो माय समुझाय ।
वह मति डोली हँसि बोली तब माता सुनहुँ चराचर राय ॥
रूप अनूपम यह वारण. करि धारण करहु गात नर बाल ।
अति प्रियशीला शिशुलीला करि सबकहँ मोददेहु यहिकाल ॥
सुनि असआयसु शुभ माता को तत्क्षण रूप अनूपम त्यागि ।
कै नृपबालक जनपालक तब रोदन करन लगे अनुरागि ॥
सुनि शिशु रोदन प्रियबानी अति रानी सकल पहूंचीं आय ।
हर्षित लौंड़ी जहँ तहँ दौड़ी डौंड़ी फिरी नगर महँ धाय ॥
कान जन्म सुनि बरबालकको नृप जनु ब्रह्मानंद समान ।
बढ्योप्रेममन तन पुलकितअति दशा सो कहि न जायहरियान ॥
जाकर नामैं सुनि होवै शुभ आयो तौन स्वामि मम धाम ।
परमानंदित कै भूपति तब लाग्यो करन मोद इतमाम ॥

स० बाजन बाजन लाग घने जन साजन लाग सबै गृहकूटी ।

गावत मंगल चारलिये करथार चलीं सजि साजबधूटी ॥
मोद अपार मनो उमँगी दिशिचारते द्वार भुँवारकेजूटी ।
कोशभँडारकीसंपतिसार गोहारिकैआयभिषारिनिलूटी ॥

गयो बुलावा गुरु बशिष्ठ को आये द्विजन सहित नृप द्वार
श्राद्ध नांदीमुख करिकै तब कीन्ह्यों जात कर्म व्यवहार ॥
देखि अनूपम छबि बालककी औ शुभ योग लग्न अनुमानि ।
भे आनंदित अति बशिष्ठ मुनि सरह्यो धन्य भाग नृप रानि ॥
परे उच्चग्रह सब बालकके कीन्ह्यों मुनि बशिष्ठ अनुमान ।
नखत पुनर्बसुके आखिर महँ हैंसब योग भोग भगवान ॥
चंद्र बृहस्पति कर्क लग्नके सुन्दर मेख राशि गत भानु ।
हैं अंगारक मकर राशिके रवि सुत तुला उच्च परमानु ॥
मिथुन राशिपर है केतुग्रह औ धन राशि बिराजे राहु ।
मीन राशिपर भृगुनायक बुध सबदिन देत जौन उत्साहु ॥
इनतेबढ़िकै बहु औरौ गुण भाषत बुद्धि जाय सकुचाय ।
सो सब गाये कहि नीकी बिधि नृपते गुरु बशिष्ठ हरषाय ॥
सो सुनि राजा आनंदित ह्वै लागे देन द्विजन कहँ दान ।
धरा धेनु धन मणि अंबर बर साजि गज़ बाजि यान सविधान ॥

स० नरनाहके पुत्र कि जन्मउछाह अथाह लही सबही थरमें ।
द्विजयाचक बंदि जुरे बटुरे जहां जौनरहे ते जहांभरमें ॥
तिनको नृप सर्वसदान दिये न बखाननको मतिहै नरमें ।
इतनी कछु संपति शेषरही चमरी करमें कमरी घरमें ॥

बजे बधावा बहु घर घर प्रति जबते प्रकट भये सुखकन्द ।
छाई पुरमहँ सुघराई बहु हर्षित सकल नारि नर वृन्द ॥
बिरद बखानै बहुबंदी जन मागध बंश प्रशंसत चारु ।
बेद कारिका ब्राह्मण बांचै नट ठट करैं स्वांग व्यवहारु ॥
पुनि तदनन्तर वउ रानी द्वउ केकय सुता सुमित्रा माय ।
सुन्दर पुत्रनको जन्मत भईं सुन्दर योग लग्न शुभ पाय ॥

वह सुखसंपति अरु औवसरबर सुघर समाज शोभकोसाज ।
नारद शारद विधि आदिकलै कहिना सकैं बेद अहिराज ॥
पुरी अयोध्या इमि सोहै प्रिय आई प्रभुहि मिलन जनुराति ।
देखि भानुको सकुचानी तब संध्या बनी उरग आराति ॥
धुआँ जो छायो अगर धूपको सोई मनहुँ आय अँधियार ।
अबिर उड़ायो सो छायो कस जनु सूर्यास्त लालरी यार ॥
तारा मण्डल सम लागतजे घर घर घनी मणिनके जाल ।
नृप गृह कलसा परम अमलसा सो जनु पूर्णचंद द्युतिमाल ॥
करत बेदध्वनि मुनि भूसुर सो मानहुँ चुहुँ चुहात खगभाय ।
यहि बिधि शोभा अवध नगरकी सबरी सकैं कौन कविगाय ॥
देखि दिवाकर यह कौतुकबर गये भुलाय सुनौ मुनिराय ।
जात न जान्यो इकमहिना तिन रघुपति जन्मसमय सुखपाय ॥
एक महीनाको बासर भो रंचक मर्म न जान्यो कोय ।
थके दिवाकर रथबाजिन सह तब फिरि राति कौनबिधिहोय ॥
कहू न जान्यो यहि रहस्यको पुनि रवि चले करत गुणगान ।
सुर मुनि नागादिक उत्सव लखि निज २ भवन गयेहरियान ॥
सुनौ हकीति अब आगेकी अद्भुत चरित रामको भाय ।
सुनि सुखभासै पाप बिनासै आसै हृदय केर मिलि जाय ॥
इतै अवतरे प्रभु कौशलपुर अशकुन भयो लंक महँ जाय ।
मुकुट अचानक दशकंधर के गिरिगे भूमि माहिं भहराय ॥
डिगो सिंहासन भू कांपे बिन रावण उठो आसनहिं त्यागि ।
कहा बुलावहु इंद्रजीत को अपनो धनुष बाण लिय मांगि ॥
सहित बासुकीके छांटौं भुवि काटौं तिलसमान करि ताहि ।
पाटौं सागर महँ निश्चय त्यहि जानत नहीं मोर बलथाहि ॥
साधु बिभीषण ने भाष्यो तब भैया सुनौ हमारी बात ।
प्रगट्यो लक्ष्मी पति जगमेंकहुँ ज्यहिकर लिखी तुम्हारीघात ॥
वाही अशकुन दिखरावन को तुम्हरे मुकुट भये महि पात ।

कोपौ बसुधा पर मिथ्या क्यों जाकी कछु न लागि दिखरात ॥
भै नभ वानी त्यहि औवसरपर रे दशकंठ दुष्ट हत्यार।
तोरबिनाशी अविनाशी हरि लीन्ह्यसि अवधमाहिं अवतार ॥
यह सुनि रावण मन शंकित कै दूतन तुरत लीन बोलवाय।
शुक अरु सारन जग जानेजे तिनसन कहत भयो समुझाय॥
जाय तुरंतै तुम पृथ्वीतल हेरो चहूँओर बहुभांति।
लखौ तौ जग बिच को पैदाभा अस विक्रमी मोर आराति॥
ताको अबहीं हतिपाऊं सुख कंटक दूरिकरौं क्षणमाहिं।
बालक बधमहँ श्रमनाहीं कछु भये जवान कठिन कै जाहिं॥
रावण आयसु शिर धारन करि आये दूत सिंधु यहि पार।
रहैं वैष्णव शुकसारन द्वउ लागे हृदय बिचारन यार॥
पुनि शुक सारनप्रति बोल्यो अस बंधव हमैं परत यह जानि।
कौशलपुरमहँ नृप दशरथघर प्रगटे रमा रमण सुख खानि॥
आजु धन्यहैं हम दोऊ तुम यह तन सफल भयो अब आय।
दर्शन करिबे रघुनन्दनके अज सनकादि रहे ज्यहि ध्याय॥
असकहि कौशलपुर आये चलि छबिलखि हृदयगये हरषाय।
धन्यनिवासी यहि नगरीके जहँकी छटा कही नहिं जाय॥
मणिमय दीपक प्रति भौनन महँ सीची सुभग सुगंधन्न राह।
कलशाचमकैं कलकंचनके अगणित उदै मनहुँ दिननाह॥
हिलैं पताके अति बांके बर बंदनवार द्वार प्रतिद्वार।
बजै बधावा नृपद्वारेपर घर घर होत मंगलाचार॥
गे कौशल्या गृहदोऊ चलि बेष अलक्ष्य लख्यो कोउ नाहिं।
मातु कौशला है बैठी जहँ गोदी लिये रामहर्षाहिं॥
प्रभुमहँ जाको अहै भाव जस ताको तैसहि परत दिखाय।
रीति सनातनकी याही है या महँ तनक नाहिं शकभाय॥
परम बैष्णव वे भ्राता द्वउ तिन प्रभु लख्यो बिष्णुभगवान।
मार हजारनको वारनकर रूप अनूप नैन दिखरान॥

चारिहु आयुध चतुर्बाहु महँ हृदय विशाल सोह बन माल।
अरुण कमल सम नैन लालद्वउ छाई अंगअंग द्युतिजाल॥
कानन कुण्डल बर आनन पर मण्डल चंद मंद परिजाय।
घन तन तामहँ बसन पीत पट माथ किरीट रह्यो दरशाय॥
ब्रह्म शिवादिक लै यावत सुर अस्तुति करत सामुहें ठाढ़।
परमानंदित शुक सारन द्वउ छबि लखि बढ़्यो प्रेम बेखाढ़॥
परे ततक्षण गिरि धरणी महँ दीन्ह्यानि देह दशा बिसराय।
वह अपार सुख वहि समया कर मोसे कहिन जाय खगराय॥
पुनि धरि धीरज उठि जोरे कर अस्तुति करन लाग हर्षाय।
हे जन दायाकर आरतहर विनय हमारि सुनहुँ मन लाय॥
दुष्ट दशानन के सेवक हम अधमते अधम निशाचर जाति।
महिमा तुम्हरी अति अपार यह देखत मति हमारि चकख्याति॥
शिव ब्रह्मादिक पग ध्यावें ज्यहि आवें कबहुँ हृदय बिचनाहिं।
लालन पालन करि नीकी विधि सेवत रमा लिये करमाहिं॥
जिन पदपंकज की पावन रज धारत सिद्ध मुनीश्वर माथ।
ते पद पंकज अवलोकन करि आजु सनाथ भये हम नाथ॥
खल दल दारन दास उबारन टारन धरा भार सुख धाम।
मन अभिलाषन कहि भाषन सो पूरण करहु तौन जन काम॥
चरण सरोजन महँ राउर के निवसै मन हमार ह्वै भौंर।
ज्यहि ज्यहि योनिनमहँ जन्मैं हम मांगत नहीं नाथ कछु और॥
असकहि प्रभुकहँ अभिबादनकरि चले बिचार करत द्वउभाय।
चरित दशानन यह जानैनाहिं की उत प्रगट भये सुरराय॥
कछु औसर महँ द्वउ बंधव पुनि लंका मध्य पहूंचे आय।
जाय सामुहें खल रावण के बोले हाथ जोरि शिरनाय॥
पग पग खोजे हम तीनिहुँ पुर तव रिपु कतहुँ पर्यो नहिं जानि।
मुकुट गिरे को है कारण यह बंधव कही अमंगल बानि॥
यतन कीजिये प्रभु याकी यह धावन बोलि देहु पठवाय।

सकल तीर्थन को लावैं जल मज्जन करौ आपु हरषाय ॥
दूरि अमंगल ह्वै जावै सब आवै परम खुशाली हाथ।
सुनि यह बानी उन दूतनकी तैसइ कियो निशाचर नाथ ॥
दान भूसुरन को दीन्ह्यों बहु कीन्ह्यों यथा योग्य सन्मान।
आशिष कीन्ह्यों तिन सबहिनने होय तुम्हार उचित कल्यान ॥
उतै हकीकति अस बीतति भै इत अब सुनौ अवधको हाल।
बाल जन्मकी जो करणी कछु सो सब मुदितकीनि महिपाल ॥
पूजि पंचिमी दिन पँचयें पुनि छठयें दिवस छठी सविधान।
भयो जागरन त्यहि रजनी महँ युवतिन कीन मनोहर गान ॥
बोलि बालकन को अँठयें दिन अष्टक दीनि भूप मनलाय।
हेम दक्षिणा लै बालक पुनि निज निज धाम गये सुख पाय ॥
दिवस बारहें महँ बरहों करि रानिन कीन शुद्ध असनान।
सूर्य नरायण के दर्शन करि दीन्हें द्विजन अनेकन दान ॥
इहि विधि आनँद महँ बासर कछु बीते जात जानि नहिंजात।
मास नछत्रहु चलि आयो पुनि तब मसवार भयो हर्षात ॥
दान द्विजातिन् को दीन्हें बहु नेगिन नेग जाहि जो भाव।
विविध भांतिते न्योछावर अरु होत बधाव सहित सुखचाव ॥
अवध निवासिन को आनँद इमि पाये यथा लूटि को माल।
यहै मनावैं नारायण ते बुढ़वा होयँ अवधनृप बाल ॥
मास मास प्रति यहि भांतिनते उत्सव रहै अवध महँ छाय।
कछुदिन बीते पर गिरिजा पुनि पहुँचो छठो महीना आय ॥
गुरुवशिष्ठ को बोलवायो तब आये द्विजन सहित हर्षाय।
समय शोधायो अन्नासन को लीन बोलाय जाति कुलभाय ॥
चौकपुराई गजमोतिन की करि सब साज बाज सविधान।
पूजि यथाविधि कुल देवनको धरिकै हृदय रमापति ध्यान ॥
सुतन गोदलै नृप बैठे तब पैठे मनहुँ मोद आगार।
जानि महूरत शुभ मुनिवर तब कीन्ह्यों वेद मंत्र उच्चार ॥

मधुर मनोहर कर पायस लै अवध नरेश रमेशहि ध्याय।
चारिहु पुत्रन के आनन महँ दीनि चटाय मोद उपजाय॥
नगर निवासी छबि देखत सो लेखत अपनि पुण्य की भागि।
दुष्ट निकन्दन रघुनन्दन पर न्योछावरैं करत अनुरागि॥

स० विप्रन को सनमान कियो नृपदान दियो सब पाय हुलासन।
गान विधान कियो अबलान अँबान अनंदन कौन हुँवासन॥
देव विमानन साजि भलीविधि फूल बिछावत बैठिसुखासन।
दुष्ट निकन्दन श्री रघुनन्दन आनँदकंद को अन्नपरासन॥

त्यहिक्षन याचक जो आये चलि मन भावती बस्तु सब पाय।
गये अनंदित जगवंदित कहँ आशिष देत वचन मन काय॥
जानि सुऔसर गुरुवशिष्ठ तब कीन्ह्यों नाम करण हरषाय।
नाम अनेकन हैं इनके नृप मैं कछु कहौं बुद्धि सम गाय॥
जो सुख सागर सुयश उजागर नागर नीति रीति गुण माहिं।
सब जगपालै खल दल घालै बल आलै अनन्त शकनाहिं॥
जन प्रनरक्षक रक्षन भक्षक स्वच्छ सुशील डील अभिराम।
जग विश्रामद परम अरामद ताको रामचंद्र अस नाम॥
भरन करैया सब दुनियाँ को ताको नाम भरत अस होय।
जाके सुमिरण ते नाशैं रिपु प्रबल प्रताप शत्रुहन सोय॥
बुद्धि विचक्षण शुभ लक्षणधर रघुवर अनुग जगत आधार।
नामलक्ष्मण त्यहि राख्यो मुनि सुनिमुद लह्यो अवध भर्तार॥
दियो दक्षिणा बहु विप्रनको धाम अराम धरा धन ग्राम।
हीरा सुवरण मणि चीरा बहु धेनु सहस्र सहित इतमाम॥
भोजन दीन्ह्यों जन ज्ञातिन को कीन्ह्यों सब प्रकार सन्मान।
आशिष दै दै आयसु लै लै सब निज घरन गये हरियान॥
भये छ महिनाके बालक सब जननी जनक हृदय सुखदानि।
परम उमंगन सों अंगन महँ लागे चलन घुटुरुवन पानि॥

स० कबहूं शुचि अंग उछंगन लै दुलरावहिं रंगन सों ललना।

ललना पलना महँ घालिकबौं सुभ्फुलावहिं गावहिं गान घना॥
कबहूं छुटिजावहिं अंगन में तब धावहिं संगन में ललना।
गहि लावहिं गोद उठावहिं मातु खेलावहिं पावहिं मोद मना॥
कबहुँ अंकमहँ लै भूपति सुत आनन चूमि लहिं हिय लाय।
सोसुख देखत छबि लेखत बर हिय ललचाय रहैं सुरराय॥
कहां स्वर्ग महँ है आनँद अस जो अवधेश नरेश अगार।
शिशु उदार तन जहँ बिचरत नित प्रभु सच्चिदानंद कर्तार॥
बचन तोतरे हँसि बोलैं तब खोलैं मनहुँ मोद घर द्वार।
घोलैं अमृत तन मोलैं मन डोलैं अवनि मारि किलकार॥
कुंदकली सम द्वै दँतिया लघु बिकसैं भली मुखन बिच यार।
अमल कमल बिच गजमुक्ता जनु रहे प्रकाशि शोभअधिकार॥
ब्रह्म निरंजन विभुव्यापक प्रभु अज सच्चिदानंद मगधाम।
भक्ति प्रेमवश कौशल्या की खेलत गोद मोद सह राम॥
काम करोरिन सम शोभा छबि सुभग शरीर श्याम अभिराम।
लालकमलसमपग बिशालद्वउ मुनिमन मधुप रहत जहँ आम॥
नखद्युति बर्णत बनि आवै नाहिं छावै बंदि हिये सब काल।
कमल पाँखुरिन बर मोती जनु बिकसे लसे हरन जंजाल॥
ध्वजा बज्र अरु अंकुशादि की रेखा रुचिर रहीं दरशाय।
मुनि मन मोहै सुनि नूपुर धुनि कटि किंकिणी शब्द सरसाय॥
त्रिबली सोहै भलि पेटे महँ अति गंभीर मनोहर नाभि।
भुजा अदूषण युत भूषण स्वउ हिय बघनहा रहा छबिगाभि॥
जड़ी जवाहिरकी चौकीबर अरु मणिहार रहे उर छाय।
मध्य उरस्थल महँ द्विजको पग शोभा कहि न जाय मुनिराय॥
कंठ मनोहर दर सदृश वर समता लहत कबूतर नाहिं।
मदन अनेकन की छाई छबि शोभा सदन वदन शुचि माहिं॥
लाले अधरन बिच दँतियाद्वै नासा देखिकीर शरमाय।
चारु कपोलन अनमोलन पर निरखत वारि वारि मनजाय॥

नैन विशाले सुख प्याले सम दरशत सरस शोभ युत कान।
हैं युग भौंहैं तिरछौंहैं स्वउ भाल निराल तिलक झलकान॥
चिक्कन कुंचित गभुआरे कच मातु सँवारे तेल लगाय।
पीत झँगुलिया पहिराई तन विचरत जानु पाणि महि धाय॥
रूप अनूपम कहि पावैं ना शारद शेश जाहिं हिय हारि।
स्वपन्यहुँ देखा जिन जानैं सो कहिबे योग नाहिं उरगारि॥
करत अनोखी शिशु क्रीड़ा इमि भे तब एक साल के बाल।
औरौ बालक पुरबासिन के घेरे तिन्हैं रहत सब काल॥
ठुमुकि ठुमुकि प्रभु चलिजावें जहँ तहँ तहँ लषण संगसँगजायँ।
भरत भावते के पीछे परि चलि शत्रुहन जायँ हरषायँ॥
निज निजअंशन महँ मिलि मिलि कै खेलैं महा मगन मनमाहिं।
जहँ जहँ दशरथ नृपजावैं चलि तहँ तहँ बंधुचारि चलि जाहिं॥
बिधि हर घूमैं जिन दर्शन हित पावैं नहीं हृदय पछितायँ।
तिनकर नित प्रति मुख चूमें नृप अंक लगाय लेहिं लपटायँ॥
कला चंद्रमा की बिमला जस दिन प्रति बढ़तजाय अधिकाय।
तैसे तन द्युति सुंदरता सह बाढ़त जात चारिहू भाय॥
बाल चरित हरि करि अनेक बिधि दासन मोद दीन बहुभाँति।
कछु दिन बीते पर भाई सब भे कछु बड़े खड़े कै जाति॥
देखि महूरत शुभ सुंदर दिन चूड़ाकरन कीन गुरु आय।
दान दक्षिणा बहु दीन्ह्यों नृप याचक बिप्र बृंद बोलवाय॥
गयोकालकछु चलि याही बिधि करत बिचित्र चरित सबभाय।
अवेध निवासी सुखराशी अति आपन जन्म मनोरथ पाय॥
पांच बर्ष के जब बालक भे आई बय कुमार सुख सार।
दीन जनेऊ पितु माता ने गुरुहि बुलाय साधि व्यवहार॥
गुरु बशिष्ठ घर गे पढ़िबे कहँ चारिहु बंधु गुणन के धाम।
थोरेहिदिनमहँपढ़ि लीन्ह्योंसब आगम निगम आदिअभिराम॥
चौदह बिद्या उपबिद्या सब चौंसठि कला उपनिषद आदि।

सहज श्वास श्रुति जिन स्वामी की सोसब ग्रंथ पढ़ैं करि यादि ॥
गुरु मुख बिद्या पढ़ि लीन्हीं सब दीन्हीं उचित दक्षिणा नाथ।
आशिष दीन्हीं मुनि नायक ने लीन्हीं मुदित तौन धरि माथ ॥
पुनि गुरु आयसु लै आये गृह सीख्यो मल्लयुद्ध सब भाय।
शस्त्र चलावन अरु फेरन के जाने सब विधान खगराय ॥
कौशलपुर की वर वीथिन महँ बिचरन लगे सकल सुकुमार।
करतल सोहैं धनुशायक लघु लखि छबि मोहि जात संसार ॥
अवध निवासी नर नारी सब यावत युवा वृद्ध अरु बाल।
अधिकी प्राणहुँ ते लागैं प्रिय श्रीसुख धाम राम किरपाल ॥
चारिहु बंधव सँग साथी लै नित बन खेलन जाहिं शिकार।
मारि लयावहिं जे पावन मृग सो नित नृपहि देखावहिं यार ॥
राम बानके संहारे मृग तन तजि चले जाहिं सुरधाम।
चरण अमोलैं धरि डोलैं जहँ पावन होत जाहिं ते ठाम ॥
इक दिन कर धरि शर धन्वा प्रभु लै लक्षमण बंधु को साथ।
मृगया खेलन हित गमने बन जगत सनाथ करन रघुनाथ ॥
फिरत अहेरहि महँ भाई दुउ हेरत बाघ सिंह बरियार।
तौने औसर पर मारिच खल पहुँच्यो तहां आय उरगारि ॥
क्यहि मग आयो कोउ जानत नहिं तुरतहि मृगारूप लियधारि।
आय सामुहें रघुनायक के चल्यो उछारि चौकड़ी मारि ॥
राम कौतुकी लखितुरतै त्यहि लीन्ह्यों धनुष हाथ सुधियाय।
बाण तड़ाका संधानित करि छांड़्यो चल्यो विषम सो धाय ॥
राम धनुषते शर छूट्यो कस टूट्यो नखत मनहुँ आकास।
भाग्यो मारिच भय पाग्यो अति आयो जनकपुरी के पास ॥
भगो जानि कै निशिचारी को आयो लौटि बान प्रभु पाहिं।
देखि बीरता इमि राघव की नभ महँ देव बृन्द हरषाहिं ॥
करैं परस्पर मिलि बातैं इमि अब ये अघराशि मारिहैं दुष्ट।
सुजन तारिहैं महि उबारिहैं भर टारिहैं अधिक बल पुष्ट।

बन महँ घूमत पुनि राघव को दिन यकरह्यो याम भरिआय।
श्रम बश शोकित लखि बंधव को बोले रामचंद्र मुसुकाय॥
एकहि दिन महँ अस ब्याकुल तुम बंधव भयो हाल बेहाल।
भार उधरिहौ किमि मरिहौ खल करिहौ सुरन केर प्रतिपाल॥
असकहि धात्रीतरु दीख्यो तहँ लीन्ह्यों तोरि आमलक राम।
सोफल दीन्ह्यों मुख लक्ष्मण के खातहि भग्यो परिश्रम घाम॥
चले अगारी धनुधारी द्वउ मगमहँ लख्यो आनि यकताल।
छये कमलदल जल ऊपरबर करत किलोल विहंगम जाल॥
कूजत गूंजत मतवारे मधु डोलत सुखद सुगंधित बाय।
निमनी छायावर वृक्षन की बैठेतहां युगुल रघुराय॥
तेही औसरपर ब्रह्माने इन्द्रहि बोलि कही असबात।
यहि क्षन बन महँ रघुनन्दन प्रभु रहे बिराजि साथ लघुतात॥
ऐसी समया फिरि मिलिहैना इतना करहु काज सुरराय।
झट चलि जावहु तुम तड़ाग तट बैठे जहां रामरघुराय॥
लैकर अमृत धरि आवो तहँ सुंदर कमल फूलमहँ नाय।
जानि न पावे कोउ काहूबिधि तौ सबकाज सिद्धि ह्वै जाय॥
इनकहँ करिबो सुरकारज बहु टारिबो अमित धराको भार।
वर्ष चौदहक लगि बनमहँ बसि करिहैं रावणादि संहार॥
भोजन करिहैं कंद मूल फल तिहि बल कहौ कौनबिधि राम।
लरिहैं मरिहैं निशिचारिन को करिहैं महा घोर संग्राम॥
जो यह अमृत पलिहैं प्रभु तौ ह्वै जाहिं पुष्ट सब गात।
क्षुधा पिपासा कछु लगि है ना जगिहै अप्रमान बल तात॥
सुनि अस आयसु चतुरानन को स्वई उपाय कीन सुरराय।
आय तड़ाका सर भीतर प्रिय धरिगे अमी कमल महँ नाय॥
राम हकीकति यह जान्यो सब तब लक्ष्मणै कह्यो समुझाय।
जाय ताल मधि कमलनाल ते सो शुचि सुधा लै आये नाय॥
रुचि सह खाये हरषाये द्वउ भख पियास भई सब नास।

पात पलासन के तोरे तब आसन तासु कीन सुख रास ॥
शयन सवाँरी धनु धारी तहँ मृगया श्रमित नींद गइ आय ।
परी खलभली इत भूपति घर लागे मातु पिता अकुलाय ॥
खोजन लागे पुरवीथिन महँ कहुँन दिखाय परत रघुराय ।
कहां सिधारे ममवारे द्वउ प्यारे प्रान केर सुख दाय ॥
दिवस बितायो लखि पायो नहिं आयो सांझ समय अबहाय ।
क्यहि दिशि भटके कहँ अटके सुत गये न आजकलेवहु खाय ॥
व्यंजन लोने बनवाये मैं सो सब भरे धरे वहि भांति ।
ह्वैहैं भूखे मुख सूखे अति गयो लेवाय कौन उतपाति ॥
मातुकौशला औ दशरथ नृप यहि बिधि कहत बात बिलखात ।
सुत वियोग ते बढ़्यो शोग बहु मानहुँ रढ़्यो रोग सब गात ॥
धाम सुमित्रा अरु केकयि को खोज्यो तहाँ न पायो राम ।
पूंछन लागे पुरबालन ते खेलत सदा साथ जे आम ॥
तिनहुँन भाष्यो यहिभांतिन कहि हमनहिंलखे आजु द्वउभाय ।
साथ सबेरे ते खेले नहिं यह सुनि सकल उठे घबराय ॥
सब गथ खोयो जनु दशरथ को वेतौ गिरे मूर्च्छाखाय ।
रानी तीनिहुँ बिलखानी बहु आगे दशा कही नहिं जाय ॥
सुधिकरि भूपति अंध शापकी पायो महा हृदय बिच ताप ।
प्रान पधरिहैं मम आजुइ हठि वाही उदय भयो अब पाप ॥
पुत्रशोक महँ तन नाशै मम विरचो यही बिधाता बाम ।
भान अंतमहँ प्रान अन्त मम जो नहिं लखौं राम घनश्याम ॥
भूप उदासी लखि या बिधि तब पुरबासी सब भये बिहाल ।
पता न लागै कहुँ बालनको जागै हृदय शोक बिकराल ॥
उत गत बासर प्रभु जागे तब दीख्यो अस्तहोत अब भानु ।
तुरत उठायो पुनि भाइहु को गवने धारि हाथ धनु बानु ॥
देखन लाये चलि आये पुर पाये समाचार भूपाल ।
दौरे बौरेसे ताही क्षण लिये उठाय लाय उर बाल ॥

भरत शत्रुहन लखि धाये तब मातन खबरि जनाई आय।
भैया भैया चलि आये दोउ सुनि सो गईं द्वार पर धाय॥
देखि बालकन मुख पायो सुख लीन उठाय गोद महँ लाय।
आजु सिधारे कित प्यारे तुम दिनभर नहीं परे दिखराय॥
तब समुझायो प्रभुमातन को गये अहेर करन बन माहिं।
तुम कस शोचो मन पोचो करि मैया तनक डरत मैं नाहिं॥
यह सुनि माता आनंदित पुनि लाईं घर लिवाय दोउभाय।
धूरिसमोये मुखधोये तब षटरस व्यंजन दिये खवाय॥
पुनि पौढ़ायो मृदु शय्यापर चापन लगीं चरण सुखपाय।
अब न अकेले सुत जायहु बन खेलो करहु द्वार पर जाय॥
सुनि अस माता की वानी प्रभु मानी मोद लाग मुसकाय।
बांदि देवतन को दुर्लभ सुख सहजहि लेत कौशला माय॥
यहिबिधि नितप्रति नइलीला करि सबकहँ मोददेत सबकाल।
श्री अज नंदन दश स्यंदन के भे सब सात साल के बाल॥
अमला कमला उत मिथिलापुर प्रगटी जाय जनकके धाम।
पहिले आयों कहि सूक्षम कछु ताको जन्म चरित्र अभिराम॥
चंद्रकलासम स्वउविमला द्युति दिनप्रति बढ़तजात जगमात।
जाकी शोभा सुंदरता लखि अगणित उमा रमा सकुचात॥
दिन दिन बाढ़त लखि कन्या को शोचत हृदय जनक भूपाल।
त्रिभुवन धन्या यह ब्याहों कयहि चाहों यथा योग्य बरबाल॥
वंश पुरोहित शतानंद कहँ लीन्ह्यो तुरत भूप बोलवाय।
हाल बतायो कहि यावत सब खोजो सुता योग्य बर जाय॥
यहां बिचारत अस भूपति मन उत अबसुनौ सुरनको हाल।
जनक राज जो अनुमान्यों इत जान्यों उतै तौन सुरपाल॥
शोच समान्यो तब मघवा मन आतुर गे बिरंचि के धाम।
बैठ सभा महँ सिंहासन पर कीन्ह्यो पगन माहिं परणाम॥
दै शुभ आशिष सुरनायक कहँ आदर सहित बिठायो धात।

लखि संदेहित कछु हिरदै महँ लागे कहन इन्द्र प्रति बात ॥
सुरपति आये इत कारण केहि छाये शोच पोच मन माहिं।
मुख मलीनता झलकाये अति कहिये सो बुझाय मम पाहिं ॥
पाय सुआयसु अस ब्रह्मा को लागे कहन इन्द्र तब भाय।
हेप्रभु संशय उर आई यक भाषत तुम्हैं तौन समुझाय ॥
स० शोच यही उरछायो पितामह ताते हियो थिर लेवहिना।
प्रभुतौ दशरत्थ कुमारभये यह बात छिपीक्यहु देवहिना ॥
जगमातभई मिथिलेश सुताद्विजबंदिसो जानतभेवहिना।
अनजान मनै अनुमानि कहूं बरिऔरे नरेशहि देवहिना ॥
सुनि यह वानी सुरनायक की हँसि असकही पितामह बात।
तात बतायो तुम नीको यह अब मैं वेगि शंभु पहँ जात ॥
याकी युक्ती कर उनहिन के तासों जाय कहौं सब हाल।
असकहि गमने शिवमंदिर कहँ अपने धाम गये सुरपाल ॥
आवत दीख्यो चतुरानन कहँ तुरतै उठे त्रिलोचन नाथ।
मिले परस्पर भरि अंकम दुउ चले मिलाय हाथ सन हाथ ॥
आनि बिठायो शुचि आसन पर अपनौ बैठि गये वहि ठाम।
हँसि अस पूछ्यो शिव ब्रह्माप्रति कहियेआप आगमन काम ॥
अंतर्यामी शिव स्वामी तुम जानत तीन काल को हाल।
तद्यपि पूंछे पर भाषत मैं सुनिये तौन चित्त करि ख्याल ॥
बिष्नु अवतरे घर दशरथ के लक्ष्मी जनकराज के धाम।
दिन दिन बाढ़त सो चंदा सम जगहित पितामातु सियराम ॥
कहुँ अनजानतमहँ मिथिलापति ताहि न देय और कहँब्याहि।
जालगि देवन कर कारज बर क्षणमहँ रंग भंग ह्वै जाहि ॥
याते अबहीं कछु बिगरो नहिं करिये युक्ति बेगिही नाथ।
जनकहु सेवक हैं राउर कर लेहैं तुव निदेश धरि माथ ॥
सुनि चातुरता चतुरानन की हँसे महेश परम सुख पाय।
लाग बुझावन पुनि आछी विधि करहु न तनक शंक उरभाय ॥

पूरण ह्वैहै सुर कारज सब थोड़ेहि समय माहिं शक नाहिं।
शोच बिसारो उर धारो थिर हमहूं यहि बिचार महँ आहिं॥
यह सुनि ब्रह्मा निज लोकै गे शंभु बुलाय लीन भृगुराम।
हाल यथावत बतलायो सब पुनि निज धनुष दीन मति धाम॥
जनक राजके घर जावो तुम यह सब हाल बतावो जाय।
चाप प्रभावो समुझावो कहि औ यह पैज देहु करवाय॥
आय चढ़ावै जो धन्वा यह होवै राज रंक किन भाय।
बिना विचारे उरधारे मुद सुता हमारि ब्याहि लैजाय॥
धरि शिव आयसु को माथेपर तुरतहि चले तहां भृगुनाथ।
धारे फरशा इकहाथे महँ औ स्त्रइ धनुष धरे इक हाथ॥
आय पहूंचे निमिनगरी महँ जहँ पर जनकराजको धाम।
नृप सुनि पाये मुनिआये इत धाये तुरत त्यागि सब काम॥
नगर किनारे चलि लीन्ह्यों नृप कीन्ह्यों पगन माहिंपरणाम।
आशिष दीन्ह्यों भृगुनायक ने आये पुनि लेवाय निजधाम॥
दै शुभ आसन अर्घ्यादिक सह प्रेम समेत पूजि सविधान।
हेतु आगमन को पूंछ्यो नृप परम विनीत नीत मतिमान॥
बैन मनोहर सुनि राजा के बोले परशुराम हर्षात।
ब्याहन चाहत तुम कन्या को खोजत तासु हेत बर तात॥
भाषण चाहत मैं सम्मत कछु ता महँ सुनो भूप मतिमान।
याही कारण चलि आयों इत करिकै हृदय माहिं अनुमान॥
सुनि वर बानी भृगुनायककी हँसि मुसक्यान जनक भूपाल।
हाथजोरिकै पुनि भाष्यो अस लेहु मुनीश जानि यह हाल॥
सुता सुंदरी को सोहाग सुख अरु सम्बन्ध दैव के हाथ।
तदपि समैया वह आई जब तब मैं तुम्हैं जनैहौं नाथ॥
फिरि जस कहिहो तस करिहौं मैं धरिहौं शुचि सलाह पर ध्यान।
सुनि इमि भाषण नृप बिदेह को भृगुपति हृदय बहुत हर्षान॥
ज्योहीं चलिबे को चाह्यो मन त्योहीं जनक नवायो माथ।

सुता हमारी को ब्याहब अब सबविधि नाथ तुम्हारे हाथ॥
मिथिलापतिकी यह विन्ती सुनि दीन्ह्यो परशुराम शिवचाप।
हाल बुझायो कहि नीकी विधि यह धनु धरौ भवन महँआप॥
मन अनुमानौ प्रन ठानौ अस जो नृप याहि चढ़ावै आय।
सुता हमारी सुकुमारी सो बिना विचार ब्याहि लै जाय॥
यह शुभ आयसु भृगु नायक को उर धरि करी प्रतिज्ञा राव।
गे फिरि फरशाधर कानन कहँ जग महँ प्रकट जासु परभाव॥
सुनौ हकीकति यहि धनुहाँ की भृगुपति दीन जनक को जौन।
इन्द्र असनि अरु कमठ पीठिते कठिन कठोर घोरधनु तौन॥
सो है विरचो बिशुकर्मा को कारण सुनौ तासु हरियान।
मिलि सब देवन यक औसर पर भो जब दक्ष यज्ञ को ठान॥
चाह्यो देखन बल हरि हर को रच्यो उपाय तहां अस भाय।
कछुक देवता भे शिवके सँग कछु हरि साथ भये हर्षाय॥
तुर्त बोलायो विश्वकर्मा को द्वै धनु कह्यो बनावन ताहि।
महिष शृंग बहु एकत्रित कै जोरे पवि परवान चित चाहि॥
कठिन पदारथ बहु औरौ सब लाय मिलाय एकही माहिं।
द्वै धनु विरचे विश्वकर्म ने घोर कठोर जात कहि नाहिं॥
एक शरासन शिव लीन्ह्यो स्वइ दूजो लियो विष्णु निज हाथ।
लरे प्रबलता ते दूनौ सुर पाई विजय इंदिरा नाथ॥
सुरन विलोकी उन दोउन महँ इक इक कला अनूपम भाय।
करि प्रतीति अस पुनि देउता सब रहे चुपाय हृदय हर्षाय॥
चाप आपनो परशुरामको रमानिवास दीन सुख पाय।
शिव कैलाशहि पर दीन्ह्यो धरि सोई धनुष आय यह भाय॥
प्रण करि भूपति वहि धनुहा को थापित कीन आपने धाम।
पूजन लाग्यो त्यहि शंकरसम अजगव तासु नाम अभिराम॥
खबरि कराई सब देशन महँ जहँ तहँ पठै दूत समुदाय।
आनि चढ़ावै जो धनुहा यह सो मम सुता ब्याहि लै जाय॥

पाय हकीकति अस लंकापति आयो एक दिवस तहँ भाय ।
रहे प्रहस्तादिक मंत्री सँग मिथिलापतिहि मिल्यो हर्षाय ॥
सुख सह पूंछ्यसि समाचार सब पुनि धनु पास पहूंच्यो जाय ।
देखि शरासन सुनि भूपति प्रन मनमहँ हँस्यो बहुत खगराय ॥
निजबल तोलत अस बोलतभो यामहँ कठिन काम कछु नाहिं ।
सहजै शिव गिरि कर तान्यों जब तबका अहै जीर्ण धनुमाहिं ॥
प्रथम जानकी को पाऊं मैं पाछे धनुष तोरि घर जाउं ।
निज प्रणभाष्यो नृप तासों पुनि यहि विपरीत करत शरमाउं ॥
चाप चढ़ाओ दिखरावो बल पाछे होय सुता को ब्याह ।
तब समुझायो त्यहि प्रहस्तने तोड़त भूप पैज क्यों नाह ॥
धनुष भंग पर सिय देहैं नत लैहैं छीनि ताहि बरिआय ।
चाप चढ़ाओ जनि लावो शक छावो जगत माहिं यश भाय ॥
अहंकार करि तब चाह्यो खल सहजहि शंभु धनुष संधान ।
शंकसमानी पै हिरदै महँ कांपन लगो गात हरियान ॥
होतन दृढ़ता उर भीतर कछु मुखपर गई म्लानता छाय ।
पुनि धरि धीरज दृढ़ फेंटा कसि आयो धनुसमीप सकुचाय ॥
बीसहु बाहुन सों विक्रम करि पकस्यो चाप आर कोस्याय ।
लग्यो उठावन चित चावन सों तिलभरि ठावँ न सक्यो छुड़ाय ॥
शंभु शरासन की महिमा बड़ि बलकरि पछरि गयो दशमाथ ।
शोच समान्यो सकुचान्यो तब लाग्यो मलन बीसहू हाथ ॥
चाप दाप सों मम प्रताप की महि मा महिमा भई विनास ।
बाकी यहिमा अब रहिगा का भो अनयास आजु परिहास ॥
कह्यो प्रहस्ताने याविधि तब का प्रभु शोचि रह्यो मनमाहिं ।
तुम्हरे विक्रम के आगे यह महा पुरान चाप कछु नाहिं ॥
एक बार अब फिरि निशंक ह्वै बलसों धरहु धाय यहिनाथ ।
तानौ कंदुक सममानौ बच आनौ सुयश आपने हाथ ॥
सुन्यो सुझावन इमि मंत्री को रावन हृदय आनि परिताप ।

जगत हँसावन हित मानौं पुनि परस्यो काम नशावन चाप ॥
लगो उठावन अति बिक्रमसों इत उत खैंचि खाँचि रिसधारि ।
ठावँ न छूटो बल बूटो सब टूटो गर्व गयो हिय हारि ॥
तब प्रहस्त प्रति यह भाषत भो मामा करौं युक्ति अब काह ।
टरै न टारो बलहारो सबकर धनु धरत परत नहिं आह ॥
कहु को मोसम है योधा जग कर कैलाश लीन जें तानि ।
ताते गरुवो नाहिं धन्वा यह पै कछु ढंग परत नहिं जानि ॥
करौं युक्ति यक यह आवै मन भावै तुम्हैं लेहु सुनि भाय ।
हम तुम दोऊ अनुमानै मिलि तानै सहज माहिं सुखपाय ॥
हँस्यो प्रहस्ता सुनि बानी इमि मानी अतिव रह्यो खलआप ।
सो संपूरण इत चूरणभो पूरन परो टरो नहिं चाप ॥
कह्यो जो सम्मत अस चाह्यो तुम तौ का देर करनको काज ।
हम तुम दोऊ धनु तानबयहि मानब अब कदापि नहिंआज ॥
पै नृप कन्या को ब्याहब तौ धनु आधीन निशाचर राय ।
जो उठाय हम तुम लेहैं द्वउ ह्वैहैं कौन भाँति ते न्याय ॥
कह्यो दशानन यह शोचौ जनि अब तौ परी लाजकी आय ।
आश न कन्या के मिलिबेकी केहू भांति हास मिटि जाय ॥
तबहुं प्रहस्ता ने दस्ता द्वउ जोरि निहोरि कही यह बात ।
हमहुँ तुम्हारे धनु धारे ते उठ्यो कदापि फेरि नहिं तात ॥
तौ जग हासी बहुकरिहैं नर नाशी रही जौन कछु लाज ।
याते गमनौ अब मन्दिर कहँ ह्वैहै नहीं आज कछु काज ॥
शोधि महूरत फिरि आयो इत तब करिदाप उठायो चाप ।
कोउ न जगमहँ यहि धारनको हमहिं दिखात प्रबल परताप ॥
सुनि प्रहस्त को अससम्मत तब रथचढ़ि चल्योदशाननधाम ।
गगन मगन मन सुर देखत यह लेखत काह होत परिणाम ॥
अहै इन्दिरानृप कन्या यह औ इन्दिरा रमण श्री राम ।
वइ उमाहि हैं यह शंकर धनु औ ब्याहि हैं आपनी बाम ॥

कथा मनोहर कहि गाई मैं आई यथाबुद्धि हरियान ।
सुनो अगारी को कौतुक पुनि कीन्ह्यों जहां जौन भगवान ॥
बसैं विपिन महँ शुभ आश्रम लहि विश्वामित्र एक मुनिराय ।
रहैं तहां पर बहु औरौ मुनि निबहैं योग यज्ञ जप भाय ॥
बहुभय मानै निशिचारिन को सुभुज मरीच आदि खल जौन ।
यज्ञ विलोकतही आवैं तहँ विविध उपाधि मचावैं तौन ॥
दुखी मुनिन को डेरवावैं बहु मख सामान मिलावैं क्षार ।
गाधिसुवन मन भै चिंता तब हरि बिन ये न होयँ संहार ॥
तब अनुमान्यो मुनिजान्यो अस प्रभु औतर्यो हरण महिभार ।
यही बहाने ते जावों तहँ पावों स्वामि दरश सुखसार ॥
करिकै विनती अवनीपति ते लैहों इत लेवाय दुउ भाय ।
मख परिपूरण ह्वै जैहै तब जैहै दुष्ट वृन्द विनशाय ॥
किये मनोरथ बहुभांतिन इमि जात न तिन्हैं लागि कछु बार ।
निर्मल सरयू जल मज्जन करि पहुँचे अवधराज दरबार ॥
सुन्यो महीपति मुनि आगमजब मुदसह चल्योमिलनको भाय ।
संग ब्राह्मण शुचि मंत्री सब भेंट हिय लगाय मुनिराय ॥
लाय सहादर फिरि संसदि महँ निज आसनहिं तिनहिं बैठाय ।
पायँ पखारे शिरधारे पुनि जलसों भवन दीन सिंचवाय ॥
पूजि यथोचित विधि बिधानसों करि सन्मान भूप हरषान ।
हाथ जोरिकै पुनि भाष्यो इमि मोसम आजु धन्य नहिं आन ॥
दर्शन दुर्लभ मुनिनायक के पायों अनायास सुख रास ।
भयो आगमन क्यहि कारण इतभाषिय तौन आस सहुलास ॥
सुनि मृदुबानी नृप ज्ञानी की मानी मनहिं मोद मुनिराय ।
बात सयानी सों भाष्यो पुनि सुनुनृप सावधान मनलाय ॥

स० श्री भृगुनाथ गये जबते बन छोंड़ि कहूं तप हेत सिधाये ।
तादिन ते दुख दानव देत रहैं उतपात घने नित छाये ॥
जाप न ताप करैं ऋषिदेव सशंकभये गिरि खोह छिपाये ।

राम कुमारहि देहु हमैं मख राखन को नृप मांगन आये ॥

बचन कान सुनि मुनि सुजान के फूल समान भूप कुँभिलान।
जनु समान वर वान आन हिय प्रान निदान काल नियरान ॥
क्षण क ध्यान धरि कर संपुट करि शीश नवाय शोच सरसाय।
कह्यो महीपति अति आरत गति बैन बनाय नैनजल छाय ॥
महा यतन ते वृद्धापन महँ लह्यों कुमार प्रान आधार।
मुनि विचार करि सो मांग्यो नहिं मोकहँ दियो शोक शरमार ॥
नेह समानी सुनि बानी मुनि कह्यो नदानि केरि यह बानि।
वृथा मोह महँ अनुरागत नृप त्यागत बिमल बंशकी कानि ॥

स० राजसमाज तज्यो क्षन एकमें त्यागिदई तिनसी रजधानी।
देहरु गेह सनेह तज्यो सुत वित्त कलत्र महा सुख खानी ॥
धीरज धर्म धर्यो दृढ़कै वरु नीच कि सेवकता लगि ठानी।
सो कुलराज स्वई नृपजू ज्यहि वंशभये हरिचंद से दानी ॥

ह्वै अवनीपति कुल तीने को छांड़त सत्य सनातन रीति।
नीतिमान त्वहिं सुनि आयों में क्योंकर करत प्रीति वश भीति ॥
भूप डेराने अनुमाने तब जाने महा कुपित मुनि नाथ।
लग्यो नम्रता सों भाषन तब माथ नवाय जोरि दुउ हाथ ॥

स० माँगिय राज समाज सबै सुख साजहु दै सुख आज भरौंगो।
धाम अराम धरा धन ग्रामनि देतन नेक विलंब धरौंगो ॥
बंदिकरौं चलि मैं मख रक्षन लक्षन रक्षन संग लरौंगो।
कोट परौं न डरौं यमके पर आँखिन ओट न राम करौंगो ॥

यहि विधिशोकित बच भूपति के सुनि मुनिराय नेह सरसाय।
नीति सुझावत मुद छावत से बोले फेरि भूप प्रतिभाय ॥
रे नृप दशरथ अस समरथ ह्वै खेदित होन लागि लघुबात।
सत्पथ छोंड़त मुख मोड़त हठि माँग्यों नाहिं अदेय कछुतात ॥
बिनती कीन्हीं तब राजाने सुनिये सत्य बचन मुनिराय।
सर्वस मांगो तौ अदेय नहिं इक सुकुमार कुमार विहाय ॥

स० खेदित होतहौं या हितते प्रभुहैं खलवृन्द महा बल शालक।
धीरजुझार अपारदली छलभारथली विकली कृत ख्यालक॥
देखि डरैं न लरैं जिनते रण रंग परे सबेर दिगपालक।
ये लरिहैं किमिकै तिनपै धनुबान विधान अयान से बालक॥
ज्ञान रहित ये नृप सुजान तुम बोलत बानि प्रेम भय आनि।
खलदल घालक मुनिकुल पालक बालक तिन्हैंकहत काजानि॥
शत्रु गयंदन के बृन्दन को सहजै जौन निकन्दन हार।
हरि कुमारसम हरि कुमार तुव भाषत तिन्हैं भूप सुकुमार॥
इमि समुझायो मुनिनायक ने पायो तबहुँ बोध नहिं राज।
जिय महँ आयो सो गायो पुनि छायो हृदय प्रेम रस साज॥
स० नाथ यथारथ बात कही नहिं वंदि अकारथ आपुके बैना।
भाकर वंशकी रीति यही पर काह करौं कछु चित्त ठनैना॥
पुत्र वियोगते भागति बीरता जागति धीरता धीर मनैना।
हारहि देह सनेह पछारहि राम कुमारहि देत बनैना॥
करुणासानी सुनि बानी पुनि मुनि उर गयो क्रोध बहु छाय।
आय लालरी गै नैनन महँ बोले बैन महा रिसिआय॥
कहीं हमारी तुम मानत नहिं ठानत महा मोह महिपाल।
क्रोध हमारे को जानत नहिं आनत बार बार हठ ख्याल॥
कहो हमारो अबताईं नृप टारो नहीं केहू भूपाल।
जो कहि भाष्यों अभिलाष्यों मन पूरन वही भयो ततकाल॥
अबहुँ तुम्हारो कछु बिगरो नहिं भूपति चित्त लेहु अनुमानि।
पूछहु रानिन प्रति सम्मत यह देखौ काह कहहिं वे बानि॥
ज्ञानी मुनिकी सुनि बानी इमि आनी कछुक भूप उर धीर।
गमने तुरतै रनिवासे कहँ आये प्रथम केकयी तीर॥
लख्यो केकयी ने आवत नृप लीन्हेसि आय अगारी धाय।
मुख उदास लखि नरनायक को पूछन लगी नेह दरशाय॥
मंद चंद मुख कस राउरको दरशत हृदै माहिं कछु शंस।

याको कारण निर्द्धारण करि कहिये भानुबंश अवतंस ॥
बोले अवनीपति आरत तब हारत राम नेह वश भाय ।
काह सुनावन समुझावन प्रिय भाषत बात गात अकुलाय ॥
आजु हमारे ढिग आये चलि विश्वामित्र महा मुनिराय ।
राम कुमारहि सो मांगत हठि सुत सौमित्र सहित द्वउभाय ॥
म्वहिं अनेक विधि समुझायो कहि गायो नीति रीतिकी बात ।
तदपि न धीरज उर आयो मम तब ते चित अधीर घबरात ॥
मैं सुत देबे को मान्यो नहिं तब अस कह्यो कोपि मुनिराय ।
जाय कै सम्मत लै रानिन प्रति आयों तौन हेत इत धाय ॥
म्वहिं त्वहिं प्यारे सब प्रकार ते राम कुमार प्राण आधार ।
है असमंजस अति देबे महँ लेबे बरु कुशीश अघ भार ॥
तुमहुँ बिचारो चित धारो प्रिय उचित उपाय बतावहु मोहिं ।
जाते संकठ टरि जावै यह आवै मोद मोहिं अरु तोहिं ॥
कह्यो केकयी तब सम्मत शुभ सुनिये धीर बीर बर नाह ।
यही बात लगि मुख सूख्यो अस दूख्यो परम्पराकी राह ॥
हंस वंश की परिपाटी यह याचक कबहुँ बिमुख नहिं जात ।
नई भई नहिं यह आजुहि कछु अहै प्रसिद्ध पुरातन बात ॥
फिरे गाधिसुत यदि निराश ह्वै होइहिं अवशि वंश उपहास ।
वंश हासते फिरि जानहुँ पति होइहि क्षणक माहिं यश नास ॥
वेद पुराणहुँ कहि भाषत इमि औ है जगत माहिं परमान ।
ज्यहि नर याचक परितोष्यो नहिं वृथा सो भूमि भार समजान ॥
मो कहँ तुम कहँ सब भांतिन ते प्रान समान पियारे राम ।
क्षण इक तिनके अवलोके बिन लहत न नैन चैन विश्राम ॥
अस विचारिकै पति भाषौं जस तस तुम करहु जाय हर्षाय ।
मुनिहुँ याचना परिपूरै ज्यहि औ तुव सुयश जाय जग छाय ॥
अंग बरण वय शील डील महँ जैसे राम लषण द्वउ भाय ।
भरत शत्रुहन हैं तैसे नृप रंचक भेद नाहिं दिखराय ॥

जानि न पैहैं मुनि नायक यह की ये राम लषण नहिं आयँ।
महा अनंदित ह्वै भ्राता द्वउ मुनिवर गाधिनंद सँग जायँ॥
देर न लावो अब जावो तहँ दूनो भरत शत्रुहन भाय।
सविधि बुझावो कहि गावो सब औ मुनि संग देहु पठवाय॥
केकय कन्या को सम्मत शुभ सुनिकै खुशी भये महिपाल।
डूबत संशय के सागर महँ प्रिय जल यान भई यहि काल॥
गये सभा कहँ उठि तहँ ते नृप लैकै भरत शत्रुहन साथ।
हाथ जोरिकै मुनि सन्मुख भे बालक शरण उपस्थित नाथ॥
है महरानिहुँ को सम्मत यहि जाहिं निराश नाहिं मुनिराय।
मैंहूं स्वीकृत त्यहि कीन्ह्यों प्रभु सब विधि तुम्हैं सहायक पाय॥
दशरथ जीको इमि भाषण सुनि सन्मुख खड़े देखि द्वउ बाल।
भे आनंदित मुनि नायक चित भाष्यो धन्य धन्य महिपाल॥
जानि न पायो छल राजा को की ये राम लक्ष्मण नाहिं।
बिदा माँगि कै चलि ठाढ़े भे रिपुहन भरत जाहिं सँग माहिं॥
सरयू सरिता तट आये जब तब मुनि युगुल भाय सन्मानि।
उर अभिलाष्यो कहि भाष्यो सो सुनिये पुत्र हमारी बानि॥
हमरी कूटी की रस्ता है इतते अहैं कहैं हम तौन।
तीनि दिवसकी सो सीधी मग दुर्गम तीनि पहर की जौन॥
तहां ताड़का निशिचारिनि हठि मुनि द्विज करत मारिआहार।
कौन राहते अनुमानत तुम चलिबो कहौ तौन सुकुमार॥
भरत भावते ने भाष्यो तब सुनिये विनय मोरि मुनिराय।
मग भयकारी महँ धारी पग भारी कौन काम अस आय॥
नीतिहु वेदन बतलाई यह छाई जगत माहिं शुभरीति।
भले भलाई शुभ मारग महँ चले कुराह होत उर भीति॥
जानि बूझिकै पग देवैं क्यों लेवैं पाय हलाहल पानि।
दुर्मग कंटक शठ एकै गति देखत त्यागि देत जन ज्ञानि॥
भयेचकितचित मुनिनायक तित सुनिभयभीत भरतकी बानि।

रहे विचारत द्वै घटिका लग ये म्वहिं राम परत नहिं जानि ॥
डरे निशाचरि कोनामैं सुनि कम निश्चरन संग संग्राम ।
करिहैं मरिहैं उद्धरिहैं सुर टरिहैं धरा भार ये राम ॥
ध्यान धारिकै अनुमान्यो तब जान्यो राम लषण ये नाहिं ।
नृप छलकीन्हयों दैदीन्हयों सँग ये द्वउ भरत शत्रुहन आहिं ॥
इतना शोधत मन बोधत नहिं भयो अपार क्रोध विस्तार ।
लौटे तुरतै वहि अस्थलते करिहौं आजु अवध मैं क्षार ॥
भरकी अतिशै क्रोधागी जब लागी जगन दृगन महँ ज्वाल ।
तीक्षण दृष्टी सों ताक्यो तब लाग्यो जरन नग्र खगपाल ॥
ठाम ठाम सब धाम धाम महँ धाई लपट झपट विकराल ।
भये दुखारी नर नारी अति यावत युवा जरठ अरु वाल ॥
अति दव दागे कढ़ि भागे सब रघुपति पास पुकारे जाय ।
टारहु आरत हे आरतहर जारत नग्र आजु मुनिराय ॥
तुम कहँ मांगन वे आये इत विश्वामित्र नाम तप धाम ।
छल करि भरतहि नृप दीन्हयो दै त्यहि बश कोप कीन उनराम ॥
जानि प्रजा दुख प्रभुपाये दुख आये तुरत महा मुनि पास ।
गहे दौरि मग मुनि नायक पग लागे विनै करन सहुलास ॥
हाथ जोरिकै प्रभु भाष्यो इमि दीन अनाथ नाथ रघुनाथ ।
बिना पराधै के कीजिय जनि रिस ठनि प्रजा दाह मुनिनाथ ॥
दंड योगहै जग वाही जन जो मन जानि करै अपराध ।
कछु न विचार्यो उर धार्यो प्रभु नृप अपराध प्रजा को बाध ॥
क्रोध तपस्वी उर आवै तो पूरुब पुण्य नशावै स्वामि ।
यहू जन्मको यश जावै नशि होवै अन्त नर्क को गामि ॥
पुत्र देत महँ अकुलावै पितु कहलावै सो प्रीति की रीति ।
सज्जन यामहँ रिसलावै जनि गावै यह न वेद अनरीति ॥
यद्यपि चारिहु सुत माने सम जाने मोहिं अधिक प्रिय तात ।
तुमहिं न दीन्हयों छल कीन्हयोंनृप दीन्हयों भरतशत्रुहन साथ ॥

क्षमा कीजिये प्रभु दायाकर दीजिय क्रोध भाव बिसराय।
मैं अब चलिहौं संग राउर के घलिहौं दुष्ट असुर समुदाय॥
यज्ञ रखैहौं सरसैहौं सुख दुष्टन मर्दि भखैहौं राखि।
आयसु पैहौं तो ऐहौं इत रैहौं नतरु संग अभिलाखि॥
राम बचन सुनि मुनि हर्षे उर दीन्ह्यों तुरत क्रोध बिसराय।
सुधा दृष्टिसों पुर ताक्यो तब तत्क्षण आगि गई बुझि भाय॥
समाचार यह नृप पायो सुनि मुनिके संग जात रघुनाथ।
भय वश कांपत चलिआये तहँ दीन्हे लाय लषण पुनिसाथ॥
हाथ जोरिकै यह भाष्यो तब दूषण क्षमौ मोर मुनि नाथ।
सुत सनेह वश अस कीन्ह्यों मैं दीन्ह्यों भरत शत्रुहन साथ॥
कह्यो गाधिसुत तजु संशय नृप अपनो जन्म धन्य करिमानु।
यहि सनेह वस सुत पायो अस प्रभु सच्चिदानंद कुलभानु॥
भार धरित्री को टारन हित मारन हेत दुष्ट दल झार।
जन सत्कारन हित तोरे घर राम उदार धर्‌यो अवतार॥
राम लषण को लै जाऊं मैं आनँद सहित पुराऊं याग।
तुम न अँदेशा कछु लावो जिय रखिहौं इन्हैं सहित अनुराग॥
याविधि शिख सुनि मुनिनायककी उर धरि धीर वीर महिपाल।
करि पगबंदन आनंदन सों गे गृह बिदा पाय ततकाल॥
हाथ जोरिकै प्रभु भाष्यो तब सुनिये मोरि विनय मुनिराय।
अज्ञा पाऊं जो राउर की लाऊं विदा मातुसन जाय॥
तुव सँग जाऊं बिन पूंछे तो माता दुखी होय मन माहिं।
दिनभरि रोवैं निशि सोवैं नहिं पियें न पानि अन्ननहिं खाहिं॥
आयसु दीन्ह्यों मुनि हर्षित ह्वै जननी धाम गये तब राम।
पास पहुँचिकै कर संपुट करि कीन्ह्यो पगन माहिं परणाम॥
सुंदर वाणी सों बोले पुनि आये मोहिं लेन मुनि नाथ।
यज्ञ रखावन चित चावन सों मैं अब जात मात तिन साथ॥
आशिष आयसु तुव चाहत मैं देहु सो माय हृदय हरषाय।

शोच न कीन्ह्यों उर मोरे हित में तहँ भले रहब सुखपाय ॥
सुत सुखखानी की बानी सुनि रानी रुदन करत दुखपाय।
जिय अधीर करि नयन नीर भरि रामहिं लियो गोद बैठाय ॥
आशिष दैकै कर परस्यो शिर बोलीं बैन नेह सरसाय।
तुम्हैं निहारे बिन प्यारे सुत इकक्षन युग समान चलिजाय ॥
फिरि समुझायो प्रभु माता को तब उन धरी धीर मन माहिं।
करि पग बंदन रघुनंदन उत गमने हर्ष शोक कछु नाहिं ॥
गाधिसुवन ढिग चलि आये तब कर धरि धनुष बाणद्वउभाय।
रूप अनूपम सुर भूपम लखि भे अति महा मगन मुनिराय ॥
आगे आगे मुनि गमने अरु पाछे चले भले द्वउ भ्रात।
जनु बिरंचि सँग पग धारत मग द्वउ अश्विनी कुवँर बरजात ॥
ठीक दुपहरी के औसर महँ तपत दिनेश क्लेशकर घाम।
लगि मुख सूखे सुकुमारनके अब लगि कबहुँ तज्यो नहिंधाम ॥
शोचन लागे मुनिनायक तब मो सँग आज लक्ष्मण राम।
पायो एतो दुख कानन महँ सज्जन सुखद शील के धाम ॥
मारग गमने ते पायो श्रम मुखपर स्वेद बिंदु झलकात।
मो सकोच बश कछु भाषत नहिं राखत स्वामि भक्तको नात ॥
अस अनुमानत मन आये चलि सरयू तीर महा मुनिधीर।
बचन मनोहर कहि भाषे तब सुनिये रामचंद्र रघुबीर ॥
भे रबिबंशी नृप यावत इत कीरति जगत प्रशंसी आम।
यहि थल सबहिन तन त्यागे अरु पाये स्वर्ग बास सुखधाम ॥
ताते यह थल है तीरथ सम तुम इतकरौ ध्यान असनान।
मैंहूं मज्जन करि ध्यइहौं हरि त्वहिं बतलैहौं मंत्र विधान ॥
पायसु आयसु मुनि नायक को दोऊ भाय हृदय हर्षाय।
जाय नहाने कल सरयू जल नित्यक्रिया कीनि मनलाय ॥
न्हाय धोयकै सुर अर्चा करि मुनिहूं गये फरागत पाय।
तब चलि आये मुदछाये मन जहँ पर उभै भाय रघुराय ॥

बला अति बला ये विद्या द्वउ दोऊ भाइन दई पढ़ाय।
ज्यहि प्रताप ते दुख जागै नहिं लागै भूख प्यास नहिं भाय॥
चले तहां ते मुनि नायक पुनि लैकै धीर वीर द्वउ साथ।
विपिन ताड़का नगिचायो जब तबअसकह्यो भाषिमुनिनाथ॥
पुत्र इहां ते मम आश्रमकी ये द्वै राह रहीं दिखराय।
एक सुगम सो तीनि दिवस की दुर्गम तीनि यामकी आय॥
बसै ताड़का निशिचारी तहँ महा कराल मुनिन की काल।
लसै माल उर मुनि मुण्डनकी तन महँ बसन बिप्र तनखाल॥
त्यहिमग निबहब बहुमुश्किल है तुम सुकुमार बैस लघुबाल।
देखत धावै धरि खावै हठि पावै कोउ न पार हे लाल॥
चलिबो चाहत कौन राह तुम हमसन कहौ तौन नरनाह।
मैं तो डरपत बहु ताके डर मग पग धरत हरत उत्साह॥
गये जानि प्रभु मुनि मनकी गति अतिशय बीरधरे धनुपानि।
बानि मनोहर कहि भाषत भे सुनिये विनय मोरि मुनि ज्ञानि॥
निर्भय चलिये गलि येही प्रभु जाते मिलै वेगिही धाम।
देर न लगि है श्रम जगि है नहिं करिहै काह ताड़का बाम॥
प्रभु प्रतीति हित मुनि भाष्यो पुनि सुनिये रामचंद्र यकबात।
दुष्ट निशाचरि ते चाहत का मोकहँ तहां खवावन तात॥
मो तन धाई जब अधमा वह बदन पसारि मारि किलकारि।
देर न लाई धरि खाई म्वहिं तुम भागि जाहु वान धनु डारि॥
मन मुसक्याने रघुनंदन प्रभु सुनि मुनि बानि युक्ति युत जानि।
धीर धरावत दरशावत बल बोले मनहुँ बीर रस सानि॥
एकहि शरते संहारौं त्यहि दूसर फेरि न धारौं स्वामि।
सही यही प्रनहै तन मन ते करौ प्रतीति जानि अनुगामि॥
सुनि इमि वानी धनुपानी की आनी गाधिसुवन विश्वास।
तीनि याम की मग गमने तब आये ताड़ुकाश्रम पास॥
भुजा उठायो दिखरायो मुनि रामहिं बाम निशाचरि धाम।

आपु पलाने भय माने कै राख्यो राम बोधि त्यहि ठाम ॥
पीत बसनते कटि बाँध्यो कसि बायें हाथ गह्यो कोदंड।
बान सुधार्यो धरि दक्षिण कर कीन्ह्यों त्वरित टंकरित चंड ॥
शब्द समान्यो सो त्रिभुवन महँ अद्भुत चमत्कार दिखलाय।
अस्थि पलँगरा पर सोवत सो उभ्ककत उठी शंक सरसाय ॥
इत उत चितवत दृग तीखे करि रिस सरि मनौ उठी उमड़ाय।
मेघ श्याम छबि रघुरायहि लखि तड़पी घुर्घुराय चलि धाय ॥
प्रलय काल की घनि आँधी सम दुष्टा चली मारि ललकार।
प्यारे रामहुँ हुशियारे कै सन्मुख तक्यो ताहि वल भार ॥
महा भयंकर तन मानहुँ घन धारे विप्र चर्म परिधान।
माला आंतन की डारे गल कुण्डल विप्र मुण्ड के कान ॥
कच लटकाये फैलाये मुख बाये दांत घुमावत हाथ।
वृक्ष गिरावत इत आवत है देख्यो भली भांति रघुनाथ ॥
हँसि हर्षानी अनुमानी मन लागी कहन विनिन्दित बानि।
आजु मनोरथ परिपूरणभो सहजहि मिल्यो असन इतआनि ॥
और पदारथ सब मोरे घर केवल एक आसनहिं नाहिं।
ताहित मारौं यहि बालक को खाय अघाय हृदय हर्षाहिं ॥
श्याम चर्म को अलगैहौं अरु आसन सुष्टु बनैहौं तासु।
स्वादु अपूर्व है मासहु में आवत गात माहिं भलि बासु ॥
मारि गिराये मुनि भूसुर बहु पाये हाड़ चर्म तन माहिं।
स्वाद न भाये तिन खाये कछु यहि अँग ताप तपाये नाहिं ॥
यहि विधिभाषत अभिलाषत मन पहुँची आय रामढिगधाय।
उरभय मोचत नय शोचत प्रभु रहिगे बान धनुष पर लाय ॥
त्तसो जान्ये मुनि नान्योभय औ समुझाय कह्यो गोहराय।
गज हजार को बल याके सुत नारि विचारि देहु जनि जाय ॥
सं० याहि सँहारन कारन आज कुमार तुम्हैं हम लाये लेवाई।
गात हजारन वारन को बल झारन देत पहार उड़ाई ॥

मारि अकारन विप्र कुमारन लीन अपारन को यहिंखाई।
जो बचिजाई भलाई नहीं फिरि मेरी दुहाई तुम्हैं रघुराई॥

सुनि भयसानी मुनि बानी प्रभु बोले नीति रीति दरशाय।
विनय बखानोंसो आनों श्रुति पुनि जो उचित कहो मुनिराय॥

स० है करणी बरणी बरवंशकि कीरति बिस्तरणी सुजहान पै।
नीति घनी उरमाहँ बनी रहै बुद्धि ठनी रहै वेद पुरान पै॥
बन्दि अनन्द भरैं भटपाय डरैं न लरैं मन दै रनथान पै।
जानि यहैचितग्लानिगहै बलवान न छांड़तबान तियानपै॥

श्रुतिपथ राखनको भाखन सुनिपुनि मुनिराय कह्योसमुझाय।
हमहूं जानत अरु मानत सुत तुव कुलनीति रीति जो आय॥
हनी इन्द्र ने बलिभगिनी अरु मारी भृगुनारी हरि आप।
जौन कुमारग पग धारत खल तिनके हते होत नहिं पाप॥
पायसु आयसु अस मुनिवर को रघुबर हर्षि चढ़ायो बान।
चले झपटि झटवहि दुष्टातन करि पर यथा चलै हरिज्वान॥
वहूं उखारा तरु भारा इक औ महराय चली मुख बाय।
अरे अभागे नर भागे अब बचै न धाय डारिहौं खाय॥
असकहि आई रघुराई पर माई मनहुँ मीचुकी आय।
एक साथही तरु छांड़ेसि सो श्री रघुराय उपर हहराय॥
तिल तिल काट्यो भुवि पाट्यो सो अतिशै धीर बीर श्रीराम।
वान वज्रसम संधान्यो पुनि मार्‍यो ताकि उरस्थल बाम॥
प्रान पयाने नाराचहि सँग परी पचास कोश पर जाय।
यथा बवंडर महँ परिकै तिन जाय उड़ाय दूरि बहु भाय॥
मरी निश्चरी मुनि जान्यो तब मान्यो महा खुशी मन माहिं।
सुयश बखान्यो रघुनंदन को तुम सम धन्य और कोउ नाहिं॥
बहु दुख टार्‍यो मुनि विप्रनको मार्‍यो दुष्ट निशाचरि बाम।
मोरहु आयसु प्रतिपार्‍यो तुम कीन्ह्यों बड़ो काम यह राम॥
मुनि पग बंदन रघुनंदन करि बोले हाथ जोरि शिरनाय।

शक्ति न यामहँ कछु सेवक की केवल प्रभु प्रताप तुव आय॥
देखि शीलता अस राघवकी मुनि पुनि हृदय माहिं हर्षाय।
अस्त्र समर्पे सब वाही क्षन दीन्ह्यौं विधि विधान बतलाय॥

षटपद॥

विधि सुरेश पवि अशनि अनल यम प्रबल प्रचंडन।
पवन गवन घन काल व्याल सरितासर खण्डन॥
अखिल खल दल दलन मलन तम तेज दिवाकर।
चंद मंद गति करन हरन दानव मद आकर॥
कविबन्दि जगामग जगमगत अति भासतिद्युति दर्शिये।
सुखधाम राम ये अमरशर समर करन कर पर्शिये॥

मुनि के दीन्हे बर आयुध सो लीन्हे राम हृदय हर्षाय।
चले अगारी मग धारी पुनि सँग मुनिराय और लघुभाय॥
आय पहूंचे मुनि आश्रम में बैठे यथा योग थल पाय।
कंद मूल फल लै आये मुनि लीन्हे दुओ भाय सो खाय॥
मिले यथा विधि सब मुनियन कहँ कीन प्रणाम माथ महि नाय।
निशा पायकै सुख सोये पुनि दूनौभाय सहित मुनिराय॥
रात गँवाई अरुणाई लखि उठे प्रभात पाय द्वउ भ्रात।
प्रात कृत्य करि विधि विधानसों आये मुनि समीप हर्षात॥
कह्यो सुबानी सों ज्ञानी मुनि कीजिय यज्ञ अरंभन आज।
काज भली विधि मैं करिहौं प्रभु डरिहौं मारि निशाचर राज॥
कह्यो गाधिसुत तब राघव सन निश्चर करत बहुत उत्पात।
यज्ञ धूम जो लखि पावत इत आवत धाय सुभुज द्वउ भ्रात॥
रक्त बहावत रजनावत बहु औ दुर्वचन सुनावंत लाल।
मुनिन सतावत डरपावत अति क्यहिविधि होयतासुप्रतिपाल॥
सुनि मुनि बानी धनुपानी प्रभु कह्यो गँभीर बीर रसछाय।
तनक न संशय मन दीजिय मुनि कीजिय मखारंभ हर्षाय॥
यह सुनि सहरे मुनि आये चलि लाये सकल होम सामान।

दर्भ डसाये बैठाये सब गाये बेद मंत्र सबिधान ॥
आगी जागी यज्ञ कुण्ड महँ लागी हवन रीति तब होन।
धनुष बान धरि बल निधान द्वउ रक्षक भये लये मखकोन ॥
भई उच्चरित तब स्वाहा धुनि सुनि सो चले निशाचर धाय।
सुभुज मारिचादिक अगणित खल हाहाकार करत गे आय ॥
खबरदार ह्वै नृप कुमार द्वउ वर्सन लगे वाण विकराल।
क्षण महँ मारे संहारे सब अवध भुवाल लाल खल काल ॥
हन्यो मरीचहि बिनु फर को शर सो शठ गयो उदधि के पार।
सुभुज सँहार्‌यो अग्निबाण ते बहुतक मारि मिलाये क्षार ॥
निर्भय कीन्ह्यों मुनि विप्रन को दीन्ह्यों यज्ञ पूरि करवाय।
भई खुशाली उर देवन के अस्तुति करत फूल बरसाय ॥
पुनि मुनि आश्रम महँ औसर कछु सुखसह रहे राम सुखधाम।
सुनत सुनावत श्रुति सम्मतशुभ कथा पुरान आदि सबयाम ॥
त्यही समइया महँ भूसुर द्वै आये जनक नगरते धाय।
न्योता लाये मुनि नायक कहँ दियो पठाय जनक महिराय ॥
धनुष यज्ञसुनि हर्षाने मुनि सादर कह्यो रामसन जाय।
चलौ निहारौ सुत कौतुक उत आवै अमित देश के राय ॥
पाय सुआयसु मुनि नायक को चलि भे उभै भाय हर्षाय।
बटु पटु डगरे बहु औरौ सँग कर गहि पात्र कमण्डल भाय ॥
दीख्योमग महँ यक आश्रम तहँ खगमृग जीव जन्तुकोउनाहिं।
सूना दूना भय जागत जिय लागत बात गात कुम्हिलाहिं ॥
शिला मिलायक चलि आगे पुनि नारि निहारि ताहि खरआरि।
शोचन लागे उर संशय लहि कहि मुनि कथा बताई भारि ॥

स० सुकुमारि स्वरूप अगारि रही मुनि गौतमकी यह नारियेजू।
छबिवारि निहारि बिहारि कियो यहि संग सँयोगन गारियेजू ॥
अस पाप सिहारिकै शापदियो ऋषि बंदि महा रिस पारियेजू।
दुखभारि बिचारि सगारि इसे पदपंकज धारि उधारियेजू ॥

सुनि इमि बानी मुनि ज्ञानी की आनी दया दयादरिआय ।
शुचि पद पंकज रज परसी त्वर भरसी शाप दाप दुरिआय ॥
तेज तमारीसी नारी वह प्रकटी प्रभा युक्त कलकाय ।
लखि धनुधारी की प्यारी छबि चरणन माहिं गई लपटाय ॥
पुनि धरि धीरज कर संपुट करि लागी बिनय करन हर्षाय ।
जल कल नैनन महँ आयो भरि छायो अंग अंग पुलकाय ॥

स० हे छबिधाम प्रभा तनश्याम तमामन काम लजावन हारी ।
हे शुचिग्राम अरामद नाम महा अभिराम छटा हगवारी ॥
बंदि निकाम उधारन पामर ये सब याम कलाम तुम्हारी ।
शोककि शाम उधास्यहु बाम अहै प्रभु राम तुम्हैं बलिहारी ॥

यहै बीनती अबतीकी प्रभु सुनिये रमा रमण दैकान ।
शुचि पद पंकज रज पराग को मम मन मधुप करै नितपान ॥
एवमस्तु तब कहि दीन्ह्यो हरि लीन्ह्यो तौन शीशपर धारि ।
बार बार परि पग पावनमहँ पति पुर गई अहल्या नारि ॥
चले तहां ते पुनि आगे कहँ लागे गाधिसुवन के साथ ।
सरित सुहावनि जग पावनि तट झटपट आय गये रघुनाथ ॥
कीनलषण सह पग वंदन प्रभु सब विधि पाप निकन्दनिजानि ।
पुनि मुनिनंदन ते पूंछ्यो हँसि सहित उमंग गंग प्रकटानि ॥
कथा यथा मति मुनि गाई सब आई धरा गंग ज्यहि भांति ।
मज्जनकीन्ह्यो प्रभुहर्षित तब लीन्ह्योगात शांतिशुचि कांति ॥
दान ब्राह्मणन को दीन्ह्यों बहु कीन्ह्यों यथा उचित सन्मान ।
चले अनंदित ऋषय वृंद सह वेगि विदेह नगर नियरान ॥
पुर सुंदरता प्रभु देखी जब वंधु समेत बहुतु हर्षान ।
नगर किनारे छबिवारे बहु कूप अनूप कीन निर्मान ॥
भली बावली हैं सोही कहुँ सुखमा हदी नदी अरु ताल ।
भरो अमीसम अतिनिर्मल जल फूले अमल कमल के जाल ॥
सिढ़िया सुंदर मणि सुवरण की पक्के बँधे मनोहर घाट ।

भृंग हजारन गुंजारत तहँ यक दिशि लगी विहंगम हाट ॥
सुमन सवाँरी फुलवारी बहु क्यारी सजी पियारी पांति।
बाग विलोके अनुरागत मन जागत क्षोभ शोभ उमगाति ॥
नगर निकाई कहिपाई किन छाई धाम धाम छवि आम।
जहां विलोकै तहँ रोंकै मन दर दर अमन चमन अभिराम ॥
चारु बजारे सुखसारैसी विरचीं बर विधान दूकान।
मंजु अटारी गचकारी अति प्यारी छटा केर निर्मान ॥
धनिक धनद सम वनिक महाजन नाना वस्तु लिहे तहँ बैठ।
मानहुँ तिनके घर लक्ष्मीधर लैंकै अप्रमान धन पैठ ॥
बाट सिंचाई शुचि गंधन सों साजे ठाट सहित चौहाट।
मंदिर मंगल मय सबही के नीके लगे कनक के पाट ॥
महा सुखारी नर नारी सब अतिशै शीलवान युत ज्ञान।
खास बास जहँ जनकराज को तहँ की छवि को करै वखान ॥
किला खिला बहु चहुँ ओरन ते मानहुँ मिला गगन में जाय।
अचञ्चल लक्ष्मी जहँ निवसत नित तहँकी छटा सकै को गाय ॥
आला शाला हयवारन की काला करै कौन मुख भाखि।
ठाट निराला दर द्वारन को जाला दीन कनक के राखि ॥
मत्त मतंगम बहु झूमत तहँ उमड़े जड़े रत्न मय दांत।
मेरु कँगूरा सम दर्शत ते वर्सत मद पराग उमगात ॥
सोहे अगणित रथ शोभा गथ जोहे बाजिराजि की राजि।
लखि उत्तमता तिन बाजिनकी दिनकर वाजि जात मन लाजि ॥
शूर सेनपति अरु मंत्रिन के विरचे रचे अनूप अगार।
द्वार द्वार प्रति अति वहारवर मानहुँ सजे मार मियमार ॥
पुरके बाहर नदी ताल तट जहँ तहँ टिके अमित महिपाल।
आयुध धारे भुजभारे ते अखिल शाल रूप विकराल ॥
देखि अनूपम अमराई इक छाई जहां शीतली छाहँ।
गाधिपुत्र के मनभाई बहु प्रभुते कह्यो सहित उत्साह ॥

सब सुपास को यह अस्थल वर रघुवर करौ इहां परबास ।
भलेहि नाथ कहि तहँ मुनियन सह उतरे श्रीनिवास सुखरास ॥
समाचार ये नृप पाये सुनि आये गाधिसुवन मुनिराय ।
बहु हर्षाये उठि धाये तब लीन्हे गुरु द्विजादि बुलवाय ॥
चले साथ लै तिन सबहिन को मंत्री मित्र शूर समुदाय ।
देर न लाये चलि आये तहँ उतरे जहां महा मुनिराय ॥
हाथ जोरिकै नृप विदेह ने कीन्ह प्रणाम धरणिधरि माथ ।
महा अनंदत पगबंदत लखि दीन्ह अशीस हर्षि मुनिनाथ ॥
पुनि सब विप्रन को आदरसह वंदन कीन राउ सुख पाय ।
पूंछि कुशलता पुनि मुनिवर ने जनकहि लीन पास बैठाय ॥
तेही औसर पर रघुवर प्रभु दोऊ भाय पहूँचे आय ।
देखन गेते फुलवैया शुचि शोभा जासु कही नहिं जाय ॥
श्याम गौरतन जस सुवरन घन जन मन हरन छटारहिछाय ।
अनुपम जोड़ी वय थोड़ी मृदु मैन समैन नैन सुख दाय ॥
सब उठि धाये प्रभु आये जब मुनिवर हरषि बुलाये पास ।
दोऊ बंधव बैठाये हँसि पूंछी कुशल प्रश्न सहुलास ॥
सुख समातन दोउ भ्रातन लखि सबके हृदय माहिं हरियान ।
लखि अनंगवत अंग ढंग प्रभु भयो अनंग अनंग समान ॥
प्रेम मगन मन रहे क्षनक यक पुनिनृप जनक तनक धरिधीर ।
माथ नायकै मुनि पायँन महँ बोले गिरा निरा गंभीर ॥
नाथ बतावहु ये बालक द्वउ सुंदर श्याम गौर अभिराम ।
नृप कुलपालक अरिशालककी मुनि कुल धाम करनविश्राम ॥
अथवा जाकहँ श्रुति गावत कहि ब्रह्म अनंत सच्चिदानंद ।
उभय वेष धरि सो आयो इत रूप अमंद चंद द्युति वृंद ॥
इनकी शोभा लखि लोभा बहु सहज विराग रूप मन मोर ।
शरद इंदु छवि अवलोकत जिमि होत चकोर भोर बिन जोर ॥
याते साची प्रभु पूंछों मैं गावहु सुयश छिपावहु नाहिं ।

प्रीति विशेषै इन देखै ते मन नाहिं लगै ब्रह्म सुख माहिं ॥
ज्ञानी नृपकी सुनि बानी वर ज्ञानी मुनिहुँ कह्यो मुसकाय ।
बचन तुम्हारे सच प्यारे अति यामहँ तनिक झूंठ नहिंभाय ॥

स० निजदास चकोरन चंद अमंद अनंदक भूसुर वृंदन ये ।
सुर संतन शीतल चंदन बंदि दिवाकरके कुल मण्डनये ॥
जग बंदन आरत छंदन दुष्ट गयंदन केर निकन्दनये ।
छल छंदन फंदन नंदन ये दशस्यंदन भूपके नंदनये ॥

मम हित कारण मुद्धारण करि आय नरेश निदेशहि पाय ।
यज्ञ रखाई रघुराई दूउ निश्चरनिकर दये विनशाय ॥
नीति निपुणता गौरवता गुण शोभा सुयश शील बल धाम ।
अतन लजावन जनमन भावन लक्ष्मण राम नाम अभिराम ॥
कह्यो मृदुलतासों भूपतिपुनि मुनितुवचरणचारु लखिआज ।
सुकृतआपनो कहिभाषौं किमि लागत कहत माहिंम्वहिंलाज ॥
आनँद दायक आनंदहु के सुंदर श्याम गौर दूउभाय ।
प्रीति परस्पर मनभावनि अतिपावनि कहि न जाय मुनिराय ॥
सहज सनेही ब्रह्म जीव सम देही धरे परे दरशाय ।
धनि मग जहँ पर पगपरसत ये तरसत शोभदेखि सुरराय ॥
राम कुमारहिं तन सुकुमारहि चितवत बार बार नर नाह ।
पुलक गात हरषात जात हिय जिय अधिकात जात उत्साह ॥
भाषि बड़ाई मुनिराई की पुनि पग शीश नाय सहभाय ।
राम लषन अरु गन विप्रन सह नगर लेवाय चले नरराय ॥
घरबहु सुन्दर सुखदायक जो तहँपर दीन वास विश्राम ।
विधिसह पूजा सेवकाई करि फिरि नृप विदा मांगि गे धाम ॥
न्हानध्यान अरु खानपान शुचि करि मुनि साथ नाथ रघुराय ।
बैठे भाई सहथाई महँ रहिगो एक पहर दिन आय ॥
जगी लालसा बहु लक्ष्मन मन आई देखि जनकपुर जाय ।
इकतो प्रभु के भय भाषत नहिं दूसर मुनिहिं रहे सकुचाय ॥

प्रभु पहिंचनी गति जानी सो ठानी जौन लषन मनमाहिं ।
भक्त वछलता हुलसानी हिय दानी दास आस के आहिं ॥
परम नम्रताधुर सकुचत उर मन मुसकायराम रघुराय ।
बचन अमोले कहि बोले तब आयसु ऋषयराय को पाय ॥
लक्ष्मण चाहत पुर देखन प्रभु कहत न आप सकुच मन मानि ।
राउर अज्ञा जो पाऊं मैं जाय देखाय लयावहुँ आनि ॥
राम बैन सुनि मुनि हर्षित मन बोले प्रीति सहित यह बात ।
जन सुख दायक सब लायक तुम राखत क्योंन नीति पथ तात ॥
देर न लावहु चलि जावहु सुत आवहु देखि नग्र सुघराय ।
सुकृत पुरावहु पुर बासिन के सुखमा सदन बदन दिखराय ॥

स० महा मुनिरायको आयसु पाय सुपायँनमें बंदि माथ नवाय ।
चले द्वउभाय भले सुखदाय मनै मुसकाय तनै छबिछाय ॥
प्रभा उमराय सभा शुभकाय निहारत मारहु जाय लजाय ।
जियाललचाय हिया हुलसाय कहा नहिं जाय रहानहिंजाय ॥

लखि प्रभु शोभा मनलोभा तब बालक वृन्द लाग बहु साथ ।
मनहुँ चकोरन मनचोरन सँग द्वै तन धरे जात निशि नाथ ॥
गमने अमने मग नगरी की अगरी छटा जासु दरशात ।
ध्वजा पताके छबि शाके से दर दर फहर फहर फहरात ॥
थरथर घरघर डगरडगर प्रति अति द्युति जगर मगर रहिछाय ।
द्वार द्वार प्रति मणिन हार वर बंदनवार दीन बँधवाय ॥
लहर दिवारी है सारी दिशि प्यारी प्रभा सरित जनु आय ।
फाटक हाटक के लागे दृढ़ अनगढ़ गढ़े कौन पैजायँ ॥
कंचन कलशे कल झलमल से निर्मल जलसे भरे बनाय ।
धरे दुआरन के आरन पर रंभन खंभ करे गड़वाय ॥
लखि दरवज्जन के छज्जन को लज्जन लगत इन्द्र पुर धाम ।
ठाम ठाम पर काम रतन को काम गुलाम होत बिन दाम ॥
अटा अटारी चित्रसारी बहु प्यारी छटा घटा दरशात ।

जहँ मन अटका तन लटका तहँ खटका भूलि चलनको जात॥
यहि बिधि देखत पुरशोभा प्रभु पैठे नगर मध्य हरषाय।
मिली खबरि यह पुरवासिन को धाये धाम काम बिसराय॥

स० भो पुरमें खलभल्ला चहूंदिशि हल्लापऱ्यो सो महल्ला महल्ला।
धाये सबै नरनारि बिहल्लाह्वै टारिउघारि दुआरि के पल्ला॥
कोई इकल्ला समल्लाकोई मगधावतआवत ध्यावतअल्ला।
पूंछै जितैतित गल्लालगे कितगे दशरत्थ भुवल्लाके लल्ला॥

पाय खजाना मन माना जस लूटत रंक शंक बिन भाय।
तस सुंदरता रघुनंदनकी देखत सबै नैन टक लाय॥

स० पीत पटा लपटा कटि पास कसाशर वास गसा शरसे।
शरचाप लसा करचाप लसा गलमालगसा मुक्ताबरसे॥
शिरखौरखसे मलयागर से मुखमंजु निशाकर भाकर से।
नरनारि बसे निकसे घरसे थरसे छविताकन को तरसे॥

आनि अटारी परनारी इक प्यारी छटा रामकी ताकि।
तन मन वारी महा सुखारी डारी आनि कानि सब चाकि॥
लगी पुकारन अरु दारन कहँ बारन करौ सखी यहि बार।
लखौ कुमारन सुकुमारन कहँ मार अपार धिकारन हार॥
सुनि अस हल्ला खल भल्लाकरि तल्ला काम काजको डारि।
महा बिहल्ला ह्वै लल्लाहुउ देखन चलीं नारि सुकुमारि॥
मतिदै तिनकी गति सुनियेअब अतिशय कहनयोग जो नाहिं।
दैपट झटपट लै चटपटपट कोउ चढ़िगईं अटारिन माहिं॥

स० दैथिरकी फिरकीसी भ्रमैं नजमैं चिरकी खिरकी खिरकी पै।
झांकत दै झपकी लपकी झुकिताकत रामछटा छिरकीपै॥
कोऊ अटा दिशि धायझटाकन पायपटान बटा भिरकीपै।
बौरीसी पौंरीपै दौरीफिरै खसिबंदि पिछौरी गिरैशिरकीपै॥

कोउ तन मज्जत अभरन सज्जत बज्जत बाजगहे करमाहिं।
धुनि सुनि धाईं गहरु न लाईं आईं द्वारकिवाँरन पाहिं॥

लखि सुघराई रघुराई की पाई परम मोद मन माहिं ।
चित्र बनाई सी थाई ह्वै नैनन पलक लगाई नाहिं ॥
करै रसोई तियकोई गृह जोई सुन्यो आय रघुनाथ ।
दालिनमोई आगि भिगोई लोई लिहे पलानी हाथ ॥

स० तीय द्वितीय कोई करमोईती सोई लिये करधोवत धोई ।
धोईन सो सुनिबोई कियो इतआये हैं वोईलला नृपदोई ॥
मोईन पानिसो पानिसमोई कहै जित जोई गहै मगसोई ।
रामछटा लखि बोई चहै कर एकमें धोई औ एकमें चोई ॥

पती जिवाँवतती युवती कोउ चुपरतहती चपाती घीव ।
कह्यो अटारीते नारी इक आये राज कुवँर छबिसीव ॥
जिउ असपायो घिउ ढरकायो टिउढ़ी देत चली सो धाय ।
पिउ रिसवायो हिउ न सो आयो कायो बकत भकत अतुराय ॥
आय निहारे प्रभा उज्यारे प्यारे राजकुवँर द्वउभाय ।
नैन किवाँरे फेरि नमारे तारे सही रही टकलाय ॥
सुतहि सोवावति पयप्यावति कोउ पलकापरी परीसीबाल ।
हाल सो पाये की आये इत अवध भुवाल लाल छबि आल ॥

स० टारिढँकासुखबालकको पलकातेचली पलकानहिं लावति ।
जावतिद्वार किवाँर न पावति बंदिसबै घरमें फिफ्आवति ॥
दृष्टिचलावति चारिहु ओरनही कलपावति जीकलपावति ।
राज कुमार निहारन धावति क्षीरभरा अँचरा न दुरावति ॥

कोउ तिय कंजन दृग खंजन महँ अंजन आँजि रही छविखानि ।
सुनी अवाई रघुराई की धाई लिहे शलाई पानि ॥
घिसै बतीसी महँ मीसीकोउ पीसी धरे गदोरिया माहिं ।
सो महिडारी तुरत सिधारी कारी दशन सवाँरी नाहिं ॥
पायँ महावर लगवावति कोउ बाल सो हालबाल चलिधाय ।
छिटके जावक कण मग महँ जनु दीन्हीं इन्द्रबधू बिथराय ॥
मांग सवँ[illegible]ति कचपारति कोउ आवत सुने नाथ रघुनाथ ।

दारसो दौरी दरदुआर दिशि बार उघार आरसी हाथ॥
बिबिध अदूषण आभूषण कोउ पहिनति अंग अंग प्रतिबास
नाम सो पायो सुनि आवत इत छबि अभिराम राम सुखधाम॥

स० हालहिचालउतालचलीसो बिहालह्वैबालगली गहिद्वारकी।
राजकुमार निहारन कारन टार धरी सजवार शिंगार की॥
भारपरे सबरे गहिना रहिना सुधिचीर शरीर सँभार की।
ढार ढरी छुटिहार लरी टुटिक्षारपरी ढुलरी जरतार की॥

खड़ी अटारी पर नारी कोउ सुखवति शीशबार लटभार।
समाचार सो सुनिपाये इत आये नृप कुमार सुकुमार॥

स० एकपलानटला कविबंदि चलाचित रामललाकि तलासी।
डारिगलाअवलाझुकिझाँकि झरोखझलाझलइंदुकलासी॥
रामलला न हलातहँते दृग लागिभ्रमै चलि चाकडलासी।
कलासी करै विकलासी दरै दर दौरिदुरै उघरै चपलासी॥

भवन झरोखन ते झांकहिं तिय ताकहिं राम रूप अनुरागि।
उरछबि आंकहिंदृग द्वारनभारि गुरुजन लाजसाज सबत्यागि॥
कहैं परस्पर इक एकन ते सुंदर रीति प्रीति सरसाय।
कोटि काम छबि इन जीती सखिरूप अनूप कहो नहिं जाय॥
सुर मुनि मानव अहिदानव महँ सुनी न दीखि ऐसि सुघराय।
विष्णु चतुर्भुज चतुराननविधि शिवतन विकट पंचमुख आय॥
अपरदेव असको दुनियाँमहँ इनछबि सरिस कहै ज्यहिगाय।
नैन पाय सुखगे लोभाय सखि कहत न बनै शोभ समुदाय॥

स० वयथोर किशोर महाछबिचोरलसैं तनश्यामल गौर सुढंग।
प्रभापति भोरसि दिव्य अजोरभरे सरबोर उमंग तरंग॥
अनंदित बंदि लखे मनमोर सुनैन चकोरन तोरत संग।
बिलोकत चोरसे छोर तरंग सुअंग पै वारि करोर अनंग॥

को तनुधारी अस प्यारी कहु वारी जो न रूप यह देखि।
मुख निरेखि अवरेखि परम सुख मो दृग रहे चित्र से लेखि॥

उरमुद खोली हँसि बोली पुनि दूसरि सखी लखी छवि राम ।
सुनहुँ सयानी मम बानी बरजो कछु सुन्यों श्रवणसों आम ॥
स० ये बर वेश अशेश प्रभाधर श्री अवधेश नरेश के वारे ।
मारे निशाचर भारे बली इनकौशिक की मखके रखवारे ॥
सांवल गात दिखात जो बंदि सुबाहु मरीचहु के मदहारे ।
हैं धनुशायक धारे सखी कर रामसो कौशला रानि दुलारे ॥
गौर किशोर अथोर छटा तन पोरहि पोर प्रभावर काछे ।
हाथ धरे धनु बान सुठान से जातचले रघुनाथ के पाछे ॥
सो लघुबंधव रामके भामहै लक्ष्मण नाम सुलक्षण आछे ।
हैं सुत सुन्दर रानि सुमित्र के धीरन वीरन में बर बाछे ॥
विप्र काज करि ये बन्धव दुउ मगमहँ मुनि की बधू उधारि ।
आये देखन धनुष यज्ञ इत है यह सत्य बात सुकुमारि ॥
देखि राम छबि पुनि बोली कोउ सुनिये सखी हमारी बात ।
योग्य जानकी के याही बर विधना करै परै असिघात ॥
स० बरसाँवर देखि बिशेखि सखी नरनाह उछाह अरैहियमाह ।
धरै प्रणदूरि बिसूरि भले रहिपूरि सबै जिय चाह अथाह ॥
यहीयक जीवनलाहकि राह अहै अधिकी यहितेबढ़िकाह ।
समेत उमाह भरै जगवाह करै हठि जानकि राम बिवाह ॥
कोउकह इनकहँ पहिंचान्यो नृप मुनिसह सादर लियों टिकाय ।
पै प्रण भूपति परिहरि है ना करिहै सही वही मुर्खाय ॥
स० हमतौ जबते चितये इतये तबते चितअन्त नहीं टरिजाय ।
बितेक्षन नैनन नीर चलै मनपीर न धीरजहू धरिजाय ॥
सखी बरतौसिय योगयही परकाह कही न कही करिजाय ।
मरिजाय निवारणहार दई जरिजाय शरासनहूं सरिजाय ॥
कोउ कह जो भलहै बिधना सखि सबको उचित फलहिदातार ।
तौफिरि संशय मन आनहुँ जनि सीतहि लहै यहै भर्तार ॥
अस सँयोग जो बनि आवै अलितौ कृत कृत्य होहिं सब लोग ।

रोग न रंचक रहि जावै कछु जाय हिराय चित्तको शोग ॥
हमैं आसरा तौ याही इक अइहैं कबहुं नात यह पाय।
सुख सरसैहैं मुख दरशैहैं कैहैं कछु सनेह बरसाय ॥
नाहित हमकहँ बहु दुर्लभ है पाउब दरश परश इन क्यार।
यह संघट तौ तब होवै जब जागै पूर्व पुण्य संस्कार ॥
द्वितिय सयानी सुनि बानी अस बोली महा हृदय हर्षाय।
कह्यो नीक सखि लखि बिवाह यह सब सुखलहैं जन्म फलपाय॥

स० कहाँअसिभागिहमारिभलीजोअलीमिथिलेशललीयइब्याहैं।
चलीन नरेश गली उपदेश भलीकरं फेरिअबै नहिंचाहैं ॥
सलाहिनहूं की टली मतिवंदिअनंद थलीहित कोइनकाहैं।
होनी सही हठिहोनी वही कछुहोनीनहीं अनहोनीकिराहैं ॥

चाप भयंकर शिवशंकर को श्री सुखधाम राम मृदु गात।
अहै सयानी अस मंजस सब सुनि अस कहै औरि सखि बात॥
कोउ कोउ इन कहँ अस भाषैं कहि छोट दिखाव मोट परभाव।
छुइ तन इन की पद पंकज रज गौतम तिया तरी सह चाव ॥
सो किमिरैहैं धनु तोरे बिन छिन महँ चटकि चलै हैं चाप।
चकित चितैहैं रहि जैहैं सब है तन अति प्रताप की दाप ॥
सीयसवांरी रचि बिरंचि ज्यहिं त्यहिं यह रच्यो सुघर बरश्याम।
करौ न संशय कछु या महँ सखि होइहै अवशि नीक परिणाम ॥
तासु सयानी की बानी सुनि हरषानी हिय तिया अपार।
यहि विधि भाषैं बार बार कहि करै अवश्य यही करतार ॥
हिय बहु हरषैं सुमन सुबरषैं सुंदरि सुमुखि सुलोचनि बृंद।
जहँ जहँ जावैं चलि बंधव द्वउ तहँ तहँ होय परम आनंद ॥
पुर पूरब दिशि गे भाई द्वउ जहँ पर बनी चाप मख भूमि।
मानहुं शोभा सब दुनियां की वहि थल रही सही झुकि झूमि ॥
बहु बिस्तारी गच ढारी बर प्यारी प्रभारही छबि छाय।
बिमल सवाँरी रचि वेदी शुचि न्यारी छटा कटा करि जाय ॥

मंच अनूपम मणि कंचन के चहुँ दिशि रचे खचे सुबिशाल।
आय आय कै अति आनँद सह बैठे तहां सकल महिपाल॥
त्यहि के पाछे बहु निकटै महँ दूसर मंच बने चहुँ पास।
सब बिधि सुंदर कछु ऊंचे पुनि बैठें तहां नगर नर खास॥
तिनके लग भग जनु शोभा नग बने ललाम धाम अभिराम।
बैठि यथोचित जहँ देखैं छबि आनँद सहित जनकपुर बाम॥
पुरके बालक सँग लागे जे जागे हृदय प्रेम सुख भाय।
कोमल बानी सों कहि २ तहँ रचना प्रभुहि दिखावहिं जाय॥
यही बहाने ते बालक सब प्रभुको परशि मनोहर गात।
तन तन पुलकैं मन मन कुलकैं देखि बिशेखि शुभ्र द्वउभ्रात॥
जानि प्रेमवश तिन लरिकनको शारंग पानि भक्त सुखखानि।
प्रीति सानि मृदु मंजु बानि सों हँसि हँसि देत निकेतबखानि॥
अपनी अपनी अभिलाषा सम सबशिशु इतउत लेत बोलाय।
देरन लावत चलि जावत तहँ सुख सह युगुल भाय रघुराय॥
श्री रघुराई लघु भाई को फिरि फिरि रचना रहे दिखाय।
कहि समुझावत मृदु बैनन सों सोसुख उमा कहो नहिं जाय॥
ज्यहिकी अज्ञाते माया यह क्षण महँ रचै सकल संसार।
भक्त हेतुहित सोरघुपति प्रभु चितवत चकित धनुषमखसार॥
देखि तमासा बहु खांसा तहँ चले हुलास सहित गुरुपास।
लगी देर बहु यहि कारण ते मनमहँ करत जात गुरु त्रास॥
जाके डरते डरपावै डर कालहु कांपि जात बिकलात।
सो रघुनंदन जगबंदन प्रभु भजन प्रभाव दिखावत भ्रात॥
पुरके बाहर कढ़ि आये तब कहि कै मधुर बैन रघुराय।
नगर बालकन को आदर सहं शिखदै बिदा कीन बरिआय॥
पुनिचलिआये गुरु नायक ढिग भयअरु प्रेम सहित द्वउभाय।
शीश नाय के पग पावन महँ आयसु पाय बैठ सकुचाय॥
थोड़े औसर महँ गिरिजा फिरि शायंकाल पहूंच्यो आय।

पाय सुआयसु मुनि नायक को संध्या सबहिं कीनि हरषाय ॥
सुनत सुनावत कथा वार्ता रजनी बीति गई द्वै याम ।
शयन कीन तब मुनि नायकने चापतचरण लषण अरुराम ॥
जिनके पावन के पावन हित योगी करत योग जप ध्यान ।
प्रेम भक्तिवश ते भैयाद्वउ चापत गुरू चरण सविधान ॥
कह्यो मुनीश्वर बहुत बार जब रघुवर शयन कीन तब जाय ।
चापन लागे पग लक्ष्मण तब सभय सप्रेम महा सुखपाय ॥
पुनि पुनि भाष्यो रघुनंदन प्रभु तुमहूं सोय रहो अब तात ।
सोये लषणहुँतब आनँद सह धरिउर चरण अमलजलजात ॥

इतिश्रीभार्गववंशावतंसश्रीमान्मुंशीनवलकिशोरात्मजस्यश्रीमुंशीप्रयाग
नारायणस्याज्ञाभिगामीउन्नामप्रदेशान्तर्गतमसवासीग्रामनिवासीपण्डित
बंदीदीनदीक्षितनिर्मितश्रीविजयराघवखण्डेबालकाण्डेपंचमोल्लासः ५ ॥

सब सुखदायक गण नायक के पायँ मनाय हृदय हरषाय ।
कथा पियारी फुलवारी की मति सम कहत बन्दि द्विज गाय ॥
बड़े भोरहरे पहु फाटत खन मुर्गा शब्द सुखद सुनि कान ।
उठे सुमित्रा सुत निद्रा तजि हिय भगवान चरण धरिध्यान ॥
पुनि तदनन्तर राम चन्द्र प्रभु आपहु उठे शयन को त्यागि ।
जागे मुनिवर त्यहि पाछे पुनि दुहुन प्रणाम कीन अनुरागि ॥
सकल शौच करि द्वउभाइन पुनि करि असनान ध्यान सविधान।
आय पहूंचे गुरु नायक ढिग सुनिये अग्र चरित हरियान ॥
पाय सुआयसु तब मुनिवरको सुंदर समय जानि अनुमानि ।
गुरु पूजन हित फूल लेन को गमने द्वऊ भाय मुद ठानि ॥
जाय विलोक्यो भूप बाग को जहँ बहु जाति केर द्रुमलाग ।
शोभा सुंदर लखि बसन्त की जागत हृदय माहिं अनुराग ॥
वहि फुलवारी की प्यारी छबि को कवि कहै लहै अस ज्ञान ।
जाकी शोभा लखि लोभा मन परम सुजान राम भगवान ॥
छहर दिवारी दिशि चारिउते अरुफाटिकन की रची बनाय ।

झँझरी काटी बिच बीचन महँ जगमग रतन जाल दरशाय॥
चित्र उरेहे बहु भांतिन के देखत चित्त मोहि रहि जाय।
फाटक सुंदर अष्टधातके अति उत्तंग रहे छवि छाय॥
तिन फटकन पर अति अनुपम वर बारहदरी करी निर्मान।
रचना भीतर की सुनियेअब ज्यहि लखि भूलि जात गुणज्ञान॥
हरी दूर्बा की मानहुँ तहँ सुंदर फर्श दीनि बिछवाय।
बिच बिच क्यारी सुभग सवाँरी तिन की छटा कहै को गाय॥
फलदल भारन वृक्ष हजारन सोहे डार डार रँगदार।
अति बहार बर कहि न पार पर तिन पर नित बसंत असवार॥
चंप चमेली अरु बेलीबर बेली पांति पांति अभिराम।
कहूं केतकी तकी अनूपम बरसत गंधि ठाम प्रति ठाम॥
कहुँ कहुँ बेला अलबेला के वृक्षन स्वच्छ छटा छहरानि।
कहूं नेवारिन मनहारिन की क्यारिन परम शोभ उमड़ानि॥
इक दिशि कुंदन मुचकुंदन की निमनी घनी ठनी वर पांति।
कतहुँ चांदनी के लागे द्रुम लखि चांदनी चंद सरमाति॥
कहँ कहुँ गेंदा गुलमेहँदा अरु कतहूं द्रुम गुलाब गुल वास।
कहुँ गुलखैरा करशैरा अरु कतहूं घनी कामिनी खास॥
वृक्ष हजारन मंदारन के गुलदावदी लदी गुलभार।
कतहूं शोभा गुल अनारकी देखत डार डार छवि दार॥
मालतिमरुआ मौनसिरी अरु मोगरा रह्यो सुमन सों झूमि।
कहूं केवड़ा की झाड़न महँ गंधि मलिन्द वृन्द रहे चूमि॥
गुल दुपहरिया है फूली कहुँ रवि आननी घनी घुमड़ानि।
कहुं गुलटुर्रा गुलसब्बो अरु पाटल पटल बकुल की खानि॥
कहूं नैनियाँ अरु नरगिस के सुंदर वृक्ष रहे छविछाय।
कहूं सेवती अरु गुड़हर कहुँ रह्यो सुगन्ध राज दरशाय॥

स० बाल तमाल रसाल के जाल गसे विकसे छवि छायरहे।
कचनार अनार शिंगारनके द्रुम दिव्य प्रभा दरशायरहे॥

मदमाते मलिन्द अनंदन सों बहु वृंदन सों लपटायरहे।
बर बागमें देखो जितै तितहीं ऋतुराजके साज सोहायरहे॥

मध्य बाग महँ सरसोह्यो शुभ शोभा तासु बरणि नहिंजाय।
घाट मनोहर दिशिचारिउ महँ सीढ़ी मणिन दई बँधवाय॥
निर्मल जलसों परिपूरित शुचि फूले अमित रंग जलजात।
बोलत तटपर जलपच्छी बहु गुंजत मधुप वृंद बहुभ्रात॥
जन मन चंदन रघुनंदन द्वउ बाग तड़ाग देखि हर्षान।
परम मनोहर है अराम यह रामहिं देत जौन आराम॥
चितै चहूं दिशि रघुनायक प्रभु पुनि मालिन ते पूंछि हवाल।
तोरन लागे बरप्रसून दल आगे सुनो हाल खगपाल॥
आई सीता त्यहि औसर तहँ पूजन शिवा पठाई मात।
संग सहेली अलबेली सब गावहिं गीत मनोहर भ्रात॥
सुंदर मंदिर श्रीगिरिजाको रह्यो सोहाय ताल के पास।
उत्तम रचना लखि मोहै मन बरणि न जाय शोभ सुखरास॥
सहित सहेलिन सर मज्जन करि पुनि चलिगईं गौरि के धाम।
नेम प्रेमसह करि पूजन तहँ मांग्योबर सकाम अभिराम॥
सीय संग तजि सखि सुंदरि इक देखन गई रही बरबाग।
जाय निहारे द्वउ भाई त्यहिं जनुद्वैरूप धरे अनुराग॥
प्रेम वश्य ह्वै सो चातुर सखि आई लौटि जानकी पास।
आलिनताकी गति देखी तब लागीं करन परस्पर हास॥
पुलक पसारी तुव देही महँ नैनन बहत प्रेमके आंस।
यहि प्रसन्नता को कारण कह कहु सखिपरै जासु बिसवास॥
सुंदर बानी सुनि आलिनकी बोली चतुर सखी मृदु बैन।
बागदेखिबे हित आये इत सुन्दर उभै कुवँर जनु मैन॥
श्याम गौरतन किमि बरणौं मैं को अस लहै गहै कहिपार।
बाणी सो तौ बिन नैनन की देखे बिना कहै किमिदार॥
नैनन दीख्यो ते बाणी बिन कैसे सकैं सखी बतलाय।

शोभा भारी लखिहारी मति मोसन कछू कहो नहिंजाय॥

स० बारिज नैन अनूपम मैनसे डोलत चाल मयंद से मंद हैं।
बोलत वैन अनंद भरे उर सैन चलावत मैन के फंद हैं॥
बंदि किधौं कोइ सिद्ध प्रसिद्ध कि जादूकरी अथवा दृगबंद हैं।
यंत्र कि मंत्र कि तंत्र नक्षत्र कि तेजतनूनप की रबिचंद हैं॥

सखी सयानी की बानी सुनि सबरी सखी गईं हरषाय।
जगी लालसा बहु सियके हिय देखैं अवशि तौन सुखदाय॥
कहै सहेली अलबेली इक निश्चय राज कुँवर ते आयँ।
कालिह जे आये हैं मुनिके सँग सुनियत सुघर बरणि नहिंजायँ॥
डारि मोहनी जिन निज छबिकी कीन्हें बश्य नगर नरनारि।
जहँ तहँ सबकोउ छबि बर्णत अति देखिय चलौ तौन सुकुमारि॥
सियहि सुहानी भलबानी यह लोचन लखन हेत अकुलान।
चली अगारी करि प्यारी सखि आईं देखि जौन सुखदान॥
प्रीति पाछिली कोउ जानैना उमगत सीयहीय अनुराग।
बचन सवँरिकै श्रीनारदके लागी अपन मनावन भाग॥
चकित बिलोकति फुलवारी महँ चारिउ दिशादृष्टि फैलाय।
हिरण कुमारी छबिवारी जनु जाति सभीत चली अतुराय॥
कंकण किंकिणि अरु नूपुर धुनि सुनि गुनि कहत लषण सों राम।
बिश्व जीतिबेकी मंशाकरि जनु दुंदुभी बजाईं काम॥
अस कहि चितये फिरि तौनी दिशि आवत लखी सीय सुकुमारि।
चषचक चोपे मुख चंदापर लागे लषन निमेषनटारि॥

स० लखि शोभ क्षमासि सिया सुखमा रघुराय महासुखपायरहे।
बिसराय सुदेह दशा कबि बन्दि सनेह के भाय बिकायरहे॥
अति रूपको सिन्धु थहायरहे मुखचंद पै चक्षु लोभायरहे।
टकलाय निमेष बिहायरहे चकवासे द्वऊ चकवायरहे॥

उत्तम शोभा लखि सीताकी अति सुख लह्यो राम सुखधाम।
हृदय सराहत सुन्दरता शुचि मुखते कहत बनत नहिं आम॥

अपनि चतुरता जनु ब्रह्मैं सब रचि जग प्रकट दीनि दिखराय।
करै सुघरता कहँ सुन्दर यह छबिघर दीप शिखाजनु आय॥
कबियन जूंठी करिडारी सब उपमा अहैं जौन जगमाहिं।
सियकी समता क्यहि दीजे अब खोजे तिहूं लोक महँ नाहिं॥
बरणि जानकी की शोभा प्रभु आपनि दशा देखि सबिचार।
बोले शुचि मन लघु बंधव सन सुंदर बचन समय अनुसार॥
याही कन्या जनक राज की ज्यहि हित होत धनुष मख तात।
सखी सयानी लै आई इत पूजन गौरि पठाई मात॥
करति उजेरिया सी चारिउ दिशि देखत फिरत मनोहर बाग।
जासु अलौकिक लखिशोभा शुचि मममन प्रकटहोत अनुराग॥
जानै बिधना सो कारण सब फरकैं सुभग अंग सुनु भ्रात।
सहज्यो निरखत परतिरिया तन सबदिन मनहमार सकुचात॥
रीति अनोखी रघुबंशिन की कबहुंन धरैं कुमारग पाउं।
कारज करिबो वह चाहत नहिं जा महँ जगत होय बदनाउं॥
समर भूमि महँ जिन भूलिहुकै रिपुको नहीं दिखाई पीठि।
नाहीं दीन्ह्यों नहिं याचक कहँ लखी न त्रिया पराई दीठि॥
ऐसे उत्तम नर दुनियां महँ मिलि हैं बहुत नाहिं हेभाय।
कुत्सित कारज के कीन्हें ते जग अपवाद जात है छाय॥
करत बतकही इमि भाई सन मन सिय रूप ओर ललचान।
छवि पराग रस मुख अंबुज को हर्षित करत मधुप इवपान॥
लता ओटगे चलि भाई द्वउ सन्मुख जब न परे दिखराय।
चितवतचहुँदिशि सियचकित तब कहँगे नृपकुमार सुखदाय॥

स० तैगे चकोर से नैनन को मृदुबैन न बोलि चलाव सो कैगे।
कैगे कहा चितचेटक सो हितसे हरि हेरि हियो हरिलैगे॥
लैगे कहांवह साँवलि मूरति बांदि अधीरता दै सुहितै गे।
हितैगे चितैगे इतैगे उतैगे सुकौशलराज कुमाराकितै गे॥
हितैगे सुश्यामल गोर स्वरूप चितैगे सुनैनन सोंचहुँओर।

सुधारस सींचि अधीरतादैं मनभावनि मूरति मोमनचोर॥
बतावहुरी सखि ढूंढि तिन्हैं पिककोकिल पूंछहुरी करिशोर।
हितैगे चितैगे इतैगे उतैगे कितैगे सुकौशलराज किशोर॥

देखि जानकी को ब्याकुलतब सखियन तुरत दीन दिखराय।
लता ओट महँ वेठाढ़े हैं दोऊ राज कुँवर सुखदाय॥
रूप अनूपमलखि तत्क्षन तब लोचन भलि प्रकार लल चान।
अति आनंदितभे हिरदयमहँ जनु निज द्रव्य लीनिपहिंचान॥
नैन थकित भे लखि राघव छबि पलकन दई निमेषै टारि।
को गति भाषै जगदम्बा की तन मन दीन राम पर वारि॥

स० भूरि सनेह भस्यो सिय के हिय गेहरु देह दशा भइभोरी।
बैन कढ़ै न कछू मुखते द्वउ नैनलगी हरि रूप कि डोरी॥
बंदि अनंद कहै वह क्योंकर है मति की गति तो अतिथोरी।
शारद चंद सुआनन पै चितवै जनु चक्रित चित्त चकोरी॥

आनि नैन मग उर रामहिं पुनि पलक किवांर लीन तबमारि।
लखी प्रेमबश सिय आलिन जब तबउर सकुचिरहीं चुपधारि॥
लता भवन ते कढ़ि आये तब तत्क्षण राम लषण द्वउभाय।
निकसे पूरण शशि मानहुँ द्वै सुंदर मेघ पटल बिलगाय॥
धीर बीर बर अति सुंदर द्वउ शोभा सींवँ स्वच्छ शुचि धाम।
नीले पीले बर वारिज सम गात दिखात परम अभिराम॥
सोहत नीके काकपक्ष शिर बिच विच कुसुम कलिनके जाल।
बुंद पसीना के मोती सम रंजित तिलक रेख भल भाल॥
कानन कुंडल छबि छाये बर हालत चूमि चूमि मृदु गाल।
धनु इव भौंहैं तिरछौंहैं द्वउ घूंघर वारे बाल बिशाल॥
चष रतनारे नव अंबुज सम सुंदर चिबुक नासिका गाल।
हास बिलासहि को बरणै कहि मन लै लेत मोल बिनमाल॥
मुख छबि मोसन कहि जावैना ज्यहि लखि लजैं अनेकनकाम।
उरमणि मालाहै आला अति गरदर सरिस महा अभिराम॥

मत्ति शुण्डसम भुज दण्डै द्वउ बल अति अप्रमान दरशात।
दोने फूलन के बायें कर धनुशर धरे दाहिने हाथ॥
कुवँर सावँरो सुठि सुंदर सखि शोभा जासु बरणि नहिं जाय।
अंग अंग पर तन वारन करि हृदय अनंग धिकारै खाय॥
केहरि कीसी कटि दरशै भलि बांधे पीत वस्त्र के फेंट।
शील सुघरता अरु शुचिता जनु हठि २ करत गात की भेंट॥
रघुकुल भूषणकी शोभा लखि सखियन भूलि गयो घर जाब।
रूप अनूपम अनुरागीं सब पागीं हृदय माहिं बेताब॥
सखी सयानी इक धीरज धरि सियसन कहन लागि गहिहाथ।
ध्यान मेरुजा कर कीन्ह्यों फिरि देखहु नैन खोलि रघुनाथ॥
सकुचि जानकी चष खोले तब सन्मुख लखे राम द्वउ भाय।
नखशिख शोभालखि राघवकी पितु प्रण सुमिरि गई सकुचाय॥
सखियन परबश सिय जानी जब तबअस हृदय लगींपछिताय।
औसर बीत्यो बहु आये इत जानि बिलंब रिसैहै माय॥
निजनिज मंदिरकहँ गमनौ अबआउब यहीसमय फिरिकाल्हि।
हँसी एक सखि अस कहिकै तब सब के हृदय गई भय घालि॥
गूढ़गिरा सुनि सकुचानी सिय भयो बिलंब मातु भयमानि।
आनिराम छबि उर धीरज धरि पुनि निज प्रणै बाप बश जानि॥
मृग अरु पक्षिन के देखन मिस फिरि २ तकै पछारी सीय।
देखि देखिकै श्रीरघुबर छबि बाढ़त जात प्रीति बहुहीय॥
कठिन जानिकै शिवशंकर धनु शोचत चली राखि उर राम।
जात जानकी प्रभु जानी जब शोभा सुख सनेह गुणधाम॥
परम प्रेमकी मृदुस्याही करि भीतर चित्रलीन लिखिचारु।
राम जानकी को आनँद वह को करि सकै बंदि बिस्तारु॥
गई भवानी के भवनहिं पुनि अंबुज पगन माहिं धरिमाथ।
अपनि कामना परिपूरण हित बोली सिया जोरि द्वउहाथ॥
हे गिरिजातातुव जय जय जय ज्ञाता तीनि काल को हाल।

गजमुख षटमुखकी माता जय सब सुखकरनि हरनि जंजाल ॥
जय जगदम्बे तन दामिनि द्युति शिव मुख चंद चकोरी रूप ।
जन मन मंशा की पूरण कर दुर्गे देवि दया की कूप ॥
आदि मध्य अरु अंत तुम्हारो जानिबे योग्य क्यहू बिधि नाहिं ।
वेद भेद कछु लखि पावत नहिं अमित प्रभाव प्रगट जगमाहिं ॥
संभवपालन लयकारिणि जग सबदिन स्वबश बिहारिणिमाय ।
मोरि कामना परिपूरण करु बिनवत बार बार तुव पाय ॥
जहँ लग गणना सती तियनकी तिन महँ आदि तुम्हारीरेख ।
महिमा अकथित जगदम्बा की कहिना सकैं शारदा शेख ॥
तुम्हरी सेवा के कीन्हे ते जग महँ सुलभ होत फल चारि ।
शिव मन भाइनि बरदाइनि बर तन मन वारि करतबलिहारि ॥
तुव पद पंकज की पूजा करि सुर नर मुनि अनंद सब होत ।
यहि भवसागर के तरिबे कहँ भाषत तिन्हैं बेद कहि पोत ॥
मोर मनोरथ तुम नीकी बिधि जानहुँ सदा सर्ब उरबास ।
याते जाहिर मैं भाषत नहिं जाननहार एक तुमखास ॥
अस कहि सीता पदपंकज गहि भईं बिनीत प्रेम बशभाय ।
नारद बचननकी मालाहिय खसी सो धीर धरो नहिंजाय ॥
दशा देखिकै यह सीताकी मूरति हँसी भवानी केरि ।
सादर बोली तब सीतासों लेहु प्रसाद मोर यह फेरि ॥
सांची आशिष सुनु मेरी यह तेरी पूरिहोय मन आश ।
सत्य सदा शुचि वच नारदके सो जनि तजो भूलि बिसवास ॥
जो मन भायो बर मिलिहै सो सुन्दर श्याम रूप अभिराम ।
प्रीतिसो करुणानिधि जानत तुव साबिधि सुजान शीलगुणधाम ॥
यहिबिधि गिरिजाकी आशिष सुनि सखियन सहितसिया हर्षानि
पूजि भवानी के पुनि पुनि पग मंदिर चली मोद उर मानि ॥
जानि दाहिनी श्री दुर्गाको सिय हिय हर्ष कहो नहिंजाय ।
सुन्दर मंगल के सूचक सो फरकन लगे बाम अँगभाय ॥

सिय सुघराई को सरहत हिय दोऊ भाय महा हर्षाय।
आये चलिकै गुरु अन्तिक महँ छाई अंग अंग पुलकाय॥
दशा देखिसो रघुनायक की मन मुसकाय महा मुनिराय।
कोमल बैनन सों बोले इमि सहज सुभाय नेह सरसाय॥

स० प्रेम उमंगत रंगत अंगन ढंगनये अनुकूलत से।
तनसों मन नैनन वैननसों लखि चिह्न परै कछु भूलतसे॥
द्विज बंदि अमंददिपै मुखचंद अनंद के झूलपै झूलतसे।
रघुनंद दशा दरशै असक्यों कर फूल लिये उर फूलतसे॥

गुरु मुख बानी सुनि राघव प्रभु सहज सुभाय हृदय हर्षाय।
हाथ जोरिकै इमि भाषत भे सुनिये बचन महा मुनि राय॥

स० फूलन काज गयो उत आज जहां निमिराजन की अमराई।
बंदि सहेलिन संगलिये चलिआई तहां मिथिलेश किजाई॥
दीठि दिखाई परी जबते तबते तनमें पुलकाई सी छाई।
भाई छली मनमें कुलकाई लगाई कहा यह मो कुल काई॥

निश्छल बानी धनुपानी की सुनि मुनि हृदय गई मुद छाय।
होहिं मनोरथ परिपूरण तुव सुनि अस खुशी भये द्वउ भाय॥
सुमन पाय मुनि पुनि पूजाकरि कीन्हे भोजनादि सविधान।
कथा वार्ता की चर्चा ठनि अस्ताचलै पठाये भान॥
संध्या करिबे हित गमने तब दोऊ भाय राम रघुराय।
उग्यो चंद्रमातब पूरब दिशि सिय मुख सरिस देखि सुखपाय॥
लगे बिचारन पुनि मनमहँ प्रभु सीता बदन सरिस शशिनाहिं।
बात बुराई की लागत बहु समता याहि देत वहि माहिं॥

स० जन्म समुद्र ते क्षुद्रमहा गल रुद्रधरे ज्यहि सो यहिभाई।
बंदि अनाहक पंकज दाहक राहु ग्रसै निज संधि लगाई॥
क्षीन मलीन रहै दिनमें बिरहीन दुखीन बड़ो दुखदाई।
रंक मयंक सदासकलंक सिया मुखकी समता किमि पाई॥

चंद बहाने सिय आनन की शोभा सराहि राम सहुलास।

गई राति बहु अस जान्यो जब तब उठि चले गुरू के पास ॥
आय सन्निकट दुउभाइन तब गुरु पाँयन महँ कीन प्रणाम ।
पाय सुआयसु पुनि मुनिवर को सुख सह कीन जाय विश्राम ॥
फेरि सबेरे प्रभु जागे तब भाइहि देखि कहन अस लाग ।
बंधु विलोकहु अरुणोदयभो पंकज कोक लोक दुख भाग ॥
बोले लक्ष्मण हाथ जोरि तब सूचक प्रभु प्रभाव मृदु बानि ।
बात बिचारी अनुगामी इक स्वामी सुनिय तौन मन आनि ॥
कुमुद सकोचे अरुणोदयते औ नक्षत्र भये द्युति छीन ।
यथा आगमन सुनि स्वामीको सबरे नृपति भये बल हीन ॥
तुल्य सितारन के राजा सब करैं उज्यार यदपि कर्तार ।
तद्यपि भारी अंधकार धनु टारि न सकैं तकैं यकतार ॥
अम्बुज चकवा भ्रमरादिकलै नाना जीव राति गत जानि ।
महा अनंदित भे हिरदय महँ दिनकर उदय काल अनुमानि ॥
भक्त तुम्हारे सब ऐस्यहि प्रभु टूटे धनुष जाहिं हर्षाय ।
विनय हमारी इक औरिउ यह सोऊ सुनौ स्वामि रघुराय ॥
बिना परिश्रम सूर्योदयते ह्वैगो अंधकार को नाश ।
अनायास गे छिपितारागण जग महँ भयो तेज परकाश ॥
उदय बहाने निज सूरज यह राउरं बल प्रताप रघुराय ।
सबरे राजन को लाजन हित मानहुँ प्रकट रहे दिखराय ॥

स० राउरके भुज विक्रम की महिमा सहिमा उदयाचल घाटी ।
तातै सदा प्रगटै कवि बन्दि अमन्द प्रताप दिवाकर बाटी ॥
नाशकरै अनयासहि सो शिवचाप तमैं क्षन मैं द्युतिडाटी ।
लाजत राज समाज सबै उडु एही सनातन की परिपाटी ॥

बंधु बचन सुनि मुसुकाने प्रभु ह्वै शुचि फेरिकीन असनान ।
नित्य क्रिया करि गुरुनायक ढिग आये माथ नवाये आन ॥
पाय सुआयसु मुनि समाज विचबैठे उभय भाय रघुराज ।
इतै हकीकति अस बीततिभै उतकी कथा सुनौ खगराज ॥

जानि सुअवसर मिथिलापतिने पठये शतानंद बुलवाय।
भाषि यथोचित समाचारसब कौशिक मुनिपहँ दियो पठाय॥
रहैं गाधिसुत ज्यहि अस्थल महँ आये शतानंद तहँ धाय।
मिले परस्पर मुनि नायक द्वउ बैठे एक पास हरषाय॥
वहि औसर पर मुनि कौशिक ने दोऊ भाय लीन बुलवाय।
शतानंद के पद बंदन करि गुरु ढिग बैठ अनंदित जाय॥
कह्यो गाधिसुत तब राघव सन जनक सँदेश वेश समुझाय।
चलौ बिलोकौ वर कौतुक सुत पठवा जनक राज बोलवाय॥
सीय स्वयंबर चलि देखिय अब क्यहिधौं देहिं बड़ाई नाथ।
कह्यो लक्ष्मण यश पैहै स्वइ जाके माथ रावरो हाथ॥
सुनि अस बानी मुनि ज्ञानी सब गे बहु हृदय मध्य हर्षाय।
आशिष दीन्हीं द्वउ भाइन कहँ होहि तुम्हारि पूरि मंशाय॥
मुनि समाज सह पुनि राघव प्रभु गुरु आदेश वेश को पाय।
चले बिलोकन धनुष यज्ञ छबि बटुरे जहां अमित नरराय॥
रंगभूमि महँ चलि आयेहैं दोऊ भाय राम रघुराय।
सुधि अस पाई पुरबासिन ने धाये धाम काम बिसराय॥
वृद्ध जुवाने अरु बालक लै यावत नगर मध्य नर नारि।
दौरे बौरे से औसर त्यहि राज समाज लाज उर डारि॥
आय पहूँचे मख मण्डल महँ देखन नैन रामछबि धाम।
जन्म धरे को फल पावत अरु गावत हंस बंश यश आम॥
जनक बिलोक्यो मखशाला महँ भारी भीर गई जुरिआय।
तुरत बोलायो तब टहलुन को सबरो हाल कह्यो समुझाय॥
जाय जायके सब लोगन ढिग आसन देहु यथोचित जाय।
सुनि अस आज्ञा महराजा की सेवक रंगभूमि गे धाय॥
कोमल बाणी सों बिनती करि दिये बिठाय सर्ब नर नारि।
उत्तम मध्यम नीच और लघु निजनिजथल निहारि अनुहारि॥
तेही औसर पर आये द्वउ राजकुमार मार मनहार।

मानहुँ छबि अरु सुंदरता के परम शिंगार रूप सुकुमार॥
परम उजागर गुण सागर बर नागर नीति रीति सुखधाम।
महाधीर गंभीर बीर तन सुंदर श्याम गौर अभिराम॥
नृप समाज महँ अस राजत जस तारन बीच पर शशिदोय।
लहै अशेखै सुख देखै ज्वइ देय न नैन निमेखै कोय॥

नृपन दीख रणधीर बीररस जनु तनधारी।
बंकन लखे अशंक बंक प्रभु मूरति भारी॥
छली भुवालन काल सरिस बिकराल निहारा।
नगर निवासिन तिन्हैं लख्यो नर अभरन प्यारा॥
तिय तकैं थकैं जिय हियहरषि निजनिज रुचि अनुसारते।
जनु सोहत हैं शृंगार धरि मूरति परम उदारते॥
ज्ञानिन दीख विराट ठाट जामहँ सब जग को।
जनक जाति अस लखैं यथा प्रिय सज्जन सग को॥
रानि सुनैना सहित जनक नृप शिशु सम देखैं।
टारि निमेखैं नैन चैन लहि हृदय अशेखैं॥
वर परम तत्त्व योगिन लखे हरिभक्तन निज इष्ट सम।
ज्यहि भाव लखै सिय हिय प्रभुहि सो सनेह सुख अति अगम॥

जाके उर पुरमहँ दरशै वह सोऊ कहि न सकै कछु हाल।
कहै कौनबिधिकविकोऊत्यहि मतिगतिजहँनजातिक्यहुकाल॥
यहि बिधि जाको रह्यो भाव जस त्यहिंतस लखे रामरघुराव।
ब्रह्म सच्चिदानंद एकरस स्वबस प्रताप दाप दरियाव॥
राज समाज मध्य राजत सो कौशलपाल लाल बयबाल।
श्याम गौर अभिराम अरामद लक्ष्मण राम नाम खल काल॥
सहजै सुंदर बर मूरति द्वउ शोभा प्रभा रूप गुणधाम।
उपमा खोजे ते पावत नहिं कोटिन काम लगत बेकाम॥

स० शारद चंदहु मंद दिखात दिये मुखचंद अनंदक हीके।
वारिज खारिज नैन लखे शुचि बैन सुहावन भावन जीके॥

चारु निहारनि हारनि मार सवाँरनि भक्त मनोरथ नीके।
कुण्डल लोल कपोलन पै बिनमोल बिके मन बन्दिसभीके॥
शोभा खाढ़ीसी दाढ़ी बर सुंदर अधर मनोहर नाक।
धनु इव भौंहैं तिरछौहैं द्वउ काल बिहाल होत लखि बांक॥
स० आसबिलासहुलासविभासक भासकविश्वसकासप्रकासको।
पूषण चंद मयूषन हासक त्रास बिनासक अंतक फांसको॥
शोभसमाससमा अवकासहि व्यासक दासहृदै बिसवासको।
बंदि विकासक आनँदरास सुहासअनूपम लच्छिमानिवासको॥
तिलक बिशाल भाल भूषित वर सकुचैं बालदेखि अलिजाल।
सोहैं टोपी चौगोशिया शिर बिचबिच कुसुम कलिन के माल॥
रेख मनोहर दर तद्वत गर देखि कपोत गोत सरमायँ।
मानहुँ त्रिभुवन सुन्दरताकी सीवँ अशेख रेख त्रय आयँ॥
बांधे कण्ठा गजमुक्तन के उर महँ लसी तुलसिकी माल।
ऊंचे कंधा जस बर्धनके केहरि ठवनि बाहुबल आल॥
सुन्दर शर घर कसे कमर महँ ऊपर लसे पीतपट फेंट।
धरे शरासन शर खरभरकर मानहुँ करत करन की भेंट॥
बायें कंधा महँ सोहत शुचि मख उपवीत पीत हरियान।
नखते शिखलौं छबिछाई सुठि गाई जो न जात मतिमान॥
महासुखी भे जन देखत सब यकटक नैन निमेषन टारि।
जनकौ हरषे लखि भाई द्वउ पाई मनहुँ मोदकी पारि॥
आय सन्निकट मुनि पायँन महँ माथ नवाय हाल बतलाय।
आछी बिधिसों साथलायकै दीन्हीं रंगभूमि दिखराय॥
जहँ जहँ जावहिं राजकुवँर द्वउ तहँ तहँ चकित देखि सबकोय।
होहिं थकित चित यथा अपरिमित संपति पाय रंक खुशहोय॥
अपनी अपनी रुचि माफिक सब निरखैं राम शोभ सुखधाम।
भेद न जानै कोउ काहूबिधि बरणौं दशा कौनबिधि बाम॥
किह्यो बड़ाई मुनि राजाकी रचना भली करी भूपाल।

सुनि सो राजा सुख पायो बहु जात न तौन बतायो हाल ॥
सब मंचन ते नीक मंच इक कंचन रचित खचित नगजाल ।
मुनिनायक सह दोउभाइन कहँ तहँ बैठारि दीन महिपाल ॥
प्रभुहि देखिकै सब राजा गण हियते हारि गये हरियान ।
मानहुँ तारन बिच उदितभे द्वै द्विजराज साज सुखदान ॥
भै प्रतीति अस तिनराजन मन तुरिहैं राम चाप शक नाहिं ।
शिव धनु तोर्‌यो बिन सीतासो डरिहै माल राम गलमाहिं ॥

स० परिहै न मृषा यह बात हमारि बिचारि कही सोसही परिहै ।
टरिहै उतपात कि घात तुम्हारि बिधात गती न रती टरिहै ॥
धरिहै स्वइ ज्ञान सयानप को जोभलीकरि धामगली धरिहै ।
बरिहै मदभार महीप मही सिय राजकुमार यही बरिहै ॥

सुनि असबानी नृप ज्ञानीकी मानी अंध मंद महिपाल ।
हँसे मसखरी करि आपुस महँ लागे कहन हृदय को हाल ॥

स० जानत हाल हवाल कछू नहिं गाल बजावत उल्लूक पट्ठा ।
ताकत ना कत ये बिकराल बिशाल भुजा जस शालक लट्ठा ॥
जानि परी घरी आनि परी जब चाप चढ़ावनहूं महँ भट्ठा ।
पै रनथाहब ओज उमाहब सीय बिवाहब ना हँसी ठट्ठा ॥

एक दायँ तौ सिय खातिर हठि कालहु संग समर हम ल्याब ।
मारि सिरोहिन चहला करिबे जियत न पाउँ पछारू द्याब ॥
मानी राजन की बानी सुनि ज्ञानी रामभक्त भूपाल ।
शुचिमत खोलत अस बोलत भे ये खल परे काल के गाल ॥

सीय बाम ओजधाम लोचनाभिराम राम ब्याहिहैं उछाहिहैं अराम बांदि ठाम ठाम । बारिजात दामसे ललाम श्याम गात ये दिखात धोखखात तौन बातते गुलाम बाम ॥ ध्यावते तमाम याम जासुनाम जे निकाम पावते बिराम आवते न फेरि खाम धाम । साम दाम के कलाम कै कछु सरै न काम रेहराम चाम क्यों न देत चाम में लगाम ॥

सब बिधि समरथ सुत दशरथ के बिक्रम अकथ गाय नहिंजाय

धनुशर धरिकै सन्मुख लरिकै इनते सकै कौन जयपाय ॥

स० गाल बजाय बजाय बृथा उपजाय रिसै बिरसै करिहौ क्यों।
धारि अकारन रारि कला बलभार कुमारनते अरिहौ क्यों॥
आश बतास बवंडर के खरसे शर भारनमें जरिहौ क्यों।
कालकिफांसमें फाँसिगला बिनकाज भला लरिहौ मरिहौक्यों॥

दुष्ट भूमिपति पुनि बोल्यो इमि तुम्हैं न सूझ बूझ जियमाहिं।
बात बनावत उपजावत रिस गावत वृथा चुपावत नाहिं॥

स० भीति भरो शठ चीततना कछु नीति तकै न बकै अनरीति है।
रीति पुनीति सुनै न गुनै अनजान धुनै बड़ज्ञानकि गीतिहै॥
हानिकि आनिरही कहबंदि अनंदतौ आखिर में फिरिबीतिहै।
ये सुकुमार कुमारन ते लरि हारेहु जीति पछारेहु जीति है॥

सुनि अस बानी अभिमानिन की ज्ञानी भूप चूप उर आनि।
लगे बिलोकन रघुनायक तन रूप अनूप शोभ सुख खानि॥
चढ़े बिमानन नभ देखहिं सुर बरषैं फूल फूल उपजाय।
अमर सुंदरी सुर बिधान ते गावैं गान तान मृदु छाय॥
पाय सुऔसर जनकराय ने पठवा तुरत सियहि बुलवाय।
अली सयानी छबिखानी सो चलीं लिवाय सहोदर भाय॥
कही जाय नहिं सिय शोभा कछु जगदम्बिका रूप गुणखानि।
जाके अंशन ते उतपाति हैं अगणित उमा रमा ब्रह्मानि॥
छोटी लागैं सब उपमा म्वहिं प्राकृत नारि रही मन वारि।
अङ्ग अङ्ग पर अनुरागी ह्वै लागी लखन निमेषन टारि॥
तोकी उपमा दै सीताकी कुकवि कहाय अयश को लेय।
कहँ अस सुन्दरती जगती महँ समता जासु सियाकी देय॥
बानी वर्वर भवरानी सोउ आधे तनकी परैं लखाय।
बिना देहको पतियाते अति दुःखित रतिउ गई बिलगाय॥
जग दुखदाई अन्याई सुठि भाई जासु मद्य विष आहिं।
तौनी लक्ष्मी महँ सीताकी समता देब यथोचित नाहिं॥

होय जो चीरधि छबि अमृतको कच्छप परम सुघरता क्यार ।
रसरी शोभाकी लागै अरु मंदर बनै स्वच्छ शृंगार ॥
मथै आपने कर पङ्कज ते तब त्यहि युक्ति सहित जो काम ।
इहि विधि उपजै यदि कमला जो अमला शुभ्र सुघरता धाम ॥
मनमहँ सकुचत फिरि ताहूपर कवि त्यहि कहैं सियासमगाय ।
याते निरुपम कहि गावत हौं सो सुखदाय जक्ककी माय ॥
अली सयानी चलीं सङ्गलै अङ्गन अति उमङ्ग सरसाय ।
गीत मनोहर धुनिगावत सुनि मुनिमनमोहि मोहि रहिजाय ॥

स० स्वच्छ शरीर में सारी लसै जरतारी किनारी कि न्यारी छटारी ।
बंदि अदूषण भूषण जाल कि प्यारी प्रभा अँग अंगपसारी ॥
सो सुकुमारी कुमारी सिया चलि रंगमही जबहीं पगधारी ।
वारीभये नर नारी सबै छबि भारी निहारी महासुखकारी ॥

बजे नगारे नभ देवन के हरषे बर प्रसून बरसाय ।
बरा अप्सरा नाचन लागीं सहित कलान गान को गाय ॥

स० यसी कर कंजन में जयमाल लसी जयमाल सिवाल विशाल ।
ग्रसीवर बालनके अल बाल शशीकर चारु मनौ द्युतिजाल ॥
धसी अथवा चपला छबि ताल रसी जनु बंदि अनंद कि आल ।
बसी दृग दृष्टि जहीं ततकाल नसी महिपालन की मतिचाल ॥

सीय चकित चित ह्वै चितई तब रामहिं चह्यो लह्यो सुखहीय ।
अकथनीय सो सब प्रकार ते सकुचत कहत कबिन को जीय ॥
जन सुखदाई रघुराई प्रभु बैठे मुनि समीप द्वउ भाय ।
धाय जाय मन अलिपायँनढिग लग्यो पराग पियनहरषाय ॥

क० जाय रंगभूमि में बिदेह जाय दीख जाय राम रघुरायपै मलिन्द मन धायगो । बालनपै भाय भ्रमराय नैन प्यालन पै काननते आनन उड़ाय मड़रायगो ॥ ग्रीवँ को मँझायकै असीवँ मोद पाय बंदि हीवपै लगाय जीव बाहुन पै छायगो । फेरिह्वै चलायमान कटिते रपटि आ-य जंघन जगाय पायँ कंजन लोभाय गो ॥

लाज गुरुजननकी समाज बड़ि देखि विशेखि सीय सकुचानि।
लगी विलोकन तब सखियन तन राम अनूप रूप उरआनि॥
राम रूप अरु सिय शोभा लखि सब नर नारि निमेषन टारि।
कहत सकोचैं मनशोचैं अरु विधि सन विनै करैं तन वारि॥
स० हे विधि शेश सुरेश गनेश रमेश महेश हरौ दुखभारैं।
सोई करौ ज्यहि युक्ति बनै सुप्रनै तजि भूपमनै यहधारैं॥
बंदि अनंदित जाते सबै सबभांति फबै जनवारने वारैं।
भावँरि पारैं सिया रघुनाथ सनाथ ह्वै नीके कै नैननिहारैं॥
भला मनावै यशगावै जग भावै सबहि हिये यह बात।
योग जानकी के सावँरबर बिधना करै परै असघात॥
जानि सुऔसर जनकराय तब बंदीजनन लीन बुलवाय।
पाय सुआयसु चलि आये ते लागे कहन बिरद बर गाय॥
तिन्हैं बुझायो नृप नीकी बिधि आतुर रंगभूमि महँ जाय।
सबहि सुनावहु कहिगावहु तहँ पैज हमारि यथाबिधि भाय॥
लै अस अज्ञा नृप बिदेहकी पहुँचे भाट ठाटसह जाय।
लगे सुनावन प्रण राजनको सुंदर सुमति बिमति द्वउभाय॥
बिनय हमारी को. मानहु मन सकल सयान भूप बलवान।
प्रन बिदेहको कहि भाषंत हम सुनिये सावधान धरि ध्यान॥
नृप भुजानको बल जानहुँ शशि ग्रासक तासु शंभुधनु राहु।
महाघोर मद मोर जोरहर गरू कठोर बिदित सबकाहु॥
स० जौन पिनाकि पिनाकहि ताकि दशानन बान महाभट भारे।
दाप प्रतापदै आपहि आप गये चुपचाप अवास सिधारे॥
सो मदनाशन शंभु शरासन तोरहि जो यहि बीच अखारे।
बंदि अनंद भरे न डरै हठि सीयबरै सो बिनाहिं विचारे॥
जनकराजको प्रण सुनिकै अस मनमहँ सकल भूप अभिलाषि।
अति अज्ञानी अभिमानी भट झटपट उठे हृदयमहँ माषि॥
कमर लपेटा दृढ़ फेंटा कसि इष्ट मनाय पाय शिरनाय।

चले धाय अकुलायधनुषदिशि दशा सोकहि न जाय खगराय॥
तमतमाय उपजाय हृदय रिस ओंठ चबाय बाहु लपटाय।
धरैं धाय धनु बल बढ़ाय बहु उठै न तबहिं चलैं शरमाय॥
पाय बाहुबल बड़ बीरनको जनु धनु अधिक अधिक गरुआय।
एक एक करि धरि हारे सब तब अस युक्ति कीनि खगराय॥
दश हजार नृप एकबार महँ लागे ताहि उठावन भाय।
टरै न टारे पचिहारे सब रहे लजाय माथ महिनाय॥
शंभु शरासन कस डोलै नहिं गये उठाय हारि नरराय।
कामी पुरुषन के बैनन ते जस नहिं डिगै सती मनभाय॥
भये हँसौआ के लायक नृप जैसे बिनु बिराग संन्यास।
बिजय बीरता बल कीरति सब धनुकर चले हारि अनयास॥
भये प्रभा बिन पुहुमिपाल सब निजनिज ठावँ बैठ शिरनाय।
देखि भुवालन तन आकुल तब बोले जनक तनक रिसिआय॥
पैज हमारी सुनि नीकी बिधि देश अनेक केर भूपाल।
ओज बढ़ाये चलि आये इत इकते एक बीर बिकराल॥
मनुज देह धरि देव दनुज सब चारण सिद्ध नाग गंधर्व।
वेष बनाये रण धीरन कर आये इतै जनाये गर्व॥
सुघर कुमारी अरु भारीजय कीरति अतिव उज्यारी यार।
पावनवाला जन ब्रह्मै जनु रच्यो न धनुष बिदारन हार॥
लाभ न भायो यह काहेते काहु न धनुष चढ़ायो हाय।
तोरब मोरब दरकिनार त्यहि तिलभरि भूमि न सके छुड़ाय॥
अब अभिमानी कोउ माखै जनि जानी बिना बीरकी भूमि।
कीनि अयानी सो आनी शिर ठानी पैज सयानी हूमि॥

स० देव अदेव नृदेवसबै जिनकी बलनेव न आजलौ जानी।
कीरति थाप प्रताप कि दाप सुचाप सहूं तिनहूं कि हिरानी॥
जो हठ ठानी अयानी करी अबतौ न कोऊ चटकै भटमानी।
बंदि यही अनुमानी सही बिनबीर मही सबही पहिंचानी॥

अपने अपने घर जावहु सब होहु निराश आनि बिसवास।
शम्भु शरासनको नाशनअरुलिख्यो न सियविवाहविधिखास॥
सुकृत जाय जो प्रण छांड़ों अब बरुकु कुवाँरि रहै सुकुमारि।
प्रथमैं हालति यह जानित तौ ठानित अस न प्रतिज्ञापारि॥
मिथिलापति की सुनि बानी यह सबके हृदय समानी ताप।
देखि जानकी छिशि शोचत मन मोचत नैन पुटनते आप॥
जनकराज की सो बानी सुनि लक्ष्मण हृदय गई रिस पूरि।
धनु सम भौंहैं तिरछौंहैं चढ़ि नैनन छई अरुणाई भूरि॥
कहि न सके कछु श्रीरघुबर डर लागे जनक बचन जनु बान।
माथ नाय कै प्रभु पायँन महँ बोले गिरा बीररस सान॥
सुयश प्रशंसी रघुबंशी कोउ होय बिराजमान ज्यहि ठायँ।
त्यहिसमाजमहँ असअनुचितकोउ कहिनासकै जनककीनायँ॥
प्रभु भगवानहिं बिद्यमान लखि तापरकही जनक अस बात।
सत्य सुभावहि ते भाषत मैं सुनिये भानुबंश अवदात॥
राउर अज्ञा जो पाऊं मैं तौ अस खेल दिखाऊं नाथ।
गेंद कि नाईं ब्रह्मअण्ड यह धाय उठाय एकही हाथ॥
काचे घट सम गहि फोरौं त्यहि मूरी सरिस मिरोरौं मेरु।
तब तुव दाया से जीरण धनु तोरन माहिं लगतका देरु॥
होय आज्ञा अस विचारि प्रभु कौतुक करौं निहारिय सोय।
चटकि चढ़ावौं धनु मृणालसम धावौं जगत अंतलगि टोय॥
छत्रक डण्ठा सम तोरौं त्यहि रावर बल प्रताप लहि नाथ।
करौं न अस तौ.प्रभुपद सौंगंद फेरि न धरौं शरासन हाथ॥
बोले लक्ष्मण जब बानी इमि सानी परम क्रोध रसमाहिं।
डोले दिग्गज अरु हाली महि कच्छप धरी धीर हियनाहिं॥

स० रोष भरे निर्दोष सुबैनन नैन तनैन कै लक्ष्मण बोले।
हाली मही न गही रही शेश कि पाय कलेशहि दिग्गजडोले॥
लोक सशोक भये सबरे नरनाह डरे चष मूंदि न खोले।

बंदि अनंद भई सिय माय लजाय विदेह चुपाय भे भोले ॥
गुरु अरु रघुपति मुनिसमाजसह अतिशै खुशीभये मनमाहिं।
नैन सैन दै पुनि लच्मण कहँ प्रभु बैठाय लीन निजछाहिं ॥
जानि सुऔसर मुनिनायक तब बोले नेह सहित मृदुबानि।
शिव धनु भंजौ उठि राघव तुम मेटहु जनकराजकी ग्लानि ॥
सुनि असबानी गुरुज्ञानी की सुंदरश्याम राम भगधाम।
रंच न आनी हर्ष शोक मन गुरुके पगन कीन परणाम ॥
सहज सुभावहि उठि ठाढ़ेभे ठवनि बिलोकि सिंहसरमाय।
कहि न जाय छबि वहि समया की देखतै बनै तौन खगराय ॥

स० जैस्यहि वा उदयाचल मंच पै बाल दिवाकर से प्रभुजागे।
फूलि उठे शुचि संत सरोज बिलोचन भृंगपरागहि पागे ॥
राजनकी निशि आश नशी मुनिदेवहु कोकविशोक से लागे।
मानी महीप लजे नलिनी सम भूपछली छिपि खूसट भागे ॥

गुरुपद बंदन करि आनँदसह आयसु मांगि मुनिन सन राम।
मत्त मतंगम सम गमने प्रभु सहज सुभाय शील बलधाम ॥
राम चलत लखि पुरबासी सब अतिशय सुखी भये ततकाल।
लगे मनावन सुर पितृन कहँ निज निज पुण्य धर्मकरि ख्याल ॥
होहु सहायक यहि अवसर पर हमरी अरज गरजको मानि।
शम्भु शरासन रघुनायक प्रभु डारहिं कमल नालसमभानि ॥
प्रेम प्रीतिसह लखि रामहिं तब सीता मातु सखिनढिगजाय।
परम नम्रता अरु करुणायुत लागी वचन कहै बिलखाय ॥

स० एहो सखी न लखी अबजाति बुझाति न काहकरैं दईमारे।
कौतुक देखनवारे सभी नृपको शिखदेत न हेत विचारे ॥
जोधनु धारन टारन को बलवान दशानन बान से हारे।
बंदि सो धारिहैं टारिहैं क्योंकर बाल मरालसे ये नृपबारे ॥

भूप सयानप सबखोयो सखि विधिगति कछू जायनहिं जानि।
सुनि अस बानी महरानी की बोली चतुर सखी मृदुबानि ॥

अस न विचारौ मति हारौ हठि धारौ हृदय हमारी बात।
शक्तिमान जन मन प्रमान करि छोट न गिने जात कहुँ मात॥
कहँ अगस्त्य मुनि गुनि देखो पुनि कहां अपार सिंधुविस्तार।
क्षनमहँ सोख्यो मनरोख्यो तब सुयश प्रसिद्ध सकलसंसार॥
देखत लागै रविमण्डल लघु हरै त्रिलोक केर अँधियार।
मंत्र परमलघु पै ताके वश विधि हरि शम्भु आदि सुरझारि॥
कामकुसुम धनुशर लीन्हें कर कीन्हें सकल लोक बशमाहिं।
रानि जानि अस तजु संशय भ्रम तोरहिं राम धनुष शकनाहिं॥
सखी सयानी की बानी सुनि रानी हिय आनी परतीति।
बाद बिषादहि तजि हिरदय ते लागी लखन राम युत प्रीति॥
तबहिं जानकी सुखनिधानकी ओर बिलोकि हृदय भयलाय।
लगी मनावन सुर मनहीं मन होहु प्रसन्न शंभु गिरिजाय॥

स० हे करुणाकर शंकरदेव करी तुम्हरी शुचिसेव अघाई।
आयगयो समयो अबसो करजोरि निहोरि कहौं मनभाई॥
श्री रघुनाथ के पंकज हाथमें नाथ शरासन की गरुआई।
बंदि समूलहु फूलहुते लगै तूलहुते हलकी हरुआई॥

हे गणनायक बरदायक सुरलायक सब प्रकार तुम नाथ।
हरौगरुअई शिव शारँगकी बिनती करौं जोरि युगहाथ॥
देखि देखिकै श्रीरघुबर तन बिनवत सिया सुरन धरि धीर।
शुचि शरीर महँ पुलकावलि भलि नैनन भर्यो प्रेमको नीर॥
नीके शोभा लखि अँखियन भरि पुनि पितु प्रनै मनै करिख्याल।
तलफन लागी तन बिहाल ह्वै सफरी परी यथा खलजाल॥

स० हा हठआनि कियो प्रण दारुण बापन आपन लाभबिचारा।
आनि परी परिताप घरी स्वइ बंदिकरी कहधौं करतारा॥
होति महा उतपात कि बात दिखात न मंत्र बुझावनहारा।
कोमल गात किशोर कहां कहँ घोरकठोर शरासन सारा॥

धरौं धीर मैं कयहि प्रकार ते जानि न जात बात कर्तार।

बिधै बज्र किमि सिरस फूल ते हंस कुमार धरै धर भार ॥
सकलसभाकी मति भोरीभइ अब गति तोरिमोहिं शिवचाप।
डारि कठिनता निज लोगन पर हलुके होहु राम लखिआप ॥
यहिबिधि शोचत सियहियरेमहँ अतिपरिताप रह्योजियछाय।
खगपतिगतिसोकहिआवतिनहिंइकपलकल्पसरिसचलिजाय॥
प्रभुतनचितवैं फिरि चितवैंमहि चष चपलता जात कहिनाहिं।
मानहुं मनसिज की मछरी द्वै झूलैं चंद हिंडोले माहिं॥
भये संपुटित मुखपंकजके बाणी भवँरि बंद त्यहि माहिं।
लज्जा रजनी अवलोकत ते उघरत क्यहू भांति सो नाहिं॥
लोचन कमलनको आंशू जल बहन न पाव छाव चष कोन।
महा यतन ते यथा कृपन जन धरै दुराय आपनो सोन॥
जानि व्याकुली बड़ि सकुची पुनि तब धरिधीर कीन बिसवास।
लगी बिचारन अस हियरेमहँ प्रेम दृढ़ाय लाय शुभ आस॥

स० बापहुते कठिनो प्रन आपहु मैं तन औ मन बैन गहाहै।
बंदि अनंदक आठहु याम तमाम हिये रमिराम रहा है॥
रीति पतिब्रत धारिचुकी औ विचारि चुकी अपनो दुलहाहै।
भारपरै धनुहाँ दहिजार चढ़ैतौ कहा न चढ़ै तौ कहा है॥

देखि रामतन प्रनठान्यो सिय कृपानिधान लीन सो जानि।
उरपुरभरक्यो भुजफरक्यो तब जनुधनु आय आयनगिचानि॥
गरुड़ बिलोकै जस छोटोअहि तस प्रभु दीख चाप दिशिताकि।
तनकनशंका मन आन्यो प्रभु तिनुका सरिस लखान्यो आंकि॥
लक्ष्मण जान्यो की रघुकुल मणि ताको शंभु चाप दिशि दापि।
गह्वर बाणी सों बोले इमि पग सों ब्रह्मअण्ड को चापि॥

छ० हे कच्छप बाराह शेष दिग दन्ति अशेखौ।
सावधान ह्वै धीर धारि धरणी तन देखौ॥
राम प्रबल परताप चाप शिव चाहहिं तोरा।
सजगहोहु सबकोय श्रवण सुनि आयसु मोरा॥

डगमगै न कहुँ धरती रती नातरु होई हानि बड़ि ।
द्विजबंदियहीअवसरमनहुँ सबकरबलपहिंचानिपाड़ि ॥
चाप सन्निकट प्रभु आये तब सब सुर सुकृत मनावन लाग ।
देव बिमानन चढ़ि धाये नभ बरसत फूल सहित अनुराग ॥
सबकर संशय अरु अयानपन मानी नृपन केर अभिमान ।
गर्व गरुअई भृगुनायक की सुर मुनिवरन केर भयभान ॥
जनकदुलारी कर शोचब अरु भूपति जनक केर पछिताव ।
सखी सुनैनादिक रानिन कर अतिशै कठिन दुःख को दाव ॥
पाय जहाजहि जनु शंकरधनु एकहि साथ चढ़े सब जाय ।
चहत पार प्रभु बल वारिधि को कोउकनहार नाहिं दिखराय ॥
राम बिलोके सब लोगन जब मानहुँ चित्र लिखे से देखि ।
फेरि निहारी सियप्यारी तौ बिकल बिशेखि परी अवरेखि ॥
एक कल्प सम पल बीतत त्यहि चीतत असदयालजनपाल ।
तज्यो पियासे तन पानी बिन मरिका करै सुधाको ताल ॥
खेती सूखे पर वर्षा का औसर गये काह पछिताव ।
अस विचारिजिय सियदेखी प्रभु पुलके पेखि प्रीतिको भाव ॥
गुरुपद बंदन करि मनहीं मन लीन उठाय चाप लघु पानि ।
दमक्योदामिनिजिमिमेघंनमधिपुनिधनुपरयोगगनसमजानि ॥
लेत चढ़ावत दृढ़ खैंचत महँ काहु न दीख रहे सब ठाढ़ ।
कर लाघवता अस कीन्ही प्रभुको कहिसकै पराक्रम खाढ़ ॥
तेही अवसर पर राघव प्रभु तोरयो मध्य भाग शिव चाप ।
महा भयङ्कर धुनि धाई सो सबरे भुवन समाई आप ॥
बिजुके घोड़ा दिननायक के भागे भभरि त्यागि कै राह ।
चिघरैं दिग्गज महि डोलै अरु कांपहिं कमठ शेश वाराह ॥
सकल सुरासुर मुनि आदिक लै कानन उपर हाथ दै भाय ।
विकल विचारैं जनु शंकर धनु तोरयो रामचंद्र रघुराय ॥
वारियान सम शिवशंकर धनु सागर रामचंद्र बल बाहु ।

मोह विवश ह्वै वै बूड़े सब प्रथमाहिं चढ़े जौन खग नाहु ॥
शंभु शरासन के टुकड़ा द्वउ महि महँ डारि दीन रघुनाथ।
भये सुखारी नर नारी सब निरखत प्रभु स्वरूप छबिगाथ ॥
पूत पयोनिधि सम कौशिक तन भस्यो अथाह प्रेम जनु वारि।
पूरण शशि सम रामरूप लखि बाढ़ी पुलक तरंगम भारि ॥
घने बाजने नभ बाजे तब नाचैं देववधू करि गान।
सिद्ध मुनीश्वर ब्रह्मादिक सुर प्रभुहि अशीष देत हर्षान ॥
गायगाय कै अति उज्ज्वल गुण बर्सत सुमन माल झरिलाय।
जय जय बानी सुखखानी वर सबरे भुवन माहिं रहि छाय ॥
अतिवघोर धुनि धनुषभंग की कहँ लगि गई जानि नहिंजाय।
जहँ तहँ गावहिं नर नारी यह तोस्यो शंभु चाप रघुराय ॥
बंदी मागध सूत आदि कवि विरदावली रहे वर गाय।
करहिं निछावरि जन रघुपतिपर हयगयमणि धनादि समुदाय ॥

स० झांझ मृदंग घनाघन दुंदुभि सुंदर राग बजै सहनाई।
मंगलचार उचारत कामिनि दामिनि सी तनमें द्युति छाई ॥
बंदि अनंदित बंश प्रशंसत विप्रन वेद ऋचा बरगाई।
सेव जनावत देव सबै नभते कुसुमावलि की झरिलाई ॥

हरषी रानी सह सखियन के सूखत धान परा जनु पानि।
अति सुख पायो श्री मिथिलापति पैरत थके थाह सम मानि ॥
नरपति सबरे धनु टूटे पर श्रीहत भये गये सकुचाय।
जैसे दिनमहँ छबि दीपक की महामलीन जाय परि भाय ॥
केहिविधिवरणियसियाहियकोसुखजिमिचातकीपायजलस्वाति।
लषण विलोकत श्री रामहिं कस चंदहि चककुमार ज्यहिभांति ॥
आयसु दीन्ह्यों शतानंद तब गमनी सिया रामके पास।
संग सहेली अलबेली सब गावहिं गीत परम सुख रास ॥
सीय सहेलिन बिच सोहै कस मोहै रूप देखि मन काम।
यथा महाछबि छबि गणके बिच शोभा धाम परम अभिराम ॥

विश्व विजय की शुभ शोभासी लीन्हें कर सरोज जयमाल।
कनक छरीसी छबि पुतरी सी शोभा भरी परी द्युति जाल॥
तन महँ लज्जा दरशावत अरु छावत परम मोद मनमाहिं।
गुप्त प्रेम वह जगदंबा को काहू भांति जानि नाहिं जाहि॥
जाय सन्निकट रघुनंदन के परमानंद राशि छबि देखि।
नैन किवाँरे नाहिं मारे फिरि मानहुँ रही चित्र सी लेखि॥
सखी सयानी गति जानी सो बानी मृदुल कही समुझाय।
अवधपाल के गल बिशालमहँ यह जयमाल देहु पहिराय॥
मृदुल बानि सुनि सखिसयानिकी दोऊपानि तानि जयमाल।
रहिगईं जैसीकी तैसी पुनि सकी न प्रेम बिबश गल डालि॥

स० शुभ्र सहेलि नवेलिनके बिच कंचन बेलिसी सो सिय बाला।
ऐसीलसै बिलसै कबि बन्दि अनंदित बिज्जु छटा जनुआला॥
श्री प्रभु के गल डालन को जयमाल लिहे करकैसी बिशाला।
नाल समेत मनो युग अंबुज हेतकै देत मयंकहि माला॥

छबिनिहारि सो सिय राघवकी गावहिं सखी गीत सुखकारि।
तेही अवसर पर सीता ने दीन्हीं माल राम उर डारि॥
फूलन बरषे सुर हरषे तब रघुबर हृदय देखि जयमाल।
मनसकुचाने भूमिपाल सब रबि लखि यथा कुमोदिनि जाल॥
भये सुखारी नर नारी सब भारी मोद गई पुर छाय।
चाप भंग की शुचि गाथा यह मति सम कही बंदिद्विजगाय॥

इतिश्रीभार्गववंशावतंसश्रीमान्मुंशीनवलकिशोरात्मजस्यश्रीमुंशी
प्रयागनारायणस्याज्ञाभिगामीउन्नामप्रदेशान्तर्गतमसवासीग्राम
निवासीपण्डितबंदीदीननिर्मितश्रीविजयराघवखण्डे
बालकाण्डेषष्ठमोल्लासः॥ ६॥

गिरिजानंदन पदबंदन करि उर गुरुचरणकमल करि याद।
श्री भृगुनायक रघुनायक कर कहौं विवाद वाद अहलाह॥
शंभु शरासन के नाशन पर मिथिला नगर वासि नर नारि।

परमानंदित रघुनंदन की लागे करन प्रशंसा भारि ॥
बजे बाजने सुर नर पुरमहँ सब उर महामोद सरसानि ।
दशहू दिशि की सुख शोभा जनु छाई जनक नगर महँ आनि ॥
खल अवनीपति भये विकल अतिमति सकुचाय रहेशिरनाय ।
नाद अगाधू लहि साधू नृप रहे कृपालु केर गुण गाय ॥
अमर नाग नर वर किन्नर मुनि जयजयकार करत हरषाय ।
गिरिजा आनँदवहि अवसर कर मोमति कहतिजाय सकुचाय ॥
विवुध वधूटी छवि जूटी नभ नाचहिं सुखद राग मुख गाय ।
नंदन बनके वर फूलन की अतिव विशाल माल भरि लाय ॥
करैं ब्राह्मण मुनि वेदध्वनि बंदी बंश प्रशंसत चारु ।
नभतलमहितलअहितलहू लगि रघुपति सुयशभयोविस्तारु॥
कर सवाँरती बर उदारती रघुबर उपर आरती बारि ।
सुघर भारती स्वर उचारती धन वारती गीत उच्चारि ॥
सुंदर जोरी सिय रघुबर की गोरी श्याम छटारहि छाय ।
जनु इकठोरी छबि शृँगारहउ थोरी बुद्धि कहौं किमि गाय ॥
सखी बुझावहिं सियसुंदरिको गहु प्रभुचरण कमल कलपानि ।
गहतिनअतिशयभयमानतिसियगौतमतियासुरतिगतिआनि॥
प्रेम भाय लखि सीय माय को मन मुसकाय स्वामि रघुराय ।
भये अनंदित अति हिरदय महँ बंदि सो दशा गाय नहिंजाय ॥
सिय लखि माखे अभिलाखे तब कूर कपूत धूत महिपाल ।
कवँच सनाहे तन धारन करि जहँ तहँ लगे बजावन गाल ॥

स० सीय छँड़ाय धरौ न डरौ पकरौ नृप बालक वा पुर दोऊ ।
युद्ध अरौ सँभरौ अवतौ न टरौ चितचाह करौ हठि सोऊ ॥
बंदि अनंदि लरौ रणमें क्षनमें अस कौतुक होउ सो होऊ ।
आजहितौ लखि हालपरै हम जीवत बालबरै कस कोऊ ॥

सुनि अस बानी अभिमानी की ज्ञानी साधु भूप मुसकाय ।
बैन यथोचित कहि भाषत भे रघुपति सुयश गाय समझाय ॥

स० अवतौ तनि गाजत लाज लगै बिनकाज बकै कहपाइहौ जू।
रघुराज के बाजतही रणमें चणमें घरको भगिजाइहौ जू॥
कटिनाक पिनाक के संगगई बल बीरता का बढ़िगाइहौ जू।
अब और हँसी करवाइहौ जू मुखमाहिं मसी भरवाइहौ जू॥

देखहु रामहिं भरि नैनन अब तजि मद मोह ईर्षा यार।
वीर लषणके रिस दावा महँ होहु न शलभ सरिस जरित्तार॥
चहै गरुड़ की बलि कौवा जिमि औ चौगड़ा नागअरि भाग।
शंभु विरोधी सुख संपति जस चाहै बिना किये अनुराग॥
यथा अकारण रिस कर्ता नर चाहै कुशल खैर सब ठाम।
झूठ लालची यश चाहै जस कामी निष्कलंक शुभ नाम॥
विमुख होय कै हरि चरणन ते चाहै यथा मुक्ति अज्ञान।
है महिपालौ गति तुम्हरिउतासि बिनबल बनो चहतबलवान॥
सुनि कोलाहल इमि राजन को सीय हीय महँ गई सकाय।
सखी सयानी गहि पानी त्यहि गईं लेवाय रही जहँ माय॥
भई शोच बश सिय रानिन सह धौं का होनहार कर्तार।
खेल बिगरिहै अब बनिकै कह वृथा झमेल करत दहिजार॥
सुनि सुनि बातैं महिपालन की इत उत तकैं लषण बलवान।
बोलि सकैं ना कछु राघव डर भरकत हृदय कोप की सान॥
नैनन छाई अरुणाई अरु भृकुटी कुटिल दृष्टि करि बंक।
देखत राजन तन [illegible] जस निरखै सिंहसुवन बिनशंक॥
लखि खलभल्ला अरु हल्लागड़ अतिशय बिकल भये नर नारि।
अति रिस पागे दुख दागे सब लागे देन महीपन गारि॥

स० ये कसाय कहांते धौं आय गये ठनकाय रहैहैं वृथाधनुरोदे।
पहिले न दिखाय परी मनुसाय लजाय भये सबके बलबोदे॥
नाहक बाद मचायरहे धनुके ढिग जाय बने बड़ भोंदे।
भार परैं न टरैं दहिजार लबार भुवार चमारके चोदे॥
धनुहां जब टूटिगयो सजनी इन राजनको अब काज कहा।

दहिजार न जायँ घरै अपने बैरै काहेक जोरे समाज महा॥
नठिहा सरमात नहीं तनकौ बठिहा अस मोट दिखातअहा।
नहिंआवत बाज बजावत गाल हराम गुलाम निकाम महा॥
अररायकै गाज न फाटिपरै मरै रारि गोहारि मचाय रहे।
मुख माहिं मसी भरवाय रहे कुलहूकी हँसी करवाय रहे॥
नृप कूर गरूर भरे लबरे किमि साधुन को डरवाय रहे।
हक नाहक गाल बजाय रहे दहिजार कहांते धौं आयरहे॥

शिवधनु भंजन सुनि औसर त्यहि आये परशुराम त्यहि ठाम।
सुंदर शोभा कहि बरणै को दीपति धाम रूप अभिराम॥
देखि महीपति सकुचाने सब इत उत खसकि लुकाने जाय।
बाज झपेटे ते झट्टै जस बटयर बृन्द जाय छपि आय॥

स० बारन मत्त अमत्त भये करिभीम चिघारन भूलिहु गज्जैं।
मूकभये वदकार भुवार दुवार अगार नगार न बज्जैं॥
शूरगरूर भरे सबरे डरिडारि हथ्यार तियातन सज्जैं।
भूरिभस्यो भय कूरनके उर मारग छोड़ि अमारग भज्जैं॥
स्वच्छ शरीर विभूतिभसीभलि भाल निरालत्रिपुण्ड्र किशोभा।
शीश जटा मुख चंदछटा शुचि शोणित रंग मनो कछु गोभा॥
नैन रिसौहैं सुभौहैं तनी तनि माल बिशाल उरस्थल लोभा।
भूभर हारक भार्गव रूप बिलोकत भूपन को मनछोभा।
उन्नत कंधर बाहु विशाल मनोद्रुमशाल कि डाल लसींद्वै।
हाटकपाट सुधी इषुधी इषुजाल गसी कटि कूलकसीं द्वै॥
पानि शरासन बानलये बिकरार कुठारहु कांध बसीस्वै।
आइ गये अहि भूपमनो महिभूप अनूपम रूपयशी है॥

वेष भयंकर लखि भार्गव को भयबश उठे सकल भूपाल।
पितु समेत कहि निजनामाहिं सबकरत प्रणाम नाय पगभाल॥
सहजसुभावहि दृगचितवैं ज्यहि यदिहित हृदयमाहिं उपजाय।
सो नृप जानै अनुमानै अस हमरी आय गई नियराय॥

बहुरि आयकै जनक राय ढिग बंदे पायँ माथ महि नाय।
सीय सन्निकट बुलवायो पुनि तिन्हैं प्रणाम दिह्यो करवाय॥
आशिष दीन्हीं भृगुनायक ने सखी लेवाय गईं पुनि धाम।
मिले आयकै पुनि कौशिक मुनि मेले चरण लक्ष्मण राम॥
अवधपाल के ये बालक द्वउ मुनिजन अभय करन सुखधाम।
आशिष दीन्हीं लखि लीन्हीं भलि जोरी श्याम गौर अभिराम॥
राम निहारे दृग वारे द्वउ रूप अपार मार मद हार।
छवि शिंगार सुकुमार मृदुल तन सुंदर पारब्रह्म अवतार॥
बहुरि जनकसन कहि पूंछ्यो अस राजसमाज जुरी क्यहिकाज।
जन अजानसम जनु पूंछत कस गात दिखात कोपकछु आज॥
हाल बतायो कहि मिथिलापति ज्यहिहित जुरे सकल महिपाल।
अंत निहारे महि डारे द्वै देखे चाप खण्ड रिस आल॥
बचन उचारे विकरारे तब सारे बदन गई रिस छाय।
क्यहिं यह तोरा शिवशंकर धनु रेजड़ जनक बेगि बतलाय॥

स० रे मतिमन्द महा मिथिलापति का गतिकीनि शिवापति चापकी।
वेगि बताउ न लाउ अबारहि कौन गवाँर बड़ी बल दापकी॥
जानि परी मन बंदिकहा त्यहि कानिकरी न कछू ममताप की।
हानि करी हठिआयु मनो यमद्वार कि मारग आपहि आपकी॥

डर करि उत्तर नहिं दीन्ह्यों नृप हरषे कुटिल भूप मन माहिं।
मुनि गण अहिसुर पुरबासी सब भय बश शोचि२ पछिताहिं॥
भई सुनैना असमंजस बश बिगरी बनी ठनी सब बात।
जानि भार्गव को सुभाव सिय अर्द्ध निमेष कल्प सम जात॥
भयबश ब्याकुल लखि लोगन को औजिय जानि जानकीभीर।
हर्ष बिषाद न हिय आनी कछु बोले मृदुल बचन रघुवीर॥

स० रोष न आनिय ज्ञानि शिरोमनि ठानिय नेक विवेक बिचारा।
मानिय सम्मत मूलयहै मनकोप किहे उरहोत बिकारा॥
भाविहि मेटि सकै हठिको द्विज बंदि अनंदित वेद पुकारा।

शंभु शरासन नाशनहार सो ह्वैहै कोऊ यकदास तुम्हारा॥
होत सो आयसु अब मोकहँ कह माथे धरौं तौन मुद मानि।
सुनि अस बानी धनुपानी की बोले परशुराम रिस ठानि॥
सेवक ताही को भाषै सब सेवा करै जौन मन लाय।
मानि शत्रुता रण ठानै जो जानै ताहि दास को भाय॥
शंभु शरासन हठि तोस्यो ज्यहिं सुनिये राम हमारी बात।
सहसबाहु सम सो बैरी मम भो संसार माहिं विख्यात॥
देर न लावै सो आवै इत सन्मुख नृप समाज बिलगाय।
मारे जैहैं नतु राजा सब हैं अब यही मोरि मंशाय॥
सुनि इमि भाषण भृगुनायक को सहज सुभाय राम लघुभाय।
करत अनादर फरशाधर को बोले मृदुल बचन मुसकाय॥
बालकपन महँ बहु धनुहीं मैं तोस्यों नाथ आपने हाथ।
असरिस कबहूं तुम कीन्ह्यों ना जसरिस आजु कीनिभृगुनाथ॥
क्यहिहित प्यारी यह धनुहीं बहु सोतौ कहौ मोहिं समुझाय।
ब्यंग बचन सुनि इमि लक्ष्मण के बोले परशुराम रिसिआय॥
भयो कालबश नृप बालक तैं बोलत नहिं सँभारि मुखबात।
शंभु शरासन यह धनुहीं सम जो अति जगत माहिं विख्यात॥

स० जग जासु प्रताप कि थापथपी शिवचाप सबै कहि गावतहै।
यमदण्डते चण्ड प्रचण्डमहा नवखण्ड न कोऊ चढ़ावतहै॥
द्विज बंदि दशानन बानहुं से बलवानहुंको शरमावतहै।
मदनाशन तौन शरासन को धनुहीं कहि मूढ़ बतावतहै॥

बहुरि लक्ष्मण हँसि बोले तब सुनिये भार्गवेश भगवान।
जान हमारे महँ आवत अस सबरे धनुष एक अनुमान॥
महा पुरानो धनु तोरेते कौन सि हानि लाभ दिखरानि।
जानि नवीनो कर लीनो प्रभु राम न दीख पानि भल तानि॥
दोष न यामैं कछु रघुपति को छुवतै टूट लागि नहिं बार।
रोष अकारण मुनि कीजिय कत लीजिय हिय बिचार निर्धार॥

स० खायो महा घुनकीरनको अति जीरनधौं क्यहिठाम परोहतो ।
सीधे सुभाय उठाय लियो रघुराय दृढ़ाय न हाथ धरोहतो ॥
टूट्यो मृणालसो हालहि में द्विजबंदिवृथाही कलंक भरोहतो ।
रोषकरो चहै दोष धरो पै शरासन सत्यहि सत्य सरोहतो ॥
भृगुनायक सत्यसुभाय कहौं अभिमानकि बात न माननकी ।
कित तूलसनी कि बनी मृदुफूल कि भूलकरी कर ताननकी ॥
द्विजबंदिकिधौं मृतिकाकीरही भली सांचीसँची धनुढालनकी ।
कित बालन ख्यालनकी विरची धनुही वह अंबुजनालनकी ॥

लषण लालकी सुनि बानी इमि भृगुपति हृदय कोपउमगान ।
चितवत फरशा दिशि बोले अस सुने न शठ सुभाव मम कान ॥
बाल जानि मैं त्वहिं मारौं नहिं तैंम्वहिं निरो निरो मुनिजान ।
होंमैं जसतस बतलावत त्वहिं सुनि सो हृदय मानु अज्ञान ॥
ब्रह्मचर्य ब्रतरत बालहिते क्रोधी अतिव जगत बिख्यात ।
महा बिरोधी क्षत्रिय कुलको मानसि सही कही यह बात ॥
करि भुजबल सों बिन नृपकी महि दीन्हीं द्विजनअनेकनबार ।
सहसबाहु की बाहु बिदारक फरशा देखु महीप कुमार ॥
करासि शोचबश जानि माता पितु बानी मानु महीप किशोर ।
बालक गर्भन को घालक हठि है यह परशु मोर अतिघोर ॥
हँसिकै लक्ष्मण पुनि बोले तब हे मुनि महाबीर बलवान ।
क्रोधअकारण क्योंठानत असआनत हृदय इतक अभिमान ॥
म्वहिं डरवावत दिखरावत कह आपन कर कुठार हर बार ।
फूंकि उड़ावन को चाहत कह अतिशै भार पहारहि यार ॥
इहां न कुम्हड़ा की बतिया कोउ जो तर्जनी देखि मुरझाय ।
धीर धारिये रिस बिसारिये यह नहिं कर्म द्विजन को आय ॥
वेष देखिकै बर बीरन कर धरे कुठार शरासन बान ।
उद्भट क्षत्रिनसम ठानत रिस मैं कछुकहा सहित अभिमान ॥
देखि जनेऊ हिय समुझत अस श्रीभृगुबंश बिभूषण नाथ ।

जो कछु कहिये उर सहिये सो रिस बिसराय नायपद माथ ॥
सुर मुनि महिसुर अरु गाईं लै भगवद्भक्त जौन जग माहिं।
सुयश प्रशंशी रघुबंशी जन इन ते करत शत्रुता नाहिं ॥
मारे इनके अघ लागत है हारे अयश होत संसार।
याते वाजिब ऐसोहीहै मारतहू पां धरिय तुम्हार ॥
कोटि बज्र सम बच राउर के बिरथा धरे परशु शर चाप।
जग महँ आछी बिधि जाहिर है राउर कुल प्रताप की दाप ॥
कह्योंजो अनुचित अनजानत महँ करियेक्षमा तौन मुनिराय।
सुनि असभाषण लषण लाल को बोले परशुराम रिसिआय ॥

स० बैठ कहा मन मौन गहे इत ताकत ना मुनि कौशिक धोंधा।
बेगि क्षमौ यहि बालकको कुलघालक मूढ़महा बिनबोधा ॥
कालके गाल परो चहै हालहि छावत आवत मो उरक्रोधा।
बंदि उबारहु टारहु तौ यहि भाषि हमार प्रताप विशोधा ॥

भीम बिभाषण भृगुनायक को सुनिकै लषण कह्यो मुसकाय।
अक्षत तुम्हरे यश तुम्हार मुनि कहि को सकै पारको पाय ॥
आपनि करणी तुम अपने मुख बरणी बिबिधभांति बहुबार।
अबौं न हिरदय संतोष्यो तौ पुनि कछुकहौ स्वमति अनुसार ॥
बीर बृत्ति गंभीर धीर तुम शोभ न लहत कहत कटुबाद।
क्रोध अकारण जन कीन्हेते जगमह लहत बहुत अपबाद ॥
शूर देखावत रण करणी करि कहिन प्रताप जनावत आप।
शत्रु सामुहें लखि संगर महँ कायर कथैं क्रूर आलाप ॥
तुमतो रहि रहि मन माषतअस लाये मनहुँ कालगोहराय।
केवल म्वाहिं लागि त्यहि अबहूं तुम बारंबार बोलावत भाय ॥
महा कठिनता युत लक्ष्मण के सुनि कै बचन स्वामिभृगुराय।
भीषण फरशा सुधि आयो कर बोले महा भीम रव छाय ॥
दोष न कोऊ अब देवै म्वाहिं भाषत महा कटुक यह बाल।
हाल न जानत मम बिक्रमको खाओ चहत याहि अब काल ॥

निश्चय मारन के लायक यह यद्यपि तजौं जानि मैं बाल।
बाज न आवत है ताहू पर तजै न दुष्ट प्रकृति की चाल॥
भाष्योकौशिक तब तिनते अस मुनिवर क्षमाकरिय अपराधु।
बाल अयानन के औगुण गुण आनत नहीं हृदय महँ साधु॥
बैन यथोचित मुनि गाधिज के सुनि भृगुनाथ कही असबात।
हमैं न शंका कछु काहू की सुनिये कुशिक वंश जलजात॥
विना प्रयोजन को क्रोधी मैं लीन्हें कर कुठार विकराल।
गुरू विरोधी अपराधी यह आगे खड़ो मूढ़ नृप बाल॥
त्यहि विनु मारे जो छाँड़त मैं उत्तर देत तौन सुनि लेत।
याको कारण अरु नाहीं कछु केवल मानि आपको हेत॥
नतु यहि खोटे खल ढोटे कहँ अबहिं कुठार धार सों काटि।
अतिशै थोरा श्रम कीन्हें ते गुरु ऋण सकल देत मैं पाटि॥
हँसि अस गाधिज वच बोलेतब मुनि कहँ सदा हरिअरैसूझ।
ऊंखकिनाईं धनुखण्ड्यो जिन तिनहिंन अजहुँ बूझबिनबूझ॥
बोले लक्ष्मण त्यहि औसर पुनि हे भृगुनाथ शील अवतार।
शील रावरे कर सुंदर वर जानत को न विदित संसार॥
मात पिता के तौऋणते तुम भले प्रकार भये उद्धार।
यही शोच है बड़ हियरे महँ गुरु ऋण एक शेष व्यवहार॥
हमरे माथे सो काढ़ा जनु दिन चलि गये बढ़ा बहु व्याज।
तुर्त बोलावहु निज ब्योहरको थैली खोलि देउँ मैं आज॥
सुनि कटु बानी इमि लक्ष्मण की धर्यो सुधारि कुल्हाराहाथ।
लोग पुकारे सब हाहा करि क्षमिये बाल बचन भृगुनाथ॥
रिस ह्वै आई तब लषणहुँके नैनन गईं लालरी छाय।
बंक शंक बिन करि भौंहैं द्वउ लागे रोष सहित बतलाय॥
काह कुल्हाड़ा देखलावत म्वहिं भृगुपति बार बार बेकार।
विप्र जानिकै मैं छाँड़त हौं तुम्हरे होत गर्व अधिकार॥
अब लगि कबहूं रण पुहमी महँ पर्यो न क्यहू सुभटते काम।

बाढ़े घरहीके ब्राह्मण सुर लरिबो कठिन काम भृगुराम ॥

स० वेद पुरान बखान करैं भल पूजन ध्यान बिधान निधानहैं।
दान में बांदि सुजानमहा पक्कवान मिठानको जानतखानहैं ॥
माँगनयांचनमें बड़ ज्ञान औ शापन माहिं सदा बलवानहैं।
संगर को लरिबो मरिबो इन बातन में द्विजदेव अयानहैं ॥

वीर विभाषण अहि नायक को सुनि सब लोग उठे रिसिआय।
अनुचित कहिबो नहिं वाजिब कछु यामहँ बड़ी हानि दिखराय॥
देखि सुसम्मत अस सबही को सैनहिं लषण निवारे राम।
सुयश उजागर नयनागर अति सागर शील डील छविधाम ॥
उत्तर लक्ष्मण को आहुति सम भृगुपतिकोप अग्निकी ज्वाल।
बढ़त देखि कै जल समान वच बोले अवधपाल कुलपाल ॥
दया कीजिये प्रभु बालक पर जानिय सूध दूध मुख ताहि।
क्रोधन आनिय मन जानियअस है नहिं बुद्धि ज्ञान कछुयाहि ॥
प्रभु प्रभाव को जोजानत कहुँ करत न कबहुँ बराबरि नाथ।
लरिका अनुचित करिडारत त्यहि गुरु पितुमातु लेतधरिमाथ ॥
जानि आपनो शिशु सेवक यहि करिये दया मया उर माहिं।
तुम सम सज्जन शीलवान मुनि ज्ञानी धीर जक्त कोउ नाहिं ॥
बचन मनोहर मृदु राघवके सुनि मुनि कछु जुड़ान हरियान।
तौलौं रघुपतिके पाछे भे सींगु देखाय लषण मुसकान ॥
नखशिखब्यापीरिसाबिहँसतलखिभे अतिकुपित फेरिभृगुजात।
दांत पीसिकै कही बात अस राम तुम्हार दुष्ट बड़ भ्रात॥
गोरा भोरा तन देखन को मन महँ महाकार बदकार।
सूध दूध को मुख नाहीं यह निश्चय कालकूट मुख यार ॥
सहजहि बंका बिनशंका को तुम महँ मिलत नाहिं यहु राम।
नीचमीचसम नहिं देखत म्वहिं डरतनजानि हानि परिणाम ॥
बिहँसि लक्ष्मण पुनि भाष्यो अस हे मुनि गुनिय क्रोध बड़पाप।
जाके बशह्वै जन दुनियां महँ अनुचित करैं भरैं उर ताप ॥

सांचो सेवक मैं राउरको कीजै दया क्रोध बिसराय।
जुरै न टूटो धनु कीन्हें रिस बैठिय नहिं पिराय ज्यहिपायँ॥
यतन कीजिये जो प्यारो अतिगुणी बोलाय जोराइय चाप।
वृथा रिसाये ते कैहै कह यहतौ हृदय बिचारौ आप॥
बोलत लक्ष्मणके मानहिं भय अतिशय जनकराज मनमाहिं।
तब चुपवावैं कहिलक्ष्मणको अनुचित कहब योग्य कछु नाहिं॥
थरथर कांपैं नर नारी सब छोट कुमार खोंट अतिजानि।
निर्भय बानी सुनि मुनिवरको रिसतनुजरै होय बलहानि॥

स० हाय बढ़ायके कोपदवा फिरिहू जो चुपाय रहै मनमोरा।
बंदि न मारत टारत जो यहि राम बिचारत तोर निहोरा॥
नातरु एकघरी न निवारत डारतकाटि कुठार कठोरा।
छोटोजितोतितोखोंटोबड़ो तनगोरादिखातमहाविषबोरा॥

लक्ष्मण बिहँसे पुनि बानी सुनि तब तौ नैन तरेरे राम।
गुरुढिग गमने संकोचित ह्वै छाँड़्यो कहब बचन मुखबाम॥
अतिव नम्रता युत शीतल मृदु बोले राम जोरि युगहाथ।
कान न कीजिय बच बालकके आपु सुजान शिरोमणि नाथ॥
बरैं बालक को सुभाव इक इन्हैं न संत विदूषैं काउ।
हिये विचारौ रिसटारौ प्रभु अति मतिमान ज्ञान दरियाउ॥
काज बिगारो त्यहिं नाहीं कछु महीं कसूरवार प्रभुक्यार।
मोपरदाया बधबंधन रिस जो कछु करिय उचित कर्तार॥
ज्यहिविधि जावै रिस कहिये सो करिये स्वइ उपाय मुनिराय।
सुनि असबानी धनुपानी की मुनि पुनि कह्यो कोप सरसाय॥
जाय कौनबिधि रिस अबहूं लगि चितवत बंक राम तुवभाय।
दिह्यों कुठार न जो याके गल रिसकरि किह्यों काह मैं हाय॥
परैं गर्भगिरि नृप तिरियनके सुनत कुठार चाल बिकराल।
अक्षत फरशा कर ताहूपर जीवत लखौं शत्रु नृपबाल॥

स० हाथ बहै न सहै दुर्वाद बिवादकै बादि दहै रिसछाती।

बामभयो कर्तार कहा जो कुठरहु कुण्ठितभा नृपघाती॥
हाय सुभाय फिरो कसकै असक्षत्रिहि देखि दया उरआती।
आज अकाज भयोबड़ जो यह जीवत राजकुमार अराती॥

सुनि मुनि बानी भटलक्ष्मण पुनि बोले शीशनाय मुसकाय।
अस प्रसन्नता अरु करुणाकी मूरतिलखी आजहीं भाय॥
बाणी बोलत महँ आननते मानहुँ झरैं फूल समुदाय।
इक इक अक्षर पर वारतहौं तन धन हृदय महा हर्षाय॥
जो पै दाया के कीन्हे ते असकै जरै गात भृगुजात।
क्रोधभये ते तौ जानिय अस राखेरह बिधातके गात॥
इतना कहते खन लक्ष्मणके फिरि भृगुराम उठे रिसिआय।
देखुजनक अब जड़बालक यहु यमपुर चहत जाय बरिआय॥
देर न लावहु लैजावहु यहि आँखिन ओट अन्तकहुँ टारि।
देखत छोटा नृप ढोटा यह खोटा बना घना विषगारि॥
हँसिकै लक्ष्मण पुनि बोले तब हे मुनि कहा कठिन यहिमाहिं।
मूँदहु आँखी करअंजुलिधरि तौ फिरि लखौ कतौं कोउ नाहिं॥
कह्यो परशुधर तब राघव प्रति अतिशै क्रोधसानि मुखबानि।
शंभु शरासन शठ भंजनकरि करसि हमार बोध कहजानि॥
बंधु कहै कटु तुव सम्मत लहि तू छल विनै करसि करजोरि।
तुहूं बनाये म्वहिं सूधो द्विज तोहिं न बिदित बंकता मोरि॥
काम न सरिहै अब बातनते करु परितोष मोर संग्राम।
नतरु आजुते यहि दुनियाँ महँ छांड़हु राम कहाउब नाम॥
छांड़ि कपट छल शिवद्रोही तैं सन्मुख शस्त्र धारि करु रारि।
नतरु बंधुसह त्वहिं मारौं हठि इतनी बातलेहु उरधारि॥
असकहि भृगुपति तमतमायकै लीन उठाय कुठारहि तानि।
रामनवाये शिर विहँसैं मन बोलैं महा मुलायम बानि॥
रोष लक्ष्मणको हम पर सो स्वामी आप बुतावत आनि।
दोष सुधाइहुते कतहूं बड़ होत सो लीन हृदय हमजानि॥

टेढ़जानिकै कोउ बोलत नहिं शंका अवशि होत सबकाहु ।
जगमहँ जाहिर है नीकी बिधि ग्रसै न टेढ़ चन्द्रमा राहु ॥
याते मुनिवर रिस छांड़िय अब फरशा हाथ अग्र यहमाथ ।
ज्यहि बिधिजावै रिस करिये सो मोकहँ दासजानि निजनाथ ॥
स्वामी सेवक ते संगरकस द्विजवर तजहु रोष असजानि ।
वेष देखिकै कहि डार्यसि कछु बालक दोष करिय नहिंकानि ॥
धरे धनुषशर अरु फरशा कर बीर बिचारि कीनि रिसबाल ।
नाम जानि पै पहिंचान्यों नहिं उत्तर दीन बंशकी चाल ॥
मुनिकी नाईं जो अउत्यो तुम शिशु पगधूरि लगावत माथ ।
चूक बिसारो अनजानत की द्विज उरदया चाहिये नाथ ॥
तुम्हरी समता को कैसे हम कहिये कहां चरण कहँ माथ ।
राम नाम है कहँ छोटो मम तुव बड़ नाम परशु के साथ ॥
हमरे धनुहा महँ एकै गुण नव गुण स्वच्छ रावरे माहिं ।
सबविधि हारे हम स्वामी सन समता किहे पाप लगि जाहिं ॥
क्षमो हमारे अपराधै द्विज हियते रोष देहु बिसराय ।
शीतल चाहिय उर विप्रनको उनको रोष करब कहआय ॥
गिरिजा यहिविधि बहुत बार जब द्विज मुनि कहा रामको राम ।
बोले भृगुपति तब क्रोधित ह्वै तोहूं अहसि बंधुसन बाम ॥
निपटै द्विजकरि तैं जानत म्वहिं मैं जस विप्र बतावों भानि ।
श्रुवा शरासन शर आहुति यह रिसमम घोर अग्नि ले जानि ॥
दल चतुरंगी महिपालन को ईंधनु जारि आगि दइबारि ।
महा महीपति स्वइ मखके पशु अगणित नहीं एक दुइचारि ॥
काटि काटिकै यहि फरशाले मैं बलि दीन लीन यश आम ।
यहिविधि कोटिन समर यज्ञकरि मेट्यों क्षत्रि बंशको नाम ॥
तो कहँ मालुम नहिं प्रभाव मम निन्दित कहत सूध द्विजजानि ।
धनुहाँ तोरे ते बाढ़्यो मद जनु जग जीति ठाढ़भे आनि ॥
सुनि इमि भाषण भृगुनायक को बोले रामचंद्र भगवान ।

तनक चूकपर अतिभारीरिस मुनिवर करत नाहिं हियध्यान ॥
सरा पुराना अति जांजरधनु छुवतै टूटिगयो अनयास ।
करौं कौनहित अभिमानहिं मैं कहौं न कछु बिचारि मतिरास ॥
विप्र भाषिकै जो निदरैं हम सुनिये सत्य सत्य भृगुनाथ ।
तौ असयोधा को दुनियां महँ भयबश जाहि नवावहिं माथ ॥
दैत्य देवता नर राजन महँ जहँलगि बीरकेरि परमान ।
होय बराबरि चहै विक्रम महँ हमते अधिक होय बलवान ॥
हमैं प्रचारै जो रणमहँ कोउ सुखसे लरैं होय किन काल ।
रणै डेरान्यो जो क्षत्रिय ह्वै ताको सहसबार धिरकाल ॥
सहज स्वभावहि मैं भाषतहौं कुलकी करत प्रशंसा नाहिं ।
बीर बांकुरे रघुबंशी जन कालहि डरत नाहिं रणमाहिं ॥
विप्र बंशकी तौ प्रभुता अस तुम्हैं डेराय अभय ह्वै जाय ।
जीते हारे अरु मारे द्विज क्याहिं कल्यान लीन जग पाय ॥
गूढ़ नम्रता युत रघुपति की सुनि बरबानि जानि भगवान ।
भये शांत उर भृगुनायक तब उघरे ज्ञान नैन हरियान ॥
राम रमापति करपकरौ धनु खैंचौ मिटै मोर अज्ञान ।
देत शरासन चढ़ि आपहिगो भृगुपति हृदय भयो भ्रमभान ॥
राम प्रभावहि पुनि जान्यो तब अतिशय पुलकि प्रफुल्लितगात ।
हाथ जोरिकै मृदु बाणी सों बोले प्रेम न हृदय समात ॥

स० जै रघुवंश सरोज बनारुण स्वच्छ प्रताप प्रभा उजियारे ।
जै मनुजाद महाबन दाहन उग्र हुताशन से अनियारे ॥
जै सुरधेनु धरा द्विजपालक घालक मोह मदादिकसारे ।
जै गुण शील दया सुखसागर नागर श्रीदशरत्थ दुलारे ॥
जै बलवंत अनंत प्रभाधर संत अनंतन को सुखदायक ।
जै छबिधाम महाअभिराम करोरिनकाम लजावनलायक ॥
जै मदमार बिदारन वारन धारन बंदि शरासन शायक ।
आनन एक कहा गुणगावहुँ राम रमापति जैरघुनायक ॥

अनुचित भाष्यों बहुजाने बिन क्षमिये क्षमाधाम द्वउभाय।
रघुकुल भूषण की जय जय जय जयसुखदाय रामरघुराय॥
यहि बिधि बिनती करि रघुपतिकी तपहित गये बनहिंभृगुराम।
डरे दुष्टनृप अपनेहीं भय कायर गवहिं पराने धाम॥
बजे नगारे नभ देवन के प्रभु पर फूल दीन बरसाय।
भये सुखारी नर नारी सब मिटिगो मोह शूल भय भाय॥
कथा मनोहर सुख सोहर यह रघुपति परशुराम संबाद।
मति सम गाई कहि बंदी द्विज पाई हृदय परम अहलाद॥

इतिश्रीभार्गवबंशावतंसश्रीमान्मुंशीनवलकिशोरात्मजस्यश्रीमुंशी
प्रयागनारायणस्याज्ञाभिगामीउन्नामप्रदेशान्तर्गतमसवासीग्राम
निवासीपं०बंदीदीनदीक्षितनिर्मितश्रीविजयराघवखण्डे
बालकाण्डेसप्तमोल्लासः॥ ७॥

श्रीरघुनंदन पद बंदन करि सब बिधि ध्याय जानकी माय।
कथा मनोहर प्रभु बिवाह की भाषत बंदि यथामति गाय॥
गये जानिकै भृगुनायक को मिथिला नगर गयो मुदछाय।
घने बाजने बाजन लागे मंगल साज सजे बहुभाय॥
झुण्डझुण्डमिलि मृगनैनीतिय अतिकल करहिं कोकिलागान।
नचैं अंगना अति उमंग युत गनगंधर्व बजावत तान॥
कहि न जाय सुख जनकरायको जनु निधि लही जन्म कंगाल।
त्रास नशायो सुखपायो सिय चकई यथा बिधूदय काल॥
हाथ जोरिकै तब मिथिलापति मुनि कौशिकहि कीन परणाम।
हे मुनिराया तुव दायाते तोस्यो शंभुशरासन राम॥
मान मर्दिकै महिपालन को म्वहिं कृतकृत्य कीन द्वउभाय।
वाजिब कर्तब जो करिबे कहँ सो अब आपु बताइय गाय॥
कह्यो मुनीश्वर सुनु चातुर नृप धनु आधीन रह्यो यह व्याहु।
भई सगाई सो टूटत धनु सुर नर नाग बिदित सब काहु॥
तदपि जायतुम प्रारम्भौ अब जो कछु अहै वंश व्यवहार।

बूझि विप्र गुरु कुल वृद्धनते लोकरु वेद बिदित आचार ॥
दूत पठावहु त्वर कौशल पुर राजहि खबरि देहु करवाय।
आवैं दशरथ नृप बरात साजि तौ सब काम जाय बनि भाय ॥
सुनि असआयसु मुनिनायक को जनकनरेश मुदित धरिमाथ।
लिखी पत्रिका नृप दशरथको तत्क्षण दई दूत के हाथ ॥
कौशलपुर कहँ पठवायो त्यहि फिरि सब महाजनन बुलवाय।
हाल हकीकति बतलायो सब साजहु हाट बाट पुरजाय ॥
मानि आज्ञा चलिआये सब निजनिज काज सवाँरन लाग।
बोलि पठाये परिचारक पुनि तिनते कह्यो मनोहर बाग ॥
जाय बनावहु उत्तमता ते सुंदर चित्र बिचित्र बितान।
शिर धरि आयसु चलि आये सब लागे करन तासु सामान ॥
बोलि पठाये बहु गुनियाँ जन जानत जे वितान निर्मान।
करि पद बंदन तिन ब्रह्माको करि प्रारंभ दीन सविधान ॥
खम्भ केदली के सुवरणमय विरचे साजि अनूपम साज।
जिनकी रचना अवलोकन करि चितमहँ चकित होत सुरराज ॥
हरी मणिनके रचि पत्ता फल विरचे पद्मराग के फूल।
उत्तम रचना अवलोकन करि आवै मन विरंचिके भूल ॥
हरी मणिनके वेणु बनाये सीधे हरे परैं नहिं जानि।
नागबेलि सुन्दर सुवरणकी स्वच्छ सवर्ण एक अनुमानि ॥
बंधन बाँधे रचि तेहीके बिच बिच लाग मौक्तिक दाम।
फूल सरोजनके काढ़े तहँ तिनकी यतन सुनौ मतिधाम ॥
लाल रंगकी जो माणिक मणि मर्कत होत रंगकी श्याम।
वज्रबतावत हैं उज्ज्वल रँग तैसै पीत पिरोजा बाम ॥
इकइक रँगकी रचि पाँखुरि बर विरचे अमित रंग जलजात।
फूल अष्टदल अरु षोड़शदल बत्तिस दलनकेर दरशात ॥
तिनपर पटली मकरंदनकी मानहुँ बैठकरत गुंजार।
रंग अनेकन के पक्षी बहु लागे हवा करत स्वर यार ॥

प्रतिमा देवनकी भेवन सह खम्भन माहिं बनाई चारु।
मंगल द्रव्य लिये ठाढ़ीं सब छबिको कौन करै विस्तारु॥
चौकपुराई गजमुक्तन की सुंदर सुघर अनेकन भांति।
आनँद उपजै अवलोके ते शोभा सकल कही नहिं जाति॥
सुभग रसालनके पल्लवबर बिरचे नीलमणिन को कोरि।
बौर बनाये तहँ सुवरण के मर्कत घँवरि रेशमीडोरि॥

स० बंदनवार रचे तिनके बर द्वारनद्वार अगारन बांधे।
बंदि अनंद बिलोकतही लगै मानहुँ फंद मनोभवसाधे॥
नैननमें बसिजात छटावह शोभघटा चहुँघा जनुनाधे।
धन्य बनावनहार उदार निहारत ब्रह्म भगे चुपसाधे॥

मंगल कलशा बहु भाँतिनके सजि सजि धरे द्वार प्रतिद्वार।
ध्वजा पताके छबि बांके अति पट अरु चमर चारु मनहार॥
दीप मनोहर वर मणियनके जाय न बरणि विचित्र वितान।
जौने मण्डफ महँ दुलहिनि सिय त्यहि छबि करै कौन कबिगान॥
रूप प्रभागर गुणसागर वर दूलह जहां राम सुखधाम।
लोक उजागर त्रय माड़वसो सुखमा कहि न जाय अभिराम॥
जैसी शोभा नृप मंदिरकी तैसिय नगर धाम प्रतिधाम।
देख्यो तिरहुति त्यहि औसर जें त्यहि लघु लगे चारि दशग्राम॥
सोही संपति जो नीचहु घर त्यहि सुरराज देखि ललचान।
कहते उपमा बनिआवै ना क्यहि बिधि भाषि करै कवि गान॥
प्राकृत तिरियनको साजे तन लक्ष्मी बसै जौन पुरमाहिं।
शोभा वरणत त्यहि नगरीकी शारद शेश आदि सकुचाहिं॥
इतकी गाथा इमि गाई कहि उत अब सुनो अवधको हाल।
दूत पठाये जो मिथिलापति पहुंचे रामनगर त्वर चाल॥
पुर सुन्दरता लखि हरषे चर अति आनंद लह्यो हिय माहिं।
खबरि जनायो नृप द्वारे महँ हम तौ दूत जनकके आहिं॥
समाचार सुनि श्री कौशलपति तुरतै तिन्हैं लीनबोलवाय।

दीनि पत्रिका पग प्रणाम करि उठिकै लीनि आपु महिराय॥
बांचि पत्रिका अति पुलके नृप नैनन बहे प्रेमके आंशु।
हृदय उमंगनसों आयो भरि धरिलिय मौन मारिकै सांसु॥
राम लक्ष्मणकी सूरति उर प्रिय पत्रिका बिराजी हाथ।
मुखते बानी बहिरयानी ना डूबे प्रेम उदधि नरनाथ॥
पढ़ी पत्रिका पुनि धीरज धरि हरषी सभा बात सुनि सांच।
राम मिलन सम सुख पायो तिन शीतलभई बिरहकी आंच॥
खेलत पाई सुधि भाइनकी आई प्रीय पत्रिका जानि।
भरत शत्रुहन द्वउभाई त्वर नरपति निकट पहूँचे आनि॥
गोद बैठिकै महराजा की पूंछत अति सनेह सकुचाय।
कहँते पाती यह आई पितु सो तुम हमैं देव बतलाय॥
कुशल प्राणप्रिय मम बंधव द्वउ हैं क्यहि देशमाहिं कहु तात।
सुनि प्रियबानी द्वउ भाइनकी पुनि नृप पढ़ी राम कुशलात॥
पुलके पाती सुनि भाईद्वउ अधिक सनेह समात न गात।
प्रीति पुनीतम लखि भरत्थ की सुखलहि सकल सभा हर्षात॥
पास बिठायो नृप दूतहि पुनि बोले मधुर मनोहर बात।
कुशल हमारे प्रिय बारेद्वउ तुम निज नैन निहारे भ्रात॥
श्याम गौरतन करशायक धनु धारे कसे कमर महँ भाथ।
वयस किशोरे अति भोरे मृदु विश्वामित्र महामुनि साथ॥
पहिंचान्यो तौ बतलावो कहि मोसन तिन स्वभाव परभाव।
प्रेमबश्य ह्वै यहि भांतिन ते पूंछत बारबार नरराव॥
मुनि लेवाय लैगे जादिनते तबते मिली सत्य सुधि आज।
जान्यो मिथिलापति कौनीबिधि कीन्ह्यों सुतन कौन तहँकाज॥
राजा दशरथकी बानी सुनि बोले दूत मनहिं मुसक्याय।
भाग्यमान जग तुम समान नृप दूसर नहीं और दिखराय॥
राम लक्ष्मण अस जिनके सुत जग आभरण शील बलधाम।
तिनकी समता कहँ पावैको सब बिधि धन्य रावरे नाम॥

पुत्र तुम्हारे उजियारे जग प्यारे संतजनन सुखधाम ।
पूछन लायक नहिं कौनिउँ बिधि सिद्धि स्वरूप प्रभा अभिराम ॥
देखत जिनको यश प्रताप नृप चंद मलीन छीन रविलाग ।
तिन कहँ चीन्ह्यों किमि भाषत प्रभु जिनकर अमल तेजजगजाग॥
रविहि बिलोकिय किमि दीपक लै त्रैपुर प्रकट जासु परताप ।
ऐसे बालक महिपालक तुव जिनकी कहि न जाय यशथाप ॥
सीय स्वयंबर महँ अगणित नृप बटुरे बली एक ते एक ।
शंभुशरासन कोहुँ टार्यो ना हारे सकल भूप सुनि टेक ॥
तीनिलोक महँ जे मानी भट मानी सबहि शक्ति शिवचाप ।
अतिव बिक्रमी जो दानवपति सोउ हिय हारि गयो करिदाप ॥
सहज उठावा शिव पर्वत ज्यहिं सोउ त्यहि सभा पराभवपाय ।
गयो भागि घर बलवैभव सब तहां गवाँय महा सरमाय ॥
पुत्र तुम्हारे तहँ रघुकुल मणि अतिबलधाम राम अभिराम ।
सहजहिं भंज्यो शिवशंकर धनु जिमि गज वारिजातकी दाम ॥
धनुष भंग सुनि भृगुनायक तहँ आये क्रोध बढ़ाये गात ।
आँखि दिखाईं बहु भांतिन तिन महा बिवाद बाद भो तात ॥
देखि रामबल धनु दीन्ह्यो निज करिबहु बिनै गये बन माहिं ।
बड़े बिक्रमी रघुनायक जस तेज निधान लषण तस आहिं ॥
कंपहिं जाके अवलोकत नृप जस गज सिंहसुवनकी डाट ।
भूप तुम्हारे लखि बालक द्वउ अबन सुहात और को ठाट ॥
सुनि प्रियबानी चर चातुर की अतिशै खुशी भये नरनाथ ।
देन निछावरि त्यहि लागे तब धारे दूत कानपर हाथ ॥
अति अनीति हैं नरनायक यह योग्य न लेब आपुकर दाम ।
हमरे भूपतिकी कन्या कहँ व्याहे जात पुत्र तुव राम ॥
चार चातुरी सुनि राजा सह सबरी सभा गई हरषाय ।
धर्म जानिकै सुख मान्यो अति सुनिये अग्रहाल खगराय ॥
उठिकै राजा तब संसदिते गुरु कहँ दीनि पत्रिका जाय ।

कथा सुनाई मुनिनायक कहँ आदर सहित दूत बोलवाय॥
राम सुयश सुनि सुखपायो मुनि बोले अति सनेह दरशाय।
पुण्यवान जन सुखपावत जग यामहँ तनिक झूंठ नहिंभाय॥
यथा धरातलकी नदियां सब सागर माहिं जाहिं अनयास।
यद्यपि ताको कछु इच्छा नहिं भूपति मानु बचन विश्वास॥
बिना बुलाये तिमि संपति सुख पहुंचत धर्मवान के पास।
वृक्ष लगावत जो जाकर जस तसफल मिलत खानको खास॥
सुर गुरु गाइन अरु बिप्रन के सेवक सब प्रकार तुम राव।
तिय कौशल्या तैसीही पुनि महा पुनीत जासु परभाव॥
पुण्यवान अरु धर्मवान जन भूपति तुम समान जगमाहिं।
भयो न कोऊ है औसर यहि आगे होनहार कोउ नाहिं॥
तुम ते बढ़िकै जग सुकृती को राजन राम सरिस सुतजासु।
धर्म पुण्य व्रतधर नागर वर बालक चारितेज की रासि॥
धन्य तुम्हारे कुल कीरति को तुमकहँ सर्ब काल कल्यान।
देरन लावो सजवावो अब दिव्य बरात बजाय निशान॥
पाय सुआयसु गुरुनायक को चलि भे माथ नाय महिपाल।
उचित टिकाश्रम दै दूतहि पुनि गे रनिवास माहिं ततकाल॥
पास बुलाईं सब रानी तहँ आईं तुरत देर नहिं लागि।
बांचि सुनाई नृप पत्री स्वइ सुनतहि सकल गईं अनुरागि॥
अति हरषानी महरानी सब बरहीं यथा सुनत घनबानि।
मुदित अशीषैं गुरु नारी तब पूरण होहि आश तुवरानि॥
मन महतारिन सुखपायो अति सुनिकै सुयश बालकन क्यार।
लेहिं परस्पर प्रिय पाती सो छाती लाय जुड़ावहिं यार॥
कीरति करणी द्वउ पुत्रन की भूपति कही बारहीबार।
श्री मुनिराया की दाया यह असकहि राउ गये दरबार॥
रानिन टेरे तब याचक गण औ द्विज वृंद लीन बुलवाय।
दान मान सों संतोष्यो सब आशिष देत चले हरषाय॥

नगर अयोध्या महँ घर घर प्रति लागे होन मंगलाचार।
सुखद बधावा बाजन लागे वाजिब होन लाग व्यवहार॥

स० राम सियाकर व्याह उछाह कथा सुनिलोग सबै अनुरागे।
द्वार अगार गली नृप मारग चौहट हाट सवाँरन लागे॥
बंदि कहा बरणै मुख एक महा सुदजे पुर कौशल पागे।
तुच्छ सबै सुरराजाकि राजके साज समाजसु वासुख आगे॥

यद्यपि कौशलपुर आनंद धुर सुखमा सदन सदा दरशात।
राम बास शुचि सुख मंगल मय उपमा कहत चित्त थकिजात॥
तद्यपि सुन्दर प्रीति रीतिसों रचना रची बिचित्र बनाय।
ध्वजा पताका पट चामर बर दरदर चारुरहे फहराय॥
हाटठाटसों सँवराई शुभ शोभा कहि न जाय खगराय।
कंचन कलसे निर्मल जलसे भरि प्रतिद्वार दये धरवाय॥
मणिन सवाँरे बंदनवारे द्वार अगार दये बँधवाय।
दूबरोचना दधि अक्षत शुचि गंधित सुमन माल सजवाय॥
सुखमा मंगल मय निज २ घर लोगन रचे बनाय बनाय।
अतर गुलाबन सों सींचे मग मोतिन चौक चारु पुरवाय॥
जहँ तहँ युवती नव झुंडन मिलि षोड़श साजि २ शृंगार।
कोकिल बैनी मृगनैनी कल चंद्राननी रूप आगार॥
रति मदहारी सुकुमारी अति प्यारी प्रभारही तन छाय।
गावहिं मंगल मृदुबानी सों चाल बिलोकि दंति सरमाय॥
जाय बखानो किमि भूपति घरजहँ जगमोहन रच्यो बितान।
द्रव्य मनोहर बहु मंगल मय अनुपम राज साज सामान॥
बाजहिं बाजन विविध भाँतिके को कहि सकल गनावै नाम।
शब्दसमान्योदिशि चारिहुमहँ गहगहमच्यो धाम प्रतिधाम॥
कतहूं बाजत डफ ढोलक अरु कतहूं खुड़क खंजरिन केरि।
कहूं सरंगी स्वररंगी कहुँ रहे सितार तार रव घेरि॥
कहूं उपंगै मुरचंगै कहुँ मुरली शब्द रह्यो सरसाय।

मोहरि बाजै मन मोहनि कहुँ कतहूं शंख रह्यो धुधुआय ॥
बजैं घनेरी कहुं भेरी बर तुरही अरु रवाब करनाल ।
कहुँ स्वरआलै करतालै कहुँ झमकत झांझ पखावजताल ॥
कतहूं बाजैं अलगोजा कल कहुँ नरसिंह रहे हहराय ।
नस तरंग अरु जल तरंग कहुँ दुंदुभि शोर घोर रह छाय ॥
कहूं नफीरी स्वर सीरी अति कतहूं बाजि रही सहनाय ।
घंटा बाजैं जनु गाजैं घन कतौं तँबूर रहे घननाय ॥
कतहूं बेला अलबेला की उड़ि रहि मंद मंद आवाज ।
कतहूं बाजत श्री मंडल स्वर मानहुँ गाजि रही घन गाज ॥
चंग जफीली अरु खटका कहुँ डमरू रही ताल सों बाजि ।
मोर बीन अरु मुरज बजावहिं गन गंधर्व रहे लखि लाजि ॥
बजैं नवीने सुरबीने कहुँ सुर मंदार शब्द रहछाय ।
खमक पाविका है गमकत कहुँ कहुँ कानूर मंदिरा भाय ॥
कहूं बिपंची रव छाये भल सुनि मन मोहि २ रहि जायँ ।
बीणा वहती अरु महती धुनि सुनि कलकंठ कंठ सरमाय ॥
कहूं कच्छपी अरु विलासिका बाजत रुद्र बीणा कहुँ यार ।
कहूं मंडलिका बाजन लागे जिनकी महा मंद हहकार ॥
कहूं पताका त्रिपताका अरु कतहूं रह्यो हंस मुख बाजि ।
कहूं कर्तरी मुख बाजत बर तुंडक रह्यो कहूं कहुं गाजि ॥
शुक मुख खटिका मुख बाजै कहुँ कतहूं अर्द्धचंद्र रह्यो छाय ।
पद्म कोश अरु कहुँ सूचीमुख कहँ लगि वरणि कहै कविगाय ॥
विरद बखानैं बर बंदी जन द्विज गण करैं बेद धुनि धाम ।
सुभग सोहागिनि मंगल गावैं लै लै नाम जानकी राम ॥
उत्सव भारी घर छोटा अति जवन अँबान सुनौ हरियान ।
तब उमँगान्यो चहुँ ओरन कहँ छायो धरा और असमान ॥
श्री अज नंदन के मंदिर की शोभा भाषि लहै को पार ।
जन सुखदायक सुरनायक जहँ लीन्ह्यो रामचंद्र अवतार ॥

भूप भरतहि बोलवायो पुनि औअस हुकुम दीन फुरमाय।
देरन लावहु चलि जावहु सुत हयगय रथन सजावहु जाय॥
चलहु वेगिलै रघुनंदन की सुखद बरात साजिकै तात।
सुनि अस आयसु महराजा को पूरे पुलक माहिं द्वउ भ्रात॥
आय पहूंचे नृप पौंरी पर औ दारोगन लीन बुलाय।
कह्यो सजावहु बर घोड़न कहँ सुंदर बीन जीन धरवाय॥
भरत भावते को आयसु लै घोड़ा सजैं लाग थनवार।
बाजि विराजैं बहु रंगन के ते सब वरणि लहै को पार॥
मुश्की अबलख अरु सबुजा हय महा विशाल रंग के लाल।
कोइ कुम्मैता अरु नकुलाकोइ सुरखा समुद अंग विकराल॥
श्यामकरण अरु हंसबरण कोइ बहुतक स्याह सलोनेबाजि।
रंग संदली बोखारद कोइ जिन लखि जाहिं सूर्य हय लाजि॥
अश्व संखिया महिखूने कोइ सिरगा रंग सजावन लाग।
चालि चौधरा पँच कल्यानी साजन लगे सहित अनुराग॥
जरदा गर्रा अरु ताजी हय पँच रँग तुरँग रहे छवि छाय।
कच्छी मच्छी अरु लच्छी हय गति लखि बाय रहै मुहँबाय॥
चयत चीनियाँ दरियाई अरु फुलवारियाँ कंजु कलबाजि।
अश्व तेलिया कंधारी अरु अरबी सजे राजि की राजि॥
खोलि पेटारे आभूषण के साजन लगे अनूपम साज।
निर्मल जल सों तन धोये अति शोभा कहत लगत उरलाज॥
मलि मलि बाँधे जीनपोश बर गंडा कंध रहे छवि छाय।
शिरपर कलँगी मुख पट्टा धरि हैकल आलि ललितबँधवाय॥
कसि गज गाहैं सजवाई शुभ सुंदर पेशबन्द रँगदार।
दुमची उत्तम जगमगाहिं बर ललित लगाम दई मुख डार॥
यहि विधि साजे बर बाजी शुभ तिनपर छैल भये असवार।
भरत सरिस हैं नृप कुमार सब सुंदर रूपवान जनु मार॥
धारे अंगन महँ भूषण बर कर शर चाप तूण कटि माहिं।

बाजि नचावैं उझकावैं अति मानहुँ पौन गौन करि जाहिं॥
चित्र चालपै मोर चालपै चलैं मराल चाल कोइ बाजि।
हिरन चौकड़ी हय फेरैं कोइ मनहुँ उड़ात खगन की राजि॥
नरंते अधिकी खग दौरत हैं खगते अधिक नीर सरि क्यार।
त्यहिते अधिकी हरि धावत है हरिते अधिक तीरगति यार॥
तीरहु ते बढ़ि पौन गौन है ताते अधिक नैन की चाल।
नैनहुँ ते बढ़ि मन दौरत है मन ते अधिक बाजि विकराल॥
शोभा अश्वन की गावन बढ़ि की असवार बतावन गाय।
उतरत आवत जनु अंबर ते सुंदर सभा इन्द्र की आय॥
छरे छबीले छबि छाके सब शूर सुजान छैल असवार।
दुइ २ प्यादा असवारन प्रति जे असिकला माहिं हुशियार॥
बाँधे बाना बरबीरन को बाहर नगर निकरि भे ठाढ़।
सुनि धुधकारैं धुनि डंकनकी उछलत चलत बाजिबे खाढ़॥
साजन लागे रथ सारथि तब सुंदर चित्र बिचित्र बनाय।
ध्वजा पताका मणि भूषण युत अनुपम छटारही दरशाय॥
घंटा घंटिन की सुंदर धुनि गर्जत मनहुँ मंद घन जाल।
विमल बरूथी छवि गूथी अति झालरि लगे मणिन के माल॥
चक्र चमंकैं अष्टधात के बिच २ लगी रतन की पांति।
लखत स्यंदनन की शोभा शुभ रबि रथ शोभ सकुचि समाति॥
साजि २ कै यहि भांतिन रथ जोते श्याम कर्ण बर बाजि।
सकल अलंकृतअतिसुंदरतनछबिलखिजात मुनिनमनलाजि॥
थलकी नाईं जे जलहू महँ चाल कराल जात हिहनात।
टाप न बूड़ैं कहुँ पानी महँ रहि २ बेग माहिं अधिकात॥
साजि साजि कै तन अंबर बर भूषण अस्त्र शस्त्र लै हाथ।
रथी बिराजे रथ ऊपर तब मानहुँ अमित रूप सुर नाथ॥
चढ़ि चढ़ि स्यंदन पुर बाहर तब लगी बरात जुरन इकठाम।
होत शकुनवाँ अति सुन्दर शुभ जो जहँ जात जौन से काम॥

हाथी साजत पीलवान पुनि तिनकी छटा कहै को गाय ।
कोइ इकदंता औ दुइदंता कोइ बिन दंत रहे दरशाय ॥
खड़े पहारीसे भारी गज मद की श्रवत पनारी भाल ।
शोभा कहिबे ते सकुचै मति इक ते एक रूप बिकराल ॥
झूमैं झूमैं तलझूमैं अति जकरे परे जँजीरन पायँ ।
शानलजावत ऐरावतकी जलधर देखि २ सकुचायँ ॥
अति उद्दण्डन शुण्डादण्डन सोखत सरित सुकुण्डन पानि ।
झुण्डन झुण्डन मद मुकैं बहु धक्कन धुक्कि देत गिरिभानि ॥
चलत हलत भुवि शेश कलिमलत फण फटकारि करत चिग्घार ।
दाढ़ दरक्कत कोलाननकी कमठ पीठि फटिजात दरार ॥
बांक हांक सुनि सकात दिग्गज भागि लुकात जात भयखात ।
दीरघ रद कद विहद जलद सम पद मज़बूत उच्च अतिमाथ ॥
अड़हिं ऐंड़ करि जो मग्गन महँ फिरि नहिं डग्ग अग्ग कहँलेत ।
गिरि हहलावहिं भवन ढहावहिं धावहिं पवन चुनौती देत ॥
आनि न आनैं कछु अंकुश की भागैं तोरि २ आलानि ।
कानि महावत की मानैं ना चूसैं शशिहि शुण्ड नभ तानि ॥
नभ पथरोकैं दिननायक रथ बल गथ अकथनीय तिनक्यार ।
समर शिंगारे कदवारे अतिभारे जैतवार धजदार ॥
सोहैं हीरन के हौदा बर जग मग होत जड़ाऊ काम ।
घहरैं घंटा घन घोरन सों दुंदुभि बजैं मनौं सुर धाम ॥
झलकैं झूलैं कलधौतन की ललकैं लरीं जरी मुक्तान ।
कनक पहारन के ऊपर जनु दीन्ही तानि मयूखैं भान ॥
धरी अमारी तिन ऊपर बर सुवरण गढ़ी मढ़ी मणिजाल ।
कंचन कलशा चम चम चमकैं झालरि लगे जवाहिर लाल ॥
बिछीं सफेदी मसनन्दैं ते शारद चन्दै रहीं लजाय ।
साफ सुपरदा जरबाफन के गिर्दा बरदा बन दरशाय ॥
इक इक हाथी के हौदा महँ बैठे चारि चारि असवार ।

चिघरत चलि भे पुर बाहर कहँ अमित मतंग तार के तार ॥
औरौ बाहन बहु साजे गे शिविका सुभग सुखासन यान ।
चले बिप्र गण तिन ऊपर चढ़ि जनु तनु धरेवेद भगवान ॥
विरद बदैया जे बंदीजन मागध सूत आदि समुदाय ।
चलेयान चढ़िजो लायक ज्यहि सुन्दरसाज सहितसुखपाय ॥
बस्तु अनेकन सों भरि भरिकै शकटा चले पाँति की पाँति ।
लदे साँड़िया अरु खच्चर वर वृषभ अनेक जाति बहुभाँति ॥
मंजु मिठाई मेवादिक लै कोटिन काँवरि चले कहार ।
सजिसजि सेवक गणगमने बहुशोभा कहतलहत नहिंपार ॥
छाई आनँद अति सबके मनतन महँ पुलकरही उमगाय ।
कब बिलोकिहैं भरि नैनन सों सुन्दर राम लषण द्वउभाय ॥
घहरैं घंटा बहु हाथिन के स्यंदन वृंद चारु झनकार ।
दीरघहींसनि बर बाजिनकी छायो चहूंओर हहकार ॥
आगे हलकाहैं हाथिन को तिनके पाछे नवल बछ्यार ।
रथकी पाँती तिन पाछेहैं इत उत जात सुतर असवार ॥
औरौ बाहन दल पाछे त्यहि शिविका सुखद सुखासनयान ।
आसा बल्लम छड़ीदार नर भ्रमत निशान जात असमान ॥
भई भीरबहु नृप द्वारे महँ अपन पराव सुनिय नहिं कान ।
कहै हकीकतिको बढ़िकै बहु रज ह्वै जात परे पाषान ॥
चढ़ी अटारिन महँ देखैं तिय मंगलथार आरती हाथ ।
गीत मनोहरतासों गावहिं भल बरसैं फूल फूल के साथ ॥
स्यंदन साजे तब सुमंत दुइ जोते वेग चाल के बाजि ।
नृप पहँ आने द्वउ सुन्दर रथ वर्णत जात बानि मति लाजि ॥
राज साज सों रथ सोह्यो इक इक रथ तेज पुंज दरशाय ।
मुनि वशिष्ठ कहँ त्यहि स्यंदन पर दीन चढ़ाय हर्षिमहिराय ॥
गिरिजा नंदन पद बंदन करि हर गुरु गौरि चरणउर ध्याय ।
श्री अज नंदन सुख स्यंदन पर आपहु चढ़े द्विजन शिरनाय ॥

सह बशिष्ठ के नृप सोहैं कस सुर गुरु साथ यथा सुर नाथ ।
उपमा बर्णत बनि आवत नहिं देखत बनत हर्ष के साथ ॥
वेद रीति सों कुल कर्तब करि देखि बनाव जानि सब हाल ।
सुमिरि राम उर गुरु आयसु लै शंख बजाय चले महिपाल ॥
भये अनंदित मन देउता गन देखि बरात रामकी जात ।
नभते फूलनकी बर्षा करि रंभा करैं नृत्य हरषात ॥
होतकोलाहल बहु चारिउदिशि चिघरत द्विरद बाजिहेहनात ।
बल बल बल बल करैं सांड़िया बहुतक घंट घंटि घहनात ॥
खर खर खर खर रथ दौरतहैं रब्बा उड़ैं पवन के साथ ।
छाई अँधेरिया आसमान महँ रजसौं मूंदिगये दिननाथ ॥
हहर निशानन को छायो बड़ बात सुनाय परत नहिं कान ।
बाजन बाजे नभ बरात महँ उठिगे महा घोर घमसान ॥
सुर नर रमनी मंगल गावैं पावैं महामोद मन माहिं ।
सुखदबधाई सहनाई शुभ बाजत चली गली महँ जाहिं ॥
आतशबाजी की शोभा बड़ि पावक फहर फहर फहराय ।
करैं बिदूषक गणकौतुक बड़ हास बिलास कुशल अतिभाय ॥
बाजि नचावहिं नृप कुमार बर धुनि सुनि सुखद मृदंगन केरि ।
चकित निहारैं नट नागर तहँ डिगैं न ताल नृत्य गति हेरि ॥
शोभा बरणत बनिआवै नहिं बनी बरात बेश सब भांति ।
होत शकुनवाँ अति सुंदर शुभ आनँद दशौंदिशा दरशाति ॥
नीलकण्ठ खग अति आनँद सों चारा चुनत बैठ दिशि बाम ।
मानहुँ भाषत मुदमंगल सब सुंदर समय सिद्धि को धाम ॥
सुख सह बैठो फरे खेत महँ दहिने काग पर्यो दरशाय ।
नकुल दर्श भो सब काहूको डोलत त्रिबिध पवन सुखदाय ॥
सुभग सोहागिनि तिय धारे घट गोदी लिये मनोहर बाल ।
सन्मुख आवति दरशावति भै गमनत मत्त मतंगमचाल ॥
लोवा फिरि फिरि दिखरावै मुख बछवा खड़े पियावै गाय ।

झुण्ड कुरंगन को आवत बहु दहिनी दिशा पस्यो दिखराय ॥
क्षेमकरी के वर दर्शन भे मानहुँ क्षेम रही बतलाय ।
श्याम बाम दिशि वर बिरवा पर बोलत मधुर बचन लवलाय ॥
दधि झष सन्मुख लै आयो कोइ दुइ द्विज लिहे पुस्तकी हाथ ।
मिले सामुहें ते आवत उत कीन प्रणाम भूप धरि माथ ॥
मंगलमय कल्याणमयी अति बांछित मनोरथहि दातार ।
सत्य होन के हित मानहुँ ये प्रगटे सर्व शकुन इक बार ॥
मंगल शकुना सब सहजै त्यहि सुन्दर सगुण ब्रह्म सुत जासु ।
ताकहँदुर्लभकह दुनियाँमहँ निधि सिधिमिलतआनिअनयासु ॥
राम सारिखे बर सुन्दर जहँ दुलहिनि रूप राशि सिय माय ।
दशरथ मिथिलापति समधी शुचि कीरति विमलसकैकोगाय ॥
सुखद व्याह अस सुनि शकुनौ सब सहितउछाह परे दिखराय ।
भये आजते अब सांचे हम विधि अस समय लगायो भाय ॥
यहि बिधि सुन्दर शुभ औसर महँ भयो बरात केर प्रस्थान ।
हय गज गाजहिं बाजन बाजहिं छायो शोर भूमि असमान ॥
रविकुल भूषण को आवत सुनि नृपति बिदेह हृदय हरषाय ।
यत्न पूर्बक मग अन्तर महँ सरितन सेतु दीन बँधवाय ॥
टिकिबे कारण ठाम ठाम पर सुन्दर धाम दीन बनवाय ।
भरी सम्पदा जहँ सुर पुर सम देखत सुर समाज ललचाय ॥
सुन्दर भोजन अभिलाषा सम सोवन हेत सेज सुखदाय ।
ओढ़न पहिरन हित अंबर बर पावहिं सकल यथारुचि भाय ॥
नित्त नबीने सुख प्रापत लखि भूले सकल बरातिन धाम ।
यहि बिधि चलिकै कछु औसर महँ पहुँचे जनक पुरी तट बाम ॥
आवत सुनिकै बर बरात कहँ औ गह गहे निशानन कान ।
घोड़ा हाथी रथ पैदर साजि सबकोउ लेन चले अगवान ॥
थार कटोरा कल कंचन के तिनमहँ ललित असन भरवाय ।
सुन्दर व्यंजन बहु प्रकार के कंचन कलश बारि भरवाय ॥

बिबिध मिठाई मेवादिक सब अमृत सरिस भरे पकवान।
दल फल अंकुर बहु प्रकार के को करि सकै बस्तु अनुमान॥
पाट पटम्बर बर भूषण मणि नाना रतन जवाहिर लाल।
खगमृगहय गय अरु स्यंदनगन शिविका सुखद सुखासनयान॥
अपर पदारथ बहु मंगल मय तेल फुलेल सुगंधित माल।
भेंट कहां लग कहि गावै को दीनि पठाय जनक महिपाल॥
चना चबेना दधि चिडुआदिक अमित प्रकार केर उपहार।
भूप पठाये मन भाये सब भरि भरि कांवरि चले कहार॥

स० देखि बरात प्रभा अधिकात अनंद महा अगवानि न मानी।
है सुखमा दरशात अनूपम शारद पै नहिं जात बखानी॥
राम कुमार जहाँ बनरा बनरी जहँ भूमिसुता जगरानी।
बंदि अनंदित आठहु याम सबै ऋधि सिद्धि भरैं जहँ पानी॥

आवत लखिकै अगवानिन कहँ कीन्हे सकल बरातिन ठाट।
बजे अवाजन सों बाजन घन लागी बेश शोभ की हाट॥
मिलिबे खातिर फिर आपुस महँ कछु बगमेल चले उरगाद।
मानहुँ आनँद के अंबुधि दुइ करत मिलाप त्यागि मर्य्याद॥
देव सुन्दरी उर आनँद भरि गावहिं गीत फूल बरसाय।
देव बजावैं नभ दुन्दुभि घन चहुँदिशि मोद रह्यो उमगाय॥
बस्तु भेंट हित लैआये जो सो नृप अग्र दीन धरवाय।
बिनती कीन्हीं बहु भाँतिन सों अति अनुराग सहित शिरनाय॥
हर्षि महीपतिलै लीन्ह्यों सब फिरि बखशीश याचकन दीनि।
कीनिनिछावरि पुनिनेगिनकहँ आदरसहित सकलतिनलीनि॥
पूजि बड़ाई करि आछी बिधि फिरि जनवासे चले लिवाय।
परे पाँवड़े पाटम्बर के तापर पैर धरत महिराय॥
बिभव देखिकै कौशलपति को धन मद धनद तज्यो ततकाल।
फूल बरसिकै सुर जै जै करि भाषैं धन्य अवध महिपाल॥

दीन्ह्यों सुंदर जनवासा जहँ सब कहँ सब सुपास सब भांति ।
यहौ हकीकति असबीतति भै आगे सुनौ उरगआराति ॥
बात जानकी जी जानी यह आय बरात गई पुर माहिं ।
आपनि महिमा दरशाई कछु गिरिजा जानि जात सो नाहिं ॥
हिय महँ सुमिरण करि सिद्धिन को तुरतै तहां लीनबुलवाय ।
नृप पहुनाईके करिबे हित जनवासे महँ दियो पठाय ॥
सियको आयसु शिर ऊपर धरि आईं सिद्धि जहां जनवास ।
लिये सम्पदा अरु सबरे सुख सुरपुर केसे भोग विलास ॥
लख्यो बरातिन जब निज निज थल सहजै रहे देव सुखछाय ।
भेदि विभव को कोउ जानै ना सबरे रहे जनक यश गाय ॥
रघुपति जानी सिय महिमा तब हरषे हृदय हेतु पहिंचानि ।
दुर्घट जानब सो सबही को भुवनेश्वरी सिद्धि की खानि ॥
जनक आगमन सुनि भाई द्वउ अति आनन्द भये उरमाहिं ।
गुरुते भाषत महँ सकुचत उर मुखते कहत बनत कछुनाहिं ॥
मनमहँ लालच पितु दर्शन को नैनन प्रेम आंशु रहे छाय ।
दशा बिलोकी सो कौशिक मुनि जाने प्रेम मगन द्वउ भाय ॥
हृदय लगाये द्वउ बंधव तब लखि अनुराग गये हरषाय ।
चले संगलै जनवासे कहँ राजत जहां भानुकुल राय ॥
भूप निहार्‌यो भरि नैनन सों आवत सुतन सहित मुनिनाह ।
उठे हरषिकै सुख अंबुधिमहँ मानहुँ चले. थहावत थाह ॥
कीनि दण्डवत मुनिनायक कहँ नरपति हाथजोरि शिरनाय ।
मुनि उठायकै भरि अंकम महँ हृदय लगाय लींन हरषाय ॥
आशिष दै कै कर फेर्‌यो शिर पूंछी खैर कुशल सब भाँति ।
कीनि दण्डवत द्वउभाइन पुनि हिय महँ महा मोद उमगाति ॥
सुतन बिलोकत सुख पायो नृप दशा सो कहि न जाय खगराय ।
हिय भरि दुःसह दुख मेट्यो सब शवतन मनहुँ प्राणगे आय ॥
पुनि वशिष्ठ पद शिरनायो तिन मुनिवर मुदित लीन उरलाय ।

आशिष दैकै कर परस्यो शिर आनँद कहि न जाय कछुगाय ॥
फेरि ब्राह्मणन के चरणन महँ करत प्रणाम भये द्वउभाय।
दई अशीषें मन भावत तिन जीवहु लाख बरस रघुराय ॥
भरत शत्रुहन द्वउ भाइन पुनि भाइन पगन कीन परणाम।
महा प्रेमसों अति आदरसह लीन उठाय लाय उरराम ॥
मिले लक्ष्मण द्वउ भाइन पुनि पुलकावली रही तन छाय।
गिरिजा आनँद वहि समयाको मोसन कछू बरणि नहिंजाय ॥
पुरजन परिजन अरु मंत्रीगन याचक मीत जाति कुलभाय।
मिले यथाविधि प्रभु सबही कहँ परम दयाल शील दरिआय ॥
श्री सुख दायक रघुनायक को देखि बरात गई हरषाय।
उत्तम करणी कुल तरणी की बरणी प्रीति रीति नहिं जाय ॥
सोहैं चारिउ सुत भूपति ढिग जनु तनु धरे बैठ फलचारि।
लखि पुत्रनसह नृप दशरथ कहँ महा प्रसन्न नग्र नर नारि ॥
करिकै बर्षा बरफूलनकी सुरगन बाजन रहे बजाय।
ताल भेद सों नृत्यादिक करि सुरतिय रहीं सुमंगल गाय ॥
शतानन्द अरु द्विजमंत्री गण मागध सूत आदि अगवान।
सहित बरातिन सन्माने नृप आयसु माँगि चले अस्थान ॥
लग्नते पहिले चलि आई है सुखद बरात नग्र महँ भाय।
ताते आनँद अति उमग्यो है सबके हृदय रह्यो सुख छाय ॥
बिधि सन भाषैं अभिलाषैं सब बाढ़ैं अप्रमान दिनराति।
जामहँ आनँद अति बरसै पुर पावैं जन्म लाभ सब भाँति ॥
अवधि मनोहरता की राघव सिय सुकृत अवधि दोउमहिपाल।
जहँ तहँ पुरजन कहिगावैं अस मिलि नर नारि वृद्ध औ बाल ॥
जनक सुकृतकी सिय मूरति है दशरथ सुकृत रूप रघुनाथ।
इनसम काहुन आराधे शिव साधे सहज चारि फल हाथ ॥
भयो न इनसम कोउ दुनियां महँ है नहिं अग्र होन को भाय।
भागि हमारिउ बड़ि पूरुबकी जन्मे जनकपुरी महँ आय ॥

राम जानकी की देखी छबि हम सम सुकृतमान को आन।
व्याह विलोकब अब रघुबर को लोचन लाभ लेबअप्रमान॥
कहहिं परस्पर तियवानी मृदु सखि यहि ब्याह माहिं बड़लाहु।
बड़ी भागि सों औसंघट यह बिधि अस प्रगट कीन उतसाहु॥
नृपति नेह बश सिय प्यारी को पठवहिं बार बार बोलवाय।
लेन आइ हैं तब बंधव द्वउ शील सनेह शोभ दरिआय॥
बिबिध भांति सों पहुनाई तब होइहै अति सनेह बिस्तारि।
को असपूरुषसखिदुनियांमहँ जाहिनअसि पियारिससुरारि॥
तब तब लखिकै राम लषण कहँ होइ हैं सुखी नगर नर नारि।
जन्म धरे को फल पैहैं सब अस संयोग दीन बिधि डारि॥
राम लषण की जसि जोड़ी सखि तसदुइ और भूप सँग बाल।
इक तन साँवर इक गौरे रँग सुंदर अंग मनोहर चाल॥
देखि जे आये ते भाषत अस जनु बिधि रच्यो आपने हाथ।
लषण शत्रुहन महँ आवत मिलि इकअनुहारि भरत रघुनाथ॥
सहसा कोऊ पहिंचानैं ना नख शिख सुभग अनूपम गात।
बरणि न जावै मनभावै अति उपमा कतहुँ नाहिं ठहरात॥
शील नम्रता बल बिद्या अरु शोभा विभव तेज आगार।
इन सम येई कहि देई अब दूसर नहिं दिखात संसार॥
यहि बिधि कहिकै पुरनारी सब कोंछु पसारि कहैं विधिपाहिं।
चारिहु भैया पुरब्याहौ यहि गावन गीत हमहुँ मुदमाहिं॥
यहिबिधि भाषहिं तिय आपुसमहँ पुलकितगात नैन भरिवारि।
पुण्य पयोनिधि द्वउभूपति सखि सब कछुनीककरहिं त्रिपुरारि॥
सब नर नारी अभिलाषैं इमि हर्षित रहे राम गुणगाय।
मिथिलापति को वह आनँद हद हमते कहि न जाय खगराय॥
सीय स्वयम्बर महँ आये जे ज्ञानी महा साधु महिपाल।
देखिबंधु सब सुखपायो तिन गायो जो न जात क्यहुकाल॥
उज्ज्वल रघुपति यश गावत मुख निज निज धामगये नरराय।

इतकी गाथा कहि गाई इमि आगे फेरि कहब मनलाय ॥

इतिश्रीभार्गवबंशावतंसश्रीमान्मुंशीनवलकिशोरात्मजस्यश्रीमुंशी
प्रयागनारायणस्याज्ञाभिगामीउन्नामप्रदेशान्तर्गतम-
सवासीग्रामनिवासीपण्डितबंदीदीनदीक्षितनिर्मित
श्रीविजयराघवखण्डेबालकाण्डेश्रीरामचंद्रबरात
आगमनबर्णनन्नामअष्टमोल्लासः ॥ ८ ॥

बीत्यो अवसर यहि भांतिन कछु प्रमुदित नगर नारिनरवृन्द।
गावहिं रघुपति गुण पावहिं सुख चहुँदिशि छायरह्यो आनन्द॥
लग्न महूरत दिनआयो चलि हिमऋतु मार्गशीर्ष शुचिमास।
ग्रह तिथिबासर नखत योगबर लग्नशोधि बिधि कीनप्रकास॥
लिखि पठवाई सो नारद कर शोचि बिचारि सुखद सब भांति।
इतके गणकन ठहराई स्वइ जानी सुनी सबहिं यह बात॥
कहहिं ज्योतिषी ये दूसर बिधि इनकी बुद्धि बरणि नहिंजाय।
पुर नर नारी सब याही बिधि आपुस माहिं रहे बतलाय॥
धेनु धूरिकीहै समया शुभ सिद्धि स्वरूप सुमंगल मूल।
द्विजन बतायो अस बिदेह सों सुंदर समय जानि अनुकूल॥
भूप पुरोहिततें भाष्यो तब कारण अब बिलंब को काह।
कह्यो पुरोहित तब मंत्रिन ते साजहु सकल ब्याह उत्साह॥
सुनि अस आयसु शतानंद को मंत्री सजन लाग सामान।
अमित पदारथशुचि मंगलमय कंचनकलश साजिसबिधान॥
देर न लागी लै आये सब जो कछु उचित ब्याह महँ आय।
दूब रोचना दधि अक्षत दल फल अरु फूल मूल समुदाय॥
बजे अवाजन सों बाजन तब लागे होन मंगलाचार।
वेद ब्राह्मण बांचन लागे लागे होन बंश व्यवहार॥
लेन बरातिन को आदर सह चलिभे सकल साज शुभ साजि।
जाय पहूंचे जनवासे महँ शोभा कहत जात मतिलाजि॥

ठाट देखि कै नृप दशरथ को हलुके लगे तिनहिं सुरराज ।
नीति उजागर सब गुण आगर रघुकुलराज राज शिरताज ॥
हाथ जोरिकै कहि भाषतभे अति नम्रता सहित शिरनाय ।
समै सोहावन अब आयो चलि धारिय पायँ भानुकुलराय ॥
देर न लागी अस सुनतै खन परिगै चोट नगारन माहिं ।
बिबिध बाजने बाजन लागे बरणे सकल जात सो नाहिं ॥
कुल बिधि करिकै गुरु आयसुलै राज समाज सहित नरनाथ ।
गिरिजानंदन पद बंदन करि चलिभे बिप्र बृन्द लै साथ ॥
बिभव बड़ाई श्रीदशरथ की नैनन देखि देव ब्रह्मादि ।
लगे सराहन हज्जारन मुख निजनिज जन्म जानिकै बादि ॥
जानि सुमंगल को औसर सुर बरसन लगे फूल झरि लाय ।
देव किन्नरी नाचन लागीं सुन्दर गान तान सों गाय ॥
शिवब्रह्मादिक सुर मण्डलसब चढ़ि निजयानसहितउत्साह ।
प्रेम पुलकि तन गुण गावत मन देखन चले राम को ब्याहु ॥
मिथिलापुर की उत्तमतापर सुर मन मोहि मोहि रहिजायँ ।
आपन आपन पुर सबही को हलुके लगे कहत शरमायँ ॥
रचना अनुपम लखिमाड़वकी चितवैं चकित चित्त ललचायँ ।
भलकै सरहैं उन पुरुषन को जिनके रचे पदारथ आयँ ॥
अतिशै सुंदर नर नारी सब महा सुशील धर्म मति मान ।
तिनहिं बिलोकत सुर नारी नर भे बिधु उदय ऋक्षअनुमान ॥
बिधिको अचरज बड़ भारी भो आपनि कृत्य दीखि कहुँनाहिं ।
रचना अनुपम अस लागति है जनु सब सत्यपदारथ आहिं ॥
शिव समुझायो सब देवन को अचरज आनिभूलि जनिजाहु ।
हृदय बिचारहु अस धीरज धरि यहहै सिया राम को ब्याहु ॥
नामहिं लीन्हे ते जिनको जग सबरे अशुभ नाशह्वै जायँ ।
सहजे आवहिं फल चारिहु कर ते सिय राम स्वामि ये आयँ ॥
शंभु बुझायो यहि भांतिन सुर आगे बसह चलायो फेरि ।

देखन लागे छबि राघवकी मानहुँ अंग अंग रहिघेरि ॥
देवन देख्यो नृप दशरथको पुलकित गात मोद सहजात।
साधु मण्डली मुनि भूसुर सँग शोभा अति अपार दरशात ॥
जनु तनुधारे सुर समाज सब नृपकी सेव करत मनलाय।
सोहत चारिहु सुत साथहिमें तिनकी छटा वरणि नहिं जाय ॥
जनु तनुधारी अपवर्गै सब अतिशै प्रभा रही उमगाय।
मर्कत सुवरण रँग जोरी बर देखत सुरन प्रीति अधिकाय ॥
पुनि रघुनाथहि लखि हर्षे हिय वर्षे सुमन माल झरिलाय।
नृपहि सराहत बहु भांतिनसों बारहिं बार हृदय हर्षाय ॥
नख शिख शोभा रघुनन्दनकी नैन निहारि मोद मनधारि।
भस्यो अश्रुजल कल नैनन महँ पुलके उमा सहित त्रिपुरारि ॥
मोर कंठ द्युति शुचि अंगन महँ रूप अनंग रंग तन श्याम।
बिज्जु विनिन्दक तन अंबर बर लसैं सुरंग रंग अभिराम ॥
व्याह विभूषण बहु सोहे तन सुन्दर जगमगाहिं नगजाल।
शरद चन्द्रमा सम राजतमुख नव राजीव नैन अतिआल ॥
अहै अलौकिक सुन्दरता सब भावत मनहिं कही नहिं जाय।
उत्तम शोभा लखि राघवकी मन महँ मार रहत सरमाय ॥
बंधु मनोहर सब सोहैं सँग चंचल बाजि नचावत जात।
बिरद सुनावैं बर बंदीजन हृदय अनंद बृंद अधिकात ॥
राम विराजे ज्यहि घोड़ेपर ताकी छटा कही नहिं जाय।
खगपति लाजे गति देखत ज्यहि मनते अधिक वेग दरशाय ॥
रामचन्द्रके हित मानहुँ प्रिय बाजी वेष बनायो काम।
गुणगति विक्रम बय शोभासों मोहत सकल भुवन कहँ आम ॥
जीन जड़ाऊकी शोभा अति जग मग ज्योति होति अभिराम।
लागे माणिक मणि मोतीबर किंकिणि ललित ललाम लगाम ॥
प्रभुकी मंशाके माफिक हय गमनत महा शोभ अधिकात।
दामिनि उडुगण के भूषण तन जनु घन मोर नचावत जात ॥

ज्यहि बरबाजी छविराजी पर श्रीवर रामचंद्र असवार।
ताकी वरणत सुंदरता शुचि शारद शेष न पावहिं पार॥
रामरूप लखि अनुरागे शिव लागे भले नैन दश पांच।
विष्णु विलोक्यो जब राघव कहँ मोहे रमा सहित हित सांच॥
देखि रामछवि हरषाने विधि आठै नैन जानि पछितान।
भै उछाह बड़ि शरजन्मा मन बारह नैन लाभ दरशान॥
प्रभु कहँ आनँद सों देखत हरि गौतम शाप परमहित मानि।
देव सराहैं सब सुरपति को आजु न इन समान कोउ आन॥
देववृन्द सब आनंदित अति देखत रामरूप अभिराम।
नृप समाज द्वउ मन हर्षै बहु कहि नहिं जात शोभ इतमाम॥
बजैं नगारे दुहुँ ओरन घन बरसैं देव फूल झरिलाय।
जय जय रघुकुलमणि भाषैंकहि जय धुनिरही दशौंदिशि छाय॥

स० आवत जानि बरात तहां अति घोर अवाजन बाजन बाजे।
बोलि सुआसिनि रानि सयानि चलीं परछै हित मंगल साजे॥
कंचनथार सवाँरि सुआरति भारति रूप छटा लखि लाजे।
बंदि कहा बरणै छवि सो जनु आनँद वृन्द दशौ दिशि गाजे॥

शोभा सदनी विधु बदनी तिय मृग लोचनी मनोहर गात।
काम बाम मन मद मोचनिते अति द्युति अंग अंग दरशात॥
रंग रंग के पट पहिरेतन साजे सकल अभूषण गात।
अंग सुमंगल मय राजे सब देखि अनंग मोहि मन जात॥
गान सुतानन सों गावहिं मृदु सुनि कलकंठ जाय सरमाय।
कंकण किंकिणि चौरासी की खांसी मंद रही धुनि छाय॥
मत्त मतंगम लखि लाजत हैं चाल विशाल चलत ते बाल।
बाजन बाजहिं बहु प्रकार के नभ अरु नगर सुमंगल चार॥
रमा भवानी इन्द्राणी अरु बानी आदि देव तिय झारि।
सहज सयानी छवि खानी ते आईं कपट नारि तन धारि॥
मिलीं आनि कै रनिवासे महँ गावहिं सुखद सुमंगल गान।

काहुन जान्यो पहिंचान्यो कछु आनँद मग्न सकल हरियान ॥
को पहिंचानैं क्यहि आनँद वश परिछन चलीं ब्रह्म वरबाम ।
गान मनोहर धुनि निशान सुनि बर्सहिं सुमन देव अभिराम ॥

स० आनँदकंद रघूकुलचंद विलोकि बना सुबना छबिखानी ।
तीयसयानिन मोदलह्यो अति जात न बंदि दशा सो बखानी ॥
अंगनमाहिं छई पुलकावलि नैनउमंगत प्रेमको पानी ।
भाषिसकैं न तकैं यकताक गिरा गिरिजा हरि इन्द्र किरानी ॥

जो सुख बाढ़्यो सियमाता मन दूलह देखि राम अभिराम ।
कल्प एकशत कहि पावहिं नहिं शारद शेषआदि मति धाम ॥
जानि सुमंगल को औसरभल बरबस रोंकि नैन को बारि ।
परिछनि साजें रघुनंदन की रानि सयानि मोद मन धारि ॥
यावत कर्तब वेदरीतिते जो कछु अहै बंश व्यवहार ।
द्वारचारते लै कीन्हें सब दुर्गाजनौ आदि परिचार ॥
बिबिध बाजने बाजन लागे मंगल गान होत सविधान ।
परे पाँवड़े पाटम्बरके नाना भांति ठानि शुभठान ॥
आरति करिकै अर्घ्यादिकदै आने राम मण्डफहि माय ।
राजहु राजे सह समाजके लाजे बिभव देखि सुरराय ॥
समय समय पर सुर समाज सब बरसैं फूल हृदय हर्षाय ।
शान्ति उच्चरैं वर ब्राह्मण गण शोभा सकल कही नहिं जाय ॥
होय कोलाहल पुर अंबरमहँ आपन पर सुनात नहिं कान ।
मिथिलापुरकी बर बाटनमहँ भूले फिरत देव ललचान ॥
यहि बिधि आये प्रभु मण्डफमहँ आसन सुखद दीन बैठाय ।
साजि आरती करि नीकी बिधि प्रभुहि बिलोकि जायँ हरषाय ॥
वारिवारिकै मणि भूषण पट सब कहँ देहिं निछावरि नारि ।
मंगल गावें सुखपावें उर शोभा कहत जात मति हारि ॥
बिप्र वेषधरि ब्रह्मादिक सुर कौतुक लखैं सहित अनुराग ।
रघुकुल भूषण की शोभा लखि सरहैं सकल आपनो भाग ॥

नाऊ बारी नट्ट भट्ट सब परजा राम निछावरि पाय ।
मुदित अशीषैं शिर नीचे करि हृदय समाय हर्ष नहिंभाय ॥
लोक वेद की सबरीती करि समधी मिले प्रीति सरसाय ।
उपमा खोजत वहि औसर की कविगण मनहिं रहे सरमाय ॥
हिये हारिगे कहुँ पाई नहिं उपमा इन समान यहभाय ।
समधी लखिकै अनुरागे सुर सुन्दर फूल रहे बरसाय ॥
जबते पैदा जग कीन्ह्यों विधि तबते दीख सुने बहुव्याह ।
आजहि देखे समसमधी दुउ सहित समाज साज उत्साह ॥
सुन्दरि सांची सुरबानी सुनि दुहुँदिशि मची अलौकिक प्रीति ।
शोभा बरणत बनि आवत नहिं भावत मनहिं माहिं वहरीति ॥
देत पांवड़े अर्घ्यादिक शुभ भूप बिदेह सहित सन्मान ।
राजा दशरथ कहँ आये लै जहँ पर बर बितान को ठान ॥
रचना मण्डपकी अनुपम अरु चित्रबिचित्र बरणि नहिंजाय ।
वरसुंदरता अवलोकन करि मुनिमन मोहि २ रहिजाय ॥
तब विदेह नृप अपनेहीं कर सब कहँ धरे सिंहासन आनि ।
जोजस ताकहँ बैठार्यो तस सहज सनेह शील शुचिठानि ॥
पूजि इष्ट सम मुनि वशिष्ठ कहँ करिवर विनै सुआशिष पाय ।
बिश्वामित्रहि पुनि पूज्यो नृप सुन्दर प्रीति रीति सरसाय ॥
वामदेव आदिक मुनियन कहँ पूज्यो मुदित फेरि महिराय ।
सुंदर आसन दै सबही को भे मनमुदित सुआशिष पाय ॥
जानिईश सम मुनि दशरथको पूज्यो प्रीति सहित मिथिलेश ।
बिनती कीन्हीं बहु भांतिनसों कहत न बनै तौन बिहँगेश ॥
सकल बरातिनको पूज्यो पुनि समधी सरिस सहित सन्मान ।
आसन दीन्हें सब काहूको कैसो कहा मुख एक बखान ॥
सकल बरातहि सनमान्यो नृप बिनती दान मान बरबानि ।
मिथिलापतिको नर सरहैं सब धन्य नरेश सुकृत की खानि ॥
ब्रह्म विष्णु शिवदिगपालक सब दिनपति आदि देवसमुदाय ।

राम प्रभावहि जेजानत भल मानत ब्रह्म रूप यशगाय ॥
कपट वेष धरि बर बिप्रनको कौतुक देखि रहे सुखपाय।
तिनकहँ पूज्यो नृप नीकी बिधि आसन उचित दीन बैठाय ॥
को क्यहि जानै पहिंचानै तहँ निजतन सुरति कहूको नाहिं।
सुख सुखमा घरबर देखत ते आनँद मयो दुहूँ दिशिमाहिं ॥
प्रभु पहिंचान्यो तिनदेवन कहँ जान्यो सकल भेद अनुमानि।
पूजि मानसिक सब काहूको आसन दीन समय समजानि ॥
शुद्ध स्वभाव देखि रघुपति को देवन हृदय गई मुदछाय।
खगपति आनँद वहि औसर को हमते कछू गाय नहिंजाय ॥
रामचंद्र मुख शरद चंद्र छवि चारु चकोर नैन समुदाय।
सादर पीवत सब आछी विधि प्रेम प्रमोद रह्यो अधिकाय ॥
समय जानिकै मुनि वशिष्ठ पुनि लीन्हे शतानंद बुलवाय।
कह्यो कुमारी कहँ आनहुँ अब आयो लगन काल चलिभाय ॥
पाय सुआयसु अस मुनिवर को आये शतानंद रनिवास।
हाल बतायो महरानी ते साजहु कुवँरि वेगि सहुलास ॥
सुनि उपरोहित की बानीवर रानी सजनलागि सामान।
बोलि बिप्रतिय कुल वृद्धनकहँ करि कुलरीति प्रीति सविधान ॥
प्राकृत तिरियन को धारेतन यावत अहैं सुरन की बाम।
छवि अभिरामा सब श्यामा शुचि सहज सुभाय शोभकी धाम ॥
तिनहिं विलोकत सुख पावहिंतिय विन पहिंचान प्रीय जसप्रान।
जानि शारदा उमा रमा सम रानी अधिक करहि सन्मान ॥
सिय सवाँरिकै पुनि नीकी विधि साज समाज साजि सबभांति।
चलीं भलीविधि लै मण्डफ कहँ शोभा सुखद कही नहिंजाति ॥
संग सहेली अलबेली सब साजे सकल सुमंगल साज।
मंद चालसों चलि आवैं सब देखत लहैं मतंगम लाज ॥
अंग अदूषण आभूषण सब साजे सकल शुद्ध शृंगार।
रति मदहारे तन वारे अरु देखत मोहि जात मनमार ॥

गान तानसों आलापहिं मृदु सुनि छुटि जात मुनिनको ध्यान।
कोकिल लाजैं तजि भाजैं मद उपमा कहि न जात हरियान॥
तिय समाज विच कस सोहै तहँ सहजे अधिक सोहावनि सीय।
छबि ललनागण विच सोहै जनु सुखमा अति उदार कमनीय॥
सिय सुंदरता कहि न जाय कछु शोभा बड़ी बुद्धि अतिथोरि।
मानहुँ आपहिते आई कढ़ि सुखमा सुख सोहाग गिरि फोरि॥
दीख बरातिन सिय आवत तब सबिधि पुनीत रूपकी धाम।
सबहि प्रणाम कीन मनहीं मन राम विलोकि पूरभे काम॥
हरषे पुत्रन सह दशरथ नृप आनँद जितो रह्यो उरछाय।
कहि न जाय सो क्यहु प्रकार ते कबि किमि कहै सुनहुँ खगराय॥
देव बंदना करि आनँद मन बरसैं फूल माल झरिलाय।
देहिं अशीशै मुनि मण्डल सब जय धुनि दशौ दिशा रहिछाय॥
गान निशाननको भारी रव अपनि पराय न परै सुनाय।
नगर नारि नर आनंदित अति प्रेम समाय हृदय नहिं भाय॥
यहिबिधि आई सिय मण्डप महँ प्रमुदित पढ़हिं शांतिमुनिराय।
रीति वाजिबी वहि औसरकी उपरोहितन कीनि हरषाय॥
गणपति गौरीको पूजन फिरि सीताराम कीन सुखपाय।
जाहिर पूजाले देउता सब देहिं अशीष हृदय हरषाय॥
मधुपर्कादिक शुभ द्रव्यनकहँ ज्यहि क्षन चहैं जौन मुनिराय।
कनक कटोरन अरु कलशन महँ परजा लिहे ठाढ़ त्यहि ठायँ॥
रीति बंशकी बतलावत रवि प्रीति समेत वेद अनुकूल।
सो करवावत मुनि आदर सह होन न पाव तनक कहुँ भूल॥
सुर पुजायकै यहि भाँतिन पुनि सिय सिंहासन दीन बिठाय।
लखनि परस्पर सिय राघवकी प्रेम सुभाय जानि नहिं जाय॥
मन बुधि बाणीके जनिबे महँ आय न सकै कालक्यहु माहिं।
कैसे जाहिर करि भाषै कबि जहँ शिव शेश केरि गमि नाहिं॥
होमसमय महँ तनधारनकरि अतिहित अनल आहुतिहिलीन।

विप्र बेष धरि तहँ वेदनने भाषि ब्रिवाह रीति सब दीनि ॥
नृप विदेहकी पटरानी जो अतिव सयानि सियाकी माय।
नाम सुनैना जग जानी सो उपमा नहीं बखानी जाय ॥
सुख सुन्दरता अरु सुन्दर यश सुकृत सनेह शील समुदाय।
सब समेटिके विधि विरचीजनु क्यहिबिधि कहे ताहि कविगाय ॥
समय जानिके बुलवायो त्यहि सादर शतानंद मुनिराय।
सखी सुआसिनि लै आईं तहँ मंगल चार करत हरषाय ॥
जनक बाम दिशि सो सोहै कस मैना यथा हिमाचल साथ।
जैसे रानी गुणखानी पुनि तैसे धर्म रूप नरनाथ ॥
मणिन कटोरे अरु कंचन घट भरे सुगंध और बरवारि।
राजा रानी निज हाथन लै दीन्हें राम अग्र महँ धारि ॥
मंगल बानी सों बांचें श्रुति मुनि गण द्विज समाज हर्षाय।
करि २ बर्षा बर फूलनकी जै जै कार रहे सुरछाय ॥
मन अनुरागे अति दम्पति द्वउ दूलह देखि शोभ सुखधाम।
लगे पखारन पग अंबुज शुचि महा प्रमोद पाय हे बाम ॥
तन पुलकावलि ह्वै आई भलि दशासो कहि न जाय खगराय।
पुर अरु अंबर कोलाहल अति गान निशान शब्द रहो छाय ॥
जय धुनि असके उमगानी प्रिय हमते जो न बखानी जाय।
जबन अँबानी पुर अंतर तब चारिहु दिशा चली जनुधाय ॥
जे पदपंकज वृषभध्वजके मानस मनसि करैं बिश्राम।
कलिमल नाशक सुमति प्रकाशक सुकृत स्वरूप मोदके धाम ॥
जे पदपंकज तेन परसनकरि शुभगति लही सहज मुनिबाम।
जाहिर लोकहु अरु वेदहु महँ जो अति रही पापकी धाम ॥
जिनपद कमलन को पराग प्रिय सुरसरि धरे सदा शिवमाथ।
अतिशै पावन सुरगावें ज्यहि भवरुज हरन मनोहर पाथ ॥
मुनि अरु योगिन को मधुकर मन सबदिन करैं जहांपर बास।
जिनपग पावनको ध्यावनकरि सहज विनाश करत जगफांस ॥

मुदित पखारत पद पंकज ते जनक नरेश वेश सुखपाय।
भाग्य सराहत सुर जै जै करि दुर्लभ यही जगत महँ भाय॥
दुलहा दुलही को करतल करि शाखोच्चार करैं मुनिराय।
पाणिग्रहण लखि मुनि मानव सुर सबरे हृदय गये हर्षाय॥

स० आनँद मूल विलोकत दूलह दम्पति चित्त महा मुदपागे।
अंग उमंग छई पुलकावलि देखि दशा सबही अनुरागे॥
देहरु गेह बिसारि भलीविधि टारि निमेखन देखन लागे।
बंदि बखान करै किमिकै अब और कहा सुखहै त्यहि आगे॥

लोक वेद विधि करि नीकी विधि कन्यादान दीन महिपाल।
लीन भली विधि जगजीवन फल गावत अजौं वेद यशआल॥
शिवकहँ गिरिजा हिम दीन्ही जिमि सागर रमा हरिहि हर्षाय।
जनक समर्पी सिय रामहिं तिमि कीरति विमल रही जगछाय॥
विने विदेह करै कौनी विधि कीन विदेह राम तन श्याम।
आहुति दैके गँठिबंधनकरि लागीं होन भाँवरी बाम॥
जयधुनि वंदी द्विज वेदध्वनि बजैं निशान सुमंगल गान।
सुनि सुनि हरषैं सुरबरषैं वर सुरतरु फूल फूल अधिकान॥
भाँवरि डारैं बर दुलही तहँ सादर नैन लाहु सब लेहिं।
सुंदर जोरी कहि जावै नहिं उपमा छोटि जौन कछु देहिं॥
राम सियाकी परिछाहीं शुभ मणिखंभन महँ परै दिखाय।
अमित रूपधरि रति मनासिज जनु देखहिं रामब्याह सुखपाय॥
दरश लालसा मन सकुचतबहु फिरि २ प्रकट होत छिपिजात।
भये मगन मन देखवैया सब भूले देह गेह सुधि तात॥
भाँवरि फेरी सब आनँद सह दै दै नेग योग बहु भाँति।
सिय शिर बंदन रघुनंदन प्रभु देहिं न तासु शोभ कहि जाति॥
भरि सरोज महँ शुचि लालीरज आदर सहित मोद मनलाय।
मनहुँ चंद्रमा को भूषत अहि अमृत लोभ हृदय उपजाय॥
अज्ञा दीन्हीं इत वशिष्ठमुनि अरु उत शतानंद महराज।

दुलहा दुलहिनि इक आसनपर बैठें मोद सहित सहसाज ॥
बैठ बरासन सिय राघव तब दशरथ हृदय हर्ष गो छाय ।
सुकृत सुरतरु महँ लागेफल देखत बार बार मनलाय ॥
सबकोउ भाषें अभिलाषें मन भो शुभ सुखद राम सिय ब्याह ।
भुवन चौदहों महँ खगपति अति छाई चहूं ओर उत्साह ॥
मुखमहँ रसना इक मंगल बहु पावै कौन पार त्यहि भाषि ।
मतिसम भाष्यो कहि बंदीद्विज सीताराम चरण उर राखि ॥
पाय आज्ञा पुनि बशिष्ठकी जनक बिवाह साज सँवराय ।
सुतामाण्डवी श्रुतिकीरति कहँ अरु उर्मिलहि लीन बुलवाय ॥
नाम माण्डवी कहिगाई जो श्री कुशकेतु सुता छबिधाम ।
रीति प्रीतिसह सो ब्याही तहँ भरतहि महामोदयुत बाम ॥
नाम उर्मिला जग जानत ज्यहि छोटी बहिनि जानकी केरि ।
लषणहिं ब्याही सो विदेह नृप शील स्वभाव एकसम हेरि ॥
ज्यहि श्रुतिकीरति कहि भाषें सब शोभा अंग अंग रहिछाय ।
सो रिपुसूदनको ब्याही नृप सुन्दर रीति प्रीति सरसाय ॥
दुलहा दुलहिनि इक समान सब शोभा कहि न जाय खगराय ।
देखि परस्पर इक एकन कहँ मन सकुचाय हृदय हर्षाय ॥
मुदित सराहहिं सुन्दरता सब सुरगण सुमन रहे बरसाय ।
गिरिजा आनँद वहि औसरको हमते कछू कहो नहिं जाय ॥
सकल सुन्दरी अरु सुंदर बर रहे बितान एक महँ राजि ।
जीव हृदय महँ जनु चारिहुवय बिभुन समेत रहीं बिरराजि ॥
कौशलपति मन मुद छायो बहु पुत्रन बधुन समेत निहारि ।
मनहुँ महीपति मणि पायेप्रिय सुंदर क्रियन सहित फलचारि ॥
राम ब्याहकी बिधिगाई जस ब्याहे सब कुमार त्यहि भाँति ।
दायज मिथिलापति दीन्ह्यों अस संख्या जासु कही नहिंजाति ॥
बस्त्र रेशमी अरु ऊनी बहु शाल दुशाल और रूमाल ।
बिबिध भाँति अरु बहु मोलन के मन ललचात देखिसुरपाल ॥

हाथी घोड़े रथ थोड़े नहिं अभरण अंग अंग प्रति साजि।
सुख सह दीन्हे श्रीमिथिलापति बिभव बिलोकि धनद गे लाजि॥
कामधेनुसी बहु सुरभीगण दीन्हीं साजि आभरण गात।
माला मुँदरी अरु कण्ठा बहु पहुँची रतन जटित दरशात॥
मणि अरु सुबरण के बासन बहु बस्तु अनेक बरणि किमि जाय।
वोई जानहिं जिन देख्यो तहँ मण्डफ मणिनपूर दरशाय॥
देखि सिहाने लोकपाल सब दायज दीन जौन मिथिलेश।
हर्षित ह्वैकै लै लीन्ह्यों सब अवध नरेश तौन बिहगेश॥
दीन याचकन जो भावा ज्यहि बचा सो आय गयो जनवास।
हाथ जोरिकै मृदु बानी तब बोले जनकराज सहुलास॥
सकल बरातिन को आदर करि कीन्हीं बिनय दान अरु मान।
महामुनिन के पग बंदन करि पूजे प्रेम नेम सबिधान॥
माथनाय कै सुर मनाय सब भे अस कहत जोरि युग हाथ।
भावके भूखे सुर साधू सब सिंधुकि तोष अंजली पाथ॥
हाथ जोरिकै पुनि दशरथ सों भाय समेत जनक महिपाल।
बचन मनोहर कहि भाषत भे शील सनेह सानि हे बाल॥
लही बड़ाई अब सबबिधि हम शुचि सम्बन्ध आपु को पाय।
राज साज सह म्वहिं सेवक निज जानहुँ बिना मोल को भाय॥
सुता टहलुइ करि पालबये करुणा दृष्टि देखि सह साध।
बोलि पठायों ढीठी दीन्ह्यों कीन्ह्यों क्षमा तासु अपराध॥
रबिकुल भूषण फिरि समधीको कीन्ह्यों सब प्रकार सन्मान।
विनय परस्पर की कहिये किमि पूरण प्रेम हियें उमगान॥
अति आनंदित देव वृन्द सब बरसें फूल शूल भो नास।
यहि बिधि आदर लै आछी बिधि दशरथराउ चले जनवास॥
बजे नगारे हहकारे करि द्विज गण रहे बेद धुनि छाय।
भल कौतूहल पुर अंबर महँ शोभा कछू कही नहिं जाय॥
पाय सुआयसु तब मुनिवरको सखियाँ करत सुमंगल गान।

सहित दुलहिनिन लै आई बर कोहबर केर जहां अस्थान ॥
फिरिफिरि चितवत सियराघवदिशि हृदयसकोचतमनसकुचैन।
हरत मनोहर छबि मछरिन की सुंदर प्रेम पियासे नैन ॥
सहज सुहावन मन भावन तन कोटि मनोज लजावन श्याम ।
मुनि मन लोभा लखि शोभा शुचि सोहत अंगअंग छबिधाम ॥
लसै महावर पग कमलन महँ मुनि मन भ्रमर रहे जहँ छाय ।
पीतरंगकी लखि धोती शुचि दामिनि ज्योति जाय शरमाय ॥
रुचिर कंधनी कटि बाजे भलि भुजा बिशाल बिभूषण जाल ।
पीत जनेऊ छबि देऊ अति कर मुद्रिका लसै अति आल ॥
साज बियाहे को साजे सब आयत हृदय सुभग मणि माल ।
पीतरुपट्टा है कंधन महँ छोरन लगे मौक्तिक जाल ॥
नैन नवीने बर वारिज सम कुण्डल हलैं मनोहर कान ।
मुख सुंदरता के प्याला सम आला चंद्र देखि शरमान ॥
सुंदर भौंहैं तिरछौंहैं स्वउ काम कमान तुल्य महँ नाहिं ।
नाक मनोहर बर बुलाक युत देखत कीरबृंद सकुचाहिं ॥
छाप रुचिरता की मानहुं प्रिय भाल बिशाल तिलक दरशाय।
मौर मनोहर है माथे पर मंगलमयी बरणि नहिं जाय ॥
अंग मनोहर चित चोरैं सब मोरैं जनु अनंग को मान ।
त्रिभुवन उपमा कोउ पावैना कबि किमि कहै ताहि हरियान ॥
देखि अनूपम अति सुन्दर बर पुर नर नारि वारने जाहिं ।
देहिं निछावरि मणि अभरण पट आरति करहिं हृदय हर्षाहिं ॥
देव मनावैं सुखपावैं अति गावैं सुयश सुमंगल गान ।
दल बरसावैं सुर जै जै करि जै सुखधाम राम भगवान ॥
विरद बखानैं कबि बंदीजन मागध सूत रहे गुण गाय ।
जै रघुनंदन जै सीतापति आनँदकंद दया दरिआय ॥
लाय सुआसिनि तब कुहबर महँ बर सुन्दरिन मोदसह भाय ।
करिबे लागीं लोकरीति सब प्रीति समेत सुमंगल गाय ॥

गौरि सिखावत रघुनंदन कहँ तहँ लहकौरि खवाउब बाम ।
शारद सीतहि बतलावैं स्वइ आनँद अधिक मची त्यहि ठाम ॥

स० हास बिलास मचो रनिवास में बाजि रही बहु मोद बधाई ।
जीवन लाभ लहै सबकोय करी सबके उर प्रेम अथाई ॥
बंदि दशा बरणै किमि सो जनु जन्म दरिद्र महानिधि पाई ।
कीरतिकल्पलता मिथिलेशकि फूली फरी जनुआजअघाई ॥

रामचन्द्रकी परछाहीं प्रिय लखि जानकी आरसी माहिं ।
भई बिरहबश रहि यकटक गईं इत उत वाहु टारती नाहिं ॥
प्रिया प्रेम सुख वहि औसरको जानहिं आली भलीबिधि भाय ।
रीति भांति करि बर सुन्दरि फिरि जनवासे कहँ चलीं लिवाय ॥
द्विजगण मुनिगण अरु याचकगण पुर नर नारि हृदय हर्षाय ।
देहिं अशीषै त्यहि औसरपर नभ अरु नगर रह्यो मुदछाय ॥
चारिहु जोरी चिरजीवहिं प्रिय सब जन रहे भाषि खगराय ।
सिद्ध मुनीश्वर सुर योगीजन आनँद सहित रहे गुणगाय ॥
बजे नगारे हहकारे करि जयजयकार रह्यो अति छाय ।
जै रघुकुलमणि जै सीतापति अस कहि रहे फूल बर्साय ॥
सहित बधूटिन बर सुन्दर सब आये तबहिं पिताके पास ।
शोभा मंगल अरु आनँद सों मानहुँ उमँगि चल्यो जनवास ॥

इतिश्रीभार्गववंशावतंसश्रीमान्मुंशीनवलकिशोरात्मजस्यश्रीमुंशीप्रयाग
नारायणस्याज्ञाभिगामीउन्नामप्रदेशान्तर्गतमसवासीग्रामनिवासी
पण्डितबंदीदीनदीक्षितनिर्मितश्रीविजयराघवखण्डेबालकाण्डे
श्रीरामचन्द्रविवाहवर्णनोनामनवमोल्लासः ९ ॥

गिरिजानन्दन को बंदन करि शारद शेश महेशहि ध्याय ।
रहस कलेवा रघुनंदनकी मतिसम कहत बंदिद्विज गाय ॥
मिथिलापति के बर मंदिर महँ भई तयार विविध जेउनार ।
बोलि बरातिनको लीन्ह्यों तब राजा जनक सहित सतकार ॥
भई तयारी जनवासे महँ सजिगे सब कुमार सरदार ।

बजे अवाजन सों बाजन बहु बंदी करत बिरद उच्चार ॥
परे पाँवड़े पाटम्बरके शोभा कछू कही नहिं जाय।
सुतन बरातिनसह दशरथ नृप कीन्हयों गमन हृदय हर्षाय ॥
आय पहूँचे नृप द्वारेपर जहँ सब सजे राजसी ठाट।
उपमा बर्णत बनि आवत नहिं लागी मनहुँ शोभकी हाट ॥
सकल बरातिन को आसनदै जनक महीप दीन बैठाय।
होन पैंधोवा तब लाग्यो तहँ कंचन थार बारि भरवाय ॥
धोये मिथिलापति दशरथके चरण सरोज महा सुखपाय।
गिरिजा मोसन वहि औसरको प्रेम प्रमोद बरणि नहिंजाय ॥
फिरि रघुनंदनके पंकजपद जे हर हृदय करत बिश्राम।
प्रेम समाये नृप धोये तब अति अभिराम भक्त सुखधाम ॥
जानि रामसम तिहुँ भाइनके धोये पायँ जनक निज पानि।
सबहि यथोचित दै आसन पुनि दियोबिठाय अजिरमहँआनि ॥
कुवँर लाड़िले रघुबंशी जे औरौ हते खवैया भात।
सादर सब कहँ बैठाय्यो नृप शोभा कहत चित्त सकुचात ॥
इक दिशि परजा बैठाये सब यावत जगत गनाये नाम।
नाऊ बारी वर बंदीजन सेवक बृंद खास अरु आम ॥
परे अगारे पंनवारे पुनि जेमाणि पत्र सँवारे बाम।
सुबरण कीलन सों साँथे शुचि को कहिसकै सकल इतमाम ॥
कंचन थारा अरु कोपर वर गडुवा पंचपात्र अधिकार।
सरयू वारी भरि झारी शुचि सबके अग्र दीन धरि यार ॥
परसन लागे अनुरागे सब चतुर सुवार मोद उर धारि।
दालि भात अरु घृत गौअनको सुंदर स्वाद सुगंधित झारि ॥
अगणित सालन कहिगावैको असहै बुद्धि ज्ञानक्यहि माहिं।
सिद्धिरूप जहँ सिया बिराजत तहँ पर कमी कछू है नाहिं ॥
बिबिध खटाई सजि आई स्वउ मेवा मधुर मुरब्बा आदि।
अमित मिठाई कहि गाईको लागत अमी स्वाद जहँ बादि ॥

न्यारी न्यारी तरकारी बहु भरि भरि धरी सिकोरन माहिं ।
पूरी पापर पुआ कचौरी फुलका सरपिसने दरशाहिं ॥
खीर महीर क्षीर सुन्दर दधि माखन मंजु धस्यो हितलाय ।
बरा विरंचि बरी बरिया बहु मुंगुछा और मसरँगी भाय ॥
आंब अँबिलिया पनवाँ भँटवा दोनन धरे लगाय लगाय ।
खरिका खांड़र साज रैतुआ को कहि सकै विविधविधि गाय ॥
परवर कटहर राम तरोई वृन्तक और करेला छेमि ।
मेथी मरसा चौराई अरु सोवा चना सर्षपी सेमि ॥
पालक पोय कयरँवुआ कुलफा बथुआ महा चटपटो स्वाद ।
फूल पतौअन फल मूलनके सालन बिबिध बने उरगाद ॥
खाभा खुरमा पेर पिराकैं सुन्दर मधुर मठुलिया माठ ।
लडुआ बरफी और गेंदौरा बहु पकवान केर जहँ ठाट ॥
चारि भाँतिकी है भोजन विधि इकइक भाँति बरणि नहिंजाय ।
छहरस छप्पन बिधि सालनकी सो सब तहां रहे दरशाय ॥
जेंवन लागे पंच कौर करि गावन लगीं नारि बर गारि ।
सुन्दर आनँद वहि औसरको हमते कहि न जाय उरगारि ॥
सुन्दर श्याम राम सुखधामहिं देवहिं क्यहि प्रकार हम गारि ।
अगुण सगुण के बहु तेरे गुण को कहि सकैं तौन निर्द्धारि ॥
मायापति माया प्रगटावन असकहि रहे प्रगट श्रुति चारि ।
नारि पुरुष सब महँ व्यापक जो ताको लगै कौन बिधिगारि ॥
माय बापको कछु निर्णय नहिं तुम्हरी जाति जानि नहिं जाय ।
जाके जिय महँ रुचि आवै जस सो तस कहत राम गुणगाय ॥
अजके दशरथ सुनि राखे हम दशरथ केर फेरि अज राम ।
भूमिसुतापति भूमिनाथ सुत दोऊ आप कहावत आम ॥
मातु कौशलाको धनिधनि जिन जाये तुम समान सुत राम ।
वर्ण विलक्षन पितु माताते सुन्दर श्याम रूप छबिधाम ॥
केकय कन्या कैकयी जो ताको सुकृत सुन्यो अपार ।

अतिशय जाकी रुचि भर्तहिपर गुण कहि लहे कौनविधि पार ॥
नाम सुमित्रा परम पवित्रा अतिही चारु चरित्रा रानि।
सुयश विचित्रा एक साथजो सुनियत उभै पुत्र प्रगटानि ॥
चारिउ बंधव अति सुन्दर तुम कोउ तन गौर कोउ तन श्याम।
परी छाँहके कोहु औरेकी कै कछु और सबबहे राम ॥
श्रीकौशलपति अरु मिथिलापति दुइ महँ जनक कहौ कोआय।
कौशल्यापति कौशलपति सुत दोऊ एक कि भेद दिखाय ॥
चरुसों प्रगटे कै राजा सों यह म्वहिं देहु राम बतलाय।
वृद्ध जानिकै की राजाको करी सहाय द्विजन कछु आय ॥
चाल अलौकिक कुल तुम्हरेकी हमते कछू कही ना जाय।
मिली धायकै प्रिय सागर महँ भागीरथी अनंद बढ़ाय ॥
गुरू चलायो यह सूरज कुल क्षत्री सबै रहे कह लाय।
बंश तुम्हारो असमंजस को कही न जाय कछू रघुराय ॥
राम तुम्हारे गुण अनुपम अति कहँलौ कहैं कहे नहिं जायँ।
दुलहा दुलहीं चिरजीवहु सब बंदि अनंदि गहैं द्वउ पायँ ॥
समैसोहावन मनभावन इमि गारी सुनत सबहि हर्षायँ।
लीन आचमन पुनि आदर सह धोये हाथ पायँ जल लाय ॥
पान इलाची इतरादिक पुनि सुन्दर द्रव्य सुगंधित आनि।
दीन्हें मिथिलापति सबही कहँ कहिमृदुबानि बहुत सन्मानि ॥
चले महीपति जनवासे कहँ राज समाज सुष्टुसुत साथ।
इते हकीकति अस बीततिभै सुनिये अग्र चरित खगनाथ ॥
बीती आनँद महँ यामिनि सो प्रातःकाल भयो पुनि आय।
दिवस दूसरे को कौतुक अब मति सम प्रियाकहन हमगाय ॥
भई तयारी नृप मंदिर महँ सुखद बरात न्योतिबे काज।
भयो बुलौआ सब नगरी महँ आये सकल साजि शुभसाज ॥
कंचन थारन महँ सामाधरि शुभ मिष्ठान पान पकवान।
वस्तु अनेकन कहि गावैको लै लै प्रजा चले सविधान ॥

खबरि जनाई जनवासे महँ तहँऊँ भये अनूपम ठाट।
नचैं कंचनी सुररंभा सम चहुँ दिशि लगी शोभकी हाट॥
पहुँचि जनाती त्यहि औसरगे आदर सहित लीन महिपाल।
सबहि यथोचित बैठार्‌यो पुनि वाजिब रीति भई त्यहि काल॥
गणपति गौरी को पूजन पुनि कीन्ह्यों राम चारिहू भाय।
दोऊ ओरनसों बिनती मृदु बिप्रन कही गाय हर्षाय॥
क्रिया वाजिबी तब करिकै सब नेगिन नेग योग बर्ताय।
कौशलपति को पुनि आयसु लै पहुँचे सकल धाम निज आय॥
इतै कलेवा को औसर फिरि आयो लीन जानि अस रानि।
बोलि पठायो जनकराज को तिनते कह्यो भाषि मृदु बानि॥
सुनि अस आयसु महरानीको पुत्रहि जनकलीन बोलवाय।
पितु अज्ञासुनि श्रीलक्ष्मीनिधि पहुँचे सखन सहित तहँआय॥
पितु पदपंकज रजमाथे धरि आदर सहित कीन परणाम।
आशिषदैकै मुदलैकै उर बोले जनकराय मति धाम॥
तात बात यह चित धारहु मम आतुर जाहु जहां जनवास।
देर न लावो बाजि सजावो जावो भूप पास सहुलास॥
बिनय सुनाय राय दशरथको पाय रजाय हिये हर्षाय।
करन कलेऊ सुख देऊ इत लावहु बोलि चारिहू भाय॥
सुनि पितु आयसु इमि लक्ष्मीनिधि भरे उमंग अंग हर्षात।
चपल तुरंगन पर चढ़िचढ़ि तब सखन समेत तहां भे जात॥
कलन दिखावत थिरकावतअरु छमछम छमकि नचावतबाजि।
मृदु मुसकात बतात परस्पर गे जनवास पहुँचि खगराज॥
जहां भानुकुल भानु औधपति दशरथराज राज शिरताज।
जहँ रघुबंसी तेजंसी जन बैठे साजि साजि शुभ साज॥
चोपदार ललकार करत जहँ बंदी बिरद करत उच्चार।
गुणगण गावत जहँ गायकगण नौबति बाजिरही बर द्वार॥
उतरि तुरंगनते रंगनमहँ सखन समेत जनकको बार।

चारिहु सुतयुत अवधराज को सादर जाय कीन जोहार॥
जनकदुलारे छबिवारे कहँ देखि जुहार करत सतकारि।
रघुकुल दीप महीप हाथगहि आपु समीप लीन बैठारि॥
त्यहिक्षन सानुज श्रीराघवकी छबि लखि सखन सहित हर्षाय।
अति निहोरि करजोरि मोरि शिर बोले शुचि सनेह दर्शाय॥
करन कलेवा सुखनेवा हित पठवहु कुवँर चारिहू भाय।
सुनि सुखपाय रायदशरथ ने कीन्हें बिदा कुवँर हर्षाय॥
जानि तयारी जनकनगर की सेवक सकल मोद मनलाय।
निज निज प्रभुको साजन लागे बागे भूषणादि पहिराय॥
पाग जर्कसी रघुनन्दन शिर सुन्दर लसी त्रिभंगी बाम।
झुकी कलंगी नौरंगी तिमि पग पैंजनी ठनी अभिराम॥
कलितललित अतिजटित रतनमणि मंजुलमौर रहेशिरसाजि।
सजे सेहरा गजमुक्तन के निरखत जात मुनिन मन लाजि॥
कोरन कोरन चहुँओरन महँ जगमग जगी लगी नगपांति।
होति अनूपम ज्योति चहूंदिशि शोभा अति अपार दरशाति॥
लोल कपोलन पर कुण्डल कल लगे अमोल मौक्तिक जाल।
युगुल जड़ाऊ जेबदार अति लसी जँजीर वीर सुविशाल॥
जालिम जोर जोहरी जुलफैं युवतिन हृदय विलोवनहारि।
अलकैं झलकैं दुहुँदिशि ललकैं मानहुँ मारवारि तरवारि॥
अति रतनारे कजरारे बर प्यारे नैन मनहुँ जलजात।
सैन सुखारे अनियारे भल लागत नशा जात चढ़िगात॥
अति अवरंगी रसरंगी अरु सुन्दर चढ़ी त्रिभंगी भौंह।
युगल शरासन जनु अस्मरके भाषत सत्यसत्य करि सौंह॥
आलभालपरतिलकझलकशुचिअतिवविशालमनहुँछविप्याल
शोभा वरणौं कहि ताकी को लोभा चित्त देखि खगपाल॥
लाल अधर पर दमक दामिनी चमकत भलीदशन की पांति।
सन्मुखमुखकरि ज्यहि दिशि बोलत मानहुँ अजब छटाछहराति॥

श्याम गात पर जगमगात अति जामा जरदजरी को काम।
कोरन कोरन चहुँओरन महँ लागी रतन पांति अभिराम॥
कटि तट फेंटा सुछबि समेटा दै दै फेर लपेटा भाय।
नवल पटूको करन लटूको कंध पटूक रह्यो छबि छाय॥
परे चौलरे गजमुक्तन के सोहे उर विशाल मणिमाल।
कंठ कठूले नग फूले जनु भूले तनहिं विलोकनहार॥
बाहु बजुल्ला अरु जोसन की जगमग प्रभा रही दरशाय।
बड़े बड़े नग जड़े मढ़े अति कंचन कड़े रहे कर छाय॥
रंकन सुख प्रद मणि कंकन कल बांधे बंक रेशमी तार।
जनु पुर युवतिन मन जीतन को साधे यंत्र बशीकर यार॥
मणिमय ढालै छबि आलै जनु विलसी लसी कमर करवाल।
कनक प्रवाल जाल जकरे शुचि सजे विशाल सब्ज उरमाल॥
सरही जर्द जर्कसी पनहीं मनहीं मन सोहायँ खगराय।
पगन महावर वरनूपुरयुत मुनि मन मधुप रहैं जहँ छाय॥
सुखमा सदन बदन अति सुंदर कोटिन मदन बदन समायँ।
दर्शत बर्सत रस सब के उर जनु तनु धरे काम रस आयँ॥
पानखात बतलात सखन सों ज्यहि दिशि हेरि कहैं प्रभुबात।
तन मन भूलि जात ताको सब बिनहीं मोल तौन बिकिजात॥
वरणि सकै को रघुनंदन को दूलह रूप अनूपम वेष।
जाहि विलोकत मन मोहत हैं शिव सनकादि शारदा शेष॥
सजि रघुनंदन इमि बंधुन सह राजकुमार चारिहू भाय।
बढ़े उमंगन चढ़े तुरंगन अंगन बसन आभरण लाय॥
कुवँर लाड़िले रघुबंशी जे प्रभु कहँ अस पियार जस प्रान।
चढ़े तुरंग संग गमने तेउ रागे राम रंग हरियान॥
चोपदार ललकार करत भल बंदी विरद उचारत जाहिं।
चंचल चमर चलै चारिउ दिशि ढाँपे छत्र सखा शिर माहिं॥
राम वाम दिशि श्रीलक्ष्मीनिधि सोहैं सखन सहित तेउभ्रात।

चंचल चाल वाजि थिरकावत बातैं करत हँसौहैं जात ॥
हय जगबंदन रघुनंदन को जाहिर नाम महाछबि धाम।
कहँ लग बरणौं गुण ताके सब देखत मोहि जात मन काम ॥
अंग अदूषण महँ भूषण वर पूषण वाजि देखि ललचाहिं।
चोटिन तनियाँ गुथीं सुमनियाँ पैंजनि बाजि रहीं पग माहिं ॥
जटित जवाहिर जीन जरी की अति जरबीली रही सोहाय।
पूजि पटा की छटा कहै को देखत काम लटा सरमाय॥
जेरबंद मन फंद बसन को तंग सुरंग रह्यो छबिछाय।
जरकसि पेटी लसी लपेटी झालरि झबा रहे फहराय॥

स० है बहुदामललाम लगाम प्रभायुत अंकित नाम विराजै।
शोभ उमंगि त्रिभंगि झुकी मणिलाल लगी कलँगी शिरसाजै ॥
पौनहुँते बढ़ि गौनकरै छबि भौन विलोकि खीहय लाजै।
मानहुँ काम महा अभिराम बन्यो हयराम अराम के काजै ॥

नाम समुद मुद देत जनन को जापर भरत रहे बिरराजि।
श्रीरघुनंदन के दाहिन दिशि उछलत चलत बेग गतिसाजि ॥
रोंकत बागै अति रिसरागै फुरकन लागै सहज सुभाय।
डमकि डमाकी लै बांकीगति डांकी देत चलै सुखपाय ॥
लक्खी घोड़ा लषणलाल को बांक चलांक बरणि ना जाय।
उड़ि उड़िजात बायुमंडल को जनु खगराज रहे मड़राय ॥
छन धरती छन आसमान महँ करत उड़ान जानपर गाजि।
थिरकतफिरकत छबिछिरकत अति तजततगुमान भानके वाजि ॥
चंपा नाम चाल चटकीलो तापर चढ़े शत्रुहन लाल।
आगे निरतैं सब समाज के लाजत शिखि कुरंग लखिचाल ॥
हाथ उठावत जो नेकहु कहुँ तौ फिरि कई हाथ उड़िजात।
गहि चुचुकारत थाम्हि दुलारत धीर न धरतबेग अधिकात ॥
होत राह महँ कौतूहल इमि बाजन बाजि शोर हहकार।
सुनि तियधाईं देर न लाईं आईं निकसि अगारन द्वार ॥

राम बदन की लखि शोभा शुभ लोभाचित्त कामिनिनक्यार ।
रही न सुधि बुधि कछु काहूको भूलीं देह गेह व्यवहार ॥
छबि बिलोकि कै रघुनंदन की कोउ सखिकहै बैन अभिराम ।
करन कलेवा नृपकुमार ये जात दिखात जनकके धाम ॥
इन्हैं लेवावन गे लक्ष्मीनिधि आये सखन सहित हर्षाय ।
रँगभीने रघुबंश प्रवीने दशरथ राय कुवँर सुखदाय ॥
भागि हमारी धनि प्यारी यह दीखे नैन राम सब भाय ।
दुर्लभ दर्शन नतु दूलह के रविकुल राय दया दरिआय ॥
तिया दूसरी हँसि बोली तब सखि यह भलीकरी विधिबात ।
सबकोउ चलिये जनक महल को पाइय मोद देखि इनगात ॥
करत परस्पर इमि बातैं मृदु भईं बनाय प्रेम बश बाम ।
सुनतजात मुसकात अनुजयुत छबि अभिराम रामसुखधाम ॥
बाजि नचावत छबि छावत मग होत अनेक कुतूहल भाय ।
जाय पहूंचे जनक द्वार पर शोभा कछू कही नहिं जाय ॥
उतरि तुरंगम ते लक्ष्मीनिधि चारिहु कुँवरन लीन उतारि ।
हाथ पकरिकै रघुनंदन को भीतर महल गये पग धारि ॥
सासु सुनैना जहँ राजत हैं सब गुण खानि जनक की रानि ।
कौन चलावै इन्द्रानी की रति ज्यहि रूप देखि ललचानि ॥
चंद्रआननी सखी सयानी चहुँ दिशि राजिरहीं छबिछाजि ।
करैं बयारी कोउ व्यजना लै भारी चँवररही कोउ साजि ॥
बिछे गलीचा बर गद्दी पर तापर बिछी चांदनी चारु ।
बैठी रानी छबिखानी तहँ शोभा कौन करै विस्तारु ॥
त्यहि क्षन तहां गये रघुनंदन मन फंदन अनंद करवेष ।
उठि महरानी सब ठाढ़ी भईं बाढ़ी हृदय मोद की रेख ॥
साजि आरती न्योछावरि करि मणि आभरन पाट पटवारि ।
पायँ पखारे चहुँ भाइनके कंचन थार डारि बरवारि ॥
चारि सिंहासन चारि रंग के चारिहु कुँवर दीन बैठारि ।

सासु सुनैना छबि ऐना लखि यकटक तकै निमेषन टारि ॥
ताकि जकिरहीं तनक डोलैं नहिं यावत तहां सुन्दरी नारि।
रामरूप रँगिगईं रँगीली तन मन सबन दीन तहँ वारि ॥
हाथ जोरिकै महरानी पुनि बोली अति सनेह सरसाय।
करहु कलेवा चलि लालन अब जूंठनि बंदि खाय हरषाय ॥
सुनि इमि बानी महरानी की सखन समेत चारिहू भाय।
भरे उमंगन हँसि गमने तब शोभा अंग अंग रहि छाय ॥
भरी भाग अनुराग सुनैना निज कर कमल पखारत पायँ।
लाय सहोदर सब कुवँरन कहँ चंदन पाट दीन बैठाय ॥
मंजु सोहारी बर थारिन महँ परसी विविध मिठाई लाय।
रुचि अनुरूप भूप सुत जेंवत व्यजना करत सासुसुखपाय ॥
भोजन करिकै पुनि अँचये सब सखियन आनि खवाये पान।
पहिरि पोशाकैं छबि शाकैं पुनि बैठे सेज आनि हर्षान ॥
खबरि पायकै त्यहि औसरपर श्रीनिधि बामसिद्धि ज्यहिनाम।
रूपधाम अभिराम अरामद सब बिधि रँगी रामरँग आम ॥

स० भाग सोहाग भरी सुठिसुंदर यौवन जोम परी मतवारी।
काम कला परवीन नवीन प्रभा रतिरूप लजावनहारी ॥
शोभनिधान महागुणवान मनो छबि राशि बिरंचि सवाँरी।
बंदिअनंद तरंगन अंगन देखि अनंग छटा पर वारी ॥

सुंदर सरहज श्रीरघुबर की मति गति जासु बरणि ना जाय।
संगसहेली अलबेली लै पहुँची राम निकट सो आय ॥
करसों कर गहि श्रीरघुबर को मृदु मुसकाय लागि बतलाय।
चित्तचोर बड़ नृपकिशोर तुम अतिचपलता कही नहिंजाय ॥
सुधि भुलाय रघुराय हमारी सासु समीप रहे इत छाय।
तब रघुनंदन इमि भाषत भे सिधिसन मंद मंद मुसकाय ॥
उलटी बातै तुम भाषौ ना प्यारी आपन दोष दुराय।
कबके आये हम छाये इत तुमहीं सुरति दीनि बिसराय ॥

तुम्हरे महलनमहँ आये हम सो कछुतुम्हैं न पस्यो जनाय।
प्यारी तुम्हरो घरबहगर अति सहजहिजहँ समाय सबजाय॥
राम बचन सुनि मुसकानी सिधि बोली अतिसनेह मृदुबानि।
तुम्हरे घरकी रीति लालजी इहां न चली लेहु यह जानि॥
सासु सुनैना के अन्तिक महँ देत न बनै ज्वाब कछु राम।
असकहि कर गहि रघुनंदन को गई लेवाय आपने धाम॥
चारि सिंहासन दै आसन तहँ भरी हुलास हृदय हर्षाय।
वारि आरती छबि निहारि बर चारिउ कुवँर दीन बैठाय॥
मेलि मालती की माला गल अतर फुलेल अंगमहँ लाय।
पोंछि राममुख मृदुबीरी दै बोली शुचि सनेह मुसकाय॥
कहै सयानी मृदुबानी इक सुनिये राम श्याम सुख धाम।
सुनी सुघरता हम कानन सों जायो तुमहिं काम स्वइराम॥
बोली सिद्धि सुनहुँ रघुनन्दन तुम ननदोई लगौ हमार।
एक बतकही हम पुँछतीहनु गोय न राखहु लाल उदार॥
होत सगाई सम्बन्धै ते अपने जाति पाँति कुलमाहिं।
बहिनि आपनी ऋषिशृंगी कहँ तुम कैसे करिदियो बिवाहि॥
की मुनि उनकहँ लैभागे की आपै गईं मुनीश सँग लागि।
कहौ बात रघुनाथ सत्य यह तुम रघुबंश हंस निर्दागि॥
कह्योलक्ष्मण सुनहुँलाड़िली ज्यहिबिधिजहँसँयोगलिखिदीन।
तहँ सँयोग होत है ताको ब्याहत बिबश कर्म आधीन॥
कहां प्रशंसी रघुबंशी हम कहँ बैरागी ससुर तुम्हार।
ब्याह हमारो भो तिनकेघर बिधिगति अमिट सकै को टारि॥
बात हँसौआ की लागत इक कहत न बनै कहैं हम काह।
तुमतौ हौ सिधि वै लक्ष्मीनिधि नारि नारि को भयोबिवाह॥
बोली इक सखि सुनहुँ लाड़िले कैसे सकै तुम्हैं कोउ जीति।
जाहिर नीकी बिधि दुनियाँमहँ तुम्हरे कुल कुटुम्ब की रीति॥
अतिव छिनारी छबि वारी सब यावत अवधपुरी की बाम।

खीर खायकै उपजावहिं सुत पाति सों कछू न राखहिं काम ॥
सखी सयानी की बानी सुनि बोले रामचंद्र मुसकाय ।
रीति आपनी को ढाँपो कस आन कि कहौ सान मटकाय ॥
मात पिता बिन कोउ जन्मै ना बांधी यहै वेद की चाल ।
नई कहानी हम जानी यह माहिते प्रगट होत इत बाल ॥
बोली चंद्रकला त्यहि औसर चंचल चतुर नारि सुकुमारि ।
छोटी बहिनी सिद्धिकुवँरि की श्रीनिधि केरि लागती सारि ॥
लरिकाईं ते रघुराई तुम बन महँ रह्यो तपस्विन साथ ।
ये छलछंद फंद सीख्यो कहँ हम सन सत्य कहौ रघुनाथ ॥
की मुनिनारिन ते सीख्यो यह की तौ बहिनि आपनी पास ।
मीठो सीठो स्वाद लालजी चाखे बिन न होय परकास ॥
भरत भावते पुनि बोले इमि तुमहुँ तौ क्वांरी परौ दिखाय ।
पुरुष संगकी करौ बतकही सो कहँ सिख्यो देहु बतलाय ॥
लक्ष्मीनिधिकी तिय बोली तब तुम जनि कहौ भरत असबात ।
गणना तुम्हरी शुचि साधुनमहँ तुम कस लोकबात बतलात ॥
सिद्धि सयानी साति भाषौ तुम हमतौ शुद्ध साधु दरशायँ ।
सेवा करिये अस तन मन दै जामहँ हम प्रसन्न ह्वै जायँ ॥
सखी दूसरी फिरि बोली अस इनको सुन्यो एक हम हाल ।
मुनि मखराखन गे भाई द्वउ आई तहां ताड़का बाल ॥
लखि सुंदरता रघुनंदन की सो अस्मर वश गई लोभाय ।
भयो न इनते सो कर्तब कछु मार्यो वृथा ताहि खिसिआय ॥
कह्यो शत्रुहनं हँसि बानी इमि नाहक दोष देहु जनि बाल ।
बनी न कर्तब जो उनते कछु सो अब परखि लेहु तुम हाल ॥
बिन पुरषारथ के जाने इत तुम्हरे घर हमार भो व्याहु ।
लेहु परिक्षा करि ताकी अब जामहँ फेरि नाहिं पछिताहु ॥
बानी रिपुहन की सुनि कै इमि बोली सिद्धि सयानी नारि ।
सिख्यो चतुरता तुम एती कहँ हमसन कहौ तौन निर्द्धारि ॥

नारि गुणागरि की मिलिगै कहुँ की सँग पर्यो वेश्यन क्यार।
तीनौ भाइनते बढ़िकै बहु तुम महँ चटक मटक अधिकार॥
कह्यो शत्रुहन है सांची यह भेदिहा भेद लेत सब जानि।
सौगुण बढ़िकै गुण गणिकनते हम तुममाहिं लीन अनुमानि॥
हमरे तुम्हरे गुण लक्षण सब देखे एक तुल्य मिलिजात।
हमरो तुम्हरो व्याह वाजिबी चाही अवशि होन यह बात॥
भई वार्ता इमि आपुस महँ हास विलास नेह सरसाय।
गिरिजा आनँद वहि औसर को हमते कछू कहा ना जाय॥
सिद्धि सयानी पुनि धीरज धरि सविधि निहोरि जोरि युगपानि।
नेह बढ़ावत बरसावत जल बोली अति पुनीत मृदुबानि॥
भागि हमारी धनि सबही विधि हमसम सुकृतमान कोउनाहिं।
डूबत ऊबत जग वारिधि महँ तुम प्रभु राखि लीनि गहिबाहिं॥
महाअनारी हम नारी सब तिन पर दया कीनि सबभांति।
सहज शीलता रघुनंदन तुव हम से कछू कही नहिं जाति॥
जहँ जहँ जन्मैं ज्यहि योनिन महँ हम सब कर्म विवश रघुनाथ।
बंदि अनंदित रघुनंदन तहँ मिलै तुम्हार यार हठि साथ॥
करै यातना विधि कोटिन बरु क्षनक्षनमाहिं छूटि तन जाय।
लगन हमारी अरु राउर की कौन्यों जन्म छूटि जनिजाय॥
करुणासानी सुनि बानी वर अंतर्यामि स्वामि रघुनाथ।
राजकुमारिन सुकुमारिन कहँ अति सन्मान कीन हित साथ॥
बिदा माँगिकै पुनि सबही सों गमने मुदित चारिहू भाय।
सासु सदन महँ चलि आये पुनि साथै सिद्धि आदि समुदाय॥
करि पग बंदन रघुनंदन प्रभु बोले जोरि सरोरुह पानि।
बिदा दीजिये अब माता म्वहिं भई विलंब लेहु अस जानि॥
सुनि सुबैन अस कमलनैनके भरे सुनैन प्रेम जलनैन।
रहीं मवानि ह्वै अवनि शीशधै मानहुँ भूलि गईं सबचैन॥
जानि कुऔसर पुनि धीरज धरि अभरण बड़े मोलके आनि।

चारिहु भाइन सुखदाइन कहँ दीन पिन्हाय आपने पानि ॥
फेरिविविधि विधि करि विन्तीबहु अंबुजपगनमाहिं शिरनाय ।
सुखसह गमने आनंदित ह्वै चारिहु भाय राम रघुराय ॥
जनक सभामहँ आययथाविधि कीन सलाम सबहिंशिरनाय ।
पाय सुआयसु जनकरायको पहुँचे राज पौरिपर आय ॥
कोउ तुरंगपर कोउ मतंगपर कोउ चढ़िचले आल सुखपाल ।
गाजत बाजत चलिआये पुनि जहँपर अवधपाल अजलाल ॥
पितु पगवंदन रघुनंदन करि सबकहँ यथायोग्य शिरनाय ।
निज निज वासन बिश्रामित भे सुनिये अग्रचरित खगराय ॥
नूतन मंगल नित मिथिलापुर बीतै निमिष सरिस दिनराति ।
भे सुखरासी पुरवासी सब प्रतिछन महामोद उमगाति ॥
रघुकुल चंदन अजनंदन पुनि जागे बड़ेभोर हरियान ।
गावन लागे गुण याचकगण द्विजगण करैं वेदकोगान ॥
देखि पतोहुन सह पुत्रनको भूपति हृदय हर्ष अधिकाय ।
जन्म धरे को फल याही है सीता रामरंग रँगिजाय ॥
प्रातक्रिया करि श्रीदशरथ नृप भरे हुलास गये गुरु पास ।
करि पग वंदन आनंदन सों बोले गिरा जनावत आस ॥
तुम्हरी दाया सों मुनिवर अब पूरण भयो मोर सब काज ।
बोलि ब्राह्मणन को लीजै अब दीजै धेनु साजि सब साज ॥
सुनि अस मुनिवर हर्षाने बहु सरह्यो विविध भांति महिपाल ।
बोलि पठायो मुनि बिप्रन कहँ आये सकल जानि असहाल ॥
कीन्हिं दण्डवत नृप सबही को आसन उचित दीन बैठाय ।
पूजि सहादर सब काहू को सेवा सविधि कीनि मनलाय ॥
कामधेनु सम सुखदाई पुनि गाई चारिलाख मँगवाय ।
साजि आभरण सों नीकी विधि दीन्हीं महीसुरन सुखपाय ॥
विप्र महीशहि आशीषत बहु जीवहु लाख बरष महिपाल ।
फेरि बुलाये सब याचक गण दीन्हें हय गयादि मणिमाल ॥

जाकी जैसी रुचि देखी नृप ताको तैस दीन मुद साथ ।
चले अशीषत सब नीकी बिधि जैजै भूप भानुकुल नाथ ॥
भाषि सकैं ना कहि शारद अहि यहिबिधि रामब्याह उत्साहु ।
गिरिजा सुकृत जेंकीन्ह्यों बहु लीन्ह्यों त्यहीं जन्मको लाहु ॥
गाधिसुवनके पग कमलन महँ बारंबार माथ धरि राउ ।
कहैं कि यह सब मुनि राजन की कृपाकटाक्ष केर परभाउ ॥
करैं बड़ाई बहु विदेह की शील सराहि चाहि अज लाल ।
नितउठि माँगहिं बिदाचलनको राखहिं रोंकि जनकमहिपाल ॥
प्रतिदिन आदर पहुनाई अति नितनव नगर माहिं उत्साहु ।
राम बिदाई क्यहु भावै ना आवै सबै हृदय दुखदाहु ॥
बहु दिन बीते यहिभांतिन ते कोउ न लेय जानको नाम ।
बँधे बराती प्रीति दाम सब काहि सुहाय काम औ धाम ॥
शतानंद अरु मुनि कौशिक तब कही विदेह नृपहि समुझाय ।
आयसु दीजै अब दशरथ कहँ यदपि न सकौ नेह बिसराय ॥
भलेहि नाथकहि तब मिथिलापति लीन्हे सचिववृंद बुलवाय ।
आय आयकै तिन सबहिन ने कीन प्रणाम माथ महिनाय ॥
चहत बिदाई अवधराय अब भीतर खबरि देहु करवाय ।
भये प्रेम बश सुनि बानी अस मंत्री विप्र सभासद राय ॥
यह सुधि पाई पुरवासिन ने जात बरात अवध अबतात ।
बात परस्पर हठि पूंछैं सब अति बिकलात. हिये पछितात ॥
बसे बराती जहँ आवत महँ तहँ को सीध चला बहुभांति ।
बिबिध मिठाई अरु मेवा वर पकवानादि अशन बहुजाति ॥
भरि भरि बैलन अरु छकरनमहँ काँवरि लिये अनेक कहार ।
जनक महीपति पठवाये सब भोजन बिबिध बनावनहार ॥
सहस पचासक रथ शोभा गथ सुंदर एकलाख बरवाजि ।
दशहजारगज अतिशोभा धज दिग्गज जिन्हैं देखिरहे लाजि ॥
कंचन बासन बसनादिक वर मणि आभरण और बहुयान ।

महिषी गाईं समुदाईं बहु गाय न जाय सर्व सामान ॥
दायज अगणित कहि भाषै को फिरि जो दीन जनक महिराय ।
जो अवलोकत लोक लोकपति संपति अतिव थोरि दिखराय ॥
यहिबिधि सामा सब सुंदरवर दीनि विदेह अवध पठवाय ।
जात बरातिन को सुनिकै प्रिय सब रनिवास गयो बिकलाय ॥
पुनि पुनि सीताको अंकम लै देइ अशीश सीख समझाय ।
होहु पियारी अतिप्रियतमकहँ सदा सोहागभाग अधिकाय ॥
सेवा कीन्ह्यो सासु श्वशुर की पति रुख देखि कियोसबकाम ।
आयसु मान्यो बड़ जेठनको यहिते लह्यो सुःख सबयाम ॥
सखी सयानी अति सनेह बश सिखवहिं नारिधर्म समुझाय ।
देशिख आशिख सब कुँवरिन कहँरानिन लीन हृदै महँलाय ॥
फिरि फिरि भेंटैं महतारी कहँ कहैं बिरंचि रची कत नारि ।
परबश जीवन जग मिथ्या सब शोचैं बार बार उरगारि ॥
तेही समया पर भाइन सह सजि सबसाज भानुकुल केतु ।
चले भलीबिधि नृपमंदिर कहँ प्रमुदित बिदाकरावन हेतु ॥
चारिउ बंधव अति सुंदर बर धाये लखन नग्र नर नारि ।
देखि देखिकै सुख पाये अति तनमन दीन रामपर वारि ॥
कोउ कह आजुइ चलिजैहैं ये कीन बिदेह विदाकर साज ।
रूपनिहारहु भरि नैनन अब प्रिय पाहुने भूपसुत आज ॥
को यह जानै क्यहि सुकृतबश कीन्हें नैनअतिथि बिधि आनि ।
भये कृतारथ पुरवासी सब लखि धनुपानि राम गुणखानि ॥
मरत कि बेरा जस पावै कोउ सहजहि सुधा प्याल ततकाल ।
लहै नारकी जस उत्तम पद सुरतरु लहै जन्म कंगाल ॥
इनकर दर्शन तस हमहूं कहँ दुर्लभ सब प्रकार ल्यो जानि ।
निजमन फणिकरि प्रभु मूरति मणि देखहु रामरूप सुखखानि॥
यहि बिधि मगमहँ दर्शावत छबि सबकहँ देत नैन को लाहु ।
राज महलमहँ चलि पहुंचत भे बाढ्यो तहां अधिक उत्साहु ॥

रूप सिन्धु लखि सब बंधुन कहँ तुरतै हर्षि उठ्यो रनिवासु ।
वारि आरती करहिं निछावरि अति मन मुदित सुनैना सासु ॥
देखि राम छबि अनुरागी अति पुनिपुनि रामचरण शिरनाय ।
अधिक प्रीतिवश भागि लज्जागै सहज सनेह कहो किमि जाय ॥
चारिउ भाइनके उबटन करि निर्मल वारि डारि अन्हवाय ।
छहरस सालन अतिलालन करि दीन जेंवाय महासुख पाय ॥
समय जानिकै रघुनंदन प्रभु बोले सकुचि मनोहर बानि ।
जावा चाहत नृप कौशल पुर आये बिदा हेतु हम रानि ॥
देहु अनंदित मन आयसु अब हम पर दया न छांड़बमात ।
सुनि असबानी धनुपानी की रानी भई प्रेमबश तात ॥
कढ़ी न बानी कछु आनन ते बढ़ी सनेह देह सुधि नाहिं ।
पुनि धरि धीरज सब कुवँरिन कहँ धाय लगाय लीन उरमाहिं ॥
सौंपि सुंदरी पुनि कुँवरन कहँ बिनती कीनि जोरि द्वउपानि ।
कंठ घुचघुचा भरि आयो तब बोली मधुर मनोहर बानि ॥
तुम कहँ सबकी गति मालुम है राम सुजान शिरोमणि तात ।
यहिते अधिकी मैं भाषौं का तुम ते छिपी कौनसी बात ॥
परिजन पुरजन म्वहिं राजहि यह सिया पियारि प्राणकीनायँ ।
आपनि किंकरि करि मानब त्यहि येई धर्म बड़ेन के आयँ ॥
सकल कामना परिपूरण तुम मानत एक प्रीतिको नात ।
दोष बिभंजन जन मनरंजन सज्जन सुखद दयानिधि तात ॥
असकहि रानी पदपंकज गहि रही चुपाय नैनभरि आँसु ।
तब रघुनंदन प्रभु दायाकरि सब बिधि बोधि बुझाई सासु ॥
पाय सुआयसु पग प्रणामकरि भाइन सहित चले फिरि राम ।
साँवलि मूरति धरि हिरदैमहँ भई सनेह शिथिल सबबाम ॥
सुता सुंदरिन कहँ गिरिजा पुनि बारहिं बार लाय उरमाय ।
फिरि पहुंचावहिं फिरि लावहिंउर बिलपहिं हृदै करुणरसछाय ॥
सखी सयानिन को भेंटै सिय रोवै बारबार बिलखाय ।

यथा जुदाई लखि बछवाकी बिलखै बिकल लवाई गाय ॥
प्रेमवश्य अति पुरवासी सब सखिन समेत सर्व रनिवास ।
मिथिलापुरमहँ जनु कीन्ह्यो प्रिय करुणा बिरह आयकै बास ॥
सुआसारिका सियपाले जे अतिहित कनक पींजरन राखि ।
व्याकुल बोलैं वैदेही कहँ खोलैं मनहुँ मोहकी ताखि ॥
दुःखित खग मृग यहिभांतिन तब कैसे कही मनुज गति जाय ।
जनकहु आये तब भाई सह नैनन रह्यो प्रेम जल छाय ॥
भगी धीरता सिय देखतखन बड़े विरक्त रहे उरगाद ।
लियो जानकी को अंकमभरि मिटिगै महा ज्ञान मर्याद ॥
सचिव सयाने समुझावत सब धीरज धर्‍यो कुऔसर जानि ।
साजि पालकी मँगवाई तब हृदय लगाय सुता सुखखानि ॥
लगन महूरत शुभ सुन्दर लखि धीर गँभीर जनक महिपाल ।
कुँवरि चढ़ाई सब शिविकनमहँ सुमिरे गणप गौरि शशिभाल ॥
शिखदै नीकीबिधि कन्यनकहँ सिखयो नारि धर्मकुल राह ।
सियहि पियारे शुचिसेवकजे ते बहु दिये जनक नरनाह ॥
सीय चलत महँ पुरवासी सब अतिशै बिकल भये खगराय ।
चषजल धोवत बहुरोवत तहँ दशा सो बरणि कौनबिधि जाय ॥
शकुन सुमंगलभे औसर त्यहि गमनत जगतमातुको जानि ।
संग मुनीश्वर द्विज मंत्रीलै पठवन चले भूप गुणखानि ॥
अपनी अपनी असवारी सजि भे सब फाँदि फाँदि असवार ।
बजे नगारे हहकारे करि तुरही शंख घंट घरियार ॥
द्विजन बोलायो श्रीदशरथ नृप दीन्हें दानमान सबिधान ।
करि पगबन्दन अजनन्दन पुनि पाय अशीष हृदय हर्षान ॥
सिद्ध गजाननको सुमिरणकरि कीन पयान भानुकुल भानु ।
शकुनसुमंगलभे अतिशै तब उमग्यो अतिअनन्द हरियानु ॥
हर्षैं वर्षैं सुर फूलन को रंभा नचैं करैं कलगान ।
गमने कौशलपति कौशलपुर अतिमन मुदित बजाय निशान ॥

करिकै विन्ती नृप दशरथने दीन्ह्यों महाजनन लौटारि।
फेरिबुलायो भिखियारिन कहँ रहे न शेष लीन सब भारि॥
हाथी घोड़ा अरु अगणित रथ भूषण बसन दीन बहुदान।
ठाढ़ करायो फिरि सबही कहँ करिकै बहुप्रकार सन्मान॥
देत अशीषैं सब भूपति कहँ नीके करत गुणनको गान।
रामश्यामछबि लखि अँखियनभरि निज निज भवनगयेहर्षान॥
कछुक दूरिचलि फिरि कौशलपति कहँ विदेह नृपहि समुझाय।
जाहु भवनकहँ अब भूपति मणि आये बहुत दूरिचलि भाय॥
जनक प्रेमबश प्रियलौटैंना तब भे उतरि ठाढ़ महिपाल।
भस्यो प्रेमजल कल नैननमहँ भये सनेह वश्य बेहाल॥
बिबिध निहोरे करजोरे तब बोले जनकराय मृदुबानि।
करौं कौनबिधि नृप विन्तीतुव मोकहँ दीनि बड़ाई आनि॥
रविकुल भूषण तव समधीकर शुचि सन्मान कीन सबभांति।
मिलन परस्पर अरु विन्तीवर प्रीति पुनीति कही नहिं जाति॥
पुनि मुनिमण्डल अरु विप्रन कहँ कीनप्रणाम जनकशिरनाय।
आशिष दीन्हीं सब काहूने खगपति अति सनेह सरसाय॥
फेरि जमाइन कहँ भेंट्यो नृप आदर सहित चारिहू भाय।
हाथ जोरिकै पुनि राघव सन बोले बचन प्रेमरस छाय॥
करौं बड़ाई क्यहिभांतिन तुव हे रघुबंश हंस श्रीराम।
जन मन रंजन खलदल गंजन भंजन महामोह इतमाम॥
योग जगावैं बहु योगीजन ज्यहि हित कोह मोह मद नाशि।
अलख अगोचर अविनाशी प्रभु निर्गुण चिदानंद गुणराशि॥
मनसहबानी ज्यहि जानैना कोउ न तर्कि सकै अनुमानि।
नेति पुकारैं कहि महिमा श्रुति तीनिहुँ काल एकसम जानि॥
सो प्रभु दीख्यो हम नैनन भरि आनँद मूल शूल हर्तार।
लाभ अघान्यो जगजीवन कहँ भये प्रसन्न आजु कर्तार॥
दियो बड़ाई म्वहिं सबही बिधि निजजन जानि लीन अपनाय

जो सुख देवनको दुर्लभ जग सो म्वहिं दीन राम रघुराय ॥
नीच मानुषनकी गन्ती कह दशहज्जार शारदा शेख।
इकपल कबहूं साहिंतावहिं नहिं करैं करोरि कल्पभरि लेख ॥
भागि हमारी सुखकारी अरु राउर शुभ्र गुणनकी गाथ।
लिखे न पावैं रहिजावैं चुप सुनिये सत्य बचन रघुनाथ ॥
इकबल मोरे सो भाषौं कहि राखौं कछू गोय नहिं राम।
तनक नेह महँ तुम रीझतहो करिकै दया दयाके धाम ॥
फिरि फिरि माँगौं करजोरे यह मन जनि तजै भूलि पगपास।
जनकराजकी सुनि बानी इमि भये प्रसन्न राम सुखरास ॥
विन्ती करिकै बहुभाँतिन सों कीन्ह्यों श्वशुर केर सन्मान।
तीनिउँ भाइन कहँ भेंट्यो पुनि करिवर विनै जनक मतिमान ॥
विनै बड़ाई करि नीकीबिधि चारिहु भाय चले शिरनाय।
जनक आयकै मुनि कौशिक ढिग अंबुज पगन गये लपटाय ॥
हे मुनिनायक तुव दर्शन सों दुर्लभ जगत वस्तु कछुनाहिं।
नीकी बिधिसों यह जान्यों मैं अस विश्वास होत मनमाहिं ॥
चहैं लोकपति जो कीरति सुख सकुचत करत मनोरथ नाथ।
सो सुखकीरति तुव दर्शनसों सहजै आय गयो ममहाथ ॥
फिरि फिरि विन्तीकरि भूपति मणि शीश नवाय सुआशिषपाय।
लौटे प्रमुदित निज मंदिर कहँ चली बरात निशान बजाय ॥
मारग वासी नर नारी सब रामहिं देखि नैन फलपाय।
होहिं सुखारी उरगारी बहु दशा सो बरणि न मोसन जाय ॥
बीच बीचमहँ टिकि नीकी बिधि मारग वासि देखि हर्षात।
अवध किनारे पुनि सुंदर दिन आय बरात पहुँचिगै प्रात ॥
बाजन बाजे बहु प्रकार सों भेरि नगार शंख धुधुकार।
पुरजन आवत सुनि बरात को भे सब महा अनंदित यार ॥
आपन आपन घर साजे सब सुंदर हाट बाट चौहाट।
गली सुगंधन सों सींची सब बरणि न जाय राजसी ठाट ॥

ध्वजा पताके अति बाँके बर दीन्हें द्वार द्वार बँधवाय।
चौक पुराई गजमुक्तन सों शोभा कछू कही नहिं जाय॥
सफल सुपारी अरु केला पुनि बकुल कदम्ब और सहकार।
ताल तमालन के रोंपे तरु दर्शत डार डार छबिदार॥
बिबिध पदारथ शुचि मंगलमय प्रति गृह रचे साज सजवाय।
राम नगर की लखि शोभा शुभ सुर ब्रह्मादि रहे ललचाय॥
नृप घरसोहै त्यहि अवसर अस छबिलखि मोहिजात मनकाम।
मानहुँ ऋधि सिधि सुख संपति सब आये देहधारि नृपधाम॥
राम सियाकी छबि देखन को कहिये क्यहि न होय अभिलाष।
तियासुआसिनि सजिआरतिकर आवहिं भूपभवनचलिलाष॥
रतिहि लजावैं निज शोभासों गावैं सुभग मंगलाचार।
होय कुलाहल नृपमंदिर महँ जाय न बरणि तौन सुखसार॥
कौशल्यादिक प्रभुमाता सब आपनि देहदशा बिसराय।
पूजिगणाधिप शिवशंकर कहँ विप्रन दानदेहिं मनलाय॥
रामदरशहित अनुरागी सब परिछन साज सजैं हर्षाय।
शिथिल प्रेमबश तन सबहीके पगभरि चलोजाय नहिं भाय॥
अगणित बाजन बाजनलागे मंगलसज्जे सुमित्रामाय।
दूब रोचना दधि अक्षत फल पल्लव पान आदि समुदाय॥
सहज सुहाये शुभ कंचनघट बहुबिधि रँगे अनूपम साज।
मनहुँ घोंसला निज बिरच्यो बर सुन्दर कामरूप खगबाज॥
सचे आरती अति मंगलमय कंचनथार लिये करमात।
चलीं अनंदित मन परिछनको अतिशैपुलक पल्लवितगात॥
धूपधूमसों नभ कारो भो सावन मनहुँ मेघ घुमड़ान।
सुरगण बर्षैं बर फूलनको जनु खद्योत वृंद दिखरान॥
बंदनवारे बरमाणियनके मानहुँ उयो इंद्रधनु खास।
दुरैं औप्रकटैं तियकोठनपर चमकत मनहुँ बिज्जु आकास॥
बजैंनगारे जनु गरजैं घन बरसैं शुचि सुगंध जनु वारि।

मोर पपीहा गण याचक जनु खेती सुखी सकल नर नारि ॥
समय पायके गुरु आयसु दिय पुर परवेश कीन रघुनाथ।
शंभु गजाननको सुमिरण करि सहित समाज चले नरनाथ ॥
होत सुमंगल सब आछी बिधि वर्सत देव फूल झरि लाय।
गावहिं वंदी द्विज सुंदर यश नभ पुर रह्यो शोर बहु छाय ॥
नृपहि जोहारचो पुरवासिन तब रामहिं देखि गये हर्षाय।
करहिं निछावरि तिय आरति करि वित्त विसारि वारि खगराय ॥
लखैं दुलहिनिन की शोभा शुभ टारि ओहार पालकिन क्यार।
राज पौरिपर चलि आये तब माता करहिं मंगलाचार ॥
करहिं आरती निवछावरि करि शाल दुशाल और मणिमाल।
देखि दुलहिनिन सह दुलहन को माता महा मुदित खगपाल ॥
चारिहु जोरी अति सुंदर लखि उपमा खोजि खोजि कै बानि।
गई हारि हिय कहुँ पायो ना देखत रूप टकटका आनि ॥
वेद रीति अरु कुल कर्तव करि डारत अर्घ पाँवड़े बाम।
परछि बधूटिन सह पुत्रन को चलीं लिवाय मोद युत धाम ॥
चारि सिंहासन अति सुंदर वर तिन पर कुँवर कुँवरि बैठाय।
पायँ पखारे बहु आदर सों करिकै धूप दीप खगराय ॥
भोग लगायो सुख पायो बहु आरति साजि बारहीं बार।
चमर ढुरायो शिर नीकी बिधि करिकै विविध भांति सत्कार ॥
योगी पायो परम तत्त्व जनु अमृत लह्यो महा बीमार।
मिल्यो दरिद्री को पारस जनु अंधहि नैन लाभ भो यार ॥
गूंगहि बानी फुरियानी जस पाई समर शूर जनु जीति।
इहिते अधिकी सौ करोरि गुन पावहिं मातु मोद सह प्रीति ॥
माता साजहिं लोक रीति सब वर दुलहिनी हृदय सकुचाहिं।
वह सुख आनँद अवलोकन करि मन महँ रामचंद्र मुसकाहिं ॥
पूज्यो सब बिधि सुर पितृन को मांगहिं बार बार वरदान।
होय सर्वदा सब प्रकारते भाइन सहित राम कल्यान ॥

भूप बरातिन बोलवायो पुनि दीन्हे बस्त्र आभरण यान।
अज्ञा लैलै सब राजाते निज निज भवन गये हरियान॥
पुर नर नारिन को नीकी बिधि पहिरावने दीन महिपाल।
तोषे दैदै धन याचक गण शाल दुशाल और मणि माल॥
सकल बजनियाँ अरु सेवक गण पूरण किये दान सन्मान।
अपने अपने घर गमने सब उर धरि राम चरण को ध्यान॥
आयसु दीन्ह्यों जो बशिष्ठ मुनि सोसब मुदित कीन नरनाथ।
चले अनंदित पुनि मंदिर कहँ लै मुनि बृंद बिप्र सब साथ॥
भीर भूसुरन की देखत खन रानी सकल उठीं हर्षाय।
पग पखारि कै अन्हवायो पुनि सादर सबहि जिंवायो लाय॥
दान मान सों परितोषे सब देत अशीष चले सुख पाय।
गाधिसुवन की पुनि पूजा करि कीन्हीं बिनय भूप मन लाय॥
चरण धूरिलै महरानिन सह भीतर भवन दीन वर बास।
पुनि वशिष्ठ के पगबंदे नृप कीन्हीं विनय जानि गुरु खास॥
सहित वधूटिन के लरिका सब रानिन सहित भानुकुल राय।
पुनि पुनि बंदत गुरुपायन कहँ देत अशीश ईश सुखपाय॥
धरि सुत संपति मुनि आगे सब कीन्हीं विनय प्रेम दर्शाय।
नेग माँगिलिय मुनि नायक ने आशिर्बाद दीन हर्षाय॥
राम सिया को उर धारण करि कीन्ह्यो गुरू गमन निज धाम।
विप्र वधू अरुकुल वृद्धन कहँ पट आभरण दीन अभिराम॥
तिया सोहागिल बुलवायो पुनि पहिरावनी दीनि रुचि जानि।
नेग योग दै सब नेगिन कहँ प्रिय पाहुने सकल सनमानि॥
विदा करायो सब काहूको निज पुर सुरहु गये सुखपाय।
कहत राम यश सब आपस महँ हर्षन हृदय माहिं समिआय॥
सब बिधि सबको समाधान करि गे रनिवास माहिं महिपाल।
सहित वधूटिन सब कुवँरन को लीन बिठाय गोद ततकाल॥
हाल बतायो महरानिन को ज्यहि विधि भयो व्याह उत्साह।

शील बड़ाई जनकराज की वरणी भाट सरिस नरनाह ॥
पुनि नहाय कै नृप पुत्रन सह लीन्हें जाति बंधु बोलवाय।
भोजन कीन्ह्यों बहुभांतिन सों बीती पांचघरी निशि भाय ॥
अँचै पानदै सबकाहू को कीन्ह्यों बिदा अवध महिपाल।
मंगल गावैं सुखपावैं तिय गिरिजा कहि न जाय सो हाल ॥
सुयश बड़ाई सुख संपति वह प्रेम प्रमोद मनोहरताय।
परम विशारद श्रुतिशारद बिधि सकैं न भाषि शंभु अहिराय ॥
सोमैं भाषौं कयहि प्रकारते धरैं कि भूमि भूमि अहिमाथ।
सबको आदर दै नीकी बिधि रानिन लिय बुलाय नरनाथ ॥
बधू लरिकिनी पितु माता तजि आईं अबहिं परारे धाम।
इनकहँ राख्यो बहु आदरते दै सबभांति मोद अभिराम ॥
थके राहके अरु निद्रावश लरिकन शैन करावहु जाय।
अस कहि आपहुगे बिरामगृह श्रीरघुनाथ चरण चितलाय ॥
पायसु आयसु महराजाको दीन्हें कनक पलँग बिछवाय।
तकिया तोशक अति सुंदर बर ऊपर बिछी चांदनी भाय ॥
अतर सुगंधन सों सींचे घर इत उत बिछे फूल अरुमाल।
जग मग चमकैं रतनदीप शुठि बने वितान चारु खगपाल ॥
साजि सेज शुचि लै रामहिं पुनि प्रेम समेत दीन पौढ़ाय।
आयसु दीन्ह्यों पुनि भाइन कहँ तिनहुँन शैन कीनसुखपाय ॥
श्याम गात लखि रघुनंदनको कहहिं सप्रेम बचन सबमात।
जात पंथ महँ अति भीषम तन केहि बिधि हन्योताड़ुका तात ॥
घोर निशाचर भटभारी अति रणमहँ गनै जौन नहिं काहु।
सहित सहायक किमि मार्‌यो सुत खलमारीचऔरशुभवाहु ॥
मुनि प्रसादसों परमेश्वर तुव दीन्हीं बहुत करिवरैं टारि।
मख रखवारी करि भाई दउ विद्या लही सही सुखकारि ॥
तरी अहिल्या पद पंकज छुइ कीरति रही भुवन महँ छाय।
नृप समाज महँ शिवशंकर को तोर्‌यो महा कठिन धनुजाय ॥

बिश्व बिजैयश लै जानकि को आये भवन ब्याहि सबभाय ।
कर्म अमानुष ये तुम्हरे सब सुधरे मुनि प्रसाद को पाय ॥
जन्म हमारो फलियानो जग सुत तुव चंद्र बदन लखिआज ।
तुमहिं बिलोके बिन जेते दिन बीते सुनहुँ राम रघुराज ॥
बिधना उतने दिन कौनिउँ बिधि मुजरा करैं आयुमहँ नाहिं ।
सुनि असबानी महरानिन की रघुपति मनहिं माहिं मुसकाहिं ॥
फेरि बुझायो सब मातन को कहि कहि अति बिनीत बर बैन ।
सुमिरि शंभु गुरु अरु भूसुर पद कीन्हें सुखद नींद वश नैन ॥
प्रिया उनींदहु मुख रघुबर को अतिशै प्रभा युक्त दरशात ।
शोभा भाषत बनिआवै ना संध्या यथा लाल जलजात ॥
करहिं जागरण तिय घर घर प्रति आपुस माहिं देहिं शुभगारि ।
राति उजेरिया महँ राजत पुर शोभा कहि न जाय उरगारि ॥
सुन्दर बहुअन को लैकै सँग सोई सासु महा सुखपाय ।
मानहुँ फणिपति मणि माथे की राखी उर छपाय खगराय ॥
जगे सबेरे रघुनन्दन प्रभु मुर्गा करन लाग आवाज ।
बंदी मागध गुण गावत शुचि पुरजन द्वार जुहारत राज ॥
बिप्र देवता गुरु माता पितु सबके पगन कीन परणाम ।
देतअशीषै सब नीकी बिधि भाइन सहित अनंदित राम ॥
शौच साधिकै स्वाभाविक शुचि सरयू नदी पुनीत नहाय ।
प्रात क्रियाकरि पुनि पितु के ढिग आये सभा माहिं सबभाय ॥
हृदै लगायो नृप पायो सुख बैठे फेरि रजायसु पाय ।
सभा जुड़ानी सब रामहिं लखि नैनन लाहु लीन हर्षाय ॥
गाधिसुवन अरु मुनिबशिष्ठ पुनि पहुँचे सभामध्य तब आय ।
उठे महीपति शुचि आसन दै दोऊ मुनिन लीन बैठाय ॥
पूजन कैकै नृप पुत्रन सह कीन्ह्यौं पगन माहिं परणाम ।
देखि राम छबि अनुरागे द्वउ पागे महा मोद उर बाम ॥
जानि महीपन की रीती शुचि कहहिं बशिष्ठ धर्म इतिहास ।

मोद मानि कै नृप पुत्रन अरु रानिन सहित सुनै सहुलास ॥
सुंदर करणी मुनिकौशिक की बरणी विविध भांति मुनिराय।
बामदेव मुनि सुनिबोले अस मुनिकर सुयश रह्यो जगछाय ॥
सुनि यहबानी मुनि ज्ञानी की अति आनंद भयो सबकाहु।
श्रीरघुनंदन अरु लक्ष्मण उर खगपति अधिकभयो उत्साहु ॥
मंगलआनँदअरुउत्सवमहँ निशि अरुदिवसजाहिं यहिभांति।
उमँगीकौशलपुरआनँदभरि दिनप्रतिअधिकअधिकअधिकाति
छोरे कंकण लहि सुंदर दिन मँगल मोद रह्यो सरसाय।
नगर अयोध्या को आनँद वह गिरिजा कछू कहो नहिंजाय ॥
नित्त नबीनो सुख मंगल लखि देउता हृदय माहिं ललचाहिं।
जोरि गदोरिया करि बिन्तीबहु माँगैं अवध जन्म बिधिपाहिं ॥
जावाचाहैं नित कौशिक मुनि राखैं रोंकि बिनय बश राम।
प्रेम भाव लखि नर नायक को सरहैं लहैं मोद उरधाम ॥
निश्चय गमनब लखि कौशिकको माँगत बिदाराउ पुलकाय।
आय अगारी प्रिय पुत्रन सह ठाढ़े भये नैन जलछाय ॥
नाथ संपदा यह तुम्हरीसब सुततिय सहितजानि म्वाहिंदास।
दाया राखब इन लरिकन पर पूरण करब दरश की आस ॥
अस कहि राजा सुत रानी सह पायँन गिरे प्रेम उमँगाय।
पुलकि प्रीति महँ शुभआशिष दै गमनेशुचिसुभाय मुनिराय ॥
चले पठावन सब भाइन सह प्रेम उमंग छाय रघुराय।
मुनि पदपंकज रज पर्सन करि आयसु पाय फिरे पहुँचाय ॥
राम रूप अरु भगति भूप की प्रीति उछाह ब्याह आनंद।
जात सराहत मग मनहीं मन प्रमुदित महा गाधिकुल चंद ॥
बाम देव अरु श्री बशिष्ठमुनि कौशिक सुयश कह्यो फिरिगाय।
सो सुनि मनहीं मन भूपति मणि बर्णत अपन पुण्य परभाव ॥
पाय रजायसु जन लौटे सब पुत्रन सहित राउगे धाम।
जहँ तहँ गावा राम ब्याह यश छावा सुयश लोक तिहुँआम ॥

सिय बिवाहिकै श्रीरघुकुलमणि जबते भवन माहिंगे आय ।
तबते आनँद सुख यावत सब छाये अवध माहिं खगराय ॥
गिरिजा रघुपति के बिवाह महँ जस कछु भयो मोद उत्साह ।
तस परिपूरण कहि पावैं ना गिरा गणेश शंभु अहिनाह ॥

स० राम सिया यश मंगल खानि महा मुददानि सदाशुचि जानी ।
संतत पाप त्रिताप बिनाशक बंदि प्रकाशक सिद्धि सुबानी ॥
भाषि कहा मतिके अनुसार उदार अपार प्रसिद्ध प्रमानी ।
पावहि सो जग में सबही सुख गावहि जो चितते हित मानी ॥

यह सुख सागर श्रीरघुबर यश गायो तुलसिदास सहुलास ।
मति सम बंदी द्विज वरण्यो स्वइ भवनिधिपार होनकी आस ॥
कठिन काल यह मल ग्रासित तन साधन क्यहु प्रकारनहिं होय ।
अस बिचारि कै उर प्रतीति करि सुमिरै राम मनीषी सोय ॥
त्यागि कपट छल चंचलता सब रेमन रामचरन अनुरागु ।
बहु दिन बीते जग सोवत महँ अबतौ महा मोह निशि जागु ॥
महा अनूपम सिय राघव यश सादर सुनै जौन नर नारि ।
तेसुख संपति सुत पावैं जग जावैं अंत स्वर्ग मुद धारि ॥
जय रघुनंदन जै सीतापति जै रघुबंश बिभूषण राम ।
बंदि अनंदित बर मांगत यह मन कहँ देहु चरन महँ धाम ॥

इतिश्रीभार्गववंशावतंसश्रीमान्मुंशीनवलकिशोरात्मजस्यश्रीमुंशीप्रयाग-
नारायणस्याज्ञाभिगामीउन्नामप्रदेशान्तर्गतमसवासीग्रामनिवासीपण्डित
बंदीदीनदीक्षितनिर्मितश्रीविजयराघवखण्डेबालकाण्डेसीताराम
विवाहउत्साहवर्णनंनामदशमोल्लासः ॥ १० ॥
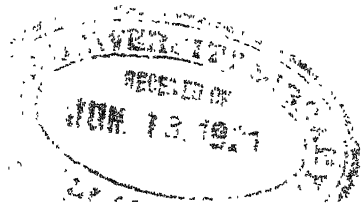
समाप्तोयंबालकाण्डः ॥

---

छोड़ देवेंगे और इसे प्रसन्नता पूर्वक अंगीकार करेंगे जो लोग संस्कृत कुछ भी नहीं जानते केवल भाषाही मात्र जानते हैं उन के लिये भी यह काव्य भाषा टीका में बहुतही थोड़ी कीमत से मिलसक्ती है क्योंकि यह काव्य गान विद्या जाननेवालों तथा रसिक पुरुषों और श्रीभगवद्भक्तों व संस्कृत विद्याके सीखने वाले विद्यार्थियों आदि इन सबको प्रियहै इस हेतु दो प्रकार से इस यंत्रालयमें यह पुस्तक छापीगई है एक तो भाषा टीका युक्त दूसरे संस्कृत टीका सम्मिलित ॥

## दृष्टान्तप्रदीपिनी प्रथम भाग सटीक ॥

इसपुस्तकमें सैकड़ों दृष्टान्त बहुत उम्दा २ प्रमाणिक मय भाषाटीकाके वर्णितहैं जो लोग भाषा तथा संस्कृतकी रामायण या पुराण आदि कथा यें कहते हैं उनके पास तो यह पुस्तक अवश्यही होना चाहिये इसके सिवाय अन्यभी महज्जन जिन की अभिरुचि श्रीभगवत्सम्बन्धी कथाओंमें रहती है और पर- मेश्वरके परमभक्त कहातेहैं तथा होने की रुचिकरते हैं वहभी इसके पढ़ने से कृतार्थ होंगे क्योंकि यह बहुतही अद्भुत ग्रंथहै इसमें एक और भी बड़ा गुणहै कि कैसाही आलस्यहोवै अथवा संसार जनित मोह भ्रम होवै और इस पुस्तकके पांचछःसफा पढ़े तो शीघ्रही आलस्य छूटकर ईश्वरकी ओर भक्ति उत्पन्न होतीहै और चित्तमें अतीव मोद होताहै मूल्य भी इसका बहु- त थोड़ाहै ॥

# इश्तहार ॥

सम्पूर्ण महाशयोंको प्रकट होवे कि इसपुस्तक को मालिक मतबा अवध अख़बार ने बहुतसा रुपया व्यय करके अपनी ओरसे उल्था कराके निज यन्त्रालय में मुद्रित कराया है इस कारणसे कोई महाशय इसके छापने का इरादा न करें—

मैनेजर अवध अख़बार प्रेस

लखनऊ

# श्रीविजयराघवखण्ड आल्हा

## अयोध्याकाण्ड

जिसमें

श्रीरामचंद्र आनन्दकन्द का अयोध्याकाण्ड सम्बन्धी परमोदार चरित्र आल्हा की रीति पर छन्द प्रबन्ध में वर्णन कियागया है

जिसको

लक्ष्मणपुरस्थ भार्गववंशावतंस श्रीमान् मुंशी नवलकिशोरजी के पुत्र श्री मुंशी प्रयागनारायण की आज्ञानुसार उन्नाम प्रदेशान्तर्गत मसवासी ग्राम निवासी पण्डित बंदीदीन दीक्षित ने रामरसरसिक पुरुषों के अवलोकनार्थ अति रोचक छंदमें निर्मित किया

प्रथमबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर ( सी, आई, ई ) के छापेखाने में छपा

दिसम्बर सन् १८९६ ई० ॥

११ जुज़

# सारस्वत सटीक का विज्ञापन पत्र ॥

पण्डित लोगोंको उचित है कि प्रथम जिस समय छोटे २ बिद्यार्थी उनके पास पढ़ने को आयें उनको अत्यन्त आदरसे अपने पुत्र के समान समझ कर बहुत लाड़ प्यारसे उनको अकारादि सब स्वरों और ककारादि सब व्यंजनोंको पहिचन-वाकर लिखायें पढ़ायें और जिस समय छोटे बालकोंके खेलने का समय योग्य समझें थोड़ी देरके लिये छुट्टी भी देदिया करें जिससे बालक आनन्द से पढ़ें इसप्रकार से बहुत शीघ्र ऐसी सामर्थ्य करादेवें कि जिसमें बालकों को भाषा और संस्कृतके भी पढ़ने की शक्ति अच्छी तरह से होजावे तिसपीछे अनुभूतिस्वरूपाचार्य्य कृत सारस्वत पुस्तकको इस भांतिसे कि जिसतरह फ़र्रुखाबाद निवासि स्वर्गवासि पण्डितवर उमादत्तशास्त्री और उन्नामप्रदेशान्तर्गत मुरादाबाद निवासि पण्डित शक्तिधरजीने इसका अर्थ कियाहै प्रारंभकरावें इसमें उक्तपण्डित जनोंने प्रथम मूल, पदच्छेद, अन्वय करके भाषामें इस भांति से अर्थ कियाहै कि जिसमें बालकोंको सहजहीमें ज्ञानहोकर पूर्ण बोध होजावे इसभांति संज्ञाप्रक्रिया, स्वरसन्धि, प्रकृतिभाव, व्यंजनसन्धि, विसर्गसन्धि, स्वरान्तपुंल्लिंग, स्वरान्तस्त्रीलिंग, स्वरान्तनपुंसकलिंग, हसान्त पुँल्लिंग, हसान्त स्त्रीलिंग, हसान्त नपुंसकलिंग, युष्मद् अस्मद् शब्द, अव्यय, स्त्रीप्रत्यय, कारक, समास और तद्धितको पढ़ाकर तिस पीछे सिद्धान्त चन्द्रिका और रघुबंश और कुमारसंभावादि काव्योंको पढ़ावें इसभांतिके पढ़ानेसे बहुतशीघ्र बिद्वान् होसक्तेहैं यही शोचकर श्रीभार्गववंशावतंसमुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) नेबहुत सा द्रव्य व्ययकर उक्तपण्डितों से टीका रचायाहै आशाहै कि जो विद्यार्थी इस पुस्तकको क्रमसे पढ़ेंगे वे शीघ्रही पूर्णबोध होकर विद्वान् होजावेंगे अन्यथा पढ़ानेसे बहुत समय लगकर

श्रीगणेशायनमः

# अथ विज्ञापन

राम बाम दिशि बाम जानकी शोभाधाम रूप गुणवान।
लषण दाहिनीदिशि राजत शुचि जनकल्यान करनयह ध्यान॥
ध्याय गजानन गुरुगोविंद पद शेश महेश सिद्धि आगार।
बन्दि अनंदित वह गावत कहि ज्यहिबिधि भयो ग्रंथअवतार॥
सुयश उजागर गुण नागर वर विदित जहान मध्य मतिधाम।
सुखद भार्गवकुल भाकर इव नवलकिशोर नाम अभिराम॥
शहर लखनऊ के बासी शुचि शील प्रताप तेजकी खानि।
जक्त बिदित है यंत्रालय ज्यहि लक्ष्मी अप्रमान अधिकानि॥
इक दिन समया लगि आई असि जमक्यो महासघन दरबार।
सचिव सलाही सैतराही सब बैठे निकट बुद्धि आगार॥
वर्षा ऋतुको रह औसर वह नभ घन घटा छटा रहि छाय।
वही मुहल्ला महँ समया वहि आल्हारह्यो एक जन गाय॥
कान शब्द सो पर्यो सबन के तब अस लगे फेरि बतलान।
अब रुचि पुरुषन की आल्हा पर है बहु परत बातयह जान॥
जो यहु आल्हा जन गावत हैं ताको ना कछु ठीक ठिकान।
लिख्यो न कतहूं क्यहु ग्रंथनमहँ नाकछु मिलत ठीक परमान॥
छाँड़ि नरायण-यश नरयश को गावब सुनब नीक कछु नाहिं।
इतको स्वारथ परमारथ उत कछु न दिखाय परत यहिमाहिं॥
यतन चाहिये अस याकी अब होवै यही भांति को गान।
पै यश होवै नारायण को जासे दुहूं ओर कल्यान॥
अस विचारि कै उर मुंशी जी कीन्ह्यो क्षणक हृदय महँ ध्यान।
पुनि-तदनंतर वहि औसर पर हँसि अस उचित बातबतलान॥
एक वार्ता हम शोची चित जो कहुँ अस उपाय बनिजाय।

तौ यहि आल्हाको गावब फिरि जगसे सहज माहिं उठिजाय ॥
इतको स्वारथ परमारथ उत गावत सुनत माहिं अभिराम ।
लोक सिधरिहैं दूउ नीकी विधि ह्वैहै एक पंथ दुइ काम ॥
कथा मनोहर रामायणकी तुलसी दास कीनि निर्मान ।
जा महँ उत्तम यश रघुबर को जग को करन हार कल्यान ॥
जौने ढँग पर यहु आल्हा है सोई छंद बनाई जाय ।
फिरि मुद्रित ह्वै यंत्रालय महँ जाहिर कीन जाय जग भाय ॥
सुनै सुनावै अरु गावै सब होवै जगत केर उपकार ।
यहि उपाय ते बढ़ि दूसर अरु कोई देखि परत नहिंयार ॥
मुंशीजीको यह सम्मत शुभ सबको हृदय माहिं प्रियलाग ।
तब वहि औसर पर मुंशी जी मोसन कह्यो सहित अनुराग ॥
यहि रामायण को विरचौ तुम आल्हा रीति प्रीति सरसाय ।
यहिके बदले महँ तुम कहँ हम मुद्रा देब पांच शत भाय ॥
यह अनुशासन श्रीमुंशीको मैं स्वइ लीन शीश पर धार ।
लग्यो बनावन रामायण को अपने ज्ञान बुद्धि अनुसार ॥
भयो न पूरण यह आल्हासब बीचहि हाल कीन असराम ।
स्वजन सुखारी उपकारी पर नवलकिशोर गये सुरधाम ॥
पुनि तदनंतर श्रीमुंशी के पूत सपूत बुद्धि आगार ।
सत मति पूरे द्युति रूरे अति सज्जन गुणिन मानदातार ॥
क्षमा छबीले युत शीले बहु दायक संत द्विजहि सत्कार ।
मान सरोवर श्री भार्गव कुल तामहँ अमलकमल अवतार ॥
प्राग नरायन सुखदायन अति तिन वह पूर कीन सबकाम ।
जस अभिलाषा रह मुंशीकी तैसे भयो सकल इतमाम ॥
सप्तकाण्ड शुचि रामायण स्वइ पूरण यथायोग्य बनवाय ।
निज यंत्रालय महँ मुद्रित करि दीन्ह्यों जगत रामयश छाय ॥
मतिसमभाष्यों यह रघुपति यश जस कछुहती चित्तकीसाध ।
सुनैं सुनावैं जन गावैं जे ते मम क्षमा करैं अपराध ॥

सवैया। जानत काव्य न एकहु अंग न ढंगहै छंद प्रबंध बनाइबो।
है बल बुद्धि विवेक नहीं विधि जानत नाहिंन लोक रिझाइबो॥
संग लह्यों न कहूं गुणियानको बंदि न चातुरी को दरशाइबो।
राह बताय दई गुरु एक यथा मति गोविंद को गुण गाइबो॥

## ( कविवंशतथानामग्रामवर्णन )

### छंदककुभा

अवध देश महँ शुचि प्रदेश जाहिर उन्नामा। त्यहि अन्तर्गत बसत लसत मसवासी ग्रामा॥
चारि वर्ण मति रास बास जहँ करत घनेरा। धर्म धुरी शुभ कुरी शिव पुरी सम द्युति हेरा॥

सवैया। दक्षिण में सुर आपग राजत धारसो नाशत भारधराका।
पूरब कोण तड़ाग तटस्थ अनंदित मंदिर श्री दुरगाका॥
पश्चिम नंद अधीश औ उत्तर गोकुलनाथ धरे बरनाका।
मंदिर मंजु रमापति को सुलसै बिलसै मधि ग्राम के बांका॥

दोहा। तीन ग्राम अभिराम में बनो मोरहू धाम।
पुरिखन तहँ वर बास लिय जानि सुथल अभिराम॥

### छंदककुभा

ललऊ नाम ललाम अहै प्रपितामहँ केरो। रामदीन मति वीन पितामह श्री शिवचेरो॥
भागूलाल बिशाल अहै मम पितुकर नामा। चंदीदीन प्रवीन मोर पितृव्य ललामा॥
अग्रगण्य जे भये मनीषिन महँ त्यहि पुरमें। श्रीमद्रामप्रसाद बिबुध एकहि बुध कुरमें॥
तिनसे विद्यालह्यो अनूपम गुरू बनायो। श्रीमद्राम प्रसाद सुयश उज्ज्वल तहँ छायो॥
बंदीदीन सुनाम धरयो गुरु मोर विचारी। विप्रवंश अवतंस दीक्षितास्पद अधिकारी॥
शिवनारायण गुरू मोर त्यहि थल विख्याता। संभव वंश त्रिपाठि विप्रकुल प्रवर कहाता॥
चारि बेद षटशास्त्र कथनमहँ जिन अतिशक्ती। जन अनंद ब्रजचंद चरणकी हियबहुभक्ती॥
अष्टादशहु पुराण जासु जिह्वा पर छाजैं। काव्यमाहिं जनु कालिदास अस दूसरराजैं॥
गान विधान निधान चित्र एकही बनावैं। कथाकहनके समय द्वितिय व्यासहिसमभावैं॥
तिन द्विय विद्यादान चरणसेवक शिशुजानी। परमोदार अपार बुद्धि श्री गुरु विज्ञानी॥
यह रामायण रची तासु पद पंकज दाया। भाषा छंद प्रबंध माहिं रघुपति यश गाया॥
भूल चूकलखि क्षमहिं दोष मतिमान सुजाना। हौं मैं अति निर्बुद्धि नहीं कविता कर ज्ञाना॥

दोहरा। संवत् शशि[१] शर[५] नंद[९] चंद्र[१] में भयो ग्रंथ अवतार।
पुनि गुण शायक नन्द चन्द में भई पूर्णता यार॥

### मत्तसवैया

**याको पिंगल महँ भाषत कहि मात्रिक मत्त सवैया नाम।**
**मात्रा इकतिस को इकपद है जानत छंद विज्ञ मति धाम॥**

रीति यथावत लहि आल्हाकी वहि धारणा माहिं कियगान।
जासे गावहिं सब सज्जन जन करिके साज बाज को ठान॥
यह रामायण संपूरण करि जस मति दई शारदा माय।
प्रागनरायण की अनुमति लहि बंदीदीन बखान्यो गाय॥
श्री रघुनंदन की कीरति यह जो कोउ पढ़ै सुनै मन लाय।
कलिमल नाशै परकाशै बुधि ऋधिसिधि बसैभौनत्यहि आय॥
पर्व पर्वमहँ शुचि मानुष जो करि है श्रवण याहि धरि ध्यान।
पाप नशैहै सुर पुर पैहै ह्वैहै सदा तासु कल्यान॥
पितृ श्राद्धमहँ जो सुनिहै यहि करि एकाग्र चित्त मतिमान।
मुक्ति होइहै त्यहि पितृन की बसिहैं जाय अमर अस्थान॥
तन मन इन्द्रिन को पावन करि दिन महँ करै जौन यहिगान।
दिन कृत पातक त्यहि मानुषके विनशैं अवशि सत्यपरमान॥
करै निशामहँ जो पातक नर औ यहि श्रवण करै मन लाय।
देर न लागै अघभागै त्यहि प्रापत होय सिद्धि कर आय॥
विप्र जो बांचै यहि मंशाकरि होवै महा ज्ञान आगार।
सुनै जो भूपति याहि चितहितकरि लहैसो विजययुद्ध अधिकार॥
नारि गर्भिणी जो सुनिहै यहि पैहै तनय सुष्ठु मतिमान।
स्वर्ग मँगइया स्वर्गौ पैहैं जैहैं हर्षि देव अस्थान॥
कन्या सुनिकै पति पैहै शुभ बंध्या अवशि पाइहै बाल।
संपति अर्थी संपति पैहै गैहै याहि जौन सब काल॥
बुध पारायण जो बँचिहैं यहि वक्ता होयँ ज्ञान की खानि।
जो कोउ सुनि है यह राघव यश होइ है महा द्रव्य को दानि॥
कामधेनु कहि यहि भाषत सब याके पढ़े होय अति ज्ञान।
कीरति बाढ़ै त्यहि दुनियाँ महँ होवै सब प्रकार कल्यान॥

इति

( मसवासी निवासी पण्डित
बंदीदीन कवि )

---

# श्रीविजयराघवखंडआल्हा

## अयोध्याकाण्डप्रारम्भः ॥

सुमिरण ॥

मैं पद बन्दौं शिवशंकर के अभयंकरन शरन सुखदाय ।
हरन महा दुख दव त्रिताप अघ दारिद दरन शंभुगिरिराय ॥
स० बामलसै गिरिजा बरबाम विरामअरामद नाम सुहावन ।
भालमें बालमयंकविराजत मस्तक गंगतरंगत पावन ॥
भूषण भूति विभूषित अंग अनूपम रूप अनंग लजावन ।
बंदिअनंदितसोशिवध्यावनजाबलरामकिकीरतिगावन ॥
नील कमल सम मृदु श्यामल तन सीता मातु बिराजत बाम ।
बंदि अनंदित कर धनुशर धर प्रणवत हृदय राम सुखधाम ॥
स० पावत भावत राजसमैं ज्यहिमें मुदलेश नहींतन कोभा ।
तैसहिकानन के दुखसोंरुख रंचहु जासु कहूंनहिं क्षोभा ॥
है समभाव सदा प्रभुको ढिगआवत कोह न मोह न लोभा ।
बंदिकरैंसबकालनिहालसो श्रीजनपालककीमुखशोभा ॥
श्री गुरु पंकज पद पराग सों निज मन मुकुर मलिनता भारि ।
गावौं शुचि यश रघुनायक को दायक जौन पदारथ चारि ॥

ब्याहि जानकी को आये प्रिय जब ते राम अवध पुर धाम ।
नित नव मंगल मुद छाये पुर बाजत सुखद बधाये आम ॥
भुवन चौदहौ बड़ पर्वत जनु तिन पर घटा घनेरी छाय ।
सुकृत बलाहक सुख जल बरसैं झरसैं दुख जवास समुदाय ॥
ऋधिसिधिसंपतिसुदिननदिया जनु उमड़तबिमलधारहहराय ।
अवध समुद्रहि चलि आईं सब राजत जहां राम रघुराय ॥
उत्तम कुलके नरनारी जे सब दिन करत अवध महँ वास ।
ते शुचि सुंदर मणिसमूह जनु अतिव अमोल दिव्यपरकास ॥
वरणि जातनहिं पुर प्रभुताकछु विधिकर्तव्य सकलदिखलाय ।
रामचंद्र मुखचंद्र निहारत सब पुरवासिरहे हरषाय ॥
सखी सहेलिन सह माता सब फली निहारि मनोरथ बेलि ।
बहु सुख पावैं हरषावैं मन आनँद अधिक रह्यो हिय मेलि ॥
रामचंद्र को सुंदरता गुणशील स्वभाव देखि सुनि कान ।
राजा दशरथ अति हरषैं मन सो सुख कहि न जात हरियान ॥
पुरवासी सब अभिलाषत मन निशि दिन कहैं महेश मनाय ।
अपने अछत अब नायब पद रामहिं देहिं भूप सुखपाय ॥
तौने समया के औसर में इक दिन सिया सहित रघुराज ।
भवन विराजे छवि छाजे तन आसन एक रहे अति भ्राज ॥
भुज प्रलंब उर नैन मैन के शरसे सरस रहे छवि छाय ।
गोल कपोललोल कुण्डल की झलकनि देखिमोहि मनजाय ॥
नव जलधरतर तन द्युति छाजत विद्युतछटा पीतपट कोरि ।
घुंघुवारी कारी छबि भारी अलकैं कलक करैं मन टोरि ॥
खची भाल त्रैरेख केशरी के समकहै कौन कवि गाय ।
माल मनोहर उर मुक्तनकी शोभा सुभग रही दरशाय ॥
त्रिभुवन सुखमा की सीवाँ सी ग्रीवाँ लखि कपोत शरमाय ।
कीरतुण्ड लचि परत लखे छबि नासा तिल प्रसून मुरझाय ॥
बिंबाफल परिपक्क अधरकी उपमा लहत नलेशौ जासु ।

चिबुक चारु चकित चितवतहीं मन फँसिजात नलेत उसासु ॥
प्रभु अविनाशी सुखराशी इमि बैठे खासी छबि सरसाय ।
तेहीं समैया के औसर में औचक आयगये मुनि राय ॥
अतिव रसीला प्रभुलीला शुचि गावत बीनालिये करमाहिं ।
अति अनुरागी सुर हित लागी पठवो हतो ब्रह्मने ताहि ॥
आवत देख्यो मुनि नारदको प्रभु उठि कीन दण्ड परणाम ।
दै सुख आसन बैठायो फिर कहि यह धन्य आजु मम धाम ॥
पति रुख जानी हरषानी मन सीता निज कर चरन पखारि ।
शीश चढ़ायो सुख पायो अति रघुपति त्यहि बिचारि शुचिवारि ॥
भवन सिंचायो पुनि नीकी विधि पूजन कीन सहित सन्मान ।
हाथ जोरिकै प्रभु बोले इमि हे मुनि करिय बचन परमान ॥
हम सम बिषयी नर दुनियां महँ सहजन लहत संत को साथ ।
भागि पुरातनि जो जागै कहुँ तब तुव दर्श मिलत मुनिनाथ ॥
भागि सराहत मैं ताते निज गृह कुटुंब रत नेह बिशेश ।
दीन्ह्यो आय दर्श दाया करि अब नहिं रह्यो दुःख लव लेश ॥
सुनि २ बातैं रघुनन्दन की नारद कह्यो हृदय हरषाय ।
इसन कहौ जगहित हितकारन भयौं सनाथ दर्श प्रभुपाय ॥
मैं कछु जानत तुव महिमा बल तुम्हरी दाया सों रघुवीर ।
प्राकृत नर के सम बानी तुव नहिं संभावित होत मति धीर ॥
दास बड़ाई अरु लघुता निज याही अहै तुम्हारी टेक ।
सहज स्वभाव प्रणत अनुरागहि नर तन धरयो दास हित एक ॥
माया बानी गुण ज्ञानहुँते जो प्रभु नाम अतीत दिखाय ।
तुम्हरी दाया सों राघव स्वइ जीतत सदा दास सुख पाय ॥
जग व्यापक जगदीश निरंजन कारक अखिल बिश्वकरजोय ।
सो नटवरी वेषनर शिशुबनि अस्तन पान हेत रह रोय ॥
देह बरन अरु नाम रूप ते रहित बिकार बिगत बिन खेद ।
वेद बखानत हम मानत अस पावत कोइ न जाकर भेद ॥

है निरमुक्त युक्ति करि देखा लेखा किये न पावत पार।
मोह राग अनुराग निरामय है नाहिं जामें एक बिकार॥
तप जप योग यज्ञ संयम व्रत विमल विराग ज्ञान विज्ञान।
नेम प्रेम परिकरन सपर्या इच्या अधिक किये बड़ दान॥
यतन अनेकन करि पावत कोइ देखा प्रकट भक्त बश सोय।
दशरथ नंदन कहि गावत त्यहि जो प्रभु प्रकट कबौं नहिंहोय॥
हठ बश साधन बहु साधैं शठ करैं उपाय अमित परकार।
विना भक्ति के नर पाँवर ते बावर होत नहीं भव पार॥
जानि सकै सो जानहिं नीके प्रभुके निर्गुण सगुण स्वरूप।
मो मन मानस कमल भृंग सम बसौ सदैव राम नर भूप॥
बहु दिन बीते ब्रह्मभवन महँ सुख सह बसत स्वामि गुणगाय।
उपजी इच्छा अस हिरदै महँ प्रभु पद कमल बिलोकहुँ जाय॥
मोकहँ आवत इत जान्यो विधि तब यह कह्यो मोहिं समुझाय।
विनय हमारी यह नीकी विधि प्रभु कहँ भाषि सुनायो जाय॥
जौने कारण तन धारण करि लीन्ह्यों जगत माहिं अवतार।
देर न लीजै सो कीजै अब दीजै सुरन मोद अधिकार॥
इमि भय सानी विधि वानी सुनि कह मुसकाय राम सतिभाय।
अबहुं न छूटी भय ऊटी मन विधि सन कह्यो जाय समुझाय॥
कछुदिन बीते मन चीते सब देखिहैं होनहार है जौन।
सुनि प्रभु वानी विज्ञानी मुनि गमने करि प्रणाम विधि भौन॥
राम ध्यान धरि उर आनँद भरि मानद चले करत गुणगान।
सो क्षण बीता प्रभु सीता कहँ निकट बोलाय लीन करिमान॥
परम सनेही वैदेही सुनु नारद मोर परम हितकार।
आय सुनाई कहि गाई सब ज्यहि हित मोर तोर अवतार॥
द्विज गोवन को दुख दारन हित टारन हेत भूमि को भार।
देव उधारन खल दारन हित याही बड़ो काजहै म्वार॥
मुनि के आये बतलायेते विधि अभिलाष लीन हमजानि।

प्रथम उतारैं महि भारै अरु पीछेकरैं राज सुख मानि ॥
यहि निशि स्वपना इक देख्यों मैं सुनु वैदेहि तौन चितलाय।
रूप उदासी बनवासी बनि गवने बनहिं मनो सुखपाय ॥
परम विचक्षण भट लक्षण सँग रक्षण काज धनुष लै हाथ।
कसे तुणीरा रणधीरा वर गमने जटा मुकुट करि माथ ॥
संग सो एही वैदेही तुम अति उतसाह करे मनमाहिं।
डगरे अगरे मग मुनियनकी मानहुँ खोह पहाड़न जाहिं ॥
बन फल भोगी जिमि योगी यक अस्थलबसे जाय सुखपाय।
तहां अपावन खलरावन इक मानहुँ तुम्हैं हस्यो छलछाय ॥
बनबन धायो खोज न पायो ढूंढ़त तुम्हैं महा दुखपाय।
कपि यक आयो लैआयो सो मानहुँ तुम्हरो खोजलगाय ॥
लगो गोहारी कपिदल भारी सारी सैन दीनि विड़राय।
जीति लयायो अवधै आयो तुम सँग राजि करी सुखपाय ॥
कछु दिनबीते चितचीते इक आई मनै वहुरि यहबात।
जग यशलेहीं वैदेही तजि परिहरि दुसह जक्कको नात ॥
पुनिमैं जागो अनुरागो अस जागोभाग देवतन केर।
यह अनहोनी है होनी कछु आगम जानिपरत यहिबेर ॥
परम सभीता सुनि सीता यह गीता जौन कही प्रभुगाय।
भई विनीता धक धक बीता लागी देव मनावन जाय ॥
सुवरणथाली मुकताली अरु डाली कनक रतन भरि पूर।
द्विजन बटाई मनभाई यह जासों होय स्वपन भय दूर ॥
अन्न अनोखे सब विधि चोखे तोखे विप्र बोलाय बोलाय।
दै मणिमाला परमविशाला ताला धनकर दीन खोलाय ॥
देव मनावै मनलावै अस कबहुँ न पतिसों होय बियोग।
त्रिय तनु धारी को भारी दुख यासों कौन अधिक भव रोग ॥
त्यही समइया सखि आई इक लाई भूप मनोरथ बात।
कहुँ सुनि पाई आय सुनाई सीतहि परम हिये हरषात ॥

आजु महाजन पुर परिजन जन भूपति सभा गये मनलाय ।
भूप बोलाये आदर पाये बैठे सकल तहां सुखपाय ॥
घर घर दर दर नर नारी सब जहँ तहँ करत बतकही आज ।
सम्मत संसदि महँ भैहैं यह देहैं भूप राम कहँ राज ॥
यहि मत रतहै बोलवायो नृप सब कर कियो परम सन्मान ।
परम सुपासन शुभ आसनदै दीन्हें सबहि हाथ निजपान ॥
भागि हमारी अतिभारी अब सारी कहैं एक सों एक ।
सीतारानी महरानी भै रघुवर भूप न टरिहै टेक ॥
जानि मनोरथ प्रभु अपने का कछु सपने का भेव विचारि ।
तन सुखमानी परमसयानी वानी बिहँसि कही त्यहि वारि ॥
होय जो पूरण चित चिंतित तुव जादिन लहहिं भूपपद राम ।
करु ठकुराई प्रभुताई सब बैठे सुमुखि आपने धाम ॥
कहि असवानी निजपानी फिरि पूजे गौरि चरण चितलाय ।
जन सुखदायक सबलायक जे पूरण करनहार सुखभाय ॥
उतै अयोध्यापति दशरथ को जमक्यो महा सघन दरबार ।
आय बिराजे पुर परिजन सब लहि २ यथा योग्य सत्कार ॥
लैलै आये पुरबासी जन भूपति हेत भेंट बहु भांति ।
तामहँ दर्पन जनलायो इक कीमति जासु कही नहिं जाति ॥
सहज स्वभावहि त्यहि राजाने लीन उठाय आपने हाथ ।
मुख अवलोकन करि आछी बिधि सुंदर मुकुट सुधार्यो माथ ॥
बाल सफेद भे कानन ढिग ते जनुरहे ऐस बतलाय ।
हृदय विचारौ नृप नीकी बिधि तुम्हरो गयो बुढ़ापा आय ॥
जन्म सुधारौ अब दुनियाँ महँ हर्षित देहु राम कहँ राज ।
करिबे लायक करि लीन्ह्यों सब बाकी रह्यो यही यक काज ॥
मन अनुमानी अस आनी यह वानी कही परम सुखपाय ।
हे पुरबासिहु अभिलाषा निज गुनि २ कहौ मोहिं समुझाय ॥
सुनि सब बोले मुदखोले तब राउर राज महा सुखदैन ।

नीति बढ़ावत गुण गावत सबमुखते कहैं कहांलौं बैन ॥
पर अभिलाषा यक राखा विधि पूरीकरै वहौ करतार।
अछत तुम्हारे सुत प्यारे श्रीरघुपति होहिं भूमि भर्तार ॥
पुरजन वानी सुनि ज्ञानी नृप मानी अति अनँद हरियान।
फेरि प्रशंसा करि आदर दै सब कहँ विदा कीन दैपान ॥
सुत सुखदाई रघुराई पर मोसम करत सर्व जन प्यार।
ताते वाजिब अब याहीहै रामहिं देहुँ राज अधिकार ॥
अस विचार करि उर आनँद भरि भूपति करनलाग फिरिराज।
गुप्त वार्ता धरि राखी हिय औसर पाय अरंभौं काज ॥
स्ववश विहारी पुर नारी नर निज निज धर्म करत मन लाय।
देव रिझावत यही मनावत राजा होहिं राम रघुराय ॥
तिनकी शाखैं अभिलाखैं वर भाखैं दूत भूप सों जाय।
भूपति हरषैं मुदवरषैं मन परखैं समय सोहावन भाय ॥
प्रकट न भाखी मन राखी यह इक दिन वन शिकारके काज।
सेन न साजी बर वाजी चढ़ि अकिले गये भूप शिरताज ॥
अतिव विशेखी मग देखी छवि सरसित सरस सरोवर कंज।
खिले मनोहर मिले मेलि अलि गुंजत लखे न राखत रंज ॥
नृप यश गावत धान रखावत बैठी ऊंख छाहँ बहुबाम।
सुकृत मनावत नेह बढ़ावत लावत लहैं भूपपद राम ॥
रंग विरंग विहंगनके गन द्रुम द्रुम डारन बैठ अपार।
करत कलोलैं कलरव बोलैं डोलैं लता लचकि तिनभार ॥
स्वच्छ समच्छ गुच्छ कलियन के खिल २ रहे महा छविछाय।
नृपहि रिझावत सिखलावत जनु दीजै रामराजि सुखपाय ॥
कहुँ कहुँ अरना अरु हरनागन मिलि इक संग चरतहरषाय।
जलज कसेरू मूल नवेरू खोदत वनबराह मन लाय ॥
देखत शोभा मनलोभा नृप त्यहि थल गयो जहां मुनि अंध।
सुत दुख भारी देह प्रजारी भारी बँधो मोह के बंध ॥

लखि तरु अटक्यो मन भटक्यो अति पटक्यो शीश देखि सो ठाम ।
परम लजान्यो सकुचान्यो जिय निज अघ जानि हानि परिणाम ॥
त्यहि थल ठाढ़ो दुखबाढ़ो अति मलिमलि हाथ लाग पछितान ।
द्विजतन धारन करि औसर त्यहि आयो अंधशाप मतिमान ॥
माथ नवायो नरनायकको लाग्यो युक्ति शोचि बतलान ।
तौन यथोचित कहि भाषैं हम सुनिये सावधान हरियान ॥
चिन्ता दरशै चित तुम्हरे कछु हम से कहहु भूप छल त्यागि ।
दुख सुख भोगी देह न योगी जाको जीव तचै त्यहि लागि ॥
अतिहू दुखको सुखसम मानत ज्ञानी करि विचार मनमाहिं ।
महा यतन करि तरि वारिधिभव भ्रमभय विगत होत शक नाहिं ॥
काम क्रोध मद लोभ मोहते उपजत तृष्णा केर विकार ।
तिन बँधि पाँवर नर बावर से भर्मत फिरत भर्म दरबार ॥
आनँद राशी अविनाशी ज्यहि रहित विकार वेद बतलाहिं ।
देह योग सों जीव कहावत आवत यह बिचार मन माहिं ॥
धरि तन मानुष कर्म करन हित नित उपदेशत वेद पुरान ।
गहत स्वई मग जग चरचा तजि भजि रघुनाथ लहत कल्यान ॥
ताहू में फिरि वर्ण भेद करि भाषे वेद कर्म अधिकार ।
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र के कीन्हे भली भांति निर्धार ॥
पढ़ै पढ़ावै हरि यश गावै करै करावै यज्ञ विधान ॥
दान काल लखि लेय देय पुनि ये छः कर्म विप्र के जान ।
पढ़ै पढ़ावै ना काहूको दानहिं देय लेय नहिं आप ।
यज्ञ करै पै करवावै ना यह है क्षात्रि कर्म की थाप ॥
निज हेती खेती गोरक्षा अरु व्यापार वणिज सुखपाय ।
वैश्य धर्म शुभ कर्म बताये नहिं श्रुति कहे और कछु गाय ॥
है परिचर्य्या की चर्चा इक शूद्रन हेत करी अधिकार ।
शास्त्र सु सम्मत लै अपने हित चित धरि करत वर्ण सो पार ॥
ताहू में यक और भेद यह जन्मत लहत तीनि ऋण सर्व ।

देव पितृ ऋषि नाम सोहावन पावन परम न मानत खर्ब ॥
जबलौं इनसे नर उबरत नाहिं साधि उपाय जक्त महँ कोय।
जन्म नशावत सुख पावत नाहिं आवत फेरि योनिमग सोय ॥
पुत्र जन्म ते ऋण पितृनको मखते होत देवऋण दूरि।
ऋषिऋण कीन्हे संसकार के उबरे रहत जक्त यश पूरि ॥
सबहि उधारे ऋण भूपति तुम राखी एक शेष कुलरीति।
दै नृप आसन सुत अपने को बनबासि इन्द्रि मनोरथ जीति ॥
परम उदासी बनबासी बनि भोगनसों बिरक्ति उपजाय।
मोहअमानाहिंअभिमानाहिंतजिभजिमुक्तिताहि लेहुयशभाय ॥
सुनहुँ भानुकुल कमल दिवाकर आगर सकलगुणनकीखानि।
शोच सकोचहि तजि हिरदय ते मानहुँ कही हमारी बानि ॥
जीवन आशा ओस बिन्दु सम सूखत लगै तनिक नहिं बार।
यासों सज्जन जन निश्चय करि करनेहार करत हथियार ॥
जीवन मरण मोह बंधनये यद्यपि जानै सकल जहान।
तजत न भर्म भवँर भय आशा जासों पावत दुःख महान ॥
सुता बियाही जब केकय नृप तब करि लीन एक इकरार।
ताके सुतके हित भूपति पद यह तुम गयो कौल सों हार ॥
भूप न मानिहैं कीन्हे बनिहैं तहँ मैं कीन्हों एक बिचार।
यतन न याकी अरु दूसरि कछु ह्वैहै यहि प्रकार निर्धार ॥
खबरि जनायो ना भ्रम खायो ना कैकेयिहि कह्यो सुनाय।
निकट सुबासी त्यहि दासी कहँ हाँसिउ मैं न दियो बतलाय ॥
सुदिन सुमंगल सुख जंगल भल होइहि प्रात जानि मनमाहिं।
त्यहि निशि जायो ताहि सुनायो जो लघुरानि तुम्हारी आहि ॥
गुरु अनुशासन पाय सिंहासन शासन प्रजा हेत रघुराज।
जबहिं बिराजैं सिय सँगराजैं जान्यो सफल भूप निज काज ॥
हम द्विज नाहीं मनमाहीं नृप कीजै यह बिचार मतिमान।
अघवन कीन्ह्यों शापसो दीन्ह्यों अंधक तौन लेहुम्बहिंजान ॥

रह्यों अयानो शिशु अबलगि मैं आई तरुण दशा अब भूप ।
करि अब बाधा तुमहिं अगाधा साधा चहत क्रोध मुनिरूप ॥
भेद बतायो समझायो कहि फिरि द्विजभयो सो अंतर्द्धान ।
नृप भयखायो सकुचायो मन आयो अवध लौटि पछितान ॥
प्रकट जनायो ना काहूको हूको उठो अधिक संताप ।
राति बिताई नींद न आई छाई हृदय शाप की दाप ॥
पिछिले पहरे नृप निद्रावश दीख्यो स्वपन भयंकर एक ।
जागि सिहानो भयो बिहानो उठि नित कर्म कीन सविवेक ॥
पुनि सुमंत कहँ समुझायो कहि लावो गुरुकहँ वेगि बोलाय ।
सुनि नृप बानी मनमानी साति अति मतिमान मंत्रिवर जाय ॥
विनय सुनायो शिरनायो पद लायो संगहि गुरुहि लेवाय ।
जाय सुनायो फिरि भूपति कहँ गुरु तुवद्वार बिराजे आय ॥
तजि सिंहासन नृपधायो झट आयो द्वार देर नहिं लागि ।
गुरु पद बंदन करि आनँद सह लायो भवन माहिं अनुरागि ॥
दैसुख आसन बैठायो पुनि पूजाकीनि अधिक लवलाय ।
हाथ जोरिकै पुनि भाष्यो अस सुनिये विनय मोरि मुनिराय ॥
मैं मनराखा अभिलाखा यक प्रभुसों कहन चहत अब सोय ।
गाय सुनावों समुझावों सब मनकी आश जो आयसु होय ॥
जगत प्रशंसी रघुबंशी नृप इकते एक भये अधिकार ।
तुव दायासों सब काहूने सुख सह कीन राज संभार ॥
मति अनुरूपा लघुभूपा जस मैंहूं लियो शीश तस धारि ।
तुम्हरी अज्ञा सर्वज्ञा मुनि पालन कियो स्वमति अनुसारि ॥
वयसबुढ़ापाअबव्यापाकछु दिनदिन अधिकअधिक गरुआय ।
चलत अगारू नहिं भारू बड़ ताकहँ कीजै कछुक उपाय ॥
आजु भोरहरे के औसरमें सपना एक दीख मैं नाथ ।
अधिक भयावन उपजावनभय प्रभु सुनिलेहु सकल सो गाथ ॥
गहिर कुण्ड इक विस्तारित बहु गोबर पूरिरह्यो तेहिमाहिं ।

गिस्यों अचानक तेहिभीतर में डूबत मनौ न पावत थाहि ॥
धँसत अधोगति मति बावरसो तरको किये मनहुँ निजमाथ ।
इतउतखैंचत खौंचि न पावत मानहुँ त्रिया धरे दुइहाथ ॥
इतउत देखी पुनि वामा बहु श्यामा सुरुख बसन पहिराव ।
कबहुँ अगारी कबहुँ पछारी तारीदेत हँसत चितचाव ॥
खड़ी अगारी जनु भारी इक बूढ़ीत्रिया थरथरी अंग ।
कहत विवाहहु म्वहिं भूपति तुम त्यागहु और सबनको संग ॥
देह आपनी तन देखत तब मानहुँ लपटिरही बहु धूरि ।
अतिहि पिपासा युत आसाकरि पीवत तेल अंजली पूरि ॥
पाछे दीख्यो पुनि कबंध इक काँधेधरे नाँगि तरवारि ।
अट्टहास करि गर्जि महाधुनि धावत करत अधिक किलकार ॥
माल मनोहर दुपहरियाकी पहिरी गलेबीच जनु नाथ ।
मूड़ मुढ़ाये तेललगाये चढ़ि खर गही दच्छिणी पाथ ॥
सपन भयंकर यह जागेहु पर मोकहँ त्रासित करत महराज ।
छाती धरकत मन डरपत बहु एकहु समुझ न आवत काज ॥
सुनि असबानी मनआनी गुरु बोल्यो सुनो अवधपति बात ।
सपन सुभायक दुखदायक अति शायक सरिस करहि नृपघात ॥
भर्म न मानो मंन आनौं अब है जो करनहार यहि काल ।
करिहि उठावो बार न लावो है यह चित्त चेतावन हाल ॥
महा अमंगल कर स्वपना यह हम मनमाहिं लीन करि ख्याल ।
अतिव अपावन राजनशावन दावन दुःखकेर नरपाल ॥
याहिते तुमका समुझाइत हैं सुनि सोकरहु भूप मतिभौन ।
देर न कीजे करि लीजे अब हिय अभिलाष होयतुव जौन ॥
सुनि गुरुबानी नृपमानी मन बानी कही प्रीति सरसाय ।
देखि महूरत अब नीको प्रभु रामहिं राजिदेउ हरषाय ॥
सुनि गुरु बोल्यो मत खोल्यो यह माधवमास महासुखदाय ।
शुक्लपंचिमी गुरुवासर युत शुभनक्षत्र स्वाति दरशाय ॥

योग सुहर्षण मन हर्षण कर कारण उच्च कुलेश तुम्हार ।
लग्न सोहावन सुख छावन कहि मेखहि सिद्धिकरै कर्तार ॥
चंद्र तुलाके हैं सतयें घर वर महिसूनु मकर के तौन ।
दशयें घरमें सो राजतहैं संपति ऋद्धि बढ़ावत जौन ॥
कर्कराशिके चौथे केंद्री सुरगुरु काज सवाँरनहार ।
शुक्र दिवाकर वर मूरति गत मत यह मोर भूमि भर्तार ॥
पाय महूरत अस उत्तमजो भूपतिलहै अखिल भुवभार ।
निखिल धराधिपहैं ताके वश पालहि सात द्वीप इकबार ॥
देर न कीजिय अब भूपति मणि साजहु सब समाजको साज ।
सुदिन सुमंगल है ताही दिन जानन रामहोहिं युवराज ॥
सुनि असबानी गुरुज्ञानी की आये मुदित महीपति धाम ।
बोलि पठाये निज मंत्री सब आये सुमंतादि अभिराम ॥
माथ नवायो तिन राजा को बोले विनय सहित सुखपाय ।
कहि आज्ञा महराजाकी सो हम करन माथ पर लाय ॥
भाषन लागे तब दशरथ नृप मोसन कह्यो स्वामि गुरु आज ।
साज साजि कै सब नीकी विधि रामहिं राज देहु युवराज ॥
नीक जो लागै तुम पंचन को यह मत मोर और गुरु क्यार ।
देर न कीजै तौ दीजै अब रामहिं राज भार अधिकार ॥
सुनि प्रिय बानी अस मंत्री वर मानी महा मोद मन माहिं ।
परयो मनोरथ द्रुम पानी जनु सो सुखकहो जात प्रिय नाहिं ॥
विन्ती मंत्रिन बहु कीन्हीं तब जीवहु कोटि वर्ष नरराय ।
जग हित कारज भल शोचे तुम करिये तौन बेगि सुखपाय ॥
भाषण मंत्री को सुनिकै अस भे बहु खुशी भूमि भर्तार ।
मनहुँ बढ़्यावरि के औसर महँ बिरवा लही मनोहर डार ॥
पुनि अस भाष्यो नृप मंत्री ते जो जो हुकुम गुरू को होय ।
राज तिलक हित रघुनन्दन के सामा करहु बेगि स्वइ सोय ॥
हर्षित ह्वैकै मुनिनायक तब बोले मधुर मनोहर बानि ।

सात समुद्रन अरु नदियन युत आनहुँ सकल सुतीरथ पानि ॥
मूल फूल फल अरु औषधि भल अगणित नाम दीन बतलाय।
महा मंगलिक जे जाने जग विधि सह वेद बखाने गाय ॥
खाल मनोहर हरणादिक की चामर वसन अनेकन भांति।
शाल दुशालादिक रेशम पट कंबर आदि ऊन की जाति ॥
बस्तु अनेकन अरु मंगल मय सुवरन रतन मणिनके माल।
राज तिलक महँ जो वाजिब जग सो सब युक्त कीजिये हाल ॥
पुर महँ माड़ौ रचवावो बहु साजि विधान सहित सबठान।
चौक पुरावो गज मोतियन सों करौ बजार द्वार निर्मान ॥
पनस सुपारी अरु केला लै रोंपहु चहुँ ओर द्रुम आम।
ध्वजा पताका अरु तोरन बर साजहु कलश दिव्य मति धाम ॥
गुरु गणनायक कुल देवनकी पूजाकरौ सविधि मनलाय।
सेवा विप्रनकी साधौ शुचि जामहँ काम पूरह्वै जाय ॥
हाथी घोड़ा रथ साजौ सब द्वार अगार बाटिका बाग।
धरि मुनि आयसु सब माथे पर निज २ काज सवाँरन लाग ॥
अज्ञा जाकहँ जो दीन्ही मुनि सो जनु प्रथम सवाँर्यो काम।
साधु देवता द्विज पूजत नृप जामहँ लहहिं राजपद राम ॥
राज तिलक सुनि रामचंद्र को अति आनंद भई पुरमाहिं।
सुखद बधावा बाजन लागे सब नरनारि हृदय हर्षाहिं ॥
शकुन जनावैं सिय राघव तन फरकैं सुभग अंग हरियान।
करैं बार्ता तब आपुस महँ आगम परत भरत को जान ॥
भये बहुत दिन ननिऔरे महँ चित महँ रहति अँदेशा लागि।
शकुन जनावत हैं याही अब प्रियतम भेंट होहि अनुरागि ॥
भरत बराबरि म्वहिं प्यारो अरु दूसर जगत माहिं कोउ नाहिं।
यहै शकुन फल बतलावत हैं जानि सो अंग अंग हर्षाहिं ॥
गिरिजा रघुपति के हिरदै महँ बंधव शोच रहत दिन राति।
नदी किनारे जिमि अंडा धरि चिंता कमठ चित्त सरसाति ॥

तौने औसर सुनि मंगल यह रानी सकल गईं हर्षाय ।
यथा चंद्रमा लखि पूनोको दूनो सिंधु उमंगत भाय ॥
खबरि जनाई जिन पहिले तहँ पाई बहुत द्रव्य इनआम ।
ह्वै अनुरागी सुख पागी सब लागीं सजन मोद इतमाम ॥
सुंदर चौकैं गज मोतियन की पूरी मुदित सुमित्रा रानि ।
राम मातु मन हर्षानी अति बहु धन देत बिप्र सन्मानि ॥
ग्राम देवतन को पूजन करि कह्यो बहोरि देन बलि भाग ।
होय कुशलता जिमि राघव की सो बरदेउ सहित अनुराग ॥
कोकिल बयनी मृगनयनी तिय गावहिं मुदित मंगलाचार ।
देव मनावहिं सुखछावहिं अति पावहिं राम राजि अधिकार ॥
त्यही समइया के औसर महँ भूपति गुरुहि लीन बोलवाय ।
रामचंद्रको शिखदेबे हित दीन्ह्यों धाममाहिं पठवाय ॥
आवत सुनिकै गुरुस्वामी को लीन्ह्यों राम द्वार पर आय ।
माथ नवायो पग कमलन महँ अति आनंद गईं उरछाय ॥
अर्घ्य सहादर दै लाये घर आसन स्वच्छ दीन बैठाय ।
सोरह विधिसों करि पूजनपुनि सियसह बिनय कीनि शिरनाय॥
आगम स्वामी को सेवक घर मंगल मोद सिद्धि दातार ।
विघन अमंगल को नाशकहठि भासक सुखसमृद्धि आगार ॥
यद्यपि वाजिब प्रभु ऐसो है नीतिउ कहत रीति यह आय ।
बोलि पठाइय ढिग दायाकरि सिखइयकाज प्रीति उपजाय ॥
छाँड़ि सो प्रभुता निज स्वामीने मोपर कीन नेह अधिकार ।
दरश दिखाये चलिआये इत भयो पवित्र आजु घर म्वार ॥
आयसु होवै जो स्वामी को सो अबकरौं माथ पर राखि ।
सुनि धनुपानी की बानी बर ज्ञानी मुनिहुँ कह्यो अस भाखि ॥
रघुपति तुम अस कसभाषौ ना सुंदर हंसबंस अवतंस ।
शील उजागर गुण आगर बर नागर नीति रीति परशंस ॥
एक प्रयोजन ते आयों चलि मैं तुव धाम राम रघुराज ।

करी तयारी नृप नीकी विधि चाहत तुमहिं देन युवराज ॥
संयम साधौ सुत आजहिते जो विधि कुशल निवाहै काज।
यहि बिधि शिक्षा दै मुनि वर पुनि आये जहाँ भूप शिरताज ॥
भई अँदेशा तब रघुपति मन शोचनलगे हाथ धरि माथ।
चारिहु भाई सुखदाई हम जन्मे जगत माहिं इक साथ ॥
खेले खाये सुखपाये सब सोये एक संग इकठाम।
मूड़न छेदन जनौ व्याह लै भे उत्साह साथ सब आम ॥
विमल वंश महँ यह अनुचित यक छोटे छाँड़ि बड़ेहि को राज।
कहिबे लायक कछु नाहीं पै है अनरीति केर यह काज ॥
यह पछितावा रघुनायक को भायप प्रेमभाव दरशाव।
हरत भरत की कुटिलाई अरु वर्द्धित करत शुद्ध चितचाव ॥
त्यहिक्षण प्रभुकेढिग आये चलि लक्ष्मण मगन प्रेमरस माहिं।
पास बिठायो प्रभु आदर सह भायप भक्ति देखि हर्षाहिं ॥
बाजन बाजैं बहु बस्ती महँ आनँद रह्यो चहूं दिशि छाय।
भरत आगमन मग देखैं सब सुखसहलेहिं नैन फल आय ॥
बाट बजारन घर द्वारन महँ आपुसमाहिं कहत नर नारि।
काल्हि लग्न वह है कौने क्षन जब विधि पूरिहि आशहमारि ॥
कनक सिंहासन पर सीतासह बैठे लखब राम सुखधाम।
पूरहिं मन की अभिलाषैं सब भाषैं सकल यही विधि आम ॥
होय काल्हि कब यह भाषैं सब पै अब सुनो सुरन को काम।
अवध बधावा मन भावा नहिं आवा हृदय मनोरथ बाम ॥
बिघन-मनावैं अस लावैं मन होय न रामचंद्र को राज।
वनहिं सिधारैं खलमारैं तहँ जामहँ होय हमारो काज ॥
बोलि पठायो तब शारद को करिकै बिनय कह्यो यह बात।
देर न कीजै मनदीजै स्वइ होय हमार काज जिमि मात ॥
बिनै देवतन की सुनिकै तब शारद तहां ठाढ़ि पछिताति।
अम्बुजबनसम यह कौशलपुर मैं त्यहिबिनशि होइ हिमराति ॥

जानि शारदा की मंशा असि देउता कहैं फेरि समुझाय।
खोरि तुम्हारी नाहिं यामहँ कछु बिस्मय हर्ष रहित रघुराय॥
राम स्वभावहिं तुम जानौ भल मानौ कही हमारी बानि।
जीव कर्म वश फल भोगै जग जाइय अवध देवहित मानि॥
यहि बिधि कहिकै जब देउता सब गहि पग गरे परे खगराय।
चली शारदा तब शोचत अस सबकी बुद्धि तुच्छ दरशाय॥
बसैं उच्चथल कहिबेही को करणी नीच देवतन केरि।
देखि सकैं ना परसंपति ये है यह बड़ी मोहिं अवसेरि॥
आगिल कारज तउ चिंतन करि करिहैं कुशल धीर मम चाह।
आई दशरथ पुर शोचत अस जनु ग्रह दशा दुसह खगनाह॥
नाम मंथरा निर्बुद्धी अति चेरि प्रसिद्ध केकयी केरि।
अयश पिटारी करि ताही को तुरतै गई बुद्धिको फेरि॥
देखि मंथरा पुर शोभा भलि भयो बनाव बेश सब भांति।
बजैं बधाये बहु मंगल मय घर घर स्वच्छ छटा छहराति॥
पूंछेसि जहँ तहँ पुर लोगन ते काह उछाह कीन नरनाह।
राम तिलक धुनि सुनि सबही दिशि दुष्टा हृदय माहिं भो दाह॥
कुमति कुजातिनि मनशोचै यहहोय अकाज कौन बिधिराति।
कुटिलकिरातिनिमधुलागोलखिजिमिगँवतकैलेउँकयाहिभांति॥
गई केकयी ढिग बिलखत अतिदुखित उदास जानि अनुमानि।
कासिअनमनि हसि हँसि ताकी दिशि पूंछतभई केकयीरानि॥
उर्द्ध श्वासलै पुनि सिसकी दै उतरु न देइ लेइ चुपमारि।
आंसु बहावै बिजुकावै मुख नारि चरित्र देखावतभारि॥
हँसिकै रानी कह बानी इमि भै मंथरा तोर बड़गाल।
याते लक्ष्मण सिख दीन्ही कछु मो कहँ जानि परत असहाल॥
पापिनि बोली नाहिं एतेहुपर साँपिनि मनहुँ लेत बड़श्वास।
अवध बिलासनके नाशनहित भै जनु अनायास परकास॥
कछु भय आनी उररानी पुनि बानी कही चित्त करि ख्याल।

क्यों न बतावत तू भाइन सह हैं कुशलात राम महिपाल ॥
इतना कहतै परलै ह्वैगै चेरी हृदय लागि जनु आगि।
बिष रस घोलत सी बोलत भै मानहुँ महाबिपति महँ पागि ॥
हमहिं सिखाई कत माई कोउ क्यहि बल पाय बजावब गाल।
आजु कुशलता क्यहि रामहिं तजि ज्यहि युवराज देत महिपाल ॥
भा कौशल्या को दाहिन बिधि देखत गर्व रहत उरनाहिं।
जाय बिलोकहु पुर शोभा शुभ ज्यहि लखि क्षोभ भयो मन माहिं ॥
शोच तुम्हारे मन तनकौ नहिं पर्यो बिदेश माहिं प्रियबाल।
तुमतौ हिय महँ अस जनती हौ हमरे वश्य माहिं महिपाल ॥
महा गुलगुली पिय शय्या पर आवत तुम्हैं नींद बहु रानि।
कपट चतुरता महराजाकी तुम ना लखौ चित्त अनुमानि ॥
बचन मुलायम सुनि कुबरी के मनमहँ कुटिल जानि त्यहि रानि।
नैन तनेने करि डाटति भै चुपरहु कहु न रांड़ असबानि ॥
अब जो कबहूं फिरि कहिहै अस दुष्ट सुभाय चाल उपजाय।
री घरफोरी नाहिं थोरी रिस तोरीजीभ लेउँ कढ़वाय ॥
काने खोरे अरु कुबरे जन होत खराब लीन मैं जानि।
तामहँ अधिकी तिय चेरी पुनि अस कहि भरतमातु मुसक्यानि ॥
री प्रियबादिनि सिखदीन्ह्यों त्वहिं तोपर मोहिं तनक रिसनाहिं।
मंगल दायक दिन ह्वैहै सोइ राजा राम होयँ पुरमाहिं ॥
बड़ेभाय को राजतिलक अरु छोटे भाय करैं सेवकाय।
सूर्य वंशकी परिपाटी यह आजु न नई पुरानी आय ॥
राज तिलक जो रघुनंदन को सांचो काल्हि मोहिं दिखराय।
देहुँ मंथरा मनभावत त्वहिं अस आनंद समयको पाय ॥
कौशल्या सम महतारी सब प्यारी सहज रामको आहिं।
लीनि परिक्षा मैं नीकीविधि मोपर अधिक प्रीति मनमाहिं ॥
देय विधाता जो दायाकरि मानुष जन्म जगत केहुठाम।
पूत पतोहू तौ होवैं अस प्यारे यथा जानकी राम ॥

राम प्राणते बढ़ि मोकहँ प्रिय तिनके तिलक क्षोभ कस तोहिं।
हर्ष समय महँ यह विस्मय कसि याको सबब सुनावसि मोहिं॥
सुनि असबानी महरानीकी फिरि मंथरा लागि बतलाय।
कुछौ न कहिबे चुपरहिबे अब याही नीकि बात है माय॥
आशापूजी इकबारहि सब मनके लीन मनोरथ पाय।
जीभ दूसरी अब पाउब कहँ जो कछु कहब और उपजाय॥

स० फोरन योग कपार हमार कर्‌यो कर्तार यहीते अभागी।
नीकहु जो कहिये मुखते कछुतौ तुमका बदकारहि लागी॥
बात बनाय कहैं सचझूठ जे तौन भला तुम्हरे हिय पागी।
आजुते ऐसे महूं कहिहौं गहिहौं नतु मौन यही जियजागी॥

दै कुरूपता सब प्रकारते परवश कीन दई दहिजार।
बवा वहिजनम सोकाटा अब दीन सोलीन दोष कयहिक्यार॥
हानि हमारी है यामहँ कह कोऊ होय राज महराज।
होब टहलुई ते रानी नहिं जानी हमहुँ सत्य यह आज॥
जारन लायक है सुभाव मम अनभल तोर देखि नहिं जाय।
याते चर्चा कछु चाली मैं सो अब चूक माफकरु माय॥
गूढ़ कुटिलता युत बानी प्रिय सुनिकै तीय अधर बुधिरानि।
सुरमायावश अस बैरिनिको आपनि हितू जानि पतियानि॥
पूंछन लागी अति आदरते बारंबार ताहि दुलराय।
यथा भीलिनीको गाना सुनि बनमहँ मृगी मोहि मन जाय॥
तसमति फिरिगै महरानिउँ कै जसहै होनहार हरियान।
घातलागिगै भलि चेरीकै लहि एकान्त ठाम मतिमान॥
हठकरि फिरिकै तुम पुंछतीहो मैं अब कहतमाहिं भयखाउँ।
नाउँ हमारो घरफोरी भा याते मौन फेरि रहिजाउँ॥
छोलि छालिकै बहु नीकीविधि गाढ़ि माढ़ि सबप्रकार बिश्वास।
दशाशनिश्चर की बोली जनु अवध बिलास करन को नाश॥
रामहिं प्यारी तुम सांची यह तुमकहँ प्रीय सीय अरु राम।

रहे प्रथम दिन सो बीते अब औसरपाय होय हित बाम ॥
बारिज बनके प्रतिपालक रबि बिन जलकरैं छार त्यहिजारि ।
सवति उखारा चह तुम्हारि जर रूंधहु करि उपाय बरबारि ॥
शोच न तुमका सुख सोहाग बल जानहुँ आपु वश्यमहँ राव ।
मनके कपटी मुहँ मीठे नृप सूध सुभाव तुम्हारो भाव ॥
माता रघुपति की चातुर अति साध्यासि काम बीचु भलपाय ।
भरत पठाये नानिऔरे कहँ निश्चय राम मातु मत आय ॥
यहै बिचारचो कौशल्याने सेवाकरैं सवति सब मोरि ।
गर्व केकयी उर पैकेवल शालत सवति शाल त्यहितोरि ॥
प्रीति जनावत चातुरता ते याते छल ना परै लखाय ।
नेह नृपति को तुव ऊपर बहु देखि न सकै सवतिया भाय ॥
विविध भाँति ते परपंचै रचि भूपहि सब प्रकार अपनाय ।
राज तिलक हित रघुनंदन के दीन्हीं लगन मगन धरवाय ॥
यहि कुल ऐसिय परिपाटी तौ वाजिब रामचन्द्र कहँ राज ।
सबहि सुहावै म्वहिंभावै भल डर है शोचि आगिलो काज ॥
कोटि कुटिलपनरचि याहीविधि दीन्ह्यसि कपटरीति समझाय ।
कथा सैकरन कहि सौतिन की जामहँ सहज बैर बढ़िजाय ॥
होनहार बश महरानी के हिय महँ आय गयो बिश्वास ।
सौंह आपनी दै चेरी को पूंछत बार बार सहुलास ॥
कह्यो मंथरा तब रानी ते तुमहिं न पय्यो आजु लग जानि ।
आपन अनहित हित दुनियाँमहँ पशु अज्ञान लेत पहिंचानि ॥
होत तयारी भै पन्द्रह दिन तुम सुधि लह्यो मोहिं सन आज ।
खाई पहिरी तुव बिरते पर दोष न कहे सत्य के काज ॥
मिथ्या कहिबे जो गढ़िकै कछु तौ विधि करिहै हमैं सजाय ।
यहिते तुमका समुझाइतहै मानौ मोरि बात मनलाय ॥
कालिह तिलक जो रघुनन्दनको ह्वैगो कहूं धोष अस पाय ।
तुम्हरी खातिर तौ जानहुँ अस बोयो बिपतिबीज विधिमाय ॥

रेखखींचिकै कहि भाषौं अस माखीभइउ दूधकी रानि।
करौ पुत्रसह सेवकाई जो तौ घररहौ यत्न नहिंआन॥
कद्रू विनताको दीन्ह्यों दुख तैसै तुम्हैं कौशला देयँ।
भरत सेइहैं हठि बंदी घर नृप पद राम लक्ष्मण लेयँ॥
सुनि कटु बानी इमि चेरी की रानी सहमि सुखानी भाय।
लागि धकधकी कहि न सकी कछु तनमहँ गई कँपकँपी छाय॥
दशा केकयी की लखि कै अस कुबरी जीभ दांत तर दाबि।
कपटकहानी कहिकोटिनपुनि धीरजदिह्यसि जाय ज्यहि फाबि॥
महा निठुरता भरि दीन्ह्यसि उर पाठ पढ़ाय दुष्टता केरि।
उकठा काठ नवै ना जैसे कोऊ लाख यत्नकर हेरि॥
चाल बुराई की लागी भलि भावी वश्य उलटि गै भागि।
हंसिनि सरहै जस बकुली कहँ अति आनन्दमाहिं अनुरागि॥
बात मंथरा फुर तेरी यह पहिले मैं न बिचारी माखि।
वाही औसरते फरकति है नितप्राति मोरि दाहिनी आँखि॥
कुसपन देखौं नित रजनी महँ सजनी तोहिं न कह्यों बुझाय।
सीधे जीकी अनुमानौं म्वाहिं जानौं दहिन बाम नाहिं माय॥
जान आपनी महँ आजो लगि काहू केर बुरा नहिं कीन्ह।
कौने पापनते जानित नहिं निदई दई ऐस दुख दीन्ह॥
जन्म गुजारब बरु नैहर महँ जियत न करब सौति सेवकाय।
दैव जियावै ज्यहि दुश्मन वश जियेते तासु मरब भल आय॥
आरतबानी कहि याविधि जब रानी भई शोकवश म्लान।
माया करिकै तब तिरियन की लौंड़ी कहै लागि मतिमान॥
अस कस भाषौ मन छोटा करि दिन दिन बढ़ै तुम्हार सुहाग।
राउर अनभल जैं ताका अस यह फल लहै तौन दुर्भाग॥
जौने ज्ञनते सुनि पायों मैं दुष्ट सलाह आपने कान।
राति न निद्रा दिन भोजन नहिं बीतत दिवसकरत अनुमान॥
चर्चा कीन्ह्यों मैं गुणियन ते तिन यह कही मोहिं समुझाय।

भरत धरित्री पति होवैं हठि यामहँ तनक झूंठ नहिं माय ॥
करौ यत्न तौ बतलावौं मैं तुम्हरी सेव वश्य हैं राउ ।
देर न ह्वैहै बनिजैहै सब सुनि अस कहै रानि करि चाउ ॥
गिरौं कुवाँ महँ तुव बानी लगि तुरतै सकौं पूत पति त्यागि ।
देखि मोर बड़ दुख भाषसि तैं कसना करब ऐसहित लागि ॥
कर बलि करिकै कैकेयी को उर पवि कपट छुरी को टेय ।
घात विचारतहै मारन की भावी यहि प्रकार दुख देय ॥
है दुख पासै सो भासै नहिं बलिपशु यथा हरो तिन खाय ।
मारन वाले को ताकत नहिं कर आसि लिहे ठाढ़ समुहाय ॥
बात मुलायम अति सुनिबे महँ अंत कठोर घोर दरशाय ।
घोरि मिठाई महँ जैसे बिष देय खवाय कऊ खगराय ॥
कहै टहलुई महरानी ते तुमका अहै खबरि की नाहिं ।
स्वामिनि शोचौ वहि बातन को जिनकी कथा कह्यो म्वहिं पाहिं ॥
दुइ वर थाती हैं भूपति पहँ मांगि सो आजु पूरि करु आस ।
भरत भावते को नृपता अरु दूसर राम हेत बनवास ॥
मांग्यो तबहीं बर दूनौ जब भूपति सौंह रामकी खायँ ।
सौंह किहे पर फिरि फिरिहैं ना तब तुव सकलकाम बनिजायँ ॥
निशा आजुकी टरिजैहै जो तौ फिरि काम होन को नाहिं ।
हे महरानी ममबानी यह मानहुँ सत्य सत्य मन माहिं ॥
दुष्टा पापिनि असकुघातकरि फिरि असकह्यसि कोपघरजाहु ।
सजग सवाँर्यो निजकारज सब सहसा भूलि धोख जनिखाहु ॥
जानि प्राण सम त्यहि लौंड़ी को सरहै बारबार महरानि ।
मोर पिरौंधी नहिं तो सम कोउ डूबतभई नवैया आनि ॥
कौनिउँ विधिते जो विधना ने पूरण कीन मनोरथ कालि ।
नैन पूतरी करि राखौं त्वहिं यामहँ तनक झूंठ नहिं आलि ॥
बहु विधि आदर दै चेरी को पुनि केकयी गई रिसधाम ।
कछू न सूझै त्यहि दुनियाँमहँ जब ज्यहि होत विधाता बाम ॥

चेरी बर्षा ऋतु आपति बिउ केकयि कुमति भई भुइँ भाय ।
जाम्यो अंकुर बड़ि जल्दी महँ सुंदर कपट रूप जल पाय ॥
हैं वर दोऊ ते जानहुँ दल फल आखिरी दुःख हरियान ।
साज साजिकै स्वइ अमरषको हय्यो कुबुद्धि मोद सामान ॥
याको जानब वहु दुर्घट है जाननहार जानिहैं भाय ।
आवतभावी चलि जादिन ढिग आपहि बिगरि खेलसबजाय ॥

इति श्रीभार्गववंशावतंसश्रीमान्मुंशीनवलकिशोरात्मजस्यश्रीमुंशी
प्रयागनारायणस्याज्ञाभिगामीउन्नामप्रदेशान्तर्गतमसवासीग्राम
निवासीपण्डितबंदीदीनदीक्षितनिर्मितश्रीविजयराघवखण्डे
अवधकाण्डेप्रथमोल्लासः १ ॥

श्री रघुनंदन पदवंदन करि उर पुर सीय माय पग ध्याय ।
कथा अगारी की प्यारी अति मति सम कहत बंदिद्विजगाय ॥
इतै हकीकति अस बीततिभै उत अब सुनौ चरित खगपाल ।
होय कुलाहल पुर घर २ प्रति जान न कोउ कुचाल को हाल ॥
महा सुखारी पुरनारी नर सजि २ सकल सुमंगल चार ।
इक चलिजावैं अरु आवैं इक भै बड़ि भीर भूप दरवार ॥

स० बालसखा रघुनंदनके सुनि हाल हवाल हिये हर्षाहीं ।
वृन्दके वृन्द अनन्दपगे शुचि नेहजगे प्रभुकेलग जाहीं ॥
प्रेमसों पूंछिकैक्षेम दयानिधिलेतबिठाय तिन्हैंगहिबाहीं ।
रामसमान जहानमेंआन अनन्दित बंदि हितूकोउ नाहीं ॥

करत बड़ाई सब आपुस महँ आयसु पाय जायँ निजधाम ।
नेह निवाहक नहिं दुनियाँ महँ अस दूसरो और जस राम ॥
भ्रमैं कर्मबश ज्यहि योनिन महँ तहँ तहँ यहै देय कर्तार ।
हम सब होवैं अनुगामी अरु स्वामी सदा सीय भर्तार ॥
अस अभिलाषा सब काहू मन केकय सुता हृदय अति दाह ।
एक कल्प सम पल बीतै त्यहि चीतै कसस होय निर्बाह ॥

स० को न कुसंगति पाय नशाय कुनीच मते गरुआय रहैना ।

आय परै अरराय महा दुख यद्यपि ताकहँ कोउ चहैना ॥
जाय बिलाय सबैबुधि ज्ञान अयान ह्वैरंच ठिकान लहैना ।
बंदि कहै भल बात यहै जो चहै भल तौ खलसंग गहैना ॥

सांझ समैया नृप आनँद सह गे जहँ करत केकयी बास ।
मनहुँ देह धरि परि माया वश जात सनेह निठुरता पास ॥
कोपभवन सुनि सकुचाने नृप भय वश पस्यो न आगे पाउँ ।
खगपति नृपगति यह चिंतन करि मैंहूं कहतमाहिं सकुचाउँ ॥
बसै बाहुबल सुरनायक ज्यहि नृप सब सदा लखैं रुखजासु ।
तिय रिस सुनिकै अनयासहि सो गयो सुखायसहज नभवासु ॥
काम तेज की यह महिमा तुम देखहु भरद्वाज मतिमान ।
यह गति ऐसे नर धीरन की तब बापुरो मूढ़ कह आन ॥
बज्र शूल अरु तरवारिन के अँगवनहार जौन तन घाय ।
काम सुमन शर संहारे ते सो नृप गयो सहज मुरझाय ॥
भय युत कांपत मग नापत पग गयो भुवाल केकयी पास ।
दशा देखि कै उर दारुण दुख भयो प्रकाश मोद भो नास ॥
मोट पुराने तन आने पट लोटत परी धरा रज माहिं ।
बस्त्र राजसी अरु भूषण वर दिये चलाय अंग इक नाहिं ॥
कस मलीनता हांठि फावी त्यहि कुमतिहि हृदय माहिं हरियान ।
रांड़ होनकी गति शोचत जनु करिकै होनहार अनुमान ॥
पास जाय कै महराजा पुनि बोलत भये मुलायम बानि ।
प्राण पियारी क्यहि कारण ते आजु रिसानि परत है जानि ॥
पतिहि निवांरै कर पर्सत तन माखत हृदय रोष उपजाय ।
रिसही सांपिन जनु तिर्छीतकि काटाचहत अवशि खगराय ॥
हृदय वासना दुइ जीभै स्वइ दांत सो जानि लेहु बरदान ।
ठाम मुलायम सो ताकत है डसतै नाशहोयँ ज्यहि प्रान ॥
अस अभिलाषा वहि दुष्टामन इत भूपालकेर यह हाल ।
होनहारवश त्यहि मानत रस ठानत कामकलाको ख्याल ॥

सुमुखि सुनैनी पिक बैनी कहि बारम्बार बोलावै राव।
हे गज गामिन प्रिय कामिनि म्वहिं कारण रोषकेर बतलाव ॥
अहित तुम्हारो क्यहिं कीन्ह्यों प्रियको अस भयो माथ दुइ क्यार।
काल कलेवा केहि चाहत किय को हाठि जाय चहत यमद्वार ॥
करौं दरिद्रिहि क्यहि राजा कहु को नृप देउँ देश ते काढ़ि।
क्यहिं खल अनभल असकीन्हों तुवजातेभईतोहिंरिसगाढ़ि ॥
होय देवतौ जो तेरो रिपु सोऊ सकौं आजु मैं मारि।
तौ क्यहि लेखे महँ आवत फिरि किरवा सरिस नीच नर नारि ॥
मेरी आदति तुम जानहुँ प्रिय तुव मुख चंद नैन चक मोर।
प्रजा कुटुंबी पुरवासी सुत सर्वस मोर प्रिया सब तोर ॥
छल करि तोसे जो भाषौं कछु मो कहँ सौंह राम की बाम।
जो जियचाहसिहँसि माँगसि प्रिय भूषण साजुगात अभिराम ॥
देखि कुसमया अरु समया जिय शोचि कुवेष देहु यह त्यागि।
विनय हमारी धरि प्यारी उर रिस परिहरौ चित्त अनुरागि ॥
यह सुनि हिरदे गुनि सौगँद बड़ि कछु मुसकानि रानिमतिमन्द।
भूषण साजति जिमिहरणा लखि खल भीलिनी सवाँरै फन्द ॥
जानि आपनी प्रिय रानी त्यहि बोले राउफेरि मृदुबानि।
सुनिय सयानी मैं ठानी जो तुव सुखदानि बात अनुमानि ॥
नगर अयोध्या महँ घर २ प्रति रहे बधाव चाव सों बाज।
साज सुमंगल सजु प्यारी अब रामहिं काल्हि देउँ युवराज ॥
सुनि नृप बानी अनखानी कछु मानी अति कठोर यहबात।
पाकी फुरिया जनु दुखई कोहुँ सबरे गात पीर दिखरात ॥

स० ऐसेहु पीर छपाय हिये मुसकाय महीप मनोरथ टोवत।
यार बियोग यथा उरगारि फुकारिकै नारि छिनारि न रोवत ॥
नेह दिखाय निरोछलको चतुरायकै आपन स्वारथ जोवत।
नारि चरित्र न जानतसो नृप मूढ़ह्वै मोहनिशा महँ सोवत ॥

हँसिकै बोली सोदुष्टा पुनि नेह बढ़ाय कपट को भाय।

नैन भ्रमावत मटकावत मुख अतिशै विषय भाव दरशाय ॥
माँगु माँगुतौ मुख भाषौ पिय पै कछु कबहुँ देहु ना लेहु।
देन कहेतेउ बर आगे दुइ तेऊ हमैं मिलब संदेहु ॥
हाल जानि अस कह भुवाल हँसि तुम्हैं कोहाब नीक दिखरात।
सदा धरोहरिसी राख्यो धरि कबौं न भूलि चलायो बात ॥
रही न माहिंका सुधि सीधोजिय नाहक दोष रोषकरि देहु।
अबै तुम्हारो कछु बिगड़ोना दुइके चारि माँगि किन लेहु ॥
रीति सदाकी रघुबंशिन की बात न जाय गात बरु जाय।
नहिं असत्य सम जगपातक अरु प्यारी बचन मानु मनलाय ॥
पुण्य धर्मकी जड़ भाषव सति वेद पुराण रहे अस गाय।
त्यहिपर सौगँद रामचंद्रकी सुकृत सनेह सीवँ रघुराय ॥
जानि कुबुद्धिनि हँसिबोली फिरि जामहँ बात पोढ़ि ह्वै जाय।
कपट विहंगम की कुलही जनु खोली अतिसनेह सरसाय ॥
भूप मनोरथ स्वइ जानहुँ बन तहँ रह सुखी विहंग समाज।
देखि सो भीलिनि जनु छांड़ाचह बैन कठोर घोर खलबाज ॥
सुनहुँ प्राणपति मनभावत मम भरतहि देउ एक युवराज।
बर अस दूसर फिरि माँगौ पिय पुरवहु मोर मनोरथ आज ॥
वेष तपस्वी को धारन करि चौदह वर्ष बसैं बन राम।
सुनि असबानी दुष्टानी की नृप उर कियो शोक ने धाम ॥
कछू न आयो कहि सहमे हिय जनु बन लवा झपेट्यो बाज।
वज्र पछार्यो जनु सांखद्रुम भयो मलीन दीन तिमि राज ॥
माथ हाथ धरि दृग मूंदे द्वउ शोचत शोच मनहुँ तनधारि।
मोर मनोरथ सुरतरु फूल्यो फरतहि डार्यो करिनि उखारि ॥
अवध उजार्यासि कैकेयी अब डार्यासि अचल दुःखकै नीव।
हाय गोसइयाँ कह कीन्ह्यों यह हियकी रही जाति अब हीव ॥
भयो काह यह क्यहि औसर महँ मारो गयों नारि बिश्वास।
योग सिद्धि के फल बेरिया जिमि माया करै यती को नास ॥

यहि विधि मनहीं मन शोचै नृप तौलौं कहै कुमति अस फेरि।
भरत कि राउरके बेटवा नाहिं मोहिं कि लियो मोलकरि चेरि॥
जो सुनि सहजे तुम शोचत अस बान समान हीयमहँ लाग।
पहिले काहे न चितचेत्यो अस अब कसबढ्यो मोहअनुराग॥
अबहूं नाहीं हां कहिकै कछु उत्तर देहु नेहु डर डारि।
हौ सतिबादी तुम रघुकुल महँ इतनी बात लेहु चितधारि॥
देन कह्यो वर अब देवो जनि लेवो अयश भूंठ मुखदागि।
कह्यो देन वर सच सराहिकै जान्यो लेई चबेना माँगि॥
शिविदधीचि बलि जो भाष्यो कछु राख्यो स्वई सर्वसो छाँड़ि।
तनक बातलगि तुम भूंठे बनि जगमहँ चहत करावन भाँड़ि॥

स० यों कहिकै केकयीकटुबैनहिं चैन महीपहिये कि भगावति।
गावति आपु मनोरथकीगथ मानहुँ लोनजलेपै लगावति॥
भीर प्रकाशि अधीरहि नाशिकै धीरशरीरमें पीर जगावति।
प्रीतिकेकीचमेंफाँसिकैनीच मनोनृपकेहित मीचमँगावति॥

बीर धीरधर उर धीरजधरि कछु कछु नैन उघारे राउ।
माथ पीटिकै लइ उसास पुनि मार्‍यो म्वाहिं कुठाउँ यहिंघाउ॥
बरत अगारी रिस भारी लखि मनहुँ उघारि रोष तरवारि।
मारन चाहत नरनायक को ताको हाल सुनहुँ उरगारि॥
धार निठुरता मूठि मूर्खता कुबरी धरी खरी जनु सान।
महा भयंकर नृप देख्यो त्यहि लेहै सांचु मोर यह प्रान॥
कठिन करेजा करि बोले नृप बाणी विनय न ताहि सोहाय।
राम भरत हैं द्वउ आंखी मम शंकर साखि कहौं सतिभाय॥

स० काहबसी तव चित्त कुबुद्धि जो मोदसमै असभाषत बानी।
साजु उमंगसे अंग अभूषण नाहक रंगमें भंग है ठानी॥
भोरहि साज सजाय सबै कवि बन्दिदेहौं भरतै रजधानी।
जीवन प्राणप्रिया ममजानि सो राम न दे बनबाससयानी॥

राम राजको चित चाहत नहिं ठानत बहुत भरत पर प्रीति।

मैं बिचार करि बड़ छोटे कर वाजिब करत रह्यों नृपनीति ॥
रामदुहाई सच भाषों मैं राखौं कछु छिपाय नाहिं बात।
मोसन भूलिउ यह सम्मत कछु कबहुँ न कह्यो रामकी बात ॥
तोरे पूंछे बिन कीन्ह्यों सब ताते पस्यो छूंछ यह काज।
अबतौ रिसतजु मुद मंगलसजु कछु दिनगये भरत युवराज ॥
यही बात महँ दुख लागो म्वाहिं माँगे जौन दुसर बरदान।
सो बिरहागी हिय जागी अति जारत मोर जान अरु प्रान ॥
रिस बिसारि कै कहु मोसन अब जो कछु कीन राम अपराधु।
नगर अयोध्यामहँ यावत जन सब कोउकहत राम सुठिसाधु ॥
तुहूँ सराहसि चित चाहसि बहु अब सुनि होत मोहिं संदेह।
शत्रु सराहैं ज्यहि स्वभाव को सो किमि तजै मातु को नेह ॥
प्रिया हास्य रिस बिसराओ अब माँगो हियबिचारि सविवेक।
जासों देखौं अब आनँद सह नैनन भरत राज अभिषेक ॥
जियै माछरी बरु पानी बिन मणिबिन जियै सांप जगमाहिं।
मैं प्रिय सांची कहि भाषतहौं जीवन मोर राम बिनु नाहिं ॥
समुझिदेखु तैं प्रिय हियरे महँ दशरथ जियबु राम आधीन।
कुमति रिसानी सुनि बानी मृदु जनु घृतडारि आगिमहँ दीन ॥
भौंह भ्रमावत दरशावत रिस बोली फेरि केकयी बाम।
खेल विदूषक को ठानौ जनि कहौ न बहु बनाय इतमाम ॥

स० कोटि बकौ तदबीरतकौ बहु ध्यांनपरै तुव माया कि छाहीं।
देहु कि लेहुकलंक कलाशिर छोंडि वृथा कुलकीकरिनाहीं ॥
ये छरछन्द इहां न करौ कछु मोहिं प्रपंच न रंच सोहाहीं।
साधुसुजानलियो पहिंचानि तुम्हैं अरु रामहिं मैंजगमाहीं ॥

माता रघुपति की बड़िही भलि यहै मैं लीन हृदय महँ जानि।
जस कौशल्या भल ताक्यो मम तसफल उन्हैं देहुँ हठठानि ॥
होत सबेरा मुनि वेषै धरि जो नहिं रामचन्द्र बनजाहिं।
अयश रावरे कर मरना मम ह्वैहै जानि लेहु मनमाहिं ॥

असकहि दुष्टा उठि ठाढ़ी भै मानहुँ रोष नदी उमड़ानि ।
अघ पहारते बहिरयानी सो रिस जलभरी अगम अनुमानि ॥
अहैं किनारा बरदोऊ तहँ धारा महाकठिन हठ जानि ।
बचन कूबरी के भवँरै जनु बिच बिच घोर परत पहिंचानि ॥
भूप रूप तरु जड़ ढाहत सो चली बिपत्ति सिंधु समुहाय ।
सत्य वार्त्ता नृप जानी यह तिय मिसु मीचगई शिर आय ॥
पाउँ पकरि कै बैठारी ढिग कीन्हीं विनय जोरि दुउपानि ।
होसि कुल्हारी रवि कुलमहँ जानि मानसि कही हमारी बानि ॥
अबहिं देहुँ जो शिर मांगसि तैं राम वियोग मोहिं जनि मारु ।
राखु राम कहँ हठि कौनिउँ विधि नातरु होय दुःख अधिकारु ॥
ब्याधि देखि कै अति असाधि तब धरती गिर्यो राउ धुनि माथ ।
बचन पुकारत अति आरत मुख हा सुखधाम राम रघुनाथ ॥
भयोशिथिल तन अतिब्याकुल नृप दशासोकहिन जायखगराय ।
आय अचाका जनु हाथिन ने सुरतरु नाश कीन बरिआय ॥
बनै न भाषत मुख बानी कछु सूख्यो कण्ठ शोक सरसान ।
सुनौ भवानी बिन पानी के जनु पाठीन दीन अकुलान ॥
कह्यो केकयी फिरि ताहू पर करू कठोर बचन मुख भाखि ।
दै बिश्वासै जिमि गिरिजा कोउ जहरै भरै घाउ को चाखि ॥
आखिर करिबो रह तुमका अस क्यहि बल कह्यो मांगु भूपाल ।
होयँ न दूनौ कहुँ एकै सँग हँसब ठठाय फुलावब गाल ॥
दानि कहावब कृपणाई धरि करि नौतई चहै कुशलात ।
धरौ धीरता की छाँड़ौ बच तियइव करौ न करुणा बात ॥
देह गेह अरु सुत तिरिया धन धरती आदि विभव सब भारि ।
है तिनुका सम सतिबादी कँह इतनी बात लेहु चित धारि ॥
मर्म बचन सुनि इमि राजा पुनि बोल्यो कछू दोष नाहिं तोर ।
मोह पिशाच लग्यो तोरे तन यह सब काल कहावत मोर ॥
भरत न भूलिउ पद चाहत यह बिधिवश बसी कुमति तुवगात ।

सो सब फल यह मम पापनको कछु न बिसात बाम भो धात ॥
फेरि अयोध्या सुख सह बसिहै प्रभुता लहैं राम गुणधाम ।
करिहैं भाई सेवकाई सब तिहुँपुर लहैं बड़ाई राम ॥
मरयो न मिटिहैं दुइ बातें पै तोर कलंक मोर पछिताव ।
अब तोहिं लागै भल सोई करु मोकहँ मुख न फेरि दिखराव ॥
कहौं जोरि कर अब तोसन यह जौलौं अहै देह महँ प्रान ।
कहे न तौलौं अब मोसन कछु करु यहि बात केरि परमान ॥
अन्त अभागिनि पछितैहै फिरि मारसि गाय नाहरू लागि ।
अबै न तोकहँ कछु सूझत है निज मुख लेत आपदा मांगि ॥
कोटि भांति सों कहि हारयो नृप काहे नाशि रही करवाय ।
कपट सयानी कछु बोलत नहिं मानहुँ रही मशान जगाय ॥
राम राम रटि भे व्याकुल नृप जनु बिन पंख विहंग बिहाल ।
होय सबेरा जनि शोचत अस जानि न पाव राम यह हाल ॥
हे रविकुलगुरु सुनि विन्ती मम इतना काज करौ महराज ।
उदै न होवैं रवि कौनिउँ विधि नतु लखि अवध होय दुख आज ॥
नेह नम्रता की सीमा नृप औ कैकेयि कठिनता केरि ।
रची विधातैं जनु नीकी बिधि जगमा मिलै न दूसर हेरि ॥
यहि विधि बिलखत महराजाको गिरिजा भयो आयभिनुसार ।
बाजन लागीं सहनाई झालि द्वार सितार शंख धुधुकार ॥
गावन लागे गुण गायक गण लागे वंश प्रशंसन भाट ।
सो सुनि उरमहँ नरनायक के शायक सरिस लाग खगराट ॥
भलेन लागें ते मंगल कस जस आभरण सती तनमाहिं ।
रामदरशकी अभिलाषाते त्यहिनिशि नींद परीक्यहु नाहिं ॥
मंत्री सेवक जुरियाने सब ते अस कहैं उदै रविदेखि ।
आजु न जागे नृप अबहूं लग है यह कारण कौन विशेखि ॥
पहर पाछिले नित जागें नृप बड़ आश्चर्य आजु दिखराय ।
जाय जगावहु तुम सुमन्त अब कीजिय काज रजायसु पाय ॥

सुनि असबानी उन सबहिनकी गये सुमन्त जहां नृप धाम ।
जायन देखो धायखाय जनु विपति विषाद बास भोआम ॥
ज्यहिते पूंछैं सो बोलैनहिं चुपके रहैं मौन मनमारि ।
भूप केकयी ज्यहि मंदिर महँ गये सुमंत तहां उरगारि ॥
नमस्कारकै नरनायक को मंत्री बैठिगयो शिरनाय ।
देखि भूपगति वहि औसर पर गयो सुखाय शोकउर लाय ॥
महामलीने अति दीने सम व्याकुल परे भूमि रजमाहिं ।
कमल उखाख्यो कोहुँ जड़ते जनु मुख मुरझान तेज तन नाहिं ॥
पूंछिसकै ना कछु काहूते भय वश मंत्रिहु गयो कवाय ।
महा अमंगल की झोलीसी बोली तबहिं केकयी भाय ॥
परीन राजाको निद्रानिशि याको हेतु जान भगवान ।
कीन सवेरा रामराम रटि मोसनकछुन मर्म बतलान ॥
बोलि लयावो तुम रामहिं त्वर पूंछहु समाचार तब आय ।
गमन्यो मंत्री नृप इच्छालखि कीन कुचाल रानि कछुहाय ॥
परै न आगे पग मगमहँ तब भयो सुमंत हिये पछिताउ ।
महा शोचवश जियशोचत अस रामहिं बोलि कहैं काराउ ॥
गयो दुआरे पुनि धीरज धरि पूंछैं सबै देखि मन म्लान ।
कीन चतुरता सों मंत्री तव सब कर समाधान सन्मान ॥
गयो फेरि चलि रघुनायक ढिग आवत लख्यो सुमंतहि राम ।
जानि पिता सम सन्मान्यो त्यहि शील सनेह सुमति के धाम ॥
देखि राम मुख सुखपायो कछु फिरि नृप आयसु कह्यो बुझाय ।
समया चीन्ह्यों देर न कीन्ह्यों चल्यो लेवाय संग रघुराय ॥
जात न आछी बिधि मंत्री सँग रघुकुल लाल देखि यह हाल ।
नग्र नारि नर त्यहि औसर पर भे बहु हृदय मांहि बेहाल ॥
आय बिलोक्यो तब रघुकुल मणि निपट कुसाज माहिं नरराज ।
देखि सिंहिनी को सहम्यो मन मानहुँ महा वृद्ध गजराज ॥
स० ओंठ सुखान रुखान महा तन अंगन माहिं धरा रज धाई ।

दीपति हीन मलीन लगै मुख शोक जगै हिय में अधिकाई॥
छीन लियो मणिकोक्यहुँ मानहुँ दीनअहीनरह्यो दरशाई।
देखि दशा असभूपतिकी रघुराई जिये विस्मयबाढ़ि छाई॥
बैठि केकयी ढिग रिसहीसी ताकत समय मृत्यु जनुआय।
पर्‍यो प्रथम दुख यह रघुपतिको सुन्योन कबहुँ कानजो भाय॥
जानि कुसमया धरि धीरज तउ पूंछन लगे भाषि मृदुबानि।
पिता दुखारी महतारीकिमि कारण परयो कौन अस आनि॥
मोहिं बतावो समुझावोसो करौं उपाय जाय ज्यहिभाँति।
सुनि इमि बानी धनुपानी की बोली दुष्ट वचन उत्पाति॥
याको कारण है राघव यह तुम पर करत प्रीति बहु भूप।
कह्यो देन को वर मोकहँ दुइ मांग्यो तौन बुद्धि अनुरूप॥
सो सुनि राजै दुख लाग्यो बहु तुव संकोच सकैं नहिं त्यागि।
व्याकुल बिलखत निशि काटी सब तुम पर रहे मोह अनुरागि॥
सुत सनेह इत उत वाचा वश परे कलेश माहिं अवधेश।
मेटि सकौ तौ किनमेटौ त्यहि धरि शिर तात तात आदेश॥
बैठि बेधड़क कटुबानी कह सुनि कठिनता अतिव अकुलानि।
खगपति भाषों मैं कौनी बिधि जो दुष्टता ठानि रहि रानि॥

कुं० रसना जासु कमान अरु बचन जानिये बान।
मानहुँ भूपति को किये कोमल लक्ष्य समान॥
कोमल लक्ष्य समान धरे जनु तनु कठिनाई।
धनु विद्याको सिखत लक्ष्य पर चोटचलाई॥
कहि-द्विज बंदीदीन चलत यामें कछु बसना।
भावी वस अस कियो रह्यो जामें कछु रसना॥

सकल वार्ता कहि रघुपति ते जनु निठुरता बैठि तनु धारि।
विहँसैं रविकुलरवि मनहीं मन सहज स्वभाव राम उरगारि॥
बैन मनोहर सुख सोहर से बोले फेरि राम सुखधाम।
है बड़ भागी सुत माता सो जो पितु मातु बचन रत आम॥

मात पिता को प्रति पालक अस बालक मिलब कठिन जगमाहिं ।
लह्यो न माता पितु जासे सुख जीवन जन्म तासु भल नाहिं ॥
इकतौ मुनियन को मिलाप तहँ बनमहँ सबप्रकार भल म्वार ।
आयसु पालब पितु अपने को जामहँ मातु सुखद मत त्वार ॥
भाइ हमरो सुखदाई अति पावै भरत भावतो राज ।
अहै वार्त्ता अति आनँद की दाहिन मोहिं बिधाता आज ॥
ऐसौ कारज समुझि बूझि कै फेरिहु जो न बनै मैं जाउँ ।
पहिले गन्ती मम मूढ़न महँ दुनिया धरै कलंकी नाउँ ॥
छोड़ि कल्पतरु रँड़ सेवैं जे परिहरि अमी लेयँ विष चाहि ।
तेउन चूकैं अस औसर लहि देखु बिचारि मातु मन माहिं ॥
माता भारी दुख मोकहँ यह बिकल बिहाल देखि भूपाल ।
रंच बात लगि दुख एतो बड़ मोहिं न जानि परत यह हाल ॥
बीर धीर धर गुणसागर पितु अति मतिमान ज्ञान आगाध ।
तिन जो एतक दुखपावा तौ मैं कछुकीन बड़ाअपराध ॥
कहैं न याते कछु मोसों नृप है सौगन्द मोरि त्वहिं मात ।
सत्यवार्ता कहु मोसन अब विस्मय हृदय जात अधिकात ।
सीधीबानी रघुनन्दन की तौनिउँ कुमति टेढ़करि जान ॥
टेढ़ी चालहि चलै जोंक जिमि यद्यपि जलसमान हरियान ॥
पाय रामरुख फिरि रानी सो बोली कपटनेह रससानि ।
सौंह तुम्हारी अरु भरत्थ की दूसरहेतु न पायों जानि ॥
मात पिताके सुखदायक सुठि नाहिं अपराध योग तुम तात ।
अज्ञापालक अस दूसर नाहिं जो कछु कहत सत्य सब बात ॥
अस बुझायकै कह्यो बापते अयश न लेयँ बुढ़ापा माहिं ।
तुम समान सुतादिये सुकृत ज्यहिं वाजिबतासु निरादर नाहिं ॥
दुष्टवादिनी की वानी यह लागै कैसि नीकि खगराय ।
यथा अपावन मगह देश महँ तीरथ गयाआदि शुचि भाय ॥
रामचन्द्र को प्रियलागे सब गिरिजा वचन कहे जे मात ।

यथा नकारो जलहोवै भल गंगतरंग माहिं मिलि जात ॥
गई मूर्च्छा जब भूपति की रामहिं सुमिरि करौंटी लीनि।
राम आगमन कहि मंत्री तब विन्ती उचित समयसमकीनि ॥
गये राउ के ढिग राघव जब तब धरिधीर पीर बिसराय।
नैन उघारे सुत प्यारे दिशि मंत्रि सँभारि दीन बैठाय ॥
माथ नवावत लखि रामहिं तब अतिवसनेह भाय बिकलाय।
हृदय लगायो सुख पायो अति गै मणि सांपजाय जिमिपाय ॥
यकटक चितवत नृप रामहिं तन नैनन बही आंशुकी धार।
बनै न भाषत कछु ब्याकुल अति भेंटत हृदय बारहीं बार ॥
राव मनावत विधि मनहीं मन जामहँ राम गहन नहिं जाहिं।
शिवहि निहोरैं कर जोरैं बहु बिनती धरहु मोरि मनमाहिं ॥

स० हालाहे होत निहाल अहो शशि भाल सदा तुम औढरदानी।
दान अमान जहान प्रमानित उज्ज्वल कीरति वेद बखानी ॥
सेवक बंदि उबारहु वेगि पछारहु आरत आरत जानी।
देर करौ न कलेशहरौ सब होहु प्रसन्न महेश भवानी ॥

सबके उरके तुम प्रेरक हौ सो मति देहु राम उरठानि।
रहैं भौन ज्यहि बन जावैं नहिं छाँड़ि सनेह शील मम बानि ॥
जाय सुयश बरु अयश होय जग नरकै चहै जाउँ सुरधाम।
सहौं दुसह दुख सबभांतिन पै लोचन ओट होयँ जनि राम ॥
राउ न बोल्यो अस गुनिकै मन चित्त चलायमान मतिमान।
जानि प्रेम बश पितु अपने को पुनि कछु कह्यो राम भगवान ॥
देश काल अरु समय देखिकै बोले शोचि मुलायम बानि।
तात ढिठाई करि भाषौं कछु अनुचित क्षम्यो बाल शिशुजानि ॥
रंच बातलगि दुख पायो यह काहे न मोहिं जनायो तात।
जानि हकीकति सब माता ते शीतल गात भयो हर्षात ॥
मंगल समया महँ सनेह बश हिय ते शोच बिसारौ तात।
अज्ञा दीजै आनंदित ह्वै अस कहि पुलकि उठे प्रभुगात ॥

धन्य जन्म है जग ताही को गुण सुनि जासु बाप हरषाय।
ताके करतल महँ चारिउ फल अतिप्रिय जाहि बाप अरु माय॥
राउर आयसु प्रतिपालन करि अरु आपनो जन्म फलपाय।
लौटि आइहौं घर वेगिहि फिरि देहु रजाय तात फुरमाय॥
विदा लखावौं महतारी ते चलिहौं बनै फेरि पगलागि।
असकहि रघुपति चलिदीन्ह्यों तब भूपन ज्वाबदीन अनुरागि॥
कठिनवार्ता यह केकयी की सबरे नगरमाहिं गइ छाय।
एक अंग के जस छुवतै खन सबतन वीछिजाय चढ़ि भाय॥
भये दुखारी नर नारी सब तरु अरु लतन लागि जनु आगि।
सुनै जहाँ जो तहँ पीटै शिर रहे विषाद माहिं सब पागि॥
आनन सूखे तन रूखे सब लोचन स्रवैं शोक अधिकाय।
मानहुँ करुणा रस फौजन सह उतरा अवध आय बरियाय॥
भलि बनाय कै अब विधना ने सबरी बात बिगारी हाय।
देहिं केकयी को गारी सब जहँ तहँ सुनि प्रसंग यह भाय॥
काधौं सूझयो यहि पापिनि को छाये घरहि लगायसि आगि।
हानि लाभ को कछु शोची ना पोची बुद्धि दुष्ट हत भागि॥
नैन काढ़ि कै निज हाथे सों देखा चहै नजरि भरि भाय।
चीखा चाहै विष अमृत तजि बनै पठाय राम रघुराय॥
कुटिल कुबुद्धिनि अति निर्दय हिय भै रघुवंश बेणु बन आगि।
बैठि डारपर तरु काट्यो यहिं सुखमहँ दुःख दाग दिय दागि॥

स० नारि सुभाव सही कवि भाषत राखत ना कहुँरंच झुठाईं।
हैं सबभांति अगाध महा अतिदुस्तर भूरि भरी कठिनाईं॥
बंदि कहै चहै दर्पण में कर आपनि छाहँ परै पकराईं।
देखौंकितोकरिकोटिउपायपैजानिन जायतियागतिभाईं॥

जरि न सकै अस कह आगी महँ का न समाय सिंधुमहँ जाय।
अबला सबला करि न सकै कह को जग जाहि काल नाहिंखाय॥
प्रथम सुनायो विधि मंगल कह अब कह चहत सुनावन भाय।

काह दिखावा अब चाहत है पहिले भल उछाह दिखलाय॥
नीक न कीन्ह्यों नृप एकै कहैं कुमतिहि वर विचारि नहिं दीन।
जोहठि बासन भो व्याधिन को तियवश भयो ज्ञान गुणहीन॥
नृपहि न दोषैं यक चातुर जन भल पहिंचानि धर्म मर्याद।
शिवि दधीचि अरु हरिश्चंद्र को कहैं बखानि परस्पर बाद॥
एकै सम्मत कहैं भरत को एकै रहैं मौन सुनि ताहि।
कान मूंदि कर रद रसना गहि एकै कहैं बात अस नाहिं॥
सुकृत नशैहै भल ह्वैहै नहिं अस मुख कहत तुम्हारे भाय।
प्राण पियारे भरत राम कहँ निश्चय सदा बचन मन काय॥
चुवै चंद्रमा वरु पावक कण अमृत चहै होय बिष तूल।
सपन्यौं कबहूं कछु करिहैं ना भाय भरत्थ राम प्रतिकूल॥
दोष लगावैं यक ब्रह्मा को ज्यहिं बिष दीन सुधा दिखलाय।
शोच समान्यो सब काहू मन खरभर गयो नगर महँ छाय॥
बड़ी जठेरी जे कुलमा कोउ औ द्विजबधू करैं पुर वास।
परम पियारी रहैं केकयी की ते सब गईं तासु के पास॥
कहैं परस्पर प्रिय बानी सब सरहैं शील सीख दै ताहि।
लगै बाण सम सो ताके उर परै न हानि लाभ लखि जाहि॥
सदा बखानौ यह आनन ते भरत न प्रिय म्वहिं राम समान।
शील सराहौ सब भाँतिन ते सब दिन करौ जासु गुणगान॥
तन मन वारौ ज्यहि राघव पर सहजै करौ अधिक अस्नेह।
पर्यो आनि कै कंह कारण अब ज्यहि अपराध आजु बनदेहु॥
कबहुँ न कीन्ह्यों सवति डाहको जानत सबै प्रीति बिश्वास।
काह बिगारा कौशल्यैं अब तुम ज्यहि लागि कीन पुरनास॥
सिया पिया को सँग छाँड़िहै किमि कैसे रहैं लक्ष्मण धाम।
राजि भोगिहैं पुरभरत्थ किमि जीवैं कसस भूप बिन राम॥
क्रोध बिसारौ उर धारौ मुद होहु न अयश शोक को धाम।
देहु भरत्थै अवशि राज पद कानन कौन राम को काम॥

राजि कि इच्छा नाहिं रामहिं कछु धर्मधुरीन बीन मतिमान ।
भूलि विषै रस मन आनत नहिं ठानत सब प्रकार शुचिठान ॥
मांगो दूसर वर भूपति ते गुरु गृह बसैं राम तजि धाम ।
कहो हमारो जो मनिहौ ना पैहौ नाहिं नीक परिणाम ॥
कीन हँसौआ जो साइति यह तौं कहि प्रकट देहु बतलाय ।
करौ यतन सो उठि वेगिहि अब ज्यहिते शोक कलंक नशाय ॥
स० शोककलंक बहै ज्यहिभांति उपाय वहै करिकै कुलपालौ ।
रामहिं जात बनै न बनै हठि फेरहु बात न दूसरि चालौ ॥
भानबिनादिनप्राणबिना तनचंदबिनाजिमियामिनिजानौ ।
शोचिविचारिलखौयहभामिनि रामबिनाअवधैतिमिमानौ ॥
बहु सिखलावा कहि सखियन ने समुझत सुखद नीक परिणाम ।
कान न कीन्हा तेहिं काहूविधि सिखई सविधि कूबरी बाम ॥
अतिरिस रूखी खगनायक सो ज्वाब न देय लेय बड़िश्वास ।
भूखी बाघिनि जस चितवै मृग तैसिय दशा भई मति रास ॥
ब्याधि असाधि जानि त्यागी तिन गमनी कहत कुमति हतभागि ।
राजिकरतमहँ बिषबोयासियहिं कीन्ह्यसिअतिअकर्म दुखलागि ॥
यहि बिधि बिलखैं पुरबासी सब दै दै ताहि अनेकन गारि ।
छायो बिषमज्वर सब के तन रही बियोग आगि पुर जारि ॥
हृदयसकोचैं अरु शोचैं मन जीवन आश राम बिनु नाहिं ।
जाय न गाई गति गिरिजा सो छाई बिपति अयोध्या माहिं ॥
राम बिरह महँ प्रजा बिकल कस जलचर यथा सुखानेबारि ।
तेही समया पर राघव प्रभु मातु समीप गये उरधारि ॥
प्रातकमल सम आनन्दितमुख चौगुन बढ़्यो चित्तमहँ चाव ।
यहै शोच यक है हिरदै महँ राव न कहैं बनै जानि जाव ॥
हस्ति सुवन सम रघुनंदन प्रभु राजि जँजीर सरिस खगराय ।
छूटि जानि सो बन गौनव सुनि उर आनंद गयो अधिकाय ॥
रघुकुल भूषण हाथ जोरि द्वउ नायो मुदित मातु पद माथ ।

हृदय लगायो तब माता ने आशिष दई हर्ष के साथ॥
कीन निछावरि पट भूषण बहु चूमै बार बार मुख माय।
धाई तन महँ पुलकावलि भलि नैनन गयो प्रेम जल छाय॥
हृदय लगायो लपटायो बहु लीन समोद गोद बैठाय।
चुवैं प्रेम रस पय आंचर ह्वउ सो सुख कहि न जाय खगराय॥
सादर सुंदर मुख निहारि कै बोली मातु मनोहर बानि।
लेउँ बलैया मैं बछवा कै है कब लगन महा मुद दानि॥
सुकृत शीलता सुख सींवाँ सो सब कहँ जन्म लाभ दातार।
केहिछन आइहिलखि पाइहिसब छाइहि अवधमोद अधिकार॥
जाकहँ चाहत नर नारी सब गाहत दुखी अतिव यहि भांति।
तृषितचातकी अरु चातक जिमिताकत वृष्टि शरद ऋतु स्वाति॥
लेउँ बलैया मैं पुतुवा कै वेगि नहाव भाव सो खाव।
पास पिताके चलि जायो तब यहि विधि कहै जननि खगराव॥
अतिव सुखारी महतारी की बानि सयानि परी असजानि।
नेह रूप जनु कल्प वृक्ष के सुंदर फूल सुरभि की खानि॥
भरे गहवरे सुख पराग सों जामहँ मूल राज दरशाय।
रंच न भूल्यो लखि ताहू कहँ मधुकर राम केर मनभाय॥
धर्म धुरंधर जानिं धर्म गति बोले मधुर मनोहर बानि।
राजि विपिनकी पितु दीन्ह्यों म्वहिं कारज बड़ो मोर तहँ जानि॥
विनय हमारी सुनि माता अब मुदसह हुकुम देहु फुरमाय।
होय सुमंगल ज्यहिं गमनत बन म्वहिं मुद दया मातु तुवपाय॥
वर्ष चौदहक बसि बनहीं मन करि कै पिता वचन परमान।
आय देखि हौं पुनि पायँन कहँ भूलि न करौ मातु मन म्लान॥
बचन मनोहर मृदु राघव के सुनिकै कस सुखायगै माय।
पावस पानी के बरसेते यथा जवास जाय मुरझाय॥
रंज समाई बहु हियरे महँ मुखते कछू कहो ना जाय।
यथा गर्जना सुनि केहरि की जाय सुखाय मतंगम भाय॥

नैनन आंशु बर्सनलागे थरथर कांपिगयो सब गात।
माँजा खायेते गिरिजा जस ह्वैकै दीन मीन अकुलात॥
देखि पुत्रमुख धरि धीरज पुनि गदगद बचन कहतभै मात।
बापहि प्यारे तुम प्राणनसम नितनव चरित देखि तुव तात॥
राजि देनकहँ दिन शोध्यो शुभ केहि अपराध कह्यो बन जान।
तात सुनावहु कहि कारण म्वहिं को दिनकरकुल भयो कृशान॥
देखि रामरुख तब मंत्रीसुत कारण सकल कह्यो समुझाय।
रही मौनह्वै सुनि प्रसंगसो दशा न बरणिजाय खगराय।
राखि न सकै मौन अपने महँ ना कहि सकै पूत तुम जाहु॥
दुहुँप्रकारते असमंजस है अतिशय भयो हृदय महँ दाहु॥
लिखत चन्द्रमा लिखि राहुहिगा विधिगतिसदा सबहिकोबाम।
बानि बनायकै सब भाँतिनते सहजे बिगरि गयो अब काम॥
इत सनेह उत धर्मपंथ गहि भै गति सांप छछूँदरि केरि।
महा दुखारी महतारी भै कौनिउँ युक्ति न पावै हेरि॥
जो हठि राखौं घर बालक को तौहूं कठिन परै दिखराय।
अमरष बाढ़ै सब भाइन महँ दुसरे धर्मपंथ बहिजाय॥
कहौं जान बन तउ हानिहिं है यहिविधि भई शोचवश रानि।
फेरि ख्यालकरि तीय धर्मको औ ह्वउपुत्र बराबरि जानि॥
सीधे जीकी मातु कौशला बोलीं वचन नेह उर डारि।
तातजाउँ बलि भलकीन्ह्यो तुमलीन्ह्यो पितुनिदेश शिरधारि॥
राजदेनको कहि दीन्ह्यो बन यामहँ म्वहिं न शोचलवलेश।
तुम बिन भरतहि प्रजहि भूपतिहि ह्वैहै पुत्र क्लेश बहुवेश॥
केवल बापहि की अज्ञा जो तौ बड़ि जानि मातु मन माहिं।
रहौ घरहिमहँ मम आयसुलै विपिन तुम्हार काज कछु नाहिं॥
जो पितु माता ह्वउदेवैं बन तौ आनँद मानि चलि जाव।
घरते सौगुन सुखदायक बन अस मन जानि पूत हरषाव॥
पिता तुम्हारे बन देउता तहँ देवी अहैं तुम्हारी माय।

खग मृग सबरे तुव सेवक तहँ सेवाकरैं सविधि मन लाय ॥
अन्तहु वाजिब है राजै यह बन महँ करै जायकै बास।
पूत तुम्हारी बय देखेते मोर उछाह होत सब नास ॥
अवध अभागी जो त्यागी तुम बन बड़ भागिमान भो लाल।
तुव चंद्रानन मुख देखेते बनचर सुखी रहैं सब काल ॥
साथ लेउ म्वहिं जो भाषौं अस तौ संदेह करौ तुम तात।
याते दुखसहि रहि घरही महँ दर्शन आश राखिहौं गात ॥
पूत पियारे तुम सबही के जीके जीव प्रान के प्रान।
हंस हंसकुल कल मानस के अंबुधि अवधकेर जलयान ॥
ते तुम मोसन कहि भाषौ अस माता हुकुमदेउ वनजाउँ।
वचन तुम्हारे सुनि काननसो मैं इत तात बैठि पछिताउँ ॥
यह विचारिकै हठ ठानौ नहिं केवल झूठ सनेह बढ़ाय।
पूत मानिकै मात नातको सुरति हमारि भूलि जनि जाय ॥
करैं तुम्हारी रखवारी सुर पीतर नैन पलक की नायँ।
रहौ सर्वदा आनँद महँ तुम्हरे रोम न बांके जायँ ॥
विपिन वासकी हद सोई जल जलचर सकल कुटुंबी जानि।
धर्मधुरीन दीन दायाकर तुम अस चित्त लेहु अनुमानि ॥
करचोयत्न स्वइ समुझिबूझिकै भेंटौ सबहि जियतज्यहिआय।
पुरजन परिजन के पालक तुम इतना कस्यो प्रीति उरलाय ॥

स० जाउ सुखेन बनै बलि जाउँ अनाथ कै गाउँ प्रजा परिवारी।
कालकराल व्यतिक्रम कीन भये अतिदीन सबै नर नारी ॥
आजु नश्यो सबको सुख सुकृत बाम बिधातहिं बात बिगारी।
दीनदयाल के देखे बिना पल एक बितै युग के सम भारी ॥

महादुखारी महतारी इमि आपुहि महाअभागिनि जानि।
बहु बिलापकरि उर तापहिभरि रघुपति पगन माहिं लपटानि ॥
राम वियोग प्रबल पावक की ज्वाला रही करेजा जारि।
दशा कौशला की दुस्सह वह हमते कहि न जाति उरगारि ॥

राम उठायो तव माता को हृदय लगाय नेह सरसाय।
धीरज दीन्ह्यों कहि समयासम सुंदर बचन बहुत समुझाय॥
समाचार सुनि त्यहि औसरपर जनककुमारि उठी अकुलाय।
जाय सासुलग पग कमलन महँ माथ नवाय बैठि सकुचाय॥
सासु अशीस्यो मृदुबानीसों अतिसुकुमारि देखि अकुलानि।
कहि न सकै कोउ कछु काहूसन हियमहँ रह्यो महादुख सानि॥
बैठि नवाये मुख शोचै सिय मोचै नैन पुटनते बारि।
सुयश समुंदरि तन सुंदरि अति पति पग प्रेम नेम रतभारि॥
सुख सोहाग अनुराग भाग के सागर प्राणनाथ रघुनाथ।
जावा चाहत हैं बनको अब ह्वैहै कौन सुकृत सों साथ॥
देह प्राणसह सँगजैहै की केवल एक सिधैहै प्रान।
समुझि न आवै विधि कर्तव कछु धोंका कीन चहत भगवान॥
शोचिशोचिकै यहि भाँतिन सिय पगनख लिखत भूमिखगराय।
नूपुर बाजत मंद मंद सुर ताको भाव कहत कवि गाय॥
मनहुँ प्रेमवशते विनवत हैं सियपद हमैं देयँ जनि त्यागि।
आँशु गिरावत लखि नैननते बोली राम मातु अनुरागि॥
सुनौ दुलरुवा मम विन्ती यह जनककुमारि महा सुकुमारि।
सासु ससुर अरु पुर परिजनकहँ प्रान समान जानिये प्यारि॥
राजमुकुटमणि जनकजनकज्यहि औ फिरि ससुरभानुकुलभान।
रविकुल कैरवबन चंदा पति रूप निधान. महा गुणवान॥
सुंदरि पुतहू मैं पाई असि गुण अरु रूप शील की खानि।
नैन पूतरी सम राख्यों त्यहि प्रीति बढ़ाय प्रान इव मानि॥
कल्पबेलिसम प्रतिपाली मैं सींचि सनेह बारि बहु भांति।
फूलत फलत भयो टेढ़ो विधि कछु परिणाम जानि नहिं जाति॥
गोद हिंडोला अरु शय्या तजि सिय पगधरचो न धरतीमाहिं।
मूरिसजीवनि सम जुगयों मैं टारन दीप बाति कह्यों नाहिं॥
सो सिय साथ चलन चाहत बन आयसुकाह देहु सुतभाखि।

चंद्रकिरणि रसरसिक चकोरी रविरुख सकै जोरि किमि आँखि ॥
सिंह बाघ अरु गज निश्चरलै डोलैं दुष्ट जन्तु बन भूरि।
विष फुलवारी महँ सोहै किमि हे सुत सुभग सजीवनमूरि ॥
कोल किरातनकी कन्या ते बनहित बिधनै दई बनाय।
बिषै भोग रस जे जानैं नहिं काटैं दिवस शाक फल खाय ॥
जैसे पाथर के किरवाको कठिन स्वभाव होत है तात।
तैसे उनहुँन कहँ कानन महँ कबहुँ कलेश जानि नहिं जात ॥
कै बन लायक तिय तपसिनकी तपहित भोग दीन जिन त्यागि।
सियबनबसिहै सुत कौनीबिधि लखि कपिचित्र जातिभयपागि ॥
मानसरोवरकी बासी जो बिहरै सदा कमल बन माहिं।
हंसकुमारी सुकुमारी सो गड़हा बसन योग है नाहिं ॥
अस बिचारिकै जस भाषौ सुत मैं शिख देउँ जानकिहि सोय।
कहै रहै कहँ जो घरमा सिय तौ अवलम्ब मोहिं बड़ होय ॥
शील सनेह अमियसानी जनु बानी सुनत मातकी राम।
तनक बिचार्‍यो कछु हिरदै महँ शील सनेह ज्ञान गुणधाम ॥
बैन पियारे उच्चारे तब मातहि सबिधि दीन समुझाय।
लगे बुझावन फिरि सीताको बन के गुण औगुण बतलाय ॥
कहत सकोचैं लग माता के बोले समय समुझि मन माहिं।
राजकुमारी सुनौ सीख मम जिय महँ गुनौ और कछुनाहिं ॥
आपन मोर भला चाहौ तौ घरमा रहौ मानि मम बानि।
सासु कि सेवा यहि आयसु मम घरमहँ सब प्रकार भलजानि ॥
धर्म दूसरा नाहिं याते बढ़ि सादर सासु ससुर सेवकाय।
पतिकी अज्ञा को पालब पुनि सब विधि सुखद मोरमत आय ॥
मातु हमारी सुधि जबजब करि जावै प्रेमभाय अकुलाय।
कथा पुरानी कहि तब तब तुम सुंदरि धीर दियो समुझाय ॥
सत्य स्वभावाहिते भाषतहौं सौ सौगंद शंभुकी मोहिं।
और न कारण है यामहँ कछु राखौं सुमुखि मातुहित तोहिं ॥

बिना कलेशै लहत धर्मफल जो मतगहत बड़ेन को बाल ।
हठवश गालव नहुषादिक ने पाये महा महादुखजाल ॥
मैं पितुवानी को पालन करि ऐहौं लौटि बेगिही धाम ।
बार न लगिहै दिन बीतत महँ मानहुँ कहा हमारो बाम ॥
प्रेमवश्यह्वै हठ करिहौ तौ भरिहौ महा दुःख उरमाहिं ।
सत्य सयानी ममबानी यह रंचहु झूठ बिचारौ नाहिं ॥
कठिन भयंकर दुखदायी बन घोर बयारि घाम हिमबारि ।
शरद चांदनी के दीखे जस चकई दुखित होत उरगारि ॥
बहुबिकलानी सियरानी तब उतरु न आव शोच जियछाव ।
त्यागा चाहत म्वहिं प्रियतम अब याको कछू न धाव उपाव ॥
रोंकि जबरई जल नैनन को उर धरिधीर विदेहकुमारि ।
लागि सासु पद कर संपुट करि बोली मधुर बानि उरगारि ॥
सुनि आपातिवश यहअविनय मम शोचि बिचारि क्षमाकरुमाय।
दीनि प्राणपति शिखसोई म्वहिं जाते होय परम सुखदाय ॥
महूं बिचार्‌यों पुनि हियरे महँ दुखजग प्रिय वियोग समनाहिं ।
कहि कौशल्या ते याविधि पुनि विनतीकरत प्राणपति पाहिं ॥
हे दायानिधि प्राणनाथ पति सुन्दर सुखद शील गुणधाम ।
तुम बिन रघुकुलकुमुद सुधाकर मोकहँ स्वर्ग नर्क सम बाम ॥
भाई भगिनी अरु माता पितु यावत हितू कुटुँब परिवार ।
सासु ससुर गुरु स्वजन सहायक सुन्दर सुठि सुशीलहितकार ॥
भामिनि बनकी सुधि आयेते धीरहु पुरुष जात भय खाय ।
तुम कस निबहौ मृगलोचनि तहँ भीरु सुभाय सहजोंदिखलाय ॥
हंसगमनि तुम बनलायक नहिं इतना कहा मानिल्यो म्वार ।
अपयश देहैं सुनि मोकहँ सब कोइ न भला कहैं संसार ॥
पाली मानस जल अमृत की अति सुकुमार मराली गात ।
सागर खारी महँ जीवै कस जातहि निकट माहिं मरिजात ॥
नव रसाल बनबासी कोकिल निवसै कस करील बनमाहिं ।

बसौ भवन महँ अस बिचारि जिय बनमहँ महादुःख दरशाहिं ॥
सीख सुहृद अरु गुरु स्वामीकी जोनहिं करत हृदय हितमानि।
सोपछितावै बहु पाछेकहँ औ फिरि अवशि होत हितहानि ॥
बचन मनोहर सुनि स्वामीके सियके दृगन गयो जलछाय।
अतिव उदासी जियभासी तब लागी कँपन देह सबभाय ॥
यद्यपिशिक्षा भलिप्रियतमकी दीन्हासि क्यहिप्रकार जियजारि।
लागत कंकर कुश कंटक मग नंगे पायँ चलब सुकुमारि ॥
सुन्दर कोमल तुव पंकज पद मारग अगम पहाड़न माहिं।
खोह कंदरा नद नारे बहु अगम अगाध देखि नहिं जाहिं ॥
सिंहदहारैं चिग्घारैं गज सो सुनि धीर धरा ना जाय।
बाघ भेड़िया अरु भालुन के देखत जाय जीव भय खाय ॥
महिमहँ सोउब पट बल्कल के दल फल फूल कन्द आहार।
मिलैं न सब दिन प्रिय सोऊ तहँ जबकब समय समय अनुसार ॥
करैं निशाचर नर भोजन तहँ कोटिन कपट बेष रहे छाय।
लगे पहाड़न को पानी अति बनकी बिपति कही ना जाय ॥

स० व्याल कराल विहङ्गम जाल करैं बहुशोर महा दुखदाई।
घोर निशाचर कोलकिरात करैं उतपात न जात बताई ॥
चोर सबै नर नारि तहां दिन राति करैं मगमैं ठगहाई।
यातेकहीमम मानिप्रिया घरहीमरहौ पैहौ जोभलाई ॥

नाते गोते महँ जहँ लगि जे कहि कहि बेद बताये नाथ।
पियबिन सबिताते ताते ये तिय कहँ कोउ न देवैया साथ ॥
तन धन धरती राज पाट गृह पति बिन सबै शोक को ठाट।
भार आभरण भोग रोग सम यमयातना सरिस जगहाट ॥
प्रियतम तुम बिन यहि दुनियाँ महँ मोकहँ सुखदकतौं कोउ नाहिं।
कहौं न मिथ्या मैं यामहँ कछु देख्यों करि बिचार मनमाहिं ॥

स० जीबिन देह सनेह बिना सँग ज्यों बिन दौलत गेह खरारी।
रागबिना स्वरके जिमिसून बिना फल फूल यथाफुलवारी॥

चंद्र विना जस राति न सोहत बंदि यथा सरिता बिनवारी ।
मेघ विहीन यथा बर्षा ऋतु तैसिय नाथ बिना पति नारी ॥

साथ तुम्हारे सुख मोकहँ सब नैनन मुख निहारि सुखकारि ।
केहू विधिते दुख पैहौं ना जैहौं बार बार बलिहारि ॥
पुर सम सुन्दर सुखदायक बन खग मृग स्वइ कुटुंबीम्वार ।
वस्त्र रेशमी सम बल्कलपट प्रभु सँग कुटी सुखद आगार ॥
देवी देउता वहि कानन के करि हैं सासु ससुर समसार ।
सुघर साथरी कुश काँसन की तोशक सरिस मोहिं भर्तार ॥
मोहिं सुधासम प्रियलागी तहँ दल फल मूलकेर आहार ।
नगर अयोध्या ते हजार गुन म्वहिं सुखदायक तहां पहार ॥
प्रभुपद पङ्कज लखि क्षणक्षण प्रति रहिहौं सदासुखी मैंनाथ ।
जैसे चकई सुख पावै अति दिन महँ अपन प्राणपति साथ ॥
स्वामी बन महँ दुख भाषेबहु बहुतक भय बिषाद परिताप ।
प्रभु वियोगके लवलेशौ भरि ये सब मिलिन होहिं धर चाप ॥
ज्ञानिशिरोमणिअसबिचारिजिय म्वहिं सँगलेउ देउजनिछाँड़ि ।
अन्तर्यामी तुम जानत सब विन्ती बहुत करौं का आड़ि ॥
चहै अयोध्या महँ राखहु म्वहिं जो रहिजायँ अवधिलगप्रान ।
दीन सहायक सुखदायक प्रभु शीलनिधान देव भगवान ॥
राह चलत महँ मैं थकिहौं ना क्षणक्षण चरण सरोज निहारि ।
सेवा करिहौं सब भाँतिनते हरिहौं राह थकावट झारि ॥
बैठि पादपन की छाया महँ पायँ पखारि डोलैहौं बाय ।
देखि श्याम तनु शुचि श्रमकणयुत पति के साथ दुःखकत्रिय ॥
जहाँ बराबरि महिहोइहि तहँ कोमल तृण तरु पात बिछाय ।
सुख सोवाय कै प्रिय प्रीतमको सारी राति पलोटिहौं पायँ ॥
सुन्दर सूरति मृदु मूरति लखि बारहिबार महासुखपाय ।
हवा न ताती तन लागी मम भागी सकल दुःख महराय ॥
प्रभु सँग मो तन चितवैयाको जिमि सिंहिनिहि शशा अरु स्यार ।

असविचारिकै यहि दासी कहँ लेहु अवश्य साथ भर्तार॥
मैं सुकुमारी बन लायक प्रभु तुम कहँ योग मोहिं सुखभोग।
चतुर शिरोमणि यह चर्चा सुनि जग महँ काह कहैंगे लोग॥
ऐसि कठिनताकी बानी सुनि जो न हमार हृदय बिलगान।
नाह जुदाई को दारुण दुख तौ हठि सहैं नीच ये प्रान॥
असकहि सीता अतिव्याकुलभईं वचनवियोग न सकींसँभारि।
दशा देखि सो जगदम्बा की शोचे प्रभु बिचार अस धारि॥
जो बरिआई घर राखौं यहि तौ यह अवशि देय तजि प्रान।
चलहु साथबन शोचत्यागि सब तबअसकह्यो भानुकुलभान॥
रंज करन को नहिं औसर अब जल्दी बन का होउ तयार।
सुन्दरबाणी कहि या विधि तब प्रियहि प्रबोध दीन कर्तार॥
पुनि प्रभु लागे पग माता के आशिष पाय गये हर्षाय।
माय कौशला पुनि भाष्यो अस सुनिये वचन पूत रघुराय॥
आय वेगिहीहरयो प्रजा दुख माता निठुर बिसरि जनिजाय।
फिरीदशा अबकब विधनाममम देखिहौं दीठि सुवन सुखदाय॥
शुभ दिन समया शुभ होइहिकब शशिमुख जियत देखिहैंमात।
गोदलायकै उरलगाय कै मोद अघाय छाय हौं गात॥
लाल दुलरुवा अरु बछवाकहि रघुबर राम रघूपति तात।
कब बोलायकै दुख भगायकै हियहरषाय निरखिहौं गात॥
माता कातरि लखिसनेह वश व्याकुल कहि न सकी कछुबानि।
तब समुझायो प्रभु नाना विधि समय सनेह न जाय बखानि॥
लागि सासुपग जनकसुता तब बोली हाथ जोरि शिरनाय।
अतिव अभागी हौं माता मैं मोसन कछू कहा ना जाय॥
भई न मंशा परिपूरण मम सेवा समय दैव बनदीन।
रहै विधाता की मर्जी जो गाय बजाय काम स्वइ कीन॥
प्रबल जानिकै होनहारको हमरो दोष न मानब मात।
दया बिसारब जनि हियरेते है बहु कठिन कर्मकी बात॥

सुनि इमिबानी सियरानी की बहु अकुलानि सासु खगराय ।
दशा बखानौं सो कौनी बिधि मोमति कहति जाय सकुचाय ॥
मातु कौशला तब करुणाकरि फिरि २ सियहि लीन उरलाय ।
धीरज धारिकै पुनि जियरे महँ आशिष सीख दीन समुझाय ॥
रहौ सोहागिल सिय सबदिन तुम जबलगि गंग यमुनजलधार ।
होहु पियारी पति अपने कहँ सब दिन प्यार करै भर्तार ॥
आशिष सिखवन सिय रानीको दीन्ह्यो सासु अनेक प्रकार ।
चली नायशिर पद कमलन महँ हित दरशाय बारहीं बार ॥
खबरि लक्ष्मणने पाई जब धाये अति बिहाल खगराय ।
नैननआँशू पुलकावलि तन काँपत गहे आय प्रभु पायँ ॥
ठाढ़े चितवत कछु भाषत नहिं हियमहँ भई दुःखकी बाढ़ि ।
होय दुखारी बहु मछरी जस जब कोउदेय बारिते काढ़ि ॥
होनहार कह मन शोचत यह सब सुख सुकृत सिरान हमार ।
श्री रघुनायक सँगलेहैंकी जैहैं छोंड़ि मोहिं आगार ॥
राम बिलोक्यो तब भाई तन जोरे हाथ अगारी ठाढ़ ।
देह गेहसों तृण तोरेजनु बोरे नेह बारि बेखाढ़ ॥
नीति उजागर सुखसागर प्रभु बोले राम बचन अभिराम ।
तात प्रेमबशजिय डरपौजानि हियमहँ समुझि सुखद परिणाम ॥
मात पिता अरु गुरुस्वामीकी मानै सीख जौन मनलाय ।
जन्मधरेको फल पायो तिन नातरु बादि जन्म जगजाय ॥
अस बिचारिहिय प्रिय बंधव तुम सीखहमारि सुनहु चितलाय ।
घरमहँ रहिकै मतगाहिकै मम करिये माय बाप सेवकाय ॥
भरत शत्रुहन घर नाहींहैं मम दुख दुखी वृद्ध महिपाल ।
तुम्हैं साथलै बन जाऊँ मैं सब विधि अवध होय बेहाल ॥
प्रजा कुटुंबी गुरु मातापितु सबपर परै दुसह दुख भार ।
याते घरमहँ रहि बंधव तुम सबकर करौ प्यार सत्कार ॥
नाहिंत होइहै अपकीरति बहु इतनाकहा लेहु चितधारि ।

प्रजा दुखारी जासु राज्यमहँ सोनृप होय नर्क अधिकारि ॥
नीति समुझिकै मन भैयाअसि घरमहँ रहौ गहौ मत म्वार।
सुनि अस लक्ष्मण भे व्याकुल बहु हियमहँ बढ़्योशोच बिकरार ॥
मुख कुम्हिलान्यों क्यहि प्रकार ते पाला परे यथा जलजात।
नैनन आँशू बर्सन लागे मुख ते कहि न सके कछु बात ॥
उतरु न आयो कछु सनेह बश पकरेस्वामि चरण अकुलाय।
नाथ टहलुआ मैं मालिक तुम त्यागे कह बिसाय रघुराय ॥
मोकहँ स्वामी सिख दीन्हींभलि यह मैं जानिलीन मनमाहिं।
निज कदराई ते लागत भय याको कछु उपाय प्रभु नाहिं ॥
निगमनीति के अधिकारी ते जे नर धीर धर्म अवतार।
प्रभु सनेह को प्रतिपालो मैं अति अज्ञान बुद्धिहत बार ॥
मोर उठावा यह उठि है ना स्वामी राजनीति को भार।
हंस उठावैं किमि मन्दरगिरि लीजै अस विचारि कर्तार ॥
गुरु पितु माताकोहु जानौं ना सांची कहौं नाथ पतियाउ।
यावतनाताहैं दुनियाँ महँ प्रीति प्रतीति रीति श्रुतिगाउ ॥
तुमहीं स्वामी इक मोरे सब अन्तर्यामि लेहु यह थाहि।
धर्म्मनीतिं यह बतलाइयत्यहि कीरति सुगति भूति प्रियजाहि ॥
मंशा बाचा अरु कर्मनते जो जन युक्त टहलुई माहिं।
दीन दयाकर त्यहि सेवकको त्यागब क्यहु प्रकार भलनाहिं ॥
दयासिंधुसुनि शुचि बंधवकी यहिविधि अतिव मुलायम बानि।
हिय लगायकै समुझायो प्रभु परम सभीत नेह बशजानि ॥
मांगि बिदाई निज माता ते आवहु वेगि चलहु बनभाय।
सुनि इमि बानी धनुपानी की लक्ष्मण हृदय गये हर्षाय ॥
मिटी उदासी चित चिंताकी माता निकट पहूंचे जाय।
बाढ़ो गाढ़ो सुख हिय महँ जनु अन्धहि नैन लाभ भो भाय ॥
जाय मातु पद शिर नायो तब मन रघुनाथ जानकी साथ।
देखि मलिनमन तब लक्ष्मणकहँ पूंछ्यो मातु कह्यो सबगाथ ॥

राम गमन बन सुनि चर्चा यह सहमी हिये सुमित्रामाय।
कछू न आयोकहि औसर त्यहि जस दव देखि मृगी घबड़ाय॥
लषण बिचारयो अब अनरथ भा करी अकाज नेहबश माय।
प्रभु सँग जैबे को कहिहैं धौं रखिहैं घरै माहिं अटकाय।
समुझि सुमित्रा रामसियाको रूप सुशील और शुभभाव॥
नृप सनेह लखि शिरपटक्यो बहु पापिन कठिन कीन दुर्दाव॥
जानि कुऔसर धरि धीरज पुनि बोली सहसनेह मृदुबानि।
मातु तुम्हारी सुत सीता अरु सब बिधि पिताराम धनुपानि॥
तहैं अयोध्या जहँ राघव रहैं दिन तहँ जहां भानु परकास।
असबिचारि सुत तजिसंशय भ्रम सेवहुजाय चरण सुखरास॥

स० मातपिता तुम्हरे सियराम औकानन धाम सदा सुखदैया।
हैधनितात तुम्हैं बलिजावँ कियो प्रभु पायँन प्रीति अमैया॥
सेवहु जाय मनोवचकाय कै याते भलो जग और न भैया।
हे सुत मैं बड़भाग भई जो भई तुम ऐसे सपूत कि मैया॥

सोई मेहरिया सुतवाली जग जाको पुत्र रामको दास।
बादि बियाने फिरि बांझै भलि लरिका दुष्ट भये कुलनास॥
भागि तुम्हारी फलियानी सुत जाते रामचन्द्र बन जाहिं।
दूसर कारण कछु नाहीं है निश्चय जानि लेहु मन माहिं॥
सब सुकृतनको फल याही है सीताराम पगन महँ प्रीति।
रागरोष मद मोहादिक की स्वपनेहुँ हृदय न आनहु रीति॥
त्यागि विकारहि सब प्रकारते मनक्रम वचन करहु सेवकाय।
सब विधि तुमका सुखदायक बन सँगसियराम बापअरुमाय॥
रामन बनमहँ दुखपावैं जिमि सुतस्वइ किह्यो कहब यहम्वार।
जाते भूलै सुधि सबही की पुर सुखमाय बाप परिवार॥
यहिबिधि सिखदै पुनिआयसु दै आशिषदई सुमित्रामाय।
राम सियाके शुचि पायँन महँ सबदिन तुव सनेह अधिकाय॥
नाय मातु पद शिर गमने तब शंकित हृदय सहित अनुराग।

कठिन जालको जिमि तुरायकै मानहुँ मृगा भागवश भाग ॥
गये लक्ष्मण जहँ सीतापति भे अति खुशी पाय प्रिय साथ।
रामसियाके पद बंदन करि नृप गृहचले सहित रघुनाथ ॥
पुर नर नारी कहैं आपुस महँ दई बनाय बिगारी बात।
मनदुख दुर्बल तनसूखे मुख बिकल विहाल सकल पछितात ॥
पक्षी परवना बिन व्याकुल जस माखी मधुछीने अकुलाय।
तस विषाद वश नर नारी सब बरणि न दशा जाय खगराय ॥
बड़ी भीर भइ नृप द्वारे पर हाहाकार कहा ना जाय।
सचिव उठायो तब भूपति कहँ आये तुवसमीप रघुराय ॥
सियासहित दुउ सुत निहारिकै व्याकुल बहुतु भये भूपाल।
कहि न जाय कछु अतिसनेह वश नैनन भरे अश्रु जलजाल ॥
सिय समेत दुउ सुत सुंदर अति भूपति देखिदेखि अकुलाय।
परम प्रेमवश कर पर्शन करि बारहिबार लेतउरलाय ॥
शोकसमान्यो बहु राजाउर बोलि न सकत भकत करिहाय।
माथ नायकै तब पायँन महँ माँगी बिदा राम रघुराय ॥
आशिष आयसु पितुदीजै म्वहिं कीजै जनि अँदेश हियमाहिं।
हर्ष मानिबे को औसर यह धीरज धरहु डरहु उरनाहिं ॥
तात प्रेम मद पान कियेते जग यशजाय होय अपबाद।
याते तुमका समुझाइतहै तजि हिय शोक करहु अहलाद ॥
रामचंद्रकी सुनि बानी इमि नृप गहिबाँह लीन बैठाय।
एक अँदेशा है जियरे महँ सुत सो मोहिं देहु समुझाय ॥
मुनि अस भाषतहैं तुमकहँ सुत रघुपति अहैं चराचर राय।
कर्म शुभाशुभ बनि आवत जस तस फल ईशदेत लवलाय ॥
करै कर्म जस फल पावत तस असकह वेदनीति गोहराय।
सोई तुमसन मैं पूछत हौं सुनिये रामचंद्र रघुराय ॥
करै और कोइ अपराधै सुत ताको और पाव फलभोग।
अति विचित्र गति नारायणकी जगमहँ कौन जानिबे योग ॥

राम लषणहित महराजाने कोटि उपाय कीन छलत्यागि।
रहत न जाने क्यहुभाँतिनते धीर सुजान धर्म अनुरागि॥
सीय लायउर नृपलीन्ह्यों तब कह्यो अनेक भाँति समुझाय।
कहिदुख बनके बतलाये सब औ पितु सासुश्वसुर सुखगाय॥
सिय मनलाग्यो प्रभु पायँनमहँ त्यहिघर रहब नीकनालाग।
बनको गमनब मनभायो अति छायो हृदय स्वामि अनुराग॥
औरौ सबहिन समुझायो बहु बनकीबिपति कही सबगाय।
गुरुतिय मंत्रिनकी तिरिया सब कहैं बुझाय नेह उरलाय॥
तुम्हैं न दीन्ह्यों बन काहूने करौ जो कहैं श्वशुर गुरु सासु।
बनै गयेते दुखपैहौ बहु घरमहँ सबप्रकार सुखबासु॥
शीतलहितकरमृदुमधुरीसिख सुनिसोसियहिन तनकसोहानि।
लगे चाँदनी शरद चंदकी चकई मनहुँ महा अकुलानि॥
देत न उत्तर सिय सकोचवश सो सुनि केकयी उठी रिसाय।
मुनि पटभूषण अरु बर्तनलै धरिसो अग्र लागि बतलाय॥
राम प्राणप्रिय तुम राजाको तजैं न शील नेहको भाव।
नशै सुयश अरु शुभकीरति यह तुम्हैं न जान कहैं बनराव॥
असबिचारिकै मनभावै जो सोई करौ राम मतिधाम।
सुनिकै बानी अस माताकी रघुपति लह्यो मोद अभिराम॥
नृपहि सुहाने नहिं तनको सो हियमहँ लगे बचन जनु बान।
प्रान अभागे नाहिं निकसत अब तनमहँ काहपाय लपटान॥
शोकबिकलता वश मूर्च्छित नृप सूझ न कछू करैं अवकाह।
त्यही समइयाके औसरमहँ भो असहाल सुनहुँ खगनाह॥
वेष मुनिनको धरि तुरतै तब जननी जनक पायँ शिरनाय।
अतिव अनंदित ह्वै हिरदै महँ बनको चले राम रघुराय॥
साजिसमाजअरुसाज विपिनको प्रियतियभाय सहित हरषाय।
द्विजगुरु पायँनको बंदनकरि गमने सबहि शोक सरसाय॥
आय कै ठहरे गुरु द्वारे पर देखे जरे लोग बिरहागि।

कहिप्रियबानी समुझाये सब लीन्ह्यों द्विजन बोलिअनुरागि ॥
गुरु सन कहि कै फिरि सबही को दीन्ह्यों एक साल को खान ।
विनती करिकै सब काहू सों कीन्ह्यों सविधि दान सन्मान ॥
दान मान सों भिखियारिन को पुनि संतोष कीन सबभांति ।
प्रेम भावसों परितोष्यो बहु प्रीति प्रनीति नीति अधिकाति ॥
दासी दासन बोलवायो फिरि बोले गुरुहि सौंपि कर जोरि ।
रक्षा कीन्ह्यों इन सबही की मान्यो कही विनय यह मोरि ॥
सब सन भाषत मृदु बानी वर वारंबार जोरि युग हाथ ।
सोई सब विधि हितकारी मम जाते सुखी रहैं नरनाथ ॥
विरह हमारे महँ माता सब दुखी न होयँ जौन परकार ।
यत्न सो कीन्ह्यों तुम सबही विधि पुरजन सब प्रवीन हुशियार ॥
याहि विधि कहिकै सब काहू सों दीन्ह्यों राम सविधि समुझाय ।
परमानन्दित ह्वै तत्क्षण पुनि गुरु पद पद्म दीन शिरनाय ॥
ध्याय गजानन शिव गिरिजा पुनि चले अशीष पाय रघुराय ।
चलत रामके दुखबाढ़्यो अति आरत शब्द सुनो नहिं जाय ॥
बन को धाय्या पग जात्तण प्रभु अशकुन भयो लंकपुर माहिं ।
शोक समान्यो कौशलपुर महँ सुर हरषाहिं और पछिताहिं ॥
गई मूर्च्छा नृप जागे तब बोलि सुमन्त कही अस बात ।
राम चले बन प्राण जात नहिं केहि सुख लागि रहे मम गात ॥
यहिते अधिकी दुख परिहै का जो दुख पाय तजैं तन प्रान ।
हाय गोसइँयाँ कह कीन्ह्यों यह भावी होत महा बलवान ॥
जानि कुऔसर पुनि धीरज धरि याहि विधि कह्यो भाषि नरनाहु ।
करहु विलंब न अब याही क्षण लै रथ संग सखा तुम जाहु ॥
जनकदुलारी सुकुमारी अति युगुलकुमार महासुकुमार ।
रथ चढ़ायकै बन देखायकै लायहु फेरि गये दिन चार ॥
जो ना लौटैं वे भाई द्वउ धीर गँभीर वीर मतिमान ।
सुयश उजागर गुण आगर वर नागर सत्यसंध भगवान ॥

मम हुति विनती तुम कीन्ह्यो पुनि दूनौ हाथ जोरि शिरनाय।
जनकसुता कहँ लौटारौ प्रभु इतना कहा करौ रघुराय॥
डरै जानकी बन देखे जब मम सिख कह्यो समय तुम पाय।
कह्यो सँदेशा सासु श्वसुर अस लौटौ भवन गहन दुखदाय॥
कबहुँ पिता घर कबहुँ श्वसुर घर रह्यो जहां रुचि होय तुम्हारि।
यत्न जो आवै बनि या बिधि कछु लौटै भवन बिदेहकुमारि॥
होय आसरा कछु प्राणन को नातरु मोर मरण परिणाम।
यहि ते अधिकौ दुख होइहै का कछु न बसाय भयो बिधिबाम॥
कहि यहि भांतिन नृप सुमंत ते पुनि महि गिर्यो मूर्च्छा खाय।
आनि दिखावो तुम बेगिहि म्वहिं लक्ष्मण सिया राम रघुराय॥
पाय रजायसु इमि मंत्री फिरि तुरतै रथै लाय सजवाय।
हाँकि लै गयो पुर बाहर जहँ शोभित सिया सहित द्वउ भाय॥
वचन भूप के कहि सुमंत तब रथ पर रामहिं लीन चढ़ाय।
रथ चढ़ि सिय सह द्वउ भाई पुनि गमने हर्षि पुरहि शिरनाय॥
रामहिं गमनत लखि बनको तब अवध अनाथ जानि सब भांति।
लोग विकल ह्वै सँग लागे सब आरत दशा कही नाहिं जाति॥
कहि समुझावैं बहु दायानिधि लौटैं फिरैं प्रेम बश फेरि।
अवध भयानक बहु लागत है मानहुँ कालराति रहि घेरि॥
घोर जन्तु सम पुरबासी सब यावत तहां पुरुष औ नारि।
एक एक को लखि डरपतहैं दशा सो कहि न जात उरगारि॥
भूत प्रेत सम परिवारी सब लगै मशान सरिस आगार।
हितू सनेही सुत आदिक सब अस दिखरात मनहुँ यम चार॥
जाहिं न देखे नद नदिया कछु बागन लता वृक्ष कुम्हिलायँ।
राम बिरहमहँ अतिव्याकुल सब शिरधुनिमाथपीटि पछितायँ॥
पाले हरण हय हाथी बहु पुर पशु सकल पपीहा मोर।
सुवा सारिका पिक रथांग बहु सारस सुघर मराल चकोर॥
रामजुदाई ते व्याकुल सब जहँतहँ खड़े मनहुँ तसवीर।

खग मृग यावत नरनारी सब अतिशय दुखी धरतनहिंधीर ॥
कीनिभीलिनी विधिकेकयीको ज्यहिं दशदिशा लगाई आगि।
प्रभु बिरहागी सहिनसके कोउ व्याकुल चले लोग सबभागि ॥
सकल बिचारैं निज २ मनमा प्रभु सियलषण बिना सुखनाहिं।
जहां रामतहँ सुखसामा सब बिन प्रभु कौनकाज घरमाहिं ॥
करि अससम्मत दृढ़लागे सँग दुर्लभ देवभोग गृहत्यागि।
तिन्हैं नबाधै विषयभोग कछु जे जन रामचरण अनुरागि ॥
बालक बृढ़वा घर तजितजिकै लागे सकल लोग प्रभुसाथ।
निकसि अयोध्याते पहिले दिन तमसातीरबसे रघुनाथ ॥

इतिश्री भार्गववंशावतंसश्रीमान्मुंशीनवलकिशोरात्मजस्यश्रीमुंशीप्रयागनारायणस्याज्ञाभिगामीउन्नामप्रदेशान्तर्गतमसवासीग्रामनिवासी पण्डितबंदीदीनदीक्षितनिर्मितश्रीविजयराघवखण्डेअवधकाण्डे द्वितीयोल्लासः २॥

गिरागजानन गुरु गिरिजापति गिरिजाअरुगोविन्दपगध्याय।
कलुष निकन्दन रघुनन्दन को भाषत चरित मनोहर गाय ॥
प्रजा प्रेम वश लखितत्क्षण तब बहु दुख लह्यो दयानिधिराम।
स्वामी रघुपति अति करुणामय परदुख दुखी रहत सब याम ॥
बचन प्रेमयुत अति कोमलकहि बहुबिधि सबहि बुझायो नाथ।
धर्मकि शिक्षा बतलाई बहु तजत न लोग प्रेम वश साथ ॥
भे अस संजस वश राघव तब शील सनेह छांड़ि नहिं जाय।
तब सुरमाया मति मोई कछु गे सबसोय शोक श्रमपाय ॥
राति द्वैप्रहर पुनि बीती जब तब अस कह्यो मंत्रिसन राम।
खोज मारिकै रथहाँकहु अब और प्रकार बनहिं नहिं काम ॥
राम लषण सिय चढ़ि स्यंदनपर दीन्ह्यों शम्भु चरण शिरनाय।
सचिव चलायो रथ तुरतै तब इत उत मग दुराय खगराय ॥
बड़े सबेरे जन जागे सबभो अतिशोर गये रघुराय।
खोज न पावैं कहुँ स्यंदन कर चहुँदिशि बिकल पुकारैं हाय ॥

पोत डूबिगो जनु बारिधि महँ बणिक समाज उठी अकुलाय।
देहिं परस्पर शिख एकहि इक दुख लखि हमैं तज्यो रघुराय॥
करैं बड़ाई सब मछरिन कनक न जियैं जौन बिनपानि।
आपनि निन्दाकरि भाषैं इमि रघुबर बिना जियब धिकजानि॥
जो प्रिय बिछुरन बिधि कीन्ह्यों यह तौ कस मरण न मांगेदीन।
यहिबिधिबिलखत अतिब्याकुल सब आये अवधदीनतनछीन॥
कठिन जुदाई रघुराईकी जाय न करि बखान हरियान।
अवधि आसरा धरि हिरदै महँ राखैं सकल आपने प्रान॥
राम दरशहित नेम धर्म व्रत लागे करन सकल नरनारि।
चकवा चकई अरु अंबुज जस रबि बिन दुखी होत उरगारि॥
इतै हकीकति अस बीतति भै उत कर हाल सुनौ मनलाय।
सीता मंत्री सह भाई द्वउ पहुँचे शृंगवेर पुर जाय॥
देव नदी की लखि शोभा शुभ रथ ते उतरि परे रघुनाथ।
कीनि दण्डवत अति आनँद सह माथ नवाय जोरि द्वउ हाथ॥
सिया लक्ष्मण अरु सुमंत पुनि कीन प्रणाम माथ महिनाय।
हिय हुलासायो सुखपायो अति सबहिन सब प्रकार खगराय॥

स० मूल सबै मुदमंगलकी अघदंगल जंगल शूल नशावनि।
तूलसितावनि मोहमदादिकसिद्धि समृद्धिसदासरसावनि॥
स्वावनि दारिद दूषणहू हठि बंदि परम्पदकी पहुंचावनि।
छावनिभूरि उमंग हिये अतिपावनि गंग तरंग सोहावनि॥

कथा वार्ता कहि कोटिक इमि गंग तरंग बिलोकत राम।
मंत्री भाई अरु प्यारी सन महिमा कही गंग की आम॥
हनवन कीन्ह्यो पुनि आछी बिधि सहजहि भयो पंथ श्रम नास।
शुचि जल पीवत मुद पायो मन तन उत्साह भयो परकास॥
ज्यहिके सुमिरणके कीन्हे ते सहजहि मिटै सकल भवभार।
होय परिश्रम त्यहि स्वामी को यह लखिपरत लोक व्यवहार॥

स० शुद्ध स्वरूप अनूप प्रभा जग भूप महातम कूप निवारन।

सच्चिदानंद मयीमति धाम सदा सब याम सतोगुणधारन ॥
संतनको बिसरामद राम निकाम धरातल भार उधारन ।
बंदि उबारन हेत दुखी जन धारत हैं जग में अवतारन ॥

यह सुधिपाई गुह निषाद जब लीन्हें जाति भाय बोलवाय ।
कंद मूल फल भरि भारन महँ भेंटन चल्यो हर्षि रघुराय ॥
भेंट अगारी धरि पायँन परि देखत प्रभुहि प्रेम उपजाय ।
सहज नेह वश रघुराई प्रभु पूंछ्यो कुशल पास बैठाय ॥
अति आनंदित गुह निषाद तब बोले हाथ जोरि शिरनाय ।
भयों कुशल अब सब भांतिनमैं तुव पग कमल देखि रघुराय ॥
भाग्य अपूरब अब जागी मम कीन्ह्यो दया दास निज जानि ।
शिव ब्रह्मादिक कहँ दुर्लभ पग देख्यों अनायास सुख मानि ॥
मोर धराधन गृह तुम्हरो प्रभु मैं जन नीच सहित परिवार ।
करि अनुकंपा पग धारिय पुर थापहु देय दास अधिकार ॥
गुह निषादको सुनि भाषण इमि बोले रामचंद्रभगवान ।
सखा सांचुकहि तुमभाष्यो यह आयसुपितैं दीन म्वहिंआन ॥
बर्षचारिदश बसिकानन महँ कसितन मुनिब्रत वेष अहार ।
पुरको बसिबो नहिं वाजिबहै यहसुनि गुहहि भयो दुखभार ॥
रामलषण अरु सियस्वरूप लखि कहैं सप्रेम ग्राम नरनारि ।
ते पितुमाता कहौ कैसे सखि जिनअसपुत्र कीन बनचारि ॥
बड़भल कीन्ह्यों नृपएकैकहैं लोचन लाभ हमैं जिनदीन ।
भागि पुरुबुले की जागी अति जो असरूपसहज लखिलीन ॥
हृदय बिचार्‌यो अस निषाद तब सिरसावृक्ष मनोहर जानि ।
ठौर दिखायो सो रामहिंलै अति भल कह्यो ताहि धनुपानि ॥
आयकै उतरे त्यहि बिरवा तर पुरजन करि जोहारगे धाम ।
सूर्य अस्तलखि त्यहि औसर तब संध्याकरन सिधारे राम ॥
लैकेकोमल कुशडाभै तब गुह साथरी कीनि निर्मान ।
कोमल मीठे कंदमूल फल दोनाभरे धरेतहँ आन ॥

सियसुमंत अरु प्रियभाई सह सुंदर कंदमूल फलखाय।
सोवनलागे श्री रघुकुलमणि चापतचरण भाय लवलाय॥
स्वामी रघुपति कहँ सोवत लखि लक्ष्मण उठे धारि धनुवान।
कह्यो मंत्रिहूते सोवन कहँ अपना बैठ भटासन ठान॥
बोलि पहरुवा विश्वासी तब राखे ठावँ ठावँ गुहराय।
धनुष बाण धरि कटि भाथा कसि आयो बैठ लषण पहँ जाय॥
महि महँ सोवत लखि राघव को बहु दुख भो निषाध हिय माहिं।
कंठ घुचघुचा भरि आयो तब नैना भरे आँशु दरशाहिं॥
भाषन लाग्यो इमि लक्ष्मण सों सुंदर प्रेम भाव सरसाय।
अतिव प्रबल है यह भावी जग क्यहू प्रकार जानिनहिं जाय॥
सहज सुहावन मनभावन अति दायक सुख विराम नृपधाम।
समता पावत नहिं सुरपति गृह सुखमा युत दिखात सब याम॥
खचे मणिन के चौबारे बर मानहुँ रचे काम निज हाथ।
इन्द्र सभा सम सजे बैठका दरशत सब प्रकार द्युति गाथ॥
सुखद भोगमय अति बिचित्र शुचि छाई सुमन सुगंधित बास।
मलयागिर के परे पलँगरा मणिमय दीप करत परकास॥
बिछे गलीचा अरु तोसकबर तकिया लगीं मखमली चारु।
शाल दुशालादिक ओढ़न कहँ विविध प्रकार भोग अधिकारु॥
सियाराम तहँ सुख सोवैं नित छबिलखि लजै काम सहबाम।
साथरि सोयेते राघवसिय बिनपट श्रमित त्यागि सुखधाम॥
परिजनपुरजन अरु मातापितु सखा सुशील दासिनी दास।
जिन्हैं रखावतरहैं प्राणन सम तिनप्रभुकीन-वृक्षतर बास॥
जनक जासु पितु जगजानत सब श्वशुरसुरेश सखारघुराउ।
रामचन्द्रपति वैदेहीसो सोवत भूमि कहनअब काउ॥
कानन योगकि रघुनंदनसिय कर्म प्रधान कहत जनसांच।
बचै न कोऊ जगआयेते भावी सबहि नचावत नाच॥
दुष्टा केकयि दुर्बुद्धी अति दारुणमहा कुटिलपन कीन।

जैं रघुनंदन अरु जानकि कहँ सुखके समय ऐस दुखदीन॥
जड़ ते रविकुल तरु काटन को भई कुठार सरिस मति बाम।
दुखी करायसि सब दुनियाँ कहँ हठिकै बनै पठायसि राम॥
राम सिया को महिसोवत लखि अतिदुख भयो निषादहि भाय।
बोले लक्ष्मण मृदुवानी तब ज्ञान विराग भक्ति रस छाय॥
दुख सुख देत न कोउ काहू को है यह सत्य बात गुहराय।
निज २ कर्मन के कीन्हें फल भोगत सबै जगत महँ आय॥

स० भोगरुरोग सँयोग बियोग भले औबुरे यत बेद बताहीं।
मीतअमीत हिताहित मध्यम ये भ्रमफंद जहाँलगि आहीं॥
जीवनमर्ण सदा सुख औ दुख धाम धराधन ग्राम गनाहीं।
देखे सुने औ गुने जहँ लौं जड़मोह सबै परमारथ नाहीं॥

होय भिखारी नृप सपने महँ दुखिया स्वर्ग स्वामि होइजाय।
हानि लाभ नहिं कछु जागे ते तैसे यह प्रपंच दिखराय॥
रंज न कीजै अस बिचारिकै वृथा न दोष लगाइय काहु।
मोहरात्री महँ सोवत सब देखत अमित स्वप्न नहिं थाहु॥
यहि जग यामिनि महँ जागत जे योगी जन सुजान युत ज्ञान।
भिन्न रहत ते जग प्रपंच ते है परमार्थ पंथ पहिंचान॥
जीव जागतो जग जानौ तब जब सब विषय माहिं वैराग।
ह्वै मति जागै भ्रम भागै सब तबहो राम चरण अनुराग॥
सखा श्रेष्ठ है परमारथ यह मन क्रम बचन राम पद नेह।
ब्रह्म सच्चिदानंद राम प्रभु बिगत विकार दया के गेह॥
सुर गो ब्राह्मण महि भक्तन हित लागि कृपाल राम जनपाल।
करत तमासा धरि मानुष तन ज्यहि सुनि मिटै सकल जगजाल॥
सखा समुझि अस मोहादिकतजि सिय रघुबीर चरण रत होउ।
श्री रघुनंदन सम दुनियाँ महँ दूसर हितू और नहिं कोउ॥
यहि बिधि भाषत रघुनायक गुण गिरिजा भयो आय भिनुसार।
उये दिवाकर दिशि पूरब महँ जागे रामचन्द्र कर्तार॥

सकल शौचकरि प्रभु न्हाये पुनि लीन मँगाय दूध बट क्यार ।
जटा बनाये शिर भाई सह मंत्रिहि भयो देखि दुखभार ॥
हृदय दाह अति मति भोरी भइ नैनन बहै लागि जलधार ।
चढ़ी उदासी बर आनन पर तनमहँ मढ़ी व्यथा बिकरार ॥
महा दुखारी से बोलत भे माथ नवाय जोरि दुउ हाथ ।
नाथ कह्यो अस अवध नाथ ने लै रथ जाहु रामके साथ ॥
बन दिखाय नहवाय सुरसरी आन्यहुँ बेगि फेरि दुउ भाय ।
फेरि लयायो राम लषण सिय शोच सकोच सकल बिसराय ॥
यहि विधि भाष्यो महराजाने प्रभु जस कहैं करौं बलि सोय ।
पस्यो पगन महँ करि विन्ती इमि दीन्ह्यों शिशु अयान समरोय ॥
तात कीजिये स्वइ दाया करि जाते अवध अनाथ नहोय ।
राम उठायो तब मंत्रीको लागे कहन धर्म पथ टोय ॥
तात धर्म मग तुम शोध्यो सब जानत सकल नीतिकी बात ।
ताहि बिसारत मति हारत अस वृथा सनेह वश्य भय खात ॥
शिवि दधीचि हरिचंद्रादिक नृप जिनको यश गावत संसार ।
सहे करोरिन दुख धर्मैं हित तजि २ राज भार संभार ॥
रंतिदेव अरु बलि राजाने धर्मैं गह्यो सह्यो दुख गात ।
धर्मन दूसर सच्चाई सम आगम निगम कहत अस बात ॥
धर्म सो सहजै महँ पावामें त्यागे अयश जाय जगछाय ।
मिलै प्रतिष्ठित कहँ अपयशतौ बड़ दुख कोटि मरण ते आय ॥
अधिकी तुमते कहि भाषौंका उत्तर दिये लागिहै पाप ।
तात धीर धरि दुख परिहरि सब यह तौ हृदय बिचारौ आप ॥
कोटि भाँति कहि पितु पायँन गहि मम हुति बिनै करब कर जोरि ।
तात भूलिहू कै काहू विधि चित चिंतना करब जनि मोरि ॥
हितू हमारे पितु सदृश तुम बिनती करौं जोरि कर तात ।
जौनी विधिते बनिआवै पुनि तौनी भाँति किह्यो यह बात ॥
शोच हमारे महँ कौनिहुँ विधि होयँ न दुखी यथा नरनाह ।

तुम का करिबो स्वइ वाजिब हैं यहिते अधिक कहौं मैं काह ॥
राम सचिव को बतलैबो सुनि भो गुह दुखी सहित परिवार ।
कहे दुर्बचन कछु लक्ष्मण पुनि वर्ज्यो राम जानि बदकार ॥
सौंह आपनी दै मंत्री कहँ पुनि अस कह्यो राम रघुराय ।
तात लरिकई यह लक्ष्मण की भूलि न कह्यो पिता सन जाय ॥
भूप सँदेशा रघुनंदन ते मंत्री कहन लाग फिरि भाय ।
बन दुख सीता सहि सकि है ना यहि विधि कह्यो राम सनजाय ॥
लौटि अयोध्यै सिय आवै जिमि तुम का करन चही सो राम ।
न तरु सहारा बिन कौनिउँ विधि हमना जियब जानि परिणाम ॥
सब सुख मैके अरु ससुरे महँ ज्यहि विधि जबहिं जहां मन होय ।
रहै अनंदित तब तहँई सिय जब लगि बिपति जाय नहिं खोय ॥
बिनती कीन्हीं नृप जौनी विधि सो दुख प्रीति कही नहिं जाति ।
पितु सँदेश सुनि प्रभु सीता को लगे प्रबोध देन बहु भाँति ॥
मानि मैथिली शिख हमारि मन जो तुम लौटि भवन का जाव ।
सासु ससुर गुरु पुर परिजन लै सब कर मिटै शोच पछिताव ॥
स्वामि बचन सुनि सिय बोली पुनि सुनिये प्राण नाथ रघुनाथ ।
प्रभु दाया निधि अति ज्ञानी तुम श्रुतिपथ सकल तुम्हारे हाथ ॥
तनक बिचारौ तौ देहै तजि रौंकी रहत छाँह किमि नाह ।
छांड़ि दिवाकर द्युति जावै कहँ कहँ चाँदनी चंद तजि जाहि ॥
बिनै प्रेम युत करि स्वामी से पुनि सिय कहत सचिव सन भाषि ।
सुनत वार्ता यहि औसर की धीर न जाय हृदय महँ राखि ॥
पिता श्वशुर सम हितकारी तुम अनुचित होय देउँ फिरि ज्वाब ।
परे कुसमया जन भाषत अस रहत न लाज साज की दाब ॥
भइउँ सामुहें तुव आरत वश ताको बिलगु न मानब तात ।
आरजसुत के पग अंबुज बिन हैं सब बादि जहां लगि नात ॥
बाप आपने को बैभव मैं भोग बिलास दीख भलि भांति ।
आय झुकावतशिरअगणितनृपपगतलमुकुटमणीमिलिजाति ॥

सबसुख संयुत अस मायक मम मनै न भाव भूलि बिननाथ।
हाल सासुरे कर सुनिये अब जाको कारबार तुव हाथ॥
श्वशुर चक्कवै श्री कौशल पति चौदह भुवन प्रकट परभाव।
लेत अगारी ह्वै सुरपति ज्यहि जो विख्यात स्वर्ग के राव॥
अर्ध सिंहासन पर आसन दै अपने पास लेत बैठाय।
रहैं सर्वदा अवलोके रुख सब माहिराय रहत भयखाय॥
श्वशुर हमारो परतापी अस अवध निवास सर्व सुखरासु।
अहैं कुटुम्बी सम पुरजन प्रिय दायक मोद मातु सम सासु॥
रामचन्द्रके चरण कमल की पाये बिना धूरि सुखमूरि।
सुखद न लागो कोउ सपन्यो म्वहिं मन हठि भयो सबनते दूरि॥
कठिन कुराहै महि काननकी बिषम पहार नदी नदनार।
बाघ भेड़िया हरि हाथी लै बाँदर भालु जीव बदकार॥
कोल भिल्ल अरु खग मृगादि सब ठग बटपार चोर हरगाथ।
भूलि न कोऊ दुखदायक ये म्वहिं सब सुखद नाथके साथ॥
सासु श्वशुर से कहि मोरी हुति विनती करब तात परिपायँ।
मोर शोच जिय जनि करिये कछु मैं बन सुखी रहब सब ठायँ॥
साथ नाथ अरु प्रिय देवर मम बीर धुरीण धरे धनु बान।
मग श्रम भ्रम दुख नहिं मोरे मन शोच न करब मोर असजान॥
शीतल बानी सुनि सीता की मंत्री महा बिकल भो भाय।
मणि हरिजैबे तें गिरिजा जस सहजे सांप विकल ह्वै जाय॥
सुनै न कानन दृग देखै नहिं मुखते कहि न सकै कछु बात।
रामचंद्र प्रभु समुझायो बहु तदपि न होय शीतलो गात॥
यतन अनेकन करी साथ हित वाजिब ज्वाब दीन रघुराय।
कठिन कर्मगति वश नाहीं कछु राम रजाय मेटि नहिं जाय॥
राम लषण सिय पद माथो धरि लौट्यो पुनि सुमंत अकुलाय।
खोय मूलधन जस आपन सब बनियाँ महा हृदय पछिताय॥
हांक्यो मंत्री रथ तत्क्षन हय प्रभु तन देखि देखि हेहनाहिं।

लखि निषाद अस अति विषाद वश माथो पीटि पीटि पछिताहिं ॥
जासु विरह महँ पशु व्याकुल अस कैसे जियैं प्रजा पितु माय ।
पठै सुमंतहि हठि राघव पुनि गंगा तीर पहूंचे जाय ॥
माँगी नैया तब केवट ते गंगा पार जाय हित भाय ।
राम रूप लखि तब केवट इमि लाग्यो युक्ति सहित बतलाय ॥
भेद तुम्हारो मैं जानत हौं सुनिये रामचंद्र रघुराय ।
तुव पद पंकज रज भाषत सब मानुष करनि मूरि कछु आय ॥
पाथर छुवतै भइ सुंदर तिय है यह बात बिदित जगमाहिं ।
तब फिरि पाथर ते बढ़िकै कछु है कठिनई काठ महँ नाहिं ॥
क० तारीमुनिनारी पगपावनपरागडारि सोईपगधारि बंदिधारौ उतरैयापै ।
मेरो परिवारसबयाहीलगिजीवतहै औरनाहिंकामधाम दूजोन कमैयापै ॥
गौतमकी घरणीज्यों तरणीतरैगी मेरी काहसमुझैहौं घरकैहौंमैं लोगैयापै ।
दीननकेभैया रघुरैया बातसांचीकहौं बिनापावँधोये न चढ़ैहौंनाथनैयापै ॥
बैन अटपटे सुनि केवट के लपिटे जौन प्रेम रसमाहिं ।
चितै जानकी अरु लक्ष्मण तन मनमहँ दया अयन मुसुकाहिं ॥
हँसि अस भाष्यो प्रभु केवट ते नाव न जाय करहु सो कार ।
बेगि पखारौ पग लैकै जल होत बिलम्ब उतारहु पार ॥
स० एकहि बार उचार किये ज्यहि नाम तमाम व्यथाअघ भागैं ।
पार करैं भव सिंधु अपार भयंकर धार अबार न लागैं ॥
थोर कियो जग जैं पग तीनि ते जाहि जपे षटराग न जागैं ।
सो हरि या दरिया तरिबे कहँ केवट ते कहि नावहि माँगैं ॥
पग नख देखत रघुनंदन के गंगाहृदय उठीं हरषाय ।
जानि आपनो शुचि जन्मस्थल सबतन गई छाय पुलकाय ॥
फिरि प्रभुबानी सुनि मन महँ गुनि नरवत देखि लोकव्यवहार ।
मोहवश्य ह्वै मति भर्मत भै शोचत हृदय बारहींबार ॥
राम रजायसु लै केवट तब कठवति बारि डारि बड़ भाग ।
लाय सहोदर अति आनँद युत पंकज पायँ पखारन लाग ॥

सुर सराहना करि ताकी पुनि बर्सत फूल ठाढ़ नभमाहिं।
धन्य भाग है यहि केवट को यहिसम पुण्यमान कोउ नाहिं॥
पद पखारि सो पानि पान करि आपु सप्रेम सहित परिवार।
पितर पार करि पुनि स्वामी को आनँद सहित गयो लै पार॥
उतरि सुरसरी के रेतामहँ ठाढ़े भये राम सुखधाम।
लषण जानकी गुह ठहरे तहँ केवट आनि कीन परणाम॥
तब हिय सकुचे रघुनायक प्रभु याको कछू दीन हम नाहिं।
जाननहारी पिय हिय की सिय मणि मुंदरी धरी करमाहिं॥
लीजै आपनि उतराई यह यहि विधि कह कृपालु रघुराय
हाथ जोरिकै तब विनती करि केवट चरण गहे अकुलाय॥
काह न पावा यहि अवसर मैं सुनिये भक्त भावते राम।
अमित जन्म के दुख दारिद सब गे मिटि अनायास अघ बाम॥
कीनि मँजूरी बहु बासर मैं सो विधि दीनि आजु भरिपूरि।
यहि ते अधिकी अब पैहौं का देख्यों नैन स्वामि सुख मूरि॥

क० सुनिये दयानिधान कान दै हमारी बानि लीजै अनुमानि जौन सांची यहि ठाँई है। लोक चलिआई नईरीति है न साईं कहूं नाई की न नाई लेत बार बनवाईहै॥ हम नदी नार आप भव सिंधु पारकरैं एक जाति भाई हम आप रघुराई हैं। यहां हम आपकी न लेत उतराई तस आपहू न लीन्ह्यों वहां बंदि उतराई है॥

बहु हठ कीन्हीं प्रभु लक्ष्मण ने गिरिजा कछू न केवट लेय।
बिदा कीन तब त्यहि दायानिधि प्रेम समेत भक्ति वर देय॥
करिकै मज्जन पुनि सुरसरि महँ पारथि पूजि नाथ रघुनाथ।
ध्यान धारणा करि विधिवत् पुनि प्रेम समेत नवायो माथ॥
हाथ जोरि कै सिय गंगाते कीन्हीं विनय भाषि मृदुबानि।
मातु मनोरथ मम पूरण करु भागीरथी चारिफल दानि॥

स० देव नदी बर बारि बिलासिनि पुण्य प्रकासिनि तुंग तरंगे।
पाप खसीहित तीव्र असी जन दोषव्यथा भ्रम भेकभुवंगे॥

शंकर शीश जटा मधिवासिनि नासिनि अंतक तंत कुढंगे ।
बंदि मनोरथ पूरण कै दुख चूरण कै सुख दे शुचिगंगे ॥

सहित कुशलता पति देवर सँग पूजौं तोहिं फेरि ज्यहि आय ।
सो बर चाहत अभिलाषा करि देवि सदया देहि हरषाय ॥
सुनि सिय रानी की बानी शुचि सानी जौन प्रेम रस भाय ।
गंग अघानी हरषानी अति बानी कढ़ी धार हहराय ॥
जनकदुलारी प्रभु प्यारी सुनु जग न प्रभाव तोर कोउ जान ।
होहिं लोकपति तुव देखत महँ सेवत सकल सिद्धि धरि ध्यान ॥
विनय सुनाई जो हमकहँ तुम दाया कीन्हि बड़ाई दीन्हि ।
देवि अशीषति हौं तद्यपि मैं आपनि बाणि सफल हित चीन्हि ॥
प्राणनाथ अरु प्रिय देवर सह कुशल समेत कोशलहि आय ।
ह्वैहै पूरण अभिलाषा सब जैहै सुयश दशौ दिशि छाय ॥
मंगलखानी सुनि बानी बर भई प्रसन्न राम की बाम ।
गिरिजा अद्भुत हरिलीला यह दायक संत जनन विश्राम ॥
तब प्रभु भाष्यो गुहराजाते अब तुम भवन आपने जाउ ।
सुनत सूख मुखभो दारुण दुख बाढ्यो हृदयमाहिं पछिताउ ॥
करुणा बाणी सों बोल्यो गुह सुनिये विनय मोरि रघुराय ।
जायकै रहिहौ ज्यहि बनमा प्रभु तहँ पर पर्णकुटी मैं छाय ॥
तब फिरि आयसु जस होई म्वहिं करिहौं सोई सौंह तुवनाथ ।
देखि प्रेम अस गुहराजा को प्रभु मुदमानि लीन त्यहि साथ ॥
जाति बिरादर गुहराजा के आये रहैं संग महँ जौन ।
बिदा दीनकै गुह सबही कहँ गमने सकल आपने भौन ॥
तब गणनायक शिव सुमिरे प्रभु नायो बहुरि गंग कहँ माथ ।
सखा अनुज अरु सिय प्यारी सह बनकहँ गमन कीन रघुनाथ ॥
त्यहि दिन निवसे प्रभु बिरवातर कीन सुपास सखा अरुभाय ।
भये सबेरा शौचादिक करि तीरथराज दीख प्रभु जाय ॥
तीरथपति की शुचि शोभा को बरणै कौन ऐस मतिमान ।

सहजे दर्शन के कीन्हें ते विनशैं सकल पाप के घान ॥
सत्य सुमंत्री अरु श्रद्धा तिय माधव सरिस मीत हितकार ।
भरा खजाना फल चारिहु सों पुण्य प्रदेश देश सुखसार ॥
किला अनूपम अति दुर्गम दृढ़ सपन्यों शत्रु न पावै जान ।
सुंदर तीरथ स्वइ सेना भट पाप समूह दलन बलवान ॥
संगम सुन्दर सिंहासन स्वइ अक्षय वृक्ष छत्र दरशाय ।
गंगा यमुना की लहरी शुचि दारिद दमन चमर सो आय ॥
सेवैं सुकृती अरु साधू जन पावैं सबप्रकार मन काम ।
श्रुति पुराणगन स्वइ बंदीजन बरणैं सदा विमल गुणग्राम ॥

क० दायक अनंत फल संतनको सिद्धि बुद्धिवंतनको बुद्धिकर पूरक सुया-गहै । भवतंत हंतक सुअंतक को अंतकर जीवजंत उरउपजावन बिराग है॥ बंदीकवि रविसम तम अघनाशिबेको सुमति प्रकाशिबे को ब्रह्मबर बागहै । राखत न दाग दुख दारिद को लाग तन करन सभाग घन तीरथ प्रयागहै॥ पायो लखि मत श्रुति सुमृति पुराणनमें गायो शुभयश बुधिमानन की श्रेनी है । कहि चतुरानन बतायो चतुरानन सों सब सिद्धि साधनकी देनी का-मधेनी है ॥ बंदी कबि छायो है जहान में प्रभाव जाको पाप के पहार छार करिबे को छेनीहै । भव हरिलेनी सब विभव भरेनी भुक्ति मुक्ति की न-सेनी सुखदेनी श्री त्रिबेनी है ॥ तीरहि गये ते तन पीरको न राखैं तीर बंदि भ्रम भीर औ अधीरता नसाय देत । नीरके पिये ते चीरिडारत शरीररुज धीर करि सुमति गँभीर विकसाय देत ॥ वारिमें धँसेते हिय बसेते विदारि पाप दारिद त्रिताप धारि धूरि में धँसाय देत । मज्जत पतंग जात रंग गंगसंगम में दै उमंग अंग सुर संग में बसाय देत ॥ बसैं सिद्ध साधौं बहु सुमति अगाधौ जहां करैं जप योग को अराधौं सुहरसते । कहूँ तपसाध-त समाधत है तपीगन किये मन आदि दश इन्द्रियन बसते ॥ कहूँ दानमान होत कतहूँ पुरानगान सुनत परानंताजि पापधूरि धँसते । भागिजात भूरि तूरि फंद दुख बाधौ अपराधौ पल आधौ बंदि माधौ के दरसते ॥

स० तारत न्हातक के कुल सातक पातक घातक सिंह मतंगम ।

नासतहै यमफांस की त्रास विकासतदिव्यप्रभा अँगअंगम ॥
बंदि उधारतहै जड़ जंगम जारतहै दुख दारिद दंगम।
भंग करै भ्रम भेक भुवंग पतंगजा गंग तरंगम संगम ॥
तीरथ पति को अस प्रभाव वर वर्णन करै कहां अस ज्ञान।
पाप पुंज रुज गज वृंदन को नासनहार सिंह समजान ॥
अस तीरथ पति सुठि सुंदर लखि सुख अति लह्यो राम भगवान।
सीय सखानुज के सुनिबे हित महिमा कही सहित सन्मान ॥
करि प्रणाम बन बाग विलोकत महिमा कहत प्रेमसह राम।
आय निहार्‍यो फिरि बेणी कहँ देनी संत जनन विश्राम ॥
सुखसह मज्जन करि पूज्यो शिव तीरथ देव पूजि सविधान।
भरद्वाज पहँ चलि आये प्रभु कीन प्रणाम चरण धरि ध्यान ॥
हृदय लगायो सुखपायो मुनि छायो अंग अंग पुलकाय।
यथा दरिद्री जन हर्षैमन अनगन अनायास धनपाय ॥
आशिष दीन्हीं मुनिनायक तब आनँद मानि हृदय असजानि।
लोचन गोचर शुभ सुकृत फल मानहुँ कियो आजु बिधि आनि ॥
कुशल प्रश्न करि शुभ आसन दै पूजि सप्रेम नेम सविधान।
कंदमूल फल भल अंकुर मधु दीन्हें मनहुँ सुधारससान ॥
सीय लक्ष्मण गुहराजा सह खाये रुचिर मूलफल राम।
भये बिगत श्रम रघुनंदन तब बोले भरद्वाज मतिधाम ॥
आजु सुफल भो तप तीरथ जपयोग विराग यज्ञ अरु ध्यान।
आजु सुफल भो सबं साधन मम तुम्ह कहँ लखत राम भगवान ॥
हद लाभकी अरु आनँद की दूसरि नहीं और सुखरास।
तुम्हरे दर्शन के पाये ते पूरण भई आज सब आस ॥
अब रघुराया प्रभु दाया करि यह वरदान देहु हरषाय।
सब दिन तुम्हरे पद पंकज महँ सहज सनेह प्रेम अधिकाय ॥
कर्म वचन मन छल त्यागन करि जब लगि दास न होय तुम्हार।
तब लगि नाहीं सुख सपन्यो मा कीन्हें कोटि कोटि उपचार ॥

सुनि मुनि बानी सकुचाने प्रभु आनँद भये भक्तिके भाव ।
मुनिकर सुन्दर यश वर्णन कै सबहि सुनाव राम रघुराव ॥
पुनि अस भाष्यो मुनि नायक ते श्रीरघुनाथ जोरि कै हाथ ।
सब गुणखानी जन ज्ञानी स्वइ आदर देहु जाहि मुनि नाथ ॥
यहि विधि बातैं कहि आपुस महँ इकको नवैं एक हरषाय ।
सो सुख बाणी के कहिबे महँ आवत नहीं तनक खगराय ॥
तीरथपति के जन बासी जे तापस ब्रह्मचर्य मुनि आदि ।
सिद्ध उदासी चलि आये सब देखन राम रूप सुखमादि ॥
आवत लखिकै उठि ठाढ़े ह्वै सब कहँ राम कीन परणाम ।
नैन लाभ लहि भे मोदित सब पायो हृदय माहिं बिश्राम ॥
दैदै आशिष रघुनंदन कहँ सब कोउ अति अपार सुख पाय ।
सविधि सराहत सुन्दरता यश निज २ भवन गये खगराय ॥
त्यहि निशि ठहरे रघुनन्दन तहँ प्रातःकाल प्रयाग अन्हाय ।
गमनेबनजन सियलक्ष्मणसह हियहरषाय मुनिहिं शिरनाय ॥
मुनिते पूंछ्यो श्रीरघुपति अस अब हम नाथ कौन मग जायँ ।
मुनि हँसि भाष्यो रामचंद्र ते तुम कहँ सुगम पंथ सब आयँ ॥
अस कहि रघुपति सँग जैबे हित आपन शिष्य लीन बुलवाय ।
सुनत पचासक उठि धाये तब प्रभु के पास पहूंचे आय ॥
प्रेम राम पद सब काहूको सब कहँ रस्ता दीखि हमारि ।
चारि शिष्य तब सँग दीन्हें मुनि जिन बहु पुण्य कीन उरगारि ॥
पाय सुआयसु मुनिनायक को करि परणाम चले रघुराय ।
गावँ किनारे चलि निसरैं तब देखैं दरश नारि-नर धाय ॥
लखि सुंदरता सिय राघव की होहिं सनाथ जन्म फल पाय ।
पाछे गमनैं कछुक दूरि लग लौटैं फेरि संग मन जाय ॥
बटु लौटाये प्रभु विनती करि लौटे पाय पाय मन काम ।
उतरि नहाये पुनि यमुना जल निर्मल जो शरीर सम श्याम ॥
राम आगमन सुनि यमुना तट बासी सकल नारि नर भाय ।

निज २ कारज तजि धाये सब देखन हेत राम रघुराय ॥
राम लषण सिय सुंदरता लखि सरहैं सकल आपनी भागि।
इक २ अंगन की देखत छबि मन अनुरागि जात मुद पागि ॥
बड़ी लालसा मन सबही के पूंछत नाउँ गाउँ सकुचाहिं।
वृद्ध सयाने जे तिनमहँ कोउ तिन सब जानि लीन मनमाहिं ॥
हाल बतायो तिन सबहीं को पितु आदेश बिपिन ये जात।
पाय हकीकति अस नारी नर ह्वै अति दुखी हृदय पछितात ॥
राजा रानी भल कीन्ह्यों ना ऐसे सुतन दीन बनवास।
सबहि विधाता दुख दाता सखि येऊ परे दुःख की फांस ॥

स० सुंदर रूप अनूप छटा छबि कूप प्रभा रति भूप लजाये।
शोभ शिंगार महा सुकुमार उदार मनौ विधि आपु बनाये ॥
कंकर कांट गसे मगमें चलिहैं किमिकै पनहीं नहिं पाये।
वेपितुमातु कहौ सखि कैस बने जिन बालक ऐसपठाये ॥

तेही औसर पर रघुबर प्रभु गुहको बिदा कीन समुझाय।
राम रजायसु सो माथे धरि कीन्ह्यों गवन भवन शिर नाय ॥
राम लषण सिय कर संपुट करि पुनि यमुनाको कीन प्रणाम।
राम ने सियसह द्वउ भाई पुनि भाषत यमुन सुयश अभिराम ॥
मिलैं बटोही बहु गमनत मग ते अस कहैं देखि द्वउ भाय।
देखि तुम्हारे नृप लच्छण अँग हमरे हृदय शोच अधिकाय ॥
पायँ पयादे पंथ चलत हौ ज्योतिष झूठ हमारे भाय।
दुर्गम मारग बन पर्वत महँ सँग सुकुमारि नारि दरशाय ॥
सिंह बाघ बन भरे अनेकन आयसु होय चलैं हम साथ।
पठै ठिकाने लग तुम कहँ तहँ आउब लौटि फेरि हम नाथ ॥
भाषि प्रेम वश इमि बूझैं सब पुलक शरीर भरे जल नैन।
फेरैं तिनकहँ प्रभु दायानिधि करिकै बिनै भाषि मृदु बैन ॥
बसैं गाउँ पुर जे मारग महँ सरहैं तिन्हैं नाग सुर लोक।
इन्हैं बसायो क्यहि सुकृती ने कौनी घरी पुण्य के ओक ॥

परैं जहां जहँ पग राघवके त्यहि सम अमरलोक है नाहिं।
देव सराहैं तिन सुकृतिन को जे जन बसैं राह तट माहिं॥
भरि २ आँखिन अवलोकैं जे सीता लषण राम घन श्याम।
मार लजावन मन भावन छबि शोभा प्रभा रूप गुण धाम॥
राम मँझावैं जे सरिता सर सरहैं तिन्हैं देवसरि ताल।
जौनै बिरवा तर बैठैं प्रभु सुरतरु कहैं तासु यश आल॥
प्रभु पद पंकज रज पर्शन कै मानै भूमि अपनि बड़ि भागि।
जीव चराचर तहँ यावत सब रामहिं देखि जाहिं अनुरागि॥
करैं छाँह घन अरु देउता गन बरसैं सुमन सुमन हरषाहिं।
यहि विधि देखत बन खगमृगगिरि राघव चले जाहिं मगमाहिं॥
सिया लषण सह रघुनंदन प्रभु निसरैं गावँ निकट जब जाय।
बालक बूढ़े नरनारी सब दौरैं धाम काम बिसराय॥
राम लषण सिय सुंदरता लखि होयँ अनंद नैन फल पाय।
नैन बारि भरि अति पुलकित तन भे सब मगन देखि दोउ भाय॥
जाय न बरणी गति तिनकी कछु पाये मनहुँ रंक मणि ढेर।
बोलि सिखावैं इक एकन को लोचन लाहु लेहु यहि बेर॥
प्रभु लखि एकै अनुरागे मन चितवत चले जात लगि साथ।
एक नैन मग आनि राम छबि तन मन वचन शिथिल ह्वैजात॥
लखि बट छाहीं भलि एकै तब तुरत बिछाय मृदुल खर पात।
कहैं निवारण श्रम कीजे क्षण जायो फेरि अबहिं कित प्रात॥
जल भरि लावैं इक कलशा महँ अँचइय नाथ कहैं मृदु बानि।
देखि प्रीति अति मृदु बैनन सुनि राम कृपालु शील गुणखानि॥
थकी जानि कै मन सीता को क्षणक बिराम कीन बट छाहँ।
मुदित नारिनर लखिशोभाशुभ अतिवलोभायजायँ मनमाहँ॥
इक टक देखैं सब चारिउ दिशि सुंदर रामचंद्र मुख चंद।
मनहुँ चकोरी अरु चकोर गण चितवत फँसे प्रेम के फंद॥
नव तमाल रँग तन सोहै सुठि मोहैं देखि करोरिन काम।

बरणसूवरणतनलक्ष्मनछबि नखशिखअतिललामअभिराम ॥
मुनि पट धारे अति प्यारे तन कमरन कसे बसे शर भाथ।
खल दल घालक अरि शालक सो रहे बिराज बान धनु हाथ ॥
जटा मुकुट धर शिर सुंदर गर उर भुज नैन बैन सुबिशाल।
शरद पूर्णिमा के चंद्रा सम आनन लसत श्वेद कणजाल ॥
सुंदर जोड़ी कहि बरणौ को शोभा बड़ी मोरि मति थोरि।
राम लषण सिय सुन्दरता शुभ चितवैं सबैं बुद्धि चित जोरि ॥
प्रेम पियासे नर नारी सब थकिसे रहे नैन टकलाय।
मानहुँ हरणी अरु हरणागण दीपक ज्योति देखि ललचाय ॥
जाय सीय ढिग ग्राम तीय सब पूंछत अति सनेह सकुचायँ।
सुंदर सीधी मृदु बाणी कहि लागहिं बारबार सब पायँ ॥
राजकुमारी बिनै सुनौ इक तिया स्वभाव कहत भय खायँ।
क्षमिये स्वामिनि यह अविनैमम जानिय तियगवाँरि ये आयँ ॥
सहज सलोने राजकुवँर द्वउ शोभा देखि काम सरमाय।
इनते पाई द्युति मर्कत मणि सुवरण श्याम गोर सुखदाय ॥
प्रभा उजागर छबि सागर वर सुंदर बय किशोर द्युति ऐन।
शरद चंद्रमा इव राजत मुख सुखकर शरद सरोरुह नैन ॥
काम करोरन के मोरन मंद सुमुखि कहौ को लगैं तुम्हार।
इन्हैं बनायो सुख पायो बिधि कहँ अस जक्क रूप अधिकार ॥
कोमल बानी सुनि नारिन की मनमहँ सिया सकुचि मुसकानि।
तिनतनदेख्योपुनिदेख्यो महि सकुचनि कहततोनकविगाय ॥

स० प्रेम समेत सकोचि सुहेत कै बाल कुरंग दृगी सिय रानी।
बैन मनोहरबोली तबै जनु खोली सनेह सुधा सुखखानी ॥
गौर शरीर धरे धनु तीर अहैं लघुदेवर मोर प्रमानी।
लक्ष्मण नाम महामतिधाम प्रभा अभिराम त्रिग्रामबखानी ॥
साँवल रंग अनंग छटा जित मेघ घटा सम अंग सोहावन।
बाहुबिशाल सरोरुह दाल सिमाल गले सुभले छबि छावन ॥

बंदि अनंदित बैन सुनैन मनोहर सैन सुचैन जगावन।
अंचल दै मुख कै रुख सीय कह्यो सखि ये हमरे मनभावन॥

सुनि अस बानी सिय रानी की सब तिय हृदय गईं हरषाय।
जन्म दरिद्रिन ने पाई जनु सुंदर रतन राशि खगराय॥
प्रेम सहित पग परि सीताके देहिं अशीश जोरि युग हाथ।
रहौ सर्वदा सौभागिनि तुम जबलगि धरा धराधर माथ॥
होहु पियारी पति अपने कहँ शंकर पारबती की नायँ।
छोह न छाँड़ब हम दासिन पर इतनी विनय मानिये माय॥
जो फिरि लौटब यहि मारग ले दर्शन देब किंकरी जानि।
प्रेम पियासी लखि सबहिनको अति परितोष कीन सियरानि॥
यथा चांदनी के पोषेते कोकाबेलि बेलि खिलि जाय।
तिमि सिय रानी की बानी सुनि सबरी तिया गईं हरषाय॥
जानि राम रुख तब लच्छमण ने पूंछी राह बानि मृदु भाखि।
भये दुखारी नर नारी सुनि सके न धीर हृदयमहँ राखि॥
भये मलीने मुदहीने सब विधि निधि दीनि लीनि जनु छीनि।
समुझि कर्म गति धरि धीरज पुनि सीधी राह भाषि तिन दीनि॥
लषण जानकी सह आनँद मन पुनि बनगमन कीन रघुनाथ।
कहि प्रिय बानी लौटारे सब मन लै लीन आपने साथ॥
फिरत नारि नर पछितावैं अति दैवहि दोष देहिं मनमाहिं।
कहैं परस्पर ह्वै आरतवश उलटे ब्रह्म कर्म सब आहिं॥
महा निर्दयी बिन अंकुश को महा अशंक बंक सबभांति।
कीन कलंकी ज्यहिं सुंदर शशि शठता कही तासु किमि जाति॥
रूख कीन ज्यहिं सुरपादप अरु सिंधु अपार कीन ज्यहिं खार।
त्यहि दुर्बुद्धी शठ बिधना ने पठये बनै ऐस सुकुमार॥
इन्हहिं दीन जो बनोबास तौ भोगविलास कीन बिधि बादि।
पायँ पियादे मग गमनैं ये बिधि कत रचे बाजि रथ आदि॥
डासि पतौवा महि सोवहिं ये तौ कत सेज रची बिधि भाय।

इन्हैं बसायो बिधि बिरवातर क्यों घर रचे बादि श्रम लाय ॥
जो ये पहिरैं तन बलकल पट सुघर कुमार महा सुकुमार ।
भांति अनेकन के भूषण पट तौ कत रचे बादि करतार ॥
करैं कंदफल जो भोजन ये तौ सब असन बादि जगमाहिं ।
इन ते बढ़िकै सुंदरता अरु महिमहँ देखि परत कहुँ नाहिं ॥
कहैं परस्पर इक एकन सन ये सब भांति सुघर सुकुमार ।
आपुहि प्रकटे ये दुनियाँ महँ इनकहँ रच्यो नाहिं करतार ॥
जहँ लगि बरणी बिधि करणी श्रुति देखी सुनी नैन मन कान ।
खोजि निहारौ त्रैलोकी महँ कहँ अस नारि पुरुष छबिवान ॥
इन्हैं देखिकै अनुराग्यो बिधि इनसम और बनावन लाग ।
कीन बहुत श्रम गाढ़ि पाये ना इन सम सो बिरंचि हत भाग ॥
मानि ईर्षा त्यहि कारन ते कानन इन्हैं छिपायो आनि ।
एक कहैं हम बहु जानैना आपुहि रहे धन्य अनुमानि ॥
पुण्यमान जन त्यउ जाने हम जिन ये लखे नैन भलि भांति ।
अब जे देखहिं अरु देखिहैं जे आगे अति अनूप छबि कांति ॥
यहि बिधि कहिं कहि प्रियबानी सब नैनन माहिं लेहिं भरिबारि ।
दुर्गम मारग किमि चलिहैं ये तन सुकुमार पुरुष औ नारि ॥
होहिं प्रेमबश तिय व्याकुल सब चकई सांझ समय जिमि भाय ।
कठिन कुमारग पग कोमल लखि भाषैं अस सनेह सरसाय ॥
कोमल प्यारे अरुणारे पग पर्सत वसुंधरा सकुचाय ।
हृदय हमारे जस सकुचत हैं लखि सुघराय युक्त द्वउ भाय ॥
इन्हैं विधाता बन दीन्ह्यों जो कसना करी सुमनमय राह ।
देखि दुष्टता बिधि नठिहा की हमरे हृदय होत सखि दाह ॥
देय बिधाता जो माँगे ये राखन सखी दृगन बिच गोय ।
इन सम प्यारे मनहारे अब पांउब देखि न दूसर कोय ॥
करैं बतकही यहिभांतिन सब नर अरु नारि नैन जल डारि ।
चले अगारी धनुधारी द्वउ संग पियारि नारि सुकुमारि ॥

जे वहि औसर पर आये ना नर अरु नारि तहाँ उरगारि।
देखि न पाये सिय राघव छवि गये सुखाय हाय हिय धारि॥
रूप अनूपम सुनि पूंछैं पुनि अति पछिताय महा अकुलाय।
देर न लावैं बहु धावैं कहि अबलगि गये कहां लग भाय॥
धाय निहारैं दौरैया जे लौटैं मुदित नैन फलपाय।
अबला बालक अरु बूढ़े जन कर शिर मारि रहैं पछिताय॥
होहिं प्रेमबश नर नारी सब जहँ जहँ जायँ राम सुखधाम।
गावँ गावँ प्रति यहिभाँतिन ते गिरिजा होत महामुद आम॥
रविकुल भूषण दुख दूषण हर सुंदर श्याम गौर द्वउभाय।
बंदि अनंदक निज दासन को यहि बिधि रहे चरित दिखलाय॥
कोउ कोउ सुनि कै समाचार अस रानी राजहि दोष लगाय।
करुणा करिकै दुख भरिकै उर धरिकै धीर रहैं चुपलाय॥
एकै भाषैं भल कीन्ह्यों नृप दीन्ह्यों हमैं नैन को लाहु।
हम दुर्भागी कहँ पाइत अस दुर्लभ रामदरश उतसाहु॥
लोग लुगाई सब आपुसमहँ यहिविधि प्रिया रहे बतलाय।
सहज सुहाये सुत जाये जिन ते अति धन्य बाप अरु माय॥

स० धन्य सो ग्राम औधामसुठाम रहे सबयाम जहां ये सुहाये।
धन्यमही सो सही करि मानहुँ ये पग धारि जहां ज़हँ आये॥
धन्यसो देश सुशैल सुगैलहु जाहिं जहां जहँ ये मनभाये।
बंदि इन्हैं निर्मान कियो तबते बिधिहू बुधिमान कहाये॥

राम लषण सिय यश सुंदर शुचि जहँ तहँ रहे लोग इमि गाय।
कथा अगारी की प्यारी अब सुनिये मन लगाय खगराय॥
देत मोद अति मगबासिनको यहि विधि जन अनाथ के नाथ।
चले अगारी बन शोभा शुभ देखत सिया लक्ष्मण साथ॥
वेष उदासी छबि खाँसी तन पाछे लषन अगारी राम।
मध्य जानकी जी सोहैं कस शोभाधाम रूप अभिराम॥
ब्रह्म जीव बिच प्रिय माया जस तैसिय छटा रही दरशाय।

मधु मकरध्वज मधि जैसे रति उपमा कहौं औरि पुनि गाय ॥
यथा चन्द्रमा अरु बुध के बिच जनु सोहिनी रोहिनी आय ।
प्रभु पद रेखा के बिच बिच सिय मग पग धरैं चलैं भय खाय ॥
सिया रामके चरण चिह्न वर बहुतु बराय दृष्टि ठहराय ।
दहिने बायें मग धारैं पग श्री अहिराय लक्ष्मण भाय ॥
राम लषण अरु सियमैया को सहज सनेह गाय किमि जाय ।
दृष्टि न आवत मन बानी के कवि किमि कहै ताहि खगराय ॥
होयँ मगनमन प्रभु शोभा लखि खग मृग आदि जीव समुदाय ।
राम बटोही ने सबही के लीन्हें चित चोराय तहँ भाय ॥
जिन जिन दीखे डगरोही द्वउ प्रिय सियभाय सहित रघुराय ।
दुर्गम मारग भवसागर की ते बिन श्रमैं पारगे पाय ॥
आजौ सपन्यों उर काहू के पंथक बसैं लषण सिय राम ।
रामधाम पथ हाठि जाइहि सो जोकोउ कबहुँ पाव मतिधाम ॥
थकी जानिकै सिय राघव तब लखि बटनिकट सुशीतल पानि ।
कंदमूलफल बसि खायो तहँ गमने फेरि प्रात अनुमानि ॥
देखत सरिता सर पर्वत वर आये बाल्मीकि अस्थान ।
बास सोहावन मुनिनायक को लखि सुखलह्यो राम भगवान ॥
सुन्दर कानन गिरि पावन बन फूले बहु प्रकार कल्हार ।
बिकसे पादप बहुभाँतिन ते गुंजत पुंज मधुप मतवार ॥
खग मृग करिकै कोलाहल भल बिचरैं बैरत्यागि अनुरागि ।
थल सुखदायक मुनिनायक को देखतजाहिं दोष दुख भागि ॥
स्वच्छ आश्रम लखि हर्षे प्रभु तनमन गई महामुद छाय ।
राम आगमन सुनि पाये मुनि आये लेन अगारी धाय ॥
मुनिहिं दण्डवत प्रभु कीन्ह्यों तब आशिर्बाद दीन मुनिराय ।
नैन जुड़ाने लखि राघव छबि छाई अंग अंग सुघराय ॥
लाय सहोदर पुनि आश्रम महँ आसन स्वच्छ दीन बैठाय ।
पाय प्राणसम प्रिय अतिथिन कहँ मुनि अति हृदय गये हर्षाय ॥

कंदमूलफल अति मीठे मृदु दोनन भरे धरे तहँ लाय।
सिया लच्मण सह खाये सो स्वाद सराहि राम रघुराय॥
बाल्मीकि मन अति आनँद भो मंगल रूप अनूपम देखि।
छाई तनमहँ पुलकावलि भलि थकिसे रहे चित्रसम लेखि॥
हाथ जोरि कै तब राघव प्रभु बोले महा मुलायम बानि।
त्रिकालज्ञ हौ मुनिनायक तुम सहजे सकौ बिश्व गति जानि॥
भाषि बड़ाई मुनिनायक की पुनि प्रभु कह्यो भाषि सो हाल।
जाबिधि दीन्ह्यौ बन रानी ने कीन्ह्यौं अतिबिहाल महिपाल॥
आयसु पालब पितु माता को होवै भाय भरत अस राउ।
दूसर दर्शन बन तुम्हार प्रभु यह सब मोर पुण्य परभाउ॥
देखि तुम्हारे पद पंकज मुनि मो सब सुकृत आजु फलियान।
राउर आयसु अब होवै जहँ तहँ मैं करौं जाय बसिथान॥
मुनिहुँ न कोई दुखपावैं ज्यहि तौ सबकाम सहज बनिजाय।
जिनते पावैं दुख तापस मुनि सो नृप बिना आगि विनशाय॥
पालन विप्रन को सबही विधि मंगलमूल मोद दातार।
विप्र सताये रिसवाये ते होय अपार बंश जरि छार॥
अस बिचारिकै थल कहिये सो लच्मण सिया सहित तहँ जाउँ।
रचितहँ शाला तृण पत्तनकी कछु दिन बास करौं त्यहि ठाउँ॥
सीधी बानी सुनि रघुबर की बोले साधु साधु मुनिराय।
कस न कहौ अस तुमरघुकुलमणि पालक वेद पंथ मनलाय॥
जीव चराचर के मालिक तुम मायारूप जानकी माय।
जो जग सिरजै अरु पालै पुनि घालै प्रभु तुम्हारि रुख पाय॥
शिर हजार महिभार धरन सो अहिपति लषन चराचररात।
सुरहित करिबे खल दरिबेहित नरतन धस्यो संत सुखदाय॥
दृष्टि न आवत बुधि बानी के रूप तुम्हार राम कर्तार।
नेति नेति कहि नित गावत श्रुति कबहूँ कोउ न पावत पार॥
जगत पेखना देखवैया तुम बिधि हरि शंभु नचावनहार।

भेद तुम्हारो त्यउ जानै ना दूसर कौन करै निर्धार॥
जाहि जनावो जन जानै स्वइ जानत तुम्हैं तुम्हैं ह्वै जाय।
तुम्हरी दाया सों दायानिधि जानत भक्त भक्त सुखदाय॥
चिदानन्दमय तन तुम्हरो यह बिगत विकार शुद्ध सुखसार।
भार उधारन खल मारन हित धारन कियो मनुज अवतार॥
प्राकृत राजन की नाईं प्रभु बानी कहौ करौ सबकाम।
बुध सुख पावैं भ्रमि जावैं जड़ चरित तुम्हार देखि सुनि राम॥
जस तुम भाषौ प्रभु आननते तैसै करौ कार सब सांचु।
काछ काछिबो जस चाहिय तन तैसे करन चाहिये नाचु॥
मोसन पूंछयो प्रभु रहिबे कहँ सो मैं कहत माहिं सकुचाउँ।
होहु न ज्यहिथल बतलावो कहि सो मैं तुम्हैं दिखावों ठाउँ॥
बैन मनोहर सुनि मुनिवरके साने जौन प्रेम रस माहिं।
शोचि सकाने हर्षाने प्रभु मनमहँ बारबार मुसकाहिं॥
बालमीकि मुनि हँसि भाष्यो पुनि बानी मधुर अमीरस सानि।
रामधाम मैं बतलाओं तहँ बसिये साथ बन्धु सियरानि॥
कथा तुम्हारी बहु नदिया सम सिंधु समान कान जिनकेर।
भरैं सर्वदा पै पूरैं ना तिनके हृदय धाम तव हेर॥
नैन पपीहा करि राखे जिन केवल मेघ दरश की आस।
निदरैं नदिया नद सागरजल बुझवैं रूप विन्दु लहि प्यास॥
तिनके उर पुरमहँ सुन्दर घर अहै तुम्हार राम कर्तार।
बसौ सर्वदा सिय लक्ष्मण सह सुयश उदार जक्त भर्तार॥
मानसरोवर यश सुंदर तुव हांसिनि जीभ बसैं तहँ जासु।
चुनैं तुम्हारे गुण मुक्ताहल तिनके हृदय करौ प्रभुबासु॥
सुभग सुगंधै प्रभुप्रसाद की सूंघै सदा नासिका जासु।
तुम्हैं निवेदित कै भोजन नित जूंठनि खात जौन अनयासु॥
स्वामि प्रसादी पट भूषण जे धारण करैं सर्बदा गात।
तिनके उर में घर करिबे की तुमका कौन कठिन है बात॥

सुरगुरु विप्रहि शिर नावैं जे प्रीति समेत जोरि युगहाथ।
तिन मनमानस महँ मराल सम सियसह सदा बसौ रघुनाथ॥
स० जे नितही हितकै प्रभुके पद पूजिकरैं करसों उपचारा।
राम भरोस हदै नहिं दूसर बानिकथैं प्रभुको यश प्यारा॥
पावन पावन तीरथ जाय सुनैननसों हरिरूप निहारा।
तासु हिये सब याम अरामद धामललाम है राम तुम्हारा॥
जपैं तुम्हारा मंत्रराज नित पूजैं तुम्हैं सहित परिवार।
संत महंतन की सेवाकरि श्रद्धा सहित करैं सत्कार॥
करैं सपर्या जे पितरनकी तर्पण श्राद्धादि सविधान।
विप्र जेवाँवैं बर भोजनदै करि सन्मान देहिं बहु दान॥
तुमते अधिकी जिय जानै गुरु सेवैं सबप्रकार सन्मानि।
वेद पुराणन की चर्चा करि राखैं सदा शुद्ध मन बानि॥
सब कर मांगैं फल एकै यह रघुपति पगन प्रीति अधिकाय।
बसिये तिनके मन मंदिरमा सियसह उभय भाय रघुराय॥
काम क्रोध मद मोह राग अरु लोभ न क्षोभ द्रोह नहिं मान।
जिनके माया छल छाया नहिं तिनके हृदय बसौ भगवान॥
पर उपकारी हितकारी जे प्यारे सवहि शुद्ध मन माहिं।
गारि बड़ाई हित अनहित अरु दुखसुख इक समान शक नाहिं॥
बचन बिचारे सत प्यारे मृदु बोलैं सदा नम्रता धारि।
जागत सोवत चलत फिरत महँ शरण तुम्हारि राम सुखकारि॥
बिष सम जानैं परसंपति जे माता सरिस पराई बाम।
तुम्हहिं छाँड़ि ज्यहि गति दूसरि नहिं बसिये राम तासुउरधाम॥
होयँ सुखारी परसंपति लखि परदुख दुखी आपु है जाय।
जिनहिं राम तुम प्रिय प्राणनसम तिनके हृदय बसौ रघुराय॥
माय बाप अरु हित स्वामी गुरु जिनके भ्रात बंधु तुम तात।
वसिये तिनके मन मंदिर मा बाम समेत राम द्वउ भ्रात॥
लखैं न औगुण जे काहू के केवल गुणैं लेहिं गहि भाय।

बिप्र धेनु हित सहि संकट जे कबहुँ न देहिं कुपथ महँ पाय ॥
गुणैं तुम्हारे हित समुझैं निज ज्यहि सब भाँति तुम्हारी आस।
भक्त तुम्हारे अति प्यारे ज्यहि त्यहि हिय करौ सियासह बास ॥
जाति पाँति जन धन सम्पति घर महिमा धर्म कर्म व्यवसाय।
सब तजि लावै लव तुमहीं पर ताके हिये बसौ रघुराय ॥
स्वर्ग नरक अरु मोक्षादिक कहँ जो जन इक समान करि मान।
जहँ तहँ तुमहीं को देखै दृग छबि आगरे धरे धनुबान ॥
कर्म बचन मन जन राउरको तुव पग धूरि मूरि सों काम।
बसौ सर्वदा हिय ताके प्रभु बाम समेत राम सुखधाम ॥
थल बतलाये बहु याविधि मुनि सुनि सो राम गये हर्षाय।
भाष्योपुनिमुनि प्रभुसुनिये अब गुनि थलकहौंसमै समभाय ॥
जायकै बसिये चित्रकूट पर तहँ प्रभु सब सुपास सब भांति।
शैल सुहावन मनभावन बन शोभा सुभग कही नहिं जाति ॥
सिंह बाघ गज खग मृगादि कर सुंदर सुख बिहार को थान।
नदी पयस्विनि अति पावन पय करत पुरान जासु यश गान ॥
तप बल आनी अनुसूया ज्यहि महिमा महारही जग छाय।
गंगधार बर मंदाकिनि शुभ जोसब पाप देत बिनशाय ॥
बसैं तहाँपर अत्र्यादिक मुनि जप तप योग करैं मनलाय।
करौ सफल चलि श्रम सबहीके गौरव गिरिहि देहु रघुराय ॥
महिमा अतिशय चित्रकूट की यहि विधि कही महामुनि गाय।
आय नहाने तब नदिया बर सिया समेत राम द्वउ भाय ॥
कह्यो लषण ते रघुनायक तब यह भल घाट परत दिखराय।
करौयतन अब कहुँ टिकिबे की जहँ पर सब सुपास बनिजाय ॥
लक्ष्मण देख्यो तब उत्तरदिशि चहुँदिशि फिर्योधनुषइवनार।
नदिया दरशत है रोदा सम शम दम दान बान अनियार ॥
नाना साउज कलि पातक सब यावत कहे सुग्रंथन माहिं।
अचल शिकारी चित्रकूट जनु मारत ताकि चूकतै नाहिं ॥

असकहि लक्ष्मण दिखरायो थल भायो तौन राम मनमाहिं ।
बसे तहांहीं पर आनँद सह छटा बिलोकि जीव हरषाहिं ॥
देवन जान्यो अनुमान्यो यह अब इत रम्यो राम मनआय ।
सह सुरनायक चलिआये सब कोल्ह किरात वेष धरि भाय ॥
रच्यो सुघर घर तृण पत्तन को शाला उभय बरणि नहिं जायँ ।
इकतौ छोटी अति सुन्दर वर एक बिशाल शोभ समुदाय ॥
लषण जानकी सह राघव प्रभु रहे बिराजि पर्ण गृह माहिं ।
रति ऋतुनायक सह मकरध्वज मुनि तन धरे मनहुँ दर्शाहिं ॥
किन्नर दिगपति देवनाग सब आये चित्रकूट त्यहि काल ।
किय प्रणाम प्रभु सबकाहू को भे सब खुशी देखि छबि आल ॥
फूल बरसि कै सुरभाषैं अस नाथ सनाथ भये हमआज ।
बिन्ती करिकै दुख दुस्सह कहि गे निज धाम सहित सुरराज ॥
राम बिराजे चित्रकूट महँ सुनि सब मुनिहुँ पहूँचे आय ।
आवत लखिकै प्रभु मुनियन कहँ कीन प्रणाम माथ महिनाय ॥
हृदय लगावैं मुनि रघुबर कहँ आशिष देहिं हृदै हर्षाय ।
राम लषण सिय छबिदेखहिं दृग साधन सकल सुफलकरि भाय ॥
बिदा कियो प्रभु सब काहू को दै दै यथा योग सनमान ।
निज२आश्रम महँ आनँद सह साधैं सकल योग जप ध्यान ॥
कोल किरातन सुधिपाई यह आये चित्रकूट रघुराय ।
घरमहँ आई नवनिद्धी जनु यहि विधि गये सकल हर्षाय ॥
कंदमूल फल भरि दोनन महँ गमने चित्रकूट खगराय ।
चले दरिद्री जनु आनँद सह लूटन हेत सुवरण भाय ॥
तिनमहँ देखे जिन भाई द्वउ पूछैं तिनहिं और मग जात ।
प्रभु सुन्दरता कहत सुनत इमि देखे सबन आय द्वउ भ्रात ॥
भेंट अगारी धरि सुप्रेम सह करैं जोहार देखि सुघराय ।
चित्र लिखे से जनु ठाढ़े तहँ पुलक शरीर नैन जल छाय ॥
प्रेम मग्न लखि सबकाहू को बहु सनमान कीन भगवान ।

प्रभुहि जोहारैं बारबार सब भाषैं नम्र बचन हरियान ॥
देखि रावरी पद पंकज रज नाथ सनाथ भये हम आज।
भाग्य हमारी ते आये इत श्री रघुराज शोभ सुखसाज ॥
धन्यभूमि बन अरु मारग गिरि जहँ जहँ नाथ धर्‍यो तुमपांव।
कानन चारी खग मृगादि धनि जिन तुव छटा लखी रघुराव ॥
सह कुटुम्बके हम सबरे धनि दरश तुम्हारदीख भरि नैन।
थल बिचारि भल प्रभु ठहरे तुम सब ऋतु इहां रहब सहचैन ॥
सेवा करिबे सब प्रकार हम करि केहरि अहि बाघ बराय।
खोह कंदरा गिरि बेहड़ बन देखा सब हमार रघुराय ॥
तहँ तहँ हम सब चालि साथै महँ मृगया तुम्हैं खेलाउब राम।
सुंदर सरिता सर झरना गिरि सुख सह सबै देखाउब ठाम ॥
आयसु देत न मन सकुच्यो प्रभु सेवक हम समेत परिवार।
जो सुख देवन को दुर्लभ अति सो सुख मिल्यो आजु यहि बार ॥
वेद बचन मुनि मन दुर्गम जे ते रघुराय दया के ऐन।
सुनै किरातन की बानी अस जैसे पिता सुवन के बैन ॥
प्रेम पियारो इक राघव को जाननहार लेहिं यह जानि।
सब बनचारिन परितोष्यो प्रभु कहि कहि मधुर मनोहर बानि ॥
बिदा किये तब चलिआये सब प्रभु गुण कहत आपने धाम।
यहि बिधि निवसे त्यहि कानन महँ सीता लषण सहित श्रीराम ॥
जबते निवसे रघुनायक तहँ तबते बिपिन भयो सुखदाय।
वृक्ष फूलि फलि हरियाने सब तने बितान लतानन छाय ॥
कल्प वृक्ष सम तरु लागैं सब आये देवगहन जनु त्यागि।
भ्रमर हजारन तिन डारन पर गुंजत बर पराग अनुरागि ॥
मंद सुगंधित अरु शीतल सुठि बहै बयारि मनो मल हारि।
सुवा शारिका पिक चातक खग बोलत बानि मनोहर प्यारि ॥
अरना हरना हरि बराह कपि डोलैं बैर त्यागि यक साथ।
जात शिकारे जब राघव तब छबि लखि खुशी होत खगनाथ ॥

जहँ लग जगमा बन देवन के सरहैं सकल राम बन भागि ।
यहि सम सुकृती बन दूसर नहिं जहँ पर बसे राम अनुरागि ॥
गंगा यमुना सरस्वती अरु गोदावरी नर्मदा आदि ।
करैं बड़ाई मंदाकिनि की आपन जन्म जानि जग बादि ॥
उदय अस्त गिरि अरु मंदर हिम गिरि कैलास जहाँ सुर बास ।
औरो यावत जग पर्वत सब गावैं चित्रकूट यश खास ॥
बिंध्याचल मन सुख समात नहिं बिनु श्रम लही बड़ाई भूरि ।
चित्रकूट के खग मृगादि कहँ सुर सब कहैं पुण्यकी कूरि ॥
आँखिनवाले लखि रघुबर को होयँ बिशोक जन्म फल पाय ।
अचर परसिकै पद पंकज रज प्रापत भये उच्चपद जाय ॥
सो बन पर्वत अति सुंदर शुचि मंगल मयी मोद दातार ।
ताकी महिमा कहौं कौन विधि निवसे जहाँ जक्त कर्तार ॥
छाँड़ि क्षीरनिधि अरु अवधै तजिजहँ सियराम लषणरहेआय ।
ताकी महिमा यशकहिबे को शारद बुद्धि जाय सकुचाय ॥
जोसुख मंगल भो जंगल महँ कहि ना सकैं तौन अहिराय ।
सो मैं बरणौं कहि कौनी बिधि मति की गति न परै दिखराय ॥
ताल तलैया के कछुवन को इतनो नहीं पराक्रम भाय ।
धाय उठावैं जो मंदरगिरि तैसे जानि लेहु खगराय ॥
करैं लक्ष्मण प्रभु सेवा बहु मन बच कर्म भर्म भय त्यागि ।
शील नम्रता अरु सनेह सुठि बरणि नजाय जाय मन रागि ॥
देखि रामसिय पग मानत सुख जानत अधिक आपु पर नेह ।
करत न स्वपन्यो सुधि लक्ष्मण हिय मातापिता बंधुजन गेह ॥
रहैं सुखारी सिय स्वामी सँग पुर परिवार सुरति बिसराय ।
पिय चंद्रानन लखि क्षणक्षण प्रति प्रमुदित मनहुँ चकोरी भाय ॥
नाह नेह नित नव बाढ़त लखि दिन महँ यहि प्रकार हर्षाय ।
होय बिशोकी हिय कोकी जिमि पति संयोग पाय खगराय ॥
सिय मन राग्यो प्रभु पायँन महँ पुरते सौहजार गुनयार ।

बन प्रियलाग्यो दुख भाग्यो सब जाग्यो हिये मोद अधिकार ॥
कुटी पतौअन की मंदिर सम बनके खग मृगादि परिवार ।
सासु श्वशुर सम मुनि मुनिकी तिय जे सबभाँति करैं सत्कार ॥
कंद मूलफल स्वइ भोजन भल जिनमहँ मधुर सुधासम स्वाद ।
नाथ साथ महँ कुश साथरि शुचि सब सुख देनहारि उरगाद ॥
होहिंलोकपति अवलोकत ज्यहि त्यहिकिमि मोहैं भोगबिलास ।
गिरिजा अद्भुत हरि लीला यह जानत होत दोषदुख नास ॥
सुमिरि रामपद जनत्यागैंजन तृणसम सुख बिलास कीआस ।
तिनकी प्यारी जगदंबा सिय यह कछु नहीं आचरज तासु ॥
ज्यहि विधि पावैं सुख लक्ष्मण सिय जोकछु कहैं करैं स्वइ राम ।
तैसे प्रभु के पद कंजन को सेवैं लषण सीय सब याम ॥
कथा पुरातन प्रभु भाषैं कहि सीता लषण सुनै सुख मानि ।
जबहिं अयोध्या की आवै सुधि तब भरिलेहिं दृगन महँ पानि ॥
सुमिरि मातुपितु पुर परिजन अरु भरत सनेह शील सेवकाय ।
होहिं दुखारी प्रभु दायानिधि धीरज धरैं कुऔसर पाय ॥
दुखी देखिकै रघुनन्दन को सीता लषण विकल ह्वै जाहिं ।
जस परछाहीं अरु देही की एकै दशा होत शकनाहिं ॥
दशा देखिसो तिय बंधव की दीनदयाल राम जनपाल ।
कथा पुरानी कहि धीरज दै दुख करि देत दूरि ततकाल ॥
सीता लक्ष्मण सह राघव प्रभु रहे बिराजि पर्ण गृहमाहिं ।
जस इन्द्राणी अरु जयन्त सह बासव बसत देवपुरमाहिं ॥
राम रखावैं सिय भाइहि कस जैसे पलक रखावैं आँखि ।
रामहिं सेवैं सिय लक्ष्मण कस मूरुख यथा देह अभिलाखि ॥
यहि बिधि सुख युत रामचन्द्र प्रभु बनमहँ बसे आय खगराय ।
नसे सर्व दुख बन जीवन के सुर मुनि सकल गये हर्षाय ॥

इतिश्रीबिजयराघवखण्डेअवधकाण्डे श्रीरामचित्रकूटगमन
वर्णनन्नामतृतीयोल्लासः ॥ ३ ॥

श्रीरघुनायक के पायक शुचि दायक सुमति सुगति शुभज्ञान।
होहु सहायक सब लायक तुम अंजनि सुवन वीर हनुमान॥
श्रीरघुनायक यश घायक अघ गावत फिरि तोर बलपाय।
पार करैया यहि नैयाके तुमहीं मोहिं परत दिखराय॥
कथा मनोहर सिय सोहर की सुनि गिरिसुता गईं हर्षाय।
हाथ जोरिकै फिरि बोलत भईं हेप्रभु भक्त बछल मनकाय॥
कथा अगारी की प्यारी अब मोसन कहौ और कछुगाय।
सुनि शिवरानी की बानी शिव भाषन लगे अधिक ललचाय॥
रामचंद्रको बन गौनब प्रिय तुमसन कह्यों यथाविधि गाय।
मंत्री अवधै फिरि आयो जिमि सो अब कथा सुनौ मनलाय॥
पठै रामको इत लौट्यो गुह देख्यो सचिव सहित रथ आय।
लखि निषाद को उर बिषाद करि मंत्री बहुत गयो अकुलाय॥
रामराम सिय अरु लक्ष्मण कहि धरती गिर्यो मूर्च्छाखाय।
घोड़ा हिंकरैं दिशि दक्षिण तन जस बिन पंख पक्षि अकुलाय॥
चरैं न तृण अरु जल पीवैं नाहिं नैनन रहे आँशु बर्साय।
दशा देखि अस प्रभु बाजिन की बहु अकुलाय गयो गुहराय॥
तब धरि धीरज कह निषाद अस देहु बिषाद त्यागि अबभाय।
तुम परमारथ पथ ज्ञाता बुध धीरज धरौ कुऔसर पाय॥
कहि मृदुबानी शिख दैकै बहु बर्बस गहि सुमंतको हाथ।
आनि बिठायो रथ ऊपर तब गति सो कहि न जाति खगनाथ॥
हाँकि सकै ना रथ असक्त अति राम बियोग पीर उर टेढ़ि।
तर्फराहिं हय मग गमनैं नाहिं जोरे मनहुँ मृगा रथ बेढ़ि॥
पाछे चितवैं मग अटकैं फिरि राम बियोग शोग अधिकान।
रामलषण सिय जो भाषै मुख हेरैं हिंकरि ताहि हरियान॥
भोविषाद बश अति निषाद पति दुःखित बाजि सुमंत निहारि।
साथ सारथी के पठये तब अपन बोलाय टहलुआ चारि॥
पठै दूरि कछु गुह लौट्यो फिरि बिरह बिषाद कहा नाजाय।

चले अयोध्या दिशि लैके रथ सेवक महा दुखित अकुलाय ॥
शोचै मंत्री तब हियरे मा रघुवर बिना जियबु धिक्कार ।
आखिर देही यह रैहैना ह्वैहै अवशि एक दिन छार ॥
बिछुरत रामहिं यश लीन्ह्योंना भे अघ अयश धाम ये प्रान ।
कौन हेतु ते तन त्यागत नहिं उर महँ काह पाय लपटान ॥
औसर चूके निर्बुद्धी तैं अजहुँ न जात करेजा फाटि ।
माथा पीटै अरु मींजै कर आनन माहिं लागिगै लाटि ॥
शोचिशोचि कै पछितावै बहु खोई मनहुँ सूम धन राशि ।
बिरद बाँधिकै बड़ योधा जनु भाग्यो समर छाँड़ि यशनाशि ॥
वेद पढ़ैया बिज्ञानी द्विज सम्मत सुष्ठु साधु शुचिजाति ।
मदिरा पीवै जिमि धोखे महँ मंत्री हिय शोच त्यहि भांति ॥
तिया सयानी कुल उत्तमकी पति देवता कर्म मन बानि ।
तजै कर्म वश जस आपन पति तस दुख भयो मंत्रिउर आनि ॥
दृष्टि मंदभे दृगपूरित जल सुनै न कान ज्ञानगो खोय ।
ओंठ सुखाने मुर्भाने मुख हिय महँ रह्यो महादुख गोय ॥
जीव न निकसै क्यहु प्रकार ते अवधि किंवार लाग उरमाहिं ।
लखोजायनहिंतनविवरन अति खगपतिकही जातगतिनाहिं ॥
हानि ग्लानि मन अधिकानी बहु मार्‍यसि मनहुँ माय अरु बाप ।
यमपुर मारग महँ शोचै जस पापी पुरुष धारि उर ताप ॥
बचन न आवै पछितावै हिय देखिहौं अवध काह मैं जाय ।
राम रहित रथ जोइ देखी सोइ सकुची मोहिं बिलोकत हाय ॥
धाय पूंछिहैं जब मोसन सब व्याकुल महा नगर नरनारि ।
उत्तर देहौं तब सबको मैं हिय महँ कठिन बज्र बैठारि ॥
दीन दुखारी महतारी सब पुंछिहैं तिन्हैं बतैहौं काह ।
लक्ष्मण माता जब पुंछिहैं तब कहिहौं कह सँदेश की चाह ॥
धाय आयहै प्रभु माता जब हिय महँ सुत्त सनेह सरसाय ।
सुधि करि बछवा की दौरै अति हुँकरत यथा लवाई गाय ॥

पूंछे उत्तर तेहि देहौं का यह सुख लेब अवध मा जाय ।
पुंछिहैं दुःखित नरनायक जब राम अधीन जियबु ज्यहिहाय ॥
देहौं उत्तर क्यहि मुखते त्यहि आयों कुशल कुवँर पहुंचाय ।
सुनि सँदेश सियराम लषण को तृण सम तजी देह नरराय ॥
छाती फाटत नाहिं चहला जिमि भये वियोग मीत जलक्यार ।
मैं यह जानी अब जियरे मा मोकहँ दुःख दीन कर्तार ॥
यहि विधि शोचत दृग मोचत जल तमसातीर पहूंच्यो आय ।
बिदा निषादन को कीन्ह्यों तब लौटे सकल पायँपरि भाय ॥
मंत्री सकुचत पुर पैठत महँ मारयो मनहुँ विप्र गुरु गाय ।
बैठि गवाँयो दिन बिरवा तर संध्या समय भयो खगराय ॥
पुर महँ पैठ्यो अँधियारे महँ घरमहँ घुस्यो राखि रथ द्वार ।
समाचार जिन सुनि पाये ते धाये छोंड़िछोंड़ि निज कार ॥
रथ पहिंचान्यो हय जान्यो अति व्याकुल रहे महा हेहनाय ।
राम बिरह महँ तन सूखै जस ओला घामपाय गलिजाय ॥
नगर नारिनर कस व्याकुल जस जलके घटे मीन गण भाय ।
दशा यथा विधि सो बर्णत महँ मति सकुचाय मोरि खगराय ॥
सचिव आगमन सुनि कानन सों व्याकुल भई सकल रनिवास ।
भौन भयंकर अति लाग्यो त्यहि मानहुँ कीन परेतन बास ॥
अति विकलानी महरानी सब पूंछैं हाल महा बेहाल ।
ज्वाब न आवत कछु मंत्री को बानी विकल भई खगपाल ॥
सुनै न कानन दृग सूझै नाहिं बूझै कहां अहैं नरराय ।
मंत्रिहि व्याकुल लखि दासी तब कौशल्या गृह गईं लेवाय ॥
नृपहि निहारयो तब मंत्री कस मानहुँ अमी रहित द्विजराज ।
असन बसन बिन परयो भूमितल कछू न राजसाज सों काज ॥
लेय उसासैं जिय शोचै इमि सुरपुर ते जनु गिरे ययाति ।
शोक समान्यो बहु हिरदै महँ जनु जरि पंख परयो सम्पाति ॥
रामराम कहि कछुक मौन गहि पुनि कह सिया लषण अरु राम ।

रामसनेही बैदेही कहि शोचत सुधि सँभारि प्रतियाम॥
दशा देखि अस महराजा की मंत्री कीन दण्ड परणाम।
उठ्यो महीपति अति व्याकुल मति कहौ सुमंत कहां सियराम॥
लियो लायउर नृप मंत्री कहँ बूड़त मिली मनहुँ कछु थाह।
ढिग बिठाय कै पुनि मंत्री को पूंछन लगे हाल नरनाह॥
सखा कुशल कहु प्रिय पुत्रन की हैं कहँ लषण जानकी राम।
बनहिं सिधाये की आये इत तुम्हरे साथ लौटि निजधाम॥
सुनि इमि भाषण नरनायक को मंत्री गयो महा अकुलाय।
शोक बिकल ह्वै पुनि पूंछ्यो नृप कहु सियराम लषण कुशलाय॥
सुमिरि सुमिरि कै उर शोचत नृप राम स्वभाव शील गुण ज्ञान।
राज देइ कै बन दीन्ह्यों मैं तबहुँन भयो जासु मन म्लान॥
प्रान न निकसे सुत बिछुरे अस को जग म्वहिं समान अघमान।
बाम बिधाता भो सबही विधि भावी अहै महा बलवान॥
राम जानकी अरु लक्ष्मण जहँ तहँ पर सखा मोहिं पहुँचाउ।
नातरु चलिबे को चाहत अब प्राण हमार कहौं सतिभाउ॥
सुनि अस बानी महराजा की मंत्री कहत भयो इमि बात।
पण्डित ज्ञानी तुम सबही विधि धीर धुरीण वीर प्रख्यात॥
संगति साधुन की कीन्ह्यों भल ते अस विपति परे घबड़ात।
परे कुसमया के पर्वत जन धीरज धर्म मित्र तियतात॥
दुख सुख जीवन मरणादिक अरु योग वियोग लाभ अरु हानि।
काल कर्मवश ये होवैं प्रभु बर्बस राति दिवस सममानि॥
मूरुख हर्षैं सुखपाये ते आपति परे जायँ घबड़ाय।
धीरज आनै सम जानै द्वउ जे कोउ बुद्धिमान जन भाय॥
अस विचारि कै उर धीरज धरि अब सब शोच देहु बिसराय।
यतन कीजिये वह जाते यह अवध जहाज डूबि जनि जाय॥
तुम हितकारी नृप सबही के अवध जहाज केर कनहार।
धीरज लग्गी कर धरिकै नृप याको खेइ लगाइय पार॥

बसे प्रथम दिन प्रभु तमसापर दुसरे दिवस सुरसरी तीर।
करि नहान अरु नीर पान तहँ सियसह ब्रती रहे द्वउ वीर॥
केवट कीन्ही सेवकाई बहु सो निशि शृंगवेर करि बास।
होत सवेरा झट बटको पय लीन मँगाय राम सहुलास॥
जटा बनाये निज शीशन महँ दोऊ भाय मोद सरसाय।
नाव मँगाई तब केवट ने प्रिया चढ़ाय चढ़े रघुराय॥
धारण करिकै धनुषबाण कर लक्ष्मण चढ़े राम रुख पाय।
व्याकुल लखिकै स्वहिं राघव तब बोले मधुरबचन मुखलाय॥
बारबार गहि पदपंकज कर कह्यो प्रणाम पितासन तात।
बिनय सुनायो समुझायो यह मानै कही मोरि यह बात॥
चिंता रंचक उर आनै ना सब कुशलात मोहिं बनजात।
तुव प्रताप अरु पुण्य धर्म सों स्वपन्यो स्वहिं न दुःख दर्शात॥
पालि सुआयसु तुव नीकी विधि फिरिकै पायँ देखिहौं आय।
चौदह वर्षन के बीतत महँ औसर कछू जानि नहिं जाय॥
पायँन परिपरि करि बिनती बहु दीन्ह्यों सकल माय समुझाय।
तुमका करिबो है वाजिब स्वइ जाते सुखी रहैं नरराय॥
मोरी दिशि ते पदपंकज गहि गुरुते कह्यो सँदेशा जाय।
नृपहि सुझावैं सो मारग ज्यहि देवैं मोर शोच बिसराय॥
प्रजा कुटुंबी पुरबासिन को बिनय हमारि सुनायो तात।
सोई सब विधि हितकारी मम जाते सुखी रहैं नरनाथ॥
भरत भावते के आये पर मोर सँदेश कहब समुझाय।
सुखसह पाल्यो पुर परजा को नीति न तज्यो राजपद पाय॥
सेवा कीन्ह्यों सब मातन की सबको एक तुल्य अनुमानि।
अंत निबाह्यो यहि भायप को वाजिब जानि कर्म मन बानि॥
सेवा सब विधि पितु माता की औ सज्जनन क्यार सत्कार।
नीति धर्मको प्रतिपालब हित एही नृपन केर शृंगार॥
त्यहि बिधि राखब महराजाको कबहुं न करैं शोच ज्यहिम्वार।

यहिते अधिकी अब भाषौं का हौ तुम सब प्रकार हुशियार ॥
कह्यो लक्ष्मण कटुबानी कछु बर्ज्यो तबहिं राम रघुराय ।
मोहिं निहोरयो बहुभाँतिन पुनि दीनि खवाय सौंह निजभाय ॥
यह लरिकाई लषणलालकी कह्यो न तात तातसन जाय ।
असकहि आँखिनमहँ आँशू भरि पुनि रहिमौन गये रघुराय ॥
कहि प्रणाम सिय कहन चह्यो कछु गई सनेह वश्य अकुलाय ।
कंठ गदगदा पुलकावलि तन नैनन गयो अश्रु जलछाय ॥
पाय राम रुख त्यहि औसर पर केवट चल्यो नाव लै पार ।
गमने रघुपति यहि प्रकार बन देख्यों ठाढ़ बज्र उरधार ॥
कहौं आपदा किमि आपनिमैं देखत बनैं पठायों राम ।
लाय सँदेशा सुत प्रीतम कर आयों लौटि जियत यहि ठाम ॥
यह कहि मंत्री रह्यो मौन ह्वै हानि गलानि शोच उरआनि ।
गिरयो धड़ाका नृप धरती पर सुनि कै इमि सुमंत की बानि ॥
लागी उरमहँ बिरहागी बहु जागी अंगअंगप्रति दाह ।
महा मोह मन बढ़ि आवत भो रोवत मारिमारि कै धाह ॥
लोटत बसुधा महँ तलफत बहु मुखते कहिन जात कछु बानि ।
आनन सूख्यो हिय दूख्यो जनु माँजा खाय मीन मतुआनि ॥
अति बिलखानी महरानी सब रोवैं माथ हाथ दै भाय ।
पुरजन परिजन अति व्याकुल सब दशहूदिशा गयो दुखछाय ॥
जाग्यो दुखहू के हियमा दुख रोदन अरु बिलाप सुनि कान ।
भाग्यो धीरज धीरजहू को दशा सो कहि न जाय हरियान ॥
भयो अवध महँ कोलाहल अति रानिन केर रुदन सुनि भाय ।
निशि महँ बनके बहु पाच्छिन पर मानहुँ गिरयो बज्र अरराय ॥
प्राण कंठगत नरनायक भो यथा बिहाल बिना मणि व्याल ।
लही शिथिलता तन इंद्रिन सब जल बिन यथा कमलके जाल ॥
दुखी देखिकै महराजा को शोचन लगी कौशला माय ।
भानुवंशको रबि अथयो अब आवत अंधकार दुख छाय ॥

राम अंब तब उर धीरज धरि बोली बचन समय अनुसार।
हृदय विचारो पति धारो मति धीरज किहे होय निस्तार॥
रामविरह सो बड़सागर यह दर्शत दुख अपार जलधार।
अहैं बिदेशी पुर परिजन सब अवधि जहाज आपु कनहार॥
धीरज धरिये यहि औसर तौ खेय जहाज लगाइय पार।
नातरु स्वामी सांति जानिय यह डूबन चहत सकल परिवार॥
धीरज धरिये जिय समरथ पिय जो यह बिनै मोरि मनमानि।
राम लषण सिय फिरि देखौ दृग मिटै गलानि होय दुख हानि॥
प्रिया बचन मृदु सुनि राजा पुनि चितये दृग उघारि उरगारि।
दीन मलीन मीन तलफत जनु शीतल बारि दीन कोहुँ डारि॥
उर धरि धीरज उठि बैठ्यो नृप कह्यो सुमंत कहां सुत राम।
कहां लक्ष्मण रघुनायक कहँ कहँ प्रिय पुत्रबधू अभिराम॥
व्याकुल विलपत महराजा इमि युग सम भई सिरातिन राति।
शाप जो दीन्ह्यों मुनि अंधक ने शोचे तासु वृत्त सब भाँति॥
कथा सो बरणी कौशल्याते व्याकुल भये कहत इतिहास।
रामचंद्र बिन धिक जीवन जग आखिर एक दिवस तननास॥
राखि सो देहीं मैं करिहौं का कीन्ह्यों ज्यहिं न प्रेम निर्बाह।
बनहिं सिधारे सुत प्यारे अस तबहुँ न तज्यो प्रान की चाह॥
हा रघुनायक सुखदायक मम प्राणअधार पुत्र सुकुमार।
तुम बिन जीवत दिन बीते बहु है म्वहिं बारबार धिरकार॥
हे सिय लक्ष्मण हे सीतापति रघुपति रामभक्त सुखधाम।
हा सुत पितु हित चितचातक के दायक नेहवारि सब याम॥
रामराम कहि पुनःराम कहि औ फिरि रामराम कहि राम।
राम बिरह महँ तन त्यागनकरि त्यहि छन गयो राउ सुरधाम॥
जियन मरण को फल पायो नृप अगड अनेक गयो यशपागि।
जीवत निरख्यो रामचंद्र मुख रामवियोग दीन तन त्यागि॥
शोक विकलह्वै महरानी सब रोवैं शील रूप बल भाखि।

व्याकुल बिलखैं शिर पीटैं बहु धीर न जाय हृदय महँ राखि ॥
रोवैं सेवक अरु दासीगण हाहाकार गयो पुर छाय।
घरघर रोवैं पुरबासी सब हम तजि कहँगयो नरराय ॥
धर्म धुरन्धर धीर बीरबर अथयो आज भानुकुल भानु।
पारको करिहै हम दुखियन को छाँड़्यो बीचधार जलयानु ॥
देहिं केकयी को गारी सब जैं दृगहीन कीन संसार।
राति गुजरिगै सब बिलखत इमि आये मुनी ज्ञान आगार ॥
जानि कुऔसर तबबशिष्ठमुनि कहिकहिबिबिधभाँतिइतिहास।
शोक हटायो सब काहू को करि बिज्ञान भान परकास ॥
तेल नावभरि महराजा को मृतक शरीर दीन धरवाय।
दूत बोलायो समुझायो बहु पहुँचौ बेगि भरत ढिग धाय ॥
मरन महीपति को भाष्यो जनि भूलिहु कतौं काहुसन जाय।
कह्यो भरत ते इतनाहीं तुम पठये गुरु बोलाय दुउभाय ॥
पाय सुआयसु मुनिनायक को धावन चले पौन गति धाय।
नाँघत नदिया नद पर्वत सर भरत समीप पहूंचे जाय ॥
जबते अनरथ आरंभ्यो इत अतिशै अवधपुरीमा भाय।
भरत भावते को तबते नित अशकुन महा परत दिखराय ॥
स्वप्न भयंकर निशि देखैं बहु कोटिक करैं कल्पना जागि।
विप्र जिमावैं पुजवावैं शिव दान अनेक देहिं अनुरागि ॥
माय बाप परिजन भाइन की माँगैं कुशल महेश मनाय।
त्यही समइया के औसर महँ धावन धाय पहूंचे जाय ॥
गुरु अनुशासन सुनि काननसों तुरतै चले गणेश मनाय।
नाँघत सरिता सर पर्वत बन चले समीर वेग हय धाय ॥
शोच समान्यों बहु भरत्थ उर कछु न सोहाय चित्त घबड़ाय।
धाय उड़ाय कै पुर पहुँचैं जनु ऐसी दशा भई खगराय ॥
एक कल्पसम पल बीतै इक यहि विधि भरत नग्र नियराय।
अशकुन देख्यो तहँ आँखिन सों मोसन जौन बरणि ना जाय ॥

काग कुभाँतिन सों करैं तहँ बैठ कुखेत दिखावत हानि ।
कहैं दुर्वचन खर सियार बहु सुनि सुनि भरत बुद्धि घबड़ानि ॥
बाग बाटिका बन सरिता सर शोभा रहित रहे दिखराय ।
शून्य अयोध्यापुर लागै अति बहुभय हृदय रह्यो उपजाय ॥
हाथी घोड़ा मृग पक्षी सब महाउदास देखि नहिं जायँ ।
राम विरह महँ ह्वै व्याकुल जनु बारंबार पछारैं खायँ ॥
महादुखारी नर नारी सब सर्बस दियो सबन जनुहारि ।
भरत सनाका उरखायो लखि गायो जो न जात उरगारि ॥
कछू न बोलैं मुख पुरजन जन माथ नवाय जोहारहिं जाहिं ।
पूंछि सकैं ना कुशल भरत की महाविषाद भयो मनमाहिं ॥
ठाट रहित सी हाटबाट सब लागत जनु उचाट सब ठावँ ।
शोभा हत सो पुर दर्शै सब मानहुँ लगी दशौदिशि दावँ ॥
रविकुल अंबुज के नाशन को चाँदनि सरिस विदित है जौन ।
सुतको आवत सुनि हरषी सो केकयसुता कुमति को भौन ॥
साजि आरती उठि धाई सो लाई भेंटि द्वार सों धाम ।
करिकै आदर बैठायो तहँ जानत नहीं तासु परिणाम ॥
दुःखित देख्यो परिवारिउ सब भरतकुमार बुद्धि आगार ।
मानहुँ पाला ने कीन्ह्यों हति अतिशय कमल बिपिन संहार ॥
अहै केकयी आनंदित इमि जस दवलाय किरातिनि बाम ।
दाहै खग मृग बनबासी सब तैसै भयो अवध महँ काम ॥
सुतहि सशोकित मन मारे लखि पूंछत कुशल मायके माहिं ।
भरत कुशलता बतलाई सब पूंछ्यो कुशल आपु कुलमाहिं ॥
कहाँ हमारो पितु माता सब कहँ सिय राम लषण प्रिय भाय ।
देर न लावहु बतलावहु कहि तिनबिन नाहिं स्वहाय स्वहिं माय ॥
इमि सनेहयुत सुत बाणी सुनि कपट कुटीर नीर भरि नैन ।
भरत श्रवण मन मनहुँ शूल सम बोलत भई पापिनी बैन ॥
बात बनायो सब पुतुआमैं कुबरी चेरि सहायक पाय ।

बीच बिगाख्यो बिधि कारज कछु सुरपति पुरै गये नरराय ॥
बहु बिषाद वश भे भरत्थ तब सुनि केकयी बचन यहिभाँति।
सिंह गर्जना सुनि सहम्यो जनु हाथी हृदय धीर छुटिजाति ॥
तात तात हा तात पुकारत बसुधा गिख्यो भरहरा खाय।
चलत न देखन त्वहिं पायों पितु गो कित मया मोरि बिसराय ॥
मोहिं न सौंप्यो रघुनायक कहँ हे पितु किह्यों कौन अपराध।
मध्य धार महँ कर छोंड़्यो मम पूरि न भई एकहू साध ॥
उठे सँभरिकै धरि धीरज फिरि पूंछन लगे मातु ते हाल।
पिता मरण को कहु कारण कह मोहिं न धीर होत क्यहुकाल ॥
पुत्र बचन सुनि कैकेयी कह बिष जनु भरत चीरि कै घाउ।
कर्म आपनो सब पाहिले ते लागी कहन धारि चित चाउ ॥
भर्तहि भूल्यो पितु मरिबो तब सुनिकै रामचंद्र बन गौन।
जानि आपनो जिय कारण पुनि रहिगे थकित धारिकै मौन ॥
दुखी देखि सुत समुझावति तब नावति मनहुँ जरे पर खार।
शोचन लायक नृप नाहीं सुत जिन बहु कियो सुकृत बिस्तार ॥
लहे जन्मफल सब जीवत महँ अन्तहु गये इन्द्र के धाम।
अस बिचारि जिय दुख छाँड़ौ सब भोगौ सकलराज इतमाम ॥
यह सुनि सहम्यो नृपकुमार बहु पाकेत्तत अँगार जनुलाग।
लेत उसाँसै ताजि आसै सब जिय उत्साह चाह हठि भाग ॥
सबविधि नाश्यो कुल पापिनि याहिं बनै पठाय राम सुखधाम।
हाय जाय नहिं काहि मोसे कछु सबविधिभयो बिधाता बाम ॥
काधौं सूझी यहि दुष्टा को जो अस किह्यसि महाबदकाम।
काहे न मारुयासि म्वाहिं जन्मतमहँ जो यहरही हृदयरुचि आम ॥
पलई सींचे मूल काटि तैं उलचे मीन जियन हित बारि।
टरिजा आँखिन के आगेते अबना मुख देखाउ हत्यारि ॥

षट्पद ॥

हंस वंस अवतंस प्रशंसित पितु दशरथ से।

अकथ महारथ सुकृत सुयश गथ शुचि सत्पथ से॥
शुभ सुभाय शुभ भाय राम रघुराय लषन से।
बंधुतीय मृदु हीय सीय पावन तनमन से॥
तहँ जननीतू जननीभई दुखदा दुर्मति दुचितई।
अब कहौं कहा त्वहिं ऐद्ई दई जननि असनिर्दई॥

जबते तुव मन दुर्बुद्धिनि यह आई कुमति कुगति दातार।
काहे न ह्वैगा खण्ड खण्ड हिय दियो न बज्र डारि कर्तार॥
भई न पीड़ा मुख माँगत बर कीड़ा परि न गये किमिहाय।
रसना कसना जरि पाकी ना दुष्टा देखि तोर अन्याय॥
तुव प्रतीति मन नृप कीन्हीं कस बिधि मति हरी बुढ़ौती काल।
बिधिहु न जानी तियहियकीगति सबबिधि भरी कपटजंजाल॥
सहज सुशीले धर्मवान नृप तियगति सकैं तौन किमि जानि।
जीवजन्तु असको दुनियाँमहँ ज्यहि न पियार रामसुखखानि॥
अहित लागते रघुनायक त्वहिं को तू अहसि सत्य बतलाय।
जोहसि सोहसि मुख कारो करि आँखिन ओट बैठु कहुँजाय॥
राम विरोधी के हियरे ते कीन्ह्यों प्रकट विधाता मोहिं।
अहै पातकी को मोसम अरु काहेक बादि कहौं कछु तोहिं॥
मातु कुटिलता सुनि रिपुहनको कछू न सरै जरै रिस गात।
आई कुबरी त्यहि औसर तहँ ज्यहि मंथरा नाम विख्यात॥
बिबिधआभरणपट साजेतन लखिरिसभर्यो लषणलघुभाय।
महाप्रज्वलित जनु पावक महँ कोह्नूं दीन आनि घृत नाय॥
हन्यो लात यक तकि कूबर पर महि मुहँभरा गिरी महराय।
कूबर टूट्यो शिर फूट्यो अरु मुखते बह्यो रक्त बललाय॥
चिघरि चिघरि कै इमि भाषत्ति भै काह बिगार कीन मैं हाय।
भला करत महँ फलपायों यह निर्दई दई कीन अन्याय॥
नखते शिखलौ लखि खोंटी त्यहि रिपुहन फेरि झोंट गहिहाथ।
लाग घसीटै मुखपीटै बहु वाजिब यही रहै खगनाथ॥

देखि दुर्दशा त्यहि कुबरीके भरत दयानिधि दीन छोंड़ाय।
पुनि चलि तहँ ते कौशल्याके मंदिर माहिं गये द्वउभाय॥
मैल बसन तन मन व्याकुल अति दुर्बल अंगसंग दुखभार।
स्वर्ण कमलकी बरबेली बन हनी तुषार मनहुँ यकबार॥
देखि भरत को उठिधाई तब व्याकुल महा कौशलामाय।
हृदय दुखाई घबड़ाई सी महिमहँ गिरी मूर्च्छा खाय॥
दुखी भरत भे लखि माताको पायँन गिरे देह सुधि भूलि।
मात भ्रात कहँ दिखलाओ म्वहिं नातरु मरौं शूल हियहूलि॥
जनकदुलारी सिय प्यारी कहँ कहँ प्रिय राम लषण द्वउभाय।
नैन पियासे तिन दर्शन बिन मोकहँ बेगि देहु बतलाय॥
काहेक केकयी जग पैदाभै पैदाभई भई किन बांझ।
बंशकलंकी ज्यहिजन्म्यों म्वहिं अयशी अघी भयों कुलमांझ॥
कौनअभागीम्वहिंसमानजग गतिअसि तोरि मातुज्यहिलागि।
इन्द्रधाम पितु रघुनायक बन कारण महीं एक दुर्भागि॥
बाँस बंश महँ मैं पावक सम उपज्यों वृथा धरित्री भार।
मूल शूल अरु दुख दूषण कर है म्वहिं सहसबार धिरकार॥
कोमल बाणी सुनि भरत्थ की माता उठी धीर उरधारि।
पकरि उठाये उरलाये तब नैनन बहत आँशु को बारि॥
माय कौशला सुखपायो बहु आये मनहुँ लौटि फिरि राम।
फेरि शत्रुहन को भेंट्यो गहि भेट्यो हृदय शोक को घाम॥
अति सनेह सों हिय आयो भरि पुलकावली गई तन छाय।
सबकोउ सरहत शुचि स्वभाव लखि है अतिधन्य रामकीमाय॥
भरतहि कनियाँ लै माता तब आँशू पोंछि कहत मृदुबानि।
बछवा धीरज उर धारो अब परिहरि शोक कुओसर जानि॥
हानि ग्लानि को मन आनौ जनि अघटित कालकर्मगति जानि।
दोष देहु जनि सुत काहूको बिधना बाम मोहिं अनुमानि॥
ऐस्यो दुखमहँ म्वहिं ज्यावा ज्यहिं अबहूँ करै तौन धौं काह।

शोक सतावा जैं कौशलपुर बनै पठाय भानुकुल नाह॥
पितु की अज्ञा ते भूषण पट तनते तजे तात रघुराय।
हर्ष शोक कछु उर कीन्ह्यों ना बल्कल बसन लीन तनलाय॥
राग रोष नहिं मन कौनिउँ विधि आनन अति प्रसन्न मुद आनि।
चले भले से बन मारग गहि सबकहँ सबप्रकार सन्मानि॥
सो सुनि सीता सँग लागी तब रही न रामचरण अनुरागि।
पुनि सौमित्रहु उठि धाये सँग गृह पितु मातु प्रेम को त्यागि॥
सबहि नाय शिर रघुनायक तब गमने संग सीय लघुभाय।
राम लषण सिय गे कानन कहँ मैं इत बैठि रहिउँ पछिताय॥
आँखिन आगे यह कौतुक सब भयो सो लख्यों दृष्टि टकलाय।
प्राण अभागे तउ भागे ना रागे देह नेह सरसाय॥
म्वहिं न लाज कछु निज सनेह पर राम समान पुत्र मैं माय।
जीबो मरिबो भल जान्यो नृप मोहिय भयो कुलिश के माय॥
बाणी सुनि कै कौशल्या की भरत समेत सर्व रनिवास।
विलखन लागे सब ब्याकुल ह्वै मानहुँ कीन शोक तहँ बास॥
भरत शत्रुहन दुउ भाई तहँ क्रंदत महा पछारैं खाय।
दशादेखि सो भरि अंकम महँ लीन लगाय कौशला माय॥
बिबिध भाँति सों समुझायो तब भर्तहि भाषि मनोहर बानि।
सुंदर बानी सों निश्छल शुचि बोले भरत जोरि युगपानि॥
माय बाप अरु गुरु मारे ते जो अघ होय कौशला माय।
गाय गोंठ अरु पुर विप्रन को जारे जौन पाप समुहाय॥
मीत महीपति को दीन्हें बिष तिय शिशु बधे होत जो पाप।
कर्म बचन अरु मन संभव ते यावत अहैं पाप उपताप॥
होयँ बिधाता ते पातक म्वहिं जो यह होय मोर मत माय।
झूँठ न रंचक है यामहँ कछु शंकर सौंह कहौं सतिभाय॥
छाँड़ि विष्णु शिव पग सेवा जे भजैं पिशाच भूत बैताल।
देउ बिधाता म्वहिं तिनकी गति जानौं तनिक जो मैं यह हाल॥

स० बेंचहिं बेद जे भेद धरे शठ धर्म दुहें औ गुहें मन दंभा।
पाप पराय कहे दिन जात बने उतपात के जे खल खंभा॥
वेद अबोध भरे छल क्रोध विरोधक बिश्व के दुष्ट अरंभा।
पावहुँ मैं तिनकी गति घोर जो सम्मत मोर है यामहँ अंबा॥

लोभी लंपट अरु लवार जे ताकैं धनपराय परनारि।
करैं न संगति जे साधुन की ठानैं बृथा सबहिं सों रारि॥
जे परमारथ पथ साधैं ना बाधैं वेद पंथ चलि बाम।
नीक न लागै ज्यहि हरि हरयश जायँ न कबहुँ विष्णु शिवधाम॥
भजैं न हरि हर नर देहै धरि करैं न दान संत सन्मान।
देउ महेश्वर म्वहिं तिनकी गति जो मम जान राम बनजान॥
कर्म बचन मन रघुनंदन को मैंहौं दास मातु यह मान।
उर पुरबासी सुखरासी मम जानत प्रीति रीति छल ठान॥
कहि अस बानी दृग पानी ढुरि पुलक शरीर रहे शिरनाय।
जानि स्वामिपद रत निश्छल मत लिये बहोरि लाय उरमाय॥
भरत भावते की बानी शुचि जानि प्रतीति मानि सतिभाय।
कर्म बचन मन तुम रामहिं प्रिय यह कहि दई कौशलामाय॥
तुम्हैं प्राण सम रघुनायक प्रिय रामहिं तुम पियार जस प्रान।
यामहँ मिथ्या कछु नाहीं है मैं सबभाँति कीन अनुमान॥
चुवै चंद्रमा ते चाहै बिष हिमते प्रगट होय बरु आगि।
बारि बिरागी बरु होवै झष रवि बरु देहिं उष्णता त्यागि॥
ज्ञान भयेते बरु मानुष उर होय न मोह आसको नास।
बिमुख न ह्वैहौ तुम राघवते है यह मोहिं सत्य बिश्वास॥
मत तुम्हार अस जे भाषैं जग ते जन महामूढ़ अज्ञान।
लहैं न स्वपन्यो सुख सुंदर गति पावैं अंतकाल यमथान॥
अस कहि माता सुखदाता ने भरतहि लीन हृदय महँ लाय।
बहै थनन ते पय अमृतमय नैनन गयो प्रेम जल छाय॥
व्याकुल विलपत यहिभाँतिन ते बैठे बीति गई सबराति।

वामदेव अरु मुनि वशिष्ठ लै आये सचिव महाजन ख्याति॥
कहि परमारथकी बातैं शुचि भरतहि सीख दीनि मुनिराय।
नहिं यह समया कछु शोचनको मानहुँ मोर बचन मनलाय॥
तात हृदय महँ धरिधीरज अब करिये उचित समय जो आज।
उठे भरतसुनि मुनि आयसुतब सुखसह करनकह्यो सबकाज॥
वेद रीतिते तन राजा को कलजल शोधि सुष्ठु नहवाय।
सजि बिमान शुचि धरि ताही पर दियो बिशाल शाल ओढ़वाय॥
यावत रानी अनुमानी तिन भूपति साथ सती ह्वै जान।
भरत निवाख्यो तिन सबहिन को राखेनि राम दर्श हित प्रान॥
दार भार बहु मलयादिक के अमित अनेक सुगंधे आनि।
चिता बनायो शुचि सरयू तट मानहुँ सुभग स्वर्ग सोपानि॥
दाहक्रिया मुनि करि विधिवत् सब करि अस्नान तिलांजुलिदीनि।
गहि निगमागम अरु पुराण मत पुनि दशगात्र रीति सबकीनि॥
ह्वै विशुद्ध पुनि महिदेवन को दीन्हें धेनु बाजि गज दान।
स्वर्ण सिंहासन आभूषण पट महि धन धाम अन्न अप्रमान॥
दान मान सों संतोषित ह्वै विप्रन पूरि कीनि अभिलाष।
कीनि केकयी सुत पितु क्रिय जस जाय न कही तौन मुखलाख॥
सुदिन शोधि पुनि मुनिनायक तहँ आये मंत्रि महाजन साथ।
राजसभा महँ ह्वै इस्थित तब पठये बोलि भरत द्वउ भ्रात॥
आये पासहि बैठाये मुनि बोले नीति धर्ममय बानि।
कथा प्रथमकी कहि गाई सब जो कछु कीन केकयी रानि॥
नीति धर्म रत अरु सत्यव्रत भाष्यो भूप सुयश भल गाय।
नेह निबाह्यो ज्यहिं राघव कर तजि प्रिय देह गेह समुदाय॥
फिरि स्वभाव गुण रघुनायक को शुचि शीलता कहत मुनिराय।
भये थकित से तन पुलकित से नैनन गयो प्रेम जल छाय॥
फेरि लक्ष्मण अरु सीता की प्रीति बखानि मग्न मुनि ज्ञानि।
भरतहि लागे समुझावन तब दै उपदेश बेश मृदुबानि॥

बड़ी प्रबलहै यह भावी जग धरिये भरत मोर मत माथ ।
हानि लाभ अरु यश अपयशलै जीवन मर्ण सर्ब बिधि हाथ ॥
अस विचारि कै सुत झूठै फिरि काको देय दोष करि रोष ।
शोचन लायक नरनायक नहिं अस जिय जानु आनु सुततोष ॥
शोचन लायक है मूरुख द्विज देवै जौन धर्म निज त्यागि ।
होय विषय रत श्रुति मारग हत जग मर्याद रहित हतभागि ॥
नीति न जानै नृप शोचिय सो करै न जौन प्रजा प्रतिपाल ।
धनी वैश्य ह्वै करै सूमता शोचन योग तौन सबकाल ॥
पादज शोचिय द्विज निंदक जो वर्वर चहै आपनो मान ।
नारी शोचिय पति बंचक पुनि सुठि स्वैरिणी कुटिल अज्ञान ॥
निज ब्रत छाँड़ै बटु शोचिय सो गुरु आदेश करै नहिं कान ।
गृही शोचिये जो जड़ता बश त्यागै धर्म कर्म को ठान ॥
यती शोचिये निर्विचार जो बिगत विराग युक्त जगराग ।
शोचन लायक वैषानस ज्यहि भावै भोग योग तप त्याग ॥
चुगुल अकारण रिस कर्ता जन द्रोही माय बाप गुरु भाय ।
परअपकारी को शोचिय सुत पोषै जौन आपनी काय ॥
शोचन लायक वह सबही बिधि छलतजि जो न भजै भगवान ।
दुष्ट निर्दयी जन शोचिय मन मानिय मोर कथन परमान ॥
शोचन लायक नहिं दशरथ नृप प्रकट प्रभाव जासु जगमाहिं ।
भयो न जासमहै औसर यहि आगे होनहार कोउ नाहिं ॥
विष्णु बिधाता शिव दिग्पाति लै गावैं सबै जासु गुण माल ।
भाग्यमानजननृपदशरथसम त्रिभुवन तीनिकाल नहिं लाल ॥
तात बतावहु क्यहि प्रकार कोउ मुखते करै बड़ाई तासु ।
राम लषण तुम रिपुघायक सम लायक पुत्र प्रतिष्ठित जासु ॥
सब बिधि भूपति बड़भागी सो मिथ्या शोच करौ त्यहि लागि ।
मानि सुसम्मत मम परिहरि दुख नृप आदेश करौ मुदपागि ॥
दियो राज पद नृप तुमहीं कहँ सो पितु बचन फुरावहु तात ।

तज्यो राम [illegible] ज्यहि दैनन लगि राम वियोग तज्यो निजगात ॥
वचन [illegible] जस भूपति कहँ तस ना हते पियारे प्रान ।
त्यहिते तुमका समुझाइत है सुत पितु बचन करौ परमान ॥
शिरधरि पालौ नृप आयसु को तुमकहँ सब प्रकार कल्यान ।
पितु अज्ञा ते भृगुनायक ने मारी मातु लोक सबजान ॥
दियो जवानी सुत ययाति को पितु आदेश भयो नहिं पाप ।
सब विधि पुत्रहि है वाजिब यह राखै पिता रजायसु थाप ॥
उचित अनूचित को बिचार तजि जे पितु बचन करैं प्रतिपाल ।
बसैं ते मघवा पुर आनँद सह भोगैं सुयश सौख्य सबकाल ॥
अवशि फुरावहु नृप बानी को पालौ प्रजा शोक बिसराय ।
तोषित ह्वैहै नृप सुरपुर महँ तुम्हरो सुयश जाय जगछाय ॥
सबको सम्मत श्रुति भाषै यह ज्यहि पितु देय सो पावै राज ।
करौ राज सो संकोचै तजि मानहुँ मोर बचन यह आज ॥
राम जानकी सुख पैहैं सुनि कैहैं नाहिं अयोग्य मतिमान ।
कौशल्यादिक महतारी सब होवैं प्रजा सुःख सुखवान ॥
भेद तुम्हारो सब आछी विधि जानैं रामचन्द्र भगवान ।
सबप्रकार सो भल मानैं तुव आनैं हृदय माहिं नहिं आन ॥
श्री रघुनायक के आये पर सेवा किह्यो सौंपि कै राज ।
तुम कहँ वाजिब अब याही है करिये समय सारिस सुतकाज ॥
कह्यो सुमंतादिक मंत्रिन तब कीजै गुरु निदेश प्रतिपाल ।
आये रघुपति के वाजिब जस तब तस किह्यो समय समलाल ॥
कह कौशल्या धरि धीरज तब आयसु पूत पिता गुरुक्यार ।
हित गहि करिये आदरिये सो धरिये माथ मानि सुबिचार ॥
जानि कालगति परिहरिये दुख संशय शोच पोच उरडारि ।
आनि सयानी नृप बानी को पूरण करहु प्रजा दुखटारि ॥
बन रघुनायक नरनायक दिवि तुम यहिभाँति तात कदराव ।
प्रजा कुटुम्बी अरु मंत्रीगण सब अवलंब तुम्हारहि पाव ॥

काल कठिनता अनुशोचन करि सब बिधि बाम बिधातहि पाय।
धीरज धरिये परिहरिये दुख करिये उचित मातु बलिजाय॥
गुरु को आयसु मत मंत्रिन को मलय समान हरत उरताप।
इमि मृदुबानी सुनि माता की लागे भरत विचारन आप॥
अतिशै व्याकुल भे हिरदै महँ दशा सो कहि न जाय खगराय।
अंबुज नैनन ते आँशू जल ढुरि ढुरि गिरत हृदय पर आय॥
विरहा अंकुर उर जामें नव सींचत तिन्हैं मनहुँ लवलाय।
सोगति देखत त्यहि औसर पर बिसरी सबहि देह सुधिभाय॥
शुचि सनेह की मर्यादा बर भरतहि सब प्रशंसि सन्मानि।
धन्यधन्य कहि यह भाषत भे तुम हरिभक्त कर्म मन बानि॥
धर्मधुरन्धर उर धीरजधरि सबहि निहोरि जोरि द्वउ हाथ।
बोरि सुधामहँ शुचि बानी जनु उत्तर सबहि देत नयसाथ॥
नीक सिखापन स्वाहिं दीन्ह्यो गुरु सम्मत प्रजा मंत्रि सबक्यार।
तामहँ आयसु फिरि माता को चाहिय अवशि करन शिरधारि॥
स्वामि मित्र गुरु पितु माता की मानिय बानि सदा भलजानि।
उचित अनुचित के शोचे ते धर्म्मौ जाय होय हित हानि।
देहु शुद्ध सिख सबकोई तुम जाके किहे मोर भल होय॥
यद्यपि आछे यह समुझतहों तद्यपि हिये तोष नाहिं होय।
अब सब विनती सुनि लीजै मम भाषौं यथा बुद्धि अरु ज्ञान॥
देहु सिखापन मम लायक फिरि जामहँ होय मोर कल्यान।
उतर देति हौं मैं औसर सम सबकोइ छमा करौ अपराधु।
दुखी अयानन के औगुण गुण दूषण मनै गनै नाहिं साधु॥
देवलोक पितु सिय राघव वन मोसन कह्यो करन को राज।
कैतौ यहि ते हित जानहुँ मम कै आपनो सिधारन काज॥
सियपति सेवा हित हमरो यह गयो सो मातु दुष्टता माहिं।
मैं अनुमाना मन जाना यह आन उपाय मोर हित नाहिं॥
राम लषण सिय पद देखे बिन राज समाज तुच्छ कह आय।

या महँ अनुचित जो भाषौं कछु म्वहिं समुझाय कहहिं मुनिराय ॥
बादि वसन बिन आभूषण बहु ब्रह्म बिचार विरति बिनबादि ।
बादि भोग सुख सब रोगीकहँ बिन हरिभक्ति बादि जपआदि ॥
बादि जीव बिन जस देही यह तिमि मम सबै बादि बिनुराम ।
जाहुँ रामपहँ यह आयसु दै मोकहँ सबहि देहु विश्राम ॥
मोरि भलाई है याही महँ इतना कहा लेव मम मानि ।
म्वहिं राजा करि भल चाहौ निज यह सब मृषा मोहकी बानि ॥
सुत कैकेयी दुख देयी को दुर्मति राम विमुख गत लाज ।
तुम अयानता बश चाहौ सुख म्वहिं से अधम भूप के राज ॥
सांचु बखानौ मनमानौ सब चाहिय धर्म्मशील नरराय ।
राज जबरई जब देहौ म्वहिं तब यह रसा रसातल जाय ॥
म्वहिं सम पापी को दुनियाँ महँ ज्यहि लगि राम सीय सहताप ।
नृप रघुनायक कहँ काननदै बिछुरत गये देवपुर आप ॥
मैं शठ कारण सब अनर्थ को बातैं सुनौं बैठि धरि ध्यान ।
रामचंद्र बिन लखि सूनो घर जग उपहास सहत ये प्रान ॥
जग प्रपंच अरु बिषय ब्याधि ते भिन्न दिखात तात श्रीराम ।
भोग भूति महँ दरशावब रुचि यह लालची नृपनको काम ॥
उर कठिनाई कहौं कहाँलग डार्यो निदरि बज्र ज्यहिं हाय ।
राम बिरह सुनि गुनि कारण निज भयो न टूक टूक धिकखाय ॥
कारज कठिनो है कारण ते यामहँ रंच दोष नहिं मोर ।
बज्र हाड़ अरु पाथरहू ते लोहा अति कठोर चहुँकोर ॥
कैकेयी ते तन उतपति यह तामहँ नीच अभागे प्रान ।
अति अनुरागे सुखपागे ये जागे काह पाय अनुमान ॥
लगे प्राणप्रिय प्रिय बिछुरे जो तौ अब परत मोहिं असजानि ।
देखिबे सुनिबे अरु आगे बहु जननी दियो ठान स्वइ ठानि ॥
राम लक्ष्मण अरु सीता पर कीन सनेह दीन बनबास ।
पतिहित कीन्ह्यों देवलोक दै सबकी सविधि पुरायो आस ॥

आपु विधवपन अरु अपयश लै दीन्ह्यों प्रजहि शोक परिणाम।
मोहिं राज अरु सुखकीरति दै सबकर कियो केकयी काम॥
यहि ते बढ़िकै भल हमार अब ह्वैहै काह देउ बतलाय।
राज देन हित तुम ताहू पर सबकोइ रहे युक्ति ठहराय॥
जन्मि केकयी के पेटे ते मोकहँ कछु अयोग्य यह नाहिं।
मोरि बनाई सब बिधिही ने तुम कत लगे भलाई माहिं॥
इक ग्रह गाँसो द्वितिय बातवश तापर दयो बीछिने मारि।
ताहि पियाइय फिरि मदिरा जो ताकी दवा कहौ निर्द्धारि॥
केकयि सुतकहँ जग वाजिब जो सो विधि चतुर मोहिं रचिदीनि।
राम भाय लघु सुत दशरथ के यह विधि बृथा बड़ाई कीनि॥
कहौ कढ़ावन तुम टीका सब सबकहँ नीक रायपद राज।
देउँज्वाबक्यहिविधिक्यहि२ कहँसबकोउकहौयथारुचिआज॥
दुष्टा माता अरु मोकहँ तजि को अस कही नीक इन कीन।
अनुचित यामहँ जो भाषौं कछु तौ तस कहौ सकल परबीन॥
म्वहिंबिनकोअस सचराचरमहँ ज्यहिंसियरामप्राणप्रियनाहिं।
मैं अस अनरथ को कारण खल ज्यहि हित लागि राम बनजाहिं॥
बड़ी हानि महँ तुम सबही को मानहुँ यही एक बड़लाहु।
मोर अदिन हैं सबभाँतिंन ते दोष न देउँ धोष परिकाहु॥
प्रेम शीलता अरु संशय वश है सब उचित कहौ सबजौन।
यद्यपि जानौं अनुमानौं अस तद्यपि सुनौं समय समतौन॥
माय कौशला जिय सीधी बहु मोपर अधिक प्रेम तिनक्यार।
मोरि दीनता लखि स्वभाव वश भाषैं वचन राखि मम प्यार॥
गुरु बिवेक निधि जग जानत सब जिनकर बदर सरिस संसार।
साज तिलक कर तिन साज्यो म्वहिं भे सब सहित बाम कर्तार॥
राम जानकिहि तजि दुनियाँमहँ कोउ न कही मोर मतनाहिं।
सो सब सुनिहौं अरु सहिहौं मैं अंतहु कीच पानि ज्यहिठाहिं॥
नीच कहे कर डर नाहीं म्वहिं ना परलोक शोच को नाम।

दुस्सह दावा बड़ एकै उर म्वहिं लगि दुखी भये सिय राम ॥
जन्म धरे को जग जीवन को पायो लाभ लक्ष्मण भाय।
नेह छाँड़िकै सब काहू को रहिगे रामचरण लवलाय ॥
रामचंद्र के बन जैबे हित भयो हमार जन्म जगमाहिं।
का पछिताये ते झूठै अब ह्वैहै जानि परत कछु नाहिं ॥
कठिनिदीनता मैं आपनिअब मतिसमकह्यों सबहिसमुझाय।
रामचंद्र के पद देखे बिन जिय की जरनि जाय नहिं भाय ॥

स० जानाहिंको जियकीबिनुराम न जाहुँगोधाम औकामकेनेरे।
मोरि बेगारि दियो सबमातु कहाअब आप सबै म्वहिं घेरे ॥
मोमन जोप्रन सो सुनियेगुरु जाहुँ बनै उठिहोत सबेरे।
प्रानतजौं कि भजौंरघुबीरहि नीर पियों न बिना मुखहेरे ॥

यद्यपि अनभल अपराधी मैं भई उपाधि व्याधि ममलागि।
शरण सामुहें लखि तद्यपि म्वहिं कबौं न देहिं दयानिधित्यागि ॥
सीधे जियके रघुनायक प्रभु शील सकोच दया के धाम।
कीन न अनभल जिन बैरिहु को मैं शिशु दास यदपिहौंबाम ॥
भला मानि मम तुम पंचौ अब देहु अशीष सीख सुखपाय।
मानि बिनै मम दास जानि ज्यहि आवैं फेरि अवध रघुराय ॥
यद्यपि जन्म्यों मैं कुमातु ते सदा सदोष अज्ञ मति नास।
अपन जानिकै परिहरिहैं ना मोरे हृदय स्वामि बिश्वास ॥
सबहि सुहानी सुख बानी यह जो कछु कही भरत अनुरागि।
दागे बिरहा दुख सबरे जनु परे सबीज मंत्र सुनि जागि ॥
माता मंत्री पुरबासी गुरु गे सब नेह भाय अकुलाय।
करैं बड़ाई सब भरतै की जनु यह राम प्रेम तनु आय ॥
अहो प्राणसम तुम रामहिं प्रिय काहे न कहौ तात अस बात।
धन्य तुम्हारी बर बुद्धीको होइहि सुयश जक्त बिख्यात ॥
अपनी जड़ताते पामर जो तुम्हैं सुगाय मातु मत माहिं।
कोटि जन्म लगि सो दुर्मति शठ पावै सुगति सुःख कहुँ नाहिं ॥

गहै न कबहूं मणि धोख्यो महँ औगुण पाप सांप के भाय।
दूरि बहावै बरु दारिद दुख जहरै हरै करै शुचि काय॥
अवशि रामके ढिग चलिये सब सम्मत भला भरत यह कीन।
बूड़त सब कहँ दुख सागर महँ तुम यह तात सहारा दीन॥
खुशी समानी बहु सब के मन गिरिजा सो न बखानी जाय।
जस पावस महँ सुनि बारिद धुनि चातक मोर जायँ हर्षाय॥
चलब सबेरे यह निश्चय करि सबकहँ भरत प्राणप्रिय लाग।
आनँद छायो मन सबही के लागे सबहि मनावन भाग॥
मुनि पद बंदनकरि नीकी बिधि पुनि सब भर्तहि माथ नवाय।
बिदा माँगिकै गे निज निज घर तन मन रहे भरत गुण गाय॥
परी न निद्रा निशि काहू कहँ शोच अनेक रहे उर छाय।
करैं तयारी सब चलिबे की निजनिज धाम काम बिसराय॥
धाम रखैबे हित राखैं ज्यहि तन मन सूखि जाय सो भाय।
गयो चढ़ावा जनु शूली पर देखा को न चहै रघुराय॥
जरै बरै सो सुख संपति घर हित सुत जाय माय पितु भाय।
होत सामुहे प्रभु पायँनके करै न जो सहाय मन लाय॥
घर घर साजीं असवारी बहु रथ बाहली बाजि गजराज।
चलब सबेरे को निश्चय करि लागे करन यथा रुचि साज॥
भरत जाय घर उर शोचे अस यावत सदन सैन समुदाय।
नगर खजाना गज बाजी लै सब संपदा राम कै आय॥
याहि रखाये बिन ऐस्यहि जो मैं चलि देउँ नीक तौ नाहिं।
अयशी ह्वैहौं फिरि पाछे कहँ लैहौं पाप भार शिरमाहिं॥
करै जो सेवक हित स्वामी को दूषण कोटि देय किन कोय।
यशी कहावै सो दुनियाँ महँ स्वपन्यहुँ ताहि कलंक न होय॥
अस बिचारिकै शुचि सेवकगण लीन बोलाय भरत त्यहिकाल।
धर्म आपनो जिन स्वपन्यो महँ कबहुँ न तजा कोटि जंजाल॥
कहि सब मर्मौ अरु धर्मौ निज जो ज्याहि योग्य तहां सो राखि।

आपु पधारे प्रभु माता ढिग परसे चरण हरण दुख साखि ॥
जानि दुखारी महतारी सब अति मतिमान भरत हरियान ।
कह्यो सजावन को शिविका शुचि सुंदर सुखद सुखासनयान ॥
चक चकईइव पुरनारी नर चलिबो प्रात जानि हर्षान ।
भयो सबेरा निशि जागत सब भरत बुलाय मंत्रि मतिमान ॥
कह्यो तिलक कीयत सामा सब साथै लेहु देहु जनि छाँड़ि ।
श्रीरघुनायक कहँ बनहीं महँ देहैं गुरू राज्य सुख माँड़ि ॥
चलौ बेगिही अब बिलँबौ ना सुनि अस मंत्रि मोद उपजाय ।
देर न लाये उठिधाये सब गज रथ बाजि लीन सजवाय ॥
श्री गुरुपत्नी अरुंधती सह सामा हवन केरि धरि साथ ।
भजि रघुनंदन चढ़ि स्यंदन पर प्रथम पयान कीन मुनिनाथ ॥
अमित सवारिन पर चढ़ि चढ़ि पुनि द्विज सब चले तेजतपरासि ।
सजि सजि यानन पुरबासी सब गमने चित्रकूट मगखाँसि ॥
सुभग पालकिन पर चढ़ि चढ़ि कै रानी सकल चलीं हर्षाय ।
राम दरश के अभिलाषी सब दासी दास चले सुखपाय ॥
नगर सौंपि कै रखवारन को सबहि चलाय सैन समुदाय ।
सुमिरि राम सिय पद पंकज रज आपहु चले भरत द्वउभाय ॥
राम दरश हित नर नारी सब गमने क्यहिप्रकार खगराय ।
मानहुँ हाथिनी अरु हाथीगण चले तड़ाग ओर समुहाय ॥
समुझि हृदयमहँ सिय राघवबन सानुज भरत पयादेहिजायँ ।
शुचि सनेह लखि अनुरागे जन कहि ना सकैं तकैं अकुलायँ ॥
त्यागे सबहिन हय हाथी रथ लागे चलन पयादे पायँ ।
जाय समीपै निजडोली धरि बोली तबहिं कौशला माय ॥
चढ़ौ तात रथ महतारी बलि होइहि दुखी सकल परिवार ।
तुम्हरे चलिबे ते चलिहैं सब तन पर सहै महादुख भार ॥
मगके लायक कोउ नाहीं है मानहुँ कहा कहत जो माय ।
धरि शिर आयसु तब माताको रथ चढ़ि चलत भये द्वउभाय ॥

प्रथम बसेरा भो तमसा पर गोमति तीर दूसरो बास।
फलाहार करि एक बार सब प्रभुके हेत करत उपवास॥
चले सबेरे सई तीर बसि शृंगवेरपुर सब नियरान।
समाचार सुनि तब निषादपति सहित विषाद करत अनुमान॥
जायँ भरत बन क्यहि कारन ते है कछु कपट भाव मन माहिं।
होतन जी महँ कुटिलाई जो तौ कत लिये सैन सँगजाहिं॥
जानत भ्राता सह रामहिं हति सुख सह करौं अकण्टक राज।
भरत न आनी राजनीति उर तब कलंक अब जीव अकाज॥
सकल सुरासुर चढ़ि आवैं तौ जीति को सकै राम संग्राम।
इनकी गिन्ती किन बीरनमहँ आखिर फेरि बाजिहैं बाम॥
करैं भरत अस तौ अचरज का नहिं विषबेलि अमीफल लाग।
महूं रामजन तौ दृढ़ता गहि देखराइहौं आज अनुराग॥
अस बिचारिगुहनिजज्ञातिनसनकह्योकि सजगहोहुसबभाय।
बोरहु नौका हथबाँसहु सब घाटहु धायलेहु रोकवाय॥
घाट रोंकि सब खबरदार ह्वै ठाटहु समर मरणके ठाट।
भरत सामुहें ह्वै आयुध लै गाँसौ गंगघाटकी बाट॥
रणमहँ जूझब पुनि गंगा तट स्वामी काज सुऔसर पाय।
आखिर इक दिन क्षणभंगी तन ऐस्यहु जाय अकारथभाय॥
भाय भरत नृप मैं सेवक लघु पाइय ऐसि मौत क्यहुँ नाहिं।
स्वामि काज लगि रण करिहौं मैं लेहौं यश अमोल जग माहिं॥
राम निहोरे तजि प्राणन कहँ मोद समेत जाउँ सुरधाम।
है मुद मोदक मस्दूनौ कर बीरन माहिं जाय गिनि नाम॥
जाकी लेखा नहिं साधुन महँ रेखा नहीं रामजन माहिं।
वृथा बियानी सुत माता अस जीवत ताहि बादिदिनजाहिं॥
तजि विषाद इमि तब निषादपति सबके हियबढ़ायउतसाह।
सुमिरि तुरंतै रघुनंदन पद माँग्यो तर्कस धनुष सनाह॥
साजहु सामा सब लरिबे की भाइहु पाय रजायसु म्वार।

उड़ि उड़ि जूझौ यहि गंगा तट सहजे उतरि जाहु भवपार॥
ऐसी समया फिरि पैहौ ना कोउन जाहु हृदय कदराय।
भले नाथ कहि इक एकनको कर्षा लगे सुनावन गाय॥
माथ नायकै गुह राजाको चलिभे सकल शूर हर्षाय।
जिन कहँ लरिबो प्रिय लागै अति जागै नहीं तनक भयभाय॥
सुमिरि रामकी पद पंकज रज चाप चढ़ाय बाँधि कटिभाथ।
पहिरि अँगुरी शिर कूंड़ी धरि फरसा बांस शेल लैहाथ॥
खड्ग फिरावन महँ चातुर इक कूदैं गगन माहिं फहराय।
आपन आपन सजिबाना इमि गुह रावतहि जोहारहिं जाय॥
लरिबे लायक लखि बीरन कहँ लैलै नाम कीन सन्मान।
पुनि रघुनंदन को सुमिरण करि लाग्यो करन बीरता ठान॥
भाइहु धोखा मन लावो जनि है यहि समय मोर बड़काम।
सुनि अस रोषित ह्वै बोले भट लावहु जनि अधीर को नाम॥
नाथ भरोसा तुव बिक्रमको राम प्रताप हृदय महँ धारि।
बिनु भट सैना अरु बाहन बिन करिबे आजु युद्ध ललकारि॥
जीवत पाछे पग धरिबे ना करिबे रुण्ड मुण्ड मय भूमि।
लख्यो तमाशा तुम संगर महँ लरिबे आज प्रान तन झूमि॥
गोल आपनी गुह नीकी लखि कह्यो बजाव जुझाऊ बाज।
इतना कहतै दिशि बायें महँ काहू छींकि दीन खगराज॥
भाषनलागे तब आपुस महँ सबरे हृदय शंक उपजाय।
शकुन बिचारौ तौ देखौ गुनि ह्वैहै हारि जीति कहभाय॥
यहसुनि बुढ़वा इक भाषतभो शकुन बिचारि मोद उरधारि।
छींक सामुहें यह भाषत है भरतहि मिलौ होय नहिं रारि॥
कहै शकुन अस नहिं विग्रह कछु रामहिं भरत मनावनजाहिं।
सुनि गुह कह्यो कि भल बुढ़वा कह सहसा कि है मूढ़पछिताहिं॥
भरत स्वभाव शील जाने बिन कीन्हें रारि होय बड़िहानि।
त्यहिते सम्मत है याही भल भरतहि मिलौ प्रथम हितमानि॥

रोंको घाटहि समिटि बीर सब मैं अब भेद लेउँ तहँ जाय।
शत्रु मित्र अरु लखि मध्यम गति करिबे तस उपाय तबभाय॥
सहजे जानब हित स्वभाव सब छिपै न बैर प्रीति की बात।
भेंट सँजोवन गुह लागे तब खग मृग कंद मूल फलपात॥
पढ़िना मछरी बहुलाइत ते चले कहार भार धरि कांध।
सकल साज सजि चले मिलनको पाये शकुन सुमंगलसाध॥
नाम आपनो कहि दूरिहिते कीन्ह निषाद मुनिहिं परणाम।
जानि रामजन शुभआशिषदै भरतहि कह्योमुनय मतिधाम॥
राम सखा सुनि रथऊपर ते हरबर उतरि परे द्वउभाय।
नाम ग्राम गुह निज जातिहिकहि कीन्ह जोहार माथमहिनाय॥
करत दण्डवत त्यहि देख्यो तब लीन्ह्यों भरत धाय उरलाय।
भाय लक्ष्मण सों भेंटे जनु प्रेम न हियसमाय खगराय॥
मिले भरत त्यहि अति सनेह सों सरहैं लोग देखि गुहभाग।
धन्य धन्य धुनि सुनि मंगल मय सुरभरिकैं सुमन सहराग॥
लोक वेद महँ सब भाँतिन ते जाकी नीच योनि परमान।
और कहांलग बतलाओंकहिज्यहि छुइ सकल करतअसनान॥
त्यहि लघु भैया रघुरैयाके भुज भरि हृदय माहिं लपटाय।
मिलतप्रेमयुत अतिपुलकित तनुदशासो कहिनजायखगराय॥
यहौ आश्चरंज कछु नाहीं है जे कहि राम राम जमुहायँ।
सत्य बखानौ प्रिय जानौ अस तिनहिं न पापपुंज समुहायँ॥
यहितौ सीतापति लाये उर पावन कीन वंश परिवार॥
युगयुग उज्ज्वलयशचलिहै जग धनिज्यहिकोषि लीनअवतार॥
परे गंग महँ क्रमनाशा जल त्यहि को कहौ करै नहिंपान।
लह्यो ब्रह्मपद बालमीक मुनि उलटा नाम जपे जगजान॥
भील यमन जड़ श्वपचादिक खल कोल किरात नीच जनजात।
राम नाम कहि त्यउ पावन ह्वै जग महँ भये परम विख्यात॥
युग युग कीरति चलि आई यह काहि न दीनि बड़ाई राम।

यामहँअचरज कछु नाहीं है है विख्यात जगत महँ आम ॥

स० भल भोग विभूति भरे पै भरे भव भीति अनीति हरे पै हरे।
सुख सिद्धि समृद्धि सुबुद्धिहिदै द्विज बंदि अनंद करे पै करे ॥
दुख दूषण दारिद दीनता दंभ दुराशहि दौरि दरे पै दरे।
शुचि भाव कुभाव कुआलसहू महँ राम कहै सो तरे पै तरे ॥

यहि बिधि महिमा रामनाम की मोद समेत रहे सुरगाय।
अवध निवासी त्यहि कानन सुनि मन गुनि हृदय रहे हर्षाय ॥
राम सखहि मिलि भरत प्रेम सह पूंछ्यो कुशल क्षेम लवलाय।
नेह शीलता लखि भरत्थ की दिय गुह देह दशा बिसराय ॥

षट्पद ॥

बढ्यो मोद मन माहिं हृदय संकोच समान्यो।
यकटक रह्यो निहारि भरत तन नेह अघान्यो ॥
धरि धीरज पद बंदि अनंदित विनय सुनाई।
पद पंकज रज देखि भई मम कुशल भलाई ॥
म्वहिंकुलसमेतपावनकियो जानिदासदर्शनादियो।
दुखदोषदरिद्रहिदारिदियोजगमहँनिजयशकरिलियो ॥

समुझि हमारी कुल करणी को महिमा आप केरि जियजोय।
भजै न जो कोउ रघुनन्दन पद सब बिधि छली जगत महँ सोय ॥
सब विधि बाहर लोक वेदते कपटी कायर कुमति कुजाति।
जबते आपन जन कीन्ह्यों प्रभु तबते भयों भुवन महँ ख्याति ॥
देखि प्रीति शुचिअरु बिन्ती सुनि मिले बहोरि लषण लघुभाय।
नाम आपनो पुनि मुखते कहि रानी सकल जोहारी जाय ॥
जानि लषण सम आशीषें त्यहि जीवहु सुखी व्रषे सौलाख।
सब दिन दाया रघुराया की युगयुग चलै सुयश की शाख ॥
भये सुखारी पुर नारी नर गुहै निहारि लषण की नायँ।
कहहिं जियन को फल पायो यहिं भेंट्यो राम भाय हिय लाय ॥
भागि बड़ाई सुनि आपनि गुह सबहि लेवाय चल्यो हर्षाय।

आनँद मंगल वहि औसर को मोसन कहि न जाय खगराय॥
आपन टहलू सनकारे सब धाये तौन स्वामि रुखपाय।
घर अरु तरुतर सर बागनमहँ सुंदर बास बनाये जाय॥
लख्यो भरत जब शृंगवेर पुर भो तब शिथिल नेह वश गात।
कंठ गदगदा पुलकावलि भलि मुखते कहि न जात कछु बात॥
धरि गुह रावत के कांधे कर मग महँ चले जात दियलाग।
ताकी उपमा बतलावत कबि जनु तनु धरे बिनै अनुराग॥
यहि बिधि सेना सह केकयिसुत पहुँचे गंग निकट शुचिठाम।
रामघाट कहँ अभिवादन करि भे मन मगन मिले जनुराम॥
माथ नवावैं पुरबासी सब मुदित ब्रह्म मय वारि निहारि।
माँगैं मज्जन करि सुंदर बर रघुबर पगन प्रीति अधिकारि॥
कह्यो भरत तब हाथ जोरिकै हे सुरसरी बिमल तव रेनु।
दोष बिघायक सुखदायक सुठि सेवक हेतु सदा सुर धेनु॥
हाथ जोरिकै बर माँगौं यह सहज सनेह राम पद माहिं।
पुरवहु आशा निज सेवककी तुमसन छिपी बात कछु नाहिं॥

स० हे अघभंगिनी देवतरंगिनि सेवत ते सबही सुखदैया।
बंदतहौं खहिं बारहिं बार उदार सुकीरति है तुव मैया॥
मोर मनोरथ पूरणकै दुख दूरि करै लखिकै कुसमैया।
मानि बिनै मम कानन ते फिरि आवहिं गेह मेरे दुउभैया॥

यहिबिधि मज्जन करि केकयि सुत पुनि मुनिराय निदेशहिपाय।
मातु नहानी जब जानी सब तब डेरा कहँ चले लिवाय॥
जहँ तहँ डेरा किय लोगनने लीन्ह्यों भरत खोज सब क्यार।
गुरुसेवाकरि पुनि आयसुलै गे कौशला निकट दुउ बार॥
दाबि दाबि पग मृदुबानी कहि वहु आदरी भरत सब माय।
सेवा मातनकी भाइहिदै आप निषाद लीन बोलवाय॥
चले सखाकर दै आपन कर शिथिल शरीर धीर बिसराय।
प्रेम भायसों कहि पूंछत तब सो थल मित्र देहु दिखलाय॥

राम लषण सिय निशिसोये जहँ देखहुँ तौन ठाम दृग लाय।
रही यहीकी रुचिहीकी अब जीकी जरनिजाय कछु भाय॥
भरत भावतेकी बानी सुनि भयो निषादनाथ सबिषाद।
गयो भरतको लै वाही थल जहँ पर बसे राम उरगाद॥
अहै शिंशिपा तरु पावन तहँ त्यहितर राम कीन बिश्राम।
भरत सहोदर अति सनेह युत कीन्ह्यों देखि दण्ड परणाम॥
देखि मनोहर कुश साथरि कहँ कीन प्रणाम प्रदक्षिण लाय।
दृगन लगाई पग पावन रज बनैन कहत प्रीति अधिकाय॥
सुबरण बुंदा दुइ चारिक लखि राखे शीश सीय समजानि।
उर गलानि करि दृगन पानि भरि गुहसन कहत मनोहर बानि॥
सीय बिरहरत द्युति शोभाहत यथा मलीन अवध नरनारि।
पिता जनककी जग समता नहिं करतल योग भोग ज्यहि चारि॥
श्वशुर भानुकुल रबि कौशलपति जाहि सिहात सदा सुरराय।
स्वामी रघुपति सम जाके पति जगज्यहि दिये भूति अधिकाय॥
सती तियन महँ अग्ररेख सिय ताकी सुभग साथरी देखि।
हहरि न फाट्यो यह हिरदै मम पविते भयो कठोर बिशेखि॥
लालन लायक लषण लाल लघु बालक सब प्रकार सुकुमार।
भयो न भाई सुखदाईअस है नहिं होनहार अब यार॥
अतिव दुलारे पितु माता के पुर परिजनन प्राण आधार।
राम जानकी जिय प्यारे अति सूध स्वभाउ प्रेम दरियाउ।
सुंदर सूरति मृदु मूरति अति कबहुँ न लागि ताति तनबाउ॥
बसैंसो बनमहँ सहिआपाति सब यह दुखदेखि हृदय नहिंफाट।
कोटि बज्र की कठिनाई यहिं डारी निदरि बेगारी बाट॥
कीन उजागर जग राघव प्रभु जबते प्रगटि लीन अवतार।
रूप शील गुण सुखसागर बर नागर छबि शिंगार जनुमार॥
पुरजन परिजन गुरु मातापितु रामस्वभाव सबहि सुखदानि।
करैं बड़ाई अरि नीकी बिधि सरहैं बिनै शील मृदु बानि॥

कोटि कोटिशै सुर शारद अहिप्रभु गुण सकैं लेश नाहिं गाय ।
कुशाडासिकै महि सोवत ते विधि गात अकह कही नाजाय ॥
अब लगि कबहूं सुनि पायो नहिं कानन राम दुःख को नाम ।
जीवन तरु इव नृपजुगवत रह तिन बिनकहाँ ताहि विश्राम ॥
पलक रखावत जिमिनैननकहँ औ निजमणीफणी ज्यहिभाँति ।
रहीं रखावत तिमि माता सब श्रीरघुपतिहि सदा दिनराति ॥
फिरैं पियादे ते बनमा अब दल फल फूल मूल कहँ खाय ।
दुष्टा केकयिको हजार धिक ज्यहिं असबिमुख कीन सुखदाय ॥
महा अभागी अघभागी मैं सब उतपात भयो ज्यहि लागि ।
बंश कलंकी बिधिसिज्यौंम्वहिंनिजकर कुलहि लगाई आगि ॥
कीन कुमातैं प्रभु द्रोही म्वहिं अबका वृथा करौं पछिताय ।
केकयिसुतकी सुनि बातैं अस लाग्यो बोध देन गुहराय ॥
रंज न कीजिय अब जियरे मा मानिय कही नाथ मम बानि ।
राम तुमहिं प्रिय तुमरामहिं प्रिय मैं यह भले लीन जिय जानि ॥
बाम बिधाताकी अद्भुत गति जैं करि दीनि बावरी मात ।
दोष न यामहँ कछु काहू को भावी कठिनि होतहै तात ॥
बसे जौन निशि इत राघवप्रभु तुव यश कीन्ह रातिभरि गान ।
भाय भरतसम सुखदायकअरु लायक नहिं जहान महँआन ॥
रामहिं प्यारो तुम समान अरु नाहिंन कहौं दोहाई खाय ।
जानि हृदय महँ भल अंतिम फल धारहुधीर कुऔसर पाय ॥
दाया सागर प्रेमागरबर अंतर्य्यामि स्वामि शुचि राम ।
करि यह दृढ़ता मन अपने महँ अब चलि करौ तात विश्राम ॥
सखा बचन सुनि उर धीरज धरि सुमिरत प्रभुहि चले जहँबास ।
खबरि पाय यह पुर नारी नर देखन चले भरत सुख रास ॥
करि प्रदक्षिणा अभिवादन करि सब बिधि खोरि केकयिहि देहिं ।
बाम बिधातहि दै दूषण पुनि नैनन माहिं नीर भरि लेहिं ॥
भरत सनेहुआ इक सरहैं मन कोउ कह नृपति निबाह्यो नेह ।

भये जुदाई रघुराई की जिन ताजि दीनि क्षणक महँ देह ॥
फेरि सराहैं सब निषाद को आपहि देय देय धिरकार।
वह दुख करुणा वहि औसर की खगपति कहौं कौन परकार ॥
यहि बिधि निशिमहँ जनजागे सब भा भिनुसार उतारा लाग।
अगणित नौका मँगवाईं गुह जान्यो अपन आजु बड़ भाग ॥
गुरुहि चढ़ायो बर नौका पर मातु चढ़ाय सकल नव नाव।
खेय मलाहन द्वै घटिका महँ कीन उतारि पार दरियाव ॥
उतरि किनारे परभरत्थ तब सब कर शोध लीन करवाय।
गंगाजल महँ करि मज्जन भल गणपति गौरि गिरीशहिध्याय ॥
प्रात कृत्य करि गुरु मातन के पायँन शीश नाय द्वउ भाय।
आगे मग महँ करि निषाद गण दीन चलाय सैन समुदाय ॥
पुनि गुहराजा को आगे करि मातु पालकी सकल चलाय।
पुनि द्विज मण्डल सह गमने गुरु साथ बुलाय दीन लघुभाय ॥
आय सुरसरी को प्रणाम किय सुमिरे लषण सहित सिय राम।
चले पयादे पग केकयि सुत हिय महँ जपत स्वामि को नाम ॥
जात सवारी लिय कोतल सँग सेवक कहैं बारहीं बार।
बहुमग आये चलि प्यादे पग होइय नाथ अश्व असवार ॥
सुनि अस बानी उन टहलुनकी प्रेम बढ़ाय नैन भरि आंस।
बचन अमोले सुख ओले सम बोले भरत खैंचि उर सांस ॥

स० राम सियाअरु लक्षणलाल गये यहि मारग पायँ उघारे।
बारिजसे मृदु पायँनमें कुश कण्टक के लहिघाय दुखारे ॥
मो हितये गजबाजि सजे निलजे ये परान अजौं न पधारे।
मैंजो चलौं शिरके बलतौभल लागतसेवक धर्मबिचारे ॥

देखि भरत गति मृदुबानी सुनि सेवक वृन्द मानि उरग्लानि।
धर्म आपने महँ सबही बिधि अति कठिनता रहे अनुमानि ॥
तिसरे पहरे सब सैना सह पहुँचे भरत प्रयागहि जाय।
कहत रामसिय रघुनंदनसिय उर पुर प्रेम रह्यो उमँगाय ॥

झलका पायँन महँ झलकैं कस उपमा कहत चित्त सकुचाय।
कमल कोसपर जस कातिक महँ बुन्दा परत ओसके भाय॥
दुखी देखि सुनि सब समाज जन आये भरत पयादेहि पाय।
खबरिपाय अस न्हायचुके सब कीन प्रणाम त्रिवेणिहिं आय॥
बिधिसह संगममहँ मज्जन करि द्विजनबोलाय दीन बहुदान।
मातु जह्नुजा अरु रविजाको कीन्ह्यों श्याम धौल जल पान॥
हाथ जोरिकै पुनिपुलकित तन बिनती करत भरत सहभाव।
सकल कामप्रद तुम तीरथपति हैं जग प्रगट दिव्यपरभाव॥

स० आपनधर्मबिसारि सबैविधि टारि पृथापरलोक कि हानी।
काहकुकर्म करैंनहिं आरत जानि यहौतजि लोकगलानी॥
वेद अखेदकहैं कल कीरति हैमहिमा महिमा प्रगटानी।
माँगहुँभीख सुदानितुम्हैंलखि पूरिकरौ जगयाचकबानी॥

अर्थ धर्म की रुचि नाहीं मन चहौं न भुक्ति मुक्तिपद जान।
जन्म जन्म रति रघुनायक पद यह बरदान देहु नाहिं आन॥
जानैं स्वामी बरु कपटी म्वहिं बरु गुरु बिमुख कहैं सबकोय।
तऊ प्रेम मम सिय राघव पद प्रति दिन बढ़ै दया यह होय॥
सुरति जन्मभरि बिसरावैं घन माँगे बारि देहिं पवि डारि।
तऊ पपीहा रटनि घटै ना घटेते घटै प्रेम की पारि॥
प्रेम बढ़ेते सब भांतिन भल यह मैं लीन हृदय महँ हेरि।
आजहु शाका सब गावत है वारिद और पपीहा केरि॥
सुवरण दाहे जस आगी महँ दूना चढ़ै आनि तन पानि।
प्रीति निबाहे तिमि प्रीतम पद सब बिधि होय दोष दुखहानि॥
भरत भावते की बानी सुनि भई त्रिवेणि मध्य मृदु बानि।
तात भरत तुम अति साधू शुचि सब बिधि राम प्रेम की खानि॥
ग्लानि बादिही मन आनतहौ तुम सम राम प्रीय कोउ नाहिं।
सुयश तुम्हरो जग सुमिरेते सब दुख दोष तुरत मिटि जाहिं॥
सुनत त्रिवेनी की बानी शुचि तन मन गयो महा मुद छाय।

धन्य धन्य कहि श्री भरतहि सुर नभते फूल रहे बर साय॥
गृही उदासी बैषानस वटु बासीयत प्रयाग के जौन।
भये सुखारी अति भारी सब बरणै दशा तौन कहि कौन॥
करैं परस्पर दश पांचक मिलि भरत सुभाव शील शुचिगान।
कोउ कोउ गावत रघुनन्दन गुण सो सुनि भरत महा हर्षान॥
भरद्वाज पहँ चलि आये पुनि करत प्रणाम देखि मुनिराय।
ज्ञान ध्यान बिसराय ततत्क्षण धाय उठाय लीन उरलाय॥
कीन कृतारथ दै आशिष पुनि मूरतिवन्त भागि निज जानि।
लाय सुआश्रम शुचि आसनदै दीनबिठायसविधि सन्मानि॥
पाय सुआयसु मुनिनायकको बैठे भरत माथ महि नाय।
उर अनुमानत मन आनत अस पैठैं भागि सकुच घर जाय॥
मुनि कछु पूंछब यहै शोच बड़ उरमहँ रहे ठानि बहु ग्लानि।
सकुच शीलता देखि भरत की बोले भरद्वाज मृदु बानि॥
सुनहुँ भरत हम सुधि पाई सब बिधि गति अकह कही ना जाय।
नाहिं बिसात है कछु काहू को तुम जिय वृथा रहे सकुचाय॥
ग्लानि न लावहु कछु जियरे महँ यह कर्तव्य मातु की जानि।
दोष केकयिहि कछु नाहिंन सुत फेरी तासु बुद्धि छलिबानि॥
यहौ कहत कोउ भल कैहै ना सम्मत लोक वेद बुधक्यार।
गाइहि उज्ज्वल यश तुम्हरो सो पाइहि लोक वेद सतकार॥
लोक वेद को है सम्मत यह ज्यहि पितु देय लहै सो राज।
राउ सत्यब्रत रत तुमहीं कहँ देवा चहत राज सुख साज॥
राम गमन बन जड़ अनरथ की ज्यहि सुनि दुखी भयो संसार।
नातरु तुमकहँ कछुअनुचित नाहिं जो पितुदेत राजअधिकार॥
रानि अयानी सो भावीवश कीन कुचाल अन्त पछितानि।
दोष तुम्हारो कछु तामहँ कोउ कहै सो महाअधम अज्ञानि॥
तुम्हैं न दूषण यक तिनकौ भरि करत्यो यदपि राज को काज।
जानि तुम्हारी सज्जनता सुत सुनि सन्तोष लहत रघुराज॥

अबहूं अतिशै भल कीन्ह्यों यह वाजिब तुम्हैं रहै मत एहु।
दोष विघायक सुखदायक जग सीता राम पगन महँ नेहु॥
सोसिय राघव तुव जीवन धन तुम सम भागमान को तात।
सोऊ तुमकहँ कछु अचरज नहिं दशरथसुवन राम लघुभ्रात॥
तुम सम प्रेमी रघुनायक को आन जहान मध्य कोउ नाहिं।
ताते तुमका समुझावों सुत कछु न सकोच करो मनमाहिं॥
बसे जौनदिन मम आश्रम महँ त्यहि निशि सियालच्मणराम।
विरह तुम्हारे महँ करहत अति सरहत रहे तुम्हैं सब्याम॥
प्रभुहि निमज्जत खन प्रयागमहँ लीन्ह्यों सकलमर्म मैं जानि।
प्रेम तुम्हारेमहँ पुलकित तन मन अति मगनहोहिं धनुपानि॥
श्रीरघुनायकको सनेह शुचि तुमपर अहै तात यहिभाँति।
जस जग जीवन सुख मूरुखनर चाहो करै सदा दिन राति॥
अधिक बड़ाई कह तिनकी यह प्रणत कुटुंबपाल रघुराय।
भरत भावते तुम मोरेमत रामसनेह धरे जनुकाय॥
तुम कहँ तौ सुत जनु कलंक यह भो हम सबहि बेश उपदेश।
सिद्धि होन हित राम भक्ति रस भायह औसर मनहुँ गणेश॥
तात तोर यश नव उज्ज्वल शशि कुमुद चकोर रामके दास।
तिनकहँ सबदिन सुखदायक यह घायक हृदयताप अनयास॥
अस्त न ह्वैहै क्यहु औसर महँ प्रतिच्चण उदै शुद्ध परकास।
दिनादिन दूना द्युति सूना नहिं घटै न जगअकास शुचिबास॥
प्रभु प्रताप रबि छबि हरिहैं ना करिहैं प्रीति कोक त्रयलोक।
गुण गण किरणैं विस्तरिहैं बहु डरिहैं नाशि अज्ञतम थोक॥
सदा सर्बदा सब काहूको निशि दिन दानि मोद उतसाहु।
पर्व कुऔसर परिजायो पर ग्रसी न कृत्य केकयी राहु॥
राम प्रेम रस शुचि अमृतते रैहै भरोपुरो सबकाल।
गुरू अवज्ञाके कीन्हेका लगिहै नहिं कलंक अरु जाल॥
राम भक्तिरस शुचि अमृतको अब सब करैं भलीविधि पान।

कीन सुलभ तुम बसुधाहू महँ सुधा न मुधा रंच मतिमान ॥
गंग भगीरथ लै आये महि सुमिरत सकल सुमंगल खानि।
पाप नशावनि सरसावनिसुख स्वर्ग नसेनि चारि फल दानि॥
कहे जात नहिं गुण दशरथके ज्यहिते अधिक कहाँ जगमाहिं।
कोउ समताहूको नाहीं है भाषत सुयश सुमति सकुचाहिं॥
जासु शीलता अरु सनेह वश प्रगटे आनि राम रघुराय।
जिन कहँ कबहूं हिय नैनन सों लख्यो न शंभु ध्यान मगलाय॥
कीन अनूपम तुम कीरति बिधु जहँ बस रामप्रेम मृगरूप।
धन्य तुम्हारी सज्जनताको धनि तुव जन्म समय सुखकूप॥
करौ न मिथ्या उर गलानि सुत डरो दरिद्रहि पारस पाय।
झूंठ न यामहँ हम भाषैं कछु भाषैं सत्यसत्य गोहराय॥
तपी उदासी बनबासी हम साधैं योग भोग बिसराय।
तिन सब साधन को याही फल निरखे सियाराम द्वउभाय॥
त्यहि फलको फल भेदर्शन तुव सहित प्रयाग सुभाग हमार।
भरतधन्य तुम जगपायोयश धनि ज्यहिघरी लीन अवतार॥
प्रेम मगनभे अस कहिकै मुनि सबरी सभा गई हरषाय।
भरत सुकीरति को सरहत सुर नभते सुमन रहे बरसाय॥
धन्य धन्य धुनि सुनि काननसों रही प्रयाग गगन जो छाय।
भर्तहु डूबे प्रेम सिंधु महँ सब विधि देह दशा बिसराय॥
तन पुलकावलि हिय राघवसिय जलसों भरे कमल दल नैन।
करि अभिवादन मुनिमण्डल को बोले प्रेम गदगद बैन॥
मुनि समाज अरु तीर्थराज बिच साँचिहु शपथकिये बड़िहानि।
कहौं कपट करि जो यहिथल कछु तासम नहीं पाप अधमानि॥
सर्वज्ञाता तुम धातासम अन्तर्यामि स्वामि उरमाहिं।
सांचिहि सांची कहि भाषत हौं राखत कपट भाव कछु नाहिं॥
शोच न माता की कर्तब को नहिं दुख नीच कहै संसार।
शोक न बिगरै परलोकहु तौ चहत न परै यातना भार॥

पिता मरे कर दुख नाहिंन कछु मोकहँ सुनौ स्वामि मुनिराय।
भरयोभुवनमहँ शुचिसुकृतयश लक्ष्मण राम सरिस सुतपाय॥
राम विरह महँ क्षणभंगी तन तजिकै गये अमरपुर धाम।
भूप शोच को है कारण कह कीन्ह्यों जगत माहिं निज नाम॥
राम लषण सिय पग पनहीं बिनु बनबन फिरैं किये मुनिवेष।
सहि बातातप मृदु गातन महँ पाये विविध भाँतिके क्लेश॥
मृगाचर्म के पट भोजन फल सोवत भूमि डासि कुश पात।
बसि नित बिरवातर भोगत दुख तनपर सहत बनातप बात॥
यहि दुख दाह जरै छाती नित दिन नहिं भूख नींदनहिं राति।
यहिकुरोगकी नहिंऔषधिकछु शोध्योंसकलबिश्व भलिभाँति॥
कुमति मातुकी स्वइ बढ़ई जनु बसुला हित हमार कर लीन।
कलि कुकाठकी दुख पुतरी रचि कठिन कुमंत्र कुमंत्रित कीन॥
गाड़ि अवधमहँ जनु मोहींलगि कीन्ह्यसि यह कुठाटको ठाट।
घाल्यसि सब जग सब प्रकारते बारहबाट कीनि सुख हाट॥
मिटिहै तबहीं यह कुयोग अब आवैं अवध फेरि जो राम।
यतन दूसरी नहिं याकी कछु मानहुँ सत्य बात मतिधाम॥
भरत बार्ता सुनि याबिधि सब सरहन लाग भरत अनुराग।
शोच न रंचक उर आनौ सुत हौ तुम सबप्रकार बड़भाग॥
देखि राम पद दुख मिटिहै सब जैहै दशौदिशा सुख छाय।
धीरज धारौ उर औसर सम और न कछू बिचारौ भाय॥
इमिप्रबोधकरिमुनिनायकपुनि कह्योकिअतिथि प्राणप्रियहोहु।
मूल फूल फल दल आदिक सब जो हम देहिं लेहु करि छोहु॥
सुनि मुनिनायक की बानी मृदु शोचन लगे भरत मनमाहिं।
भयो कुऔसर असमंजस यह मुनिते कहत बनत कछुनाहिं॥
गरुअ जानिकै गुरु बानी पुनि बोले भरत जोरि द्वउ हाथ।
आयसु तुम्हरो धरि माथे पर करिय हमार धर्म यह नाथ॥
भरत भावते की बानी सुनि मुनिवर हृदय गये हर्षाय।

शुचिसेवकगण अरु शिष्यनकहँ तुरतै निकटलीन बोलवाय ॥
तात भरत की पहुनाई मैं चाहौं करन आजु यहिठायँ।
ताते तुम सब लहि आयसु मम आनहुँ कंदमूल फल जाय ॥
भले नाथ कहि शिरनाये तिन निज निज काज चले हर्षाय।
सुनौ अगारी कर कौतुक अब मतिसम कहौं भाषि खगराय ॥
शोच समान्यो मुनि उरमा बहु पाहुन आजु न्योति बड़ दीन।
होय देवता जस ताकी तस पूजा चही यथोचित कीन ॥
सुनि मुनिआयसुअणिमादिकसिधि ऋद्धिहुसकलपहूंचीआय।
होय तुम्हारो जो आयसु प्रभु सो हम करैं आजु हर्षाय ॥
दुखी भरतअतिराम विरहमहँ सानुज सकल समाजहि आज।
हरौ परिश्रम पहुनाई करि यहिविधि कह्यो मुदित मुनिराज ॥
ऋधिसिधिशिरधरि मुनिआयसुतब बड़भागिनीआपुकहँपाय।
कहैं परस्पर इमि सिद्धीसब अतुलित अतिथि राम लघुभाय ॥
मुनि पद बन्दन करि करिये स्वइ राज समाज सर्व यहआज।
अतिसुख पावै मिटिजावै दुख तौ जनु भयो आज बड़काज ॥
अस कहि सुंदर घर साजे बहु लाजे जिनहिं देखि सुरयान।
सुखद पदारथ तिन भीतर अस जिन्हैंबिलोकि देव ललचान ॥
दास दासिनी लिय सामा सब सेवा करैं जासु जस आस।
क्षणमहँसिद्धिन सुखसाजे अस जसनहिं मिलत देवआवास ॥
प्रथम बासदै सब काहूको जाकी रही जैसि अभिलाष।
भाँति अनेकनके भोजन बर बस्तु अनेक सकै को भाषि ॥
फेरि भरतकहँ सब परिजन सह अस आदेश दीन मुनिराय।
विभव अपरिमितविधिबिस्मयकर तपबलआजदीनादिखराय ॥
भरत विलोक्यो मुनि प्रभाव जब तब सबलोक लोकपति साज।
हलुको लागो अनुरागो मन ज्ञानिन केर देखि खगराज ॥
कहि न जाय वह सुखसमाज सब आसनशैन बस्त्र सुवितान।
सुखद बाटिका बनखग मृग बहु विविधविधान जलाशय ठान ॥

खानपान बहु शुचि अमृतसम लखि सुर नर समान ललचात।
घरघर सुरतरु अरु कामदगौ देखत कहत बनत नहिं बात॥
मन इन्द्राणी अरु इन्द्रहु के अस अभिलाष होत खगनाथ।
कबहुँकऔसर अस करिहौ विधि धरिहौ यह विभूति ममहाथ॥
मंद सुगंधित अरु शीतल शुचि बहै बयारि मनो मलहारि।
ऋतु बसंत की छबि छाई बहु सबकहँ सुलभ पदारथ चारि॥
आला माला बालादिक लै चन्दन इतर आदि सुखभोग।
देखि पदारथ सुरदुर्ल्लभ इमि विस्मय हर्ष विवश सबलोग॥
सम्पाति चकई चक केकयि सुत मुनि आदेश मनहुँ खेलवार।
त्यहिनिशि पिंजरासम आश्रम तहँ राखे भयोआय भिनुसार॥
जाय नहायो शुचि संगम महँ नायो शीश मुनिहिं पुनि आय।
ऋषिशिख आशिषधरिमाथेपर कीन्हीं बिनय यथाविधि भाय॥
जाननहारे बर मारग के लीन्हे बोलि आपने साथ।
गमने चितदै चित्रकूट तन सुनिये अग्र चारित खगनाथ॥

स० रामसखा करसों करजोरि बहोरि भरत्थ चले मगजाहीं।
पायँनमें पनहींन पयादेहि सादेहि दीसत शीश न छाहीं॥
प्रीतिपुनीति सनेम सुनीति यथोचित रीतिगहे मनमाहीं।
देहधरे शुचि नेहभरे अनुराग सनेह मनौं द्वउआहीं॥

पंथ कहानी सिय राघव की पूंछत कहत सखासों जात।
राम आश्रम के वृत्तन लखि उरपुर प्रेम जात अधिकात॥
दशा देखि यह सुर अंबर ते सुन्दर फूल रहे बरसाय।
भै महि कोमल मग मंगलमय भरतहि देखि पियादे पाय॥
छाया कीन्हीं घन मेघन तब लागी बहै मनोहर बात।
भयो न रामहिं तस मारग सुख जसभा भरत भावतेहि जात॥
जीव चराचर हैं यावत जग जिन प्रभु लखे जिन्हैं प्रभुदीख।
ते सब परपद के लायक भे सहजे मिली सुगतिकी सीख॥
भरत दरशहै भव औषधि सम सो कछु बड़ी बात यह नाहिं।

सदा सर्वदा सोवत जागत सुमिरत जिन्हैं राम मनमाहिं॥

स० जोजन एकहु बार कहूं परि बेबशहूं हरिनाम उचारत।
कोटि कराल कुसंकठकालके संशय जाल कुआरत टारत॥
फारतहै यम फंद भली विधि बंदि अनंदित बेद पुकारत।
लागत नेक न बारकहूं भव सिंधु अपारके पार उतारत॥

भरत राम प्रिय लघु भ्राता पुनि मंगलमयी होय किनराह।
सिद्ध साधु अरु मुनि भाषैंअस भरतहि देखि लहैं उतसाह॥
शोच सुरेशहि अस प्रभाव लखि यामहँ मृषा रंच कछुनाहिं।
आछे जन कहँ है आछो सब नीचहि नीच सकल जग माहिं॥
कह्यो गुरूसे प्रभु करिये स्वइ इतना कहा करौ मम आज।
भेंट न होवै राम भरत ते तौ बनिजाय सर्वबिधि काज॥
राम सकोची सदा प्रेमवश प्रेम समुद्र भरत को जानि।
बिगरन चाहत बनी बात सब ताकी यतन करौ छल ठानि॥
विहँसे सुरगुरु सुनि बानी अस आँधर सहस नैन कहँ मानि।
कह्यो कि छाँड़ौ छल त्तोभै अब कीन्हें कपट होय बड़ि हानि॥
मायापति के शुचि सेवक से माया किहे सुनौ सुरराय।
पलटि आपही पर आवै फिरि तब कछु कीन राम रुखपाय॥
बड़ी बुराई अब कुचाल ते अस अनुमानि लेहु मन माहिं।
रघुपति अपने अपराधी पर कबहुँ न चहै बरुकु रिसियाहिं॥
पै निज जनके अपराधीको करैं अवश्य रोष महँ नास।
जानहिं महिमा दुर्बासा यह लोकहु वेद बिदित इतिहास॥
भरत सरिसको रघुनायकको लायक सुखद सनेही और।
जपै जगत सब श्रीरघुपतिको रघुपति जपैं जाहि सब ठौर॥
मनहुँ न आनिय सुरनायक अस रघुपति भक्तकेर हितहानि।
अयश लोकमहँ परलोकहु दुख दिनादिन शोकलेहु यह जानि॥
सीख हमारी सुनु सुरपति यह रामहिं अति पियार है दास।
मानत सेवक सेवकाई सुख सेवक बरै बैरकी फांस॥

यद्यपि हैं सम राग रोष नाहिं गहैंन पाप पुण्य गुण दोष ।
मुख्य कर्म है यहि दुनिया महँ जो जस करै लहै फल चोष ॥
करैं विषमसम प्रभु कौतुक तउ भक्त अभक्त हृदय अनुसार ।
अगुण एकरस रघुनायक प्रभु जनहित भयेसगुण अवतार ॥
सदा सुसेवक रुचि राखी प्रभु साखी श्रुति पुराण सुर साधु ।
तजौ कुटिलता गुनि हिरदै अस करौ भरतपद प्रेम अबाधु ॥
निरत पराये हित रघुपतिजन परदुख दुखी सुखी सब काल ।
भक्त शिरोमणि श्री भरत्थ ते जानि उर डरौ रंच सुरपाल ॥
सत्यसंध प्रभु सुर स्वारथ रत भरतहु निरत रामरुख माहिं ।
होत दुखारी तुम स्वारथ वश भरतहि रंच दोष कछु नाहिं ॥
सुरगुरु बानी सुनि इन्द्रहु पुनि समुझेमिटी चित्त की ग्लानि ।
करि प्रसूनझरि उरआनँदभरि सरहतभरत भाव शुचिबानि ॥
चलेजातमग इमिकेकयि सुत गतिलखिसिद्धसाधु सकुचाहिं ।
लै उसास जब कहैं राम तब उमँगत मनहुँ प्रेम चहुँ घाहिं ॥
द्रवैं बचन सुनि पवि पाथर सब पुरजन प्रेम कहो नहिंजाय ।
आये यमुना तट बीचाहिबासि लखि जल गयो नैन जलछाय ॥
राम रंगको लखि श्यामलजल सहितसमाज भरत अकुलाय ।
बिरहा वारिधि महँ डूबत जनु चढ़े विवेक जहाजहि पाय ॥
सबसुपास लहि तहँ औसरसमत्याहि दिनकियो यमुनतटबास ।
निशि महँ नौका सब घाटन की आईं तहाँ सुनौ मतिरास ॥
एकहि खेवा महँ समाज सब भै भिनुसार नदी के पार ।
रामसखाकी शुचि सेवाते सबकोउ लह्यो परम सत्कार ॥
चले न्हाय पुनि नदिहि नायशिर साथ निषादनाथ लघुभाय ।
आगे मुनिबर बर बाहन पर राज समाज पछारी जाय ॥
पायँ पियादे सुठि सादे तन पीछे चलेजात द्वउ भाय ।
सेवक मंत्री मित्रादिक सँग सुमिरत लषण सीय रघुराय ॥
जहँ जहँ निबसे रघुनायक प्रभु तहँ तहँ माथ नवावत जायँ ।

दशासो बर्णत बनिआवत नहिं रहि रहि प्रेमभाय उमगायँ॥
सुनि मगवासी नरनारी सब धाये धाम काम बिसराय।
रूप अनूपम लखि नैनन सों गे हरषाय जन्म फल पाय॥
कहैं प्रेमयुत इक एकनसों सखि ये रामलषण की नाहिं।
स्वइ सुंदरता बय बिक्रम गति शील सनेह देह सम आहिं॥
वेष न सो अलि नहिं सीतासँग चतुरंगिनी अनी चलिजात।
नहिं प्रसन्नमुख मनचिंतित कछु सखि संदेह होत यहि बात॥
तासु तर्कणा सत्य मानि तिय कहैं कि तुवसमान जग आन।
नहीं सयानी हम जानी यह है सब भाँति धन्य तुव ज्ञान॥
तिया दूसरी पुनि बोली तब सुंदर बानि ठानि शुभ ढंग।
कथा अगारीते भाषी सब ज्यहि विधि रामराज रस भंग॥
सरहन लागी पुनि भरत्थको शील सनेह और शुचि भाव।
धर्म कर्म रत शुभ सज्जन मत हैं सब भाँति दया दरियाव॥
चलत पयादे फल भोजन करि दीन्हीं पिता केरि तजि राज।
जात मनावन रघुनायकको भरत समान आनको आज॥
भरत भावते को भायप अरु समताशक्ति भक्ति आचार।
सुने गुने अरु मुख भाषेते सब दुख दोष होहिं जरि छार॥
जो कछु कहिये सब थोरो सखि राम बंधु अस काहे न होय।
देखि भरतको अब सानुज हम युवती भईं धन्य जिय जोय॥
दशादेखिअरु सुनि सुन्दरयश यहिविधिनारिपुरुष पछिताहिं।
भूल बिधाता तुम कीन्ह्यों यह केकयि मातु योग सुत नाहिं॥
कोउ कह रानिहुँ को दूषण नहिं दाहिन हमैं भयो कर्तार।
जिन भरि आँखिन छबि देखी यह दुर्लभ जौन देवतन यार॥
श्रुति विधि हीने अकुलीने कहँ सब करतूति मलीने आम।
बसैं कुदेश कुग्राम ठाम महँ कहँ यह दरश पुण्य परिणाम॥
ग्राम ग्रामप्रति अस आनँद अरु अचरज रह्यो जहाँतहँ छाय।
माड़वार की जनु बसुधा महँ जाम्यो कल्पवृक्ष शुचि आय॥

राम भ्रात के लहि दर्शन बर जागे मगलोगन के भाग ।
सिंहल बासिन को मानहुँ भो सुलभ प्रयाग यथा वश भाग ॥
अपने गुणसह श्रीरघुपति गुण मगमहँ सुनत जात अभिराम ।
मुनिथल तीरथ सुर मंदिर लहि करि अस्नान करत परणाम ॥
माँगैं मनहीं मन अभिमत बर सीता राम पगन की प्रीति ।
देखि भरत गति अति आनँद लहि लोग सिहाहिं प्रेमकी रीति ॥
मिलैं राहमहँ सिद्धादिक जे सब दिन किये रहत बन धाम ।
पूंछैं ज्यहि त्यहिते प्रणामकरि क्यहि बन लषण जानकी राम ॥
खबरि बतावैं ते प्रभुकी सब भरतहि देखि सराहैं भाग ।
बरसैं आंशू जल नैनन ते तन मन उमँगि रह्यो अनुराग ॥
जे जन भाषैं की देखे हम सकुशल सिया लक्ष्मण राम ।
राम लक्ष्मण सम तिनको लखि बारम्बार करैं परणाम ॥
यहि विधि बूझत मृदुवानी सों हितसह राम लषण को हाल ।
सुनत सुनावत प्रभु गाथा शुचि मगमहँ जात केकयी लाल ॥
त्यहि दिन बसिकै भिनुसारे फिरि डगरे सुमिरि सीय रघुनाथ ।
राम दरश की अभिलाषा मन भरत समान जौन सब साथ ॥
होयँ शकुन शुभ सब काहूको फरकहिं सुखद बिलोचन बाहु ।
सह समाज भरतहि उछाह यह मिलिहैं राम मिटी दुख दाहु ॥
करत मनोरथ मन जाके जस छाके सुरा नेह सब जाहिं ।
शिथिल अंग मगपगडोलत डग बोलत बनत प्रेमवश नाहिं ॥
रामसखा ने दिखरायो तब शुभ्र उतंग शृंग गिरिराय ।
नदी पयस्विनि तट जाके लग उतरे सिय समेत द्वउ भाय ॥
करैं दण्डवत लखि नैनन सब कहि जै सिया रमण सुखधाम ।
प्रेम मगन अस नृपमण्डल सब जनु फिरि अवध पधारे राम ॥
प्रेम भरत को त्यहि औसर जस तसना सकैं भाषि अहिनाह ।
कवि को दुर्गम यथा ब्रह्मसुख मायिक नरन केरि गतिकाह ॥
राम प्रेम महँ जन विह्वल सब बल ना रह्यो चलन को राह ।

गये कोस दुइ भुइ इतने पर अस्ताचलै गये दिननाह ॥
देखि जलाशय अरु सुन्दर थल कीन्ह्यों राति जानि तहँ बास ।
भये सवेरा मग ताक्यो फिरि उर धरि राम दरश की आस ॥
इतै हकीकति अस बीतति भै उतको सुनौप्रिये अब हाल ।
जगे भोरह्वै रघुनायक तब सिय अस सपन दीख खगपाल॥

स० राजसमाज समेत मनौ इत आजसबंधु भरत्थ सिधाये ।
पायँ पयादेहि सादेसुभायते नाथ बियोगव्यथातन ताये ॥
दीन मलीनमहामनक्षीन कुलक्षणसासुनके लखिपाये ।
सीय सयानिकिबानिसुनेअसशोचबिमोचन शोचसमाये ॥

कह्यो लषण ते पुनि धीरज धरि नीक नहोय स्वप्न यह भाय ।
थोरेहि औसर महँ कोऊइत कठिनि कुचाह सुनाइहि आय ॥
अस कहिभ्राता सह मज्जनकरि पूजि पुरारि साधु सन्मानि ।
बैठे उत्तर दिशि देख्यो तब नभ महँ भूरि धूरि मड़रानि ॥
खगमृग व्याकुलह्वै भागे बहु छिपे सो आय राम थल माहिं ।
लखिचित चक्रितसेशोचत प्रभु कारण जानिपरत कछुनाहिं ॥
कोल किरातन त्यहि औसर पर सबरी खबरि सुनाई आय ।
दृग जल छावत इत आवतहैं श्रीरघुराय आपुके भाय ॥
मंगल बानी सुनि कानन सों मन मुद गई पुलक तन छाय ।
शरद सरोरुह से नैनन महँ रह्यो सनेह बारि दरशाय ॥
भरत आगमन क्यहि कारण इत शोचत फेरि जानकी नाथ ।
तौलगि दूजे कह्यो आय अस चतुरंगिनी अनी है साथ ॥
सो सुनिरामहिंभो संशय अति इत मन पिताबचनको ख्याल ।
भाय भरतको संकोचौ उत कछुना कहत बनत खगपाल ॥
विविध भाँतितेअनुमानतमत भरत स्वभाव जानि मनमाहिं ।
प्रभुकोचित हितथितिपावत नहिं लखि सो दशादेवसकुचाहिं ॥
समाधान भो यहजाने तब साधु सयान भरत सब भाँति ।
हैं प्रतिपालक मम आयसु के ताते कछुन शंक दिखराति ॥

प्रभुचितचिंतित लखिलक्ष्मण तबभाषतभये समय समबानि।
कहौं गोसाईं बिनपूंछे कछु अपनी समुझ सरिस अनुमानि॥
अंतर्यामी तुमस्वामी शुचि जानत सबहि हिये कीबात।
करै ढिठाई लहि औसर तौ दासहि कछु न दोष है तात॥
सीधे चितके हित सबके प्रभु शील सनेह दयाके खानि।
प्रीति भरोसा सबकाहूपर राखत आपु सरिस मन मानि॥
विभौ पायकै जग विषयी जन ठानत मूढ़ मोह अभिमान।
यामहँ मिथ्या कछु नाहीं है वेद पुराण देत परमान॥
भरत नीतिरत शुचि सज्जन मत प्रभुपद भक्त जक्त विख्यात।
आज राजपद लहि तेऊ अब चले उलंघि धर्म्मपथ तात॥
जानि अकेले रघुनंदन बन कुटिल कुबंधु कुऔसर गाजि।
करि कुमंत्रणा सजि समाज सबआये करन अकण्टक राजि॥
ठानि कुटिलता मन कोटिनबिधि आये दल बटोरि द्वउभाय।
खलता छलता जो न होत जिय काहि सोहात सैन समुदाय॥
वृथा दोष कोदेय भरत को जग बौराय राजपद पाय।
वेद प्रमाना जग जाना यह रंच न झूठ सत्य प्रभु आय॥
गुरुतियगामी शशि भाषत सब नहुषहु चढ़े द्विजनके यान।
भयो बिमुख सब लोक वेदते बेणुसमान नीच को आन॥
सहसबाहु अरु सुरनायक लै केहि न कलंक राजिमद दीन।
रिपु ऋण रंचक कोउ राखैना भरत उपाउ उचित यहकीन॥
एक भलाई यह कीन्हीना निदरे राम जानि असहाय।
समुझिपरी सो आजु भलीबिधि समर सरोष राम रुखपाय॥
इतना कहतै नै बिसरी सब गैरिस अंग अंग महँ छाय।
मनहुँ बीरता को बिरवाबर खिल्यो समूल फूलि खगराय॥
बांदि स्वामि पदरज माथेधरि बोले सत्य सहज बल भाषि।
कहान अनुचित मम मानब प्रभुभर्तहि हमहिं भईबड़िमाषि॥
कहँलगि सहिये नहिं कहिये कछु रहिये मौन मनै रिसमारि।

हाथ हमारयो महँ शायक धनु फिरि हैं साथ नाथ भयहारि ॥
पैदा रघुकुल महँ क्षत्री पुनि बंधव रामकेर जग जान।
लातहुमारे चढ़त माथपर धूरि समान नीचको आन ॥
अस कहि तुरतै उठि ठाढ़ेभे मानहुँ परयो बीर रस जागि।
आयसु माँग्यो कर संपुटकरि पायँन धरयो माथ अनुरागि ॥
बाँधि जटाशिर कटि भाथा कसि शायक चापलीन गहिहाथ।
छायलालरी गै नैनन महँ बोले बीरपने के साथ ॥
आज लेउँ यश प्रभु सेवक ह्वै भरतहि समर सीख सिखवाय।
राम निरादर को लैकै फल सोवैं समरभूमि द्वउभाय ॥
करौं पाछिली रिस जाहिर अब बन्यो सँयोग आजु भलआय।
राम दुहाई करि भाषतहौं रणते जियत फेरि नहिं जाय ॥
सिंह सँहारै जस हाथीदल बटयर बृंद दलै जस बाज।
तैसे भरतै सब सेना सह सानुज निदरि निपातौं आज ॥
होयँ सहायक जो शंकर लग माचौं तबहुँ भयंकर रारि।
राम दोहाई करि भाषतहौं सहजे हतौं समर सब झारि ॥
यहिबिधिकोपे मन लक्ष्मन जब शपथ प्रमान सत्य सुनिकान।
अतिव डराने तब लोकप सब लैलैभगे आपने प्रान ॥
मारे भयके जग काँप्यो सब तौलौ भई गगन आवाज।
देउता सरहत बल लक्ष्मण को हौ तुम धीर बीर शिरताज ॥
तात तुम्हारे बल प्रतापको को कहिसकै को जानन हार।
काज वाजिबी लखिकरिये जो तौ सब भलाकहै संसार ॥
बिना बिचारे करि सहसा जन आखिर माथपीटि पछिताहिं।
होत कलंकी सब दुनियाँमहँ गुनियाँ भलाकहत कोउनाहिं ॥
सुनि सुरवानी फुरजानी तब मन महँ लषन लाल सकुचान।
राम जानकी तब औसर सम सादर तासुकीन सन्मान ॥
नीति वाजिबी तुम भाषी कहि सबते कठिन राजमद भाय।
जेमदपावैं नृप मातैं स्वइ परे न संत सभा महँ जाय ॥

भरत सरीखा जन सज्जन जग देखा सुना कतहुँहम नाहिं।
यहै बिचारौ उरधारौ सुत मारौ वृथा रोष मन माहिं॥
होय राजमद नाहिं भरत्थको बिधि हरि शिवौ केर पद पाय।
कबहुँ कि काँजी के छीटा ते क्षीर समुद्र जाय विनशाय॥
ज्येठ दुपहरीके सूरज को लीलै अंधकार बरु भाय।
गगन मगन ह्वै बरु मेघन महँ चाहै मिलै आय बरिआय॥
सिंधु पियैया मुनि कुंभज सो गोपद बारि बूड़ि बरु जाहिं।
क्षमावानहै स्वाभाविक महि सो बरु गहै तौन गुण नाहिं॥
मशा फूंकते उड़ै मेरु बरु पावक चहै शीत ह्वैजाय।
होय राजमद नहिं भरत्थ को मानहुँ सत्य बात यह भाय॥
सौंह तुम्हारी अरु दशरथकी भरत समान सन्त नहिं आन।
यामहँ मिथ्या कछु नाहीं है भाषत सत्य पैज करि ठान॥
सृष्टि विधाताकी यावत सब गुण औगुणनि युक्त दरशात।
सगुण दूध तहँ जल औगुण मय इतना कहा मानिये तात॥
भरतमराल तालदिनकरकुल जन्मि भिन्न करि नीक बिकार।
गह्योदूधगुणतजि औगुणजलनिजयश जगतकीनउजियार॥
कहत शील गुण इमि भरत्थ को डूबे प्रेम सिंधु महँ राम।
दशा देखि अस सुर सरहैं सब प्रभु सम कौन दयाकोधाम॥
जन्म भरतको जो न होत जग तो को धरत धर्म्म धुर माथ।
भरत भावते के उज्ज्वल गुण तुमबिन जानि सकै को नाथ॥
सुंदर बाणी सुनि देवनकी अतिसुख लह्यो लषण सियराम।
इत समाज सह श्री केकयि सुत मंदाकिनी मज्जि अभिराम॥
राखि नदीतट सब लोगनकहँ आयसु गुरूमातु को पाय।
चले भरत जहँ रघुनंदन सिय साथ निषाद नाथ लघुभाय॥
गुनिकै माताकी करणी मन सकुचैं करैं तर्क मन माहिं।
धरैं आपने शिर दूषण पुनि उरमहँ बारबार पछिताहिं॥
मोकहँ आवत सुनि कानन सों सीता लषण सहित श्रीराम।

बसैं जायकै कहुँ अन्ते जनि तजिकै चित्रकूट को ठाम ॥
मातु मंत्रणा महँ मोहूं कहँ जानैं कहैं जौन सो थोर।
तजि अघ औगुण सन्मानैं पुनि विरदबिचारि आपनी ओर ॥
दुष्ट जानिकै जो त्यागैं म्वहिं जो आदरैं जानि अनुगामि।
मैं शरणागत प्रभु जूतिन की म्वहिंसब दोषराम शुचिस्वामि ॥
मीन पपीहा यश भाजन जग अपने नेम प्रेम हुशियार।
सोई सेवक है सांचो जग तन मन जासु स्वामि पद प्यार ॥
जात विचारत असरस्ता महँ सकुच सनेह शिथिल सबगात।
खोरि मातुकी लौटारति जनु आनत धीर भक्ति बल तात ॥
राम स्वभावहि जब समुझतमन तब मगपरत उछाहिल पाव।
दशा भरत की त्यहि औसर कस बारि प्रवाह भवँर दरियाव ॥
नेह भरत को अरु शोचब लखि गयो निषाद देहसुधि भूलि।
भरि सनेह जल कल नैनन महँ मनरह प्रेम हिंडोला झूलि ॥
होन शकुनवां तब लागे शुभ तिन्हैं बिलोकि कह्यो गुहनाह।
शोच नशैहैं मुद ह्वैहै कछु आखिर फेरि होइ उर दाह ॥
सेवक बानी सच जानी सब आश्रम पास गये नगिचाय।
भरत निहाख्यो तब पर्वत बन गो सुख अंग अंग महँछाय ॥
जैसे भूँखा बहु दिवसन कर सुंदर नाज, पाय हर्षाय।
दशा भरत की तैसीही भइ को अब कहै तौन सब गाय ॥
दुखी प्रजा जिमि ईतिभीति ते पुनि त्रैताप प्रपीड़ित भाय।
पाय सुदेशै सुनरेशै पुनि तहँ चलि जाय बसै हर्षाय ॥
भरत भावते की तैसिय गति मोसन कहि न जाय खगराय।
जानैं वोई जन नीके कै जिन भरि नैन बिलोक्यो भाय ॥
राम बास बनसब संपाति सुख शोभा प्रभा युक्त दरशाय।
प्रजा सुखारी सब प्रकार जस सुंदर दयावान नृप पाय ॥
एक विवेकहि है भूपति जहँ मंत्री बुद्धिमान बैराग।
देश सुहावन मनभावन बन पावन सब प्रकार बड़ भाग ॥

यम नियमादिक हैं योधा जहँ राजनिवास खास गिरिराज ।
सुमति सयानी छबिखानी शुचि रानी शांति जासु खगराज ॥
सकल सुढंगन सुख अंगनसों युक्त सुनीति रीति रत राउ ।
हैप्रभाउ बड़ सब भाँतिनसों आश्रित रामचरण चितचाउ ॥
मोह महीपतिकी सैना सब जीति सनीति विवेक भुआल ।
राजि अकण्टक ह्वै भोगत पुर सुख संपदा सहित सबकाल ॥
बन प्रदेश महँ मुनि आश्रम बहु सोजनु नगर खेर पुरगावँ ।
जाति अनेकन के खग मृग गण सोजनु प्रजा बसै तेहिठावँ ॥
अरना हरना हरि चीता करि बाघ बराह बृषभ बृक भारि ।
छाँड़ि शत्रुता चरैं एक सँग सोजनु चारि अंगकी धारि ॥
झरैं पहाड़नके झरना गज चिघरैं करैं सिंह स्वन घोर ।
सोई मानहुँ बिबिध भाँतिके बाजन बाजिरहे चहुँओर ॥
सुवा सारिका पिक चातक चक राज मराल मधुर आवाज ।
कूजैं गूंजैं अलिवृंदन तहँ नचैं अनंद मोर साजि साज ॥
सो जनु बंदीजन भूसुरगन जहँ तहँ करैं बिरद श्रुतिगान ।
लता वृक्ष तृन बन समाज सब फूले फले भले हरियान ॥
रामशैलकी असि शोभा लखि बाढ़्यो भरत हृदय बड़ प्रेम ।
पाय तपस्या फल तापस जिमि होवै सुखी सिराने नेम ॥
ऊंचे चाढ़ि कै तब केवट ने भुजा उठाय कह्यो यह हाल ।
नाथ देखिये ये बिशाल तरु पाकरि जंबु रसाल तमाल ॥
सोहै बरगद तिन वृक्षन बिच मंजु बिशाल लाग फल लाल ।
सघन सपल्लवबहुशाखायुत अविचलसुखद छाहँ सबकाल ॥
शोभासबरी जनुसकेलि बिधि बिरची तिमिर अरुणमयरासि ।
नदी किनारे त्यहि बिरवा तट प्रभुकी पर्णकुटी रहि भासि ॥
सुंदर तुलसी तरु लागे बहु कहुँ कहुँ लषण कहूँ रघुनाथ ।
स्वकर लगाये छबि छाये तहँ सिय बेदिका रची निज हाथ ॥
जहँ पर मुनियन सह बैठैं नित सीता सहित राम भगवान ।

पावन चर्चा निगमागमकी कथा पुरान सुनैं धरि ध्यान ॥
सखा बचन सुनिलखि वृत्तन तन गयो भरत्थ दृगन जलछाय ।
करत दण्डवत चले भाय द्वउ शारद प्रीति कहत सकुचाय ॥
चिह्न देखिकै प्रभु पायन के हर्षै हृदय मध्य द्वउ भाय ।
जन्म दरिद्री जिमि हर्षै मन पारस मणिहिं पाय खगराय ॥
रजमाथे धरि हिय नैनन भरि पावैं मोद मिले जनुराम ।
दशा भरथकी अकथदेखि इमि भे मनमगन जीव जड़ आम ॥
नेह विवश ह्वै मग भूल्यो गुह तब सुरवृंद राह बतलाय ।
भरत भावते को सरहैं यश गति लखि सिद्धरहे सकुचाय ॥
जो अस भूतल मा होतै ना परम पुनीत भरत को भाव ।
जड़ कहँ चेतन अरु चेतन जड़ सहजे कौन करत मुनिराव ॥
भरत चीरनिधि प्रेमामिय शुचि मंदर मेरु विरह जनु आय ।
माथिकै काढ़्यो सुर साधुन हित श्रीरघुराय दया दरिआय ॥
यद्यपि भाई द्वउ निषाद सह प्रभु थल निकट गये नगिचाय ।
तद्यपि लच्मण अवलोक्यो ना जंगल सघन ओट को पाय ॥
भरत निहारयो प्रभुआश्रम शुचि मंगलसदन कदन दुखजाल ।
धरत पैर तहँ मुद जागे मन भागे सघन विघन जंजाल ॥
भरत निहार्यो प्रभु बैठे तहँ आगे खड़े लषण बड़ भाग ।
पूंछत प्रभुसों करजोरे कछु भाषत बचन सहित अनुराग ॥
जटा छटा शिर कटि बल्कलपट तर्कस कसे गसे शर हाथ ।
लसै शरासन शुचि कांधे महँ दरशै तिलक मनोहर माथ ॥
बिमल बेदिका पर साधूगण मुनिमण्डली लसै अभिराम ।
मध्य मैथिली युत राजत तहँ जन मन धाम करन श्रीराम ॥
धारे बल्कलपट श्यामल तन लटकत जटा छटा के धाम ।
अनुपम शोभा कहिगावै को जनु मुनि बेषकीन रतिकाम ॥
धनु शर फेरत कर कमलन महँ बोलत मधुर बैन मुसकाय ।
तिर्छी चितवनिसों चोरतजनु अनुचर चित्त चितवन भाय ॥

इत उत राजत मुनिसमाज सब ताके मध्य सीय रघुनन्द।
ज्ञानसभा बिच तनुधारे जनु सोहत भक्ति सच्चिदानन्द॥
सखा अनुजसह श्री केकयिसुत दुख सुख हर्ष शोक बिसराय।
पाहि पाहि कहि मृदुबानी सों भूतलपरे लकुटकी नाय॥
बचन प्रेमयुत सुनि देख्यो पुनि भरत प्रणाम करत अनुरागि।
बढ्योनेहइत शुचिबंधवदिशि उत प्रभुसेव सकतनहिं त्यागि॥
मिलि न जाय नाहिं कहि आवै कछु लक्ष्मण दशाकहै कविगाय।
भार भरोसा सब सेवा पर धरिकै रहे ठाढ़ वहि ठायँ॥
चढ़ी पतंगै खेलवारी जिमि खैंचै द्वऊ हाथ मन लाय।
कह्यो प्रेम युत महि माथा धरि भरत प्रणाम करत रघुराय॥

षट्पद

भरत करत परणाम कह्यो जबहीं यह शेशा।
प्रेम भाय अकुलाय उठे तुरतै अवधेशा॥
रह्योनदेह सँभार नेह वश भये अधीरा।
कहुँ तरकस तन चीर पर्यो कतहूं धनुतीरा॥
बर्बसउठायशुचिभायकहँडरलगायरघुरायलिय।
लखिभरतरामकीमिलनिशुचितनसुधिभूलीसबहिप्रिय॥

मिलन बतकही कहिबरणै को कविकहँ अगम कर्म मन बानि।
परम प्रेमसों परिपूरण द्वउ तनमन रही तनक नहिंभानि॥
कहौ प्रेम वह बतलावै को कविमति कौन चालपर जाय।
कबिहि भरोसा अर्थाखरको जिमि नट नचै ताल गति पाय॥

स० राम भरत्थकोनेह अकत्थ यथातथ शेश सुभाय सकैना।
शंभुसुरेश रमेशहु को मनलेश जहांपर जाय सकैना॥
मैं मतिमंदकहौं किमि कै वह रंचहु बुद्धि समाय सकैना।
कोटिहु भाँतितेगाड़रि ताँतिमें कोऊसुराग बजायसकैना॥

भरत राम की मिलनि देखिकै देउता हृदय गये भयखाय।
गुरू बुझायो तब समुझे जड़ बर्षन लगे फूल हर्षाय॥

भेंटि प्रेम युत रिपुसूदन को भेंटे बहुरि केवटहि राम।
मिले भरत पुनि लषणलालको लक्ष्मण पगनकीन परणाम॥
ललकि लक्ष्मण लघुभाइहिमिलि बहुरि निषाद लीन उरलाय।
पुनि द्वउ भाइन मुनि बंद सब आशिष पायगये हर्षाय॥
भरत शत्रुहन द्वउ भाइन पुनि सिय पद धूरि लगाई माथ।
फिरि २ प्रणवत लखि सीतातब लियो उठाय परसिशुचिहाथ॥
आशिष दीन्ही सिय मनहीं मन मगन सनेह देह सुधिनाहिं।
सानुकूल लखि जगदम्बा को रह्योन शोच भरत मनमाहिं॥
कोउ कछुकहै न कोउ पूंछै कछु तनकी सुरति कहूको नाहिं।
यकटक चितवत यक एकन तन मनतौ मगनप्रेम निधिमाहिं॥
त्यहिक्षण केवटने धीरज धरि सविधि निहोरि जोरियुगपानि।
नैनवारि भरि शिर पायँन धरि भाषत भयो मनोहर बानि॥
पुरजन परिजन हित मंत्रीगण दासी दास सैन सब मात।
शोकसताये इत आये सब श्रीमुनिनाथ साथ कृशगात॥
शीलसिंधु सुनिगुरु आगम तब सिय ढिगराखि शत्रुहनलाल।
चले ततक्षण अति आतुर गति दीनदयाल धर्म्म पथपाल॥
सहित लक्ष्मण श्रीगुरुको लखि प्रेम समेत कीन परणाम।
धाय उठाये उरलाये मुनि भेंटे उभय बंधु सुखधाम॥
नाम आपनो कहि केवट पुनि कीन दूरिते दगड प्रणाम।
जानि रामजन मुनि भेंट्यो पुनि बर्बसप्रेम पुलकि अभिराम॥
राम भक्ति जगसुख मंगलमय असकहि देव सुमन झरिलाय।
धन्य भाग कहि वहि केवट को साहित सनेह रहे गुणगाय॥
नीचन या सम कोउ दुनियां महँ बड़ावशिष्ठ सरिस कोउनाहिं।
जानि लषण सम त्यहि भेंटे मुनि भक्तिप्रभाव प्रगट जगमाहिं॥
देखि दुखारी सब लोगन कहँ करुणाकर सुजान भगवान।
रह अभिलाषा जस जाके जिय त्यहि तस भेंटि कीन सन्मान॥
पलमहँ सबको मिलि भाई सह कीन्ह्यों दूरि महा दुखदाह।

यह न बात बड़ि रघुनन्दन कहँ जिमि घटकोटि एक रबिछाँह॥
उमँगि प्रेम महँ मिलि केवट कहँ पुरजन सकल सराहैं भाग।
जगमहँ याही फल पावत जन प्रभुपद किहे प्रीति अनुराग॥
देखि दुखारी महतारी सब जनु हिमहनी लताकी पाँति।
मिले केकयीको पहिले प्रभु सहजस्वभाव यथोचित भाँति॥
पायँन परिकै समुझायो बहु दैबिधि कर्म काल कहँ खोरि।
बड़ी प्रबलहै जगभावी यह रंचलगाय मातु नहिं तोरि॥
पुनि सब मातन को भेंटे प्रभु धीरधराय सबिधि समुझाय।
ईश आश्रित यह दुनियाँ सब काहुहि दोष नाहिं हे माय॥
बिप्रतियन सह गुरुपत्नी को कीन प्रणाम ललकि द्वउभाय।
गंग गौरिसम सन्मानी सब आशिष देहिं लेहिं हर्षाय॥
परे सुमित्राके पायँन पुनि दोऊ भाय राम रघुराय।
मिली दरिद्रिहि जनु संपति अति धाय उठाय लीन उरलाय॥
पुनि कौशल्या के पायँन महँ दोऊ भाय परे अकुलाय।
अम्ब उठाये उर लाये द्वउ दीन्हे प्रेम सलिल अन्हवाय॥
हर्ष शोक वह त्यहि औसरको कबि किमि कहै कौन मतिपाय।
खाय बस्तु कछु जिमि गूंगाजन सकै न तासु स्वाद बतलाय॥
सानुज रघुपति मिलि माताको गुरुसन कह्यो पधारिय स्वामि।
मुनिकीआयसुलै पुरजन सब जल थल देखि कीन विश्राम॥
द्विजगण मंत्री अरु माता गुरु लैकै मुख्य लोग सब साथ।
पावन आश्रमको गमने तब लक्ष्मण भरत सहित रघुनाथ॥
आय जानकी मुनिनायक ढिग पगपरिलई शुभाशिष माँगि।
पुनि मुनितिय के पद बन्दन करि सबसों मिलीं प्रेममहँ पागि॥
सीय निहारयो जब सासुन कहँ मूंदे नैन सहमि दुखभार।
परीं बहेलिया वश हंसिनि जनु काह कुचाल कीन कर्तार॥
सियहि देखि तिन दुखपायो बहु लागीं समय सरिस सिखदैन।
दैव सहावै सो सहिये सब कहिये काह वश्य कछु हैन॥

जनकसुता तब उर धीरज धरि नील सरोज नैनभरि बारि।
जाय जायकै सब सासुन ढिग मिली सप्रेम पगन शिरधारि॥
देहिं शुभाशिष सब सीताको शिथिल सनेह बश्य कृशगात।
गंगा यमुनामहँ जबलगिजल तबलगि अचलसीय अहिवात॥
बिकल नेहवश सवरानी सिय बैठन सबहि कह्यो मुनिराय।
पहिले जगगति बतलाई मुनि पुनि परमार्थ कह्यो कछुगाय॥
कह्यो भूपको स्वर्गबास पुनि सो सुनि दुखीभये रघुराय।
नेह आपने ते भूपति को मरण बिचारि गये अकुलाय॥
कठिन बज्रहू ते वाणी कटु सुनिकै लषण सीय बिलखाय।
रोवनलागे दुखपागे सब आजहि मरे मनहुँ नरराय॥
मुनि समुझायो पुनि रघुपतिको तब धरिधीर कुओसर पाय।
नदी निकट चलिगे समाज सह तहँ असनान कीन खगराय॥
त्यहि दिन निर्जल ब्रत कीन्ह्यों सब यावत तहां रहे नरनारि।
मुनिगण सारे कहिहारे हिय तऊ न ग्रहण कीन कहुँबारि॥
भोरभये पर रघुनायक को आयसु जौन दीन मुनिराय।
सो सब कीन्ह्यों सहस भाँतिते श्रद्धा भक्ति सहित मनलाय॥
मुनि बतलाई श्रुतिगाई जस तस पितु क्रिया कीनि भगवान।
भे पुनिपावन जगपावन कर पातक अंधकार हर भान॥
रुई राशि सम अघजारनको पावक सरिस जासु शुचिनाम।
दास सहायक दुखघायक सब दायक चारिपदारथ श्राम॥
शुद्ध भयेसो श्रुति सम्मत अस वाजिब यथा लोक ब्यवहार।
अन्य तीर्थके आवाहनते पावन यथा गंगकी धार॥
शुद्धभये पर दुइ बासर जब और ब्यतीत भये हरियान।
उचित जानिकै मुनिनायक ते तब अस कह्यो रामभगवान॥
होत दुखारी प्रभु सबही इत जल फल फूल मूल नितखात।
मंत्री माता भरतादिक को म्वहिं लखि युगसमान पलजात॥
याते सबको लै जाइय पुर सूनी परी अवध यहि काल।

तजि रजधानी प्रभु आये इत अमरावती गये भूपाल॥
बहुत ढिठाई करि भाष्यों यह सो मम क्षमाकरिय अपराधु।
होय वाजिबी अब यामहँ जस तस प्रभु करौ शोधि मतसाधु॥
हेतु धर्मके तुम दायानिधि कस ना कहौ बचन असराम।
रहि दुइ बासर तुव दर्शन लहि आरत लोग लहैं विश्राम॥
राम वचन सुनि सब समाज जन अति भयभीत भयेखगराय।
बूड़न चाहत जनु वारिधि महँ विकल जहाज भार गरुआय॥
पुनि मुनि बानी सुनि मंगलमय उरमहँ धीरधरी किमि यार।
पाय सामने की बेहरि जिमि जाय जहाज पहुंचि वहिपार॥
अति पय पावन पयस्विनी महँ मज्जन करैं तीनिहूं काल।
रहैं न रोंके अवलोके ज्यहि भागैं भभरि पापके जाल॥
मंगल मूरति को भरि भरि दृग देखैं करैं मुदित परणाम।
राम शैल बन अवलोकन हित जाहिं सिहाहिं देखि शुचिठाम॥
सब प्रकार के सुख छाये जहँ रंच न कतहुँ दुःख को नाम।
झरैं सुधा सम जल झरनागिरि सुखद बयारि बहै सब याम॥
लता वृक्ष तृण बहु जातिन के फूले फले भले छबिछाय।
शिला मनोहर तरु छाया भलि शोभा बरणि कौन पै जाय॥
फूले बारिज बहु तालन महँ झुण्डन भ्रमर करैं गुंजार।
बैर बिसारे घनकानन महँ विचरैं खग मृगादि के हार॥
बन के बासी भीलादिक जन सुंदर शहद सुधा सम स्वाद।
भरि भरि दोनन महँ लावैं तहँ औरौ बिबिध वस्तु उरगाद॥
कंद मूल फल दल अंकुर बहु कहि कहि स्वाद भेद गुण नाम।
देयँ सबन कहँ बहु बिन्ती करि लेयँ न क्यहू बस्तु के दाम॥
कहै जो कोऊ लौटारन कहँ ताको प्रभुकी शपथ खवाय।
अति सनेह युत मृदुबानी कहि देवैं सब प्रकार समुझाय॥
भूँखे भावहि के साधू जन मानत एक प्रेम को नात।
ताते बिनती सुनि काननसों मानिय तात हमारी बात॥

कहँ तुम सुकृती शुचि सज्जनजन कहँ हमनीचजाति सबभाँति ।
दुर्लभ दर्शन लखि पावा यह केवल रामकृपा दरशाति ॥
दर्श तुम्हारे अति दुर्गम इत जस मरुभूमि गंगकी धार ।
भागि पुर्बुले की जागीधौं केवल कृपा करी कर्तार ॥
राम दयानिधि बहु दायाकरि नीच निषाद नेवाज्यो भाय ।
प्रजा कुटुंबिन को चाहिय स्वइ जो शुचि चाल चलै नरराय ॥
अस बिचारि उर असमंजस तजि करियेदया मया लखिनेहु ।
करौ कृतारथ हम नीचन को ये फल मूल अंकुरनि लेहु ॥
तुम प्रिय पाहुन चलिआये इत सेवा योग न भागि हमारि ।
पुण्य पुरानी समुहानी कछु सुखयुत दिवस जाहिं दुइ चारि ॥
काठ पतौआ धन हमरे घर स्वामी तुम्हैं काह हमदेहिं ।
यही हमारी सेवकाई बड़ि बासन बसन चोरि जनि लेहिं ॥
महाअधर्मी दुष्कर्मी जड़ अगणित जीव करत संहार ।
कुटिल कुजाती उत्पाती हम चलत कुचाल कपट व्यवहार ॥
धर्म बुद्धि कस धोखेहू महँ पापै करत राति दिन जात ।
पटके नाते तन डोरा नहिं अस दिन कौन पेटभरि खात ॥
राम दरशको है प्रभाव यह देख्यो तुम्हैं नैनभरि भाय ।
तबते दूषण दुख भागे सब जबते बसे राम इत आय ॥
सुनि बनबासिन की बानी मृदु सबके हृदय जग्यो अनुराग ।
धन्य धन्य कहि सब प्रकारते तिनके भाग सराहनलाग ॥
मिलनि प्रेमकी मृदु बोलनि लखि सीता राम पगन महँ प्रीति ।
अवध निवासिन सुख पायो बहु सरहैं सुभग प्रेमकी रीति ॥
कोल किरातनकी बानी सुनि निदरैं अपन नेह नर नारि ।
श्रीरघुराया की दायाते नौका तरी लोह लै बारि ॥
विचरैं चारिहुदिशि जंगलमहँ प्रतिदिन महामुदित सबलोग ।
दादुर बरही सुखपावैं जस पावस प्रथम पाय जलयोग ॥
श्रीविजयराघवखण्डेअवधकाण्डेभरताचित्रकूटागमनश्चतुर्थोल्लासः ४ ॥

श्रीरघुनंदन पद बंदन करि गणपति गिरा गौरि गुरु ध्याय।
कथा अगारीकी प्यारी फिरि मतिसम कहत बंदिद्विजगाय॥
मगन प्रेम महँ नरनारी सब पलक समान बीति दिन जाय।
वेष धारि सिय प्रति सासुन पहँ सादर करै चरण सेवकाय॥
भेद न जान्योकोउ राघव बिन सासुन सब प्रकार सुख पाय।
दई शुभाशिष सिखसीताको दिनदिन सुखसोहागअधिकाय॥
दूनो भाइनको सीता सह सूध स्वभाव देखि सब भाँति।
कुटिलकेकयी शिरधुनिधुनि तहँ हियमहँ बारबार पछिताति॥
माँगै बिधना ते लज्जितह्वै अब म्वाहिं मीचु देउ यहिकाल।
काहि देखावौं यह निंदित मुख कासे कहौं हृदय को हाल॥
वेद बखानै जग जानै यह प्रभुते बिमुख जौन जन आहिं।
तिन हतभागिन को नर्कहु में लागत कबहुँ ठिकाना नाहिं॥
सबके मनमा असमंजस अस खगपति बनो रहै सब याम।
चलैंकिनाहीं विधिकौनिउँ विधिअबफिरि अवधधाम कहँ राम॥
राति न निद्रा दिन भोजननहिं बाढ्योभरत हृदय बड़ शोच।
डूबति ऊबति जस चहला महँ मछरी हृदय सलिल संकोच॥
काल कुचाली ने माता मिस कीन कुचाल हाल यह हाय।
पाकत शालीकी बाली जस बहुडर सुवा शलभ को भाय॥
राजतिलक अब रघुनंदन को कौन प्रकार होय भगवान।
यतन न एकौ म्वाहिं सूझै कछु गयो हिराय दुःख वश ज्ञान॥
फिरैं जरूरै गुरु अज्ञा ते मुनि पुनि कहब राम रुचि जानि।
मातु कहेते पुर लौटैं प्रभु कही न राम जनानि हठ बानि॥
तौका गिनती म्वहिं सेवक की जो मम कहाकरैं प्रभु राम।
दूसर कुसमय अस ताहूपर है सब भाँति बिधाता बाम॥
बड़ी बुराई हठ ठानौंजो सेवक धर्म कठिन सब भाँति।
युक्ति न एकौ ठहरानी मन शोचत सकल सिरानी राति॥
होत सबेरा शुचि मज्जन करि प्रभु के पगन माहिं शिरनाय।

आय बिराजेनिजआश्रममहँ लियो बोलाय तबहिं मुनिराय ॥
गुरुपद पंकजको प्रणाम करि बैठे भरत सुआयसु पाय ।
बिप्र महाजन अरु मंत्री गण बटुरे सकल सभासद आय ॥
बोले मुनिवर तब औसर सम सुनौ सभासद भरत सुजान ।
धर्म धुरंधर भानु भानुकुल राजा राम स्ववश भगवान ॥
श्रुति मर्यादा के पालन हित गुरु पितु मातु वचन अनुसार ।
दुष्ट सँहारन सुर हितकारन मंगलमयी राम अवतार ॥
नीति प्रीति अरु परमारथ पथ स्वारथ आय यथारथ जौन ।
श्रीरघुनायक सम दूसर जग जानत कौन बतावहु तौन ॥
ब्रह्म विष्णु शिव लै यावत सुर सूरज चंद वृंद दिगपाल ।
जहँलगि छाया विधि प्रपंचकी माया जीव कर्म अरु काल ॥
अहिपति महिपतिकी प्रभुतायत भाषत वेद जहांलग गाय ।
देखहु नीके जिय बिचारकरि सबके शिर रजाय रघुराय ॥
राम रजायसु रुख राखे ते हम सबकेर होय कल्यान ।
मनगुनि सम्मत स्वइ ठानहुँ अब चतुरसयान सबै मतिमान ॥

स० श्रीरघुनायक को अभिषेक यही सुखदायक एक निशानी ।
मंगल मोद उछाह सही शुचि राह यही सबही मनमानी ॥
सो सब लायक श्रीरघुनायक कौनप्रकार चलैं रजधानी ।
तौनउपायकहौ सबशोधिप्रबोधि यथाविधिठानि सयानी ॥

सानी स्वारथ परमारथ महँ बानी कही जौन मुनिराय ।
त्यहिसुनि उत्तरनहिं दीन्ह्यों क्यहुँ बोले तबहिंभरत शिरनाय ॥
भानुवंश महँ भे राजा बहु एकते एक अधिक अधिकार ।
पैदा होवेको कारण तहँ माता पिता अहैं सब क्यार ॥
कर्म शुभाशुभ को दाता फल धाता अहै एक परधान ।
राउर आशिष अस जानत जग सब दुखहरै करै कल्यान ॥
सोई स्वामी तुम रोंकी जिन विधि गति बँधी जासु मर्याद ।
जो हठधारी करि डारी स्वइ टारी कोहु न मोहिं अस याद ॥

यत्न सो मोसन तुम पूंछत प्रभु सो यह अहै मोर दुर्भाग।
सुनि सनेह मय शुचिवानी असि उपज्यो गुरू हृदय अनुराग॥
तात बात तुम फुरभाषी यह केवल कृपा राम की आय।
रामविमुख सुखनहिं स्वपन्योमा आगमनिगम कहतअसगाय॥
कहत बात इक मैं सकुचौं सुत बुधजन तजैं अर्ध सब जात।
रामलषण सिय घरजावैं फिरि तुम द्वउभ्रात जाहु बन तात॥
सुनि शुभवानी शुचि बंधव द्वउ अतिशै हिये गये हर्षाय।
तेज प्रकाश्यो मनभास्यो अस भे नृप राम जिये नर राय॥
बहुत लाभभो सब लोगन कहँ हानिहुँ कछुक तहाँ दिखरानि।
भरत शत्रुहन बन जैहैं पुनि घर कहँ लषण राम सिय रानि॥
दुख सुख दोऊ तुल्य जानिकै रानी रुदन करैं अकुलायँ।
दुइसुत बनका फिरि गमनत हैं दुइ सुत लौटि भवन कहँजायँ॥
भरत अनंदित ह्वैभाष्यो तब कहा सो अवशिकरिय मुनिराय।
जन्मधरे को फल दीजै म्वहिं कीजै पूरि आस यहि ठायँ॥
बसौं जन्मभरि मैं जंगलमहँ यहिते बढ़ि सुपास कछु नाहिं।
सब सुख सुकृतको याही फल देख्यों करिबिचार मन माहिं॥
अन्तर्यामी सियस्वामी सिय तुम सर्वज्ञ तज्ञ जग जान।
जो फुरभाषौं तौ कीजिय प्रभु अपने बचन केर परमान॥
भरत भावते की बानी सुनि देखि सनेह भरो सब गात।
तन सुधि भूली सब काहूको मुनिसह यत समाज रहि तात॥
भरत शीलता की महिमा मित सिंधु अपार धार बड़ि बाढ़ि।
महा निर्वलासी मुनिकी मति शोचति तहाँ किनारे ठाढ़ि॥
करी यतन बहु पारजानको युक्ति न कछू ठीक ठहरानि।
नाव न बेरा नहिं बोहित तहँ ह्वै निरुपाय बहुत सकुचानि॥
चतुर शिरोमणि और कौन अस पावै भरत बुद्धि की थाह।
सरकी सीपी महँ सागर जल सकै समाय कहाँ खग नाह॥
अपने सम्मत महँमुनिको मत मिलत बिचारि भरत द्वउभाय।

सह समाज के चालि आये तहँ जहँ जानकी लषण रघुराय ॥
प्रभु प्रणाम करि शुचि आसनदै मुनिनायकहि दीन बैठाय ।
पुनि मुनि आयसु ते सबही जन बैठे यथा योग्य थल पाय ॥
शोचि समुझिकै मुनि बोले तब औसर देशकाल अनुसार ।
ज्ञान धर्म गुण नीति प्रीति निधि सुनिये राम शील आगार ॥
सबके उरपुर के बासी तुम जानत शुचि सुभाव दुर्भाव ।
पुरजन जननी अरु भाइन कर जाते भला होय रघुराव ॥
यत्न सो कीजै मत लीजै मम आरत कहैं बिचारि न बात ।
दावँ आपने की सूझत है सब बिधि सदा जुआँरिहि घात ॥
सुनि मुनि बानी कह राघव तब नाथ उपाव तुम्हारेहि हाथ ।
राखे राउर रुख सब को हित आयसु किये सत्य यह बात ॥
पहिले आयसु म्वाहिं होवैजो सोमैं करौं मुदित शिर धारि ।
पुनि मुनि ज्यहितेकहि भाषैं जस सो तस करै सकै नहिंटारि ॥
तात बात तुम फुर भाष्यो यह भरत सनेह हस्यो मम ज्ञान ।
भरत भक्ति वश मति भोरीभइ करु सुत मोरि बात परमान ॥
राखिभरतरुचिजो कीजियकछु सो सब नीक सत्यशिवसाखि ।
भावत मोस्यो मन वाही मत याही केर सकल अभिलाखि ॥
बिनैभरत की सुनि आदरसह करिये पुनि विचार मन माहिं ।
करबलोकमतअरु सज्जनमत गहि श्रुतिनीति रीतिपरछाहिं ॥
प्रेम गुरूको लखि भरतथपर बहु आनन्द लह्यो धनुपानि ।
दास आपनो तन मानस बच भरतहि धर्म धुरंधर जानि ॥
गुरु अज्ञा सम मृदु मंजुल शुचि बाणी बिमल कही रघुराय ।
नाथ दोहाई पितु पायन सौं भयो न भुवन भरत सम भाय ॥
जे अनुरागी गुरु पायँनके ते जग भागिमान सब भाँति ।
प्रेम तुम्हारो अस जापर प्रभु ताकी भागि कही किमि जाति ॥
करत बड़ाई लघुभाईकी मुख सामुहें बुद्धि सकुचाय ।
भरत कहा किये है नीको बहु अस कहि राम रहे अरगाय ॥

कह्यो भरत ते मुनिनायक तब सब संकोच छाँड़ि अब तात।
दया अथाई प्रिय भाई सन भाषौ बेगि हृदय की बात॥
पाय राम रुख मुनि बानी सुनि भरत विचार कीन मन माहिं।
गुरु अरु स्वामी यहि समया पर मोपर अति प्रसन्न दिखराहिं॥
छरोभार सब अब मोरे शिर असमन शोचि घरिक चुपधारि।
भये सभा महँ उठि ठाढ़े झट पुलक शरीर नीर दृग ढारि॥
कहब हमारो मुनि भाष्यो सब यहि ते अधिक कहब मैं काह।
जो अभिलाषा रह जियरे मा सो कहि गुरू बताई राह॥
क्रोध न कबहूँ अपराधिहुपर आनत अस स्वभाव प्रभु क्यार।
खुनस न देख्यों खेलत हूं महँ मोपर करत रहे बहु प्यार॥
संग न छोंड़्यो लरिकाई ते कबहुँ न भंग कीनि मम आस।
मैं प्रभु दाया को जानत ढँग हारेहु खेल जितायो दास॥
सकुच नेह बश महूं आजु लग कबहुं न कहे सामुहें बैन।
तृप्त न दर्शन ते कौनिउँ बिधि अबहूं प्रेम पियासे नैन॥
सक्योन सहि बिधि अस दुलार मम दीन्ह्यों नीच बीच यहडारि।
मातु बहाने ढँग कीन्ह्यसि अस दीन्ह्यसि शिर कलंक बैठारि॥
यहौ कहत म्वहिं नहिं सोहत अब अपने कहे भयो भलकौन।
दुष्ट मातु को मैं सज्जन सुत जो अस कहै महा शठ तौन॥
कोदव बाली महँ शाली भल कहँते लागि सकत है भाय।
ताल तलैया की सीपी कस मुक्ता श्रवै कहत अन्याय॥
सपन्यो काहू को दूषण नहिं यह सब आय मोरदुर्भागि।
अपनी करणी को देखत नहिं लेखत वृथा और शिर लागि॥
अपने पापन के समझे बिन दुसरेहि दोष देब भल नाहिं।
मातु छिनारा ते पैदा करि काको पूत बतावै ताहि॥
खोजि चहूंदिशि हिय हार्यों मैं एकहि भाँति अहै भलम्वार।
दयावान अस गुरु आपुहि जहँ स्वामी रमा रमण कर्तार॥
आछो ह्वैहै तहँ अंतिम फल यह मैं लीन भले अनुमानि।

अपने जियकी कहिभाषत हौं झूठी फुरी लेहु प्रभु जानि ॥
राखि प्रेमप्रण पितु छाँड़्यो तन कारण मातु कुमति जगसाखि ।
महा दुखारी महतारी सब देखि न जायँ कहौं कह भाखि ॥
प्रभु बियोगते पुरबासी सब ब्याकुल जरैं महा ज्वर माहिं ।
इन सब अनरथको कारण मैं यामहँ मृषा रंच कछु नाहिं ॥
सो सुनि हियमहँ पुनि चिंतनकरि जो जस कहै सहौं सबबात ।
मोरेइ कारण तौ जननी जड़ कीन्हें घने घने उतपात ॥
पुनि बनगमनब्र सुनिस्वामीको करिमुनिवेष लषण सियसाथ ।
पायँ पियादे नहिं पनहीं लग पहिने चले भयंकर पाथ ॥
प्राण निलज्जे तउ निकसे ना जीवत रह्यौं खाय अस घाय ।
नेह देखिकै फिरि निषादको गयो न हृदय दरारा खाय ॥
अब सब दीख्यौं इन आँखिनसों पहिले सुन्यौं रहै जो कान ।
जियत सहाई शिर आई सब जब तक अहै अधम तन प्रान ॥
जिनकहँ गमनत लखि रस्ता महँ अति तामसी बीछि औ साँप ।
तजैं बिषम विष अनुरागैं मन यह तौ हृदय बिचारौ आप ॥
ते रघुनंदन अरु लक्ष्मण सिय अनहित लाग सबै विधिजाहि ।
ताके लरिकहि ताजि दुस्सह दुख विधना और सहावै काहि ॥
भरत बचन अति व्याकुलता युत करुणा प्रीति नीति शुचि सार ।
सुनिकै सबके मन छायो दुख जनु बारिजबन पर्‌यो तुषार ॥
कथा वार्ता बहु भाँतिन कहि भरतहि बोध दीन मुनि राय ।
तत्क्षण दिनकर कुल भूषण बर बोले उचित बचन रघुराय ॥
ग्लानि न आनौ मन बंधव कछु ईश अधीन जीव गति जानि ।
तीनि काल त्रिभुवन मोरे मत पुण्य समूह तात तुव पानि ॥
तुमपर आनत कुटिलाई जिय हित परलोक लोक नशिजाय ।
दोष लगावैं जे मातहु को ते जड़ बुद्धि ज्ञान हत भाय ॥
सहजे जैहै मिटि प्रपंच सब पाप त्रिताप अमंगल भार ।
लोक सुकीरति परलोकहु सुख सुमिरत हितसहनाम तुम्हार ॥

कहौं सुभावहि सति साखी शिव राखी रहै भूमि तुव तात।
ग्लानि वृथाही को आनत मन छिपै न बैर प्रेमकी बात॥
जायँ मुनिनके लग पक्षी मृग बाधक बधिक देखि भगिजायँ।
जानत अनहित हित पक्षी पशु मानुष गुणनिधान सब ठायँ॥
भलकै जानत मैं भ्राताल्वहिं पै काकरौं यही उर शोच।
म्वहिं तजिराख्यो नृप सत्यब्रत छाँड्यो देह नेह संकोच॥
तिनके वचनन के मेटत महँ बहुतक शोच होय मन माहिं।
त्यहिते बढ़िकै तुव सकोच म्वहिं पै अबकहत बनत कछुनाहिं॥
आयसु दीन्ह्यों गुरु ताहूपर जो तुम कहौ करौं सो आज।
सत्यसंधकी सुनिबानी अस लह्यो समाज सकल सुखसाज॥
इन्द्र डेराने सब देवन सह होत अकाज शोचि अस बात।
राम शरण सब गे मनहीं मन औरन बनत युक्ति की घात॥
फेरि बिचारैं सब आपुस महँ रघुपति भक्त भक्ति बश आहिं।
करि दुर्बासा अंबरीष सुधि निपट निराश भये मन माहिं॥
सहे देवतन दुखबहुदिन तब नरहरि प्रकट कीन प्रहलाद।
रघुपति सेवक की सेवाते जग महँ सब प्रकार अहलाद॥
शिर धुनि कानन लगि भाषैं सब अब सुरकाज भरत के हाथ।
और यतन अब कछु नाहीं है मानत दास सेव रघुनाथ॥
अब सब सुमिरौ हिय भरतथको निज गुण बश्यकीन जें राम।
सब बिधि ह्वैहै सुर कारज तब पैहैं सब प्रकार विश्राम॥
अस मत देवन को सुनिकै पुनि भाष्यो गुरु तुम्हार बड़भाग।
सब मुद मंगल को दायक जग केवल भरत चरण अनुराग॥
श्रीपति सेवक की सेवा जग है सुर धेनु सरिस सुख दात।
यहि सम दूसर हितनाहीं कछु दायक चारि पदारथ तात॥
भक्ति भरत की तुम सबके मन आई भली भई यह बात।
काज बनाई अब विधना सब छाँड़हु शोच हृदय ते तात॥
भरत भावते की प्रभुता असि आँखिन लख्यो जबहिं सुरराज।

सहज स्वभावहि भक्तिभाव ते जाके विवश राम रघुराज ॥
कह्यो देवतन ते डरिये जनि धरिये धीर रंच डर नाहिं।
पूरण जानहुँ निज कारज अब भरतहि जानि राम परछाहिं ॥
मंत्र देवगुरु अरु देवन को सुनि संकोच राम उरजानि।
भार आपने शिर बिचारि सब बहु विधि भरतहिये अनुमानि ॥
हृदय बिचारयो दृढ़ सम्मत यह राम रजाय किहे प्रतिपाल।
सब प्रकार ते भल आपन है सुख सौभाग्य सुगति सबकाल ॥
ममप्रण राख्यो तजि आपनप्रण बहुविधि दया कीनिरघुनाथ।
केकयिनंदन पद बंदन करि बोले बहुरि जोरि युगहाथ ॥
कहौं कहावों का स्वामी अब दायानिधे प्रणत के पाल।
गुरु अरु साहिब द्वउ प्रसन्न लखि अब सब मिटे मोर भ्रमजाल ॥
डरयों वृथा को अपनेही डर यामहँ दोष स्वामि को काह।
भये दिशाभ्रम मग भूलै कोउ तौ का करैं देव दिननाह ॥
मातु कुटिलता गति बिधना की मोर अभाग काल कठिनाय।
हठ करि घाला इन सबहिन म्वहिं पाला तऊ अपन प्रणसायँ ॥
नई रीति नहिं यह राउरकी छिपीन लोक वेद विख्यात।
जग अनभल ते नहिं अनभल कछु तुम्हरे भले भला सबतात ॥
कल्पवृक्ष सम प्रभु स्वभाव शुचि सन्मुख भये विमुखनहिं काउ।
पास गयेते अभिलाषा सम अभिमत पाव रंक अरु राउ ॥
स्वामि सनेहुआ लखि सबही विधि मम संदेह गई सब खोय।
अब दायानिधिविधिकीजियवह जनहितप्रभुहिखेदनहिंहोय ॥
आपु भले हित जो सेवक कोउ स्वामिहिं सकुच देय खलसोइ।
प्रभुकी सेवा हित सेवक को तन मन वचन करै जो कोइ ॥
स्वारथ सबको प्रभु लौटे ते पाले हुकुम कोटि विधि नीक।
यहफल स्वारथ परमारथको शुभ गति सुकृत सारशुचिठीक ॥
विनय हमारी इक सुनिकै प्रभु कीजिय फेरिउचित अनुमानि।
तिलक किसामा सजिलायों सब करिये सुफल ताहिमनजानि ॥

सहित शत्रुहन बन पठवो म्वहिं सबहि सनाथ कीजियेनाथ।
नतरु फेरिये द्वउ भाइन कहँ मैं बन चलौं आपके साथ॥
तीनिउँ भाई बन जाईं नतु सियसह स्वामि जाहिं फिरि धाम।
वाजिब प्रभुके मन आवै जस तस कीजिये सन्त विश्राम॥

स० मोशिरभार दियो कर्तार पै धर्म औ नीति विचार न मोरे।
स्वारथ हेत बनाय कहौं सब आरत के चित चेत न भोरे॥
स्वामिरजायकेजानेबिना जोकहैअपनीरुचिसोंमुख जोरे।
सेवक सो निर्ल्लज्ज महा यहसत्यकहौं करि नाथ निहोरे॥



असतौ अवगुण को सागर मैं स्वामि सनेह जक्त विख्यात।
अब मोरे मन मत भावत यह जाते सकुच लहैं नाहिं नाथ॥
अहै भलाई अब याही महँ सब उत्पात तुरत मिटि जाय।
जाकहँ आयसु जस देवैं प्रभु सो तस करै हृदय हर्षाय॥
भरत वचन सुनि सुर हर्षे सब वर्षे सुमन करत गुण गान।
अवध निवासी असमंजस वश अबधौं काह होय भगवान॥
बनके वासी मन हर्षे सब रहिगे मौन मारि रघुराय।
सकल सभासद मन शोचत भे प्रभु गति देखि गये सकुचाय॥
दूत जनकको चलिआयो तब सुनि मुनि तुरतलीन बोलवाय।
कुशल महीपति की पूंछ्यो तब बोले दूत माथ महिनाय॥
कुशल सहादर प्रभु बूझत यह सोई जानिपरी कुशलात।
नतरु कुशलता कौशलेश के साथै गई जानिये तात॥
नगर अयोध्या अरु मिथिला ते सब जग चौपट भयो बनाय।
कहँलग कहिकै बतलावन अब मुखते कछू कहो नहिं जाय॥
जनक ओरके जन यावत सब कौशलनाथ दशा सुनि कान।
भये शोचवश अति बावर से ह्वै ह्वै बिकल लाग बिलखान॥
दीखबिदेहै त्यहिऔसर ज्यहिं क्याहे नहिं नाम सत्य असलाग।
तियकुचालसुनिनृपब्याकुलकसमणिबिनयथादुखीअतिनाग॥
राजभरत कहँ बन रघुवर कहँ सुनि बहु शोच बश्य नरराज।

सम्मत बूझयो बुध मंत्रिन ते कहहु बिचारि योग्य का आज ॥
हउ असमंजस उर चिंतनकरि कोहुन कछु सलाह तब दीन।
धरि उर धीरज मिथिलापति ने पठये अवध चारि चर बीन ॥
बूझि भरत गति हित अनहितकी आयो बेगि न होय लखाव।
दूत अयोध्या महँ पहुँचे तब देख्यो जाय भरत को भाव ॥
भरत पधारे चित्रकूट कहँ आये दूत लौटि तिरहूत।
जनक सभा महँ कहिगायो सब कीन जो सुयश केकयी पूत ॥
गुरु पुरबासी नृप मंत्री सब सुनि गे नेह वश्य अकुलाय।
भरत बड़ाई करि नीकीबिधि भट साहनी लीन बोलवाय ॥
देश ग्राम पुर रखवारे रखि बहु रथ गज तुरंग सजवाय।
साधि दुघड़िया चलिआये इत मग महँ टिके नहीं नरराय ॥
आजु सबेरे तीरथपति महँ करि असनान यमुन ह्वै पार।
हमैं पठायो सुधि लेबे कहँ इत तुव शरण माहिं सर्कार ॥
साथ छ सातक दै किरात तब दूतन बिदा कीन मुनिराय।
मिथिलापति को सुनि आवत तहँ अवध समाज गई हर्षाय ॥
भो असमंजस रघुनंदन कहँ शोचन लगे इन्द्र मन माहिं।
केकयि रानी शर्मानी बहु बेबश है उपाय कछु नाहिं ॥
यहि विधि सोऊ दिनबीतत भो प्रात अन्हान लगे सबकोय।
बिबिध देवतनकी पूजाकरि माँगैं यथा हृदय रुचि होय ॥
नगर अयोध्या रजधानी करि रानी सिया भूप रघुराज।
सुबस बसावैं सुखपावैं सब भर्तहि करैं राम युवराज ॥
गुरु समाज अरु सब भाइन सह चलिकै राम राज फिरि होय।
राज रामहीं के भोगत महँ हम सब मरैं मांगु सबकोय ॥
यहि बिधि बानी पुरबासिनकी सुनिकै बिरत जाहिं शरमाय।
इतै हकीकति अस बीतातिभै सुनिये अग्र चरित खगराय ॥
मिथिलापति को सुनि आवत तब सभा समेत उठे रघुराय।
मिले जायकै चलि आगे तहँ जाको यथा उचित पद आय ॥

मिलि मिलायकै सह समाज तब चले लिवाइ महीपहि भाय।
ताकी उपमा के कहिबे महँ मो मति बार बार सकुचाय॥
प्रभुको आश्रम स्वइ सागर जनु पूरया भरो शांत रस नीर।
नृपकी सैना सो करुणा सरि मानहुँ लियेजात रघुबीर॥
जात डुबावति द्वउ दिशिके जनु बड़े कगार ज्ञान बैराग।
बचनशोकयुत नदनारास्वइ बिचबिच मिलतजात बड़भाग॥
शोच उसाँसै सोइ लहरी जनु तट तरु धीर्य देत बिनशाय।
जोर धारहै दुख तीक्षण तहँ भय भ्रम भवँर रहीं भवँराय॥
तामहँ नौका सो बिद्या बड़ि बुधजन जानि लेहु मल्लाह।
यतन न आवत त्यहि खेवनकी लग्गी बुद्धि न पावत थाह॥
कोल किरातादिक बनचर ते पंथक थके देखि हिय हारि।
मिलीआयजब थल सागरमहँ तबअकुलाय उठ्यो निधिबारि॥
राज समाजै द्वउ व्याकुल अति धीरज लाज ज्ञानहै नाहिं।
भूप रूप गुण शील सराहिकै शोचैं शोच सिंधु अवगाहि॥
महा दुखारी नरनारी सब कहैं सक्रुद्ध वचन बिलखाय।
दुष्ट विधाता यह कीन्ह्यों कह याकी कृत्य जानि नहिं जाय॥
सिद्ध तपस्वी सुर योगी जन देखि विदेह दशा त्यहि काल।
भयो न समरथ कोउ उतरन कहँ अगम सनेहनदी खगपाल॥
जहँ तहँ मुनियन समुझायो बहु तब कछु चेत लह्यो नरनारि।
कह्यो वशिष्ठौ नृप विदेहते धरिये हृदय धीर की पारि॥
मुनि वशिष्ठ के समुझाये ते धीरज लह्यो जनक भूपाल।
राम घाट महँ करि हनवन पुनि सबजन टिके तहाँ ततकाल॥
सो दिन बीत्यो बिन पानी के खगमृग काहु न कीन अहार।
राति व्यतीते फिर मज्जन किय तौलौं भयो आय भिनुसार॥
नगर अयोध्या अरु मिथिलाके जेते रहे विप्र मुनिराय।
कथा वार्ता कहि कोटिन विधि सब नर नारि दये समुझाय॥
कह्यो राम तब मुनि कौशिक ते बिन जल रहे कालिह सबनाथ।

मुनिकह वाजिब तुमभाषत सुत कालिहिन ग्रहण कीनकोहुँपाथ ॥
पहर अढ़ाइक दिन आजौगा सुनि अस कह्यो जनक भूपाल ।
इहां न वाजिब हम काहू को करिबो अन्न आदि आहार ॥
यह मत सवही को लाग्यो भल चले नहान रजायसु पाय ।
कंद मूल फल त्यहि औसर तहँ लै बहु भील पहूंचे आय ॥
सब कहँ आदर सह वशिष्ठ मुनि भरि भरि भार दीन पठवाय ।
पूजि पितर सुर गुरु अतिथिन कहँ सब संतुष्ट भये फलखाय ॥
दिवस चारि भे गत याही बिधि रामहिं देखि सुखी सब आहिं ।
दुहुँ समाजमन अभिलाषा अस बिनसियराम फिरबभलनाहिं॥
कोटि स्वर्ग सम सुखदायक अति सीता राम संग बन ठाम ।
रामजानकी अरु लक्ष्मण बिन ज्यहि घरभाव ताहिबिधिबाम ॥
अति पुनीत सरि मंदाकिनिके तीनौं काल माहिं असनान ।
चित्रकूट गिरि बन घूमब भल देखब नैन राम भगवान ॥
चौदह बर्से इक निमेष सम जानि न परैं जात महँ तात ।
भागि कहाँअस सबलोगन की यहि विधि होत परस्परबात ॥
मातु सुनैना त्यहि औसर पर दासी एक दीनि पठवाय ।
देखि सुऔसर फिरि आई वह रानिहिं खबरि जनाई आय ॥
गई सुनैना चलि तहँवाँ फिरि जहँ पर सीय सासुको बास ।
मिलीं परस्पर महरानी दुउ मगन सनेह सिंधु लै सांस ॥
मातु कौशला ने आसन दै आदर सहित लीन बैठाय ।
करुणा बानी वहि समया की सुनि पाथरौ पसीजत भाय ॥
अतिव शोच्च वश सिय माता कह टेढ़ी बुद्धि विधाता केरि ।
जो पय फेना पबि टाँकीते फोरत समय विषमता हेरि ॥
नीक पदारथ है अमृत सो केवल कानन परै सुनाय ।
बिषको देखत सबआँखिन सों कोउकोउ ताहि खाय मरिजाय ॥
कौवा खूसट अरु बकुला बहु जहँ तहँ सब कहँ परैं दिखाय ।
हंस कहन को हैं मानस महँ विधि कर्तव्य कठिन अस आय ॥

कह्यो सुमित्रातब दुःखित ह्वै बिधि गति अति कराल सबकाल।
जोसृजि पालै अरु घालै पुनि जैसे स्वांग बनावत बाल॥
दूषण काहू को नाहीं कछु तब अस कह्यो कौशला रानि।
मिलै कर्मको फल दुनियांमहँ दुख अरु सुक्खलाभ अरु हानि॥
वृथा न शोचिय महरानी अब बिधि परपंच अचल असजानि।
हानि आपनीलखि शोचियसखि नृपको जियब मरब उरआनि॥
सत्य बात यह सिय माता कह सुकृती महा अवधपति रानि।
करौं बड़ाई मैं इनकी किमि सकुचत कहत माहिं मम बानि॥
कह्यो कौशला पुनि गद गद हिय मोकहँ शोच भरतको बाढ़ि।
लषण रामसिय बन जावहिं तौ आगे अधिक भलाई ठाढ़ि॥
ईश दया अरु तुव आशिष ते सुत सुतबधू गंग की धार।
कहँ लग गावों कहि तिनके गुण नहिं असबुद्धि दीनि कर्तार॥
राम दोहाई मैं खाई ना कबहूं कहौं तौन करि रानि।
भरत शील गुण अरु भायपको वर्णत बानि बुद्धि सकुचानि॥
मोसन अवनीपाति भष्यो बहु जानौ सदा भरत कुलदीप।
सोई परिच्छा मिलि आई सब जस कछु कह्यो रहै अवनीप॥
कहँलग तुमका समुझावों मैं हौ तुम नृप विदेह की रानि।
पाय सुऔसर तुम राजा ते मम हुति कह्यो चह्यो असबानि॥
राखिय लच्मण कहँ कौनिउँ विधि गमनैं भरत राम के साथ।
होय भलाई बड़ि यामहँ जो मानैं यह सलाह नरनाथ॥
शोच भरत को है मोकहँ बहु गूढ़ सनेह जासु मनमाहिं।
बिना राम के त्यहि काहू थल रहिबो नीक लगत स्वहिं नाहिं॥
मातु कौशला की बानी सुनि करुणासिंधु मगन सब नारि।
धन्य धन्य करि नभ प्रसून झरि भये अनंद सिद्ध सुर झारि॥
कह्यो सुमित्रा तब धीरज धरि अब द्वै दण्ड बीतिगै राति।
उठीं तड़ाकै कौशल्या तब करुणा अंग अंग दरशाति॥
कह्यो सुनैना ते आदर सह करिये गमन भयो अति काल।

कितौ ईश गति है हम का अब कितौ सहाय जनक महिपाल ॥
वचन नम्रता युत सुनिकै अस पायँन परी जनककी रानि ।
राम जननि तुम प्रिय दशरथकी कसना कहौ उचितअसबानि॥
जे जन समरथ ते नीचहु को आदर करैं सदा सब काल ।
धूम हुताशन अरु पर्वत तिन धारैं माथ सत्य यह हाल ॥
कर्म वचन मन नृप सेवक तुव सदा सहाय महेश भवानि ।
योग तुम्हारे जग दूसर को भानु सहाय दीप किमि मानि ॥
राम जाहिं बन सुर कारज करि दरि दल दुष्ट निशाचर भारि।
पलटि अयोध्या महँ करिहैं फिरि अविचल राज प्रजासुखकारि॥
राम बाहुबल ते निज निज थल सुखसे बसैं देव नरनाग।
प्रथमैं भाष्यो याज्ञवल्क्य यह मृषा न होय देवि मुनि बाग ॥
असकहिपायँनपरिसप्रेमपुनिसियहितबिनैबिबिधबिधिभाखि ।
सिय की माता तब सीतासह गमनी माथ सुआयसु राखि॥
मिली कुटुंबिन को सीता तहँ जो ज्यहि योग ताहि तेहि भांति ।
वेष तपस्वी लखि सीता को सबके हृदय रंज अधिकाति ॥
मुनि वशिष्ठ की लै अज्ञा तब आये जनक आपने बास ।
वेष विलोक्यो तहँ सीता को मानहुँ आय तपस्या खास ॥
हृदय लगायो तब सीता को पुलकावली गई तनछाय।
जल बर्सायो द्वउ नैननते पाहुनि प्रेम प्राण प्रिय पाय॥
प्रेम पयोनिधि उमड़ान्यो उर भो नृपमन प्रयाग त्यहि काल ।
सिय सनेह को बट बाढ़त तहँ बैठो राम प्रेम बय बाल ॥
ज्ञान सो जानहुँ चिरंजीव मुनि बूड़त जनु सनेहनिधि माहिं ।
लह्यो सहारा तहँ बालकको और उपाय बनत कछु नाहिं ॥
मोह विकल मति नहिं विदेह की महिमा राम प्रेम की याहि।
जामहँ बूड़त ज्ञान योग सब को कहि सकै कहां लग ताहि ॥
वेष तपस्वी लखि सीता को तोषे बहु विदेह महिपाल।
कीनसुता तुम कुल पावनद्वउ जगमहँ बढ़यो सुयशअतिआल॥

तुव यश सरिता सुर सरिता सम बही करोरि भुवन महँ धार ।
महि महँ तीनिहिं थलगंगा के गंगानिधि प्रयाग हरद्वार ॥
साधु समाजन के तीरथ बहु तुव यश नदी कीन महि माहिं ।
कहँ लग गावों गुण पुत्री तुव भाषत शेश शंभु सकुचाहिं ॥
अपनि प्रशंसा पितुमुखते सुनि बहु सकुचानि जानकी रानि ।
मात पिताने सिख आशिष दै हृदय लगाय लीन सुखमानि ॥
कहै न सीता मन सकुचै बहु रजनी यहां बसब भल नाहिं ।
लखि रुख रानी कह राजाते सरहत शुचि स्वभाव मन माहिं ॥
बार बार सिय हिय लगायकै कीन्ह्यों बिदा सविधि सन्मानि ।
जानि सुऔसर पुनि भरत्थको कह सब हाल रानि मृदुबानि ॥
सुनि मिथिलापति सुख पायोअति केकयि सुवन केर व्यवहार ।
है उदार अति लहन पार मति सोन सुगंध सुधा शशि सार ॥
तन मन पुलके जल नैनन भरि भरत स्वभाव सराहन लाग ।
भवदुख मोचनि कथा भरतकी बरणत प्रिया उपज अनुराग ॥
गणपतिफणपति शिव शारद बिधि नारदआदिमहामतिमान ।
कविकोविद कुल जगयावत सब भरतप्रभाव कहत सकुचान ॥
जानत रघुपति त्यहि नीकीबिधि पै मुख भाषि सकैं नहिंरानि ।
निरुपम पूरुष गुण सागर वर भरत समान भरत को जानि ॥
भाषिभरतकोइमिस्वभाव पुनि तियरुख जानिकहतनृपज्ञानि ।
लौटैं लक्ष्मण भरत जायँवन यहमत सबहिं लीनभल मानि ॥
पै महरानी मैं पूंछौं यह सो तुम मोसन कहौ बुझाय ।
प्रीति पुनीतम भरत रामकी सो वह तर्कि कौन विधि जाय ॥
नेह राखिबो सदा एक सम भर्तहि तासु हद प्रिय जानु ।
यद्यपि ममता अरु करुणा के शुचि मर्याद राम कहँ मानु ॥
सारे स्वारथ परमारथ सुख स्वपंन्यो भरत निहारे नाहिं ।
राम चरण रति सति साधनफल है यह मंत्र भरत मनमाहिं ॥
राम रजायसु धोखेहू महँ कबहूं भरत टारिहैं नाहिं ।

प्रियानेह वश कछु शोचौ ना अस दृढ़ जानिलेहु मनमाहिं ॥
राम भरत के गुण भाषत इमि राजहि बीति गई सब राति ।
जगीं समाजै भिनुसारे द्वउ नित की क्रिया कीनि वहि भांति॥
हनवन करिकै रघुनंदन प्रभु गुरु ढिग जाय पगन शिरनाय ।
हाथजोरि कै मृदु बाणी सों बोलत भये सुऔसर पाय ॥
प्रजा भरत अरु महतारी सब सहत कलेश यहां बन माहिं ।
सह समाजके श्रीमिथिलापति संकठ सहत कहत सकुचाहिं ॥
होय वाजिबी सो कीजै प्रभु सबको भला नाथ के हाथ ।
असकहिरघुपति उरसकुचे अति पुलकेलखिस्वभावमुनिनाथ॥
तुम बिन राघव द्वउ समाज कहँ लागत नर्क सरिस सुखसाज ।
तुम्हैं छाँड़िकै घरभावै ज्यहि त्यहि माति हनी डारि विधिगाज ॥
जरै तौन सुखकर्म धर्म सब जहँ नहिं राम प्रेम परधान ।
सबके माथे पर आयसु तुव सबकी गति सुजान तुमजान ॥
आप आश्रम को चलिये अब असकहि विकल भये मुनिराय ।
पायसु आयसु मुनि नायक को निजथल गये राम शिरनाय ॥
मिथिलापति पहँ चलि आये मुनि राघव कथन कीन सबगान ।
महाराज अब ढँग कीजिय वह जाते होय सबहि कल्यान ॥
शुचि सुजान अरु ज्ञानवान अति धर्म धुरीण धीर नरपाल ।
तुम बिन टारै असमंजस यह ऐसो को समर्थ यहि काल ॥
सुनि मुनि बानी नृप विदेह के उमँग्यो हृदय माहिं अनुराग ।
दशा देखि सो नरनायक की उरते भाग ज्ञान बैराग ॥
लाग बिचारन मन अपनेमा आये इहां कीन भल नाहिं ।
अब पछिताये ते होवै का प्रथम न शोचि लीन मनमाहिं ॥
रामहिं बन दै नृप त्याग्यो तन प्रण अरु प्रेम निबाह्यो भाय ।
हम यहि बनते दै दूसर बन लौटब मुदित ज्ञान बढ़ाय ॥
चले भरत पहँ पुनि धीरज धरि राज समाज साथ मुनिनाथ ।
भरत अगारी चलि लीन्ह्यों तब कीन प्रणाम जोरि द्वउहाथ ॥

लाय आश्रम महँ आसनदै दीन्ह्यों यथा योग्य बैठाय ।
बोले मिथिलापति औसर त्यहि सुंदर बचन नेह सरसाय ॥
तुमकहँ मालुम है नीकी विधि रामस्वभाव भरत मतिमान ।
ताते तुमसन मैं भाषौं कछु समय समान लेहु सो जान ॥
पर्म धर्मरत शुचि सत्यब्रत शील सनेह देह रघुनाथ ।
सहैं कुसंकठ अब सकोच वश कहौ सो करैं हर्षके साथ ॥
ज्ञानी भूपति की वानी सुनि बोले भरत नैन भरि वारि ।
पूज्य पितासम मम राउर अरु गुरु समहित न बाप महतारि ॥
कौशिकादि मुनि अरु मंत्रीगण इकते एक महा मतिमान ।
आप ज्ञाननिधि विद्यमान जहँ सुमति सयान अज्ञतमभान ॥
अज्ञापालक शिशु सेवक यह वाजिब सीख देहु त्यहि नाथ ।
सो मैं करिहौं मुद भरिहौं उर भाषौं सही जोरि युग हाथ ॥
यहि समाज महँ राउरहीको बूझब कहब नीक दिखराय ।
मन मलीन मैं मति बावर अति बोलौं कहौं कौन गति पाय ॥
तद्यपि स्वामीके पूंछे पर छोटे बदन कहौं बड़ि बात ।
दई निर्दई को टेढ़ो लखि अनुचित क्षमा कीजिये तात ॥
वेद पुराणन में प्रमान भल सेवक धर्म कठिन जग जान ।
स्वामिधर्म अरु निज स्वारथ ते अहै बिरोध कीन अनुमान ॥
जैसे अंधा अरु बहिरा को समुझब भिन्न एक मत नाहिं ।
सुनैन वह अरु वह देखत नहिं सोई दशा अहै यहि माहिं ॥
राखि राम रुख अरु धर्मब्रत मोकहँ पराधीन जन जानि ।
सबको सम्मत हित चिंतन करि करिये वही प्रेम पहिंचानि ॥
भरत बचनसुनि गुनि सुभावशुचि सहित समाज सराहतराउ ।
धन्यभरतगति रति सुंदरमति अतिशैअकथ जासु परभाउ ॥
सीध कठिनअति बहु सुंदर मृदु अक्षर तनक अर्थ अधिकार ।
बचन भरत के यहि प्रकारके सहजे समुझि सकै को यार ॥
देखि परै ज्यों मुख शीशा महँ शीशा अहै आपने हाथ ।

गहि न जाय मुख त्यों अद्भुत अति बाणी भरतकेरि खगनाथ ॥
भरत भावतेकी बानी सुनि सबरी सभा उठी यक साथ।
जायपहूंची त्यहि आश्रममहँ जहँ पर देव नलिन निशिनाथ ॥
इतै हकीकति अस बीतति भै उत गति सुनौ देवतन केरि।
प्रथम देखि गति मुनि नायक की फेरि बिदेह सनेहहि हेरि ॥
राम भक्ति मय लखि भरत्थको सुर स्वारथी हहरि हिय हारि।
लगे बिचारन सब आपुस महँ होन अकाज गहौ छल पारि ॥
सुमिरण कीन्ह्यों पुनि शारद को देवी दया करौ यहि ठाहिं।
फेरु भरतमति करि माया निज पालहु सुरन डारि छल छाहिं ॥
विन्ती देवन की सुनिकै तब स्वारथ वश्य सबहि जड़ जानि।
देवि सयानी शुचि बानी पुनि बोली हृदय माहिं अनुमानि ॥
फेरु भरत मति अस भाषौ सब मोसन आपु स्वारथहिपाय।
नैन हजारक तउ सूझत नहिं ऊंच सुमेरु मेरु कस आय ॥
माया भारी विधि हरि हर की सोन भरत मति सकै निहारि।
तहँ फिरि गणना कहँ औरेकी रंचहु भेद सकै जो डारि ॥
सो मति बावरि करि देवे कहँ मोसन कहौ कि करौ उपाय।
भला चंद्रमा की चोरी करि चांदनि कहौ कौन दिशि जाय ॥
सदा सर्वदा भरत हिये महँ सीताराम करत हैं बास।
टिकै कौन विधि अंधकार तहँ जहँ पर सदा भानु परकास ॥
अस कहि बानी विधि लोकैगै देवन कीन कुसम्मत ठाट।
माया भारी राचि प्रपंच बहु डारी सबहि शिरे उच्चाट ॥
शोचत सुरपति इमि कुचाल करि काज अकाज भरत के हाथ।
गये जनक उत प्रभु आश्रम महँ अति आदर्यो सबहि रघुनाथ ॥
धर्म पंथ गहि वहि औसर सम बोले वचन तहां मुनिराय।
जनक भरत को कहि प्रसंग पुनि भरत कहावति कही बनाय ॥
देहु सुआयसु जस राघव तुम सो सब करैं यहै मतम्वार।
हाथ जोरिकै रघुनायक तब बोले वचन समय अनुसार ॥

जहँ पर राउर अरु मिथिलापति अहैं विराजमान त्यहि ठाम।
अहै भदेसिल मम भाषब सब इतना जानिलेहु मति धाम॥
राउर राजा को आयसु जस होई वही सही सब भाँति।
फिरि बिचार नहिं कछु काहू को राउर शपथ टारि किमि जाति॥
राम वचन सुनि मुनि मिथिलापति सहित समाज रहे सकुचाय।
देत न उत्तर बानिआयो कछु ताकत भरत ओर ललचाय॥
सभा सकोची लखि केकयिसुत धीरज धर्यो कुऔसर पाय।
नेह सँभार्यो जस विंध्याचल बाढ़त घटज निवार्यो भाय॥
गुण गण जगकी जन यत्री सो मानहुँ बुद्धि धरित्री आय।
शोक प्रबल सो हिरण्याक्ष है ताने हर्यो ताहि बरिआय॥
भरत ज्ञान सो बड़ बराह जनु उधर्यो अनायास त्यहि काल।
सादर सबके पग प्रणाम करि बोले समय सरिस खगपाल॥
है अति अनुचित मुख कोमल ते बचन कठोर कहब यहिठाम।
क्षमा कीजिये सब सज्जन जन मो पर जानि बिधाता बाम॥
कियो शारदा को सुमिरन हिय सो मुख कमल विराजी आय।
स्वामि पगन महँ करि प्रणाम पुनि बोले सुमिरि सियारघुराय॥
मित्र स्वामि गुरु पितु माता प्रभु अंतर्यामि पूज्य सबयाम।
पालक शरणागत साहेब शुचि शील निधान ज्ञान गुणधाम॥
गुण के गाहँक अघ औगुण के दाहक अति समर्थ सबकाल।
स्वामी सदृश यकस्वामिहिं जग कीन्ह्यों भली भांति मैं ख्याल॥
स्वहिं समान मैं सौंह स्वामि की दूसर जगत पोच अस नाहिं।
ज्यहि लगि स्वामी दुखपायो अस आयो इहां कठिन बनमाहिं॥
किह्यों ढिठाई फिरि ताहूपर प्रभु पितु वचन मोह बश टारि।
सह समाजके चलिआयों इत सोउन ख्याल कीन सुखकारि॥
जग महँ यावत ऊंच नीच अरु भल बेकार परत दिखराय।
अमी अमर पद बिष मीचहु लगि भाषत जितक वेद गोहराय॥
राम रजायसु उल्लंघै अस देखा सुना कतौं कोउ नाहिं।

तौन ढिठाई मैं कीन्हीं स्वउ स्वामी कछुन धरी मन माहिं ॥
आपु भलाई अरु दायाते कीन्ह्यों सब प्रकार भल मोर ।
भूषण सदृश भे दूषण सब पायों सुयश चारु चहुँ ओर ॥
रीति रावरे की महिमा मित सुंदर वाणि शुद्ध व्यवहार ।
जगमहँ नीकी विधि जाहिरहै आगम निगम करत विस्तार ॥
कूर कुबुद्धी महा कुटिल खल नीचनिशील कलंकी जौन ।
महिमा स्वामी की कानन सुनि आये शरण सामुहें तौन ॥
केवल पग महँ शिरनाये ते आपन जानि लीन अपनाय ।
दोष बिचारे नहिं ताके कछु गुण गण कहे सभा बिच जाय ॥

स० गणिका गज व्याधअजामिलसे खल संकुलजेश्रुतिगायगये ।
शवरी रयदासधना सदनादि महा अघराय कुभाय ठये ॥
कवि वन्दिगनायककहै कहँलौं यहि भांति निकाय बतायदये ।
रघुरायसही शरणाय तिन्हैं जन जानि सदा अपनायलये ॥

दास सहायक को साहब अस दूसर जग मा परै दिखाय ।
करत आपसम सेवकहू कहँ आपु समान साज सजवाय ॥
भूलि न समुझत निज करणीको सेवक सकुच जात सकुचाय ।
अस शुचि स्वामी नहिं दूसर कोउ भुजा उठाय कहौं गोहराय ॥
बंदर आदिक पशु नाचत अरु शुक सारिका पढ़त बरबानि ।
सो वह गुणगति नट पाठकके है आधीन लीन मैं जानि ॥
तिमि सुधारि जन शुचि स्वामीने कीन्हें साधु सुजन शिरमौर ।
पालन करिहै को दयालु बिन आपन बली बिरद सब ठौर ॥
कहँ लग गावौं गुण स्वामी के जाको वेद न पावत पार ।
हिय अभिलाखा को पूरण करि राखा सब बिधि मोर दुलार ॥
निपट ढिठाई मैं कीन्ह्यों यह दीन्ह्यों स्वामि अदब सब डारि ।
ताहि क्षमापन अबकीजे प्रभु दुखी विचारि दया उर धारि ॥
शील शिरोमणि शुचि स्वामीते बहुतौ कहब आय बड़िखोरि ।
नाथ सुआयसु अब दीजे म्वहिं सबविधि सबै सुधारियमोरि ॥

प्रभुपदपंकज की सौगँद करि निज रुचि सरिसकहौंशुचिमानि।
निश्छल सेवा निज स्वामी की स्वारथ रहित कर्म मन वानि॥
अज्ञा पालन सम दूसरि नहिं पावै सो अवश्य अब दास।
प्रेम मग्न भे कहि याबिधि बच पुलक शरीर नैनभरि आंस॥
गहे बिकल ह्वै प्रभु पंकज पद दशा सो कहि न जाय खगराय।
आदर कैकै मृदु बाणी सों लीन्ह्यों राम निकट बैठाय॥
भरत बिनै सुनि गुनिस्वभावशुचि शिथिल सनेह सभा रघुराज।
मुनि अरु मिथिलापति सरहतबहु भायप भरत भक्तिको साज॥
भरत प्रशंसा करि देउता सब नभते फूल रहे बर्साय।
सबजन व्याकुल निशिआवत जनु कमल समान रहे सकुचाय॥
दुहुँ समाज के नरनारिनको अतिशय दुखी देखि छल डारि।
मूरुख मघवा फिरि ताहूपर मंगल चहत मुये को मारि॥
कपट कुचाली सुरनायक शठ चाहत पर अकाज निज काज।
छली काक सम पाकशत्रु गति छलते कबहुँ न आवत बाज॥
प्रथम कुमतिकरि छल कीन्ह्योंबहु सबकेशिर उचाट दियडारि।
सब जन मोहे सुर माया ने सके न राम प्रेम ते टारि॥
भयो न मन थिर उच्चाटन वश चन वन चन सोहात घरजाब।
दुविध मनोगति ते व्याकुल जन संगम सिंधु सरित जसआब॥
दुचिते कतहूं चित लागत नहिं कहैं न एक एकते भेद।
असमंजस बश पुर बासी सब सबके हृदय समान्यो खेद॥
भरत जनक मुनिगण मंत्री सब साधु सचेत छाँड़ि खगराय।
सब कहँ लागी सुर माया तब मति सम यथायोग्य जन पाय॥
लोग दुखारी लखि दायानिधि लीन्ह्यों हृदय माहिं असजानि।
मम सनेह अरु इन्द्र कपटते सबकी बुद्धि लगति घबड़ानि॥
राउ सभा महिसुर मंत्री गुरु इनहुँन की मति गई हेराय।
भरत भक्ति ने गहिराखी सब मुखते कहिन सकत कछुभाय॥
चित्र लिखे से रघुनायक तन ताकत हृदय माहिं सकुचात।

बचन सिखे से मुख बोलत जनु शिथिल सनेहवश्य सबगात ॥
प्रीति नम्रता भरत कुवँर की सुन्दरि बिनय बड़ाई चारु ।
नीकी सुनिबे महँ लागति अति वर्णब बड़ो कठिन है कारु ॥
जासु भक्ति के लवलेशहि में मगन विदेह मुनीश्वर भारि ।
महिमा ताकी कवि गावै किमि शारद कहत जात ज्यहिहारि ॥
भक्ति भावतें मति पाई जसि तस कछु कह्यो हृदय अनुमानि ।
महिमा दीरघलघुआपुहिलखि कविकुलकानिमानि सकुचानि ॥
वेद शास्त्रहू को सीधो नहिं भरत प्रभाव बखानन माहिं ।
लघु मति कवि की चंचलता को करिये क्षमा और कछुनाहिं ॥
दशा देखि कै असि सबही की शील सनेह दया के धाम ।
अमृत सानी शुचि खानी सी वानी कह्यो ततत्क्षण राम ॥
धर्म धुरंधर प्रिय भ्राता तुम जानत लोक वेद ब्यवहार ।
परम पियारे सब प्रकार म्वहिं भरत कुमार शील शुचिसार ॥
मन बच कर्मन ते उज्ज्वल मति अतिशै तुम समान तुमतात ।
गुरुसमाज महँ लघु बंधव गुण कुसमय क्यहि प्रकार कहिजात ॥
रीति पुरातनि सूर्यबंश की जानत भली भाँति तुम भ्रात ।
पितु को उज्ज्वल यश यावत सब सोऊ जगत माहिं विख्यात ॥
लाज बड़ेन की बड़ि समाज महँ समय समान मंत्रको ठान ।
उदासीन अरुहित अनहित के मनको भाव करब अनुमान ॥
भेद तुम्हारो सब जानो है आपन मोर धर्म कल्यान ।
गुप्त वार्ता अस कौनिउँ नहिं जाहि न लेहु तात तुमजान ॥
मोहिं भरोसा सब प्रकार तुव तद्यपि कहौं समय अनुसार ।
तात तात बिन सब बातन को कुलगुरु कृपाभई रखवार ॥
नतरु कुटुंबी पुरवासी अरु हम सब सहित प्रजा शिरभार ।
परतै दुखको सब प्रकार ते सो गुरु दया दीन सब टार ॥
जो बिन औसर रवि अथवैं कहुँ को न कलेश लहै जगमाहिं ।
तात उपद्रव विधि कीन्ह्योंतस मुनिमिथिलेश लीनसबथाम्हिं ॥

राज काज अरु पति लज्जा सब धरती धर्म और धनधाम।
सबको पालिहि गुरु प्रभाव वर आगे भला होय परिणाम॥
हमरो तुम्हरो सह समाज के घर बन गुरु प्रसाद रखवार।
तात अँदेशा कछु मानौं ना जानौं गुरुहि शिरे सबभार॥
मात पिता अरु गुरु स्वामी को वेश निदेश शेश सम आहि।
धर्म धराको धरवैया शिर निश्चय जानि लेहु मनमाहिं॥
करौ करावो सो मोसन तुम पालक सूर्यबंश के होउ।
यहिते बढ़िकै शुचि साधन अरु दूसर नहीं जगत महँ कोउ॥
सो बिचारि कै सहि संकठ बड़ करिये सुखी प्रजा परिवार।
सब मिलि बाँटौ यहि विपदाको एकन धारि सकै शिरभार॥
तुम्हैं अवादा भरि कठिनो है पै का करौं यतन कछु नाहिं।
होत सहायक शुचि बंधवइमि कठिन कुठावँ कुऔसर माहिं॥
जानि बूझि कै त्वाहिं कोमल तन धारन कहौं कठिनता तात।
घाव लगत खन तरवारी को आड़त सबै हाथरखि गात॥
सेवक कर पद अरु नैनन सम स्वामी मुख समान जब होय।
वही पुनीतम प्रीति रीति है सरहत सबहि भांति सब कोय॥
रामचंद्र की सुनि बानी शुचि मगन समाज प्रेम निधि माहिं।
शारद साधी चुप देखत गति कहिबे योग्य जौन है नाहिं॥
भये भरत मन आनंदित अति सकल विषाद गयो मिटिभाय।
हर्षै गूंगा मुख बोलत जस तस गति तहां भई खगराय॥
करि पद बंदन रघुनंदन के बोले हाथ जोरि शिर नाय।
साथगये को सुख भेट्यो प्रभु जीवन लाभ यथा विधि पाय॥
होय नाथको अब आयसु जस सादर करौं शीश पर धारि।
देहु सहारा प्रभु मो कहँ अस जाते मिलै अवधि की पारि॥
प्रभुके राजतिलक करिबे को आयसु दियो रहै मुनिनाह।
ताते लायों इत तीरथ जल ताको होत रजायसु काह॥
एक लालसा बड़ि हियरेमा सभय सकोच जात कहि नाहिं।

वंधव भाषौ किन भाष्यो प्रभु जो लालसा होय मन माहिं॥
कह्यो भरत तब प्रभु अस्थल यह पावन परम रम्य दिखराय।
प्रभु पद रेखासों अंकित महि आयसु होय बिलोकौं जाय॥
आयसु दीन्ह्यों रघुनायक तब आवहु अवशि देखि बनभाय।
मुनि प्रसाद ते वन मंगल निधि पावन परम रह्यो छविछाय॥
जहँपर आयसु देहिं अत्रि मुनि तहँ पर धस्यो तीर्थ को पानि।
भरत भावते सुख पायो बहु सुनि सुखधाम राम मुख वानि॥
भरत रामको सुनि प्रसंग शुचि सुर स्वारथी फूल बर्साय।
धन्य भरत धनि रघुनायक कहि आनँद सहित रहे गुणगाय॥
हर्ष शोच वश द्वउ समाज जन सुनि सुनि रामभरत संबाद।
भरत भलाई को सरहत यक यक गुण करत राम के याद॥
कह्यो अत्रि मुनि तब भरत्थते कूप अनूप एक गिरि पास।
राखहु तीरथ जल ताही थल मानहुँ मोर मंत्र यह खास॥
भरत पठाये जल भाजन सब तुरतै अत्रि निदेशहि पाय।
आय सहानुज मुनि नायक सँग पहुँचे कूपनिकट पुनि जाय॥
पुण्यस्थल महँ वह पावन जल दीन्ह्यों यत्न सहित धरवाय।
कह्यो अत्रिमुनि आनंदित यह तातअनादि सिद्धिथल आय॥
काल पायकछु यहलोप्यो पुनि तबसेवकन स्वच्छ थल देखि।
कुवाँ बनायो खँदि पानी हित तबते भयो सुपास बिशेखि॥
थापि तीर्थजल अब यामहँतुम बिधि वश कियोबिश्व उपकार।
भरत कूप अब यहि भाषी सब मज्जत होय तीर्थ फल सार॥
कूप अनूपम की महिमा कहि गे फिरि सकल जहां रघुराउ।
मुनि पुनि भाष्यो रघुनायक ते कहि वहि तीर्थ केर परभाउ॥
कथा वार्ता को वर्णत इमि बीती राति भयो परभात।
राम अत्रिअरु गुरु आयसुलै नित्य निवाहि भरत द्वउ भ्रात॥
साज साजि सब सह समाजके गे बन अटन पियादे पायँ।
बिनु पग पनहींके गमनत लखि कोमल भई भूमि सकुचाय॥

कंटक कांकर कुश पाथरलै कठिन कुवस्तु दुराई झारि।
कोमल मारग करि दीन्हें सब बहत समीर मनो मल हारि॥
दल बर्सावें सुर गावें गुण छाया करैं मेघ नभ माहिं।
वृक्ष हजारन बर डारन युत फूले फले भले दर्शाहिं॥
मृगगण हेरैं खगटेरैं स्वर मानहुँ रहे भरत गुण गाय।
मंगलदायक लखि जंगलअस सब जन हृदय गये हर्षाय॥
सहजे पावत सुख सिद्धी सब जे जन राम कहत जमुहात।
राम प्राण प्रिय भरत भ्रात कहँ यहना कछू होय बड़ि बात॥
यहि बिधि यावतथल देखे सब फिरि२भरत पांच दिन मांझ।
सुनत सुनावत यश राघवको बीत्यो दिवस आइगइ सांझ॥
भये सबेरा शुचि मज्जन करि जुरी समाज एकही ठायँ।
आजु दिवसभल गुनिमनहींमन रामकृपालु कहत सकुचायँ॥
भरत भूप अरु मुनिसमाज दिशि ताकत फेरि लेत शिरनाय।
भाषि सकैंना कछु सकोच वश जान्यों सभा सदन यह भाय॥
धन्य धन्य कहि रघुनायक को गुण शीलता सराहन लाग।
देखि रामरुख तब केकयिसुत उठि धरि धीर सहित अनुराग॥
हाथ जोरि कै पग प्रणाम करि भाषत भये मनोहर बानि।
मम रुचि राखी सब स्वामीने दयानिधान दास निज जानि॥
सहे कुसंकठ बहु मोरे हित बहु दुख लहे बिपिन महँ आय।
देहु रजायसु अब मोकहँप्रभु सेवों अवध अवधि लग जाय॥
ज्यहि उपायते फिरि सेवक यह देखै प्रभु कृपालुके पायँ।
सो सिख देइय स्वाहिं वादा लगि राम गोसायँ दीनजन सायँ॥
दीनबंधुके बहु सुंदर बच सुनिकै दीनबंधु छल हीन।
देश काल अरु वहि समया सम बोले रामचंद्र परबीन॥
हमरी तुम्हरी पुर बासिनकी चिंता बिपिन भौनकी जौन।
अहै तौन सब गुरु भूपति को इन सम हितू औरहै कौन॥
हमका तुमका कछु संशय दुख तब तक नहीं बंधु क्यहुकाल।

जब तक माथेपर राजतहैं कुल गुरु और जनक महिपाल॥
पितु ऋण पालौ दूउ भाई अब याते भूप भलाई भ्रात।
बेद बखानै जग जानै सब मम तुव सुयशहोय बिख्यात॥
गुरु पितु माता अरु स्वामी की पाले सीख सदा कल्यान।
यथा सुमारग महँ घाले पग खाले परत सुना नहिं कान॥
असबिचारिकै सब संशय तजि सेवोअवध अवधिभरिजाय।
मानिमातु गुरु सिख मंत्रिनकी पालौ प्रजा पुहुमि मनलाय॥
मुख सम चहिये गुण मुखिया में केवल खान पानको एक।
पालै पोषै सब अंगन को सहित विवेक नेक गहि टेक॥
राज धर्महै इतनोहीं सब तापर चलब कठिन है भाय।
राखि मनोरथ ज्यों मनहीं महँ जाहिर करत सुऔसर पाय॥
राम भरत को समुझायो बहु संशय शोच सकोचहि खोय।
तदपि सहारा कछु पाये बिन धीर न केहु प्रकार हिय होय॥
दीन पादुका तब दाया करि सादर भरत शीश धरि लीन।
अति आनंदित भे हियरे महँ बहु धन पाय सुखी जस दीन॥
चरण पादुका रघुनन्दनकी अस जानिये नभग भर्तार।
भरत साथ महँ जनु दीन्हें प्रभु दुइगण प्रजा प्राण रखवार॥
भरत सनेह रत्न धरिबे को संपुट मनहुँ दुवो दरशायँ।
यत्न करन हित जनु जीवन की आखर राम नाम दूउ आयँ॥
कर्म कुशलता हित कपाट कित सेवा धर्म केर दूउ नैन।
भरत अनंदित अस पावत ते जस सिय राम रहे ते चैन॥
आयसु माँग्यो पग प्रणाम करि हृदय लगाय लीन रघुराय।
लोग उचाटे सुरनायक खल कै कुटिलता कुऔसर पाय॥
सबहि भली भै कुटिलाई सो किये बिचार सुनहुँ नभबास।
कियो अवादा प्रभु लौटन को सो सब जीव जियन की आस॥
नातरु लछमण सिय रघुपति के बिछुरे हहरि मरत सबलोग।
राम कृपा ने सो साध्यो सब बाध्यो महा बिपति अरु शोग॥

भाय भरत भुज भरि भेंटत सो वह प्रभु प्रेम कहो नहिं जाय ।
तन मन वानी ते बिह्वल ह्वै धीरज तज्यो धीर रघुराय ॥
बारिज लोचन ते मोचत जल गति लखि देव रहे दुखपाय ।
मुनि गण ज्ञानी नृप विदेह गुरु जिनको अमल ज्ञान दरशाय॥
तेउ मिलाप लखि भरत रामको अनुपम प्रीति परस्पर प्यार ।
महा मगन मन तन बानी ते भूले ज्ञान विराग विचार ॥
भेंटि भरत को समुझायो प्रभु पुनि शत्रुहन लीन उरलाय ।
पाय भरत रुख सब सेवक गण निज निज काजलगे तबजाय ॥
दुहुँ समाज महँ भो दारुण दुख सुनि पुनि ग्राम धाम प्रस्थान ।
साज चलन के सब साजत भे ह्वै ह्वै महा दुखी हरियान ॥
प्रभु पद बंदन करि बंधव द्वउ चले शीश धरि रामरजाय ।
बनके देवता मुनि तापस सब सविधि निहोरि शीशपगनाय ॥
भेंटि लक्ष्मण को प्रणाम करि शिरधरि सियाचरण की धूरि ।
चले भली विधि शुभ आशिष लै तनमन रह्यो प्रेमसों पूरि ॥
पुनि द्वउ भाई रघुराई ने मिथिलापतिहि नवायो माथ ।
कीनि बड़ाई बहु प्रकार ते अतिव निहोरि जोरि युगहाथ ॥
देव दया वश दुख पायो बड़ आयो सहसमाज बन माहिं ।
पुर पगधारिय अब आशिष दै तुम्हरी कृपाशोच कछुनाहिं ॥
चले महीपहु तब आशिष दै नैनन रह्यो प्रेम जल छाय ।
पुनि मुनि साधू गण यावत सब कीन्हें बिदा राम शिरनाय ॥
सासु निकटगे द्वउभाई पुनि पगपरि फिरे शुभाशिष पाय ।
बाम देव अरु कौशिकादि मुनि कीन्हें बिदा भेंटि रघुराय ॥
नारि पुरुष यत लघु मध्यम बड़ सबको बिदा कीन सन्मानि ।
भरत मातु पहँ चलि आये पुनि सानुज राम दया उर आनि ॥
करि पग बंदन रघुनंदन द्वउ प्रेम समेत भले मिलि भेंटि ।
साजि पालकी बिदा कीन पुनि शोच सकोच हदै को मेटि ॥
मात पिता अरु पुरवासिन को मिलि कै फिरीं जानकी माय ।

हित सह भेंट्यो सब सासुन पुनि आशिष पाय गई पुलकाय ॥
साजि सुंदरी शुचि शिविका पुनि सुख सह सकल मातु बैठाय ।
बारबार हिलि मिलि बंधवद्वउ कीन्ह्यों बिदा जननि पहुँचाय ॥
साजि बाजि गज रथ बाहन सब भूप भरत दल कीनपयान ।
रामलषण सिय हिय धारे सब मारग चले जाहिं अकुलान ॥
गुरु गुरुपत्नी पद बंदन करि सीता लषण सहित रघुबीर ।
अति असमंजस वश लौटे पुनि आये पर्ण कुटी के तीर ॥
बिदाकीन पुनि प्रभु निषाद कहँ गमन्योधरि विषाद मनमाहिं ।
कोलकिरातादिक बनचर सब प्रभुहि जोहारि धामकहँ जाहिं ॥
लषण सियासह रघुनायक प्रभु बैठे प्रेम मगन बटछाहिं ।
प्रिय परिवारिनके वियोग महँ सुधिकरि बार २ बिलखाहिं ॥
भरत भावते को स्वभाव शुचि वर्णत प्रिया अनुजसन राम ।
खगमृग व्याकुल सब औसर वहि यावत बिद्यमान त्यहिठाम ॥
दशा देखिकै रघुनायक की देउता फूल माल झरि लाय ।
निज २ घरकी गति भाषैं सब शोचत अबहुँ धीर बिसराय ॥
दीन भरोसा तब राघवने देवहु देव शोच अब त्यागि ।
सुनि असबानी धनुपानी की प्रमुदित गये देव अनुरागि ॥
अनुज जानकी सह राजत प्रभु पर्णकुटीर माहिं क्यहिभाँति ।
ज्ञान विराग भक्ति धारे तनु मानहुँ महा शोभ सरसाति ॥
भरत भूमि पति मुनि मंत्री द्विज राम वियोग माहिं अकुलात ।
मन महँ चिंतत गुण राघवके सब चुपचाप चले मग जात ॥
उतरि पारभे रवितनयाके सो दिन गयो बिना आहार ।
बास दूसरो भो गंगातट तहँ प्रभु सखा कीन सत्कार ॥
सई उतरि कै फिरि तिसरे दिन गोमति माहिंकीन असनान ।
नगर अयोध्या महँ चौथे दिन आये सह समाज हरियान ॥
चारि दिवस रहि तहँमिथलापति सबविधि साजिराजको काज ।
सौंपि भरत गुरु अरु मंत्रिन कहँ तिरहुत चले साजि सबसाज ॥

मानि सिखापन मुनि नायक को सुखसह बसे सकलनरनारि।
राम दरश हित व्रत साधत सब नाधत योग भोग सुखटारि॥
बोलि टहलुआ शुचि मंत्री गण दीन्ह्यों भरत सबहि समुझाय।
निज २ कारज महँ लागे सब जागे प्रेम यथा सिखपाय॥
पुनि समुझायो लघुभाई को सौंपी सकल मातु सेवकाय।
फिरि बोलवायो द्विज वृंदन कहँ कीन्हीं विनय शीशपगनाय॥
होय जो कारज ऊंच नीच कछु भल बेकार जबहिं ज्यहिकाल।
आयसु दीन्ह्यों तब मोकहँ तस करिहौं अवशि तासु प्रतिपाल॥
समाधान करि इमि सबही को गे गुरु भवन फेरि द्वउ भाय।
भाँति अनेकन ते विनती करि बोले हाथ जोरि शिरनाय॥
होय जो आयसु मुनि नायक को तौ मैं रहौं नेम व्रतधारि।
पुलकि प्रेम महँ मुनि भाष्यो तब सुत तुम सबप्रकार सुखकारि॥
करिहौ धरिहौ पथ सोई तुम जामहँ धर्म कर्म कल्यान।
यहिते बढ़िके मैं कैहौं कह हौ तुम सुठि सुजान मतिमान॥

स० लै गुरुको दुख नाशन शासन मातनके पद माथ नवायो।
शोधि महूरत सुंदर सो दिन प्यारी प्रजासुख बासबसायो॥
साँवरी सूरत की पद पाँवरी शुभ्र सिंहासनपै पधरायो।
देहरु गेह सनेह बिसारि सनेह स्वरूप सों नेह लगायो॥

पर्णधाम रचि नन्दिग्राम महँ कीन निवास तहांपर खास।
जटाजूट शिर मुनि वल्कलतन तजि सब विषय भोगकी आस॥
कुशा साथरी पर आसनकै लागे करन धर्म व्रत नेम।
देखि भरत गति वहि औसर की सादर सबहि सराहतप्रेम॥
राज साज लखि अवधराज को मन ललचात सदा सुरराज।
कौशलपति को धन संपति लखि लागत अति कुवेरको लाज॥
तौने पुर महँ श्री केकयि सुत निवसत क्यहि प्रकार बिनराग।
बसै भवँर जिमि रस आशा तजि चंपक बाग मध्य बड़भाग॥
रामचरण के अनुरागी जन लक्ष्मी विभव भवन भंडार।

देत बमन इव ताजि सहजे महँ डारत करधिकार की चार ॥
भर्तहि अचरज यह नाहीं कछु भाजन राम प्रेम के जौन ।
हंस पपीहा को सरहत सब गहे विवेक टेक हठि तौन ॥
देह दूबरी होत दिनौ दिन मुख छबि बल प्रकाश कमनाहिं ।
राम प्रेम प्रण मन बाढ़त नित दल फल कर्म धर्म अधिकाहिं ॥
शरदप्रकाशेजलनिघटताजिमिविलसतगगनकमलखिलिजात ।
प्रेम प्रकाशे तिमि रघुपति को उज्ज्वल भरत हृदय दरशात ॥
शम दम संयम नियमादिक व्रत बिकसे भरत हृदय नभमाहिं ।
अवधि पूर्णिमाध्रुव दृढ़ताउर सुरमग स्वामि सुरति जनुआहिं॥
राम प्रेम शशि परिपूरण शुचि उज्ज्वल सदा करत परकास ।
विकसत नलिनीसम साधूजन सबदिन तासु उदयकी आस ॥
भरत भावते की करणी भलि समुझनि रहनि भक्तिगुण ज्ञान ।
वर्णत सकुचैं कवि कोविदगण शेश गणेश बानि हरियान ॥
चरण पादुका रघुनंदन की पूजत नित्त प्रीति अधिकाति ।
लैलै आयसु पुनि तिनहीं सों देखत राज काज बहु भांति ॥
हृदयरामसिय अति पुलकित तन रसना जपत नामधरिध्यान ।
बहत अश्रुजल कल नैननते बैनन करत राम गुण गान ॥
रामलषण सिय बसि कानन महँ साधैं योग भोग बिसराय ।
भरत भवन बसि कसिकाया अति निशिदिनरहें तपहि लवलाय॥
समुझि दुहूंदिशि यह भाषत सब सबबिधि भरत सराहन योग ।
व्रत नियमादिक सुनि भरतथके सकुचैं हृदयमाहिं मुनि लोग ॥
भरत आचरण अति पावनतर सुंदर मधुर सुमंगल खानि ।
हरण दोष दुख कलि पातक सब घातक महा मोह अज्ञान ॥
रामसियाके प्रेमामिय सों पूरण भरत जन्म जग माहिं ।
होत न तौमन मुनि लोगन के कोआचरत विषम व्रत छाहिं ॥
दंभ दोष दुख अरु दारिद ज्वर सहजे हरत कौन हरियान ।
म्वहिं से दुष्टन सों कलियुग महँ प्रभु यश कौन करावत गान ॥

चरित मनोहर यह भरतथको जे जन सुनैं गुनैं धरि ध्यान ।
हरि अनुरागी बड़ भागी ते सहजे लहैं सुगति कल्यान ॥
प्रभु यश पूरित अवधकाण्ड यह मतिसम कह्यो वंदिद्विज गाय ।
दोष क्षमापन करि सज्जन जन यहि नित पढ़ैं गुनैं मनलाय ॥

इतिश्रीभार्गववंशावतंसश्रीमान्मुंशीनवलकिशोरात्मजस्यश्रीमुंशी
प्रयागनारायणस्याज्ञाभिगामीउन्नामप्रदेशान्तर्ग्गतमसवा-
सीग्रामनिवासीपण्डितवंदीदीनदीक्षितनिर्मितश्रीवि-
जयराघवखण्डेअवधकाण्डेभरतरामिलाप व
संवादपुनःभरतअवधआगमनोनाम
समाप्तोयं अवधकाण्डः ॥

इति

---

# श्रीगीतगोविन्दकाव्यम् ॥

---

## बनमाली भट्ट कृत संजीविनी टीकोपेतम् ॥

यह गीतगोविन्द काव्य पण्डित जयदेवकृत वहीहै जो कि अतीव उत्तम होने के कारणइस संसार में प्रसिद्ध है प्रायः पंडित लोग इसको अच्छी भांति जानते हैं संस्कृत पढ़नेवाले विद्यार्थियों को तो यह काव्य बहुतही लाभकारी है क्योंकि इसका तिलक बनमाली भट्टजी कृत जिसका कि संजीविनी नाम है अर्थात् इस तिलक का जैसा नामहै वैसाही गुण है जो विद्यार्थी

थोड़ी भी व्याकरण जानते हैं इस तिलकके द्वारा पूर्ण अर्थ मूल का लगा सक्ते हैं पण्डित लोगों की रुचि संस्कृत पुस्तकों में अक्सर बम्बई की छपी हुई में अधिक होती है क्योंकि उम्दा काग़ज़ और अधिक शुद्ध छपाई यह सब उनपुस्तकों में मिलतीहैं यद्यपि वहां से यहांतक माल आनेमें खर्च महसूल आदि होनेके कारण वहांकी पुस्तकों का मूल्यबिशेष है तथापि दूसरे यंत्रालयमें वैसा न छपने के कारण लाचार होके उन लोगों को लेना पड़ता है इस यंत्रालय में यह पुस्तक जो अब छपीहुई तैयारहै बम्बई से कोई काम न्यून नहीं हुआ अर्थात् बहुतउम्दा काग़ज़ सफ़ेद पर बहुत उम्दा छपाई की गई है शुद्ध होने में तो हम कहसक्ते हैं कि बम्बई की छपीहुई पुस्तकमें चाहे पांच छःगलती भी होवैं परंतु यह पुस्तक ऐसे परिश्रमसे शोधीगईहै कि पण्डित लोगों को परिश्रम करके ढूंढ़ने पर भी गलती नहीं मिलैगी और मूल्य इस पुस्तक का बम्बई से बहुत न्यून रक्खा गया है हम पूरे तौरसे उम्मैद करते हैं कि हमारे देशके रहने वाले पण्डितलोग इस पुस्तकको देखके बम्बई की पुस्तक लेना छोड़ देवेंगे और इसे प्रसन्नता पूर्वक अंगीकार करेंगे जो लोग संस्कृत कुछ भी नहीं जानते केवल भाषाही मात्र जानते हैं उन के लिये भी यह काव्य भाषा टीका में बहुतही थोड़ी कीमत से मिलसक्ती है क्योंकि यह काव्य गान विद्या जाननेवालों तथा रसिक पुरुषों और श्रीभगवद्भक्तों व संस्कृत विद्याके सीखने वाले विद्यार्थियों आदि इन सबको प्रियहै इस हेतु दो प्रकार से इस यंत्रालयमें यह पुस्तक छापीगई है एक तो भाषा टीका युक्त दूसरे संस्कृत टीका सम्मिलित ॥

बोधनहीं होताहै—क्योंकि बहुधा यही परिडतोंकी रीति है कि वे स्वर व्यंजन नाममात्रको बालकोंको पढ़ाकर व्याकरणका प्रारम्भकरादेतेथे और बालकोंको तोतेकी तरहसे कण्ठहीक-रातेथे जब उन बालकोंको अच्छीभांति अक्षरके पहिचानका ज्ञान नहींहै तो वे कैसे पूर्ण विद्वान् रट२के पढ़नेसे होसक्तेथे—आशाहै कि जो लोग इस पुस्तकके क्रमसे व्याकरणका अध्य-यन करेंगे वे थोड़ेही समयमें स्वल्पपरिश्रमसे विद्वान् होजावें-गे—जब व्याकरणमें विद्वान् होजावेंगे तो उनको ज्योतिष वैद्यक और अठारहो पुराण काव्यादि में कुछ भी परिश्रम न करना पड़ेगा थोड़ेही परिश्रम करनेमें महान् विद्वान् होजावेंगे—

केनिङ्ककालेजके संस्कृताध्यापक श्रीपाण्डित गङ्गाधरशास्त्री ने भी इस पुस्तकको अवलोकन कर सार्टीफिकट के तौरपर अपनी सम्मति प्रकटकीहै कि निश्चय यह पुस्तक उत्तमऔर बालकोंको हितैषी है ॥

---

## दृष्टान्तप्रदीपिनी प्रथम भाग सटीक ॥

इसप ... ाय
भाषाटी ... का
या पुरा ... ाक
अवश्यह ... ान
की अभि ... ार-
मेश्वरके ... भी
इसके पढ ... यहै
इसमें प ... वा



संसार जनित मोह भ्रम होवे और इस पुस्तकके पांचछःसफा पढ़े तो शीघ्रही आलस्य छूटकर ईश्वरकी भक्ति उत्पन्नहोती है व चित्तमें अतीव मोद होताहै मूल्य भी इसका बहुत थोड़ाहै ॥

---

# इश्तहार ॥

सम्पूर्ण महाशयोंको प्रकट होवे कि इसपुस्तक को मालिक मतबा अवध अखबार ने बहुतसा रुपया व्यय करके अपनी ओरसे उल्था कराके निज यन्त्रालय में मुद्रित कराया है इस कारणसे कोई महाशय इसके छापने का इरादा न करें—

मैनेजर अवध अखबार प्रेस
लखनऊ

# श्रीविजयराघवखण्डआल्हा

आरण्यकाण्ड

जिसमें

श्रीरामचन्द्र आनन्दकन्दका आरण्यकाण्डसम्बन्धी
परमोदार चरित्र आल्हा की रीतिपर छन्द
प्रबन्धमें वर्णन कियागयाहै

जिसको

लक्ष्मणपुरस्थ भार्गववंशावतंस श्रीमान्मुंशी नवलकिशोरजी
के पुत्र मुंशी प्रयागनारायण की आज्ञानुसार उन्नाम प्रदे-
शान्तर्गत मसवासी ग्राम निवासि पण्डित बन्दीदीन
दीक्षित ने रामरस रसिक पुरुषों के अवलोकनार्थ
अतिरोचक छन्द में निर्मित किया ॥

प्रथमवार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर ( सी, आई, ई ) के छापेखाने में छपा
जौलाई सन् १८९६ ई० ॥

# इश्तहाररामायणगुटकाका ॥

---

लखनयोगसबहीलखिलीजै ॥

विदित हो कि कलिकलुष बिध्वंसिनी काव्य भाषा में जैसी रामभक्त शिरोमणि महात्मा तुलसीदासजी की है तैसी आजतक किसी कविकी हुई न होगी इसमें बहुत कथन कथने की आवश्यकताही नहीं अब ये गुटका रामायण जैसी कि इस यंत्रालय में मुद्रित हुईहै उसकी उत्तमताका प्रभाव तो अवश्यही कथन करने का प्रयोजन है क्योंकि सम्पूर्ण भारत निवासी अथवा और कोई खण्ड के रहनेवाले जबतक किसी पदार्थ का गुण न जानेंगे तब तक उनकी रुचि उस में होना सर्वथा असंभव ही है इससे इस रामायण गुटका का गुण प्रथम तो एकयही बड़ाभारी है कि जैसी शुद्धता के साथ ये अबछपी है खरीददारों को ऐसी छोटी रामायण शुद्धकभी प्राप्त न भईहोगी कारण यह कि मालिक मतबा खुदही पहिलेही से अपने शोधकों को यह आज्ञा देरक्खी कि इसको यथा रुचिसे चार और पांच बार जहां तक अशुद्धता की संभावना हो तहां तक शुद्ध पढ़के छपवाइये दूसरे यह कि सातकाण्ड तो सबही रामायण में होते हैं इस में आठवां लवकुश काण्ड भी युक्त है तिस पर भी एक यंत्री क्या मानो रामायण की मंत्री ही है जो कि श्री सच्चिदानन्द आनन्दकन्द दशरथनन्दन की आदिसे अन्त

श्रीगणेशायनमः

# अथ विज्ञापन

रामबाम दिशि बाम जानकी शोभा धाम रूपगुणवान।
लषण दाहिनी दिशिराजत शुचि जनकल्यान करनयह ध्यान॥
ध्याय गजानन गुरुगोविंद पद शेश महेश सिद्धि आगार।
बन्दि अनंदित वह गावत कहि ज्यहिबिधि भयोग्रंथ अवतार॥
सुयश उजागर गुण नागर वर विदित जहान मध्य मतिधाम।
सुखद भार्गवकुल भाकर इव नवलकिशोर नाम अभिराम॥
शहर लखनऊ के बासी शुचि शील प्रताप तेजकी खानि।
जक्त बिदित हैं यंत्रालय ज्यहि लक्ष्मी अप्रमान अधिकानि॥
इक दिन समया लगि आई असि जमक्यो महासघन दरबार।
सचिव सलाही सतराही सब बैठे निकट बुद्धि आगार॥
वर्षा ऋतुको रह औसर वह नभ घन घटा छटा रहि छाय।
वही मुहल्ला महँ समया वहि आल्हारह्यो एक जन गाय॥
कान शब्द सो पस्यो सबन के तब अस लगे फेरि बतलान।
अब रुचि पुरुषन की आल्हा पर है बहु परत बातयह जान॥
जो यहु आल्हा जन गावत हैं ताको ना कछु ठीक ठिकान।
लिख्यो न कतहूँ क्यहु ग्रंथनमहँ नाकछु मिलत ठीक परमान॥
छाँड़ि नरायण यश नरयश को गावब सुनब नीक कछु नाहिं।
इतको स्वारथ परमारथ उत कछु न दिखाय परत यहिमाहिं॥
यतन चाहिये अस याकी अब होवै यही भांति को गान।
पै यश होवै नारायण को जासे दुहूं ओर कल्यान॥
अस विचारि कै उर मुंशी जी कीन्ह्यो क्षणक हृदय महँ ध्यान।
पुनि तदनंतर वहि औसर पर हँसि अस उचित बातबतलान॥
एक वार्ता हम शोची चित जो कहुँ अस उपाय बनिजाय।

तौ यहि आल्हाको गावत फिरि जगसे सहज माहिं उठिजाय ॥
इतको स्वारथ परमारथ उत गावत सुनत माहिं अभिराम ।
लोक सिधरिहैं दउ नीकी विधि कैहै एक पंथ दुइ काम ॥
कथा मनोहर रामायणकी तुलसी दास कीनि निर्मान ।
जा महँ उत्तम यश रघुबर को जग को करन हार कल्यान ॥
जौने ढँग पर यहु आल्हा है सोई छंद बनाई जाय ।
फिरि मुद्रित कै यंत्रालय महँ जाहिर कीन जाय जग भाय ॥
सुनै सुनावै अरु गावै सब हावैं जगत केर उपकार ।
यहि उपाय ते बढ़ि दूसर अरु कोई देखि परत नहिंयार ॥
मुंशीजी को यह सम्मत शुभ सबको हृदय माहिं प्रियलाग ।
तब वहि औसर पर मुंशी जी मोसन कह्यो सहित अनुराग ॥
यहि रामायण को विरचौ तुम आल्हा रीति प्रीति सरसाय ।
यहिके बदले महँ तुम कहँ हम मुद्रा देब पांच शत भाय ॥
यह अनुशासन श्रीमुंशीको मैं स्वइ लीन शीश पर धार ।
लग्यो बनावन रामायण को अपने ज्ञान बुद्धि अनुसार ॥
भयो न पूरण यह आल्हासब बीचहि हाल कीन असराम ।
स्वजन सुखारी उपकारी पर नवलकिशोर गये सुरधाम ॥
पुनि तदनंतर श्रीमुंशी के पूत सपूत बुद्धि आगार ।
सत मति पूरे द्युति रूरे अति सज्जन गुणिन मानदातार ॥
क्षमा छबीले युत शीले बहु दायक संत द्विजाहि सत्कार ।
मान सरोवर श्री भार्गव कुल तामहँ अमल कमल अवतार ॥
प्राग नरायन सुखदायन अति तिन वह पूर कीन सबकाम ।
जस अभिलाषा रह मुंशीकी तैसे भयो सकल इतमाम ॥
सप्तकाण्ड शुचि रामायण स्वइ पूरण यथायोग्य बनवाय ।
निज यंत्रालय महँ मुद्रित करि दीन्ह्यों जगत रामयश छाय ॥
मति समभाष्यों यह रघुपति यश जस कछुहती चित्तकीसाध ।
सुनैं सुनावैं जन गावैं जे ते मम क्षमा करें अपराध ॥

सवैया। जानत काव्य न एकहु अंग न ढंगहै छंद प्रबंध बनाइबो।
है बल बुद्धि विवेक नहीं विधि जानत नाहिं न लोक रिझाइबो॥
संग लह्यों न कहूं गुणियानको बंदिनचातुरी को दरशाइबो।
राह बताय दई गुरु एक यथा मति गोविंद को गुण गाइबो॥

## ( कविवंशतथानामग्रामवर्णन )

### छंदककुभा

अवध देश महँ शुचि प्रदेश जाहिर उन्नामा। त्यहि अन्तर्गत बसत लसत प्रसवासी ग्रामा॥
चारि वर्ण मति रास बास जहँ करत घनेरा। धर्म धुरी शुभ कुरी शिव पुरी सम द्युति हेरा॥
सवैया। दक्षिण में सुर आप गराजत धारसो नाशत भारधराका।
पूरब कोण तड़ाग तटस्थ अनंदित मंदिर श्री दुरगाका॥
पश्चिम नंद अधीश औ उत्तर गोकुलनाथ धरे वरनाका।
मंदिर मंजु रमापति को गुलसै बिलसै मधि ग्राम के बांका॥
दोहा। तौन ग्राम अभिराम में बनो मोरहू धाम।
पुरिखन तहँ वर बास लिय ज्ञानि सुथल अभिराम॥

### छंदककुभा

ललऊ नाम ललाम अहै प्रपितामहँ केरो। रामदीन मति बीन पितामह श्री शिवचेरो॥
भानुलाल विशाल अहै मम पितुकर नामा। चंदीदीन प्रवीन मोर पितृव्य ललामा॥
अग्रगण्य जे भये मनीषिन महँ त्यहि पुरमें। श्रीमद्रामप्रसाद विबुध एकहि बुध कुरमें॥
तिनसे विद्यालह्यो अनूपमगुरू बनायो। श्रीमद्राम प्रसाद सुयश उज्वल तहँ छायो॥
वंदीदीन सुनाम धर्‍यो गुरु मोर विचारी। विप्रवंश अवतंस दीक्षितास्पद अधिकारी॥
शिवनारायण गुरू मोर त्यहि थल विख्याता। संभव वंश त्रिपाठि विप्रकुल प्रवर कहाता॥
चारि वेद षटशास्त्र कथनमहँ जिन अतिशक्ती। जन अनंद व्रजचंद चरणकी हियबहुभक्ती॥
अष्टादशहु पुराण जासु जिह्वा पर छाजैं। काव्यमाहिं जनु कालिदास अस दूसरराजैं॥
गान विधान निधान चित्र एकही बनावैं। कथाकहनके समय द्वितिय व्यासहिसमभावैं॥
तिन दिय विद्यादान चरणसेवक शिशुजानी। परमोदार अपार बुद्धि श्री गुरु विज्ञानी॥
यह रामायण रची तासु पद पंकज दाया। भाषा छंद प्रबंध माहिं रघुपति यश गाया॥
भूल चूकलखि क्षमहिं दोष मतिमान सुजाना। हौं मैं अति निर्बुद्धि नहीं कविता कर ज्ञाना॥
दोहरा। संवत् शशि[१] शर[५] नंद[९] चंद[१] में भयो ग्रंथ अवतार।
पुनि गुण शायक नन्द चन्द में भई पूर्णता यार॥

### मत्तसवैया

**याको पिंगल महँ भाषत कहि मात्रिक मत्त सवैया नाम।**
**मात्रा इकतिस को इकपद है जानत छंद विज्ञ मति धाम॥**

रीतियथा व्रत लहि आल्हाकी वहि धारणा माहिं कियगान।
जासे गावहिं सब सज्जन जन करिकै साज बाज को ठान॥
यह रामायण संपूरण करि जस मति दई शारदा माय।
प्रागनरायण की अनुमति लहि बंदीदीन बखान्यो गाय॥
श्री रघुनंदन की कीरति यह जो कोउ पढ़ै सुनै मन लाय।
कलिमल नाशै परकाशै बुधि ऋधिसिधि बसैभौनत्याहिआय॥
पर्वपर्व महँ शुचि मानुष जो करि है श्रवण याहि धरि ध्यान।
पाप नशैहै सुर पुर पैहै कैहै सदा तासु कल्यान॥
पितृ श्राद्धमहँ जो सुनिहै यहि करि एकाग्र चित्त मति मान।
मुक्ति होइहै त्यहि पितृन की बसिहैं जाय अमर अस्थान॥
तन मन इन्द्रिन को पावन करि दिन महँ करै जौन यहिगान।
दिन कृत पातक त्यहि मानुषके विनशैं अवशि सत्यपरमान॥
करै निशामहँ जो पातक नर औ यहि श्रवण करै मन लाय।
देर न लागै अघभागै त्यहि प्रापत होय सिद्धि कर आय॥
विप्र जो बांचै यहि मंशाकरि होवै महा ज्ञान आगार।
सुनै जो भूपतियहि चितहितकरि लहैसो विजययुद्धअधिकार॥
नारि गर्भिणी जो सुनिहै यहि पैहैतनय सुष्टु मति मान।
स्वर्ग मँगइया स्वर्गौ पैहै जैहै हर्षि देव अस्थान॥
कन्या सुनिकै पति पैहै शुभ बंध्याअवशि पाइहै बाल।
संपति अर्थी संपति पैहै गैहै याहि जौन सब काल॥
बुध पारायण जो बँचिहैं यहि वक्ता होयँ ज्ञान की खानि।
जो कोउ सुनि है यह राघव यश होइ है महा द्रव्य को दानि॥
काम धेनु कहि यहि भाषत सब याके पढ़े होय अति ज्ञान।
कीरति बाढ़ै त्यहि दुनियाँ महँ होवै सब प्रकार कल्यान॥

इति

( मसवासी निवासी पण्डित
बंदीदीन कवि )

---

# अथ श्री विजयराघवखंडे

## आरण्यकाण्ड प्रारम्भः ॥

---

गिरागजानन पंचाननश्रुति आनन शिवा रसानन ध्याय ।
पुनि सहसानन पदबंदनकरि भाषत रामचरित वरगाय ॥
नमस्कारकरि नारायणको गुरुपद पंकज माथ नवाय ।
पुनि पग प्रणवों सियारामके रघुकुल राय दास सुखदाय ॥

क० रामसिया यश मानसके रसखानि कवीन्द्रनको शिरनावों ।
पूत प्रभंजनको मजबूत अकूतबली सब भांति मनावों ॥
ध्यावों गिरागुरु गोपतिगोप गोविन्द पदाम्बुजमें लवलावों ।
आरतद्वन्द निकन्दन श्रीरघुनन्दन रामकि कीरति गावों ॥

रामलक्ष्मण भरत शत्रुहन जनककुमारि चरण भजिधन्य ।
भाषा मानस अभिलाषा सह गावत विमलकाण्ड आरन्य ॥
करि बन निवसन रघुनन्दन प्रभु जे जे कीन चरित्र उदार ।
कलिमलनाशक सुमतिप्रकाशक भाषत सो स्वबुद्धि अनुसार ॥
सुंदर सुमनन चुनि इकदिनप्रभु निजकरअभरण रच्योबनाय ।
सो पहिराये मनभाये वर सादर सिया अंग महँ लाय ॥
पवि चटान पर राजमान तन शोभा अप्रमान दरशान ।

भानमान्द सम भासमान द्युति राजित मनहुं शची मघवान ॥
छबि निधान अरुअस जहानमहँ विधि निर्मानकीन को आन ।
प्रभा अमानहिं अवलोकतखन तजत गुमान फूल धनुबान ॥

स० शेशसकान बखानतते न लह्योअवसान चरित्रन केरो ।
वेदहुभेद न जानसके तब आनकहां अस ज्ञानघनेरो ॥
ब्रह्मअमान पुरानकथैं ज्यहि है सबके उर अंतर डेरो ।
वंदिचहै वरदान यहै पगमें लपटान रहै मन मेरो ॥

तबहिं जयंता मंद मंता शठ वायस वेष धारिबे काम ।
आय पहूंच्यो खल वाही थल जहँ किय राम ससिय विश्राम ॥
देखनचाहत बलरघुपतिको छलकरि महा खलन शिरताज ।
जलधि थहावन जिमि चींटी चहै हरिहति शशाचहै बनराज ॥
चंचु मारिकै सियाचरणमहँ भाग अभाग वश्य ह्वै काग ।
महादुखित भईं जगदम्बा तब पगसे रुधिर बहन अतिलाग ॥
खलदल दारण यह कारण लखि करननिदान कागअनुमान ।
कोपमान ह्वै अंशुमान सम किय धनु सींक बान संधान ॥
नेह करैया जो दुखियन पर करुणा गेह देह सुध भाव ।
तिनसों शठता शठकीन्ह्योंहठि जानि न लयो तासु परभाव ॥
साधु प्रकृतिसम अतिअगाध प्रभु बिन अपराध न मारैंकाहु ।
यथा समैयाके पाये बिनु ग्रसत न कबौं जोन्हैया राहु ॥
क्रोध जानिकै बलनिधानको अनल समान बान गरमान ।
चल्यो पवनगति अति आतुररति देखिपलान कागभयमान ॥
निजतन धारनकरि ताहीक्षन रक्षनहेत पिता के पास ।
गमनि पहूंच्यो सुमन लोकमहँ पितुसनकह्यो सकल इतिहास ॥
उरमति शोधी सुरनायकतब पुत्रहि राम बिरोधी जानि ।
त्यागन कीन्ह्यों दुर्भागनकहँ राखि न सक्यो आपनी थानि ॥
जो जन जानत रघुनन्दनबल सो कसअकल खोयखल होय ।
रोय जयंता पितुढिगते तब भाग्यो कोय न रक्षक जोय ॥

भयो निरासा भयभासा उर नासा प्रान लीन अनुमानि।
उड़्यो अकासा गहि मारगपुनि गांसाकाल व्याल जनु आनि॥
यथा सुदर्शनकी त्रासा ते लहि दुरवासा दुःख अपार।
भयो तमासा तस कागा को कोउ न लख्यो प्रान रखवार॥
विधिपुर शिवपुर मथिडारे सब काहु न कहूं दीन विश्राम।
काम न आयो वहि अवसरकोउ राम विरोध होत असबाम॥

स० बाप ब्यथा प्रदकाल समान सुनौ हरियान हदै अस शोधी।
मृत्यु कि तुल्य गनी जननी अरु होत सुधा विष सहश क्रोधी॥
मीत अमीत है मीतसै पै नर्कनदीसी सुरापग बोधी।
आगि हुते जगतात लखा त्यहि जोजन होत कृपालु विरोधी॥

भागाभागा फिर्‌यो अभागा कहूं न लागा वचन ठिकान।
अतिशय पागा दुख कागा उर प्रान निदान करन चहबान॥
बरु खगनायक के पकरेते चाहैं उरग जाय बचिमाय।
पै रघुबर कर शर छूटे ते बचब न क्यहू भांति देखराय॥
नारद देख्यो त्यहिअवसरपर अतिशय बिकल अमरपतितात।
उपजी दाया मुनिराया उर करुणावन्त सन्तको गात॥
कहि दूरिहिते प्रभु प्रभुता तब दिय समुझाय जाय जो भाग।
पठवा तुरतहि रघुनायक ढिग गोचलि सब काग दुर्भाग॥
दुःख निकन्दन रघुनन्दन के आश्रम निकट जाय नियराय।
त्राहित्राहि कहि अतिआरत स्वर आतुरगिर्‌यो चरणमहँजाय॥
वचन दीनताके भाषत भो हे प्रभु जन अनाथ के नाथ।
शरण तुम्हारी चलि आयों मैं राखहु प्रणतपाल रघुनाथ॥
अतुलित प्रभुता अप्रमान बल मैं मतिमन्द न पायों जानि।
निजकृत कर्मनको भोग्यों फल अब भयहरण सरण रह्आनि॥
दीन उधारण जगतारणप्रभु अतिबल खलनदलन हितव्याध।
रमारमन उर क्षमा भरन अब करिये क्षमा मोर अपराध॥
आरतबानी सुनि बायसकी त्यहि निज पाय शरण भगवान।

एक नयन बिन करि ताहीक्षन दीन्ह्यों प्रान दान हरियान ॥
यद्यपि शठता वश कीन्ह्यो शठ करब निदान काम अज्ञान ।
तद्यपि छोड़्यो रघुनायक त्यहि को अस दयावान अरुआन ॥

स० नीतिभरी प्रभुकी अस रीति प्रतीति करौ गिरिजा मनलाई ।
प्रीति करैं निजदासन पै दुर्वासन पै भयभीति सदाई ॥
वंदि दयानद राम समान न आन जहान लखान है भाई ।
ताते तजै सब राम भजै नहिं राम भजै त्यहि राम दोहाई ॥

चन्द्र निशानीकी बानी सुनि अति मुद लह्यो भवानी माय ।
सहित सयानी मृदुबानी सो बोलीं पानि जोरि हर्षाय ॥
चन्द्र मयूषन सम शीतल कर हीतल हरन तिमिर अज्ञान ।
वचन मनोहर सुनि राउर मुख सुख हिय बेप्रमान उमगान ॥
भई न तृप्ती मम काननको सुनि रघुनाथ कथा सुखखानि ।
ताते वरणिय पुनि आगे गुनि जस कछु चरित कीन धनुपानि ॥
लखि अभिलाषा अस गिरिजाकी भाषा धन्य धन्य त्रिपुरारि ।
बरणन लागे पुनि रघुबर यश ज्यहि सुनि नशै अघन घनधारि ॥
चित्रकूट बसि रघुनन्दन प्रभु उत्तम चरित कीन बहुकाल ।
पुनि अनुमान्यो मनठान्यो अस रघुकुलपाल दीन दुखशाल ॥
गये जानि सब मम आश्रम इत रहिहैं लागि भीर सबकाल ।
अहैनभलअबनिवसबयाहिथलअसकहिशोचिमोचिभ्रमजाल ॥
बिदा मांगि कै सब मुनियनते सियसह दूऊभाय रघुराय ।
चित्रकूट ते चलि आनँद युत पहुंचे अत्रि आश्रम जाय ॥
सुनत आगमन रामचन्द्रको ह्वै आनंद अत्रिमुनि राय ।
तन मन पुलकित ह्वै आतुर चलि प्रभुकहँ मिले अगारी आय ॥
करत दण्डवत दूऊभाय लखि मुनिहुँ उठाय लीन उरलाय ।
तन नहवायो दोउभाइन के नैनन प्रेम आँशु बरसाय ॥
अति अनूप लखि रामरूप तब मुनिकी अँखिया गईं जुड़ाय ।
लाय सहोदर निज आश्रम महँ स्वच्छासनन दीन बैठाय ॥

पूजा कीन्ह्यो विधि विधानते दीन्ह्यो कन्दमूल फल लाय।
रुचि सहखाये मनभाये अति सीता लषण सहित रघुराय॥
हर्षित निवसे बर आसन पर शोभा अंग अंग रहिछाय।
बुद्ध रोहिणी सह मानहुँ तहँ रह्यो मयंक प्रभा दरशाय॥
मदन मनोहर छबि सोहर तन मुनि भरि नैन निरखि मनलाय।
पाणि जोरि कै प्रभु सन्मुख महँ अस्तुति करन लाग हर्षाय॥
हे जन रक्षक खल दल भक्षक रक्षन तक्षक स्वच्छ प्रताप।
दया धाम अभिराम काम तन बन्दत चरन धरन शरचाप॥
शीलखान शुभ नम्रवान चित दानि निकाम जनन निजधाम।
कालव्यालभष अमलकमलचष प्रणवतचरणभरणसुखसाम॥
पावसघन सम श्यामसुँदर तन भवनिधि मथन सुमन्दरनाथ।
दोष मदादिक हर आनँदघर अशरन शरन धरन जनहाथ॥
विभव अपरिमित अति भुजयवतव भवभवविभव पराभवकार।
अगजगनायक सुखदायक भग तमघायक कुल करनउज्यार॥
असुरनिकन्दन बसुधामण्डन शिवधनु खण्डकरन सियनाथ।
मुनिजन रंजन रूपनिरंजन बन्दन करत जोरियुग हाथ॥
शिव उरबासी अविनाशी प्रभु सेवित देव अजादिक पायँ।
सुबोधराशी जन दुखनाशी भासी विश्व इन्दिरासायँ॥
सुमति प्रकाशौ अघनाशौ प्रभु बासव बन्धु पराक्रम सिन्धु।
हे भ्रमछेदन भेदन खेदन वेदन कदन शुभानन इन्दु॥
विषय विहाय पुरुष जे तुव पग ध्यावत सदा मनोवचकाय।
आयपरत नहिं भवसागरते जामहँ दुःख लहरि लहराय॥
जे निष्कामी जन ध्यावत त्वहिं इंद्रिनजीति विषै बिसराय।
ते मन भावत गति पावत तुव गावत सुयश तोर मनलाय॥

स० एक अनेक अनूप अरूप अकाम अधाम अनाम अनामय।
अंतक अंत अनंत अगंत अहंत महंतक बोध घनामय॥
हे जगकंत महाभगवंत अतंत सुसंतनको करुणामय।

वंदि अनंदित देवन वंदित छंदन पाव गुणै गणनामय ॥
भाव पियारे चषतारे हे संतन प्राण अधारे राम
पुत्र दुलारे कौशल्या के भूप अनूप रूप मति धाम ।
जनकदुलारी पति अद्भुतगति रतिपति मान मथन घनश्याम ।
होहुप्रसन्न देहु मनभावति निज पद कमल भक्ति अभिराम ॥
जे नर आदरकारि अस्तव यह नितप्रति पढ़ैं गुनैं मनलाय ।
ते भक्तीसह तुव पावन पद पायसभाय जायँ हरषाय ॥
यहिविधि विनतीकरि मुनिवर तब कह करजोरि माथ पगनाय ।
चरण सरोरुह तजि कबहूं जनि मम मति अंतजाय रघुराय ॥
जन्म जन्म तव पद पंकज महँ बाढ़ै शशि चकोर समभाव ।
देखि नम्रता अस मुनिवरकी पायो महामोद रघुराव ॥
अनुसूया के पद प्रणामकरि मुदसह मिलीं जानकी माय ।
जो सुखदाता सब लोकनकी माता ब्रह्मअंडकी आय ॥
सो सिय पावत मुनि तिय को कस गई बनाय हृदय हरषाय ।
पाय उजेरी निशि हर्षित जस कोकाबेलि बेलि रहिजाय ॥
अति सुखबाढ़्यो मुनिपतनी मन दै आशीष निकट बैठाय ।
दिव्य आभरण औ अम्बर शुचि सिय अँग अंग दीनपहिराय ॥
बहु सन्मान्यो कहि वाणीमृदु जानी जगतजननि सुखदाय ।
वर्णनलागी नारि धर्म कछु सियमिस अत्रितिया मनलाय ॥
मैया भैया और बपैया किंचित काल करैं प्रतिपाल ।
पति प्रतिपालक दुऔलोककर ताहि न सेव अधम सो बाल ॥
बिपतिपरेपर सबकोउ परखत सकल विहाय पदारथचारि ।
होत सहायक त्यहि अवसर ये धीरज धर्म मित्र औ नारि ॥
दुखी दरिद्री महाजरठ शठ आंधर बहिर रोग युत लुंज ।
ऐसेहु भर्त्ता के निन्दे तिय यमपुर लहत यातना पुंज ॥
कर्म वचन मन पति पद सेवन है ब्रत धर्म नियम शिरताज ।
सब सुख पावत मन भावत इत उत पति साथकरै सुरराज ॥

चारिभांतिकी सती नारि जग भाषत आगम निगम पुरान ।
उत्तम मध्यम अधम अधम लघु सुनिये राम वाम दै कान ॥
उत्तम तियके बस मनमा अस स्वपन्यों जक्त पुरुष नहिं आन ।
मध्यम वे जे परपूरुष को भ्राता पिता पुत्र सम जान ॥
धर्म कर्म निज समुझि शोचिकै अतिपति कुल मर्याद विचारि ।
रहबरिआई धरि शाका उर जान्यहुँ सो निकृष्ट है नारि ॥
अवसरपाये बिन भयते रह सो तिय महाअधम अनुमान ।
पति छलिसाधै परपति ते रति रह शतकल्प नरक अस्थान ॥
क्षणभरि सुखके हित कामिनि जो करै न कोटिजन्म दुखख्याल ।
त्यहि सम खोंटी मति छोटी को बिढ़वै आपु हेत दुख जाल ॥
पावै उत्तमगति बिनहीं श्रम पतिव्रत गहै नारि छलछांड़ि ।
बाम बाम जो पति अपने ते सो जग होय बिपति की भांड़ि ॥
जहँ जहँ जन्मै जिन योनिन मा विधवा होय जवानी पाय ।
अतिदुख भोगै सुख योगै नहिं कबहूं लहै वेद अस गाय ॥

स० जो अपवित्र स्वभावहिते सब काल कुचाल भरी छलकारी ।
चञ्चलता खलता मलता ज्यहि बांट परी दुखहाट निहारी ॥
ऐसिहु नारि बिसारि कुमारग होय पतिव्रत की अधिकारी ।
बन्दि रहै सुख सों हुलसी यहिते तुलसी अजहूं हरि प्यारी ॥

अहौ पतिव्रत रत सीता तुम गीता सरिस सुपावनिगाथ ।
पतिव्रत करिहैं तुव सुमिरणकरि ते तिय ह्वै हैं परम सनाथ ॥
तुम्हैं प्राणप्रिय रामचंद्र अति मन बच कर्म लीन मैं जानि ।
प्राकृत तिरियनहित भाष्यों यह पतिव्रत धर्म मोदकी खानि ॥
सुनि असबानी अत्र्यानीकी अति सुख लह्यो रामकी बाम ।
सादर अम्बुज सम चरणनमहँ कीन्ह्यों माथनाय परणाम ॥
कह्यो अत्रिसन रामचंद्र तब आयसु देहु जाउँ बन आन ।
ज्ञानशिरोमणि म्वहिं भूल्योजनि राख्यो दया दास निज जान ॥
कोमल बानी धनुपानीकी सुनि मुनि प्रेमछाय हरषाय ।

धर्मधुरन्धर सों भाष्योऽहमि राख्यो अति सनेह सरसाय॥
शंभुअजादिक शुक सनकादिक नारदआदिक ज्ञानअगार।
ज्यहि अनुकम्पा चहैं निरन्तर पावत नहीं गुणन को पार॥
ते तुम बोले अस कोमल बच भोले प्रकृति अमोले राम।
दुखियन बंधव सत्प्रण संधव आनँद भवन दवन खल बाम॥
अब लखिपाई चतुराई तव भाई अतिव हृदय मम नाथ।
तजि सब देव भेवसह तुमकहँ सब दिन भजिय सुपावन गाथ॥

स० हेभववारन दारन सिंह सँहारन कारन कारज लागी।
संसृत सारन तारण देव अदेव हजारन जारन आगी॥
भक्त उधारन कारन धारन बन्दि धरा अवतारनरागी।
कैसे बनै भनै आनन सों तुम जाउ बनै सो जनै अनुरागी॥

अस कहिसुनिवरलखि रघुबर तन पुलकितगात नैनभरिआंसु।
दृष्टि लगाये मुख पंकज महँ अँग अँग भरे प्रेम सुख बासु॥
जो प्रभुबानी मन बुद्धी अरु विषय करन ते परे लखाय।
सो भरि नैनन मैं देख्यों अब जप तप किहे कसे कह काय॥
योग धर्म अरु जप तपादिते नरवर भक्ति जाहि जगपाय।
आनँद भोगै इउलोकन महँ प्रभुके चरित अनूपम गाय॥
हर्षे रघुपति मुनि बाणी सुनि अपनौ करन अस्तवन लाग।
आशिष दीन्ह्यो मुनिनायक तब आपन सुफल होनहित बाग॥
देव भेव लखि रघुनन्दनको जय जयकार करत हरषाय।
वृन्दन वृन्दन बननन्दनके घन घन सुमन रहे बरसाय॥
माथनायकै मुनि पायँन महँ सुर नर सायँ दीन जनभाय।
लषण जानकी सहकाननकहँ कीन्ह्यो गमन भानुकुलराय॥
आगे आगे रघुबर गमने पाछे लषण कुवँर सुख धाम।
मध्य मैथिली चली भली छबि देखि लजात कामकी बाम॥
कर धनुधारे अनियारे शर शीश सँवारे जटा बिशाल।
तन मुनि वसन पीतपट कटि तट कसे निषंग गसे शर जाल॥

घन सुवरन बर बरन हरन मद झषकेतन तन प्रभा अपार।
कमलनयन मृदुवयन अयन छवि दासन चैन दैन बलभार॥
मलन खलन दल दलन जौन थल पहुँचैं तहांजाय मुदछाय।
लखि रघुराया घन छायाकरि शीतल झलहिं सुगंधित वाय॥
नदी तड़ाग बाग बन गिरिगन आपन स्वामि जानि पहिंचानि।
अवघट घाटन बरबाटनकरि तृण कुश कांट दुरावहिं आनि॥
बहुतक आश्रम अवलोके प्रभु जिन सम सुमन सदनहुँ नाहिं।
बहतसरवरनमहँ निर्मलजल अतिभल जलजखिले तिनमाहिं॥
सुभग सवाँरी फुलवारी बहु क्यारी रची मुनिन निज पानि।
अमर वृक्षकी अनुहारीतहँ विटपन स्वच्छ पांति दरशानि॥
तने लताननके वितान घन बहुकारिका रहीं झरिलाय।
मनहुँ दारिका गंधर्वनकी प्रभुपर सुमनरहीं बरसाय॥
फूले फूलन वन उपवन सब द्रुम नै रहे फलन के भार।
अवध भुवारहि जनु निहार महि शिर नवायकरि रहे जुहार॥
विमल तड़ागनतट जल खगठट कुहँकत मधुरस्वरनदरशाय।
मानहुँ बंदीजन आनँद मन प्रभुकर विरद रहे बरगाय॥
अस सुख निरखत चित हरषितह्वै त्यहि दिनतहां बसेरघुराय।
सबरे मुनियन मिलि कीन्ह्यों तब प्रभुसत्कार प्यार मनलाय॥
आनि सहादर निज आश्रममहँ पूजिसप्रेम विविध परकार।
अनुजजानकी युतरघुपतिकर अतिहिताकियो अतिथिसत्कार॥
करिवर भोजन रामचन्द्र तब ह्वै आनंद मंद मुसकान।
निज २ रुचि सम सब मुनियन कहँ दै बरदान कीन सन्मान॥
रैनिबसेरा करि ताही थल होत प्रभात मुनिन शिरनाय।
लै अशीश गौरीश सुमिरिउर पुनि प्रभु चले वनहिं हर्षाय॥
सरित सरोवर बन उपबन बहु नांघत चले जाहिं भगवान।
देखत शोभा मनलोभा अति कोकबि करै तासु छबिगान॥
जात बाट महँ रघुनन्दन को मिलाबिराध असुर अतिकाय।

गर्जत उच्चस्वर तर्जत बहु अँगअँग भरे क्रोधकी बाय॥
रूपभयंकर अपर कालजनु धायो वेगवन्त जिमि व्याल।
डरेखरे नभ सुर किन्नर मुनि गति लखि हृदयहारि त्यहिकाल॥
त्वर हरिलैगा सो सीता का बीता राम हृदय संदेह।
कर्म केकयीको सवँरन करि अनुजहि कह्यो बुझाय सनेह॥
पुनः प्रबोधित करिरामहिं तब शेषसरोष होय त्यहि काल।
तानि शरासन गुन काननलग छांड़े पांच बान विकराल॥
अतिशय व्याकुलभो निश्चरतब लागत शर सुतीक्षण गात।
राखि जानकी कहँ क्रोधित ह्वै धायो गर्जि शूल लै हाथ॥
खग मृग व्याकुलभे अवसरत्यहि आवतजनु करालयमदण्ड।
तानि शरासन रामचन्द्रपुनि कीन्ह्यों शूलकाटि शतखण्ड॥
इकशरमार्यो पुनि आसुरतन धरणी गिर्यो पीटि कै माथ।
पुनि उठि गर्ज्यो तन चेतनह्वै आयो धाय जहां रघुनाथ॥
अस कहि भाष्यो रामचन्द्र ते तपसी सुनौ हमारी बात।
बचन न पैहौ यहि अवसरअब डारब तुम्हैं खाय हमतात॥
वायु ते सौगुन तासु तेज प्रिय धावत उड़ैं वृक्ष पाषान।
जीव जंगली रहे जहां लग ह्वै भयमान भाग लै प्रान॥
रूप भयंकर बड़ पर्वत सम राम समीप आय नगिचान।
देव सशंकित शोचन लागे होइहै काह चरित भगवान॥
निकट उपस्थित लखि रघुबरत्यहि देवन देखि महाभयमान।
कान प्रमान कमान तानिकै उरग समान बान संधान॥
सातक मारे हनि आसुर उर प्रान पयान लगतभो बान।
तज्यो निशाचर तन ताहीक्षन पायो रुचिर रूप हरियान॥
दुखी देखिकै त्यहि राघवतब तुरत पठाय दीन निजधाम।
हाड़न गाड़न किय धरती महँ निजकर राम संत विश्राम॥
लखिवर बरणी प्रभु करणी यह देवन मुदित कीन परणाम।
आनि जानकी चरणन लागीं जनसुखधाम राम प्रियबाम॥

ध्याय शुभंकर पुनि शंकरपग अभयंकरन हरन भ्रमजाल ।
सहितसुलक्षण सियलक्ष्मणसह आगेचले अवधपति लाल ॥
आय पहूंचे वहि अस्थलपर जहँ शरभंग मुनयको धाम ।
अनुज जानकी सह रामहिंलखि मुनिमन मुदितकीनपरणाम ॥
पुनि प्रभु आनन नवपंकज पर लोचनभ्रमर समान लोभाय ।
पान करतभो रस अमृत इव धनि शरभंग अंग औकाय ॥
पुनि अस भाष्यो मुनि नायक तब हे दुखघायक भक्तकृपाल ।
जगतपाल खल दलन काल हे शंकर मानस राज मराल ॥
जात रह्यों मैं ब्रह्मलोकको कानन सुन्यो वचन अभिराम ।
सुखबरसावत शोभ बढ़ावत आवत बनै राम घनश्याम ॥
रह्यो निहारत मग तादिनते पूरण भई आज अभिलाख ।
भयो कृतारथ प्रभु दरशन लहि जरिबरिभई विपतिसबराख ॥
सुमुख जोन्हैयन दोउ भैयनके निरखि सनाथ भयों मैं आज ।
लह्यो अलभ्य लाभ जीवनको अब सब सुधरिगयो मम काज ॥
नहिं कछु साधन आराधनकिय राउर भजनभाव नहिं कीन ।
अपनो बाना हठि ठाना प्रभु ताते दरश दीन लखि दीन ॥
मोर निहोरा सो नाहीं कछु राख्यो निज प्रण दीनदयाल ।
म्वहिं अपनायो सब प्रकारते जय जनपाल राम किरपाल ॥
अरज गरज अब सुनौ दासकी सो सहुलास पुराओ आस ।
तबलगयहि थलरहौ अबल बल दरशनदेत मुदित ममपास ॥
जबलगितनुतजिमिलौंन तुमकहँ रघुकुलकुमुद विपिनद्विजराय ।
असकहि मुनिवर धरि उर हरिपद रूप अनूप ध्यान मों लाय ॥
जप तप मखब्रत योगादिक सब प्रभुकहँ देय भक्तिबर लेय ।
सरा वरासन रचि ताही क्षन रास सनेह देह निज भेय ॥
माथनायकै रमानाथ ते मुनि अस कह्यो जोरियुग हाथ ।
हे सुखसिंधव सिय बंधवसह मम उर बसौ सदा रघुनाथ ॥
असकहि तन दहि योगानलते रघुपति कृपागयो सुरधाम ।

प्रथमें माँग्योरहै भक्तीबर ताते लह न मुक्ति विश्राम॥
गति बिलोकिकै शरभंगाकी ऋषि सब हृदय मांझ हरषाय।
करत अस्तवन रघुनंदन को जय जनसायँ दया दरियाय॥
जन मन रंजय भवरुज गंजय भंजय भूमिभार कर्तार।
करुणा कंदन बंदिअनंदन नंदन द्वंद बिपति जग जार॥
देहु अपावनि पग पावनिकी मन भावनी भक्ति घनश्याम।
बसौ निरंतर मन काननमहँ बनपति रूप भूप भग धाम॥
सुनिगुनिअस्तुतिइमिमुनियनकी पुनिप्रभुसबहिंशोधिसन्मानि।
चले अगारी बनचारी बपु बन सह लषन जानकीरानि॥
मुनि सब लागे अनुरागे सँग पागे भक्तिभाव सहचाव।
कछुक दूरिचलि त्यहिथलिमहँ इककौतुक निरखिपाव रघुराव॥
ऋषि मुनि हाड़नके पहाड़बहु लागे अप्रमान उंचान।
पूंछ्यो मुनियनते कारण सब दयानिधान मुनिनके प्रान॥
मुनि मनभावनके पावनपरि लागे कहन भेद समुझाय।
जानिबूझिकै का पूँछौ प्रभु अंतरयामि स्वामि रघुराय॥
खाय खायकै मुनि निकायबहु असुरन कुरन कीन ये हाड़।
त्यहि डर केतन्योंमुनि परिहरिबन जहँ तहँ भागिगये थलछांड़॥
सुनि गुनिबानी इमि मुनियनकी दायाऐन नैन जल जात।
जल बहाय अस प्रणकीन्ह्यो तहँ भुजाउठाय क्रोधभरि गात॥
यावत निश्चरदल बसुधातल सबको दलनकरौं जिमिकाल।
तौ मैं नंदन दशस्यंदनको किंचित्काल माहिं असहाल॥
सत्प्रणधारण प्रणधारणकरि पुनि सब मुनिन आश्रमजाय।
दर्शन दै दै सुखदीन्ह्यो बहु को कहिसकै मोदसो गाय॥
मुनि अगस्त्यको निपुण शिष्यइक जाकोरहै सुतीक्षण नाम।
सेवक सांचो रामचन्द्र को कबहुँ न अन्य देव सों काम॥
प्रभुको आवत सुनिपावा तैं धावा तुरत आश्रम त्यागि।
चित्तलोभावा हरिपायँनमहँ आवा अति अभीष्ट हिय जागि॥

घनो मनोरथ उपजावा जिय छावा रोम रोम आनंद।
जस नभ तावा घन मण्डललखि होत प्रसन्न शिखिनको वृंद॥
विधिहि मनावा असलावा उर कस कस दीनबंधु रघुराय।
दाया करिहैं मो शठकी दिशि यह न भरोस हृदय दरशाय॥
सीतानुजसह महि भूषण म्वहिं मिलिहैं दास आपनो जानि।
होत न दृढ़ता जिय केहूबिधि नहिं अस सुकृतकीन अनुमानि॥
भक्ति न कीन्ह्यों हरिचरणनमहँ नाहीं ज्ञान योग बैराग।
भूलि न संगति भइ संतनकी तप जप याग धर्म अनुराग॥
पै इकबानी धनुपानीकी सुमिरि सो रीति होत परतीति।
आन भरोसो ज्यहिनाहीं कछु ऐसे दासउपर अति प्रीति॥
होय पातकी किन कैसौ सो सुमिरण करै कबहुँ प्रभुक्यार।
तापर करुणा करुणाकरकी अतिशय बदत बोध आगार॥
आज देखिहौं त्यहि स्वामीको करिहौं सुफल जन्म औकाय।
जिन पद पंकज रजपावनको योगी रहेन योग लवलाय॥
मुनिजनबनमहँकरिनिबसन ज्यहिध्यावतरहतसदा सबकाल।
तबहुँन पावत लखि दृष्टीसों जाके एक प्रेमको पाल॥
भवदुख मोचन लखि पंकज मुख नैनालहहिं आज बड़लाहु।
कमल नैनके बैन मनोहर सुनि हिय जगिहि महा उत्साहु॥
यहिविधि शोचत मुनिनायक सोछइगो मगन प्रेम रसमाहिं।
अमल भावभरि बसा हृदयमहँ दशा सो कही जातहै नाहिं॥
भयो दिशाभ्रम त्यहि समया महँ सूझि न परै दृष्टि सोंराह।
रही न नेकौ सुधि देहीकी को मैं कहां चलो गतिकाह॥
कबहुँक लौटि चलै पीछेमग कबहुँक चलै अगारी धाय।
कबहुँक निरतै चितथिरतै करि प्रभुगुण गायगाय मुदछाय॥
अविरल भक्तिभाव पायो मुनि खगपति लखौ भजनपरभाव।
वृक्षओटते रघुपति देखैं मुनिगति देखि बढ़्यो उरचाव॥
प्रीति अपरिमित लखि मुनिवरकी प्रगटेहृदय राम अभिराम।

कामलजावन जनमन भावन अतिव अनूप रूप छविधाम ॥
पायदरश अस हृदयान्तर्गत बेवशभयो प्रेम रसमाहिं।
अचल ह्वैगयो तबमारगमहँ तनमन शिथिल चेतकछुनाहिं ॥
पुलक छायगइ अँग अंगनमहँ जसफल पनसकेर दरशाय।
असगतिरघुपति लखि मुनिवरकी आयेतासुनिकट नियराय ॥
सहज भायवश रघुनायक सो जनसुखदायक दीन दयाल।
बचन अमोले हँसिबोले प्रभु उठप्रियप्राण मोर द्विजबाल ॥
बहुत जगायो यहि भांतिन प्रभु लह्योनचेत तनिक मुनिराय।
मगन ध्यान रसमहँ तनमन अतिगये जगाय हारिरघुराय ॥
युक्ति शोचिकै मुनि हियते तब द्वै भुजरूप भूप अलगाय।
रूप चतुर्भुज दिखरायो त्यहि ताकी दशा सुनौ खगराय ॥
रूप चतुर्भुजके देखत खन मुनितजि ध्यानउठ्यो अकुलाय।
बिनमणि ब्याकुल फणिहोवै जस वारि विहीन मीनगतिभाय ॥
खोलिचकित चषनिरखनलाग्यो आगे लख्यो रामतनश्याम।
सीतानुज सह खड़े मढ़े छवि रूपललाम काम अभिराम ॥
पर्यो लकुट इवगिरि चरणन महँ ह्वैमनमगन प्रेमरसमाहिं।
हृदय लगायो रामचंद्र त्यहि लियो उठाय भुजा गहिबाहिं ॥
भइअस शोभात्यहिअवसरमहँ मुनिअरुराम मिलतहरियान।
कंचन वृक्षहि जनु तमालद्रुम भेंटत अति सनेह सरसान ॥
खड़े बिलोकत रघुनंदन मुख मानहुँ चित्रकीन निर्मान।
धीरजधारण करि मुनिवर तब परस्यो चरणशरण सुखदान ॥
फेरि लयायो निज आश्रममहँ सहजानकी लषण रघुनाथ।
दिव्य आसनन पर स्थितकरि धोयो चरण विमल लैपाथ ॥
पूजन कीन्ह्यो बहुप्रकारते करि पुनि अतिथि भावसत्कार।
हाथ जोरिकै बिनवन लाग्यो जाग्यो हृदय प्रेम बेकरार ॥

स० हे भगधाम प्रपूरण काम अरामद नाम बदैं बहुधाश्रुति।
हे जगदीश खबीसन खीस अनीशन ईश महाप्रवरस्तुति ॥

उज्ज्वल कीरति कीरतिदा महिमामित भूपति हेगति अद्भुति।
राजकुमार अपार प्रभाधर कौन प्रकार करौं तुव अस्तुति ॥
तुवगति कीरति रतिवर्णनको मोमति नहीं योग्य जगवास।
लाखन जुगुनू दल कतहूं भल रविसन्मुख करिसकैं प्रकास ॥
श्याम तामरस दाम सरिस तन प्रभाभिराम राम छबिधाम।
अतिललाम गुणग्राम काम मद करन निकाम संत बिश्राम ॥
धनुशर करधरकटि तरकसवर दरगर सुघर अचरचर स्वाम।
अजर अमरवरभुजजन रुजहर बलघर करतचरणपरणाम ॥
मोहगहनबनदहन अनलघन सतजन कमलबिपिन दिननाथ।
आसुर वारन दल मारन को आरनपती सरिस बलगाथ ॥
धरा उधारन दुर्मद टारन खगजग संहारन को बाज।
करौ हमारी रखवारी प्रभु दया दराज राज अधिराज ॥
अरुण कमल दल नैन बैनमृदु सेवकचैन दैन सब काल।
बल अजैन द्युति ऐन मैन सम क्षीराधि शैन बंदि द्विज पाल ॥
सिय चषचक्र मुददैन रैन पति बाहु विशाल शत्रुकर शाल।
बालचंद्रधर भाल तालहद बासी शुभ मराल खल काल ॥
संशय ताप सांप चापनको बरउरगाद करत प्रतिपाद।
मद उन्माद बिषाद विखादन जनअहलादन हन मनुजाद ॥
सुर मुनि रंजन भव दुखगंजन भंजन आधि व्याधि रघुराज।
करौ हमारी रखवारी प्रभु दयादराज राज अधिराज ॥

स० निर्गुण सगुण रूपअपार स्वईच्छानुसार विहार बिहारन।
मारन मारन आदि विकारन कारन भूभरभार उधारन ॥
धारन कोटिकला अवतारन तारन वारन संसृति कारन।
टारन बंदि दुखापदिदारन बंदलहौं द्वउ राजकुमारन ॥

ज्ञान अगम्य रम्यसत चेतन सम्यक् बोधरूप भगवान।
मन वच इंद्रिय अरु बाणीसुर तुम्हरो भेद न पावत जान ॥
भक्त अभक्तनकी इच्छा लखि हे सम विषम चरित कर्त्तार।

सर्व व्यापक निर्विकार प्रभु सुयश अपार जक्त भर्त्तार॥
भक्त कामना पूरक सुरतरु नाशक कोह मोह मद काम।
अति प्रवीन जन दीन मीनजल निश्छलप्रेम पीन गुणग्राम॥
यहि अपार संसार सिंधुको दया निकेतु सेतु तुव नाम।
करौ हमारी रखवारी प्रभु हे रविवंश हंस श्रीराम॥
अतुलितभुजबल औप्रतापतुव कलिमल विपुलविभंजननाम।
धर्म रखावन को बख्तरवर पूरण करौ हमारो काम॥
यद्यपि स्वेच्छाअवतारी प्रभु सर्व व्याप आप अविनाश।
सब दिन सब क्षिन सब जीवनके उरमहँ करौ बास परकाश॥
तद्यपि लक्ष्मण अरु सीतासह यहिछवि करौ हृदय ममगेह।
तुम्हैं जो जानै त्यहि तुमजानौ मानौ मोर वचन मन एह॥
अवधराज सुत राज साजयुत अद्भुत रूप धरन शर चाप।
बसौ बंदि हिय सहित लषण सिय जग पिय अप्रमान परताप॥
हे प्रभु जैसे तुव मायाबश सब दिनरहै मगन मन जीव।
तैसे दायाकर दाता सुखप्यारे लगहु सदा मम हीव॥
भूलिहु जाय न मोर गर्व अस रघुपति स्वामिकेर मैं दास।
मो मन डोरी तुव चरणनमहँ जोरीरहै बारहू मास॥
राम भक्ति तजि जो दुनियाँमा चाहै पुरुष अपन कल्यान।
सो निर्गुनियाँ महानीच शठ बायस श्वान शृगाल समान॥
यहिबिधि सुंदर बच मुनिके सुनि बहुत प्रसन्नभये श्रीराम।
हृदयलगायो मन भायो अति पुनि असकह्यो संत सुखधाम॥
हे मुनि माँगौ जो चाहौबर यहि क्षन महामुदित म्वहिं मानि।
कह मुनि माँगौं मैं कबहुँ न बर मोहिं न परै झूठ सच जानि॥
तुमकहँ नीको जो लागै प्रभु सो म्वहिं देहु दास सुखदाय।
सुनि असबानी मुनि ज्ञानीकी बोले चापपाणि हरषाय॥
सुंदर भक्ती ममपायँन की जोजग कबहुँ कोउ मुनिपाव।
शुभ गुण यावत अरु बिरतीवर तुव उरबसै ज्ञान सहचाव॥

कह्यो सुतीक्षण प्रभु दीन्ह्यो जो सो वर सकल लीन मैं पाय।
अब जो जनके मनभावै सो आवै मनै देहु रघुराय॥

स० अम्बुज दाम समान ललाम प्रभा युत श्याम शरीरसदाया।
शोभाभिराम निकाम अरामद कामद धामद राम अमाया॥
काम छटाभरे मालगरे धनुबानधरे हरे बंधु सजाया।
इंदु अकाश से दास हिये सुअबासकै बासकरौ रघुराया॥

एवमस्तु कहि रघुनायक पुनि गमने ऋषि अगस्त्य के पास।
कह्यो सुतीक्षण हाथ जोरि तब सुनिये जगनिवास सुखरास॥
बहुदिन बीते गुरु दरशन बिनमोहिं प्रभु बसत निजाश्रम माहिं।
ताते गुरु ढिग हम हूं चलिबे तुम कहँ कछू निहोरा नाहिं॥
गमनत मगमहँ तुव पंकज पग देखिहौं जो बिराध मदहारि।
जन्म धरेकर फल पैहौं तब लैहौं बिमल धूरि शिरधारि॥
देखि चतुरता मुनिनायक की हर्षित लियो साथलै नाथ।
डगरे बगरे द्युति अगरे तन गहिकै मुनि अगस्त्य थलपाथ॥
लषण सुतीक्षण मुनि पाछेदोउ आगे रामसंग शुभ बाम।
लली जनककी भली बनककी कली कनककी जनुअभिराम॥
भक्ति आपनी को बरणतबहु भाषत पंथ बिबिध इतिहास॥
देत असीवँ मोद जीवनकहँ पहुँचे ऋषि अगस्त्य थल पास॥
देखि आश्रम शुचि सुन्दर गिरि नदी तड़ाग बाग सहराग।
शोभे उपबन बन लोभे जहँ जीव असीवँ रहे मुदपाग॥
अति छबि छाजैं द्रुमराजैं बहु गाजैं मधुर स्वरन खगजाल।
भुण्डन भुण्डन मृग बिचरैं कहुँ चरैं अनंद बृंद करिबाल॥
कहुँ २ कूटी मुनि सिद्धन की जूटी अतिव दीप्ति की रासि।
लूटी माया के बिषयन सों बूटी बिकसिरहीं चहुँपासि॥
तहँ तप साधत तपी जपी बहु प्रभुहि अराधत ध्यान लगाय।
बाधत दुनियां के दुःखन को नाधत सुगति माहिं मनकाय॥
भये अनंदित रामचन्द्र बहु शोभा अकह कही नाजाय।

धनि वे गिरिगन बन उपबन घन जहँपर चरनधरे रघुराय ॥
गये सुतीक्षण चलि आगे तब गुरुकहँ खबरि जनायो जाय ।
माथ नायकै मुनिचरणन महँ भे असकहत महाहरषाय ॥
ध्यावत जिनकहँ प्रभु रातिउ दिन गावतरहत गुणन लवलाय ।
सो मुदछावत इत आवत हैं राम सबाम साथ लघुभाय ॥
सुनि असबानी मुनि चेला की मेला सुधाकान जनु आय ।
हर्ष बढ़ाये उठिधाये त्वर ह्वै मन मगन प्रेम के भाय ॥
जाय बिलोक्यो रघुनायक द्वउ नयनन गयो प्रेम जल छाय ।
मुनिबर पायन परे भाय द्वउ हृदय लगायलीन ऋषिराय ॥
पूछि कुशलता सहआदर मुनि आश्रम परमरम्य महँलाय ।
दिव्य आसनन पर इस्थित करि पूज्यो बहुप्रकार मनलाय ॥
हे भगवन्त अनन्त पाय त्वहिं मोसम भाग्यवन्त को आज ।
शिव चतुराननकहँ दुर्लभ जो सो छबिलख्यों आजसहसाज ॥
रहे जहांलगि मुनि औरौ तहँ ते सब देखि राम सुखधाम ।
अति हिय हर्षे तप कर्षे सो जाय न बरणि मोद सो बाम ॥
मुनि मण्डल के मध्य सियापति बैठे समुख प्रेमरस छाकि ।
शरद पूर्णिमाके चन्दहि जनु रहे चकोर वृन्द छबि ताकि ॥
हर्षै मछरी जस पाये जल दुखिया यथा पारसहि पाय ।
स्वाति बुन्दलहि जैसे पपिहा तिमि मुनि सुखी देखि रघुराय ॥
पाय सुअवसर रामचन्द्र तब मुनि अगस्त्यसन लागबतान ।
छिपो न तुम सों मुनिनायक कछु जो हमकीन मंत्र हियठान ॥
बन चलिआयों ज्यहिकारण ते जानत सकल तौन तुम हालु ।
कहित खुलासा नहिं ताते हम हे मुनि कहब मोर प्रतिपालु ॥
ज्यहिबिधि मारौं मुनिद्रोहिन का सो अब हमका देव सलाह ।
जबलग राकस हनिजैहैं ना तबलग मुनि न लहैं उत्साह ॥
बचै न पैहैं द्विजद्रोही कोउ जस हिमऋतुहि पाय जल जात ।
सुनि असबातैं रामचन्द्र की बोलतभये मुनिहुँ मुसक्यात ॥

काहजानिकै म्वहिं पूंछौ प्रभु सो अब हमका देव बताय ।
तुव पदपंकज भजनभावते कछु तुव महिमा परी लखाय ॥
सोऊ कहिबे को शक्ती नहिं सुनिये रमा रमन रघुनाथ ।
चरित अनूपम महिमामित तुव कोकहिसकै अकह गुणगाथ ॥
भौहँ निहारत रहै सर्वदा सब दिन परो पगन के पास ।
सिद्धबिधाता शिवशंकरलग कीन्हे अमितअमित ज्यहिंनास ॥
श्रेष्ठ बतावत सब गावत गुण अतिव कराल बिदित संसार ।
पार न पावत बिनशावत त्यउ औरौ सुनिय जक्त कर्तार ॥
गूलरिबिरवा सम माया तुव आगम निगम रहे असगाय ।
ब्रह्मअण्ड सोइ फल तामहँ अति लागे अमित सुनहुँ रघुराय ॥
जीव चराचर बहु भुनगा सम भीतर बसैं फलन के राम ।
फल तजि दूसर सो जानै ना है कित अन्य औरहू ठाम ॥
ते फल भक्षक अति कराल जो तुव डर डरत सदा सो काल ।
ते तुम स्वामी सब लोकन के पूंछत नर समान म्वहिं हाल ॥

स० हे सुखदायक संत असंतन घायक संतत शुद्ध सुभायक ।
हे अमला कमलापति राम अनाथननाथ सदा सब लायक ॥
मांगतहौं मन भावत जो बर देहु सो पाणिधरे धनुशायक ।
बंधु सिये सह बंदि हिये निशिबासर बासकरौ रघुनायक ॥

जो जगपावत कोउ बिरला जन सो शुचि भक्ति और बैराग ।
प्रीति अभंगी निज पायँन की अरु सतसंग देहु सहराग ॥
यद्यपि निर्गुणरूप आपुको ब्रह्म अनंत कहत ज्यहि गाय ।
ध्यान न आवत जो ज्ञानहुँ ते ज्यहि कहँ भजत संत लवलाय ॥
सदा बखानौ सो जानौ मैं तद्यपि सुनौ राम सुखधाम ।
सगुण ब्रह्मकी रति मानौ मैं अस बरदान देहु अभिराम ॥
दया तुम्हारी जिन जीवन पर ते आनंद रहत सबकाल ।
तब शुचि सेवककी महिमाको को कहि सकै अपरिमित हाल ॥
रीति सनातन यह राउर की दासन देत बड़ाई राम ।

तातें मोसन प्रभु पूंछ्यो अस सो मैं कहत भाषि गुणग्राम ॥
नदी गोदावरि तट आनँद घट है प्रभु परम मनोहर ठाम।
सब दिन नाचै भक्ति नटी जहँ है गुणगटी धुर्जटी धाम ॥
स० आपदि द्वंदन सों निघटी सब भांति अनंदन सों लपटी है।
औ खग वृंदनहूं सों अटी शुभ सिद्धि पटी गुणज्ञान गटी है ॥
एकघटी न रहै कपटी सब भांति फटी भ्रमकी दुपटी है।
शोभ सटी जग क्षोभ कटी द्विज बंदि सो पावन पंचबटी है ॥
दाया करिकै द्विज मुनियन पर करिये तहां कछुक दिन बास।
जाते छूटै दुख दीननको होवै महा खलन को नास ॥
दण्ड भूपको वन पावन करि खग मृग सुखी करौ रघुराय।
शाप उधारौ मुनि उशनाको जैहै जगत माहिं यश छाय ॥
बंश तुम्हारेइ महँ उतपति भे ये खल नृपति दण्ड महराज।
चरित अपावन बतलावन हम इनकर सुनौ राम रघुराज ॥
वीर धराधिप मांधाता के भे मुचकुन्द पुत्र भूपाल।
रन सुनि उमगत ज्यहि तनमन मुद भुजा बिशालबैरि उरशाल ॥
तिनके लरिका पृथुराजा भे ज्यहि रथ चक्र सिंधु षट जात।
नृप इक्ष्वाकु आत्मज तिनको कीरति जासु जक्त बिख्यात ॥
तिनके लरिका शतावर्त नृप उनके भये आर्यावर्त।
शाका बाँधी जिन बीरनमा नामहिं सुने शत्रु हिय डर्त ॥
तिनके लरिका भरत भूप भे अति बलवान ज्ञान गुण धाम।
बिरच्यो भारत बर पुरान जिन भारत देश उनहिं को राम ॥
तिनके लरिका भे भूतर नृप भूतर नृपन माहिं शिरताज।
तिनके लरिका भये खांड नृप अतिशय शूर धनुष शरसाज ॥
तिनके लरिका भये दण्ड नृप व्यभिचारिन महँ महा प्रधान।
अवधपुरी की तिय कन्यन सँग हठि २ करत भोग रति ठान ॥
प्रजा अयोध्या की दुःखित भइ लखि अति दण्ड केर अन्याय।
गये गोहारी चलि खाण्डव ढिग सबरो हाल बतायो जाय ॥

प्रजा तुम्हारी अति पीड़ित नृप भयो अधर्मी पुत्र तुम्हार।
बास अयोध्याको तजि तजि सब भागे जात सहित परिवार॥
सुनि अस आपति अति रय्यतिकी नृप उर चिंता भई अपार।
युवा अवस्था महँ प्रापत लखि व्याह्यो सुतहि देय धिरकार॥
दण्ड सगाइउ के कीन्हे पर छाँड़्यो नहीं करब अन्याय।
तब अति चिंतित भयो खाण्ड नृप पुत्रहि जानि महादुखदाय॥
पुत्र नेहतजि खांड नृपति तब दण्डहि दियो देशते काढ़ि।
सो उदास ह्वैगो काननमहँ उर अतिभई विपतिकी बाढ़ि॥
जौने बनमहँ बसैं दैत्य गुरु उशना महा तपिन शिरताज।
तौने बनमहँ बसिखाण्डज सो चाह्यो नगर बसावन काज॥
स० बास बनैकरि सो नृप दण्डमनै धरि दैत्य गुरू ढिगजाई।
लागपढ़ै घटि ह्वै नित तासन पै न कछू समता चितआई॥
चाहै जितो गुण ज्ञानलहै पै गहै न कबौं खल सज्जनताई।
सींचिय केतक पय घृतते पर निम्बम आवति नाहिं मिठाई॥
इकदिन आयो अस अवसर तब गे तपकरन शुक्र बनमाहिं।
दण्ड पहूंच्यो तिन आश्रममहँ देख्यो दैत्य गुरू हैं नाहिं॥
रहै कुमारी तहँ उशनाकी जाकर रूप वर्णि ना जाय।
छई सुघरता अँग अंगनमहँ देखि अनंग तिया शरमाय॥
फूल तोरिबे हित कन्या सो गइ बाटिका मध्य हे राम।
सुछबि ललामा वय श्यामा सो अञ्जानाम रूपकी धाम॥
गयो दण्डनृप त्यहि कन्या ढिग लखि छबि भयो मूढ़ बशकाम।
हँसि अस भाष्यो मुनि कन्या सों सुनु सुन्दरी रूप अभिराम॥
आयकै लगिजा मम हिरदयमहँ तौ सब काम सिद्धि ह्वै जाय।
लखि तन तेरो मन मेरो अति मोहितभयो गयो भ्रमछाय॥
सुनि अस बानी दण्डभूपकी अञ्जा महा कोप उर छाय।
करियुग भौंहैं तिरछौंहैं अति बोली बैन नैन मटकाय॥
रेखल तोरे मन आईका यह अति कुमति कुगति दातार।

जो रनि चाहत गुरु कन्यासन है त्वहिं महा महा धिरकार ॥
बाप हमारे को चेला तैं ताते लगै हमारो भाय।
बात न वाजिब रहै तोहिं अस गै मूढ़ता वृथा हिय छाय ॥
है जो मंशा तुव बिवाहकी मो सँग सुनौ दण्ड मनलाय।
तौ मतिभोरी क्यों चोरी को भाषौ क्यों न पिता सनजाय ॥
कह्यो दण्ड पुनि गुरु कन्या सों धन्या तुसी न अन्या बाम।
होत न धीरज सुनि बानी तुव ताते पुरउ सयानी काम ॥
प्रथम लगाओ हिय हियते गहि पाछे कर बिवाह सामान।
होत न तोषित चित केहू बिधि तुव बिन लिहे अलिंगन दान ॥
कहि अस बरबस कै मन्मथवश लीन्ह्यो दण्ड तासु गहि हाथ।
कियो मनोरथ परिपूरण तब वहि बाटिका मध्य रघुनाथ ॥
हृदयसकेली गहि बेलीसम सो अलबेलि अकेली नारि।
जनु रतिमेली कामदेव उर क्रीड़त बिविध केलि मुदधारि ॥
करि मन चिंतन बरियाई नृप नख रद दान दीन मनलाय।
लगे नखक्षत बहु अब्जा उर श्रम बशगई अतिव कुम्हिलाय ॥
फिरि चलिआई निज आश्रम को दण्डौ गयो आपने बास।
तब कछु अवसरके बीतेपर आये सुथल शुक्र तपरास ॥
थकित निहारे अँग दुहिताके लता समान रही मुरझाय।
चिह्न बिलोके कछु रतिहू के नख क्षतरहे हृदय दरशाय ॥
क्रोधानल सों प्रज्वालित तब बोले शुक्र सुता सों डाटि।
तू रति अंकन सों अंकित कस शंकित हृदय लागि मुख लाटि ॥
परिहरु लज्जा करु बोधन मम का तुव दशाभई यह आज।
बाम बिधाता क्यहि ऊपरभे क्यहिपर परिहि बिपतिकी गाज ॥
बाप आपने को क्रोधित लखि अब्जा तबहिं त्यागिकै लाज।
कथा सुनायो कहिपापीकी जस कलुकीन खलन शिरताज ॥
कर्म अकारित सुनि चेला को अति रिस आनि शुक्रमहराज।
तुरत बोलायो दण्ड भूप को सुनिये तासु चरित रघुराज ॥

कर पुस्तकलै अति आतुरगति आये दण्ड शुक्र के पास।
देखत उशना त्यहि कोप्यो अति जनु बरिउठी हुताशनरास॥
तिरछी भृकुटी करि बोले तब रेनृप मूढ़ पाप आगार।
बंश कलंकी निरशंकी खल बंकी वृथा धरित्री भार॥
तोहिं पढ़ायो मैं विद्याबहु कीन्ह्यों शिष्य देय बर ज्ञान।
दिहे दक्षिणा त्यहि पलटे यह किहे अनीति धारि अभिमान॥

स० धूत कपूत महाकुल छूत कुमूत वृथा जननी दुखकारी।
बंक अशंक महामतिरंक सुबंश कलंक कितौ व्यभिचारी॥
कीनअकारित कर्म अधर्म सुता गुरु संगन नीतिविचारी।
रेखलराशि महाखलदण्ड सुले त्यहिकारण शाप हमारी॥

अतिशय पापी खाण्डुबंश यह जरिबरि अबहिं क्षार ह्वै जाय।
अंजुलिदाता कोउ उबरै ना इमि गुरु शाप दाप को पाय॥
जौने कानन को बासी तैं तौनौ बनौ होय जरिक्षार।
खग मृग कोऊ थल पावै ना है यह मोर शाप विकरार॥
शापसुदारुण गुरु मुखते सुनि कांप्यो दण्ड भूपको गात।
हाथ जोरिकै तब बोलत भो करिये क्षमा धीर मुनि जात॥
करिकै दाया वतलाओ अब होइहै कबै शाप उद्धार।
धरि उरधीरज मुनि बोले तब सुनु मम बचन पाप आगार॥
त्रेतायुगके अन्तकाल महँ होइहै जबै राम अवतार।
उनके चरणन के परशे ते होइहै तोर शाप उद्धार॥
यहि बिधि उशना के शापेते कीन्हे अति अनीति को कार।
तत्क्षन खाण्डव महराजाको जरिबरि भयो बंश सब क्षार॥
हे रघुनन्दन दशस्यंदन सुत धरि तहँ चरण कमल सुखदाय।
बड़ दुखदाता बन दण्डक को दारुण शाप उधारहु जाय॥
सुनि असबानी मुनि ज्ञानीकी लक्ष्मण सहित राम शिरनाय।
जनकदुलारी सह आतुर चलि आये पंचबटी नियराय॥
रामचंदके पद परशे ते मुनिकर शाप भयो उद्धार।

उकठे बिरवा हरियाने सब झुकि २ रहे फूल फलभार ॥
घुमड़ी झुमड़ी चहुं ओरनते दिये बितान लतानन तानि ।
नन्दन कानन ते सौ गुनि छबि रघुपति कृपा पाय दरशानि ॥
तहँ भेंट भै गीधराज सों अति दृढ़ प्रीति कीनि रघुराय ।
पुनि प्रभु आनँद दै तहँ ते चलि पहुँचे पंचबटी में जाय ॥
बह गोदावरि सरि निर्मलजल त्यहि तटभल अनूप थलपाय ।
कियो बसेरो तिय बंधव सह प्रभु तृण पर्णशाल तहँ छाय ॥

इतिश्रीमान्भार्गववंशावतंसमुंशीनवलकिशोरपुत्र श्रीमुंशीप्रयागनारायण
कीआज्ञानुसार मसवासीग्रामनिवासी पं० बंदीदीनदीक्षितनिर्मित
विजयराघवखण्डे आरण्यकाण्डेप्रथमोल्लासः १ ॥

अंजनिनंदन पद बंदन करि शारद चरण हरण तम ध्याय ।
विघन विदारण उर धारणकरि भाषत रामचरित बर गाय ॥
सुनि सुख गाथा याज्ञवल्क्यमुख गे अति भरद्वाज हर्षाय ।
माथ नायकै मुनि पायन महँ बोल्यो हाथ जोरि मुसकाय ॥
स्रवत तवानन शशिअमृतरस सुंदर राम कथा सुख खानि ।
कान अघाने नहिं पीवत ते मनहुं न तृप्त तोष हिय मानि ॥
ताते दायाकरि सेवक पर सुंदर भेव सहित मन लाय ।
विपति निकन्दन रघुनन्दन को कहिये सुयश और कछु गाय ॥
भरद्वाजकी सुनि बानी इमि ज्ञानी याज्ञवल्क्य मुनि राय ।
मानी आनँद अति हिरदय महँ गति सो कहि नभवानीजाय ॥
ध्यान लायकै प्रभु पायँन महँ श्रोता सुमति सुशीलो पाय ।
कथा यथा मति रामचन्द्रकी भाषन लगे हृदय हरषाय ॥
जबते रघुपति सिय लक्ष्मणसह कीन्ह्यों पंचबटीमा बास ।
तबते आनँद परकाशी अति नाशी सकल मुनिनकी त्रास ॥
ताल तलैया भरि निर्मलजल सरिता विमल रहीं उमड़ाय ।
छाई पुरइनि तिन ऊपर वर रहे प्रफुल्ल फुल्ल छबिछाय ॥
मधु गुंजारैं किलकारैं तहँ सारस हंस कीर समुदाय ।

जात हँकारैं जनु राहिन को चहुँ दिशि छटा रही दरशाय॥
फूले उपवन बन नीकी विधि बेली द्रुमन रहीं लपटाय।
गिरि न दिखानी पविखानी बहु खग मृग करत केलिसुखपाय॥

स० शोक नशे भुविदेवन के मुनि देवनके सुख बाजनबाजे।
शोभ गसे बनबाग तड़ाग सुभागन रागनसों भलभ्राजे॥
जीव असींव अनंदितबंदि अदेवनके दुखके दिन गाजे।
पर्णकुटी रचि जादिन ते थल पंचबटी रघुवीर बिराजे॥

इक दिन सुखसे निज आसन पर बैठे सियारमण रघुनाथ।
त्यहिक्षण निश्छलमन लक्ष्मण तब बोले बचन जोरियुगहाथ॥
सुनौ चराचर के स्वामी प्रभु नरमुनि देवदेव भगवान।
पूछन चाहत हैं अनुचर कछु सबबिधि नाथ आपनो जानि॥
म्वहिं समुझाइय सोभाषणकरि जाते सकल असारहि त्यागि।
निशि दिन सेवहुं पदपंकज रज सेवत जिन्हैं शंभु अनुरागि॥
ज्ञान बिरागहि कहि नीकीबिधि माया अपनि कहौ समुझाय।
भक्तिके लक्षण बतलावो पुनि जाते दया करहु नरराय॥
जीव ईश्वर को कहिये प्रभु मोसन सकल भेद बिलगाय।
रति अति उपजै तुव पायँनमहँ औ सब शोक मोह भ्रमजाय॥
सुनि असबानी लघु बंधवकी मन बच कर्म भक्त निजजानि।
बचन सयानी युत बोले तब प्रभु जगवास दास मुददानि॥
बहुत बुझावों कहि थोरे महँ मन चितमति लगाय सुनुभाय।
जाकहँ जानत कोउ बिरलाजन है अति कठिन वेदमतआय॥
मोर तोर मैं तैं यावत जग माया यहै जानिये तात।
जीव चराचर बशकीन्हे जैं कोउ न तासु बिलगदरशात॥
श्रवण नासिका चष जिह्वा त्वक.यहैं ज्ञान इन्द्रिरी पांच।
कर पग आनन गुदा लिंग ये जानिय कर्म इन्द्रिरी सांच॥
श्रवण देवता हैं दशहू दिशि जिह्वा बरुण त्वचाके बाय।
सूर्य देवता हैं नयनन के नाशा केर सूर्यसुत भाय॥

पैरन के सुर यज्ञ विष्णु अरु देउता गुदाकेर यमराज।
लिंग देवता दक्ष प्रजापति मुखके अग्नि हाथ सुरराज॥
ये दश इन्द्रिनके विषयन के भक्षक यई देवता जानु।
जहँलग इनकर चलिजावै मन माया सकल तौन परमानु॥
एक अविद्या अरु विद्या इक माया द्वै प्रकार की भाय।
अहै अविद्या सो दुष्टा अति जावश जीव जक्त भरमाय॥
एक बनावति है दुनियां को विद्या जासु नाम अभिराम।
सत रज तम ये गुण जाको बल भाषए करत बुद्धि के धाम॥
निज बल ताको कछु नाहीं है प्रभु के कहे करै सबकार।
भेद बतायों मैं माया को जाको कऊ न पावत पार॥

स० मोहिलिये सब जीव चराचर देवनहूं को भले भरमाया।
योगीयती गुनियां सबरे ज्यहि फंदपरे ऋषि औ मुनिराया॥
भेद बिचारत हारत शारद पावतपार न शेशहु गाया।
बंदिकलाज्यहिकी जगब्यापित सोप्रबला हरिकी यहमाया॥

जहां न एकौ ज्ञानमान मद देखत ब्रह्मरूप सब माहिं।
तातबिरागी त्यहि जानिय निजु तृणसमसिद्धि तीनिगुणनाहिं॥
माया ईश्वर नहिं अपना को समझै जीव कहिय त्यहि तात।
थूल देहको अभिमानी जो ज्ञानी कहत भाषि असबात॥
बन्धन मुक्ती को दाता जो सब से श्रेष्ठ श्रुतिन बिख्यात।
माया प्रेरकहै ईश्वर सो जामहँ नहिं प्रपंच दरशात॥
धर्म ते उतपति वर बिराग की त्यहिते योग होत पुनिभाय।
योग ते उतपति शुद्ध ज्ञानकी दाता मोक्ष ज्ञान स्वइ आय॥
बेगि पसीजौं मैं जाते जग सो ममभक्ति भक्त सुखदाय।
स्वेच्छाचारी सोगावत श्रुति परम पियारि मोहिं सतिभाय॥
आनभरोसो त्यहि नाहीं कछु ज्यहि आधीन ज्ञान विज्ञान।
अति सुखदाता है भ्राता सो नाता मोहिं मिलन को जान॥
संत महंतन की दाया से मिलै उपाय आन जग नाहिं।

तासु साधना कहि भाषौं कछु बंधव सुनौ गुनौ मनमाहिं ॥
स० प्रीति करै अति विप्रके पायँन निश्छलतारत सीधे सुभायन।
रीति गहै श्रुति नीतिकहै जस होहि सदा निज धर्म परायन॥
त्याग करै जगको खटराग औ जीति मनै मम माय डरायन।
बंदि अनंदित ह्वै नर सो करसों गहि लेवहि भेंटि नरायन॥
विषय विरागी करि आपन मन हमरे पगन प्रीति उपजाय।
श्रवणादिक जे नवभक्ती हैं साधै तिन्हें पुरुष शुचिकाय॥
होय अनंदित मम लीला लखि राखै सदा हिये अभिलाष।
संत महंतन के चरणन महँ अतिशय प्रेम करै तजि माख॥
बचन कर्म मन दृढ़ नेमी ह्वै मेरो भजन करै दिन राति।
गुरु पितु माता अरु भ्राता पति जानै मोहिं देव सब भांति॥
मम गुण गावत खन पुलकित तन नैनन बहैं प्रेमके आंशु।
कण्ठ घुचघुचा भरि आवै बहु गदगद बाणि जाय ह्वै जासु॥
काम आदि को मद होवै नहिं नीकि न लगै दम्भ की बात।
होहुँ निरन्तर बश ताके मैं मानिय सत्य बचन यह तात॥
बचनकर्म मन ज्यहि मेरिहिगति सब दिन भजनकरै निष्काम।
त्यहि जनकेरे हिय सरोज महँ प्रमुदित सदा करौं बिश्राम॥
भक्ति योग सुनि रघुनंदन मुख लक्ष्मण अतिव हृदय हर्षाय।
बचन अमोले मुदरोले सम बोले हाथ जोरि शिरनाय॥
सुनि सुखखानी प्रभु बानी अब मम संदेह भयो सब नाश।
नेह नवीनो तव पायँन महँ उपजो भयो ज्ञान परकाश॥
बचन मनोहर लघुबंधव के सुनि आनंद सिंधु हर्षान।
हृदय लगायो मन भायो अति गायो सो न जात हरियान॥
बहु दिन बीते यहि भांतिन तहँ कहत विराग नीति गुणज्ञान।
भयो अगारी फिरि कौतुक जो सो सुनु प्रिया धारिकै ध्यान॥
एक दिनौना की बातैं हैं सुनिये भरद्वाज मन लाय।
कियो तमासा अति खांसा प्रभु सो मैं तुम्हैं सुनावत गाय॥

निश्चर रावण की बहिनी लघु जाको सुर्पणखा असनाम ।
बिषय अतुष्टा हिय रुष्टा सम दुष्टा मनहुँ सांपिनी बाम ॥
पंचबटी महँ चलि आई सो इक दिन जहां राम को धाम ।
रूप बिलोकत दुउ कुवँरनको मोहित भई रांड़ बश काम ॥
खगपति दुस्तर अति जानहुँ तुम बिषयी तियन केरिगति भाय ।
पिता बन्धु औ सुत सुंदर तन निरखत बिषय दृष्टि मनलाय ॥
रबि मणि टघिलै जस देखे रबि तैसे सुघर पुरुष लखि बाल ।
बिकल काम बश मन थांभै ना बरबश करै भोग को ख्याल ॥
अधमनिशाचरि गति कीन्हीस्वइ प्रभुपहँ चलीकरन उपहास ।
होनहार तौ बड़ो प्रबलहै भा चहै निशाचरन को नाश ॥
रूप सवांरा सुरदारा सम अति छबि मनहुँ काम की बाम ।
धीरे धीरे चलि आई तब शोभित जहां राम सुख धाम ॥
तिरछी चितवनि चष बांके करि मदभरि छहरि बिषयके भाय ।
अंचल चोली कछु खोली तब बोली मधुर मन्द मुसकाय ॥
शिष्टा ब्रह्मैं रचि राखी जो सो भइ पूरि आज इत आय ।
तुम अस सुंदर नर मोसम तिय जगमें द्वितिय नहीं दरशाय ॥
तिहुँपुर ढूंढ़त थकि हारिउँ मैं पायों बराबरी बर नाहिं ।
त्यहि ते अबलग हौं क्वांरी मैं लीजै अस बिचारि मनमाहिं ॥
निरखि तुम्हारी सुंदरता कछु प्यारी लगी हमैं नरराय ।
अपने सदृश सुकुमारी लखि करौ उछाह ब्याह हर्षाय ॥
कहि अस भाषा सुपन्याखा जब तब श्रीराम बाम दिशि ताकि ।
हाल बुझायो त्यहि दुष्टाको भामिनि लेहु मोरि गति आंकि ॥
नारि सुंदरी इक मेरे सँग मोहिं न चाहिय ब्याह उत्साह ।
छोटो भैया है मेरो वह सो तुव करी प्रपूरण चाह ॥
सुनि प्रत्युत्तर रघुनंदन को आतुरगई लषण के पास ।
जानि हकीकति गे लक्ष्मण तब प्रभु तन चितै कह्यो करिहास ॥
मैंहौं अनुचर उन स्वामी को सुंदरि बचन करौ परमान ।

का सुख पैहौ म्वहिं ब्याहेते नहिं सुख पराधीन महँ जान ॥
कोशलपुरके महराजा वे समरथ सब प्रकार भगवान।
उन कहँ छाजी सब करिहैं जो भरिहैं तुम्हैं मोद सन्मान ॥
सिंह कि सरिवर नहिं करिवरकी बटयर बाज तुल्य नहिं बाम।
दास बराबरि नहिं स्वामी के मुद्रा सम न होय कहुँ दाम ॥
सेवक चाहै सुख अपना को ब्यसनी द्रब्यमान भिखियारि।
शुभगति चाहै ब्यभिचारी नर लोभी चहै सुकीरति भारि ॥
चर्चाकरिबो चहै निर्गुणी क्रोधी चहै अपन कल्यान।
दुहो अकाशहि कोउ चाहै जस तस येतिया बस्तु सब जान ॥
सुनि यह बानी लषणलालकी पुनि सो गई राम के पास।
राम पठाई पुनि लक्ष्मण ढिग होनी हुवा चहै नभ बास ॥
रिसकरि भाष्यो यह लक्ष्मण तब सुनु निर्लज्ज निशाचरिबाम।
होय बेशरम जो ब्याहै त्वहिं चहै न धर्म कर्म को नाम ॥
मन खिसियानी सुनि दुष्टा अस पहुँची राम निकट पुनि जाय।
रूप भयंकर दिखरावतभइ ज्यहि लखि धीरजाय भयखाय ॥
कच बिथराये फैलाये मुख बाये बड़े बड़े सब दांत।
रिसबश भौंहैं तिरछौहैं द्वउ पहिरे हृदय माल नर आंत ॥
नैन लाल विकराल मैनबश काननलगे फाट द्वउ गाल।
भाल सिकोरे रिसबोरे उर रही बोलाय खलन जनु काल ॥
बड़े नगारा समदरशैं कुच अँगियाकसे रंगकी कारि।
नाभि कराली जनु कालीहृद दीरघ जंघ खंभ अनुहारि ॥
उदर लँबानो पुरमानो जस लहँगा लसै करी की खाल।
लटकै नारा अहिकारासम बाहू जनु तमाल की डाल ॥
भय उपजायक तनताको अस निरखत सियागईं भयखाय।
हाल जानिकै तब दयालु यह दिय समुझाय सैनदै भाय ॥
अभिप्राय लहि जन सहाय को लक्ष्मण उठे हृदय रिसिआय।
झटपट कर सों गहि नटखटको लीन्ह्यों काटिनाक श्रुतिभाय ॥

यहि सुपन्याखा के हाथे जनु खल रावण को दीनितलाक।
अधिक भयंकर तन दीन्ह्यो करि लक्ष्मण धीर बीर चालाँक॥
नाक कान के कटि जैबे ते दुष्टा भई रूप बिकरार।
बह्यो पनारा तब शोणित को जनु गिरि गिरै गेरु कै धार॥
रोवति बिलखति उरताड़ति बहु करुणाकरति भरतिहियसांस।
आय पहूंची खरदूषण तैं जिनकर चहत होन अब नाश॥
बानि कररी कहि टेरी तब मेरी दशाभई यह भाय।
धिकधिक तुम्हरे बलपौरुष का बूड़ी सब तुम्हारि मनुसाय॥
दशा देखिकै निज बहिनी की सुनि असभरी शोक की बानि।
चिंतित बोले खरदूषण तब केहिबिधि बिपतिपरी यह आनि॥
शोक छांड़िकै कहु हमते सब तेरी दशाभई यहकाह।
कौन दुसरिहा मम पैदाभा केहिकै धरो चहै यमबांह॥
लगी निशाचरि गति बरणै सब भैया कहि न जाय कछुहाल॥
दई आपदा यह दीन्ही म्वहिं बिन अपराध आजु यहिकाल॥
दुइठइँ तपसी भूप रूपसम कीन्हे पंचबटी मा बास।
नारि सुंदरी यक लीन्हे सँग तिन यह कीन मोर उपहास॥
सुनि अस बानी दुष्टानी की भे अति कुपित निशाचरराय।
सैन सुभट्टनके साजन हित मारू बंबदीनि बजवाय॥
बजे नगारा हहकारा करि तुरही मनुष सिंह करनाल।
गर्जै डंका अहतंका के मानहुँ प्रलय काल घन जाल॥
बीर अशंका रण बंका तब सुनत जुझाउ बाद्य हहकार।
धाय इकट्ठे भे पट्ठे सब जिनकी प्रलय करनि ललकार॥
पहिरि सनाहै तब अंगन महँ कूँड़ी गहिरि शीश औंधाय।
कमर लपेटा कसि फेंटा तब तापर तरकस लीन बँधाय॥
छुरी कटारी तरवारी बर बांधी गैंड़ खाल की ढाल।
आले भाले कसे निराले देखत काल होय बेहाल॥
बरछी तिरछी अरु खांड़ा गहि लीन्ह्यो धनुष बान करलाय।

भरे उमंगन रण रंगनसों अंगन रह्यो बीर रस छाय॥
सजि सजि योधा सब ठाढ़ेभे चौदह सहस सुभट बरियार।
अपनी अपनी असवारिन पर भे तब फांदि फांदि असवार॥
ताजिन बाजिन की पीठी पर कोउ कोउ चढ़े सुभट बलवान।
कोऊ हाथिन के हौदापर बैठे ऐंठि रँगीले ज्वान॥
रथन बिराजे महारथी सब लाजे जिन्हैं देखि सुरराज।
कऊ सांड़ियन कउ गदहन पर चढ़ि चढ़ि चले युद्धके काज॥
कऊ नालकिन कऊ पालकिन कउ खच्चरन भये असवार।
रूप भयंकर कहि बरणै को कज्जलगिरि समान आकार॥
सैन सोहाई तेहि अवसर अस पावस घटा रही जनु छाय।
अस्त्र चमंकैं जनु सुरपति धनु शोभा अकह कही ना जाय॥
सजि खरदूषण इमि सैना सब तीनिउँ भाय युद्ध मनलाय।
चले अगारी करि दुष्टा को अशकुन रूप जौन दिखराय॥

स० घोर अवाजन गाजन लाग औ बाजन बाजन लाग जुझाऊ।
त्यों गजराज गराजन लाग औ काजन भाजन लाग डराऊ॥
संग अमंगल साजन लाग बिराजन लाग बली मनचाऊ।
ज्यों यमराज के काजन लाग चली जनु दैत्य समाज पठाऊ॥

कोउ कह मारो धरि भाई द्वउ सुन्दरि तिरिया लेहु छँड़ाय।
कोउ कह भैया अस भाषौ ना हमरी कही सुनौ मनलाय॥
फिरत अकेले घन जंगल मा तपसी रूप वीर कउ आयँ।
उनते लरिकै बंचिऐहौ ना जो ब्रह्मा लग होय सहायँ॥
कउ कह ऐसी तुम भाषौ ना सुनि खरदूषण उठी रिसाय।
यहि बिधि भाषत अभिलाषत सब आये जहां राम रघुराय॥
धूरि पूरिगै नभमण्डल मा चहुँ दिशि गई अँधेरिया छाय।
जीव पराने लै प्रानन का हाहाकार सुनो ना जाय॥
दशा देखिकै रघुनायक अस लषण बोलाय कह्यो समझाय।
जाउ सिया लै गिरिकन्दर मा निश्चर कटक गयो अबआय॥

हिय महँ संशय कछु कीन्ह्यों ना बंधव रह्यो बहुतु हुशियार।
सुनि प्रभु आयसु इमि लक्ष्मण तब सियलैचले हाथ धनुधार॥
चाप चढ़ायो हँसि रघुवर तब बांधे जटाजूट कसि माथ।
मर्कत पर्वतपर दामिनि सह लपटे मनहुँ अमित अहिनाथ॥
कसि बरतरकस करिहायें महँ कर महँ सशर शरासन धारि।
तिरछी चितवनि सों चितवत जनु केहरि गजदल रह्योनिहारि॥
करि बगमेला त्यहि अवसर महँ निश्चर कटक आय नगिचान।
धरु धरु करिकै खलधाये बहु रघुपति ओर सुनो हरियान॥
भये भोर जिमि अरुणोदय महँ घेरत अमित दनुज रबि बाल।
घेरयो रघुपति कहँ दुष्टन तिमि चाहत होन कालबश हाल॥
देखि देखिकै रघुनंदन दिशि मोहित भये निशाचर झारि।
जके थके से रहि ठाढ़े गे सके न बान धनुष ते डारि॥
मंत्रिहि टेरयो खरदूषण तब लागे कहन बचन समुझाय।
ये हैं लरिका कोउ राजनके नर शिरताज शोभ समुदाय॥
देव दैत्य अरु मुनि मानव सब देखे सुने हने बहु भाय।
अस सुघराई लखि पाई ना जस ये बीर रहे दरशाय॥
यदपि हमारी प्रिय बहिनी के लीन्हें नाक कान इन काटि।
तद्यपि मारनके लायक नहिं रही अनंग अंग छबि पाटि॥

स० जायकहौ समुझाय तिन्हैं मम आयस बंदि भलीविधिगाई।
प्रानसहाय चहौतौ गहौ यह बात जो निश्चरनाथ बताई॥
सुंदरि रूप निकाय तिया ज्यहि दीनि दुराय हिये भयखाई।
देहुपठाय सचाय त्वरै भगिजाहु घरै सुख सों द्वउ भाई॥

सुनि असबानी खरदूषणकी सानी जौन बीर रस माहिं।
आतुर गमने चर वर वर तब जानत रामचंद्र बल नाहिं॥
परा चहत सब काल गाल महँ ऐसी चाल माहिं खगराय।
क्षुद्रमसा की कहुँ फूंकनमा सकत न गिरिउड़ाय हे भाय॥
वृत्त बतायो खरदूषण को दूतन कह्यो राम सों जाय।

सो सुनि मनगुनि रघुनन्दन तब उत्तर तिन्हैं दीन मुसक्याय ॥
आज हमारी बड़ीभागिभै गई महान पुण्य समुहाय।
जो अस हमरे हितकारन वर शोचे मंत्र निशाचर राय॥
अब जो भाषत हम तुमसनबच सो कहि तिन्हैं सुनावहु जाय।
हम हैं बालक उन क्षत्रिन के रण हित जे उधार लैखायँ॥
स० कूरनके बच भाषौ कहा रणशूरन के यह काम नहीं हैं।
मूरनके हम ना लखि शत्रु विसूरनके डर नाम नहीं हैं॥
बाम भये तुम पै बिधना अब दूरि तुम्हैं यमधाम नहीं हैं।
मारन को तुम से खल बामहिये किये राम बिराम नहीं हैं॥
बनमहँ धारे धनुष बाण नित तुम से शठ मृग करैं शिकार।
कालहु आवै चढ़ि सन्मुख जो तौ भुजठोंकि करैं रणकार॥
यद्यपि देखहु नर बालक म्वहिं भर्म भुलान न जानत हाल।
तद्यपि निश्चर कुलघालकहम मुनि प्रतिपालकरन खलशाल॥
होय पराक्रम ना देही मा तौलै प्राण धरै भगिजाव।
समर भगैया को मारत ना हमरे हृदय यही बड़दाव॥
कपट चतुरता करि खेलै रण भरिउरदया तजै रिपु प्रान।
पूरो कायर त्यहि जानिय मन कबहुँन करी समर मैदान॥
रामचन्द्र मुख सुनिबाणी अस लौटे दूत सनाका खाय।
आय तुरंतै खरदूषण पहँ सबरो हाल कह्यो समुझाय॥
कोप प्रपूरित भे निश्चर तब नैनन गई लालरी छाय।
लिखी बिधाता कै मेटै को आयो मरण समय नियराय॥
हांक सुनाई सब ज्वानन का जालिम हुकुम दीन फिरवाय।
मारौ बेगिहि द्वउ तपसिन का जीवत एकु भागि नाजाय॥
करौ लड़ाई तजि शंका उर बीरौ घने अस्त्र बरसाय।
आपन मुर्चा तजि भागी जो त्यहिकै खाल लेहौं कढ़वाय॥
हुकुम नादरी खरदूषण का सुनि २ यातुधान बलवान।
शस्त्रसँभारनि ललकारनि करिधाये यथा मेघ असमान॥

तोमर फरशा शक्तिशूल अरु लीन्हे धनुषबान किरपान ।
प्रभु कहँ घेख्यो चौंगिर्दा ते जस चौंगड़ा गरासैं श्वान ॥
देखि जबरई अस दुष्टन की धनु टंकोर कीन भगवान ।
सो भयकारी सुनि कठोर धुनि कानन बहिर भये सब ज्वान ॥
ज्ञान बिहीने अति दीने ह्वै सबरे सुभट गये अकुलाय ।
दशा को बरणै त्यहि अवसर की है मुनि अकह कही नाजाय ॥
कछुक देरमा सावधान ह्वै धाये बली शत्रुकहँ जानि ।
बरसन लागे अस्त्र शस्त्र बहु तीक्षणबान धनुष गुनतानि ॥
तिल सम तिन के हथियारनको रघुपति काटिदीन भुविपाटि ।
तानि शरासन गुनकानन लग छांड़े बान दनुज दल डाटि ॥
कालव्याल सम फुंकारत तब चले कराल बानके जाल ।
मनहुँ पियासे बहु शोणितके तकि २ चले खल कटक ताल ॥
कोपे रघुपति समरभूमि महँ अगणित बाण कीन संधान ।
जैसे भादौं मघा नखत महँ बरसैं मेघ बुन्द के घान ॥
पैने बानन को आवत लखि रणते चले भागि सब ज्वान ।
रही सँभार न इक एकनकी भागे अपन २ लै प्रान ॥
मैया मैया कहि टेरैं कउ कोऊ बाप २ चिल्लाय ।
कऊ पलोटैं रण बसुधामा ज्यहि तन लाग बाण के घाय ॥
कउ कहैं कीन्ह्यो खर नीको नहिं इनसन लीनि जबरई रारि ।
इनकी वारन ते बचिहैं ना जै हैं सकल सुभट इत मारि ॥
बिषधर अहि सम फुफुकारत ये आवत अति करालशरजाल ।
ज्यहि तनलागत नहिंजागतभट प्रान पयान होत ततकाल ॥
होश उड़ाने रणशूरन के बाहन सैन गई अधियाय ।
भगे सिपाही खरदूषण के प्रभु की चोट सहीना जाय ॥
भागत दीख्यो जब बीरनका तब करि कोप तीनिहूं भाय ।
जोर शोर सों ललकारत भे बीरौ सुनिल्यो कान लगाय ॥
जो कोउ भगिहै समरभूमिते हमरे रिपुहि पीठि दिखराय ।

अपने हाथे हम मारब त्यहि करी न कउ सहाय तब भाय॥
प्राण आसरा तजि ताते अब रिपुसन लरौ चावउपजाय।
सुरपुर पैहौ मरिजैहौ जो जितिहौ सुयश जाय जग छाय॥
सुनि खरदूषण अरु त्रिशिराको आयसु यहिप्रकार को बाम।
फिरे भगैया भट तुरतै तहँ जहँ ह्वै रह्यो कठिन संग्राम॥
मरण ठानिकै मन अपने महँ सन्मुख भये राम के जाय।
जान गदोरिया पर धरिलीन्ह्यो दीन्ह्यो मनै रनै हरषाय॥
इक तौ बश हैं निज स्वामी के दूसर भये आपु बड़भाग।
तरा चहत हैं प्रभु सन्मुखमहँ हे प्रिय बिना योग जप याग॥
विविध भांति कै धरि आयुधकर लागे करन राम पर वार।
झुके सिपाही खरदूषण के करि २ प्रलयकार ललकार॥
लखि क्रोधातुर फिरिशत्रुनकहँ कीन्ह्यो राम धनुष संधान।
बान असंख्यन हनि मारे तब मचिगो महाघोर घमसान॥
घाय खाय तब बहु निश्चरगन घुर्मित गिरन भूमि पर लाग।
दशा को बरणै त्यहि अवसरकी बड़ २ ज्वान युद्ध तजिभाग॥
लोटैं धरती महँ कितन्यों भट कितन्यो करहि पलोटैं खायँ।
जे कोउ योधा सन्मुख जूझैं तिनको देव परी लै जायँ॥
कठिन लराई त्यहि क्षनमा भइ अति बलकीन रामघनश्याम।
अपन परावा कछु सूझै ना परिगो महा विपति सों काम॥
ढेर लागिगे बहु मुण्डनके कहुँ रुण्डन के लगे पहार।
सरि उमड़ानी रण शोणित की दरशै अरुण रंगकी धार॥
खण्डखण्ड ह्वै बहुयोधा गण भुवि रज भरे परे लुलुआयँ।
होरी खेले जनु आवत हैं तन महँ रँग अबीर दिखरायँ॥
हाथन पायँन सों तोपी भुवि रुक्षहन केर मनहुँ खरिहान।
बिना मुण्ड के रुण्ड अनेकन धावत दश दिशान बिनप्रान॥
गिरीं कटारी तरवारी भुवि मानहुँ नाग रहे उतराय।
ढालैं गिरिगइँ छुटि शूरन की सरि महँ रहे कच्छ जनुछाय॥

काटि २ बख्तर अरु जिरहैंबहु मिलिगईं समरभूमि की छार ।
अगणित मुर्दा गिरि शोणित महँ मानहुँ परे मगर घरियार ॥
रुण्ड मुण्ड बहु आसमान महँ रहे उड़ाय बिना पग बाहु ।
ताकी उपमा बतलावै कवि जनु नभ उदय केतु अरु राहु ॥
मांस अहारी खग झुण्डन तब उड़ि २ समरभूमि लियझांपि ।
सुनि हहकारनि खल स्यारनिकी थर २ उठैं करेजा कांपि ॥
काग चिल्हारिनके दल वरये गये अघाय खायकै मास ।
झुक्कीं चुरैलैं लै भूतनका पी पी रुधिर करैं परिहास ॥
प्रेत पिशाचन खप्पर साजे योगिनि रहीं नाचि बिकराल ।
मंगल गावैं चामुण्डागण देत कपाल ताल बैताल ॥
तीषे शायक रघुनायक के लागत कटैं भुजा हिय माथ ।
गिरैं जहां तहँ भट घायल ह्वै पुनि उठि लरैं शस्त्र लै हाथ ॥
लै लै अँतरी उड़ैं गीध नभ कर गहि रहे भूत मड़राय ।
संगरमानहुँ पुरबासी तहँ बहु शिशु रहे पतंग उड़ाय ॥
मारि पछारे प्रभु निश्चर गण सैना सकल गई अधियाय ।
निजदल व्याकुल लखि दूषणखर त्रिशिरादिक तब उठेरिसाय॥
अस्त्र शस्त्र लै रामचन्द्रपर घूमे तबहिं तीनिहूं भाय ।
घोर गर्जना सों गर्जन करि प्रभु सामुहें गये समुहाय ॥
तोमर फरशा शक्ति शूल अरु छोंड़न लगे बान किरपान ।
शस्त्र हजारन इकवारन महँ मारत यातुधान बलवान ॥
क्षणै एक महँ तिन दुष्टन के आयुध काटि राम बलधाम ।
पावस बर्षा सम शायक हनि कीन्हे अमित ज्वान बेकाम ॥
यावत योधा वहि सैना महँ सबके हृदय मांझ हरियान ।
दश दश शायक रघुनायक के प्रविशेनशे सुभट भयमान ॥
पार न पावत प्रभु सन्मुख तब माया करत कपट दरशाय ।
राम अकेले अरु निश्चर बहु देखि डेरात देव समुदाय ॥
देखि सशंकित सुर मुनियनको मायानाथ कीन बर ख्याल ।

राम मानिकै सब आपुस महँ लरि २ सुभट भये बश काल ॥
राम राम कहि तन छौंड़ैं ते पावैं अनायास प्रभुधाम।
यत्न अनोखी करि अवसर त्यहि लीन्ह्यो विजय राम संग्राम ॥
बजे नगारा तब देवन के प्रभु पर सुमन रहे बरसाय।
चढ़े विमानन महँ अस्तुति करि निजनिज धाम चले हरषाय ॥
कठिन लराई खरदूषणकी महिभूषण कर चरित अपार।
पार न पावत ब्रह्मादिक सुर कह्यो सो बंदि बुद्धि अनुसार ॥
इतिश्रीलक्ष्मणपुरस्थभार्गववंशावतंसश्रीमान्मुंशीनवलकिशोरात्मजश्री
मुंशीप्रयागनारायणस्याज्ञाभिगामीमसवासीनिवासीपं०बंदीदीनदीक्षित
निर्मितविजयराघवखण्डेआरण्यकाण्डेद्वितीयोल्लासः २ ॥
विघन निकंदन पदबंदन करि रघुनंदनको माथ नवाय।
मातु कालिका को सुमिरण करि गावत राम सुयश मन लाय ॥
कह्यो भवानी ते शंकर जस खगपति प्रति भुशुण्डि महराज।
याज्ञवल्क्य मुनि भाषण कीन्ह्यो मुनिवर भरद्वाज के काज ॥
कथा अनूपम सो रघुपतिकी सुन्दर विपिन चरित्र उदार।
निज मति सदृश सो गावत मैं ज्यहि सुनिहोय दोष दुखक्षार ॥
जब रघुनंदन रिपु जीते रण नर मुनि देव दुःखबिनशान।
लषण लयाये तब सीताको पगपरि मिले अधिक हर्षान ॥
कमल दाम सम श्याम राम तन निरखत सिया प्रेम हुलसाय।
छकत नैन नहिंछबि माधुरि लखि अंगन रह्यो बीर रसछाय ॥
पंचबटी महँबसि रघुबर प्रभु यहिविधि नितप्रति चरित अपार।
करत हरत दुख सुर मुनियनको भरत अनंद द्वंद हर्तार ॥
इतकी लीला यहि भांतिन भइ उतको श्रवण करौ अब हाल।
जब त्रिशिरादिक सब मारेगे भे खरदूषणादि बशकाल ॥
रोवत पीटत सुपन्याखा तब रावण सभा पहूंची जाय।
जहँ मंत्रिन सह सिंहासन पर राजत बीर निशाचर राय ॥
अगणित योधा यातुधान गण राजत बड़े २ सरदार।

दरशत अनुपम राज साज अति मानहुँ द्वितिय इन्द्र दरबार ॥
दाखिल ह्वैकै तहँ रावण ते रिस करि निश्चरि लागि बताय ।
रेखल निश्चरपति दीन्हे तैं देशरुकोष सुरति बिसराय ॥
निशिदिन सोवसि मद धारण करि कछू न लाज शंक हिय माहिं।
आवा दुश्मनु शिर ऊपर चढ़ि अहमक तोहिं नेक सुधि नाहिं ॥
राज जात मिटि राज नीति बिनु धन बिन धर्म नहीं ठहराय ।
कर्मसु उत्तम हरि अर्पे बिनु सोहत नहीं नेक सुनुभाय ॥
विद्या बिनशत बिन बिचार के भूलत पठे ग्रन्थ बिन पाठ ।
संग फंग ते संन्यासी अरु भूप कुमंत्र मेड़ बिन भाठ ॥
लज्जा बिनशत नशा पानते होत निदान मानते ज्ञान ।
प्रीति नम्रता बिन निबहत नहिं सुनिये लंकनाथ दैकान ॥
गुणी गुण रहित मद कीन्हेते सम्मत नीतिकेर यह आय ।
त्यहिते तुमका समुझावतिहौं सुनि उर करु बिचार मनलाय ॥
पाप हुताशन अरु दुश्मन रुज कबहुँ न इन्हें जानिये छोट ।
उपजत इनकहँ जो नाशैना सो पुनि जाय बारहौबाँट ॥
अस कहि बिलपत बहुभांतिन तब रोवनलगी मारि डिड़कारि ।
लट छिटकारत उर ताड़त कर पीटत माथ भूमि महँ मारि ॥
गिरिगइ ब्याकुल ह्वै संसदिमधि बरसत नैन पनारन आंसु ।
तोरे जीवत दशकंधर मम अस दुर्दशा होय अनयासु ॥
सुर्पणखाकी अस बाणी सुनि मंत्रिन बाहँपकरि बैठाय ।
बहुत बुझायो समझायो त्यहि बोल्यो तबहिं निशाचरराय ॥
दशा आपनी कहि भाषत किन क्यहिं तुव नाक कान लियकाटि ।
कालकलेवा क्यहिचाहतकिय ज्यहिं मम बलमिलायदिय माटि ॥
भाषनलागी सुपन्याखा तब सुनु दशशीश बीस दै कान ।
अवधदेश के राजा दशरथ तिनके युगुल पुत्र बलवान ॥
खेलन आये इत काननमहँ सिंह समान मान बन माहिं ।
तिनकी करणी म्वहिं लागतिअसि रखिहैं यातुधान भुविनाहिं ॥

पाय बाहुबल जिन बीरनकर घूमत मुनि अशंक बन मांझ।
देखत बालक अजय कालसम बड़े गँभीर धीर भय बांझ॥
महा धनुर्धर गुणपूरित बर अतुलित बल प्रताप द्वउ भाय।
खल संहारनमहँ उद्यत सो सुर मुनि अभयकरन नरराय॥
अति ललाम छबिधाम श्यामतन प्रभाभिराम राम असनाम।
काम बामबर यक तिनके सँग सोहत कमल दामसी बाम॥
रूप सवाँरी सुकुमारी अति प्यारी बयस अल्प सुखखानि।
त्यहि सम नारी नहिं दुनियाँमा गुनियाँ महामोहिं दरशानि॥
मैं मन दीख्यों यह चिंतनकरि बिधि असिरची एकही नारि।
देवदुलारी त्यहि पटतरनहिं रति शतकोटि जायँ बलिहारि॥
जाय देखिहौ तुम ज्यहिक्षन त्यहि होइहौ बिकल मोहबश भाय।
मुक्ति लोक अरु बश ताके सब जाके ऐसि सुंदरी जाय॥
ताको बंधव लघु लक्ष्मण ज्यहिं काटी मोरि नाक अरु कान।
बहिनि तुम्हारी म्वहिं बोधितकरि कीन्ह्यों हँसी और अपमान॥
दशा हमारी बिना चूक यह जो पै कीनि लषण लघु बाल।
तौ अपराधी बरिऐहैं किमि जानि न परत मोहिं कछु हाल॥
गइउँ गोहारी खरदूषणकी उनते कह्यों दशा सब जाय।
अगणित योधा लै धायेते तिनके निकट तीनिहूं भाय॥
कठिन लराईकरि अवसर त्यहि अकिले राम जीति संग्राम।
भट खरदूषण त्रिशिरादिक सब हनि हनि पठैदीन यमधाम॥
शोक समन्वित सुपन्याखा के सुनिकै बचन निशाचरराय।
तीनिउँ भैया खरदूषणकर मरण बिचारि गई रिसछाय॥
गयो शोचबश अति मुर्छित ह्वै बुझिगै हृदयकेरि उत्साह।
पहर सैकरन सम बीतै पल लहत न मन बिराम खलनाह॥
आपन बिक्रमकरि वर्णन तब दीन्ह्यसि सुर्पनखै समझाय।
भवन पधास्यो मन चिंतित त्यहि परी न नींद राति को भाय॥
मोरे भृत्यन सम भारीभट नहिं कोउ अस जहान महँ आन।

देव अदेवन नर नागनमहँ देख्यों अस न नैन बलवान ॥
मो समान भट खरदूषण द्वउ हनै को तिन्हैं बिना भगवान ।
बोध न आयो कछु हिरदयमहँ तबकिय असबिचार धरिध्यान ॥
जो सुर रंजन खल गंजन प्रभु भंजन अमित भूमि को भार ।
ब्रह्मनिरंजन मम मारण हित धारणकीन पुरुष अवतार ॥
तौ बरिआई बैरठानिकै प्रभु शर निहित जाउँ भवपार ।
भजन न होइहै कछु तामस तन है दृढ़ यही मंत्र निर्द्धार ॥
यदि मानुषतन नृप बालक तौ हरितिय लेहौं जीति द्वउ भाय ।
ठानि मंत्र यह दृढ़ हियरे महँ घर तजि चल्यो निशाचरराय ॥
साजि अनूपम रथ शोभा गथ खच्चर जोति चारि त्वर चाल ।
चढ़ि एकाकी मग ताकी तहँ जहँ मारीच रहत सब काल ॥
चलै उछाहन हरि बाहन सम खच्चर वेग चाल सों बाल ।
उपमा बरणत बनि आवैना गावै क्यहि प्रकार कबि हाल ॥
छत्र सुशोभित शिर सांवरतन उज्ज्वल चमर रही छबिछाय ।
मुकुट जगमगैं दश माथन महँ हाथन अस्त्र रहे दरशाय ॥
नांघत सरिता सर परबतबर निरखत कूप बावली माल ।
बाग बाटिका बन उपबन शुचि देखत नगर डगर बरख्याल ॥
विचरत हरिणा गण इत उत कहुँ बैठे स्वच्छ वृक्ष की डार ।
बोलत कोकिल पिक मधुरीधुनि करत कलोल विविध परकार ॥
लखत बहारै यहि भांतिनकी पहुँच्यो बेगि सिंधु तट आय ।
जो शतयोजन लग विस्तृत अति अगणित जीवरहे उतराय ॥
वृक्ष किनारे बहुभांतिनके लागे अमित पांति की पांति ।
लपटीं लतिका तिन ऊपरबर कोरक छटा न्यून दरशाति ॥
यहिबिधि शोभालखि जलनिधिकी भोमन मुदित लंक भर्त्तार ।
सुनो हकीकति प्रिय आगेकी जस कछु कीन जक्त कर्त्तार ॥
ज्यहिक्षन लक्ष्मण गे काननकहँ लावन मूल फूल फल काज ।
त्यहिक्षन मनगुनि भूतनयासों हँसि अस कह्यो राम रघुराज ॥

सुमति सुशीला प्रिय भूषणतिय सुनु इक मोरि बात धरिध्यान।
मैं कछु करिहौं नरलीला इत हीला तोर ठानि परधान॥
त्यहिते निवसौ तुम पावकमहँ तबलग मुनि नृदेवहित मानि।
जबलग सिगरे दुखदायी खल डारहुँ यातुधाननहिं भानि॥
कह्योहकीकति जब याबिधि प्रभु तब धरिहृदयस्वामिपद ध्यान।
जाय समानी ज्वालानलमहँ रघुपति चरित अमित हरियान॥
अपने सदृश को सुंदरबर निज प्रतिबिंब दीन तहँ राखि।
भेद न जान्यो लक्ष्मणहूं यह अकिले रामचन्द्र त्यहि साखि॥
इतने अवसरके अंतरमहँ मारिच निकट गयो दशमाथ।
अपने स्वारथके पूरनहित कीन प्रणाम जोरि युगहाथ॥
नवनि नकारी खल नीचनकै सुनिये भरद्वाज मनलाय।
नवनि शरासन जस वेधै शर अंकुश देत करेजे घाय॥
डसै भुवंगम तन नवतै खन देत बिलाय चोट बरिआय।
तैसिय हालति नरदुष्टनकी नवतै देत महा दुखभाय॥
मीठी बानी खल अधमनकी है अचरज्ज बानि भयदानि।
जस अश्चर्य्यित नभफूलब प्रिय करिय प्रमान मानि ममबानि॥
लीन सहादर उठि मारिच त्यहि आसन स्वच्छ लाय बैठाय।
विविध भांति सों करिपूजन तब पूंछ्यो कुशलप्रश्न लवलाय॥
कौनसो कारण भालंकापति शंकायुक्त चित्त दिखरात।
मुखमलिनाई जनुछाई अति आयो इतै अकेले तात॥
यहि बिधि भाषण सुनि मारिचको लागा कहन अभागा बानि।
हाल बतावत कहि आदिहिते कूरगरूर चूर अभिमानि॥
भूप अयोध्याके दशरथ इक तिनके उभय पुत्र बलवान।
वेष तपस्वी वय थोरीके छबि लखि छुटत कामको मान॥
नारिसुंदरी यक तिनके सँग शोभा अंगअंग रहिछाय।
नाम राम है बड़ बालकको छोटो तासु लक्ष्मण भाय॥
तौने लक्ष्मण सुपन्याखाको लीन्ह्यो काटि नाक औ कान।

धूरि मिलायो बल बिक्रमसब किय परिहास भगिनि ममजान ॥
खबरिपायकै खर दूषण अस लै बहुबीर कीन संग्राम ।
मारि गिरायो तिन सबहिनका संगर भूमि अकेले राम ॥
जानि हकीकति असि आयोंमैं तुम्हरे पास शोचि यह काम ।
होहु कपटमृग तुम छलबल करि तौ मैं हरौं बाम अभिराम ॥
सुनि असबानी अभिमानी की तब मारीच कह्यो समभाय ।
अस जनिभाषहु अभिलाषहु मन चुपकरि बैठिरहौ घरजाय ॥
हैं नृप बालक प्रभु नाहीं वे जानहुँ सकल चराचर स्वामि ।
तिनके बैरन बरिऐहौना मानहुँ कहत जौन अनुगामि ॥
ज्यहिके नाशे जगबिनशै सब पुनि चाहै तौ देय जियाय ।
पारन पैहौ त्यहि ईश्वरते करि शत्रुता निशाचर राय ॥
तुम्हैं सुनावौं मैं आपनि गति सुनौ सो हाल बालकन क्यार ।
मुनि मखराखनको गे हते यइ बिनु फर बाण दीन म्वहिं मार ॥
गिस्यों आयकै शतयोजन पर तिनते बैर किये भल नाहिं ।
बड़े धनुर्धर द्वउ भैया हैं इनसम भट न तीनिपुर माहिं ॥
कीट भृंगकी गति मेरी भै जहँ तहँ देखि परैं दोउ भाय ।
यद्यपि मानुष तउ योधा हैं नहिं तिन बैर खैर देखराय ॥
हनी ताड़का जिन शायक यक सहजे मारि दीन शुभबाहु ।
चण्डी पतिको धनु खण्डित करि मेट्यो नृपन केर उतसाहु ॥
मान बिभंजन करि भृगुपति को कीन्ह्यो जनक सुताको व्याहु ।
परसि सुपावन रज मेट्यो इन गौतम तिया हृदय को डाहु ॥
अति बलशाली हति विराधशठ दारुण शाप छुटायो ताहु ।
ज्यहिंहनि मार्‍यो खरदूषणका त्यहिंनर जानि धोखजनि खाहु ॥
राक्षस सुनतै खनकांपै तन अंतर प्राण उठत घबराय ।
चहौ कुशलता निज कुलकी यदि तौ घर जाहु मारि चुपभाय ॥
सुनि अससम्मत सतमारिचको बहुत रिसान निशाचरराय ।
गारि हजारनदै मारिचको बोला अहंकार दरशाय ॥

गुरुकी नाईं सिखलावत शठ सुनेन मोर पराक्रम कान।
सुरपुर नरपुर अहिपुरहू महँ को असमो समान बलवान॥
यहिविधि बानी सुनि रावणकी कियमारीच हृदय अनुमान।
वैरबेसाहे इननवते पुनि होतन क्यहू भांति कल्यान॥
आयुध धारी अरु भेदिहाजन मूरुख धनी रोगहर्त्तार।
आपन स्वामी अरु बंदीजन गुणी मनुष्य काव्य कर्त्तार॥
यहिकी रिपुता महँ नाहिन भल असमारीच मन्त्र निर्धारि।
मरन जानिकै द्वउभांतिनते ताक्यसि रामशरण भयहारि॥
उत्तर देतै यह मारीम्वहिं काहेन मरौं रामशर लागि।
योनि नशैहै खल निश्चरकी जैहै जन्म मरण दुख भागि॥
तजि असमंजस उठि तत्क्षनतब चलिभो लंकनाथके साथ।
प्रेम लगायो प्रभुपावन महँ पायो परी मुक्तिजनु पाथ॥
मनमहँ आनँद उमगानी अति सो रावणहिं जनायो नाहिं।
सुखद कहानी प्रभुयशकी उर सुमिरत चलो जातमगमाहिं॥
आज देखिकै प्रिय प्रीतमको करिहौं सुफलनैन सुखपाय।
सीतानुज सह रघुनन्दनके लैहौं चरण ध्यान मन लाय॥
दाता शुभगति ज्यहि क्रोधहु है सहजै वश्यलेत करिदास।
सो प्रभु अपने करशायक धरि करिहैं मोरि नाश भवपास॥
ज्यहि क्षनपाछे मम आछेतन धइहैं धरे हाथ धनुबान।
त्यहिक्षन फिरि २ दृगदेखिहौं प्रभु मोसम आज धन्यनहिंआन॥
यहिविधि शोचत मनमोचत श्रम भटमारीच लंकपति साथ।
आय पहूंचे त्यहि बनमहँजहँ सहसिय बंधु बसत रघुनाथ॥
राक्षस मायाकरि तत्क्षन तब भोमारीच कपट मृगबाम।
अतिहि सुघरता युत कंचनतन दरशत अंगअंग अभिराम॥
निकस्यो प्रभुके थल आगे ह्वै धावत मधुर चाल छवि आल।
जनकलड़ैती त्यहिनिरख्योदृगमृगतन अतिबिशालद्युतिजाल॥
हँसिरघुनन्दन सोंबोलीं तब हेप्रभु भक्त बचन प्रतिपाल।

यहिवर हरनाकी दरसतम्वहिं उत्तम बनक कनककी खाल ॥
सत्प्रण धारण यहि मारणकरि आनहुँ पर्मचर्म ममकाज ।
सुनिप्रिय भाषण जगतारण सब कारण गये जानि छलसाज ॥
काम सवाँरण हित देवनको टारण हेत धराको भार ।
खलदल दारण बिस्तारणको सुयश अपार भयेतय्यार ॥
उठि दृढ़फेंटा कसिबांध्यो कटि तापर अक्षय त्रोणलिय बांधि ।
जटालपेटे वरमाथे महँ हाथे बाण शरासन साधि ॥
कहि समझायो पुनि लक्ष्मणकहँ बनमहँ फिरत बहुत खलभाय ।
सियारखायो तुमनीकी विधि बुधिबल समय सरिस मनलाय ॥
असकहि डगरे प्रभुतौनी मग जौनी राह गयो मृगधाय ।
भेअसमंजस वश देउतातब पपिहा यथा पावसहि पाय ॥
आवत पाछे लखि रघुपतिको हरणा चल्यो चाल त्वरभाजि ।
दृष्टि लगाये त्यहि हरणातन धाये राम शरासन साजि ॥
ध्यान न पायो निगमागम ज्यहि हारे विधि महेश गुणगाय ।
मायापति सो रघुराया प्रभु पाछे चले मृगाके धाय ॥

कु० हरणा चेतन कनक को लख्यो दृगन कउ नाहिं ।
विदित न जगमें नहिं लिखो वेद पुराणन माहिं ॥
वेद पुराणनमाहिं कबहुं कानन सुनि पायो ।
तृष्णावश रघुनाथ भूलि पाछे त्यहि धायो ॥
कहि द्विज बंदीदीन वीन पुरुषन यह वरणा ।
आवतही दुख समय होत सुधि बुधि को हरणा ॥

कबहुंक पासै महँभासै सो कबहुंक परै दूरि दिखराय ।
लैगो रामहिं बहुदूरी पर प्रकटत दुरत करत छल भाय ॥
तब प्रभुमाख्यो कठिन बानतकि बसुधा पख्यो घोर चिग्घारि ।
नाम लक्ष्मणको प्रथमहिंलै सुमिख्यो बहुरि राम धनुधारि ॥
प्राणतजतखन तनप्रगट्योनिज कियहिय राम जानकी ध्यान ।
प्रेमपरीक्षा लै भीतरकी शुभगति ताहि दीनि भगवान ॥

देव प्रहर्षे बहु बर्षे तब प्रभुपर फूल माल सुविशाल।
गावन लागे अति पावन गुण जय २ रमा रमन खलकाल॥
जयजन दुखियनके दयाल तुम असुरहि दियो मारिनिजधाम।
अगम तुम्हारी गौरवता अरु प्रभुता दया शीलता राम॥
हति खल नीचै मारीचै जब लौटे भानुवंश के भानु।
तरकस सरकस करिहायें महँ सोहत कमल हाथ धनु बानु॥
उतै हकीकति जस बीततिभै लक्ष्मण सिया माहिं ह्वरियान।
सो बतलावतकहि तुमसनसब सुनौ विचित्र चरित धरिध्यान॥
आरतबानी खल मारिचकी टेस्यो प्रथम लषण को नाम।
सो सुनि सीता सुंदरीता ह्वै भई सभीत हृदय बेकाम॥
लागीं लक्ष्मण सों भाषण इमि देवर परत मोहिं असजानि।
परे कुसंकट महँ भाई तुव टेरी तुम्हैं करेरी बानि॥
जाउ शीघ्रता महँ चलिकै तहँ तिनकै दशा बिलोको जाय।
परी आपदा का दैवीवश बिधि बामता परत न लखाय॥
सुनि जगदंबा के शंकित बच बोले लषण बीर मुसक्याय।
वृथा अकारण की शंका यह करिये दूरि हृदय ते माय॥
भौंहँ बिगारत ज्यहि स्वामी के सब संसार होत संहार।
ताहि न संकट कहुँ स्वपन्यो मा परिहै अस बिचार हियधार॥
यद्यपि जानत यह नीकी विधि तद्यपि सुनौ औरि यकबात।
तुम कहँ थातीप्रभु सौंप्योम्वहिं छांड़िसो तहांबनत नहिंजात॥
छांड़ि अकेली यदि तुमको मैं यहि थल जाउँ रामके पास।
क्यहु बिधि तोषन हिय ह्वैहै ना परिहै विपतिफांस अनयास॥
अति भयदायक घन काननमहँ तुम्हैं अकेलिरहब भलनाहिं।
इत उत घूमत खल रातिउदिन करतअनेक विघन बनमाहिं॥
है असमंजस अरु दूसरयह जो मैं गयों राम के पास।
देखतै हमकाप्रभु पुंछिहैं यह छोंड्यो सिय अकेलि क्यहिआस॥
त्यहि क्षन उत्तर मैं देहौं कह लेहौं अयश भार शिर धारि।

तजि एकाकी यहि कारण त्वहिं नहिं भल अहै जावमहतारि ॥
लषण विभाषण सुनि सीता तब लागीं कहन भेदकी बानि ।
लखी तुम्हारी चतुराई मैं भाय निदान तुम्हैं सुख खानि ॥
चहत बनावन निज नारी म्वहिं यहिहित तहां जात सकुचात ।
सीय सयानी की बानी इमि सुनि जरिगयो लषणको गात ॥
अपने अस्थल के चारिउ दिशि रेखाधनुष कोटि सों खांचि ।
कठिन कारहै होनहारको समझ्यो लषण बानि सिय सांचि ॥
मौन मारिकै मन ताही क्षन वन दिशि देव सौंपि सब काहु ।
गमने आतुर रहँ वनमहँ जहँ रावण शशो ग्रसन कर राहु ॥
चितवत पाछे फिरिसीतहि इमि जानि अकेलिलषण मनलाय ।
जैसे परवश परि हुँकरै फिरि बछवा तजे गाय निज माय ॥
इकतो डरपत डररघुपतिके पुनि सिय तजे अकेली जात ।
लषण तेज हत भे कारण यहि जस दव लगे लतामुरझात ॥
दूरि निकसिगे भट लक्ष्मण जब पावा सून बीच दशमाथ ।
यतीवेषधरि त्यहि अवसरपर आवा सिय समीप खगनाथ ॥
डरैं सुरासुर सब जाके डर निद्रा निशि न अन्न दिन खाँयँ ।
सो दशकंधर शठ कुत्ताइव पर घर चल्यो करन भँड़िहाँयँ ॥
यथा कुमारग महँ दीन्हें पग रहत न तेज बुद्धि बल ज्ञान ।
तैसिय करणी भै आगे सब बरणी जो न जात मतिमान ॥
कपट चतुरता करि कोटिन विधि मांग्यो भीख सियासोंजाय ।
अतिथि जानिकै जगदंबा तब दीन्ह्यो कंदमूल फल लाय ॥
लाग्यो करिबे छल रावण तब स्वारथपग्यो कपट अनुमानि ।
शुद्ध साधुसम बच भाषतभो सुनु सुंदरी सुंदरी बानि ॥
बांधी भिक्षा मैं लैहौंना अनुचित लोक वेद यह बात ।
काल कठिनता अरु दैवीबश आईं रेख नाँघि जग मात ॥
बिश्व सवाँरनि संहारानि अघ सारनि सकल सुरन के काज ।
त्यहिं पहिचान्यो नहिं रावणको कीन्हे मूढ़ कपट को साज ॥

सामदाम अरु दण्ड भेदसों वरण्यो दुष्ट बिविध इतिहास।
कह्यो जानकी चित चिंतित तब सुनिये यती ज्ञान गुणरास॥
रूप तुम्हारो अति उत्तम अरु बोलत बचन दुष्टकी नायँ।
होत सशंकित मन याते मम कारण कछू परत दिखराय॥
रूप आपनो दिखरायो तब रावण नाम सुनायो भाखि।
ह्वै भयमानी सियरानी तब बानी कह्यो धीर उर राखि॥
अबहीं स्वामी मम आवत हैं रहु खल मलिन ठाढ़ यहि ठाम।
मरण समैया तुव आई शठ भाई तोहिं रामकी बाम॥
चहै चौगड़ा जस सिंहिनिका खगपति बराबरी चह काग।
महिमा जलनिधिकी चाहै सर तस तुव भई बुद्धि हतभाग॥
बनो गर्दभी चह कामदगौ बिबुध समान मान अज्ञान।
भई कुमुति तुव तस निश्चरपति आय निदान काल नगिचान॥
सहित कुशलता भगिजावो घर नाहित होत प्रानकी हानि।
अति बल जानो मनरावन तब सुनि इमि जनकसुताकी बानि॥
मनमहँ चरणनको बंदनकरि अति सुखमानि जगजननिजानि।
श्रीनृपरानियाँको कनियाँगहि लीन्ह्यों रथबिठाय निजपानि॥
चैत महीना उजियारोपख तिथि अष्टिमी बार भृगु नाम।
ठीक दुपहरी के अवसर महँ रावण हरी रामकी बाम॥
गगन मारगहि गहि गमन्यो तब आतुर हांकि यान भयमान।
चली पुकारत सिय आरतस्वर करुणाकरत धरत प्रभुध्यान॥
हे जगसाईं रघुराई प्रभु छोंड्यो दया कौन अपराध।
बिपतिबिदारण सुखसारन जन रघुकुल कुमुदबिपिन तमबाध॥

स० बाहन त्यागि उबाहनपायन धाय गयंद को फन्द बचायो।
भीर अधीर कै भूपनकी मिथिलापुर शङ्कर चाप चढ़ायो॥
मान मथ्यो भृगुनायक को दुखघायक वेद पुराणन गायो।
दासिनिहोत निरासिनि क्यों यहिबार कहां प्रभुबार लगायो॥

---

षट्पद ॥

अहह राम सुखधाम काम तन श्यामल सुन्दर ।
दीननाहु उतसाहु भरन बल बाहु समुन्दर ॥
हा दशरथ नृप तनै जनै आनँद बरसावन ।
हा प्रिय प्रीतम परम बन्दि त्रैताप नशावन ॥
खलदलनदलन विमलन मलन अबलनबल कौशलललन ।
भलचलन फलनअमलन फलनबिनवत पगकमलन कलन ॥

दोष तुम्हारो नहिं लक्ष्मण कछु रिसकरिलियों तासुफलपाय ।
रहै केकयी के मनमा जो सो दुख दीन आजु बिधि हाय ॥
पंचाबटि के खग मृगादि सब भे अति दुखी सुनत सियबानि ।
यहिबिधि बिलपत जपत रामगुण खलबश चलीजातअकुलानि ॥
है पियप्यारो भूरि दूरिपर को मम विपति सुनावै जाय ।
यज्ञभाग जो बर देवन को गर्दभ चहै खाय त्यहि हाय ॥
जीव चराचर सब क्लेशितभे सुनि सुनि रुदन जानकी क्यार ।
पै बश काहूको नाहीं है आपुहि सकल देत धिरकार ॥

षट्पद ॥

अति विलाप परिताप सुनत सियको निज कानन ।
रघुपति नारि निहारि जात त्यहि लिहे दशानन ॥
अस बिचारि ललकारि उठ्यो तब बृद्ध गृद्धपति ।
रेखल परत्रिय चोर जात अब कित असिद्ध मति ॥
तजु सीयहीय जो चह कुशल नातरुभलनहिं दशवदन ।
दशबदनकदनकरिअबहिंत्वहिंपठवतयहिक्षनयमसदन ॥
पुत्रिसीय जनि डरहु धरहु हिय धीर बिचारी ।
नहिं अबार इकबार करत मारन निशिचारी ॥
रेतस्कर परदार चोर बल थोर अभागे ।
नीच मीच नियरान प्रान बचि है नहिं भागे ॥
महिदेव देव मुनि दुख हरहुँ महिसरि शोणितकी करहुँ ।

दशमत्थ काटि दशमत्थ तब दशरत्थहु ते उद्धरहुँ ॥
अस कहि धायो खग खगपति कस जैसे परै मेरुपर गाज।
अतिप्रचण्डलखिचण्ड अग्निसम शोचनलग्योनिशाचरराज॥
आवत खगपति यह आतुर गति कीतौ धीर बीर मैनाक।
मम बल जानत सो स्वामी सह बादत वृथा मूढ़ इमिबाक॥
त्यही समइयाके अवसर मा गयो जटायु धाय नियराय।
ताहि बिलोक्यो तब लंकापति लग्यो अशंक फेरि बतलाय॥
अहै जटायू वृद्धगृद्ध यह ममकर तीर्थ छोड़ि है प्रान।
मम भुजानको बल जानत नहिं आवत तपिन सहायक मान॥
अवशि मारिहौं रणमाड़े यहि फेरि न जियति लौटि घरजाय।
काम पखो ना कोहु योधाते त्यहि ते रही बीरता छाय॥
अस अनुमानत दशआननके पहुँच्यो जाय जटायू पास।
कह्यो बिगत हठ शठ निश्चरते वचन अशंक बंक बिन त्रास॥
चहौ कुशलता यदि प्राननकी तौ सिय छोड़ि चले घर जाव।
नाहित नीको कछु होइ है ना पाछेक माथ पीटि पछिताव॥
रामचन्द्र के क्रोधागिनि मा पांखी सरिस सहित परिवार।
एक महूरत महँ निश्चर पति जरि बरि तुरत होय गो छार॥
कहब जटायूको सुनि कै अस रावण नहीं दीन कछु ज्वाब।
गृद्ध सक्रुद्धित तब धावतभो करि उर प्रबल पराक्रम दाब॥
बार पकरि धरिदृढ़ पंजन सों लियो घसीटि खलहि ततकाल।
रथते धरणी महँ गिरिगो तब ह्वैगो बिकल हाल बेहाल॥
करिसियरक्षा भटखगपति फिरिरिसिभरिचल्योदनुज दिशिधाय।
तौलौ रावण उठि धन्वा धरि किय संधान बान खिसिआय॥
गीध प्रभंज्यो धनुष बान सो चोंचन मारिदीन तन फारि।
यातुधानपति भो मुर्छित तब बसुधा पतित भयो हिय हारि॥
लह्यो न चेतन द्वै घटिका लग लागे गीध चोंचके घाय।
अमित बाहु बल ज्यहिरावणको त्यहि असदशाकीन खगराय॥

देवराजको बश कीन्ह्यों ज्यहिं कांपत सुने सिद्ध मुनि नाम ।
त्यहि बलवत्ताको लत्ता सम समुझि कै गीध लीन संग्राम ॥
स्वस्थ भयेपर उठि धावा पुनि गीधहु चला पंख फटकारि ।
पंजन भंजन करि दशहू मुख सुमिरयसि हृदय राम धनु धारि ॥
चोंचन नोचन करि आमिषबहु अगणित घाय दीन तनताय ।
जाय न बरणी गति रावणकी करणी केर रह्यो फल पाय ॥
चला उपाय न कछु जटाय ते तब खिसिआय परम रिसिआय ।
खड्ग निकारयसि चन्द्रहास शठ मारनहेत जरठ खगराय ॥
चोट जटायू पुनि दीन्ही तन गे थकि किहे बहुत संग्राम ।
काटे पखना द्वउ निश्चर खल तब ह्वैगयो गीध बेकाम ॥
कटे पंखगे गिरिधरती महँ गृद्धजटायु वृद्ध अति आयु ।
हबस न पूरी भै हिरदै की बिन पख रहित भई बलवायु ॥
अद्भुत करणी रघुनंदनकी सुमिरि अनंद भयो मनमाहिं ।
सुयश बखान्यो सुरवृन्दन बहु धन्य जटायु सरिस कोउ नाहिं ॥
अति सुख मान्योमन खगपति तबनहिं क्षन यहितन केर ठिकान।
काम आयगो बर अवसर सो लागे राम काज मम प्रान ॥
पुनः रथस्थित करि सीताको गीता सरिस जासु शुचि गाथ ।
द्रुत पलान भय मान प्रान लै श्वान समान निशाचर नाथ ॥
बिलपत नभपथ प्रभु घरणी जस हरणी बिकल व्याधबशजात ।
गिरिपर बैठे लखि बांदर कछु दीन्हयों तहां डारि पटगात ॥
रामनामको करि सुमिरन पुनि दीनि चेताय आपनी बात ।
लै पट बँदरन धरि राख्यो सुचि जान्यो राम तिया यह जात ॥
यहि विधि लैगा शठ सीताका राख्यसि बन अशोक महँ जाय ।
सुनौ हकीकति अब आगे की जस कछु भयो चरित सुखदाय ॥
जानि जानकीको दुष्टन बश दुखमहँ कृशित त्रसित अतिघात ।
तुरत बोलायो सुरनायकको तिनसन कह्यो शोचि यह बात ॥
तात जानकी ढिग जावो तुम जानि न पाव निशाचरराय ।

परम मनोहर खीर बीर यह ज्यहु विधि सियहि खवावो जाय ॥
यहि के खाते दुख घाते अरु होइहै भूख प्यास सब नास।
सृष्टि प्रकाशनको शासन सुनि लैकर खीर इन्द्र मति रास ॥
सुमिरि रामकी पद पंकजरज आतुर चले लंकपुर धाय।
थोरे अवसरके बीते पर गये निशंक लंक सुरराय ॥
फूल बाटिका महँ प्रापत ह्वै माया अपनि दीनि फैलाय।
भये नींदवश रखवारे सब यावतरहे दनुज तहँ भाय ॥
इन्द्रजायकै तब सीताढिग कीन्ह्यो माथनाय परनाम।
नाम आपनो बतलायो पुनि म्वहिं अमरेश जानु प्रभुबाम ॥
सखामानिकै म्वहिं दशरथको बानी मोरि सयानी मानि।
लेहुखाय यह खीरधीर गहि होवै भूख प्यास दुखहानि ॥
करिमननिश्चय जगदंबा तब इन्द्रहि सत्य अमरपति जानि।
लीनिप्रसादी भखिबासवकी तत्क्षन भई विपति सबहानि ॥
पुनिपग परसनकरि आनँद मन गे चलि इन्द्र आपने धाम।
इतकी गाथा असभाषी अब उतको सुनौ चरित अभिराम ॥
ज्यहि बिधि कपटी मृगपाछे प्रभु धाये रहैं धारि धनुबान।
स्वइतन पावन की माधुरि छबि सीताधरे रहत हियध्यान ॥
आवत दीख्यो जब लक्ष्मण का अपने पास राम सुखधाम।
चिंतित बोले तब बंधव सों यह का कियो तात तुमकाम ॥
छोड़ि अकेली सिय काननमहँ आयो यहां मेटि ममबानि।
तज्यो चतुरता आतुरता वश अब थलमाहिं नाहिं सियरानि ॥
नहिंयहि अवसरभलकीन्ह्यो कछुलीन्ह्यो निजकरबिपतिकमाय।
यहिते बड़दुख अब परिहै कह खोयो सिया बिपिनमहँआय ॥
सुनि दुख सानी प्रभु बानी इमि लक्ष्मण कह्यो जोरि युगहाथ।
आयों माताके आयसुते यहि महँ मोरि खोरि नहिंनाथ ॥
पुनि प्रभु आतुर चलि लक्ष्मण सह आये तहांभरे चखबारि।
सरि गोदावरितट आश्रम जहँ है नहिं तहांसीय सुकुमारि ॥

महा दुखितभे त्यहि अवसर पर प्राकृत दीन पुरुष समराम ।
मनहुं काम सब ठाम ठाम महँ खोजत फिरत बाम अभिराम ॥
चकई चकवा सम राघव सिय कानन रह्यो तालकी नायँ ।
भयो बिछोहन को दुखदा तहँ मानहुँ निशा निशाचर सायँ ॥
परदुखहारी ज्यहि गावत श्रुति त्यहि कहँपर्यो महादुखआय ।
शील सुघरता गुण सीताको लागे सुमिरि २ पछिताय ॥
हा मुदमुंदरि तनसुंदरि सिय करिहिय निठुरगईकित आज ।
दई आपदा दई नई यह तई उछाह भई दुखराज ॥

षट्पद ॥

हा सयानि सुख खानि बानि मृदु बोलन हारी ।
अरुण बरण बर बिमल कमल कोरक चषवारी ॥
सुमन समानिनि मानकदनि मुखचन्द लजावनि ।
मम मन मानस बसनि राजहंसिनि गति पावनि ॥
कित गई मोहिं करि दुचितई सुछबि छई मृगलोचनी ।
हा सिये तिये मम हिय प्रिये संतत शोचविमोचनी ॥
अहह कीन कत दीन मोहिं बिधि हीन सुनारी ।
कहौं काहि सन जाय हाय यह आपति भारी ॥
सुनि सुनि शोकित बैन मैन तिय फबि छबिहारी ।
प्रगटत क्यों नहिं वेगि प्राणजीवनि मम प्यारी ॥
कितरहि दुराय हा गजगवनि अवनिसुता मृगलोचनी ।
हा सिये तिये मम हिय प्रिये संतत शोच बिमोचनी ॥

विलखत अतिशय लखिराघवको धीरज दयो लषनसमुझाय ।
पुनि चलि थलते घनजंगल महँ पूछत चले सिया दुउभाय ॥

स० हे तरुताल तमालन माल बिशाल कुसालन जालनहारी ।
एहो कदम्ब लवंगरु निम्ब अहो गुलचम्पक चम्प निवारी ॥
हे कचनार अनारन हार अहो सहकार छुहार सुपारी ।
न्यारी छटाकी निहारी इतै तुमप्यारी हमारी सियासुकुमारी ॥

शोकन थोकन शोकनको हे अशोक बिलोकनडारी तुम्हारी।
हे वर पीपर पीपर तीपर नीप समीप सखा बनचारी॥
एहो सदाफरि साफरि बंदि सुपाकरि आकरि मोद बिचारी।
न्यारी छटाकी निहारी इतै तुम प्यारी हमारी सियासुकुमारी॥

कछुकदूरिचलि पुनि आगे प्रभुचहुँदिशिचितैचकित दृगलाय।
वृक्षलताननते पूंछतभे कउ इत सिया बिलोक्यो भाय॥

स० एहो पलास सुभास हुतासते शाखन शाखनमें द्युति भेली।
हे तुलसी हुलसीसी लसी बिलसी बर बेलि प्रसूनन बेली॥
हे कल मालतिका लतिका गतिका वरणौं तुमसों ए चमेली।
संग न कोऊ सहेली अकेली इतै दृगमेली सिया अलबेली॥
हे मरुआ भरु आस हमारि अहो मुचकुन्दरु कुन्द सुएली।
हे कदली कदली हमते बदली द्युति आजु भली मुदमेली॥
भानुमुखी जनि जानुसुखी म्वहिं ताबिन भारीबिपत्तिसकेली।
संग न कोऊ सहेली अकेली इतै दृगमेली सिया अलबेली॥

हेबरकटहर द्रुम देख्यो तुम इतमग जातनारि सुकुमारि।
मौनसिरी तुम धरी मौनक्यों हमरी हरी व्यथा किन भारि॥
हेबनजामन मन जातक की तियसी लसी शोभ समुदाय।
लखी दृगन मग सखी न गनसँग सिय तौ हमैं देव बतलाय॥
हेबरवरगद वरगद के तुम हमहिं बताय देव करिदाय।
शुभ सुभाय की अलप आयकी देखी जातजाय इकभाय॥
श्रीफल श्रीथलसी उज्ज्वलतन निमनी मनी सदृश द्युतिधाम।
सुछबि सवांरी सुकुमारी इत निरखी तौ न हमारी बाम॥
यहि बिधि पूंछत वन वृक्षन सों आगे कछुक दूरि चलिराम।
मनगुनि बंधव सों बोले पुनि समय समान बचन अभिराम॥
जात न गाई गति भाई कछु आवत मनै शोचि अस बात।
भाषि बतावत सो तुमसन मैं सोई सत्य मोहिं दिखरात॥
अहिसम बेनी सुखदेनी की मुख लखि चंद मंद परिजात।

दृगन निहारे मृग हारे मन मोंहन देखि भृंग सरमात ॥
कमल लजाने करकमलनते कदलि उमंग जंघ कियनास ।
सकुचि मरालहु गये चालते पग तल लखि गुलाब सहहास ॥
चोरि चोरिके छवि इनकी सिय मानहुँ कीनि रहे बड़ि घाटि ।
पाय अकेली अलबेली को यह सब मारि लैगये बांटि ॥
यहि बिधि भाषण करि बंधव ते आगे चले सघन बनमाहिं ।
जहँ पर बनचर खग मृगादितजि दरशात नारिपुरुष कोउनाहिं ॥
पूंछन लागे तिन जीवन ते सिय को हाल राम नरपाल ।
हे वनवंधव बन चारिउतुम निरख्यो इतै जात मम बाल ॥

स० एहो सुरंग कुरंग कहौ मम कीन्ह्यों कुरंग कुरंग अनारी ।
खोजतखोज न पावततासु बतावत कोउ न लागिगोहारी ॥
हे हरि वारन वार न लावहु बारन कै विपदा यह भारी ।
न्यारी छटाकी निहारीकहूं तुम प्यारीहमारी सियासुकुमारी ॥
मोर चकोर सुनौ किन शोर दया दृगकोर कै ओर हमारी ।
हे कलहंस सुवंश प्रशंस हँसौकह मोहिं अनारि बिचारी ॥
हे कलग्रीव सुपीव अलाप कलापसुनै मम क्यों चुपधारी ।
न्यारीछटाकी निहारी इतैकहुँ प्यारीदुलारी सियासुकुमारी ॥
हे बर पोत कपोतनके हरु मोतनके दुख सों तन भारी ।
हेमकरंद अनंद छके अवलोकतहौ तुम वृंदनवारी ॥
पक्षिसमाजनके शिरताज अहो खगराज सुदृष्टि तुम्हारी ।
न्यारीछटाकी निहारी इतैकहुँ प्यारी हमारी सियासुकुमारी ॥
हेहरनी करनी करिनीवर हे हरिकी घरिनी बनचारी ।
गै हरिहै हरिकी घरनी धरनी तनया भरनी मुदभारी ॥
हारस सारस मौनधरे कस का रससारतुम्हैं नहिं प्यारी ।
न्यारी छटाकी निहारी इतैकहुँ नारीहमारी सिया सुकुमारी ॥
हेवरकीर अधीरभये तुमहूं लखि मोहिं अधीर अनारी ।
तीरलये बरतीरहेलै शुचि धीर सुसीर समीर सुखारी ॥

हेखगतीतर लाललवा मुनियां गुनियां बरवानि तिहारी ।
न्यारीछटाकी निहारीइतै कहुँ प्यारीहमारी सियासुकुमारी ॥
हे सरिता भरिता बरवारि गोदावरि पुण्य पुरैन पसारी ।
आवत नित्त इतै तव तीर सुनीरज नीरहि लेन पियारी ॥
देहु बताय बनाय बिनै म्वहिं हाय बुझायकै तासु चिन्हारी ।
न्यारी छटाकी निहारी कहूं तुम प्यारी हमारी सियासुकुमारी ॥

इहिबिधि बिलपत सिय खोजत प्रभु बिरही दीन पुरुषकी नायँ ।
पता न लागत कहुँ प्यारी को रहि रहि बार बार पछितायँ ॥
बिनमणि आकुल फणि होवै जस तलफै दीनमीन बिन बारि ।
बनमधि व्याकुल तिमि लक्ष्मणभे दुःखित रघुबर दशा निहारि ॥
प्रभुहि बुझावैं उर धीरजधरि तजहिं न अधिक शोक रघुनाथ ।
खग मृग व्याकुलभे जंगलके स्वामिहिं दुखित देखि खगनाथ ॥
आनँदराशी अविनाशी प्रभु पूरण काम प्रबल व्यवसाय ।
सो कर लीला नर प्राकृतसम खल दल दलन हेत नरराय ॥
जहँलग नदिया नद नारागिरि कानन कूप बावली ताल ।
सकल निहारा मथिडारा बन पायो लखि न प्राणप्रिय बाल ॥
बनै बनावत नहिं करणी कछु आवत मुख न बात कहि तात ।
आगे चलिकै अवलोक्यो पुनि टूटो धनुष बान भुविपात ॥
शोणितदरशै रजमीलितकहुँ सावन मैल होय जिमि बारि ।
भाष्यो लक्ष्मण सों राघव तब काहू कीनि ठाम यहि रारि ॥
कछुक दूरिपर वृद्धगृद्धपति बसुधा परो हाल बेहाल ।
रामनाम के रत सुमिरणमहँ बिनपख लख्यो अवधपतिलाल ॥
उपजी दाया रघुराया उर परस्यो हाथ गीधके माथ ।
जटन बहास्यो रज अंगनकी करुणावंत सन्त रघुनाथ ॥

स० गावत पावत भेद न वेद अनंतहु भाषि अनंत पुकारैं ।
शारद सिद्ध सुरेश गणेश महेशहु लेशबतावत हारैं ॥
भक्तउधारन मारनको खल जो अवतार अपारन धारैं ।

सो रघुराय दया दरिआय जटायकि धूरिजटान सोंझारें ॥
प्रभुकर पंकज शिर परसे ते भो गत पीर बीर खगराय।
लखि चन्द्राननकी उज्ज्वल छबि गो तन रोमरोम हरषाय ॥
कह्यो जटायू धरि धीरज तब हे जग जाल कालके काल।
कीनि दुर्दशा यह रावण मम स्वइ खल हर्‌यो आपकी बाल ॥
लै नभ मारग गो दक्षिणदिशि बिलपत अतिव गई जगमात।
अंग विदारण मैं लोटत भुवि राख्यों प्रान दरश हित तात ॥
चलन चहतहौं अब आयसु लहि कृपानिधान राम भगवान।
सुनि बरबानी वृद्धगृद्धकी तब अस कह्यो भानुकुलभान ॥
तात तुम्हारी रुचिहोवै तौ राखहु प्रान मोद मन आनि।
बिहँसि जटायू असभाष्यो तब सुनिये रमारमण धनुपानि ॥
मरतौ बेरा ज्यहि स्वामीको आवै सुमिरि नाम मुख माहिं।
अधमौ पावै गति उत्तम प्रभु यहि महँ तनिक अँदेशा नाहिं ॥
खड़े सो नैनन के आगे अब राखौं देह कौन हित लागि।
तुव दायाते गति पायों अस प्रकटी अमित जन्मकी भागि ॥
जलभरि नैननमहँ रघुपति तब भाष्यो मधुर बैन सुखदाय।
तात कमायो निजकरणीते गति अति नीकि शोधिमन काय ॥
परउपकारी वरपूरुषहित दुर्लभ जगत मध्य कछु नाहिं।
तात त्यागिकै अब देही यह निवसौ जाय अमर पुर माहिं ॥
और पदारथ त्वहिं देवोंकह तुमहौ आप प्रपूरण काम।
तदपि तुम्हारे संतोषनते सब फल प्राप्तहोहिं सुरधाम ॥
तहँ हमारे पितु राजत हैं दशरथ धीरबीर भूपाल।
खगपति तिनसन बतलायोना कहि जानकी हरणको हाल ॥
थोरहि दिवसनके बीतेपर सुनिये तात बात मन लाय।
तौमैं नन्दन दशस्यंदनको कुलसह कही दशानन आय ॥
सुनि इमि राघवकी बानी मृदु तजि तन वृद्धगृद्ध अनयास।
रूप अनूपम धरि तत्क्षन तब हरि समभयो दिव्य द्युतिभास ॥

शोभित भूषण अँगअंगन महँ अंबर पीत रह्यो दरशाय।
श्याम सुँदरबर चतुर्बाहुधर शोभा अप्रमान गइछाय॥
करन अस्तवन रघुनंदनको लाग्यो प्रेम सहित हरषाय।
आनँद गाथा वहि समयाकी खगकी कहै कौन खगराय॥
जय रघुनन्दन रामचन्द्र प्रभु अतिव अनूप रूप सुरभूप।
सगुणरु निर्गुण तन रंजनजन भंजन महीभार बल यूप॥
अतिव गुणज्ञ तज्ञ दायक गुण लायक सब प्रकार भगवान।
दशमुख भुजा प्रचण्ड खण्डकर अतिशयचण्ड धरन धनुवान॥
बसुधा मण्डन भुज खण्डन कर चण्डीपति को दण्ड कराल।
श्याम जलद तन चन्द्रबदनवर लोचन अमलकमल जनुलाल॥
भव भय हारी अबिकारी प्रभु तव पद कमलन करौं प्रणाम।
बंदि अनंदन दशरथनंदन शोभा धाम राम अभिराम॥
अति अपार बल अज अनादि थल गावत अलख बेद गोहराय।
पार न पावत ब्रह्मादिक शिव निशिदिन रहे गुणन को गाय॥
हे धरणीधर गुण इंद्रिन पर द्विबिधा हरन बोध की रासि।
सुयश प्रकाशी अबिनाशी प्रभु सर्ब ब्याप आप उर बासि॥
राम मंत्र जे जपत संत जन तिन मन भरन निरंतर मोद।
बंदत शिर धरि पद पंकज रज खेलन हार कौशिला गोद॥
हैं निष्कामी जनप्यारे त्वहिं महिमा अमित बरणि नहिं जाय।
काम आदि खल दलन दयाकर जय सच्चिदानंद रघुराय॥
ज्ञान ध्यान बैराग योग जपतप करि कसत आपनी काय।
कबहुँ न देखत त्यउ नैनन सों योगी रहे जाहि हिय ध्याय॥
जो करुणाकर वर शोभा सों मोहत सकल जीव संसार।
बसै सो निशि दिन जन बंदी उर यह वर चहत जगत भर्तार॥
अगम सुगम जो प्रीति भाव सों अमल स्वभाव जाहि श्रुतिगाव।
तन मन इंद्रियजित योगी कउ यत्न ते जाहि दृष्टि लखि पाव॥
सो लक्ष्मी पति शुभ संतन गति त्रिभुवन धनी भक्त को प्रान।

बसै निरंतर जन बंदी उर सह सिय लषन धरे धनुवान ॥

स० हे अमला कमला भरता करता धरता हरता जगस्वामी।
मच्छरु कच्छ नृ केहरि वामन शूकर भार्गव हे खगगामी ॥
हे जनरंजन हे खलभंजन सच्चिदानंदनिरंजन नामी।
बंदि सबंधु सबाम अराम दराम नमामि नमामि नमामी ॥

यहिविधि अस्तुति करिरघुवरकी अविरलभक्ति मांगि निष्काम।
ध्यान धारिकै प्रभु चरणन महँ गयो जटायु गीध सुर धाम ॥
क्रिया यथोचित त्यहि देही की कीन्ही राम आपने हाथ।
धन्य धन्य करि सुर भाषत यश जय जय जन दयाल रघुनाथ ॥
हैं बिन कारण प्रभु दाया कर कोमल चित्त भक्त रखवार।
मास अहारी गृद्ध नीच खग कीन्ह्यों मुक्त न लागी बार ॥
महा अभागी नर गिरिजा वे जे अस सरल स्वामि बिसराय।
मिथ्या भर्मत जग विषयन महँ वृथा गवांय देत नरकाय ॥
चले अगारी फिरि तहँ ते प्रभु खोजत प्रिया सिया द्वउ भाय।
देखत उपबन बन लेखत मन पेखत खग मृगादि समुदाय ॥
मिला कबंधा तहँ मारग महँ मार्यो ताहि एकही बान।
शाप दापते छुटि तत्क्षन सो पायो दिव्य रूप हरियान ॥
माथ नायकै प्रभु पायँन महँ कीन प्रणाम जोरि युग हाथ।
नाथ तुम्हारे बर दर्शनते मिटि गै सकल दुःख की गाथ ॥
कथा बतावत हौं आपनि प्रभु सो सुनि लेहु पुरातन हाल।
अहौं गंधरब मैं प्रथमैकर अति मदमत्त रहौं बाचाल ॥
आवत मग महँ दुर्वासा मुनि तिनको देखि किह्यों परिहास।
जानि दुष्टता मम क्रोधी मुनि दीन्ह्यों महाशाप दुखभास ॥
हँसे देखि ग्वहिं लेताकरफ न रेखल होसि निशाचर जाय।
कै कबंध तन अंध नयन बिन निर्जन बिपिन बासको पाय ॥
शाप सुदारुण सुनि मुनिको यह ह्वै तब दुखी माथ पगनाय।
हाथ जोरि कै अति आरत स्वर मुनि कहँ विनय सुनायों जाय ॥

हे प्रभु पायों फल कीन्ह्यों जस अब करि दया दीनजन जानि।
शाप उद्धरन की समया म्वहिं देहु बताय नाथ तपखानि॥
सुनि दुर्वासा अस भाषण मम ह्वै मृदु चित्त कह्यो यह बानि।
त्रेतायुगके अन्तकाल महँ ह्वैहैं रामचन्द्र धनुपानि॥
पितु प्रण पालनको ऐहैं बन बसिहैं पंचबटी महँ जाय।
रावण हरिहैं तहँ तिनकी त्रिय खोजत ताहि मिलैं त्वहिं आय॥
तिनके कर को शर लागे ते ह्वैहै तोर शाप उद्धार।
अन्तिम समया महँ कलियुगकी पायों शाप जक्त कर्तार॥
आजु सत्य भो मुनि भाषण प्रभु तुम्हरे चरण परसि रघुनाथ।
सब दिन बसिये मम हिरदै महँ यहि विधिधरे धनुष शर भाथ॥
बोले अवसर त्यहि गंध्रबते समया सरिस राम भगवान।
द्विजकुल द्रोही म्वहिं भावैना करु गंधर्व बचन परमान॥
बचन कर्म मन छल त्यागन करि जो नर करै विप्रकी सेव।
निश्चय ताके चतुरानन शिव मम सहहोत बश्यसब देव॥
शाप देवैया अरु ताड़नकर हिंसक कठिन महाअज्ञान।
योग्य पूजिबेको ऐसो द्विज शूद्र न पूज्य ज्ञान गुणमान॥
धर्म आपनो कहियहिविधि प्रभु दीन्ह्यों भली भांति समुझाय।
निज पदपंकजको प्रेमी लखि कीन्ह्यों त्यहि प्रसन्न शुचिभाय॥
शीश नायकै प्रभु चरणन महँ नभ चलि गयो अपनि गतिपाय।
शाप उधारण करि गंध्रबको आगे चले फेरि रघुराय॥
जाय पहूंचे थल शवरीके जो बहु भरी प्रेमके भाय।
सुनत आगमन रघुनंदनको शवरी उठी हृदय हरषाय॥
सत्य मानि कै मुनिमतंग वच आतुर प्रभु समीप गइ धाय।
देखि अनूपम छवि राघवकी गइगिरि पगन माहिं लपटाय॥
बचन न आयो कहि मुखते कछु भो मन मगन प्रेम रसमाहिं।
पुनि २ चरणन महँ नावत शिर बरणी दशा जात कछु नाहिं॥
सहित सुबंधव पुनि रघुबर को सादर निज थल गई लेवाय।

दिव्य आसननपर अस्थित करि धोयो विमल सलिललैपाय ॥
विविध भांति सों करिअर्चावर हरषित आरति लई उतारि।
स्वाद रसभरे लै मधुरे फल दीन्हे अतिथि भाव सत्कारि॥
सो फल जूंठे वहि शवरीके लक्ष्मण सहित राम धनु पानि।
खायो नीकी विधि पायोसुख अमृत सरिस रसीले जानि॥

स० भीलिनके फल जूंठ अनूठसे बंदि यथा प्रभुको भललागत।
या विधि देवनको मखभाग न खातकबौं हितसों अनुरागत॥
होत आनंदित प्रेमसों राम औ नेमकिये पुनि दूरिहि भागत।
खात अघात न बेरहि बेर सुबेरन हाथ पसारिकै मांगत॥

भोजन करिकै आनंदित पुनि बैठे रामचन्द्र भगवान।
त्यहि क्षन भीलिन हाथजोरियुग लागीकरन स्वामिगुणगान॥
नीच जाति मैं जड़बुद्धीतिय अस्तुति केहिविधि करौं तुम्हारि।
शिव ब्रह्मादिकके स्वामी तुम महिमा अमित दानि फल चारि॥

कु० पावन यश कहँ नाथको अमित कहत श्रुति चारि।
कहँ मैं अधमहुँ ते अधम अति मति मन्द गवांरि॥
अति मतिमन्द गवांरिनारि गुण ज्ञान विहीना।
आपन विरद विचारि दया करि दर्शन दीना॥
कह द्विज वंदीदीन दीन दुख कलुष नशावन।
कोटिन कुब्ज उद्धरे हरे लखि तव पद पावन॥

बैन मनोहर सुनि भीलिनि के अतिव अनंद भये रघुराय।
अति प्रिय बाणीसों बोले तब सुनु तिय वचन मोर मनलाय॥
भक्तिक नाता मैं मानत इक दूसरिकछू न जानौं बात।
जोनर भक्तीसों ध्यावतम्वहिं त्यहिसम प्रिय न तात पितुमात॥
धन बल परिजन जाति पांतिगुण कुल मर्याद चातुरी ज्ञान।
बिना भक्तिके नर सोहत नहिं जलबिन यथा जलद गनजान॥
सावधान ह्वै सुनु भामिनि अब त्वहिंसन कहौं भक्ति नवभांति।
करिज्यहि साधन आराधन नर पावत मोहिं त्यागि कुलजाति॥

इक तौ संतन की संगति अरु दूजी कथा मोरि धरिध्यान।
सुनै गुनै मन दृढ़ प्रेमी ह्वै गुरु पदसेव तीसरी जान॥
कपट छोंड़िकै गुणगावै मम भामिनि चौथि भक्ति सो आय।
जपै मंत्र मम अति दृढ़ता युत पञ्चम भजन वेद बतलाय॥
ह्वै बैरागी बहु कर्मनसों उर धरिधर्म सज्जनन क्यार।
करै आपनो मन काबू महँ छठीसो भक्ति कीन निर्धार॥
देखै ईश्वर मय सिगरो जग माहिं ते अधिक संत कर मान।
सतईं भक्ती सो भाषत श्रुति भामिनि बचन करौ परमान॥
यथा लाभ महँ संतोषितह्वै लालच वृत्ति देय बिसराय।
लखै न दूषण पर स्वपन्यो महँ यह आठवीं भक्ति शुभआय॥
सब सन सीधे बच बोलै हँसि लावै छल न कबहुँ मन माहिं।
करै भरोसा मम हिरदयमहँ दुख सुख माहिं शोक मुदनाहिं॥
नवईं भक्ती सो भामिनि यह तुमसन कह्यों शोधि भलिभांति।
नव महँ एकौ हिय होवै ज्यहि नर तिय जीव चराचर जाति॥
अतिशय प्यारो सोभामिनि म्वहिं जानिय सत्यसत्य यहबानि।
सब विधि भक्ती दृढ़ तोरे हिय जप तप योग युक्तिकी खानि॥
जो गति योगिनको दुर्लभबहु सो त्वहिं मिली सहजमोआज।
है मम दर्शनको अनुपम फल सहजहि लहै जीव सुखसाज॥
सब विधि शवरी बड़ भागिनि तैं है मम पगन माहिं दृढ़प्रीति।
बसै जासु हिय तव महिमा प्रिय सो बड़ भागमान सब रीति॥
सुनि रघुनंदनकी बाणी इमि शवरी अति अनंद को पाय।
अमल कमल सम प्रभु पायँन महँ कीनप्रणाम माथ महिनाय॥
पुनि मृदुबाणी सों बोले प्रभु शवरी सुनौ बचन मनलाय।
सिय सुधि पायो है कतहूँ इत तौ कहि हमैं देव बतलाय॥
वचन मनोहर सुनि रघुबरके भीलिनि कह्यो जोरि युगहाथ।
चलि मम अस्थल ते आगे अब पंपासरहि जाहु रघुनाथ॥
बास अनेकन मुनि कीन्हें जहँ पावत मोद जीव सब काल।

छाई महिमा मुनि मतंग की नहिं सो कहन योग नरपाल ॥
करै न रिपुता कउ काहूसन बैरिहु रहे प्रीति दरशाय ।
शिखर मनोहर बन फूले बहु भूले रहत जीव सुखभाय ॥
पावन पंकज पद परसन करि सबकर सुफल करौ श्रमजाय ।
होय मित्रता शुभगरते तहँ सो सिय शोध कहिहि रघुराय ॥
जानि बूझिकै ग्वाहिं पूंछो कह अंतर्यामि राम नरराय ।
सकल हकीकति यहि भांतिनते प्रभुसन भाषि दीन समुझाय ॥
पुनि मुख पंकज की शोभाशुभ धरि हिय पगन प्रेमसरसाय ।
देह त्यागिकै योगागिनि महँ हरिपद लीन भई मन लाय ॥
तजि भ्रमसंशय जगजालनकहँ परिहरि विविधकर्म दुखदाय ।
हे नर हरिके पद कमलन महँ करु अनुराग प्रीति रसछाय ॥
अधमभीलिनी नीचजातिकुल रघुपतिमुक्ति कीनि असिनारि ।
त्यहितजि रेशठमनचाहतसुख जगयशविभवसुगतिसुखकारि ॥

इतिश्री लक्ष्मणपुरस्थभार्गववंशावतंसश्रीमान्मुंशीनवलकिशोरपुत्र श्रीमुंशीप्रयागनारायणकीआज्ञानुसारउन्नामप्रदेशान्तर्गतमसवासीग्राम निवासीपं०वंदीदीनदीक्षितनिर्मितविजयराघवखण्डे आरण्यकाण्डेतृतीयोल्लासः ३ ॥

जन अवलम्बा जगदम्बाके पद अम्बुजन माहिं धरिध्यान ।
पावनि कीरति रामचन्द्र की मति अनुसार करत फिरिगान ॥
छांड़ि कुंज स्वउ नरकेहरि द्वउ आगे चले भले नृप बाल ।
मनुज वियोगी समशोगी हिय बिलपत जात गात बेहाल ॥
विविध भांतिकी कथा तथा विधि नाना समीचीन सम्बाद ।
भाषत लक्ष्मण प्रति निश्छलमति सद्गति देनहार दनुजाद ॥
देखहु भाई वन शोभा यह गाई जो न जाति क्यहुभांति ।
छाई चहुँदिशि सुघराई भलि थलिथलि विमलिछटादरशाति ॥
देखत ज्यहिकर मन मोहै ना कोहै जगत पुरुष अस धीर ।
मन अधीर तन भीर भरतबहु कहि नहिंपरत विपतिसोबीर ॥

बिहरत खग मृग निज नारिनसँग मानहुँकरत मोर उपहास ।
बिन सिय प्यारी दुख भारी यह होवै कौन भांति सों नास ॥
हमहिं देखिकै मृग भागत बहु तिनसन मृगी कहहिंसमुझाय ।
वृथा परात डरात इनहिं तुम करहु प्रतीत भीत बिसराय ॥
कंचन हरणा ये खोजत हैं रंचन तुम्हैं हरन को काम ।
क्यहि विधि प्राननको रखिहौं मैं कानन सुने वचन असबाम ॥
लखौ चतुरई यह हाथिनकी हथिनी लिये फिरत बनमाहिं ।
मानहु मोकहँ सिखलावत अस तिया अकेलि तजतकउनाहिं ॥
ग्रंथ अधीतो अवलोकिय नित तबहुं न रहत अस्मरण भाय ।
सेवो सब विधि ज्यहि इच्छाभरि सोउन वश्यहोत नरराय ॥
यद्यपि हिरदयमहँ राखिय तिय तद्यपि कहत वेद असबात ।
शास्त्र मेहरिया अरु बसुधापति होत न कबहुँ बश्य महँतात ॥

स० राजत ये ऋतुराज के साज लिये वनराज समाज सभ्राजत ।
भ्राजत दिव्य लतान वितान गसे विकसे तरु पुंजनसाजत ॥
साजत मंजु छटाकिपटाद्युति बृंदलखे वन नंदन लाजत ।
लाजतहै लखि मोमनआज प्रिया बिन मानहुँ भयउपराजत ॥

विकल वियोगी लखि शोगी म्वहिं बिक्रम बिना अकेलोजानि ।
लै खगकीरन मधुभीरन को धावा कीन मदन मुद मानि ॥
पुनि म्वहिं भैया सह देख्यो इत ताके दूत पवन ने आय ।
जाय बुझायो त्यहिं मनुजाको सुनि अस खबरि मौन मनलाय ॥
समुझि चढ़ाई नहिं वाजिबतब बन महँ डेरा दीन डराय ।
अगणित सैना सँग योधा बहु उपमा कहत तासु कविगाय ॥
बड़बड़ ऊंचे घनबृक्षनमहँ लतिका विविध भांति लपटानि ।
मानहुँ बनमहँ चौगिर्दा ते दीन्हे काम तँबूआ तानि ॥
कदली तालनके बिरवा बहु मानहुँ ध्वजा केतु फहरात ।
देखि न मोहै यह शोभा ज्यहि अतिशय धीर होय मनतात ॥
नाना फूलन सों फूले तरु जनु बानैत पांति दरशाति ।

कहूं निहारे द्रुम न्यारे इमि मानहुँ बिलग २ भट पांति॥
कूजत पपिहा वर उच्चस्वर मानहुँ मत्त गयंदम आयँ।
ऊंट सांड़िया पिढ़ाढंख जनु खच्चर गन महोष दिखरायँ॥
कीर चकोरन अरु मोरनके अगणित झुण्ड लगत असभाय।
नवल बछेड़ा जनु अनंग के रहे सुरंग रंग छबिछाय॥
हंस कबूतर अस दर्शें तहँ ताजी जाति केर जनु घ्वाड़।
तीतुर बटेर गनप्यादा जनु पहरा देत आपनो ठाढ़॥
मेरु पहाड़ी जनु सोहे रथ तिनपर रथी वृक्ष असवार।
बजें नगारा गिरि झरना जनु बंदी पिका देत ललकार॥
भवँर गुंजरनि अस लागत जनु बाजत विविध भेरि सहनाय।
मंद सुगंधित अरु शीतल यह त्रयविधि पवन दूत जनु आय॥

कु० घनी अनी चतुरंगिनी लिये आपने साथ।
सबहि चुनौती देत बन बिचरत है रतिनाथ॥
बिचरत है रतिनाथ लिये ऋतुराज सहायक।
करत वियोगिन विकल हृदय महँ हनि २ शायक॥
होहि धीर बड़वीर सुजन जो तन मन दमनी।
उबरै सो यहि समय मनज चोटै सहि सघनी॥

यहि के इक बड़ बल स्त्री है त्यहिते बचै बीर स्वइभाय।
नाहित यहिके प्रबल फंद ते जग महँ बचब कठिन दिखराय॥
वड़े विक्रमी खल तीनिउँये जानिय लोभ क्रोध अरु काम।
मुनियन गुनियन अरु ज्ञानिनकर क्षणमहँ क्षोभि देतमनश्राम॥
हेम खण्ड इकबल लालचको अरु बल कामदेवको नारि।
क्रोधके निंदित बच बोलव बल बंधव असमन लेउ बिचारि॥
मायिक गुणते रहित अहित हित जग भर्तार राम कर्तार।
निर्विकार शुभविभु उदार प्रिय लीला करत मनुज अनुहार॥
विपति देखायो नर कामिनकै धीर न मन विराग बिश्वास।
ज्यहि गुनिज्ञानी मुनि सज्जनजन क्षनमहँतजत विषयकीफांस॥

ज्यहि रघुराया की दायाते माया छूटि जात क्षण माहिं।
काम क्रोध अरु लोभ मान मद सेवत रहत हृदय महँ नाहिं॥
सो प्रभु इनके बश ह्वै है कस लीजै अस बिचारि हरियान।
कबहुँ न भूलत मन ज्ञानी जन लावत मनै मोह अज्ञान॥
करत तमासा इन्द्रजालको भूलत नहीं पुरुष सो यार।
जापर नटवर तिन ख्यालन को होय प्रसन्न सिखावनहार॥
गिरिजा तुमसन बतलावत मैं अपने हृदय केर सिद्धांत।
सतप्रभु जपना जगसपना यह भाषत भेद वेद वेदांत॥
लषणलाल सह रामचन्द्र प्रभु स्वजन चकोर सुखद महताब।
गमनि पहूंचे तहँ आतुर जहँ पंपा नाम सुभग तालाब॥
संतहृदयसम शुचि निर्मलजल बांधे विमल चारि वर घाट।
शोभा बरणत बनि आवै ना चहुँ दिशि लगी मनहुँ छबिहाट॥
पियत अनंदित मन सुंदर जल खगमृगवृंद त्यागि अवसेरि।
मानहुँ दाताके द्वारे पर लागी भीर भिखारिन केरि॥
जल जलजातन के पातन सों मूंदो नाहिं दृष्टि इमि आव।
ढका अविद्या सों पूरुष जस निर्गुण ब्रह्म नाहिं लखिपाव॥
जल अगाध महँ परिमछरीगण क्यहिविधि रहीं मोद सरसायँ।
जैसे धर्मी बर पूरुष के गुजरत मोद माहिं दिन जायँ॥
फूले अंबुज बहु रंगनके गुंजत भ्रमर मंद स्वर ठान।
बोलत जलखग हंसादिक प्रिय मानहुँ करत स्वामिगुणगान॥
चक्रवाक बक सारसादि खग बोलत बचन प्रेम रस छाय।
लेत बुलाये जनु राहिनको कहँलग छटा कहै कवि गाय॥
ताल किनारे घर मुनियन के राजत विविध पांति की पांति।
सोहै उपबन बन चारिउ दिशि बिकसे स्वच्छ वृक्ष बहु भांति॥
बकुल कदम्बन अरु अम्बन की लगी कतार तार कचनार।
लाल पलासन के बिरवा बहु सोहत सुमन भार घनियार॥
कहुं २ चंपे झुकि झंपे अति लागे कहुं तमाल के जाल।

छये छत्रसे नव पत्रन के फूले फले भले द्रुममाल ॥
भुण्ड अनेकन तहँ भ्रमरन के गुंजत करत मनोहर गान ।
त्रिविध समीरन के झोका तन लागत टरत मुनिनको ध्यान ॥
कुहू कुहू करि कोकिल कूजैं पपिहा पिया २ रटलाय ।
धुनि सुनि बहँकत मन मुनियन के विषयिन दशा कहै को गाय ॥
फल अरु फूलन के भारन सों बिरवा रहे भूमि नियराय ।
परउपकारी नर गिरिजा जस सबबिधि नवैं सुसम्पति पाय ॥
पंपासर की शुभ शोभा लखि अतिव प्रसन्न भये रघुराय ।
ह्वै बिश्रामित त्यहि अवसरपर किय अस्नान ध्यान दृढभाय ॥
पुनि घन छाया महँ तरुवर की आसन लाय कीन बिश्राम ।
आय तहांपर बहु सुर मुनि तब प्रभु यश गाय गये निजधाम ॥
परमानंदित ह्वै रघुपति पुनि लागे कहन विविध इतिहास ।
सुनत सुमित्रासुत नीकीविधि जेहि सुनि होत दोष दुख नास ॥
भे असमंजस वश नारद तब बिरही देखि राम सुख धाम ।
करत चिंतना बहुभांतिन मन कीन्ह्यों मैं न नीक यह काम ॥
शापित कीन्ह्यों जगदीश्वर को सो करि मोर शाप स्वीकार ।
सहत आपदा बन जंगल महँ है स्वहिं महा महा धिरकार ॥
जाय बिलोकौं त्यहि स्वामी को पंपासर समीप यहिकाल ।
पुनि अस अवसर बनि ऐहै ना जैहै सकल भागि भ्रमजाल ॥
लियो नवीना बरवीना कर कीना दृढ़ बिचार मुनिराय ।
आय पहूंचे वहि अस्थल महँ जहँ आसीनं दीन जनभाय ॥
मृदुबाणी सों धनुपाणी के करत पवित्र चरित को गान ।
कियो दण्डवत परि धरती महँ तन मन मगन प्रेम के ध्यान ॥
गहि भुजान सो परम प्रान प्रिय मुनिहिं उठाय राम रघुराय ।
प्रेम भाय भरिलिय लगाय हिय सुखसरसाय बारि बरसाय ॥
पूंछि कुशलता पुनि मुनि बर को रघुपति निकट लीन बैठाय ।
परस्यो पंकज पद लक्ष्मण तब आदर सहित प्रीति उरछाय ॥

नाना विधि सों करि बिनती पुनि प्रभुहि प्रसन्न जानि मुनिराय।
बचन अमोले हँसिबोले तब द्वउ करजोरि माथ महिनाय॥
हे कर्तार उदार राम प्रभु सुंदर सुगम अगम वरदानि।
देहु अनंदित बर मांगत इक जानत यदपि हृदयकी बानि॥
बुद्धि बिशारद मुनि नारदके सुनि बरबैन मैन मदहारि।
बचन मनोहर हँसिबोले तब खण्डक बंदिव्याधि की धारि॥
आछी बिधिसों तुम जानतहौ मोर सुभाव भाव मुनिराव।
नहिं जन अपने सों दुराव कछु स्वपन्यों माहिं चित्तममश्राव॥
कौन पदारथ प्रियलागो म्वाहिं मुनिबरसकौ जो न तुम माँगि।
बस्तु सुकौनिउँ असिनाहीं मम जनकहँ जोनदेउँ अनुरागि॥
छाँड़ि अकारणकी शंका यह मुनिबर हृदयलाय विश्वास।
रुचिसम माँगौ जोचाहौ मन यहिक्षन तुम्हैं देउँ सहुलास॥
सुनि मुदसानी प्रभुबानी इमि ज्ञानी मुनय हर्षहियलाय।
बचन मनोहर पुनि भाषतभे हिय अभिलाष शाखदरशाय॥
करौं ढिठाई रघुराई प्रभु जो बरचहौं कहौं सोभाखि।
करिय प्रपूरण खलतूरण त्याहि यहिक्षन मोर दुलारन राखि॥
यद्यपि इकते इक उत्तम अति भाषत अमितवेद प्रभुनाम।
तद्यपि अधिकी सब नामनते होवै रामनाम सुखधाम॥
भक्ति तुम्हारी निशि पूनोतहँ शशिसम रामनाम दरशाय।
और नाम सब नक्षत्रन सम जन उर गगन रहैं छबिछाय॥
गुनि मुनि नारदकी इच्छा असि भाष्यो एवमस्तु रघुनाथ।
तबहिं अनंदित प्रभु पायँनमहँ नायो बारबार मुनिमाथ॥
अतिशय हर्षित लखि रघुपतिको पुनिअसकह्यो ब्रह्मसुतबात।
चाहत पूछन प्रभुऔरो कछु देहुबुझाय मोहिं सोतात॥
आपनि माया करिप्रेरण जब मोमन मोहकीन हेराम।
करन सगाई मैं चाहतनिज सोनहिं करनदीन क्यहिकाम॥
हँसि रघुनन्दन तब बोले इमि सुनुमुनि कहौं तोहिं समुझाय।

भजैंनिरंतर जन मोकहँ जे आनभरोस सर्व बिसराय॥
सब दिन तिनकी रखवारी मैं राखौं सब प्रकार जगमाहिं।
जैसे बालककी रक्षामहँ तत्पर रहतमातु बहुधाहिं॥
जस नदान शिशु मनमोदित अति धावैगहन शुक्र अरुसांप।
मातु बचावै त्यहि अवसर त्यहि नहिंकछु ज्ञान बालकहिआप॥
ज्वान ज्ञानयुत त्यहि लरिकापर राखै वहीभाव प्रियमाय।
पाछे दौरत नहिं रक्षनको पाछिलि बातदेय बिसराय॥
ज्वान तनय सम म्वहिं ज्ञानीजन बालक सरिस दासअज्ञान।
तुव अभिलाषत यह भाषत मैं सुनु मुनि सावधान धरिध्यान॥
दास अमानी ज्यहि मेरो बल ज्ञानी अपन पराक्रम जाहिं।
दूनौदासन को जानिय मुनि लालच काम क्रोध रिपुआहिं॥
असगुनि पण्डित मतिमण्डित म्वहिं सबदिनभजैंतजैंजगबाय।
सुंदर ज्ञानहुं के पायेपर देहिं न मोरि भक्ति बिसराय॥
काम क्रोध मद लोभादिक यह सैना प्रबल मोहकी आय।
त्यहि महँ अतिशय दुखदायी तिय मायारूप भरी भ्रमभाय॥

स० कानन मोह सवाँरनको श्रुति संत बसंत बतावत नारी।
संयम नेम तपादि तड़ागको सोखत ग्रीममहै वरबारी॥
भेकसमान बिकार छइउ तिनको तियपावस आनँदकारी।
मानिरहे सतबानि यहै सबभांति बिचारि कै नारिनकारी॥

दुष्ट बासना बन बनजनसम त्यहि तिय शरद फुलावनिहारि।
जानुजवासा जग ममता सो पलुहै पाय शिशिर ऋतुनारि॥
पाप खूसटनको सुखदा अति है कामिनी यामिनीकारि।
बुधिबल सत्यशील मछरिन को बनशी तिया पछारै मारि॥
जड़ता अवगुणकी जानिय जड़ मानिय शोकखानि तियआय।
कौन निवारण यहि कारण मैं तुम कहँ भल बिचारि मुनिराय॥
सुंदर बाणी धनु पाणीकी सुनि मुनि महा हृदय हरषाय।
ह्वैगे पुलकित तन गद्गद मन नैननगयो प्रेम बनछाय॥

कहौ रीति अस क्यहि स्वामी के जो वहुकरै दासपर प्यार ।
जोजन ऐसो प्रभुध्यावैना सो खल महामलिन बदकार ॥
गुनि मन नारद मुनि बोले पुनि सुनिये राम संतसुखधाम ।
चाहत संतनके लक्षण कछु तुव मुख सुनो दीन बिश्राम ॥
सुनु मुनि संतनके लक्षण गुण तुमसन कहौं कछुक समुझाय ।
हौं ज्यहि कारन उन यारन के सब दिन रहौं वश्य महँ भाय ॥
जीव अतापी निष्पापी हिय जीते षट बिकार सबिचार ।
रहित कामना धन विषयनते अतिव पवित्र मोद आगार ॥
जगत बियोगी नहिंशोगी मन भोगी सर्वकाल परमार्थ ।
नहिं तन रोगी बड़ योगीजन जानत नाहिं आपनो स्वार्थ ॥
अतिशय पण्डित मतिमण्डित कवि खण्डित दंभआदिमदमान ।
बुद्धि नवीने परवीने बहु धीर गँभीर पीर पर जान ॥
गहेभगति ममपद अतिशय रति सबदिन बिगत सकल संदेह ।
मेरे चरणन सम जिनके हिय नहीं पियार देह अरु गेह ॥
सकुचैं आपन गुण सुनतैखन परगुण सुने अधिक हर्षायँ ।
इकसम जानत हित दुश्मनकहँ कबहुँन चलिकुराह महँजायँ ॥
सीध सुभाव भाव सब सों सम सब दिनकरैं नीति प्रतिपाल ।
जप तप संयम नियमादिक ब्रत करत बिहाय जक्त जंजाल ॥
सुरगुरु गोविंद द्विज पायँन को सेवतसदा प्रेम सरसाय ।
क्षमा मयत्री अरु दायाकर श्रद्धा हृदय माहिं बहुताय ॥
बिनय बिराग बिवेक ज्ञान युत जानत श्रुति पुरान सबिधान ।
गान सर्वदा ममकीरति को कबहुँ न करैं दंभ मदमान ॥
कथा यथा बिधि कहैं सुनैं मम लीलालखैं सुभग दृगलाय ।
करैं अकारण परस्वारथ सिधि स्वप्न्यहु क्यहुनदेतदुखभाय ॥
पूरण लक्षण गुण साधुनके कहि नहिं सकत वेद अहिराय ।
तुव अभिलाषा समभाषा मैं संतनकेर हाल कछुगाय ॥
सुनि इमि बानी धनुपानीकी नारद गहे चरण लपटाय ।

अति मनभायो मुदछायो उर गायो सो न जात खगराय ॥
जनमन रंजन ब्रह्मनिरंजन निजमुख कहेदास गुणगाय ।
शीशनाय पुनि प्रभुचरणन महँ बिधिपुरगये मुदित मुनिराय ॥
धन्यधन्य हैं उन जीवनको जे जग आस फांस बिसराय ।
जनमन भावन के पावन को ध्यावत सदा प्रेम सरसाय ॥
रावणरिपुको यह पावन यश गावत सुनत धारि जो ध्यान ।
ताहि सतावनको समरथ नाहिं काम निकाम क्रोध मदमान ॥
विघन सघनके शिरपावन धरि काव न देत मुदित जगमाहिं ।
होत सुहावन सब भांतिन सो यहि महँ तनिक अँदेशानाहिं ॥
दीपशिखा सम जग युवतीरस त्यहि लखि मन पतंग जनिहोसि ।
रामचन्द्रके पदपंकजकी गहु द्विज बंदि भक्ति निर्दोसि ॥

कु० कहिये यहि कलिकाल महँ भवनिधि तरन उपाय ।
रघुपति पगजग भगति बिन अन्य न दृगदरशाय ॥
अन्य न दृगदरशाय गाय अस श्रुतिन बतावा ।
बिनाराम पदप्रेम क्षेम कौने कहँ पावा ॥
कहत अनंदित बंदि पुरुष तन फल जो चहिये ।
जग इतमाम बिसारि याम सब रामहिं कहिये ॥

दुःख निकन्दन रघुनन्दन को पावन विपिन चरित सुखसार ।
बंदि यथा मति कहिगायो यहि ज्यहि सुनिहोय दोषदुखछार ॥
कहां अथाह समुद्र राम यश कहँ मम मलिन बुद्धि बिनचेत ।
मनहरषायों कहिगायों कछु निजदुख दोष दलनके हेत ॥
हितसों गावै लवलावै जो यहि बरचरित माहिं लहिंभास ।
सब सुख पावै नाहिं आवै जग जावै बिपति भागि अनयास ॥
अल्प बुद्धि सों कहिगायों यह रघुपति चरित अतीव अगाध ।
पढ़ैगुनैं जन अति आनँद मन करिकै क्षमा बंदि अपराध ॥

इतिश्रीविजयराघवखण्डेआरण्यकाण्डेचतुर्थोल्लासः ४ ॥

समाप्तोयमआरण्यकाण्डः ॥

तक मय तिथियोंके सर्व रामायण ही को ज्ञात कराती है सो भी इसी में युक्त है तिसपर भी कागज़ सचिक्कण श्वेत जैसी बंबई की पसन्द की जाती है इस रामायण गुटका में वह सब मौजूद हैं लेकिन बहुत थोड़ी छापी गई है अफ्सोस है कि जो शीघ्रता न करेंगे उनको यहप्राप्त होना बड़ाही दुष्कर है अथवा गुटका रामायण अबकी छपी मिलहीगी क्यों कारण यह कि ऐसी मनो-हर अल्प मोलपर बिकैगी तो जो एक खरीदैगा वो चार रखछोड़-ने को ज़रूरही लैलेगा-

# इश्तहार ॥

सम्पूर्ण महाशयोंको प्रकट होवे कि इसपुस्तक को मालिक मतबा अवध अख़बार ने बहुतसा रुपया व्यय करके अपनी ओरसे उल्था कराके निज यन्त्रालय में मुद्रित कराया है इस कारणसे कोई महाशय इसके छापने का इरादा न करें—

मैनेजर अवध अख़बार प्रेस

लखनऊ

# श्रीविजयराघवखण्डआल्हा

## किष्किन्धाकाण्ड

जिसमें

श्रीरामचन्द्र आनन्द कन्द का किष्किन्धाकाण्ड संबंधी परमोदार चरित्र आल्हाकी रीति पर छन्द प्रबन्ध में वर्णन किया गयाहै

जिसको

लक्ष्मणपुरस्थभार्गववंशावतंस श्रीमान् मुन्शीनवलकिशोर जी के पुत्र श्रीमुन्शी प्रयागनारायण की आज्ञानुसार

उन्नामप्रदेशान्तर्ग्गत मसवासी ग्रामनिवासि पण्डित वंदीदीन दीक्षितने रामरसरसिक पुरुषोंके अवलोकनार्थ अतिरोचक छन्दमें निर्मित किया

प्रथमवार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर ( सी, आई, ई ) के छापेखाने में छपी

जौलाई सन् १८९६ ई० ॥

# इश्तहाररामायणगुटकाका ॥

---

लखनयोगसबहीलखिलीजे ॥

विदित हो कि कलिकलुष विध्वंसिनी काव्य भाषा में जैसी रामभक्त शिरोमणि महात्मा तुलसीदासजी की है तैसी आजतक किसी कविकी हुई न होगी इसमें बहुत कथन कथने की आवश्यकताही नहीं अब ये गुटका रामायण जैसी कि इस यंत्रालय में मुद्रित हुईहै उसकी उत्तमताका प्रभाव तो अवश्यही कथन करने का प्रयोजन है क्योंकि सम्पूर्ण भारत निवासी अथवा और कोई खण्ड के रहनेवाले जबतक किसी पदार्थ का गुण न जानेंगे तब तक उनकी रुचि उस में होना सर्वथा असंभव ही है इससे इस रामायण गुटका का गुण प्रथम तो एकयही बड़ाभारी है कि जैसी शुद्धता के साथ ये अबछपी है खरीददारों को ऐसी छोटी रामायण शुद्धकभी प्राप्त न भईहोगी कारण यह कि मालिक मतबा खुदही पहिलेही से अपने शोधकों को यह आज्ञा देरक्खी कि इसको यथा रुचिसे चार और पांच बार जहां तक अशुद्धता की संभावना हो तहां तक शुद्ध पढ़के छपवाइये दूसरे यह कि सातकाण्ड तो सबही रामायण में होते हैं इस में आठवां लवकुश काण्ड भी युक्त है तिस पर भी एक यंत्री क्या मानो रामायण की मंत्री ही है जो कि श्री सच्चिदानन्द आनन्दकन्द दशरथनन्दन की आदिसे अन्त

श्रीगणेशायनमः

# अथ विज्ञापन

रामबाम दिशि बाम जानकी शोभा धाम रूपगुणवान ।
लषण दाहिनी दिशिराजत शुचि जनकल्यान करनयह ध्यान ॥
ध्याय गजानन गुरुगोविंद पद शेश महेश सिद्धि आगार ।
बन्दि अनंदित वह गावत कहि ज्यहिबिधि भयोग्रंथ अवतार ॥
सुयश उजागर गुण नागर वर विदित जहान मध्य मतिधाम ।
सुखद भार्गवकुल भाकर इव नवलकिशोर नाम अभिराम ॥
शहर लखनऊ के बासी शुचि शील प्रताप तेजकी खानि ।
जक्त बिदित है यंत्रालय ज्यहि लक्ष्मी अप्रमान अधिकानि ॥
इक दिन समया लगि आई असि जमक्यो महासघन दरबार ।
सचिव सलाही सतराही सब बैठे निकट बुद्धि आगार ॥
वर्षा ऋतुको रह औसर वह नभ घन घटा छटा रहि छाय ।
वही मुहल्ला महँ समया वहि आल्हारह्यो एक जन गाय ॥
कान शब्द सो पर्‍यो सबन के तब अस लगे फेरि बतलान ।
अब रुचि पुरुषन की आल्हा पर है बहु परत बातयह जान ॥
जो यहु आल्हा जन गावत हैं ताको ना कछु ठीक ठिकान ।
लिख्यो न कतहूँ क्यहु ग्रंथनमहँ नाकछु मिलत ठीक परमान ॥
छाँड़ि नरायण यश नरयश को गावब सुनब नीक कछु नाहिं ।
इतको स्वारथ परमारथ उत कछु न दिखाय परत यहिमाहिं ॥
यतन चाहिये अस याकी अब होवै यही भांति को गान ।
पै यश होवै नारायण को जासे दुहूं ओर कल्यान ॥
अस विचारि कै उर मुंशी जी कीन्ह्यो क्षणक हृदय महँ ध्यान ।
पुनि तदनंतर वहि औसर पर हँसि अस उचित बातबतलान ॥
एक वार्ता हम शोची चित जो कहुँ अस उपाय बनिजाय ।

तौ यहि आल्हाको गावब फिरि जगसे सहज माहिं उठिजाय ॥
इतको स्वारथ परमारथ उत गावत सुनत माहिं अभिराम ।
लोक सिधरिहैं दूउ नीकी विधि कैहै एक पंथ दुइ काम ॥
कथा मनोहर रामायणकी तुलसी दास कीनि निर्मान ।
जा महँ उत्तम यश रघुबर को जग को करन हार कल्यान ॥
जौने ढँग पर यहु आल्हा है सोई छंद बनाई जाय ।
फिरि मुद्रित कै यंत्रालय महँ जाहिर कीन जाय जग भाय ॥
सुनै सुनावै अरु गावै सब होवै जगत केर उपकार ।
यहि उपाय ते बढ़ि दूसर अरु कोई देखि परत नहिंयार ॥
मुंशीजी को यह सम्मत शुभ सबको हृदय माहिं प्रियलाग ।
तब वहि औसर पर मुंशी जी मोसन कह्यो सहित अनुराग ॥
यहि रामायण को विरचौ तुम आल्हा रीति प्रीति सरसाय ।
यहिके बदले महँ तुम कहँ हम मुद्रा देब पांच शत भाय ॥
यह अनुशासन श्रीमुंशीको मैं स्वइ लीन शीश पर धार ।
लग्यो बनावन रामायण को अपने ज्ञान बुद्धि अनुसार ॥
भयो न पूरण यह आल्हासब बीचहि हाल कीन असराम ।
स्वजन सुखारी उपकारी पर नवलकिशोर गये सुरधाम ॥
पुनि तदनंतर श्रीमुंशी के पूत सपूत बुद्धि आगार ।
सत मति पूरे द्युति रूरे अति सज्जन गुणिन मानदातार ॥
क्षमा छबीले युत शीले बहु दायक संत द्विजाहि सत्कार ।
मान सरोवर श्री भार्गव कुल तामहँ अमल कमल अवतार ॥
प्राग नरायन सुखदायन अति तिन वह पूर कीन सबकाम ।
जस अभिलाषा रह मुंशीकी तैसे भयो सकल इतमाम ॥
सप्तकाण्ड शुचि रामायण स्वइ पूरण यथायोग्य बनवाय ।
निज यंत्रालय महँ मुद्रित करि दीन्ह्यों जगत रामयश छाय ॥
मति समभाष्यों यह रघुपति यश जस कछुहती चित्तकीसाध ।
सुनैं सुनावैं जन गावैं जे ते मम क्षमा करैं अपराध ॥

सवैया। जानत काव्य न एकहु अंग न ढंगहै छंद प्रबंध बनाइबो।
है बल बुद्धि विवेक नहीं विधि जानत नाहिंन लोक रिझाइबो॥
संग लह्यों न कहूं गुणियानको बंदिनचातुरी को दरशाइबो।
राह बताय दई गुरु एक यथा मति गोबिंद को गुण गाइबो॥

( कविवंशतथानामग्रामवर्णन )

## छंदककुभा

अवध देश महँ शुचि प्रदेश जाहिर उन्नामा। त्यहि अन्तर्गत बसत लसत मखवासी ग्रामा॥
चारि वर्ण मति रास बास जहँ करत घनेरा। धर्म धुरी शुभ कुरी शिव पुरी सम द्युति हेरा॥
सवैया। दक्षिण में सुर आप गराजत धारसो नाशत भारधराका।
पूरब कोण तड़ाग तटस्थ अनंदित मंदिर श्री दुरगाका॥
पश्चिम नंद अधीश औ उत्तर गोकुलनाथ धरे बरनाका।
मंदिर मंजु रमापति को सुलसै बिलसै मधि ग्राम के बांका॥
दोहा। तौन ग्राम अभिराम में बनो मोरहू धाम।
पुरिखन तहँ बर बास लिय जानि सुथल अभिराम॥

## छंदककुभा

ललऊ नाम ललाम अहै प्रपितामहँ केरो। रामदीन मति बीन पितामह श्री शिवचेरो॥
भागुलाल विशाल अहै मम पितुकर नामा। चंदीदीन प्रबीन मोर पितृव्य ललामा॥
अग्रगण्य जे भये मनीषिन महँ त्यहि पुरमें। श्रीमद्रामप्रसाद विबुध एकहिं बुध कुरमें॥
तिनसे विद्यालह्यो अनूपमगुरू बनायो। श्रीमद्राम प्रसाद सुयश उज्वल तहँ छायो॥
चंदीदीन सुनाम धरचो गुरु मोर विचारी। विप्रबंश अवतंस दीक्षितास्पद अधिकारी॥
शिवनारायण गुरू मोर त्यहि थल विख्याता। संभव बंश त्रिपाठि विप्रकुल प्रवर कहाता॥
चारि वेद षटशास्त्र कथनमहँ जिन अतिशक्ती। जन अनंद ब्रजचंद चरणकी हियबहुभक्ती॥
अष्टादशहु पुराण जासु जिह्वा पर छाजैं। काव्यमाहिं जनु कालिदास अस दूसरराजैं॥
गान विधान निधान चित्र एकही बनावैं। कथाकहनके समय द्वितिय व्यासहिसमभावैं॥
तिन दिय विद्यादान चरणसेवक शिशुजानी। परमोदार अपार बुद्धि श्री गुरु विज्ञानी॥
यह रामायण रची तासु पद पंकज दाया। भाषा छंद प्रबंध माहिं रघुपति यश गाया॥
भूल चूकलखि क्षमहिं दोष मतिमान सुजाना। हौं मैं अति निर्बुद्धि नहीं कविता कर ज्ञाना॥
दोहरा। संवत् शशि[१] शर[५] मंद[६] चंद[१] में भयो ग्रंथ अवतार।
पुनि गुण शायक नन्द चन्द में भई पूर्णता यार॥

## मत्तसवैया

याको पिंगल महँ भाषत कहि मात्रिक मत्त सवैया नाम।
मात्रा इकतिस को इकपद है जानत छंद विज्ञ मति धाम॥

रीतियथा वत लहि आल्हाकी वहि धारणा माहिं कियगान ।
जासे गावहिं सब सज्जन जन करिकै साज वाज को ठान ॥
यह रामायण संपूरण करि जस मति दई शारदा माय ।
प्रागनरायण की अनुमति लहि बंदीदीन बखान्यो गाय ॥
श्री रघुनंदन की कीरति यह जो कोउ पढ़ै सुनै मन लाय ।
कलिमल नाशै परकाशै बुधि ऋधिसिधि बसैभौनत्यहिआय ॥
पर्वपर्व महँ शुचि मानुष जो करि है श्रवण याहि धरि ध्यान ।
पाप नशैहै सुर पुर पैहै ह्वैहै सदा तासु कल्यान ॥
पितृ श्राद्धमहँ जो सुनिहै यहि करि एकाग्र चित्त मति मान ।
मुक्ति होइहै त्यहि पितृन की बसिहैं जाय अमर अस्थान ॥
तन मन इन्द्रिन को पावन करि दिन महँ करै जौन यहिगान ।
दिन कृत पातक त्यहि मानुषके विनशैं अवशि सत्यपरमान ॥
करै निशामहँ जो पातक नर औ याहि श्रवण करै मन लाय ।
देर न लागै अघभागै त्यहि प्रापत होय सिद्धि कर आय ॥
विप्र जो बांचै यहि मंशाकरि होवै महा ज्ञान आगार ।
सुनै जो भूपतियाहि चितहितकरि लहैसो विजययुद्धअधिकार ॥
नारि गर्भिणी जो सुनिहै यहि पैहैतनय सुष्टु मति मान ।
स्वर्ग मँगइया स्वर्गौ पैहैं जैहैं हर्षि देव अस्थान ॥
कन्या सुनिकै पति पैहै शुभ बंध्याअवशि पाइहै बाल ।
संपति अर्थी संपति पैहै गैहै याहि जौन सब काल ॥
बुध पारायण जो बँचिहैं यहि वक्ता होयँ ज्ञान की खानि ।
जो कोउ सुनि है यह राघव यश होइ है महा द्रव्य को दानि ॥
काम धेनु कहि यहि भाषत सब याके पढ़े होय अति ज्ञान ।
कीरति बाढ़ै त्यहि दुनियाँ महँ होवै सब प्रकार कल्यान ॥

इति

( मसवासी निवासी पण्डित
बंदीदीन कवि )

# अथ श्रीविजयराघवखंडे

## किष्किन्धाकाण्डप्रारम्भः ॥

दरन दर्प कंदर्प्प सर्प्पधर सुरवर वरद वरद असवार ।
शरद शर्वरी कर आभाधर अनुचर दरद गरद कर्तार ॥
गरल सुअंकित दरतद्धत गर नरशिर माल धरन उरमाल ।
प्रणवत ताके पद पंकज युग गिरिपति बाल चंद्रधर भाल ॥

स० पाणित्रिशूल त्रिशूलविनाशन सिद्धि प्रकाशन निद्धिपताको ।
वाणि विलास विकासनबासन संसृतिफांसन नाशन शाको ॥
बंदि सदा वरदासन जासु सदा वरदासन दायक बांको ।
वीश बिसे त्यहि ध्याउ अरे मन जो वरईश गिरीश सुताको ॥

षट्पदवृत्तम् ॥

अरिहन लषण समेत भरत रघुपति सहसीता ।
पवनपुत्र हनुमंत संत पग प्रणवत प्रीता ॥
गुर उरवीधर धरन चरन मुदभरन ध्यान धरि ।
वरणपगणपति आदि आदिकविपदप्रणामकरि ॥
श्री रघुकुल कुमुदारण्यके फुल्लकरन वरभाभरन ।
शरन सुखदके चरित कछु वरणत भवभवउद्धरन ॥

पंपासरते चलि आगे पुनि खोजत जनक लली द्वउभाय ।

थली थली महँ भली प्रभावे आये ऋष्यमूक नियराय ॥
ज्यहि पर्वत पर रह मंत्रिन सह कपि सुग्रीव बन्धुकी त्रास ।
समय बितावत दुख पावतअति गावत रामचरित सुखरास ॥
आवत दीख्यो द्वउवीरन त्यहिं अतुलित बल प्रताप आगारु ।
अस्त्र सँभारे अनियारे कर वरतन प्रभा पसारे चारु ॥
वेष सवांरे वनचारिन को धारे जटा शीश अभिराम ।
तेज जगमगै चंद्रानन पर छवि लखि लगत काम बेकाम ॥
परम भयातुर ह्वै हियरे महँ सियरे वदन उदासी छाय ।
कहि समुझावत भो हनुमत को सुनुगुन धीर वीर मनलाय ॥

स० आवत हैं इत रूप निधान महा बलवान उभै जन योधा ।
पानि धरे धनुबान सुठान उठान वयक्रम ध्यान सुबोधा ॥
मोहिं सँहारन कारनको पठयो भटबालि इन्हैं करि क्रोधा ।
ह्वै वटु हे पटु जाउ तहां न विलंब लगावहु लावहु शोधा ॥

अतिव चतुरता सों सम्मत लै मोसन कह्यो सैन समुझाय ।
मोमन संभ्रम असछावत है प्रेरित बालि रहे ये आय ॥
बालि बन्धु को मन मैलाभो मोहिं दिखाय परत असभाय ।
जो यह निश्चय तौ पर्वत तजि भागौं रहौं अन्त कहुँ जाय ॥
भय रत बानी सुनि स्वामी की आनी नाहिं विलम्ब हनुमान ।
वेष बनायो वरब्राह्मण को आतुर गमनि चल्यो बलवान ॥
ज्यहि मगआवत रघुनन्दन द्वउ वन्दनकरत अमर जिनपायँ ।
अनिल आत्मज स्वइ रस्ताधरि पहुँचे निकट जायसमुहाय ॥
सविधि निहोरे करि जोरे कर माथ नवाय मृदुलता छाय ।
वचन मनोहर कहि पूंछ्यो अस हे शुचिकाय शोभ उमराय ॥

स० को तुम श्यामल गौर सरूप अनूप महाबल कूप सुअंगी ।
क्षत्रिय रूप सुभूप छटा छवि यूप तनूप से तेज अभंगी ॥
हौ बहुरंगी से अंगी बने कोउ मोहत वेष विलोकि अनंगी ।
तोलत शोभ टटोलत से कछुडोलत हौ वन में विनसंगी ॥

अतिकुशकंटक जनयत्री यहि वनकी कठिन धरित्री माहिं ।
कोमल चरणनसों विचरत किमि स्वामीकहियभाषिममपाहिं ॥
नखमनोहर शुभगातन महँ दुस्सह सहत वनातप बात ।
सोक्यहि कारण निर्द्धारण त्यहि करियेअति विशाल द्वउभ्रात ॥
ब्रह्म विष्णु शिव त्रय देवन महँ कै तुम अहौ देव कउनाथ ।
नर नारायण के दोऊ तुम आये करन पूत बन पाथ ॥
कै जगकारण भवतारण तुम धरणी भार उधारण हेतु ।
सब विधि अण्डनके मण्डन प्रभु धार्यो मनुजरूप छविकेतु ॥
सुनि वर वानी कपि ज्ञानी की आनी हृदय मोद श्री राम ।
विहँसि अमोले सुख ओले सम बोले वचन परमअभिराम ॥

स० भूमि अजामुख माहिंअटै औकजावरु जीवहि खायसकैना ।
वारिधि वारिघटै घटमें तमहारि तमै विनशाय सकैना ॥
वंदि प्रचण्ड समीर चहै वरु मेघ घटा न हटाय सकैना ।
यार लिलार लिखे कर्तार के अंक पै कोऊ मिटाय सकैना ॥

भूप अयोध्याधिप दशरथ के बालक हमैं जानु मति धाम ।
पितु वच पालन को आये वन लक्ष्मण राम बन्धु द्वउ नाम ॥
तिया हमारी सुकुमारी सिय आई बनै हमारे साथ ।
त्यहि हरि लैगा निशिचारी कउ बेगा हमैं बिपति की गाथ ॥
खोजतडोलैं त्यहिद्विजवरहम बनमांधि मिलन आश उरराखि ।
हाल आपनो कहि गायो हम तुमहूँ कहौ चरित निजभाखि ॥
सुनि इमि भाषन जनराखन को ताक्षन वायुपुत्र सुखपाय ।
सबविधि लक्षित करि आपन प्रभु अंबुजपगन गयो लपटाय ॥
जाय न वरणो सो आनँद प्रिय गई उमंग अंग महँ छाय ।
वचन न आयो कहि मुखते कछु गयो सनेह भाय बिकलाय ॥
वेष रुचिरता सुन्दरता लखि कपि अति हृदय मध्य हरषाय ।
मुनि धरिधीरज कर संपुटकरि अस्तुति करतभयो यशगाय ॥

स० हे यश पावन भावन भक्त अभक्त नशावन दुःख दवैया ।

रावन गर्व गिरावन दावन सर्व सुहावन सुःख सरैया॥
आवनजान मिटावनमें विश्ववंदि अयान कि आश पुरैया।
छावन आनँद अंबुद सावन राग रमावन जै रघुरैया॥
मैं अयान ह्वै प्रभु सुजान सों पूँछ्यो यथा उचित यह न्याव।
अज्ञ पुरुष इव तुम पूँछहु कस अति सर्वज्ञ तज्ञ रघुराव॥
अतिशय प्रबला तुव माया वश संतत मैं जग फिरों भुलान।
नाहिं पहिंचान्यों त्यहि कारणते राउर चरण शरण सुखदान॥
इक तौ मूरुख द्वितिय मोहवश तिसरे कीश हृदय अज्ञान।
चौथे आपहु बिसरायो म्वाहिं सब विधि दीनबन्धु भगवान॥
यद्यपि अवगुणहैं म्वाहिंमहँ बहु तद्यपि नीतिरीति जगमाहिं।
यहै बतावत सब गावत प्रभु निज सेवकाहिं भुलावत नाहिं॥
माया मोहित जग जीवन को तुम्हरिहि कृपा होत निस्तार।
राम दोहाई मैं ताहू पर जानत कछु न भजन व्यवहार॥
सदा भरोसे पितु माता के रहत अशोच भृत्य अरु बाल।
इन की चिंता रहै उनहिन को करतै बनत नाथ प्रतिपाल॥
असकहिहनुमतगिरिचरणनमहँ आपनप्रकटकीन कपिगात।
भयो मगन मन प्रेमांबुधिमहँ दशा सो बरणि जातनाहिं तात॥
तब रघुनंदन जन चंदन प्रभु ताहि उठाय लीन उर लाय।
लोचन जलसों करि सिंचनतब दीन्ह्यो अंगअंग जुड़वाय॥
वचन मनोहर पुनि भाषत भे राखत हनूमान को मान।
हेकपि निज जिय जानि छोटाकरु तैंमम परमप्रीय जसप्रान॥
मोहिं बखानत समदर्शी सब सो यह सही बात कपि जात।
पै अति प्यारो है सेवक म्वहिं जाके नहीं तात पितु मात॥
जाकी दूसरि गति नाहीं कहुँ अस मति जमतिरहै सबकाल।
मैंहों अनुचर उन स्वामी को जो जग सृजत भजत कृतघाल॥
सुनि वर बानी रामचंद की अति आनंद जानि कपि ज्ञाने।
हिय अतिहर्ष्यो दुखकर्ष्यो सब पर्ष्यो प्रभुसुभाव शुचिमाने॥

उर मुद खोल्यो हँसि बोल्यो तब हे प्रभु जन अनाथके नाथ।
यहिवर परवत पर शुभगरकपि ममसह रहतसहत दुखगाथ॥
सो मन वचक्रम तुव अनुचर प्रभु कपिपति बालिकेर लघुभाय।
करहु मित्रता चालि तासन अब करिये अभय ताहि रघुराय॥
खोज कराई सो सीता का जहँ तहँ कोटि कपिन पठवाय।
चालि अब आतुर दै दर्शन त्यहि करिये दया दया दरिआय॥
कथा यथामति कहि गाई सब यहि बिधि बातजात हर्षात।
पीठि चढ़ायो दुउ भ्रातन पुनि शुभगर निकट गयो चलितात॥
विपति विघातन दुउ भ्रातन के गातन जबहिं लख्यो सुग्रीव।
मोद समातन कहि जातन कछु लातन पय्योजानि निज पीव॥
मिल्यो सहादर पुनि अंकम भरि कादर पना गयो सब भूलि।
लहिबर दरशन वादर तनके उर चादरहि मिलायो धूलि॥
गन्यो बिरादर को तृणवत् तब बल धज रामचरण रजपाय।
कियो उपस्थित पुनि आसन दै पूज्यो शुभ सभाय दुउ भाय॥
लग्यो विचारन पुनि मन महँ यह सुंदर नीति रीति सरसाय।
हे विधि करिहैं ये मोसन किमि प्रीति प्रतीति भाव उरलाय॥
कथा परस्पर दुउ दिशिकी तब पवनज कही सहित विस्तार।
अग्नि देवता को साखी करि जोय्यो प्रीति नात को तार॥
करी मिताई जब शुभगर ते रघुबर लषण भेद दुरिआय।
चरित बुझायो तब आपन सब वन आगमन हरन सियगाय॥
जल भरि नैनन महँ शुभगर तब करुणा बैन कहन असलाग।
नाथ बेगिही सिय जैहैं मिलि हियते करौ शोच को त्याग॥
सुरपुर नरपुर नागलोक महँ होई जनकसुता कयहु ठाम।
तुम्हैं मिलाउब लै आउब हम मिलिहै जौन यतन सों राम॥
दानव मानव सुर आसुर कोउ सकै न तुव भार्या छिपाय।
अहै हलाहल सम और कहँ तुववर घरणि तरणिकुलराय॥
संशय छोड़ो प्रभु हिरदय ते मोड़ो नहीं मिलन की आश।

थोड़ो अवसर नाहिं लागिहि अब मिलिहै जनकसुता सुखराश ॥
हम अनुमानत हिय जानत यह मानत मनै सत्य स्वइ बात ।
अवशि मैथिली है वाही साति ज्यहि हम लखा सखा इतजात ॥
इक दिन बैठो यहि पर्वत पर सम्मत करत मंत्रियन साथ ।
नभपथ देख्यों तब कौतुक वह लेख्यों स्वइ सत्य रघुनाथ ॥
दुष्ट अचारी निशिचारी वश भारी दुखित बिचारी बाम ।
टेरत कुररी इव आरत स्वर लक्ष्मण राम राम अस नाम ॥
रोदन करती जल ढरती चष भरती उर्ध्व सांस बिलखात ।
निशिकर बाहन तियजैसे प्रभु अतिशय दुखित व्याधवश जात ॥
तैसे निशिचर वश रमनी वह अति कमनीय करत उर घात ।
गिरत परत तुव नाम उच्चरत करुणा भरत दीख मैं जात ॥
आयो ऊपर यहि अस्थल के जब वह यान राम सुख धाम ।
बैठे लखिकै म्वहिं अभरन अरु तनपट डारि दीन निजवाम ॥
यत्नपूर्वक धरि राखे हम सो आभरण और पट तात ।
लाय दिखावन हम तुमकहँस्वइ चीन्हे अबहिं हालखुलि जात ॥
सुनि वर वानी वा नरेश की शारंगपानि कह्यो अकुलाय ।
सखा विलंब न अब लावहु म्वहिं वे आभरण दिखावहु आय ॥
पाय सुआयसु रामचंद को तिनहिं अनंद करन के भाय ।
जाय प्लवँगपति गिरि कंदर महँ पट आभरण वेगि लै आय ॥

सो० कंठसिरी दुलरी तिलरी मुंदरी सुंदरी भुजबंद नबीने ।
चंद छटा के हटावन हार सुहार घने मणि माणिक बीने ॥
कंकण कुण्डल नूपुर बंदि सुहंस कहंस प्रभा जिन छीने ।
भूषण वंश विभूषण को सोइ आनि अदूषण भूषण दीने ॥

लैवर अभरण अरु अंबर शुचि गद गद कंठ नैन अँशुवाय ।
प्रेम भाय सरसाय पाय मुद हृदय लगाय लीन रघुराय ॥
हाप्रियहासिय कहिलहिहियदुख अतिव विलापकीन रघुनाथ ।
शोच विमोचन परिशोचन महँ भेचुप क्षणक हाथ धरिमाथ ॥

पुनि धरिधीरज लघु बंधव सन गहनदिखाय कह्योअसबात ।
तुमहुँ विलोको तौ आहीं यइ अभरण प्रिया गात के तात ॥
करुणा सानी सुखखानी की बाणी सुनत लषण अकुलाय ।
जल बहाय के द्वउ नैननते बैनन कह्यो मृदुलता छाय ॥

स० सत्यकहूं प्रभु मैं कबहूं रुख सों न लखी सियकी मुखछाहीं ।
ताहित कुण्डल कंठसिरी दुलरी तिलरी पहिंचानत नाहीं ॥
अंगद जोसन कंकणहूं कहु कैसे यई निरखी नहिं बाहीं ।
बंदत बंदि रह्यों पदकंजन जानत हौं स्वइ नूपुर आहीं ॥

सुनि शुचि बानी लषण लालकी रविकुल पाल खलनकेकाल ।
अतिनिहाल ह्वै पुनिभाषत भे सुनिये सखावचन करिख्याल ॥
क्यहिदिशिलैगानिशिचारीखल अतिशयप्रियासिया ममबाम ।
कहांबसतवहमलआलय खल ज्यहिं यहकीन अकारितकाम ॥
हाल बतावहु कुलघालक को ज्यहिं निज हाथ बुलायो काल ।
करि बरजोरी अरु चोरी सों ज्यहिं मम हरी सुखकरी बाल ॥
सुष्टु विभाषणको भाषणशुचि रुचिसहसुनिसुकंठ बिलखाय ।
जोरि करांबुज इमि बोल्यो तब हे आनंद सिंधु रघुराय ॥
वहि दुष्कारी निशिचारी को जानत मैं न ग्राम अरु ठाम ।
तद्यपि आपहि समुझावत अस धारहु धीर वीर द्युति राम ॥
आतुर करिहौं स्वइ उपाय मैं ज्यहि विधि मिलैं जानकी माय ।
शोचविमोचन यहि कारण अब तुमहिय शोचदेहु बिसराय ॥
सखा वचन सुनि हरषाने प्रभु परखा पूर्ण होन निज काज ।
तब शुभगर सों इमि भाष्यो पुनि हे वर वीर धीर कपिराज ॥
कहौहकीकति अब आपनितुम ज्यहि सुनिहोय मोरभ्रमनाश ।
घरपुर छोंड़े यहि परवत पर तुम क्यहि हेत करतहौ बास ॥
चितउदास सो म्वहिं भासतहै सो कहि सकलकरौ परकास ।
विपति बतावो तुम आपनि त्यहि मेटौं अनायास मतिरास ॥
भाषण लाग्यो तब शुभगर इमि सुनिये दया धाम श्रीराम ।

दशा तुम्हारी ते भारी मम हों अति बंधो दुःख की दाम ॥
सो सब विपदा बतलावत हौं सुनिये मन लगाय रघुराय ।
पुर किष्किधा के वासी हैं हम अरु बालि सहोदर भाय ॥
प्रीति परस्पर अति दोउन महँ प्रेम सुभाय गाय नहिं जाय ।
बहु बलशाली नृप बाली वह है मम ज्येठ भाय रघुराय ॥
राज अकंटक किष्किधाकर सबविधि करत धरत सो स्वामि ।
रहौं उपस्थित मैं सेवामहँ ह्वै त्यहि चरण शरण अनुगामि ॥
समय सुबीती बहु रीती यहि प्रीती बढ़त जात दिन रात ।
पस्यो अकारण को कारण इक कछु दिनबादि आय दुखबात ॥
बुधि विनशावी यह भावी जग चाहै जौन करै भगवान ।
आनि पहूँच्यो वह समयो जब तब अस भयो वृत्त को ठान ॥
मयसुत जाको मायावी सब भाषत नाम पराक्रम धाम ।
सो दुर्बुद्धी अति क्रुद्धी शठ आयो एक दिवस मम ग्राम ॥
नींद बिगोये जब सोये सब तब अधरात समय महँ आय ।
अतिव पुकारत ललकारत भो पुरके द्वार उपर रघुराय ॥
नाम पुकास्यो भट बाली को रण हित तासु प्रणाली जानि ।
अति बलशाली प्रभुबाली तब धायो महा क्रोध उर आनि ॥
उर भय पाग्यो तब भाग्यो वह आवत देखि बालि बलवान ।
बालिहु दावा समधावा तब पाछू पकरि तासु मतिमान ॥
बंधुहि धावत लखि मैंहूं तब आतुर चल्यों पछारी धाय ।
उतै हकीकति अस बीतति भै सुनिये तात बात मन लाय ॥
वह मायाविद मायावी तब ह्वै भय मान त्रान हित प्रान ।
यक गिरि कंदर के अंदर पुनि प्रविश्यो धाय जाय बलवान ॥
गुहा द्वारपर हमहूं पहुंचे दूनौं भाय धाय ततकाल ।
तब यह भाष्यो भट बाली ने हम सन वचन संत प्रतिपाल ॥
यहि खल दानव के मारन को हम संकल्प कीन मन आज ।
ताहित अंदर गिरि कंदर के प्रविशत हमहुं त्यागि भयलाज ॥

यक पखवारा तुम परख्यो म्वहिं रहि यहि गुहा द्वारपर भाय।
इतना कहिकै भट बाली पुनि गिरि कंदर महँ गयो समाय॥
एक महीना भरि बीतो म्वहिं ठाढ़े वही गुहा के द्वार।
पुनि तदनंतर वहि कंदर ते निकसी महा रुधिर की धार॥
मनै विचार्‌यों तब अपने मैं कीन्ह्यों असुर बंधु की घात।
बाहर निकसत म्वहिं मारैगो अस शोचतहि भयो भयगात॥
द्वार कंदरा को ढांकन हित मैं यक शिला दिह्यों दृढ़काय।
भग्यों भयातुर पुनि तहँवांते पहुँच्यों नगर आपने आय॥
कह्यों हकीकति सब मंत्रिनते तिन बिन नृपति केर पुरजानि।
राज देवाई बरियाई म्वहिं भाई असुर हाथ हत मानि॥
पुनि कछु अवसर के बीते पर बाली ताहि मारि असुरारि।
अतिबलछायो घरआयो तब निरख्यो मोहिं राज्यअधिकारि॥
परिहरि भयपन उर जरिबरिगो करिदृग लाल कोपविकराल।
हाल न पूंछ्यो कछु मोते प्रभु ठान्यो वैमनस्य कर ख्याल॥
कीन्ह्यों बँधुआ मम मंत्रिनको कह्यो कठोर वचन रिसिआय।
मोहिं निकार्‌यो पुनिमार्‌यो बहु लीन्ह्यों छीनि राज धन जाय॥
त्यहिके भय ते वन पर्वत घन कीन्हें भ्रमन बहुत हम राम।
व्याकुल डोलत जगचारिउदिशि भयवशकहुँ न करतविश्राम॥
यहां शापवश नहिंआवत प्रभु तद्यपिडरो करत सब काल।
अति बलशाली वहिबालीको इतको सुनिय शापको हाल॥
महाविक्रमी खल दुंदुभि यक आसुर धरे महिष को गात।
अति बलवत्ता मदमत्ता ह्वै इक दिन गयो समुद तट तात॥
महा भयंकर वरवीचिन युत वहि बहु रतनखानि जल थानि।
निकट उदन्वितके अन्वित ह्वै बोला असुर घोर रववानि॥
हे रतनागर बल आगर तुम सागर हमैं देव रण दान।
निकट तुम्हारे हम आये हैं लाये यही मंत्र मन ठान॥
सुनि इमि बानी वहि दुंदुभिकी सागर नम्रवान बतलान।

नहिं अस विक्रम म्वहिं राकसपति जोत्वहिं देहुँ युद्धको दान॥
पै यक भट को बतलावतहौं ताके पास जाहु बलराश।
महारण्य महँ यक पर्वत पति जापर करत तपस्वी वास॥
श्वशुर शंभु के अति विक्रम घर है हिमवान नाम अभिराम।
सो तुव आशा परिपूरण करि देहैं युद्ध दान बल धाम॥
सागर नागर की वाणी सुनि पुनि वह असुर हृदय हरषाय।
आतुर भाग्यो मदपाग्योअति हिम गिरि निकट पहूंच्योजाय॥
क्षणइक शोभा लखि पर्वत की लाग्यो बहुरि करन उत्पात।
तानि तानि कै शिलापानि महँ मारत एक एक पर घात॥
नाद भयंकर करि गर्ज्यो पुनि सो सुनि जीव गये थर्राय।
इतउत भागे भयव्याकुल ह्वै पहुंच्यो निकट काल जनु आय॥
देखि दुर्दशा यह जीवन की अतिशय लेखि दैत्यउत्पात।
उज्ज्वल घन समतन वाले हिम ह्वै थित शिखर कह्यो यहबात॥

स० हे दनुजेश बली अति शेश से देत कलेश हमैं क्यहिकारन।
हे बललेश नहीं हममें नहिं जानत नेकहु युद्ध प्रचारन॥
मारन को तुव संगर आसन है इत कोऊ बली बल वारन।
मानि विनै मम आनि मनै करिये इत आपन ओज निवारन॥

नम्र वैन सुनि गिरि भुवाल के बोला असुर नैनकरि लाल।
तुम्हैं न पौरुष जो लड़वेको तौ मम वचन करौ प्रतिपाल॥
कोउ अस योधा बतलाओ म्वहिं जो करि सकै युद्ध ममसाथ।
विलँब लगाओ भयलाओ जनि गाओ तासुनाम गिरिनाथ॥
तब अस भाष्यो गिरिनायक ने लायक एक वीर यहिकाम।
पुर किष्किन्धा को बासी बलरासी बालि बखानत नाम॥
तुम सन करिहै रण वानर वह नहिंअस अन्यवीर जगमाहिं।
अवशि पधारौ तुम ताके ढिग किंचित् मृषा होनको नाहिं॥
वचन मानि कै तब अद्रिपके आतुर चल्यो निशाचर राय।
आय पहूँच्यो किष्किन्धा महँ मानहुँ लायो काल बुलाय॥

करन उपद्रव बहु लागा वह पागा हृदय अमित अभिमान ।
गर्जि भयंकर स्वर छायो पुर मानो प्रलय मेघ घहरान ॥
वृक्ष उखारि भुजदंडन गहि सो चारिउ दिशि दीन बहाय ।
खोदत पृथिवी खुर धारन सों मानहुँ मत्त मतंगम आय ॥
तासु गर्जना को भीषम स्वर कानन सुन्यो बालि बलवान ।
क्रोध बढ़ावत त्वर धावतभो अतिव अशंक बंक मतिमान ॥
तारा आदिक पटरानी सँग दानव निकट पहूँचो जाय ।
दृष्टि निहारत ललकारत भो सुनु मम वचन निशाचरराय ॥
आनि अकारण क्यों गर्जत इत रोंके डगर नगर को द्वार ।
तुव बल नीकी विधि जानत मैं ठानत वृथा रारि क्यों यार ॥
चहौ कुशलता जो प्रानन की चुप धरि जाउ आपने धाम ।
नातरु तुम कहँ संहारब हम डारब मेटि गर्व को नाम ॥
कोप समन्वित संभाषण इमि सुनि बलशालि बालिको राम ।
चषपखतानी अभिमानी खल वानी कहत भयो बहु बाम ॥
वचन वीरताके भाषौ जनि तियन सुनाय वीर बनिभाय ।
जो मन मानत भट आपहि तौ दे म्वाहिं युद्ध दान हरषाय ॥
तोरि शुराई तब जानब हम मिलै न बाद किये बल थाह ।
जाय न पैहौ अब जीवत पुर ह्वैहौ काल कौर हरि नाह ॥
भाष्यो दुंदुभियहि भांतिन जब तबमम बंधु बालि बिरझाय ।
पुरट माल जो सुरपति दीन्हीं सो गलमेलि हर्ष उरछाय ॥
समर धरित्री महँ ठाढ़ो ह्वै दीन्ह्यों वीर दुंदुभिहि हांक ।
झपटि शृंग द्वउ गहिहाथे महँ लियो घसीटियथागज चाक ॥
दाबि शृंग द्वउ माधि जंघन के दियो दबाय जोर भरिगात ।
शोणित धारा द्वउ कानन ते लागी बहन दहन खल व्रात ॥
बल दिखरायो तब दुंदुभिने छायो परम क्रोध उर आनि ।
भिरे परस्पर पुनि दोऊ भट माची महा घोर घम सानि ॥
यतन अनेकन ते खेलैं द्वउ पतन न होय एकहू ज्यान ।

लात घात अरु हनि घूंसातन मारैं शिला वृक्ष उर तान ॥
द्वंद्व युद्धभो बहु अवसर लग तब बल घट्यो दुंदुभी क्यार ।
मारि न पायो भट बालीको बल महँ पर्‍यो बालि बरियार ॥
अमित दुंदुभी को जान्यो मन तब धरि शृंग बालि बलवान ।
पकरि घुमायो चौगिर्दा ते वहि मैदान मध्य भगवान ॥
चारि कोसपर पुनि फेंक्यो त्यहि बनमहँ गिर्‍योजाय अरराय ।
भये अनेकन द्रुम चूरण तहँ जहँ वह गिर्‍यो निशाचर काय ॥
वहिके फेंकत महँ आनन ते निसरी महा रुधिर की धार ।
पवनसाथ महँ उड़िशोणित सो गिरि पर पर्‍यो आय कर्तार ॥
जहँ तप साधत श्री मतंग मुनि मूँदे नैन लगाये ध्यान ।
तिन तनभीज्यो बहु शोणितमहँ मालुमभयो मुनिहिं भगवान ॥
नैन खोलि कै जब ताक्यो तन शोणित भरो परो दिखराय ।
लालरंगलखि सब आश्रमनिज कीन्ह्योंहिय विचारमुनिराय ॥
उठिकै देख्यो पुनि आश्रम तट दुंदुभि मृतक परो विकरार ।
तप प्रभाव सों मन जान्यो तब है यह दुष्ट बालि को कार ॥
आनि कोप उर त्यहि अवसर पर दारुण शापदीन मुनिराय ।
आजुते आवै जो बाली इत तौ तुरतही मृतक ह्वै जाय ॥
शाप भयंकर सुनि बाली यह आवत इतै नाहिं रघुराय ।
सखा सुगलको सुनि दारुण दुख प्रभु उर गई वीरता छाय ॥
फरकन लागीं भुज दण्डै द्वउ सरकन लगी बालि की आय ।
भाष्यो शुभगर ते रघुवर यह दीजै सखा शोच बिसराय ॥
अहैं सहायक हम सांचे तुव करौ न नेक बालि भय भाय ।
मीच बुलाई वहिं अपने कर तुम ते वृथा वैर उपजाय ॥
बालि दुष्टको परिहारौं मैं सहित गुमान एकही वान ।
जाय शरण महँ विधि शंकर की तबहुँ न बचैं मूढ़ के प्रान ॥
देखि दुखारी निज मीतहि जे करत न पुरुष हृदय संताप ।
तिनके आनन के दीखते पुरुषन लगत आनि बड़ पाप ॥

पर्वत सदृश दुख अपने को समुझै सखा धूरिकी नायँ ।
धूरिहु सदृश सुहृदापति को पर्वत तुल्य जानि हिय माहँ ॥
होय न असमति स्वाभाविक ज्यहि सोहठि मूढ़पुरुष बेकाम ।
करत मित्रता क्यों काहूसन जग महँ वृथा धरावत नाम ॥
रोंकि कुमारग सतमारग को सिखवैं चलन फलन फलचारि ।
अवगुण ढाँपैं गुणथापैं बहु कबहुँ न चहैं मित्र की हारि ॥
देत लेत महँ नहिं शंका कछु बल अनुमान करैं कल्यान ।
नेह सतोगुण दरशावैं तब जब दुख परै मित्र पर आन ॥
श्रुति अस भाषैं सत मित्रन की उत्तम प्रीति रीति की राह ।
सुनौ कुमित्रन की करणी अब वरणी जौन वेद हरि नाह ॥
वचन मुलायम गढ़ि आगे कह पाछे हृदय कुटिलता आनि ।
अनहित ताकैं हित चाकैं सब हठि २ करैं मित्र की हानि ॥
उरगचाल सम है जाको चित है भल असकुमित्र कियत्याग ।
करै भरोसो जनि कबहूँ उर गहि अस हितू केर अनुराग ॥
मूरुख टहलू तिय दुष्टा अरु नृप कंजूस मित्र छल कारि ।
महाशूल सम हैं चारिउ ये आपति मूल देत उर फारि ॥
शोक त्यागिये अब हिरदय ते वानरराज मानि मम वानि ।
काज तुम्हारो अनुसरिहौं मैं करिहौं बालि प्रान की हानि ॥
सतगति रघुपतिकी वाणीसुनि तबइमिकह्यो प्लवँगपति बात ।
अति बलशालीहै बालीप्रभु अतिशय कठिनकरबत्यहिघात ॥
नित अरुणोदय महँ उठिकै वह पश्चिम उदधिकूल ते राम ।
पूरुब वारिधि तट आवत त्वर करत न कहूँ तनक विश्राम ॥
दक्षिण अंबुधि पर आवत पुनि उत्तर जलधि कूल पुनिजात ।
खेदनलावतमन किंचित्प्रभु कबहुँनहोत श्रमित त्यहिगात ॥
उच्च पर्वतन के ऊपर चढ़ि पकरत उछलि शृंग अनयास ।
सजड़ उखारत द्रुम हाथन गहि फेंकत तानि तानि आकाश ॥
ढेर बिलोकत जो हाड़न को यह दुंदुभी काय को आय ।

सो यह फेंका है बाली को जानिय सत्य वचन रघुराय ॥
सातौं द्रुम जो ये साखू के एकहि जगह जमे दिखरात।
पकरि हलावत इक तरुवर जो सातौं हालि उठत हैं तात ॥
कँपै करेजा बड़ बीरन को कानन सुनत बालि को नाम।
नहिं असदूसर जग योधा कउ किमिमारिहौ ताहि तुम राम ॥
वानरपतिकी सुनिवानी इमि लक्ष्मण वचन कह्यो मुसक्याय।
होयभरोसा तुवहिरदयमहँ क्यहिविधि बालि निधनकोभाय ॥
बानरेश तब इमि भाषतभो सुनिये शेशराय शुचि काय।
परै भरोसा तबहमरे जिय जब अस कर्म करैं रघुराय ॥
भट दुंदुभि को शव महिषाकृत फेंक्यो बे प्रयास ज्यहिबालि।
ताके अस्थिनकी मांजरि यह गिरि तटपरी जौनि बल शालि ॥
एक पैर सों त्यहि उठाय कै द्वैशत धनुष दूरिपर भाय।
फेंकैं रघुवर वर विक्रमसों तौमम हिय प्रतीति ह्वै जाय ॥
कर्म दूसरो बतलावत पुनि आवत ज्यहि न हृदय विसवास।
सप्तताल द्रुम तुम देखत जो कंपत जिन्हैं बालि अनयास ॥
धरि धनुशायक रघुनायक जो भेदैं एक वृक्ष इक बान।
परै भरोसो तब सेवक मन बालिहि निधन मध्य मतिमान ॥
यह मैं जानत अनुमानत उर हौ द्वउ बंधु आप बलवान।
तद्यपि राउर बल अबलगि मैं निरख्यों मैंननैन भय भान ॥
बन्धु पराक्रमबहु देख्यों मैं जो क्यहु देव दनुज महँ नाहिं।
ताते तुमसन कहि भाष्यों मैं मिथ्याकछु न नाथ यहि माहिं ॥
यहि विधि भाष्यो जब शुभगरने तबरघुनन्द चन्द मुसकाय।
अभय दिखावत विनशावत भय बोले वीर वचन हर्षाय ॥
हम दिखराबहिं बल तुमको निज ज्यहिते हृदय होय विश्वास।
देर न लावहु बतलावहु चलि अस्थिसमूह द्रुमन के पास ॥
यहकहि शुभगर अरु लक्ष्मणसह गेचालितहां रामबलधाम।
दुंदुभि दानव के हाड़न की मांजरि परी रहै ज्यहि ठाम ॥

देर न लायो रघुनायक त्यहि सहजहि पद अँगुष्ठ महँलाय।
फेंक्यो मांजरि सो निपतित भै चालिस कोश दूरि पर जाय॥
कह्यो सुगल तब रामचन्द्र ते हे आनंद कंद रघुराय।
तबअरु अबमहँ इनहाड़नमहँ अंतर बहुत परत दिखराय॥
बालिचलायोज्यहि अवसरयहि तबयहरहो सहित नसमास।
ताते गीलो अरु गरुआ बहु तब लखि परत रहै मतिरास॥
अबयह सूखो विन आमिषको तृणसम गयो हलुक ह्वै राम।
न्यूनाधिकता फरच्यानी नहिं तुमअरु बालि मध्य बलधाम॥
यहि कारण ते अब तुम कहँ मैं दूसरि कर्तब देत बुझाय।
इक तरु काटौ इकशायक हति तब सब भेद तुरतखुलिजाय॥
वचन मनोहर सुनि सुकण्ठके रघुपति विहँसि चढ़ायो चाप।
तानि कान लगि गुनछाँड्यो शर सहज स्वभाव प्रबलपरताप॥
वान भान सम परकाशितभो आशा सकल भई द्युतिमान।
एक मुहूरत महँ सातौ तरु बधि पुनि इषुधि आयप्रविशान॥
गिरे धरित्री महँ वृक्षन लखि कपिपति विस्मित भयो बनाय।
रामचंद्र के पद कंजन महँ शिरधरि कियो विनय हरषाय॥
अतिशयकोविद अस्त्र शस्त्र महँ रामहिं जानि लीन कपिराय।
बालि बधन की भइ निश्चै उरसब विधि गइप्रतीति ठहराय॥
नर तन धारी वनचारी को जान्यो परब्रह्म अवतार।
ज्ञान अंकुर्यो तब हिरदय महँ बोला वचन नीति अनुसार॥
राउर दाया ते आया अब मन महँ कछुक ज्ञानको भान।
शोक नशाया बिसराया सब जग परपंच असत् को ठान॥
तजि सुखसम्पति गतिकीरति रति धामकुटुंब मानअपमान।
सेवा करिहौं तुव पैरन की तैरन हेत सिंधु विनयान॥
ये सब बाधक प्रभु भक्ती के साधक सकल दुनियवी काम।
भाषत तुवपद अवराधक अस बृथा तमाम जगत इतमाम॥
दुखसुख अनहित हितदुनियांमहँ मायारचित अर्थ परनाहिं।

लखि यह कारण भवतारण प्रभु धरिहौं भक्तिभाव हियमाहिं ॥
हित अत्युत्तम ममबालीभो ज्यहिलगि मिल्यो दुखहरणआप।
कछु न प्रयोजन त्यहिमारनको अबहै धरन पाणि शर चाप ॥
ज्यहिते स्वपन्यों महँ कबहूं प्रभु अमरष वश्य होतहै रारि।
जागे निरखत त्यहि पूरुषको लागत महा सकुच असुरारि ॥
तौफिरि नीको नहिं बंधव सन ठानब जक्त अर्थ हित वैर।
यातेदाया करि मोपर अब धरिये दास मंत्र मग पैर ॥
मम मन सम्मत अस भावतअब गावत जासुवेद सबकाल।
भजनतुम्हारोउपजावतहिय आवतज्यहि न निकट भ्रमजाल ॥
सुनि असबानी वानरेश की संयुत नीति ज्ञान वैराग।
हर्षित बोले रघुनंदन प्रभु सुनौ सुकण्ठ वीर बड़ भाग ॥
सत्य तुम्हारो यह भाषण सब तद्यपि सुनौ हमारी बात।
कहब हमारो नहिं मिथ्या अब होवाचहै भांति क्यहु तात ॥
खगपति मोकहँ लखि आवत अस गावतस्वई संतमतिधाम।
नट अरु मर्कट की नाईं यहि जगमहँ सबहि नचावतराम ॥
सविधि सुशिक्षा करि सुकंठ को लै पुनि तासु परिक्षानाथ।
गमने तहँते किष्किन्धा कहँ लै सब साथ धारि धनु हाथ ॥
सघन वनस्थल महँ आये जब तब रघुराय स्वजन सुखदाय।
यतन सुकंठहि बतलावत भे मारन हेत बालि बलकाय ॥
हैं हम ठाढ़े यहि अस्थल पर तुम अबनगर माहिं चलिजाव।
जाय पुकारो भट बालीको उच्च पुकारि डारि भय भाव ॥
यहिथल लायोत्यहि छल बल करि तबहम वृक्ष ओटतेतात।
समय न टरिबे शर झरिबे हम करिबे बालि प्रानकी घात ॥
पाय सुआयसु अस रघुपतिको कपिपति गये नगर त्वर चाल।
जाय पुकारे अति भीषमस्वर गर्जत मनहुँ सघन घनजाल ॥
सो सुनि बालिउ उठि दौरा त्वर जस शारँगते बाण उड़ाय।
बाज चिरैया दिशि धावै जिमि करिपर यथा केशरी जाय ॥

चीता चितकै मृग माला पर खरहै यथा खेरदै श्वान।
खगपति भपटै जस देखेअहि शव पर गीध तिमिर परभान॥
नारिसुंदरी पर दौरे जिमि विषयी पुरुष दृष्टि बरिआय।
तैसे शुभगल दिशि धायोत्वर अतिबलशालिबालि रिसिआय॥
भिरे परस्पर भट क्रुद्धित द्वउ लागे करन भयंकर मार।
जैसे शशिसुत अरु वसुधासुत नभ महँ करैं समर विकरार॥
एक दूसरे के जीतन की इच्छा किये बढ़ाये चाव।
लरैं प्रबलता करि हुंकरैं बहु टरैं न एक एक के दाव॥
लातन घातन पवि पातन सम गातन देत चोट चटकाय।
दांतन काटैं तनपाटैं क्षत धरि धरि नखन नखौंटैं काय॥
हारि न मानत कउ हियरेते दोऊ धीर बीर बल धाम।
उछरैं पछरैं ललकारैं पुनि मारैं करज विदारैं चाम॥
इक सम राजत तन दोउन के एकै रूप मुकुट सम माथ।
यथा अश्विनीसुत दर्शै द्वउ देखत मल्ल युद्ध रघुनाथ॥
जानि न पायो उन दोउन महँ को सुग्रीव कौन है बालि।
तज्यो न शायक रघुनायक तब द्रुम तर रहे ठाढ़ बल शालि॥
भयो समर वरबहु अवसर लग सके न सुगल बालिको घालि।
हारि पलाने भय माने तब भट सुग्रीव प्रान प्रतिपालि॥
लख्यो न रामै सुख धामै तहँ भागे ऋष्यमूक दिशि ताकि।
श्रवै सुअंगनते शोणित बहु चोटन गयो गात जनु पाकि॥
ऋष्यमूकगिरिगे शुभगर जब तब उत ऋषय शाप भय मानि।
धायो बाली नहिं पाछू गहि आयो भवन मौन उर आनि॥
लक्ष्मण हनुमत सह गमने तब वाही कुधर ओर को राम।
जितभय पागे गे भागे त्वर शुभगर निज निवास के ठाम॥
आवत देख्यो जब रघुवर को शुभगर महा लाज उर छाय।
अतिशयदुःखित मुख अवनितकरि आये प्रभु समीपसकुचाय॥
शुचरत बैनन को उच्चरतभे नैनन ढरत अश्रु की धार।

हे दुखघाली म्वहिं बालीने दीन्हें काय घाय बिकरार॥
कहे तुम्हारे त्यहि द्वारे हम जाय पुकारि लीनि हठि रारि।
तुम्हरे लेखे तौ कौतुक भो डार्यसि हमैं जान ते मारि॥
भल मरवायो म्वहिं वैरी ते यह का कियो काम हे राम।
प्रथमैं सूचित करि देत्यो म्वहिं तौ किमि जाय लेत संग्राम॥
रही न इच्छा त्यहि मारन की यदि तुव हृदय माहिं रघुराय।
तौ भरकायो म्वहिं मिथ्या क्यों सोवत दिह्यो सिंह जगवाय॥
कहे तुम्हारे महँ लागे जो सो नर महा अनारी आय।
यही तमाशा हित आयो इत दियो लराय मोहिं रघुराय॥
कह्यो मर्कटाधिप यहि विधि जब तब रघुवंश हंस हितलाय।
वचसुखदायक कपिनायक सन लागे कहन दया दरशाय॥

स० बोध करौ निदरौ उर क्रोध सुबोध सखा ये मृषा तुववानी।
बालिसँहारण कारण मैं प्रथमैं धनुधारण कीन सुपानी॥
मोहिं लखात रहे समगात सुभ्रात द्वऊ तुम एकनिशानी।
ताअसमंजस के वश वेवश छांड़्यो नहीं शर संभ्रममानी॥

बात दूसरी जनि आनो मन मानो सखा सत्य मम बानि।
कबहुंक संभ्रम महँ आतुर हम देइत छोंड़िबान अनजानि॥
लगत कदाचित तुव उरमहँ वह तौकह हालहोत मतिमान।
सखाविघाती जग बाजित हम लाजित अपन सुनत अज्ञान॥
करौ विचार न यहि कारन तुम धारन करौ मोर आदेश।
चलौहँकारौ फिरि अबकी त्यहि मारौं अवशि त्यागि अंदेश॥
एकहि शायक के मारे तुम लखिहौ परा धरा महँ बालि।
देर न लगिहै भय भगिहै सब जगिहै हृदय महा मुदमालि॥
करौ यतन जो बतलावन हम धरौ न नेक शंक कपिराय।
अंक बनावो कछु अपने तन जो मम दृगन परै दिखलाय॥
कहि यहि भांतिन तिन सुकंठते सरसिज नैन वैन मुददाय।
पुनि शुभलक्षण श्री लक्ष्मण ते कह्यो अराम धाम रघुराय॥

यहि वर विकसी गजपुष्पीके लै अनुकूल फूल तुम भ्रात ।
तिनकी माला गुहि आला त्वर अंकित करौ सुगल को गात ॥
यहसुनिअहिपतिअतिआतुरगति लैशुचिफूलमाल गुहिआल।
गल शुभगलके पहिरायो सो कीन्ह्यों राम वचन प्रतिपाल ॥
पुनि किष्किन्धा की मारगलै गमने राम धारि धनु हाथ ।
तारनील नल अरु पवनजसह शुभगल लषण चले तिनसाथ ॥
कछुक दूरिलग चलि आये जब वीरन सहित भानुकुल भान ।
तब वहि मंगल कर जंगल महँ निरख्यो एक रम्य अस्थान ॥
स्वच्छन वृक्षन को दरशै तहँ झुण्ड अनूप एक तिहि ठाम ।
चाहत अंबर को परशै जनु बरसै सर्व काल आराम ॥
अति सुख सरसै दुख झरसै सब हरषै अंग अंग मुदपाय ।
ह्वै आनंदित सुर वंदित प्रभु पूंछ्यो अरुणसुतहि समुझाय ॥
यह वर तरवर गन गुंफित कह परत दिखाय भाय सुखदाय ।
बेगि बतावो समुझावोम्वहिं ज्यहि उरजनित तर्क मिटिजाय ॥
यहसुनिमर्कटपति उज्ज्वलमति कहिरघुपतिहि बुझावनलाग ।
यहिश्रमनाशन शुचि आश्रममहँ निवसतरहेमुनय बड़भाग ॥
नाम सप्तजन पुनि सातहु को अतिकालीन आय शुचिकाय ।
किये अधोशिर निशा दिवसजे साधत योग भोगबिसराय ॥
सदा सातयें दिन पीवत वे केवल वायु अन्न जल त्यागि ।
वर्ष सातसौ तप ठान्यो इत गये सदेह स्वर्ग अनुरागि ॥
तिन तपधारिन के प्रभावते यह तरु गुफा अतिव प्रख्यात ।
नहिं गति दानव सुर मानव की जो इत आय करै उत्पात ॥
खगमृग बनचर इत आवत नहिं कउ क्यहु काल माहिंनरपाल ।
जाय मोहवश सो लौटत नहिं जगमग.जगतज्योति अतिआल ॥
धुनि अभूषणन की सब दिन इत परत सुनाय गानकी तान ।
गमक मृदंगन अरु तबलनकी वर अबलन विनृत्यकी भान ॥
गंधिहु सुंदर इत आवत है छावत सबहि सुभग आनंद ।

जरैं सर्वदा त्रय हुतभुक हियँ छायो सघन धूम जनु कंद ॥
मणि वैदूरज के पर्वत सम भासत तरुन अरुन परकाश।
परम तपस्विनको अस्थल यह अतिकल हृदयमानि मतिराश ॥
सहित सुलक्ष्मण करसंपुटकरि करिय प्रणाम तिन मुनिनहेत।
जोनर वंदत तिन सिद्धन कहँ त्यहितन अशुभ दूरिकरिदेत ॥
वानर नृपकी सुनि वाणी वर लक्ष्मण सहित सहित श्रीराम।
हाथ जोरिकै माथ मोरिकै मुनिन निमित्त कीन परणाम ॥
पुनि तदनंतर सब वीरन ने कीन प्रणाम माथ महि नाय।
चले अगारी धनुधारी पुनि लै सब भटन साथ लघु भाय ॥
बालि प्रपालित किष्किंधा महँ आतुर सकल पहूँचे जाय।
वृक्ष ओट महँ छिपिबैठे सब अकिले सुगल गयो पुरधाय ॥
करि भयदायक मृगनायक इव परम गँभीर धीर हरनाद।
भो ललकारत भट बाली को संगर करन हेत उरगाद ॥
घोर गर्जना कपिनायक की सुनि सब गाय बैल अकुलाय।
प्रभाहीन ह्वै अतिव दीन सम भगे तुराय परम अतुराय ॥
यथा उपद्रव लखि भूपति को सब कुलबधू भगैं भय मानि।
भागे मृगगण भय पागे तिमि प्रान पयान काल अनुमानि ॥
पुनि कछु अवसर के बीते पर किय कपिराज घोर आवाज।
जनु अरराहटकरि फाट्यो नभ भुविजनु परी इन्द्रकी गाज ॥
रमणी मण्डल मधिबैठो जहँ रिपुमद खालि करन भटबालि।
तहँ वहभयकर धुनिपहुँची त्वर मानहुँगई श्रुतिनमहँशालि ॥
सहि न सका सकबका अतिवहिय बहुमदछका थकाबलगात।
ढका सर्प सो फुफकारत भो लाग्यो चलन धकधका तात ॥
पका विम्ब सो मुख लालो भो अंगन गयो वीर रस छाय।
चल्यो तड़ाका उठि बांका भट डगमग धरा धरत द्रुउपाय ॥
बालिहि गमनत लखितारातब हियमहँ जानिगई सबहाल।
सो उठि दौरी त्वर बौरीसी पति पग लपटि गई ततकाल ॥

हाथ जोरिकै समुझावत भै लावत भै न कंत मन माहिं।
कहो हमारो उर धारो पिय तुम कहँ विदित वृत्त कछु नाहिं॥
सरित बेग सम रिसबाढ़ी यह करिकै शांत सुनौ मम बात।
विना विचारे करि सहसा नर पीछे हृदय माहिं पछितात॥
महा दुर्दशा करि मार्‌यो ज्यहि पुरते दियो काढ़ि दुरिआय।
भयवश भाग्यो जो प्राणन लै सोई सुगल नाथ यह आय॥
मिले सहायक सबलायक यहि वनमहँ अनायास हितमानि।
कोशलेशसुत अति विक्रमयुत लक्ष्मण रामनाम गुणखानि॥
अहैं कपर्दी सम मर्दी रिपु दुर्जय समर माहिं दुउ भाय।
साधु सन्तके परिपोषक वे शोषक दीन विपति बरिआय॥
मैं सुनिराख्यों सुत अंगद ते प्रथमैं सकल हकीकति सायँ।
पाय प्रबलता तिन वीरनकी गर्जत सुगल आज घननायँ॥
तुम कहँ लरिबो मदकरिबो अब वाजिबहै न नाथ क्यहुभांति।
करौ मिताई लघुभाई ते सब विधि मेटि भाव आराति॥
होयँ सहायक रघुनायक ज्यहि घायक काल चाल विकराल।
चहै जो मारन त्यहि दुनियांमहँ गुनियां कहत ताहिचण्डाल॥
कहो हमारो यह स्वामी तुम दृढ़ करिलेउ गाँठि महँ बांधि।
जाउ न अवसर यहि लरिबे कहँ बैठो भवन मौनमन साधि॥

स० हौं तुवनारि पियारि महा मम वानि विचारि सुनौ यहिलागे।
रारि कि आरि बिसारि सुबंधुते प्रीति कि पारिगहौ भल आगे॥
मोह कि धारि निकारि भलीविधि प्रेमके वारिमें धोवहु बागे।
वंदिगहौ भयहारि कि यारिहि देहु हँकारि हमैं यह मांगे॥

सुनि वर वानी तिय तारा की क्षण इक हृदय विचारा बालि।
दृगन निहारा प्रिय दारा दिशि प्यारा कथन तासु प्रतिपालि॥
वचन उचारा मुद धारा सम ब्वारा मनहुँ अमीरस माहिं।
भय उरधारा ज्यहि कबहूं नहिं हारा कतहुँ समर महँ नाहिं॥
लाग बुझावन बररमनी कहँ सुनु कमनीय तिया मम बात।

मैं सब समुझ्यों जो भाषे तैं सो सब सत्य सत्य दिखरात ॥
तद्यपि वीरन को बाना यह नाहिंन वीर पने को वाम।
शत्रु पुकारत हैं द्वारे पर त्यहि सुनि बैठि रहैं डरि धाम ॥
गर्ज्जत तर्ज्जत करि भयकर स्वर लरिबे हेत देत ललकार।
असरिपु बंधव के बैनन को हम किमि सहैं रहैं मन मार ॥
भयो न कबहूं जिन वीरन को रण में नेक अनादर वाम।
परो न कादर रिपु सन्मुख जो कबहुँन लख्यो हारि संग्राम ॥
भये निरादर तिन वीरनको सहे असह्य वचन रिपुक्यार।
है दुख मरबेते अधिकी यह यश नशि अयश होत संसार ॥
कहा तुम्हारो यहि कारन हम धारन नहीं करत उर माहिं।
यहि लघु भाई दुखदाई की गर्जनि सहनशक्ति म्वहिं नाहिं ॥
राम सहायक भे यद्यपि यहि कीन्ह्यो सखा भाव सह चाव।
तद्यपि वे प्रभु समदर्शी हैं सहज स्वभाव विज्ञवर न्याव ॥
सब गुणसागर सुयश उजागर आगर शील दया दरियाव।
श्रुति मग पारग मर्यादा घर ते किमि धरैं कुमारग पावँ ॥
वैर हमारो है भाई ते सो हम लड़न जात तेहि साथ।
वे प्रभु मारैं म्वहिं काहे को विन अपराध जगत के नाथ ॥
फिरि हम माना मन अपने महँ जो मारिबो करैं म्वहिं राम।
तबहूं बिगरत नहिं मेरो कछु जैहौं अन्त समय सुरधाम ॥
करौ न शंका तुम हिरदयमहँ लै सब तियन साथ फिरिजाव।
चाव न मेटौ मम संगर को कबहुँ न लगी ऐस फिरि दाव ॥
दै शिख यहि विधि तिय तारा को नारा सरिस घोरहहकारि।
सपदि सिधारा पग धारा मग कारा चल्यो मनहुँ फुफकारि ॥
पुरके बाहर कढ़ि आयो जब तब सुग्रीव दीख तहँ ठाढ़।
विन्ध्याचल इव उर बालीके वर्द्धित भयो क्रोध बेखाढ़ ॥
बांधि कै लूका सम मूका कर धावा सुगल ओर ललकारि।
सुगलहु झपटे भट बाली तन उरमहँ सुमिरि राम धनुधारि ॥

लपटे दोऊ बलवत्ता तब मत्ता द्विरद मनो दुइ आयँ ।
करि उरतत्ता रिस खत्ता द्वउ लागे लरन करन निज दायँ ॥
तब बलशाली भट बालीने रिसकरि कही सुगलते बात ।
आजु तुम्हारे यहि मूकाते करिहौं अवशि प्राणकी घात ॥
सुनि असबानी अभिमानी की सुगलहुकह्यो क्रोधउर आनि ।
आजु हमारे यहि मूकाते होय जरूर कूर तुव हानि ॥
सुनि इमि भाषण सुग्रीवा को ग्रीवा परे बढ़े जस आगि ।
क्रोध असीवा तस बाली को गो त्वर अंग अंग महँ जागि ॥
तानि वज्रसम उर्द्ध पानि तब शुभगल प्रान हानि अनुमानि ।
धमकि करेजे महँ मूका दिय अति बिकराल बालि बलखानि ॥
पर्वत झरना सम शोणित तब मुखते सुगल उगिलबेलाग ।
क्षणक अचेतन भे चेतनमहँ पुनि उरज्वलित भयो जिमिआग ॥
वृक्षउखार्‌यो कर सांखू को मार्‌यो बालि गात महँ तानि ।
सोभरि बैठ्यो तन ऐंठ्यो तब पैठ्यो हृदय दुसह क्षतआनि ॥
अतिशय व्याकुल भो बानरतब जसपविलगे कुधर अकुलाय ।
बहु घबरान्यो तब मर्कट भट जिमि बहु भार नाव गरुआय ॥
पुनि द्वै घटिकाके बीते पर करि उर कोप ओप विकराल ।
झपटि चपेट्यो सुग्रीवा को क्रीड़त युद्ध मनहुँ दुइ काल ॥
सघन मेघ सम करि भारी स्वर पुनि द्वउ धीर वीर बरियार ।
निज २ वारन की झारन करि लागे करन परस्पर मार ॥
मल्लयुद्ध भो बहु अवसर लग करि कर लात घात परिहारि ।
विक्रम थाक्यो लघु बंदर को अंदर हृदय मानिगो हारि ॥
तदपि रामके दिखरावन हित पुनि कछु देर लरे कपिराज ।
शिथिल गात भो सब भांतिनते रहे न समर करन के काज ॥
दोऊ वीरन की देहिन ते सरि इव बहत रुधिर की धार ।
तब त्यहि अवसर सुरनायकसुत कीन्ही गरजि घोरललकार ॥
अति भयमानी तब शुभगरने सबरे अंग उठे थर्राय ।

चकित निहारे चौगिर्दा महँ जान्यो आय पहूंची आय॥
ताकत झांकत चित चक्रिततब सुगलहि लख्यो रामभगवान।
पीड़ित व्रीड़ित अनुमान्यो पुनि जान्यो हृदय महा भय मान॥
बालि सँहारन के कारन तब धारन कीन शरासन वान।
धनु प्रत्यंचा झंकारन ते आरन जीव भाग लै प्रान॥
भई हजारन घरियारन की जनु भट भीर भरन आवाज़।
अथवा अंबर ते हहरी जनु भुवि पर परी इन्द्रकी गाज॥
छूट्यो विषधर शर आतुर तब फर फर फणी तुल्य फहरात।
अंशुमान सम दीप्तिमान सो कीन्ह्यों बालि गात को घात॥
वाणविभेदित भट मर्कट तब वसुधा गिस्यो भरहरा खाय।
शरद पूर्णिमा के अर्चनगत जस भुवि इन्द्रध्वजा गिरिजाय॥
जर कटि जैबे ते भारी द्रुम भुवि पर यथा गिरै अरराय।
तस किष्किन्धापति निपतितभो हियमहँ वाणघाय को खाय॥
नहिं वहि अवसर पर वसुधाकी शोभा कछू भई मतिराश।
कुहू निशा महँ जस चंदा विन शोभा लहत नहीं आकाश॥
यद्यपि गिरिगो भुवि मर्कट भट तद्यपि देह प्रभारहि छाय।
तेज पराक्रम अरु प्राणन सह रह्यो प्रताप प्रबल दरशाय॥
सुवरण माला अति आला गल धारे जौनि दीनि सुरराय।
ताते बाली की शोभा शुभ वैसिय रही अमल दिखराय॥
किंचित अवसर के बीते पर बंधव सहित राम सुख वास।
धीरे धीरेअवलोकन हित गेचलि बालि वीर के पास॥
महा व्यवस्थित वरवानर तब आये निकट देखि द्वउ भाय।
अहंकारयुत प्रभु उदार ते लग्यो कठोर वचन बतलाय॥
हे दशस्यंदन के नंदन-तुम हमरे वचन सुनो मन लाय।
पुनि तदनंतर दै उत्तर वर मोकहँ सविधि देउ समुझाय॥
करत लराई हम भाई द्वउ निज निज मन मलीनता छाय।
तुम क्यहिकारण म्वहिं माख्यो प्रभु अनहक वीर धर्म बिसराय॥

करत प्रशंसा सब दुनियाँ तुव गुनियाँ कहत अतिवगुणमान।
महा कुलीने परबीने अति शुभमति दयावान युत ज्ञान॥
वर तेजस्वी ओजस्वी अरु सुंदर सतोगुणी यश नाव।
सत्य संकल्प उपकारी पर शुद्धि समूह बुद्धि दरियाव॥
श्रुति पथचारी अविकारी अति सज्जन शीलवान शुचिधाम।
निरपराध सो बल अगाध तुम मारयो मोहिं व्याध इवराम॥
धर्मी राजन के उत्तम गुण वर्णन कीन वेद यहि भांति।
शम दम धीरज अरु विक्रमवर दृढ़ता क्षमा सुयशकी ख्याति॥
दण्ड यथोचित अघकारिन को संतन मोद देव सहुलास।
यह विचारि कै गुण राउर महँ मैं कछु हृदय कीन नहिंत्रास॥
कहोन मानो हम ताराको तुम कहँ साधु समुझि नरराज।
सो तुम आपन गुणपाल्यो नहिं घाल्यो मोहिं व्याधइवआज॥
हमनहिं जानत तुम करिहौ अस धर्मध्वजी अधर्मी काम।
धारे सज्जन तन पापी अति निर्दय हृदय कुटिलता धाम॥
यदि हम राउर की बस्ती महँ अथवा राज्य माहिं कछुपाप।
करित धरित तौतुम मरत्योम्वहिं बिन अपराधदीनिक्योंताप॥
फल आहारी बनचारी हम नाकछु कीनि रावरी हानि।
फिरि क्यहिकारणतुममारयो म्वहिं बनि बड़धीरबीरधनुतानि॥
पुत्र जानि कै नृप दशरथ के मैं तुव हृदय कीन विश्वाश।
हे प्रियदर्शन सो धर्शन करि कीन्ह्यों निरपराध ममनाश॥
क्षत्रिय कुलमहँ तनधारन करि आगम निगम विज्ञगुणधाम।
धर्म विवर्द्धक पथ पालक शुचि करि हैं कौन क्रूर असकाम॥
निर अपराधी मम बानर को बध करि महा विनिन्दित काम।
सज्जन पुरुषन ते कहिहौ कह रहिहौ मौन धारि वहि ठाम॥
नृपति विघाती द्विजजातीहन मारन हार बैल अरु गाय।
जीवबिहिंसक अरु तस्करनर नास्तिक चुगुल निरतअन्याय॥
मित्र विनाशी परिवेत्ता अरु गुरुकी सेज शयन कर्त्तार।

पर अपकारी व्यभिचारी खल येसब अवशि जात यमद्वार ॥
यदि यह कहिये की भूपति को बन मधिमृगय खेलिबेमाहिं ।
जीव जंगलिन के मारन महँ लागत कछुक दोष है नाहिं ॥
वाजिब नाहीं है ताहू महँ बंदर निधन करब हे राम ।
तुम अस सज्जन धर्मातम नर गृहणन करत हमारो चाम ॥
रोम हाड़ लगि हम लोगन के आवत क्यहू काम महँ नाहिं ।
माँसहु कपिको नहिं भक्षत कउ यह बिख्यात जगतके माहिं ॥
आमिष भक्षी द्विज क्षत्री यदि भक्षैं बन्य पशुन कर मास ।
तबहूं वाजिबहै पांचहि को शायक नखन माहिं मतिरास ॥
गोह चौगड़ा अरु कछुआलै स्याही गैंड़ सहित ये पांच ।
तिन इन पांचौ महँ नाहीं मैं मिथ्या मारि दियो दुख आंच ॥
तुम्हैं पायकै पती वसुमती कइ है नहिं सनाथ क्यहु काल ।
यथा अधर्मी पति पाये नहिं होत सनाथ सुलक्षणि बाल ॥
पर्म धर्म पथ गथ दशरथते तुम अस प्रगट भये कस बाल ।
महाअधर्मी अघकर्मी तुम हम सम बन्य पशुन के काल ॥
बीर बखानित तब तुम का हम करत्यो समुख आय संग्राम ।
क्षणौ न बीतत मन चीतत अस तुम कहँ पठै देत यमधाम ॥
सजग मारिबो रिपु सन्मुख महँ है यह बीर पुरुष को काम ।
काह बीरता यह धास्यो तुम मास्यो वृक्ष ओटते राम ॥
अस अदृश्य ह्वै तुम मास्यो म्वहिं हे नरराय धर्म बिसराय ।
जस मतवारे नरसोवत कहँ चुपके आय सर्प डसि जाय ॥
यदि प्रिय करिबे हित शुभगरके मिलिबे हेत आपनी बाम ।
मोहिं सँहास्यो रघुनायक तुम तौना कियो योग्य यह काम ॥
प्रथमैं कहत्यो यह चहत्यो तौ मोसन सकल हाल समुझाय ।
देर न धरत्यों अस करत्यों मैं भरत्यों तुम्हैं मोद रघुराय ॥
बिनहीं मारे वहि सारे कहँ ज्यहिं तुव तिया हरयो रघुनाथ ।
कण्ठ बांधि कै यक रसरी महँ लाय गहाय देत तव हाथ ॥

जाय छिपावत कोउ बारिधि महँ अहिपुर होत क्योंन तुवबाम।
देरन लावत लै आवत मैं मानहुं सत्य बचन मम राम॥
नृपता पैहैं अब शुभगल प्रभु हमरे मरे नीकि यह बात।
पैअति अनुचित भै कर्तब यह अधरम ठानि कीनि ममघात॥
हमरोकारज नाहिंबिगरो कछु अस शुभ समय होय सबक्यार।
अस गति जगतीमहँ मिलिहैक्यहि सन्मुख खड़े जक्तभर्तार॥
पै जब तुमते यह पूछी कउ मार्‍यो आप बालि क्यहि काम।
त्यहि प्रत्युत्तर के देबे हित अबते शोचि लेउ कछु राम॥
यहकहिसुक्खित मुखदुःखित अति लीन्ह्यो बालि मौनमनधारि।
बचन अमोले हँसि बोले तब अशरण शरण हरण दुखभारि॥
हे बन बानरपति कुत्सित मति दुर्मग चलन हार अघभार।
उरमति शोधे बिन बोधे म्वहिं निन्दत काह बारहीं बार॥
यावत धरती लखि परती यह सब इक्ष्वाकु बंशकी जानु।
बन अरु बननिधि गिरि आदिक सब अंतर वही धराकेमानु॥
तिन थल बासी खलजीवन को वाजिब दण्ड देब अधिकार।
है वहि कुलके भूपालन को पालन उचित नीति अनुसार॥
पापपरायण रत अधरम तुम कीन्ह्यो महा विनिन्दित काम।
त्यहि हित मार्‍यो अनुसार्‍यो नयटार्‍यो तोर कठिन अघधाम॥
छोटे भाई की रमणी अरु भगिनी तथा पुत्रकी नारि।
आपनि कन्या इन चारिहु को इक सम कहत बेद निर्द्धारि॥
इन्हें बिलोकै अघ दृष्टी जो ताके बधे पाप कछु नाहिं।
सो अघ तुममहँ प्रत्यक्षै है डार्‍यो बंधु बाम घर माहिं॥
धर्म रहित ह्वै मन मानी तुम करिबे लगे लाज डर डारि।
त्यहिहित तुमकहँ यह शासन हम दीन्ह्यो नीतिपंथ निर्द्धारि॥
दोष दूसरो बतलावत अरु त्यहि मन गुनौ सुनौ हितलाय।
अति अभिमानी तुम मानीनहिं सम्मति तियाकेरि सुखदाय॥
हमरे भुज बलके आश्रित जो हमरो सखा भयो सविधान।

त्यहि सुकंठ के संहारन को मन अभिमान कीन हत ज्ञान ॥
ऐसे दोषन अवलोकन करि हम निर्दोष कीन त्वहिं मारि।
ठानहु शोक न अबहिरदयमहँ सविधि विचारिलेहु चितधारि॥
सुनि रघुनंदन के बैनन शुभ बंदन कीन बालि शिर नाय।
करि कर संपुट अस भाषत भो हे नर राय राय शुचिकाय॥
शोक न मो कहँ यहि अवसर कछु तुम्हरे दरश अपूरब पाय।
मिलत न समयो असज्ञानिनको रहत जे सदायोग लवलाय॥
अबकरि करुणा अवलोकहु म्वहिं मन भावतो देहु वरदान।
जहँजहँ जन्मौं ज्यहि योनिनमहँ तहँतहँ करौं आप गुणगान॥
द्वितिय मनोरथ अरु पूरहु मम हे रविवंश हंस रघुनाथ।
यहसुत अंगदमम विक्रमसम त्यहिकरि अभय गहौदढ़हाथ॥
दास बनाओ निज चरणन को राखौ शरण मध्य हितलाय।
मैं अब त्यागत तन आनँद सह राउर पगन प्रेम सरसाय॥
यहि विधि भाषण करि रघुवरते कीन्ह्यो बालि देहको त्याग।
माला फूलन की गलते जस गिरत न जानि पाव मन नाग॥
कथा मनोहर किष्किन्धाकी अतिशय प्रभु विलास सुखरास।
वरण्यो मतिगति सम बन्दीजन पूरन भयो प्रथम उल्लास॥
श्री मुंशी प्रयागनारायण को उपदेश वेश शिर धारि।
रच्यो अपूरब प्रभु विलास यह आल्हा छंद रीति विस्तारि॥

इतिश्रीलक्ष्मणपुरस्थभार्गववंशावतंसश्रीमान्मुंशीनवलकिशोरात्मजश्रीमुंशीप्रयागनारायणस्याज्ञाभिगामीमसवासीनिवासिपण्डितबन्दीदीनदीक्षितनिर्मितविजयराघवखण्डे किष्किन्धाकाण्डेप्रथमोल्लासः १॥

कौशलेश के कल आंगन महँ क्रीड़ा करन हार कर्तार।
शिव मन मानस मृदु मराल के ध्यावत चरण शरण दातार॥
अंजनि नंदन पद बंदन करि गणपति शेश शारदा ध्याय।
कथा मनोहर किष्किंधा की भाषत राम चरित पुनि गाय॥

बालिहि पठयो जब सुरपुर प्रभु निजशर तिरथ प्राण पधराय ।
परी खलभली किष्किन्धा महँ धाये नगर लोग अकुलाय ॥
विलपत रोवत चलिआये सब जहँपर पर्योमृतक तनबालि ।
विलखत तारा बहु दारा सँग हाथन हृदय माथ बहु घालि ॥
बाल बिथरिगे चन्द्रानन पर विकल अंग गये शिथिलाय ।
गिरती परती बहु धरती पर अतिशय बालि सुयशको गाय ॥
आनन चूमै शिर धारै उर भारै अंग धूरि पट लाय ।
गात सम्हारै नाहिं करुणा वश मारै माथ हाथ विलखाय ॥
मैं पति तुमका समुझायों बहु मान्यों मोर सिखावन नाहिं ।
काल वश्य ह्वै निष्कारण पिय खोयो प्रान आज रण माहिं ॥
कहे न पायो कछु अंगद का सुर पुर गयो अचाका भागि ।
विपति समुंदरमहँ डार्योम्वहिं जार्यो हृदय विरहकी आगि ॥
यहिविधि विलपत लखि ताराको आपन विरद सँभारा राम ।
देखिन दुखिया सककाहू प्रभु दीन दयाल दया के धाम ॥
लगे बुझावन त्यहि रमणी कहँ करि उपदेश वेश युतज्ञान ।
मृषा मोह यह तजु हिरदयते मिथ्या जग प्रपंच को भान ॥
अमर न कोऊ यहि दुनियां महँ गुनियां मूर्ख वीर बलवान ।
जो तन धरि है जग मरि है सो करि है कउन पालना प्रान ॥
जो फल फरि है द्रुम भरि है सो बरि है तौन बुतै है बाम ।
रीति सनातन यह दुनियां की शोचत काह बैठि बेकाम ॥
पानी पावक नभ वसुधा अरु मिलिकै पवन तत्व ये पांच ।
इनते रचना यहि देही की बिगरत बनत यथा घट सांच ॥
सो वह देही पति नेही की भुवि महँ परी प्रगट तुव पास ।
जीव आत्मा अविनाशी सो तैं क्यहि हेत करत दुखभास ॥
सुनि अस बाणी धनु पाणी की तारा हृदय जनित भो ज्ञान ।
चरणन लागी तब स्वामीके माँग्यासि हरषि भक्ति बरदान ॥
कठपुतरी इव यहि दुनियाँ महँ सब कहँ सदानचावत राम ।

यहिते गिरिजातजि झंझट सब प्रभुपद शरण लेहिसुखधाम ॥
पुनि तदनंतर रघुनंदन प्रभु आतुर सुगल बुलायो पास ।
बालि मृतकक्रिय अनुसरिबेहित दियो निदेश वेश सहुलास ॥
पाय सुआयसु रामचंद्रको सबरो मृतक कर्म सविधान ।
कीन्ह्यो शुभगल निज बंधवको जस कछु वेद शास्त्र परमान ॥
पुनि चलि आयो रघुनंदन ढिग बंदन कीन चरण हरषाय ।
आशिष दैकै तब सीतापति अपने निकट लीन बैठाय ॥
पुनि समुझायो लघु भैया को अब तुम सकल कपिन लैसाथ ।
जाय वेगिही किष्किन्धा पुर सुगलहि करौ जाय पुर नाथ ॥
वचन मनोहर सुनि राघव के अहिपति नाय राम पदमाथ ।
चले सहातुर किष्किन्धा पुर लैकै सकल कपिन को साथ ॥
प्रापत ह्वै कै नृप मंदिर महँ करि त्वर सकल राज को साज ।
भूप बनायो कपि सुकंठ कहँ औ अंगदहि कीन युवराज ॥
उमाराम सम हित दुनियाँ महँ सुत पितु मातु बंधु कउनाहिं ।
यहिते वाजिब यह मानुषको लावै नेह राम पदमाहिं ॥
रीति सनातन है यद्यपि यह नर मुनि सकल देवतन माहिं ।
अपने स्वारथ के साधन हित साधत सबै प्रीति शक नाहिं ॥
तद्यपि प्रभु की कोमलता अरु करिबो दास केर कल्यान ।
सब बिधि हरिबो दुख भरिबो सुख शोचै हृदय धारिकउध्यान ॥
बालित्रासते अति व्याकुलज्यहि बीतत दुखैमाहिं दिनराति ।
तन दुर्वलता मन चिंताबहु वन वन फिरत व्यथा अधिकाति ॥
त्यहि शुभगरको कपिनायक किय सब विधि होयसहायकराम ।
तिनके चरणन जो ध्यावै नहिं सोजन महा मूढ़ बेकाम ॥
पुनि सुग्रीवहि बोलवायो प्रभु सब विधि दयो नीति को ज्ञान ।
जस कछु राजन को वाजिब है करिबो दान मान सन्मान ॥
पुनि तदनंतर यह भाष्यो प्रभु सुनिये सुगल बीरबलधाम ।
पितु बच पालन के खातिर हम चौदह बर्ष जाबनहिं ग्राम ॥

गुजरी ग्रीषम ऋतु बुजरी अब पावस गई आय नगिचाय।
शैल प्रबर्षण पर रहिहौं मैं तुम्हरे निकट मोद मन छाय॥
तुमअंगद सह किष्किन्धा महँ भोगौ जाय अकंटक राज।
रय्यत पालौ बहु नीकीबिधि संतत हृदय राखि मम काज॥
पाय सुआयसु इमिराघव को पगतल माथ नाय कपिराय।
धाम आपने चलि आवत भे गिरि पर रहे राम रघुराय॥
जानि बनागम रघुनंदन को प्रथमैं सुरन मोद उपजाय।
गुहा सँवारी रहै पर्वत की निवसे तहँ दीन सुखदाय॥
पाय सुहावनि बरसावनि ऋतु दुसरे मानि स्वामिअनुराग।
शैल प्रबर्षण के चारिउ दिशि सबरे फूलि उठे बन बाग॥
गुंजन लागे मधुगुंजन तहँ मोर चकोर घोर ललकार।
लगे सुनावन सुखछावन अति जनु सबगावन लगेमलार॥
जबते निबसे प्रभु पर्वत पर तबते सूख वृक्ष हरियान।
कन्द मूल फल बहु पैदाभे जीवन महा मोद अधिकान॥
शैल मनोहर लखि सीतापति रहे तहँ अनुज सहित हरषाय।
अति सुख पायो बन जीवन ने मंगल मोद बरणिना जाय॥
मधुकर खगमृग तन धारण करि सुरमुनिसिद्धसहितअनुराग।
शुचि मनसेवा रघुनन्दन की सबदिन करैं मानि बड़ भाग॥
अतिशय सुंदर शिला फटिक पर आनँद सहित बैठद्वउभाय।
जिनकी शोभा कहि आवैना गावै कौन बुद्धि कवि पाय॥
कथा अनेकन श्रुति सम्मत युत नृप नय भक्ति ज्ञान वैराग।
भाषत रघुपति लघुबंधवसन सुनतसो सहितप्रीति अनुराग॥
समय सुहावन ऋतु पावसको नभ घनघटा छटा रहि छाय।
कटा करन हित जनु विरहिन को दामिनि पटा रही दरशाय॥
लक्ष्मण देखहु ये मोरवा गण नाचत कितक मेघदल देखि।
गृही विरागी जिमि हरषत मन नयनन विष्णु भक्तकहँ पेखि॥
उमडे घमडे घन गरजत नभ चहँदिशि छायरह्यो अँधियार।

यथा मूरखन के हिरदय महँ सूझि न परत नीक बेकार ॥
दामिनि दमकत है मेघन महँ औ छिपि जात घटाके माहिं।
यथा मित्रता खल पूरुष की सब दिन रहत एक रसनाहिं ॥
बरसत मेघा जलबुंदन घन नै नै महा भूमि नियराय।
नवत मनीषी जन जैसे जग विद्या विभव गुणन को पाय ॥
बड़बड़ बूँदन की चोटन कहँ पर्वत सहैं कौन विधि भाय।
दुष्ट मानुषन के बैनन कहँ जैसे सहैं साधु सुखपाय ॥
नदिया छोटी भरि पानी सों तजि मर्याद चलीं उतराय।
थोड़िय सम्पति के पावत महँ जस खल पुरुष जाय बौराय ॥
पानी परतै खन धरती महँ देर न लगत मैल कै जात।
जैसे माया लपटाने ते ढबइल जीव जक्त दरशात ॥
बारि सिमिटि कै दिशिचारिउ ते भरे तलाव पूर दरशात।
जैसे सज्जन के हिरदय महँ सब गुण आय आय भरिजात ॥
अगणित नदियाँ बहि बारिधि महँ मिलैं न तजैं तदपि मर्याद।
बिष्णुहिंपाये जिमि भगवत जन निश्चल होतसहितआह्लाद ॥
तृण बढ़िआयो बहु धरती पर ताते सूझि परै नाहिं राह।
जिमि पाषण्डिन की बातन ते भे सदग्रंथ पंथ बे चाह ॥
नदी तड़ागन तट मेंढक गण अगणित रहे शोर सरसाय।
जनु चटशालन महँ विद्यारथि मुद सों रहे वेद रट लाय ॥
नये पतौअन युत बहुते द्रुम अतिशै रहे शोभ दरशाय।
यथा ज्ञानयुत मन साधुन के शान्त दिखात विमलता पाय ॥
वृक्ष जवासा अरु मदार के पात विहीन हीन दिखरात।
उत्तम राजा के देशवा महँ जस उद्योग खलन को जात ॥
बहुतक खोज्यो पर रस्तन महँ मिलै न कहूं धूरि केहु ठाम।
जैसे क्रोधी के हिरदय महँ रहै न नेक धर्म को नाम ॥
उत्तम खेती युत धरती की शोभा क्यहि प्रकार रहि छाय।
पर उपकारी की सम्पति जस दिन २ बढ़ै विभव को पाय ॥

राति अँधेरी महँ बंधव ये जुगुनू रहीं चहूं दिशि घेरि।
जैसे कलियुग महँ जहँ तहँ अति बढ़ी समाज पखण्डिनकेरि॥
ज्यादह पानी के बरसेते क्यारी फूटिचलीं उतराय।
भये स्वैरिणी भय लज्जा तजि जैसे बिगरि मेहरिया जाय॥
खेत निकावें कृषिकर्ता जन खर पतवार देत अलगाय।
जैसे बुधजन गहि नीके गुण अवगुण सकल देत दुरिआय॥
चकवा आदिक गण पक्षिनके कहूं दिखाय परत नहिं भाय।
जैसे कलियुग के आये ते सबरो पुण्य धर्म छिपिजाय॥
यद्यपि जलकी बहु वर्षा भइ ऊसर जम्यो तदपि तृणनाहिं।
कोटि कुसंगति के पाये जिमि काम न उगै संत मनमाहिं॥
जीव अनेकन की जातिन युत सोहत धरा सुभग यहिभांति।
सुंदर राजा के पाये जिमि अतिशय प्रजा पांति अधिकाति॥
पानी बरसत ते पन्थक गण जहँ तहँ रहे टिकाश्रय डारि।
ज्ञान भये पर जस ज्ञानीकी इन्द्रिय रहैं शिथिलता धारि॥
तीक्षण मारुत के डोले ते बादर क्यहि प्रकार दुरिजात।
जैसे उपजे कुल कुपूत के संपति धर्म कर्म नशिजात॥
कबहुं दिनहुँ महँ होय अँधेरिया कबहूं उदय होत हैं भान।
जैसे संगति भली बुरी ते उपजत नाश होत है ज्ञान॥

स० बंधव या वरषा ऋतु में सबजीव असीवँ रहे हरषाई।
मंगल जंगलहू में छयो कतहूं न अमंगल रंचदिखाई॥
ऐसेसमय बिस्मय बड़ि एक यही जियमें रहिमोहिं सताई।
पीर उठै हिय धीर छुटै अबलौं लखि प्राणप्रिया नहिं पाई॥

बीती वरषाऋतु लक्ष्मण अब आई शरद समय सुखदाय।
खबरि न पाई सियप्यारीकी क्यहि विधि धीरधरौं हिय भाय॥
फूले कांसनसों सोही महि चहुँदिशि रही सफेदी छाय।
वर्षाऋतु को अब मानहुँ यह प्रकटो बंधु बुढ़ापा आय॥
भयो अगस्त्योदय बंधव अब गयो मुखाय पंथ को बारि।

यथा लालचहि सुखलावत त्वर शुचि संतोष दोषसब झारि ॥
नदी तलावन में निर्मल जल अतिशै रह्यो शोभ सरसाय।
मद मोहादिक मिटि जैबे ते जस शुचि संत हृदय दरशाय ॥
रस रस शोखत सर सरिता जल ज्ञानीमया करतजिमित्याग।
मेंढक चुपभे जस नैहर कर तजै पुरानि बधू अनुराग ॥
शरद समैया को आगम लखि खंजन इत उत परे देखाय।
समय पायकै जस सुकृतीकर सबविधि मिलै सुकृत फलआय ॥
धूरि न चहला कहुँ बसुधामहँ दरशत दशौं दिशा अभिराम।
भूप नीतिविद्की करणी जस विलसत ठाम ठाम सुखधाम ॥
सूक्षम पानी रहिजैबे ते कहुँ कहुँ मीन उठीं अकुलाय।
अबुध कुटुम्बी जिमिसंपति विन रहि रहि हृदयमाहिं घबड़ाय ॥
मेघ बिलाने ते निर्मल ह्वै कस आकाश भयो परकाश।
जैसे भगवत जन उज्ज्वल ह्वै सब तजिदेय जगत की आश ॥
कहुँ कहुँ वरषा रहि सूक्षमगै कछु कछु पड़न शर्दियौ लागि।
जैसे कतहूं कउ सज्जनजन पावै भक्ति मोरि अनुरागि ॥
चले नगर तजि आनंदित ह्वै तपसी भूप वणिक भिखियारि।
भक्तिपायजन जिमि भगवतकी आश्रम तजैं आश्रमी चारि ॥
है अगाधजल ज्यहि ठामनमहँ तहँ मुदसहित करैं झषवास।
यथा विष्णुकी शरणागत महँ नाहिन कछू विपतिकी फांस ॥
फूले कमलनसों संयुत शर शोभा अनुपम रह्यो पसारि।
यथाप्रकाशत द्युति कीरतिकरि निर्गुण ब्रह्म संगुण तनधारि ॥
फूले फूलन पर बैठे बहु भवँरा करत मधुर स्वर ठान।
जानि अवाती जस भूपति की भूसुर करत वेदको गान ॥
राति उज्यरिया लखि चकवागन मनमहँ दुखी होत सबभांति।
जस परसम्पति के देखे ते दुर्ज्जन जरा करैं दिन राति ॥
रटै पपीहा दुख ईहाकरि जीहा थकै बुझै नहिं प्यास।
यथा विरोधी शिवशंकर को कबहुं न लहै सुःख को बास ॥

शरद घमावनि को रजनी महँ चंदा करै क्षणक में नाश।
जैसे साधूके दरशन ते पातक नाश होत अनयास॥
बहु चकोर गण शशि मण्डलको देखैं दृगन पलक बिसराय।
जस आनन्दित चित ताकैं चष हरिजन हरिस्वरूप को पाय॥
जाड़े पालेकी शंका ते गये बिलाय मशा औ डांस।
जैसे द्रोह किये भूसुरते देर न लगै होय कुल नाश॥
जीव अनेकन जे पृथिवी महँ ते सब गये शरद ऋतु पाय।
जैसे सतगुरु मिलि जैबेते संशय भ्रम समूह भगिजाय॥

स० भाई गई वरषा ऋतु बीति सुहाई भली ऋतु शारदि आई।
आई न प्राणप्रिया मम पास न आश सँदेशहुकी कछुपाई॥
पाई व्यथा वनमें बहु आय सुहाय विधीगति जानि न जाई।
जाई न पोच सकोच हृदैतजि शोचि प्रियाकर शीलसुभाई॥

प्राण पियारी तिय सीताकी कैस्यो मिलै खबरि यकबार।
क्षणौं न बीतै लै आवौं त्यहि करिकै विजय काल बरियार॥
जीवत रैहै जो कतहूँ सिय करिकै यतन लाइहौं भाय।
सत्य सँदेशा के पाये विन चलै न कछु उपाय अब हाय॥
सुधि सुग्रीवौ बिसराई मम पाई राजि कोश पुर नारि।
कछु न सहाई भो विपदा महँ बैठो भवन चुपाई मारि॥
जौने शायक ते मारा मैं तारानाथ बली भट बालि।
तौने शायक ते करिहौं मैं शठ सुग्रीव जीव विन काल्हि॥
ज्यहि रघुराया की दाया ते छूटै कोह मोह मद मान।
ताहि किस्वपन्योंमहँ होवैरिस गिरिजा करु विचार धरिध्यान॥
चरित अनूपम यह स्वामी कर जानैं मुनय ज्ञान के खानि।
जे षटरागन को त्यागन करि सेवत रामचरण रति मानि॥
प्रभुकहँ क्रोधित लखि लक्ष्मणत्वर धारणकीन धनुषशरहाथ।
रिस परिपूरित तजि आसनउठि मांग्यो हुकुम नायपदमाथ॥
बन्धु बुझायो रघुनन्दन तब असरिस करौ हृदय जनि भाय।

भय दिखायकै लै आवहु इत सखा सुकंठ आय सुखदाय ॥
पाय सुआयसु इमि राघव को लक्ष्मण चले भले हरषाय ।
इतकी गाथा तौ वरणी इमि उतकी कथा सुनौ खगराय ॥
यहां पवनसुत हिय शोचे अस भुलयो सुगल रामको काम ।
काम न कीन्ह्यों यह नीको कछु फीको होय याहि परिणाम ॥
अस विचारिकै मन अपने महँ शुभगल पासजाय शिरनाय ।
साम दाम अरु दण्ड भेदते लागे कहन ताहि समुझाय ॥
राज़ि पायकै परि विषयनमहँ भोगन लग्यो जगत इतमाम ।
जिनके बलते सुखपायो अस तिनको निपट भुलायो काम ॥
काह तुम्हारी गति ह्वै है अब सो तुम हमैं देव बतलाय ।
सुनि असबानी कपि ज्ञानीकी शुभगल हृदय गई भय छाय ॥
नम्र वचन कहि हनूमान ते अस सुग्रीव लाग बतलाय ।
मंत्र बतायो तुम नीको म्वहिं धर्म प्रधान केर यहि आय ॥
विषय भोग महँ परि मूरुख मैं खोयों सकल बुद्धि औ ज्ञान ।
काम भुलायों निज स्वामी को होइहै क्यहि प्रकार कल्यान ॥
करौ पवनसुत अब इतना तुम दूत समूह वेगि बुलवाय ।
आयसु दैदै पठवाओ त्वर लावौ नाहिं विलंब अब भाय ॥
बोलि लयावैं सब बँदरन कहँ आवैं सकल सैन सह धाय ।
पन्द्रह दिन महँ जो ऐहै ना त्यहि निजहाथ हनब हमभाय ॥
मर्कटपतिको सुनि आयसु अस हनुमत सकल दूतबुलवाय ।
कहि समुझायो तिन सबहिनको चारिहु दिशा दयो पठवाय ॥
त्यही समइया के अवसर महँ सीतानाथ केर लघुभाय ।
आय पहूँचे किष्किन्धा महँ लखि कपि गये जहां तहँ धाय ॥
लक्ष्मण क्रोधित ह्वै ताही क्षण लीन्ह्यो हाथ शरासन धार ।
भयदिखरावन हित भाष्योअस करिहौं आज जारि पुरछार ॥
क्रोध प्रज्वलित लखि लक्ष्मणको पुर नर नारि गये अकुलाय ।
त्यही समैया के अवसर महँ अंगद निकट पहूँचो आय ॥

माथ नाय कै दूउ पायँन महँ कीन्ह्यों हाथ जोरि परणाम ।
सुनिकै विनती कपि अंगदकी दीन्ह्यों अभय बाहँ बलधाम ॥
क्रोधित सुनिकै भट लक्ष्मण को भे सुग्रीव बहुत भयमान ।
हाथ जोरिकै तब भाषत भे हे कपि धीर वीर हनुमान ॥
होहु सहायक यहि अवसर तुम इतना काम करौ त्वर भाय ।
तारा रानी को सँगलै तुम लक्ष्मणहिं बुझावहु जाय ॥
सुनि अस आयसु शुभग्रीवा को कपि बलसीवा भयो तयार ।
सहित उदारा तिय तारा के लक्ष्मण निकट गयो चलियार ॥
चरण बंदिकै आनंदित मन प्रभु को सुयश कीन बहु गान ।
मन प्रसन्नकरि लषणलालको पुनि असवचन कह्योहनुमान ॥
हे जनरक्षक अघभक्षक प्रभु अशरण शरण धरन जनहाथ ।
पद रज परसन करि सेवक कर मंदिर करहु कृतारथ नाथ ॥
यहि विधि भाषणकरि मारुतसुत पुनि लै लषणलालको साथ ।
आयपहूंच्यो झट मंदिर महँ करत निवास जहाँ कपिनाथ ॥
चरण धोयकै लषण लाल के शुचि पलँगापर दीन बिठाय ।
आय्र सुकंठौ तब ताहीक्षण कियो प्रणाम माथ पगनाय ॥
भुजापकरिकै तब लक्ष्मण त्यहि कंठ लगाय लीन सह चाय ।
निकट बिठायो अति आदर युत तब सुग्रीव कह्यो समुझाय ॥
नाथ विषय सम मद नाहीं कछु मुनि मन क्षोभ करै क्षणमाहिं ।
तौ बतलाइय वन वानर पशु काहेन विषै फंद परिजाहिं ॥
वचन मुलायम शुभग्रीवा के सुनिकै शेशराय सुख पाय ।
बहुविधि कहिकै समुझायो त्यहि जस कछु ढंग बड़ेनको आय ॥
पुनि त्यहि पाछे भट हनुमत ने सबरो हाल यथोचित गाय ।
लषण लालको बतलावतभो ज्यहिविधि गये दूतसमुदाय ॥
ह्वै आनंदित तब सबरे कपि हनुमत अंगदादि लै साथ ।
लषण लाल को करि आगे चलि आये सुगल जहांरघुनाथ ॥
माथ नाय कै दूउ चरणन महँ कीन्ह्यों हाथ जोरि प्रणाम ।

सबहि यथोचित दै आदर प्रभु निकटहिलिय बिठायभगधाम ॥
अतिव नम्रता युत बोले तब कपि सुग्रीव जोरि युग पानि ।
नाथ क्षमापन करि दूषणमम सुनिये श्रवण लाय जन वानि ॥
राउर कारज बिसरायों मैं परिकै विषय भोग की साध ।
मनहिं विचारौ तौ करुणानिधि नाहिन तनिक मोर अपराध ॥
अतिशय प्रबला यह माया तुव जावश भ्रमत सकल संसार ।
तामहँ केवल तुव सेवक को तुमरिहि दया होत निस्तार ॥

स० देव अदेव गुणी निगुणी मुनि सिद्ध प्रसिद्ध जहां लगि स्वामी ।
बुद्धि अखंडित मंडित पंडित विक्रम आगर नागर ग्रामी ॥
योगी यती सती शूर शिरोमणि बंदि जहांलग जे जगनामी ।
तेसब वश्य विषैरसके तब मोरि कहा गणना पशुकामी ॥

नारिनयन शर ज्यहि लागो नहिं जागो महामोह निशि माहिं ।
गरुन फँसायो लोभ फांसमहँ उरमहँ क्रोध अंकुर्यो नाहिं ॥
हृदय दुखायो नहिं जीवनकर दीन्ह्यो जगत राग बिसराय ।
चित्तलगायो तुव चरणन महँ सोनर तुम समान रघुराय ॥
यह गुणसाधन ते होवैनहिं तुम्हरीकृपा पुरुष कोउ पाव ।
कपि सुकण्ठको सुनि भाषण इमि हँसि असकहतभये रघुराव ॥
हियसंकोचौ जनि शुभगल तुम प्यारे मोहिं भरत जिमि भाय ।
यतनविचारो अबसोई तुम सिय सुधिमिलै जौनिविधि आय ॥
होत बतकही यहि भांतिनते सुनु गिरिराज सुता मन लाय ।
त्यही समइया के अवसर पर वानर कटक पहूंचे आय ॥
तिनकी गणना बतलावै जो अस जगभयो कौन बुधिमान ।
तिनके विक्रम की थाही नहिं भरे अशंक बंक बलथान ॥
आय आयकै ते योधा सब द्वउ करजोरि माथ महि नाय ।
सुखद जोन्हैयन द्वउ भैयन को करत प्रणाम हृदय हरषाय ॥
पुनि तदनंतर शुभकंठहु को किह्यनि प्रणाम जोरि द्वउहाथ ।
आयसु स्वामी को पावन हित ठाढ़े भये नाय महि माथ ॥

कह्यो बँदरवनते शुभगर तब भाइउ सुनौ हमारी बात।
अबलगि तुमका सँकस्यावा नहिं कबहूं क्यहू समयमहँ तात॥
आजु कुसंकठ यहि अवसर पर ताते हृदय शोच बिसराय।
निज निज विक्रम दिखरावो तौ जामहँ सकल बात बनिजाय॥
मोर निहोरा प्रभु कारज हित वानर भालु चहूं दिशि जाय।
खोज लगाओ जगदम्बा कर आवो मास दिवसमहँ भाय॥
विन सुधि पाये सिय रानी कै अवधि विताय आइहै जौन।
यामहँ शंका कछुनाहीं है मरिहै अवशि हाथ मम तौन॥
सुनि अस बानी कपि राजा की चलिभे माथ नाय कपिभालु।
पाछे शुभगल बुलवायो पुनि हनुमत अंगदादि बलआलु॥
आयपहूंचे जब योधा सब तब यह कह्यो वीर कपिराज।
सुनौ ऋक्षपति स्वच्छ सुमतिअति हनुमत नील औरयुवराज॥
तुम सबयोधा मिलि एकैसँग आतुर याम्य दिशाकहँ जाव।
सिय सुधि पूछौ सब काहूसन नेक न हृदय माहिं पछिताव॥
मन बच कर्मन सों कीह्यो सोइ जामहँ राम काम बनिजाय।
निमक हमास्यो ते उधरौ सब तुम्हरो जगत जाय यशछाय॥
मारग सेवत हैं सूरज जस सेवत हृदय सजग ह्वै आगि।
तैसे सेवक को वाजिब है सेवै स्वामि कपट सब त्यागि॥
त्यागन करिकै जगमाया को सेवै परम धाम की राह।
जामहँ दुनियां को संसृत दुख छूटै रोग शोग की दाह॥
देह धरे को है याही फल भाइउ सुनौ सकल मनलाय।
ज्यहि विधि आवै बनि ताहीविधि रामै भजै काम बिसराय॥

स० है यह काल कराल महा भ्रमजाल विषै वश कै वहँकावै।
लालच क्रोध कुकर्मनसों जड़माया मनुष्यन बुद्धि भ्रमावै॥
बंदि सहाय न राम विना कोइ जो भवसागर पार लगावै।
याते तजै सब राम भजै मन जाविधि ते भजिबो बनिआवै॥
सोई गुणज्ञ कृतज्ञ औतज्ञ स्वई सब यज्ञन को कर्ताहै।

सोई सपूत बली मजबूत स्वई पुरहूत मही भर्ताहै ॥
सोई यती बिरती औब्रती सुगती सुमती कुमती हर्ताहै।
जो तजि वाम औकाम तमाम सुराम को नाम हिये धर्ताहै ॥
सोई दयाल स्वई कुलपाल निहाल स्वई जग में चर्ताहै।
सोई सुचाल सुखी सबकाल औ सोई दुखी दुख को दर्ताहै ॥
सोई गुनी अरु सोई मुनी अरु सोई दुनी में नहीं मर्ताहै।
बंदि अनंदित जो सब यामहिं रामको नाप हिये धर्ता है ॥

सुनि अस आयसु कपिनायकको उर मुदछाय चरण शिरनाय।
गमने दक्षिण दिशि योधा सब सुमिरत राम राम रघुराय ॥
तब त्यहि पाछे भट मारुतसुत नायो आनि चरणमहँ माथ।
काज पूर्णता लखि तिनके कर निकट बुलाय लीन रघुनाथ ॥
बहु सन्मान्यो जन जान्यो निज परस्यो माथ सरोरुह हाथ।
मुँदरी सुँदरी दै चीन्हा हित कह्यो बुझाय सकल सियगाथ ॥
पुनि यह भाष्यो रघुनन्दन ने हे बलवान वीर हनुमान।
बुझै जानकी कहँ नीकी विधि आयो लौटि वेगि इत ज्वान ॥
जन्मसुफल लखि तब हनुमतनिज प्रभुपद बारबार शिरनाय।
मंजुल मूरति धरि हिरदय महँ चले महान मोद सरसाय ॥
यद्यपि जानत प्रभु बातैं सब राखत तदपि नीति को काम।
याते केवल सुधि लेबे हित पठयो हनुमदादि बलधाम ॥
इतै हकीकति अस बीतति भै अब बँदरन को सुनो हवाल ॥
चले जानकी को खोजत सब परवत गुफा विपिन सरिताल।
राम काज महँ मन लागो अति निज तनछोह दीन बिसराय।
ढूंढ़न लागे जगदम्बा को सुनिये अग्र चरित खगराय ॥
कतहूं कौनौ निशिचारी जो जाय भेंटाय बँदरवन भाय।
करैं दुर्दशा त्यहि खल की जस तसमैं उमा कहत सो गाय ॥
मारि थप्पड़न मुखलालो करि डारैं नोचि नाक औ कान।
देय दोहाई रघुनन्दन कै तब त्यहि देयँ जान लै प्रान ॥

बहुबिधि हेरैं गिरि काननभ्रमि कोउ मुनि मिलै ताहि सब गांसि।
जनक दुलारी कै पूंछैं सुधि तुम इत लख्यो सिया सुख रासि॥
यहि बिधि खोजत थकि हारेसब भे अतिदुखी तृषित अकुलान।
मिलै न पानी उत हेरे कहुँ घन बन माधि भुलान सब ज्वान॥
देखि तृषारत सब बँदरन कहँ तब हनुमान कीन अनुमान।
बारि पान बिन सब चाहत अब प्रान पयान करन बलवान॥
मेरु कँगूरा पर तुरतै चढ़ि कौतुक लख्यो पवन के लाल।
अहै समीपै भुवि कंदर इक ता महँ होत अपूरब ख्याल॥
चक बक हंसादिक पक्षी गण रहे उड़ाय बृंद बहु भाय।
बहुतक पक्षी घुसैं बिवर महँ बहुतक रहे निकसि बहिराय॥
उतरि भ्रड़ाका गिरि ऊपरते आयो भूमि मध्य हनुमान।
बिवर दिखायो सब बीरन को जल संयोग परत इत जान॥
करि हनुमंतहि तब आगे सब पैठे बिवर मध्य कपि जाय।
अनुपम शोभा तहँ देखत भे सुनौ सो चित लगाय खगराय॥
सुंदर उपबन घन फूले तहँ द्रुम फल भार रहे गरुआय।
कमल प्रफुल्लित तालाबनमहँ जिनकी प्रभा बरणि नाजाय॥
मंदिर अनुपम इक राजत तहँ बैठी एक तपस्विनि नारि।
ज्योति जगमगै चन्द्रानन पर दीपति अंग अंग अधिकारि॥
रूप उजागर त्यहि रमणी कर देखत सब प्लवंग शिरनाय।
करि अभिबादन कर संपुट करि सन्मुख निकट ठाढ़भे जाय॥
बचन मनोहर कहि बाला सों पूंछत भई सबन को हालु।
लगे सुनावन तब आदिहिते कहिसब कथा सकल कपिभालु॥
कोशलेश के सुत आये बन धन्वी धीर बीर गुण धाम।
रूप उजागर बलसागर शुचि सुंदर लषण राम असनाम॥
बसे बहुत दिन पंचबटी महँ उत्तम यती आचरण ठानि।
नारिअनूपम यक तिनके सँग शोभाशील रूप की खानि॥
जनकदुलारी सिय गावत ज्यहि श्रुतिकहि जक्त जननि अभिराम।

सो हरिलैगा कोउ काननते त्यहि बिन महा दुखित ह्वै राम॥
खोजत खोजत घन कानन महँ आये शैल प्रबर्षण पास।
कियो मिताई कपिनायकते कीन्ह्यो बालि प्राण कर नास॥
नृपति बनायो किष्किन्धा कर उन सुग्रीव सखहि सब भांति।
शैल प्रबर्षण पर निवसित हैं बिन सिय दुखी रहत दिनराति॥
तिनसिय प्यारीके खोजन हित शुभगरसकल कपिनसमुझाय।
चारिउ दिशि को पठवायो है लाओ सिया खोज त्वरजाय॥
हम सब खोजत इत कानन गिरि कंदर गये महा हिय हारि।
पता न पायो कछु काहू विधि प्यासन मरत मातु बिनवारि॥
कहूं जलाश्रय लखिपायो नहिं तब इत उड़त पक्षिगणदेखि।
आश्रम तुम्हरे महँ आये चलि पाये दरश भाग्य बड़िलेखि॥
भये कृतारथ बन चारी हम दुर्लभ चरण शरण तुव पाय।
भये सहायक रघुनायक अब जैहै सब विपत्ति बिनशाय॥
सुनि अस बानी बनचारिन की सोतिय हृदय दयाउपजाय।
हुकुम देतिभै उन बनरनको मेटौ क्षुधा मधुर फल खाय॥
होउ पियासे तौ पीवो जल संशय शोच पोच विसराय।
पाय सुआयसु असनारी को भेसब मुदित सलिल फलखाय॥
रहित परिश्रम ह्वै बानर सब आये फेरि तासु तियपास।
करि बर आदर बैठास्यो त्यहिं लागी कहन अपन इतिहास॥
कहि सब गाथा निज करणीकी दिहृयासि सुनाय बानरनभाय।
पुनि अभिलाषत असभाषत भै रघुपति चरण प्रेम सरसाय॥
मैं अब जैहौं रघुनायक ढिग पावन हेत दरश अभिराम।
तुम सब आपन चषमूंदौ तौ तजि अनयास जाहु यह ठाम॥
हिय कादरता कछु लावोना पैहौ अवशि खोजि सिय माय।
जाके कारज महँ उद्यत तुम सब विधि स्वइसहाय रघुराय॥
सुनि इमि भाषण त्यहि नारी को मूंदे सबन नैन कर लाय।
क्षणहुंन लागो चख खोलैं तौ देखैं खड़े सिंधु तट आय॥

अद्भुत महिमा लखि तपसिनि की भे आनंद सकल बलवान।
इतै हकीकति अस बीतति भै उतको सुनौ हाल हरियान॥
चलि वहि अस्थलते भामिनि वह आतुर गई रामके पास।
माथ नाय कै पदकमलन महँ अस्तुति करत भई सहुलास॥
शुद्ध आचरण लखि ताकर प्रभु दीन्ह्यो सुखद भक्ति वरदान।
पुनि प्रभु अज्ञा लै कामिनि सो बदरी बनै गई हरियान॥
इहां बँदरवा सब वारिधि तट बैठे शोच करैं मन माहिं।
अवधि बीतिगै इकमहिना की अबलौं भयो काम कछु नाहिं॥
निजनिज हिरदयमहँ शोचन करि सब मिलि कहैं परस्परबात।
खोज लगाये बिन सीता को हम सब कहा करब हे भ्रात॥
अँखियन आंशू भरि अंगद तब लागे कहन अपन दुखगाय।
मौत हमारी दुहुंभाँतिन भै यामहँ कछु सँदेह नहिं भाय॥
इहांनपाई सुधि सीता की मरि हैं उतै गये कपि राय।
पिता मरे पर म्वहिं मारत तो रक्षक भे दयालु रघुराय॥
शोचि शोचि कै इमि हियरे महँ अंगद कहैं बारहीं बार।
मरण हमारे महँ संशय अब नाहिंन क्यहु प्रकार से यार॥
बचन कारुणिक अस अंगदके सुनि सुनि सकल वीरबलवान।
रोवत धोवत चष आंशुनसों कहतन बनैं बैन हरियान॥
शोक समुंदर महँ बूड़े सब क्षण इक रहे मौन मन मारि।
पुनि सबबानर असभाषत भे सुनु सो प्रिया चरित चितधारि॥
बिन सुधि लीन्हें हम सीता की जाब न लौटि वीर युवराज।
वृथा जिन्दगी उन जीवन की आये जो न स्वामि के काज॥
यहिविधि कहिकै वहि वारिधि तट जाय विछाय बैठकुशकांस।
करन बतकही पुनि लागे सब आगे कहत तौन नभवास॥
दुखी देखिकै भट अंगद को ऋक्षप जम्बुवान बुधिमान।
वर उपदेशहि कहि भाषत भे संयुत नीति रीति अरु ज्ञान॥
तात राम को नर जानौ जनि मानौ अगुण ब्रह्म अवतार।

सगुणस्वरूपहि गहि भक्तनहित टारत खलनमारि भुविभार ॥
अति बड़भागी हम सेवक सब सन्तत सगुण ब्रह्ममहँ प्रेम ।
धारत टारत जन आरत जो सारत सर्व भांति सुख क्षेम ॥
धरा धेनु औ द्विज देउतन हित धार्‍यो मनुज रूप भगधाम ।
सगुण उपासकहैं यावत जग सब सुख त्यागिरहत निष्काम ॥
केवल भक्ती के भूखे वै मानत तुच्छ मुक्ति अरु ज्ञान ।
सदा समीपी नारायन के सब दिन धरे रहत उर ध्यान ॥
अस विचारि कै मन अपने महँ संशय शोक देहु बिसराय ।
ध्यान लगाओ हरि चरणन महँ जैहै सब विपत्ति मिटि भाय ॥
होत बतकही यहि भांतिन तहँ आपुस माहिं उरग आराति ।
बैठे अंदर गिरिकंदर के सो यह सुनत भये संपाति ॥
निकसि कंदरा ते बाहर तब देख्यो झुण्ड बँदरवन क्यार ।
महा अनंदित ह्वै भाष्यो अस मोहिं अहार दीन कर्तार ॥
आजु खायकै इन सबहिन को लेब मिटाय भूख औ प्यास ।
बदले सब दिन के भोजन ये मिले इकत्र आजु अनयास ॥
बहु दिन बीते बिन भोजन के गयो सुखाय हमारो गात ।
सबिधि गोसइयां भो दाहिन अब नाहिंन तनिक मृषा यहबात ॥
वचन गिद्ध के सुनि काननसों सब कपिउठे कांपि भय मानि ।
लगे सुठानन अनुमानन अस सांचौ मीचु आय नगिचानि ॥
बची न कोऊ यहि दानव ते डारी अवशि सबन कहँ खाय ।
भयो न काजौ कछु स्वामी को अनहक परे काल मुख आय ॥
अस कहि ठाढ़े ह्वै देख्यो त्यहि डाढ़े महा शोक की आगि ।
अति भय बाढ़े बे खाढ़े बहु गात सुखात कँप कँपी लागि ॥
रूप भयंकर लखि नैनन सों बैनन कहन परस्पर लाग ।
काल दुसरिहा को आयो यह धीरज जाहि निहारत भाग ॥
कोउकह यह तौ कोउदानवहै यहि गिरि गुफा माहिंकर बास ।
कोउकह कौनो निशिचारी है कोउकह आय मौत यह खास ॥

शोच बुढ़ौनू मन अतिशय भा का अब होनहार कर्तार।
चित विचारिकै तब बोल्यो वह ज्यहि युवराज केर अधिकार॥
धन्य जटायू सम नाहीं कउ यहि संसार माहिं बड़ भागि।
हरि पुर गमन्यो जो आनँद सह सुंदर रामकाज तन त्यागि॥
याते निश्चय यहि दुनियां महँ है यहि भांति जीव कल्यान।
चित्त लगावै हरि चरणन महँ प्रभु हित हेत देय तजि प्रान॥
हर्ष शोकयुत भट अंगदके सुनि अस वचन गीध संपाति।
चल्यो बँदरवन दिशिताकतदृग मानहुँ चली मौत उत जाति॥
भगे बँदरवा भय पागे तब आवत देखि गीध भय कारि।
छूट भरोसा जिंदगानी का निश्चय मरण लीन उर धारि॥
देखि बँदरवन को भागत तब कह्यो पुकारि गीधइमि बानि।
कोउ न भागौ भय पागौ उर तुम कहँ रामचरण की आनि॥
शपथ देवाये प्रभु चरणन की भे सब ठाढ़ रहित मुख कांति।
तबौं धकधका हिय छूट्यो ना अस भय दशा होय दुखदाति॥
गेसम्पाती चलि अन्तिकपुनि दीन्ह्यो अभय तिन्हैं सबभांति।
हाल जटायू को पूछतभे भरि जल दृगन उरग आराति॥
कथा बँदरवा सब भाषत भे सीता हरण आदि लै गाय।
समरकरन अरु मरनगीधको सब बिधिकह्योताहिसमझाय॥
सुनत सहोदर की करणी शुचि भो अति दुखित बीर संपाति।
रघुपति महिमा को बर्णन करि वरण्यो बंधुसुयश बहु भांति॥
पुनिउन बँदरनते भाष्यो अस म्वहिंलै चलौ वारिनिधि तीर।
देउँ तिलांजुलि प्रिय बंधव को इतना कहा मानि ल्यो बीर॥
वृद्ध गिद्ध की सुनि वाणी इमि वानर सकल हृदय हरषाय।
संगताहि लैगे वारिधि तट पुनि अस चरित भयो खगराय॥
क्रिया पूर्णकरि लघु भाई की सागर तीर वीर संपाति।
कथा आपनी कहि गावत भो सुनिये सकल धीर कपिज्ञाति॥
हम दुउ भाई तरुणाई महँ अतिशै भरे रहन अभिमान।

इक दिनमनमहँ अनुमान्योयह चलोउड़ाय छुअनचलिभान ॥
यहि विधि मन गुनि पुनि बंधव द्वउ चले उड़ाय पंख फैलाय।
कहैं हकीकति को आगे बहु डारे दुहुन भानु नगिचाय ॥
तेज सहिसक्यो नहिं सविता को पलट्यो तब जटायममभाय।
मैं अभिमानी कछु मानी नहिं गयों बनाय सूर्य नियराय ॥
अमित तेजते वहि सुर्यन के हमरे भये पंख जरि छार।
लुढ़कत पुढ़कत तबअंबर ते भुवि गिरि किह्यों घोरचिग्घार ॥
रहैं चंद्रमा मुनि एकै तहँ तिन म्वाहिं देखि दया उपजाय।
ज्ञान बतावा समुझावा बहु औ यह कथा बतायो गाय ॥
त्रेता युग के अन्त काल महँ निर्गुण ब्रह्म मनुज अवतार।
धरिहैं करिहैं बर कौतुक जग हरि है तासुनारि निशि चारि ॥
तेहि के खोजन हित चारिउ दिशि जैहैं बहुत दूत समुदाय।
दर्शन पाये तिन दूतन के जैहै तुव पवित्र ह्वै काय ॥
पंखौ ऐहैं जमि वाही क्षण ह्वै है त्वाहिं अनंद सब भांति।
सिय सुधि तिनको बतलायो तुम मानहुं सत्य वचन संपाति ॥
यहकहिमुनि तौगे आश्रम निज म्वहिं कछुहृदयअंकुर्योज्ञान।
सुमिरण लाग्यों रघुनायक कहँ शायक धनुष धरन भगवान ॥
रह्यों निहारत मग रातिउ दिन अबभे दरश तुम्हारे आज।
बाणिउँ मुनिवरकी सांची भै सुनि मम बचन करहु प्रभुकाज ॥
गिरि त्रिकूट पर बसलंकापुर वारिधि ओर पास फिरि आव।
तहँ मद अंधर दशकंधर खल निश्चर बसतलसत सहचाव ॥
तहँ अशोकवन इक शोभित शुभ शोभा देखि देव ललचात।
बैठि जानकी तहँ शोचत चित मोचत दृगन आँशु कृशगात ॥
मैंयहि अस्थलते देखत त्यहि तुम कोउ लखौ नैननहिं ताहि।
गीध विलोकत बहु दूरी लग अस सामर्थ्य और महँनाहिं ॥
वचन सहायक ह्वन केवल हम भाइउ करौ सत्य विश्वास।
बुढ़नहोतिउँ तौकरतिउँ मैं अकिले पूरि रावरी आस ॥

यह सौ योजन को अंबुधि वड़ जो कोउनांघि जायतुममाहिं।
करै सोकारज रघुनायक को यहि महँ तनिक अँदेशानाहिं॥
अपने अपने बलभाषौ सब ढील न करौ राम के काम।
सुकृत याहि सम परमोत्तम अरु नाहिन जगतमध्यमतिधाम॥
धन्य सो सज्जन जन दुनियाँमहँ तनमन जासु राममहँ लाग।
काज प्रपूरै जो स्वामी कर जानौ ताहि भाय बड़ भाग॥
दशा हमारी अवलोकन करि धारौ धीर हृदय बलवान।
राम कृपाते कसि देही भै होहु न हारि मानि हैरान॥
नाम सुमिरि कै ज्यहि स्वामीकर पापिउ भव अपार ह्वै पार।
छूटिजात हैं भ्रम जालनते है यह वेद शास्त्र कर सार॥
तासु दूत ह्वै तुम बिक्रमघर तजि कदराय मानि सिखभाय।
करि उपाय रघुराय हृदय धरि पूरण करहु काज हरषाय॥
यहि बिधि कहिकै वहि बँदरनते गोचलि गीध आपने ठाम।
शोच बँदरवन के बाढ़ा तब बिस्मय करन लाग बे काम॥
शोचि साचि कै सब जियरे महँ लागे करन परस्पर बात।
निज २ बिक्रम बतलावतभे सागर पार जान महँ तात॥
गवय वतायो बल पहिले निज भाइउ सुनौ हमारी बात।
कोस चालिसक के फांदन की हम कहँ अपनि शक्ति दिखरात॥
पन्द्रह योजन के फांदनको बिक्रम कह्यो गवाक्षौ गाय।
सोरह योजन कहि द्विबिदौगे दीन मयंद बीस बतलाय॥
चौबिस योजन कह्यो शरभ ने पनसौ कहे पचीसक भाषि।
कुमुद पहूंचे तब चालिस लग कहे पचास तारअभिलाषि॥
गये केशरी जब सत्तरिमहँ आगे रहे मौन सब धारि।
संशय राखी सब काहू ने काहुन कह्यो जान वहि पारि॥
तब अस भाषत भो भल्लुकपति मैं अब गयों बूढ़ ह्वै भाय।
नहिं बल ज्वानी को देहीमा फँदातिउँ समुद सत्तरह दाय॥
धर्‍यो नरायण जब बामन तन तब मैं रह्यों ज्वान बलवान।

कहौंहकीकति त्यहिसमयनकी सुनियो सकल धारि इतकान ॥
बलिको बांधत खन बाढ़े प्रभु सो तनु वरणि जाय नहिं भाय ।
देर न लागी द्वै घटिका महँ दीन्ह्यों सात प्रदक्षिण धाय ॥
जम्बुवान को सुनि भाषण अस तारा तनय कह्यो हर्षाय ।
पार पहुँचिहौं मैं बारिधि के लौटत माहिं होत शक भाय ॥
धीरज दीन्ह्यों तब भल्लुकपति तुम सब योग्य वीर युवराज ।
तुम्हैं पठावैं क्यहि कारण हम तुम सब कपिन केर शिरताज ॥
यहकहि देखोभट हनुमत दिशि ज्यहि यश देनचहत भगवान ।
कह्यो प्रशंसा करि सुंदर बच का चुप साधि रहे बल वान ॥
हौ सब लायक पवन पुत्र तुम बलमहँ पवन तुल्य बलधाम ।
बुधि निधान बिज्ञान ज्ञान निधि साधक राम काम अभिराम ॥
कौनसो कारज अस दुनियां महँ जो नहिं होय तात तुमपाहिं ।
रामकाम हित इत आयो तुम यामहँ कछु अँदेशा नाहिं ॥
भल्लुक पतिको ललकारत सुनि भे पर्वताकार हनुमान ।
तेज बिराज्यो तन सुबरण सम मानहु शैलराज प्रकटान ॥
सिंह गर्जना करि आनँद भरि परिहरि शंक बंक व्यवसाय ।
तमकि सक्रुद्धित जामवंत ते सहित उछाह लाग बतलाय ॥

स० लीलहि लंघि समुद्र सखा भुजदण्ड प्रचण्डन सों बनझोरौं ।
लात कि घात दलौं खल गातन लंकनिशंक ह्वै अंबुधिबोरौं ॥
शूरन मारि उखारि त्रिकूट उजारि अशोक अछै शिर फोरौं ।
बंदि अनंदित धावन दै शठ रावन के दश मस्तक तोरौं ॥

कहौ तौ ऐसे करि आवों मैं लावौं जनक सुता इत भाय ।
नातरु वाजिब जो करिबे कहँ सो तुम हमैं देव बतलाय ॥
तब समुझायो अस भल्लुकपति सुनिये धीर वीर हनुमान ।
काम इतनवै तुम लावो करि सीता खबरि देउ इत आन ॥
पुनि त्यहि पाछे नैनांबुज प्रभु कौतुक हेत सैन लै साथ ।
चलिहैं शंका बिन लंकाकहँ मरि हैं खलन सहित दशमाथ ॥

लै हैं सीता तब आनँद सह छै हैं सुयश सकल संसार ।
नारद आदिक सो गैहैं जग जेहैं पुरुष सुनत भवपार ॥
जो यश गावत मनलावत जन सहजे जात परम पदपाय ।
प्रभुपद पंकज को मधुकर स्वइ तुलसी दास बखान्यो गाय ॥
स्वइ सुखदायक रघुनायक यश घायक सकल कलिकलुषजाल ।
सिधिसरसायक बरसायक निधि लायक जनन हेत मुदमाल ॥
कायक बाचक मनसंभवदुख हायक रहे वेद बतलाय ।
छन्दप्रबंधित आनन्दित स्वइ मतिसम कह्यो बंदि द्विजगाय ॥
अतिशय मूरुख नहिं विद्याबल ना कछुबुधि विवेक सिधिज्ञान ।
स्वहिं असपामरकी पूरण पति राखनहार राम भगवान ॥
यह भवभेषज रघुनायक यश सुनै जो मनलगाय नर नारि ।
सकल मनोरथ तिन पुरुषनके करिहैं सदा सिद्धि त्रिपुरारि ॥
रमिहैं सज्जन मन यामहँ बहु क्षमिहैं दोषलाय शिशुभाय ।
श्रीरघुराया की दायाते पूरण भयो द्वितिय अध्याय ॥

इतिश्रीलक्ष्मणपुरस्थभार्गववंशावतंसश्रीमान्मुंशीनवलकिशोरात्मज
श्रीमुंशीप्रयागनारायणस्याज्ञाभिगामीपण्डितबंदीदीनदीक्षितनि
र्मितविजयराघवखण्डेकिष्किन्धाकाण्डेद्वितीयोल्लासः २ ॥

समाप्तोयम् किष्किन्धाकाण्डः ॥

तक मय तिथियोंके सर्व रामायण ही को ज्ञात कराती है सो भी इसी में युक्त है तिसपर भी कागज़ सचिक्कण श्वेत जैसी बंबई की पसन्द की जाती है इस रामायण गुटका में वह सब मौजूद हैं लेकिन बहुत थोड़ी छापी गई है अफ्सोस है कि जो शीघ्रता न करेंगे उनको यहप्राप्त होना बड़ाही दुष्कर है अथवा गुटका रामायण अबकी छपी मिलहीगी क्यों कारण यह कि ऐसी मनोहर अल्प मोलपर बिकैगी तो जो एक खरीदैगा वो चार रखछोड़ने को ज़रूरही लैलेगा—

# इश्तहार ॥

सम्पूर्ण महाशयोंको प्रकट होवे कि इसपुस्तक को मालिक मतबा अवध अख़बार ने बहुतसा रुपया व्यय करके अपनी ओरसे उल्था कराके निज यन्त्रालय में मुद्रित कराया है इस कारणसे कोई महाशय इसके छापने का इरादा न करें—

मैनेजर अवध अख़बार प्रेस

लखनऊ

# श्री विजयराघवखण्ड आल्हा ॥

## सुन्दरकाण्ड

जिसमें

ीहनुमान्‌जीका लङ्कागमन जानकीमिलाप व वार्त्तालाप
तथा वाटिकाभञ्जन व लङ्कादहनादि कथा आल्हाकी
रीतिपर छन्दप्रबन्ध में वर्णित है ॥

जिसको

मान् भार्गवकुलाम्बुज प्रकाशक मार्त्तण्ड मुंशीनवलकिशोर
ीके पुत्र श्रीमुंशीप्रयागनारायण की आज्ञानुसार उन्नाम
प्रदेशान्तर्गत मसवासीग्राम निवासी पण्डितबन्दीदीन
दीक्षितने श्रीरामरसरसिक व आल्हाके उत्सुक
पुरुषोंके अवलोकनार्थ निर्मित किया ॥

पहिलीबार

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा
सितम्बर सन् १८९६ ई० ॥

६ जुज़ ६ वर्क

# श्रीगीतगोविन्दकाव्यम् ॥

## बनमाली भट्ट कृत संजीविनी टीकोपेतम् ॥

यह गीतगोविन्द काव्य पण्डित जयदेव कृत वही है जो कि अतीव उत्तम होने के कारणइस संसार में प्रसिद्ध है प्रायः पंडित लोग इसको अच्छी भांति जानते हैं संस्कृत पढ़नेवाले विद्यार्थियों को तो यह काव्य बहुतही लाभकारी है क्योंकि इसका तिलक बनमाली भट्टजीकृत जिसका कि संजीविनी नाम है अर्थात्इस तिलक का जैसा नामहै वैसाही गुण है जो विद्यार्थी थोड़ी भी व्याकरण जानते हैं इस तिलकके द्वारा पूर्ण अर्थ मूलका लगा सक्ते हैं पण्डित लोगों की रुचि संस्कृत पुस्तकों में अक्सर बम्बई की छपी हुई में अधिक होती है क्योंकि उम्दा काग़ज़ और अधिक शुद्ध छपाई यह सब उनपुस्तकों में मिलती हैं यद्यपि वहां से यहांतक माल आने में खर्च महसूल आदि होने के कारण वहां की पुस्तकों का मूल्य विशेष है तथापि दूसरे यंत्रालयमें वैसा न छपने के कारण लाचारहोके उन लोगों को लेना पड़ता है इस यंत्रालय में यह पुस्तक जो अब छपीहुई तैयार है बम्बई से कोई काम न्यून नहीं हुआ अर्थात् बहुत उम्दा काग़ज़ सफ़ेद पर बहुत उम्दा छपाई की गई है शुद्ध होने में तो हम कहसक्ते हैं कि बम्बई की छपीहुई पुस्तक में चाहे पांच छः गलती भी होवैं परन्तु यह पुस्तक ऐसे परिश्रम से शोधीगई है कि पण्डित लोगोंको परिश्रम करके ढूंढ़ने पर भी गलती नहीं मिलैगी और मूल्य इस पुस्तक का बम्बई से बहुत न्यून रक्खा गया है हम पूरे तौरसे उम्मैद करते हैं कि हमारे देशके रहनेवाले पण्डितलोग इस पुस्तकको देखके बम्बई की पुस्तक लेना छोड़ देवैंगे और इसे प्रसन्नता पूर्वक अंगीकार करैंगे जो लोग संस्कृत कुछ भी नहीं जानते

श्रीगणेशायनमः

# अथ विज्ञापन

रामबाम दिशि बाम जानकी शोभा धाम रूपगुणवान।
लषण दाहिनी दिशिराजत शुचि जनकल्यान करनयह ध्यान॥
ध्याय गजानन गुरुगोविंद पद शेश महेश सिद्धि आगार।
बन्दि अनंदित वह गावत कहि ज्यहिविधि भयोग्रंथ अवतार॥
सुयश उजागर गुण नागर वर विदित जहान मध्य मतिधाम।
सुखद भार्गवकुल भाकर इव नवलकिशोर नाम अभिराम॥
शहर लखनऊ के बासी शुचि शील प्रताप तेजकी खानि।
जक्त बिदित हैं यंत्रालय ज्यहि लक्ष्मी अप्रमान अधिकानि॥
इक दिन समया लगि आई असि जमक्यो महासघन दरबार।
सचिव सलाही सतराही सब बैठे निकट बुद्धि आगार॥
वर्षा ऋतुको रह औसर वह नभ घन घटा छटा रहि छाय।
वही मुहल्ला महँ समया वहि आल्हारह्यो एक जन गाय॥
कान शब्द सो पस्यो सबन के तब अस लगे फेरि बतलान।
अब रुचि पुरुषन की आल्हा पर है बहु परत बातयह जान॥
जो यहु आल्हा जन गावत हैं ताको ना कछु ठीक ठिकान।
लिख्यो न कतहूँ क्यहु ग्रंथनमहँ नाकछु मिलत ठीक परमान॥
छाँड़ि नरायण यश नरयश को गावब सुनब नीक कछु नाहिं।
इतको स्वारथ परमारथ उत कछु न दिखाय परत यहिमाहिं॥
यतन चाहिये अस याकी अब होवै यही भांति को गान।
पै यश होवै नारायण को जासे दुहूं ओर कल्यान॥
अस विचारि कै उर मुंशी जी कीन्ह्यो क्षणक हृदय महँ ध्यान।
पुनि तदनंतर वहि औसर पर हँसि अस उचित बातबतलान॥
एक वार्ता हम शोची चित जो कहुँ अस उपाय बनिजाय।

तौ यहि आल्हाको गावब फिरि जगसे सहज माहिं उठिजाय ॥
इतको स्वारथ परमारथ उत गावत सुनत माहिं अभिराम।
लोक सिधरिहैं द्वउ नीकी विधि ह्वैहै एक पंथ दुइ काम ॥
कथा मनोहर रामायणकी तुलसी दास कीनि निर्मान।
जा महँ उत्तम यश रघुबर को जग को करन हार कल्यान ॥
जौने ढँग पर यहु आल्हा है सोई छंद बनाई जाय।
फिरि मुद्रित ह्वै यंत्रालय महँ जाहिर कीन जाय जग भाय ॥
सुनै सुनावै अरु गावै सब होवै जगत केर उपकार।
यहि उपाय ते बढ़ि दूसर अरु कोई देखि परत नहिंयार ॥
मुंशीजी को यह सम्मत शुभ सबको हृदय माहिं प्रियलाग।
तब वहि औसर पर मुंशी जी मोसन कह्यो सहित अनुराग ॥
यहि रामायण को विरचौ तुम आल्हा रीति प्रीति सरसाय।
यहिके बदले महँ तुम कहँ हम मुद्रा देव पांच शत भाय ॥
यह अनुशासन श्रीमुंशीको मैं स्वइ लीन शीश पर धार।
लग्यो बनावन रामायण को अपने ज्ञान वुद्धि अनुसार ॥
भयो न पूरण यह आल्हासब बीचहि हाल कीन असराम।
स्वजन सुखारी उपकारी पर नवलकिशोर गये सुरधाम ॥
पुनि तदनंतर श्रीमुंशी के पूत सपूत वुद्धि आगार।
सत मति पूरे द्युति रूरे अति सज्जन गुणिन मानदातार ॥
क्षमा छबीले युत शीले बहु दायक संत द्विजहि सत्कार।
मान सरोवर श्री भार्गव कुल तामहँ अमल कमल अवतार ॥
प्राग नरायन सुखदायन अति तिन वह पूर कीन सबकाम।
जस अभिलाषा रह मुंशीकी तैसे भयो सकल इतमाम ॥
सप्तकाण्ड शुचि रामायण स्वइ पूरण यथायोग्य बनवाय।
निज यंत्रालय महँ मुद्रित करि दीन्ह्यों जगत रामयश छाय ॥
मति समभाष्यों यह रघुपति यश जस कछुहती चित्तकीसाध।
सुनैं सुनावैं जन गावैं जे ते मम क्षमा करैं अपराध ॥

सवैया। जानत काव्य न एकहु अंग न ढंगहै छंद प्रबंध बनाइबो।
है बल बुद्धि विवेक नहीं विधि जानत नाहिं न लोक रिझाइबो॥
संग लह्यों न कहूं गुणियानको बंदिनचातुरी को दरशाइबो।
राह बताय दई गुरु एक यथा मति गोबिंद को गुण गाइबो॥

( कविवंशतथानामग्रामवर्णन )

छंदककुभा

अवध देश महँ शुचि प्रदेश जाहिर उन्नामा। त्याहि अन्तर्गत बसत लसत प्रसवासी ग्रामा।
चारि वर्ण मति रास बास जहँ करत घनेरा। धर्म धुरी शुभ कुरी शिव पुरी सम द्युति हेरा॥

सवैया। दक्षिण में सुर आपग राजत धारसो नाशत भारधराका।
पूरब कोण तड़ाग तटस्थ अनंदित मंदिर श्री दुरगाका॥
पश्चिम नंद अधीश औ उत्तर गोकुलनाथ धरे वरनाका।
मंदिर मंजु रमापति को सुलसै बिलसै मधि ग्राम के बांका॥

दोहा। तौन ग्राम अभिराम में बनो मोरहू धाम।
पुरिखन तहँ वर बास लिय जानि सुथल अभिराम॥

छंदककुभा

ललऊ नाम ललाम अहैं प्रपितामहँ केरो। रामदीन मति बीन पितामह श्री शिवचेरो॥
भागूलाल बिशाल अहै मम पितुकर नामा। चंदीदीन प्रवीन मोर पितृव्य ललामा॥
अग्रगण्य जे भये मनीषिन महँ त्याहि पुरमें। श्रीमद्रामप्रसाद विवुध एकहि बुध कुरमें॥
तिनसे विद्यालह्यो अनूपमगुरू बनायो। श्रीमद्राम प्रसाद सुयश उज्ज्वल तहँ छायो॥
वंदीदीन सुनाम धरयो गुरू मोर विचारी। विप्रबंश अवतंस दीक्षितास्पद अधिकारी॥
शिवनारायण गुरू मोर त्याहि थल विख्याता। संभव वंश त्रिपाठि विप्रकुल प्रवर कहाता॥
चारि वेद षटशास्त्र कथनमहँ जिन अतिशक्ती। जन अनंद ब्रजचंद चरणकी हियबहुभक्ती॥
अष्टादशहु पुराण जासु जिह्वा पर छाजैं। काव्यमाहिं जनु कालिदास अस दूसरराजैं॥
गान विधान निधान चित्र एकही बनावैं। कथाकहनके समय द्वितिय व्यासहिसमभावैं॥
तिन दिय विद्यादान चरणसेवक शिशुजानी। परमोदार अपार बुद्धि श्री गुरु विज्ञानी॥
यह रामायण रची तासु पद पंकज दाया। भाषा छंद प्रबंध माहिं रघुपति यश गाया॥
भूल चूकलखि क्षमहिं दोष मतिमान सुजाना। हौं मैं अति निर्बुद्धि नहीं कविता कर ज्ञाना॥

दोहरा। संवत् शशि[१] शर[५] नंद[९] चंद[१] में भयो ग्रंथ अवतार।
पुनि गुण शायक नन्द चन्द में भई पूर्णता यार॥

मत्तसवैया

याको पिंगल महँ भाषत कहि मात्रिक मत्त सवैया नाम।
मात्रा इकतिस को इकपद है जानत छंद विज्ञ मति धाम॥

रीति यथावत लहि आल्हाकी वहि धारणा माहिं कियगान।
जासे गावहिं सब सज्जन जन करिकै साज बाज को ठान ॥
यह रामायण संपूरण करि जस मति दई शारदा माय।
प्रागनरायण की अनुमति लहि बंदीदीन बखान्यो गाय ॥
श्री रघुनंदन की कीरति यह जो कोउ पढ़ै सुनै मन लाय।
कलिमल नाशै परकाशै बुधि ऋधिसिधि बसैभौनत्याहिआय॥
पर्वपर्व महँ शुचि मानुष जो करि है श्रवण याहि धरि ध्यान।
पाप नशैहै सुर पुर पैहै ह्वैहै सदा तासु कल्यान ॥
पितृ श्राद्धमहँ जो सुनिहै यहि करि एकाग्र चित्त मतिमान।
मुक्ति होइहै त्यहि पितृन की बसिहैं जाय अमर अस्थान ॥
तन मन इन्द्रिन को पावन करि दिन महँ करै जौन यहिगान।
दिन कृत पातक त्यहि मानुषके विनशैं अवशि सत्यपरमान ॥
करै निशामहँ जो पातक नर औ यहि श्रवण करै मन लाय।
देर न लागै अघभागै त्यहि प्रापत होय सिद्धि कर आय ॥
विप्र जो बांचै यहि मंशाकरि होवै महा ज्ञान आगार।
सुनै जो भूपतियहि चितहितकरि लहैसो विजययुद्ध अधिकार॥
नारि गर्भिणी जो सुनिहै यहि पैहैतनय सुष्ठु मतिमान।
स्वर्ग मँगइया स्वर्गौ पैहै जैहै हर्षि देव अस्थान ॥
कन्या सुनिकै पति पैहै शुभ बंध्याअवशि पाइहै बाल।
संपति अर्थी संपति पैहै गहै याहि जौन सब काल ॥
बुध पारायण जो बँचिहैं यहि वक्ता होयँ ज्ञान की खानि।
जो कोउ सुनि है यह राघव यश होइ है महा द्रव्य को दानि ॥
कामधेनु कहि यहि भाषत सब याके पढ़े होय अति ज्ञान।
कीरति बाढै त्यहि दुनियाँ महँ होवै सब प्रकार कल्यान ॥

इति

( मसवासी निवासी पण्डित
बंदीदीन कवि )

# अथ श्रीविजयराघवखंडे

## सुन्दरकाण्ड प्रारम्भः ॥

गणपतिफणपति पदबन्दनकरि शुकसनकादिआदिकविध्याय ।
बुद्धिविशारद श्रीशारदभाजि भाषत राम सुयश शुभगाय ॥
मैं पदबंदों हरिबाहिनिके दाहिनि सदा दास हितजान ।
सिधि उतसाहिनि अनुकंपाकर गाहिनि कर कृपान बरसान ॥
दुर्गतिनाशिनि परकाशिनि बुधि बिद्याबर विवेक विज्ञान ।
मोदविलासिनि गिरिवासिनि बिभु भासिनि सर्वकाल कल्यान ॥

स० शुभ्रकला कुशला सब काल कृपाल सदा त्रयकाल कि ज्ञाता ।
ज्योति अनादिन आदिलहै कोउ सेवत सिद्ध सुरेश विधाता ॥
स्वेच्छावतारिणि धारिणि रूप अनूप अजाविरजा गिरिजाता ।
बंदि अनंदित ध्यावतहै त्यहि जोविधि अण्ड अखण्ड किमाता ॥

सविधिमनावों गुणगावों तुव ध्यावों चरण शरण सुखदान ।
पावों उत्तम सिधि बिद्या बुधि दे बरदान बीर हनुमान ॥

स० अंजनिपूत अकूतबली बहुबूत महामजबूत सुअंगी ।
राघवदूत प्रभातन पूत महामति नूत न सेवक संगी ॥
धीर गँभीर मनोजव बीरसमीर सो वेग प्लवंग कलंगी ।

होउसहाय दया उरलाय बनायकै बंदि बिनै बजरंगी॥
लैकरमुन्दर सत्त्वसमुन्दर लंघिसमुन्दर एक फलंकै।
सीय निहारिकै शत्रुसँहारिकै बागउजारिकै जारिकै लंकै॥
बोधदै बामहिं शोधदै रामहिं कैप्रभुकाम लियो यश अंकै।
ध्यावत तासुबली निरशंकै सदा अकलंकै सुबानर बंकै॥

बंदि शुभंकर शिवशंकर पद बोलीं शिवा सविधि हरषाय।
कथा मनोहर किष्किन्धाकी प्रभु हम सुनी गुनी मनलाय॥
आनँद उमग्यो बहुहिरदय महँ भ्रमतम भग्यो जग्यो शुभभास।
लग्यो लालची चितचाखन महँ रघुपति चरित सुधा सुखरास॥
श्रवण अघाने नहिं सुनि २ यश सुंदर सियारमण को स्वामि।
लगी लालसा स्वइ सुनिबे महँ वर्णन करहु तौन वृषगामि॥
सुनि असबानी शिवरानी की मानी महा मोद मनमाहिं।
बहु सन्मानी कहि बानी मृदु तुम सम प्रिया धन्य कोउ नाहिं॥
तुम रुचि आनी धनुपानी के शुभयश सुनन माहिं मनलाय।
परम सयानी अबजानी मैं तुव हिय उदय भये बरभाय॥
प्रश्न सुहानी म्वहिं नीकी विधि पूंछ्यो प्रभु चरित्र सुखसार।
धन्य भवानी मति तेरी कहँ ज्ञानी परम बुद्धि आगार॥
जस अभिलाषा तुम ठानी हिय सानी रामभक्ति रसमाहिं।
तस आनन्दित मैं भषिहौं सब रखिहौं तनिक गोय कछुनाहिं॥
यहि भवसागर भ्रम बागर महँ नाहिंन अन्य पदारथ सार।
जीव उधारन अरुतारन हित जस कछु रामचरित आधार॥

स० पाय मनुष्य शरीर न जैं रघुबीरको धीर चरित्र बखानो।
भक्ति समीर भस्यो न हृदय न कस्यो हरि तीरथ तीरपयानो॥
धीर धस्यो न हस्यो परपीर पस्यो भवभीर विषय रससानो।
मानो सही सकआनो नहीं नर सो खर कूकर शूकर जानो॥

यहि बिधि कहि शिव शिवरानी ते बानी परम सुधारस सार।
करि धनुपानीको सुमिरण उर भाषण लगे चरित्र उदार॥

सुनुप्रिय आनँद सों रघुबरकी उत्तम कथा यथा मतिभाषि।
तोहिं सुनैहों सुखपैहों उर गैहों स्वामि चरित अभिलाषि॥
याज्ञवल्क मुनि भरद्वाज प्रति भाष्यो यथा गरुड़ सनकाग।
अवध पुरन्दर को सुन्दर यश कहिहौं स्वई सहित अनुराग॥
प्रथम सुनाई शिशुक्रीड़ा पुनि गाई सविधि ब्याह उत्साह।
फिरि बतलाई राजतिलककी जसकछु क्रिया कीनि नरनाह॥
गवनभवनते बन भाषा पुनि राखा कछु दुराय हम नाहिं।
पुनि अभिलाषा सहभाषा वह जो प्रभुचरित कीन बनमाहिं॥
हरण जानकी को बरणा पुनि हरणा हतन कीन जिमिराम।
बिरह बेदना कहिगाई पुनि खग संग्राम गमन सुरधाम॥
सिय बियोग महँ रघुनंदन कर बर्णन कीन बिरह सविधान।
मिलब सुनावा कपिनायक कर बालिसुकण्ठ युद्ध घमसान॥

कु० भाष्योराम सुजान जिमि गह्यो शरासन वान।
किष्किन्धाधिप बालिकर किह्यो प्रान अवसान॥
किह्यो प्रान अवसान ज्ञान ताराकहँ दीन्ह्यों।
अमर स्थान पठाय बालि नृप सुगलहि कीन्ह्यों॥
रघुपति विपतिनिहारि लषणजिमि कपिपरमाख्यो।
तुव रुचि करि प्रतिपाल हालसो सब हम भाख्यो॥

गये बँदरवा सिय ढूंढ़न जिमि बरण्यो चरित तौन सबभांति।
तिया तपस्विनि पुनि भेंटे जिमि कीन्ह्यों मुलाकाति संपाति॥
कछुन दुरावा सब गावा हम गिरिजा तव प्रसन्नता हेतु।
अति सुख छावा बहिरयावा दुख पावा फेरिकहन करनेतु॥
सुनौ अगारी अबभारी यश करिचित सावधान धरिध्यान।
सुन्दर सुन्दरको कौतुक जिमि लंक निशंकगये हनुमान॥
जामवंतकी सुनिबानी बर आनी हृदय मोद हनुमान।
करि धनुपानी को सुमिरण उर लगे अशंक बंक बतलान॥
मैं अब गमनत हौं लंकाको भाइउ सुनौ हमारी बात।

जनि अकुलायो भयलायो कोउ रह्यो सचेत सजग दिनरात ॥
जबलगि लौटौं नहिं लंकाते मैं अवलोकि सबिधि सियमाय ।
तबलगि परख्यो रहिसागर तट दुख सहिकंद मूल फलखाय ॥
छावत आवत मुद मोरे मन लावत यही हृदय अनुमान ।
अवशि पाइहौं सुधि सीताकी कीन्हे लंक मध्य प्रस्थान ॥
शुभ्र महूरत है अवसर यहि शकुनौ नीक नीक दरशायँ ।
असकहि सबके पदबंदन करि ह्वैगे फूलि बैलकी नायँ ॥
रामचंद्र पदहिय धारणकरि गमने मन अनंद सरसाय ।
मारि कुदक्का यकलक्कासम पर्वत उपरगये चढ़िधाय ॥
पाउँ टिकावत वहि पर्वत की अद्भुत दशाभई खगराज ।
हालन लाग्यो चौगिर्दा ते मानहुँ परी इन्द्रकी गाज ॥
अगणित पादप गिरि गिरिपरगे भरिफल फूलगये बहुपाटि ।
लागीं बहिबे जल धारैंबहु जड़ लगगईं दरारैं फाटि ॥
अंदर कंदरके बासी सब चिघरन लगे जीव बिकराल ।
बिपति अकारण यह आईकिमि जानततनक नाहिंकोउहाल ॥
अमित तपस्वी अरु बिद्याधर गंधर्वादि सिद्ध समुदाय ।
करैं बसेरा जे पर्वतपर तिन उरगई सनाका छाय ॥
अस अनुमान्यो तिन सबहिन ने फाटो चहत धराधर आज ।
प्रान जानलै ते भागे सब त्यागे करनहार जे काज ॥
तोंबी तोंबा ह्वईं छौंड़े सब सोंटा लगोंटा दीन बहाय ।
आसन बासन बिसराये सब धाये महा हृदय भयलाय ॥
भूलि सुमिरनी का फेरबु गा माला धरी रही नहिं हाथ ।
क्याहिका जपु तपु गपुआने से ताने चले धारि नभपाथ ॥
कौतुक जान्यो जब हनुमत कर तब कछु धीर धरी मनमाहिं ।
तबौं न भागा भय हिरदयते धकधाकि मिटी एक क्षननाहिं ॥
लगे निहारन टिकि अंबरते विकृत बात जात करगात ।
मेरु महेन्द्रौते दूनातन जात पताल लगत गिरिलात ॥

देव कन्यका गंधर्विनि गण विद्याधरी किन्नरी वृन्द।
मारुतनंदन को बंदन करि निरखैं गगन मगन आनन्द॥
लगी बतावन फिरि आपुस महँ बहिना सुनौ हाल इनक्यार।
येहैं पायक रघुनायकके अति बल खंभु शंभु अवतार॥
देहजगमगत नग जगमग समलगभग नभग ज्योति मिलिजात।
कंचन खंभा सम जंघा द्वउ रंभा खंभ सरिस द्वउहाथ॥
अति मति मंदर तन बंदर सम हनुमत नाम पराक्रम धाम।
जात अशंका पुरलंका कहँ हेरन राम बामके काम॥
चाहत लंघन ये समुद्र अस जैसे क्षुद्र तलैया ताल।
हाल निहारौ अब इनकर तुम डारौ हृदय जनित भयख्याल॥
यहि विधि बातैं करि आपुस महँ रोंकें निजानिज यान विमान।
लखैं दृगनते मगन गगन ते जो कछु चरित करत हनुमान॥
त्यही समइया के अवसर महँ रोम कँपाय बीर बरियार।
गर्जे बादर सम उच्चस्वर कादर भगे हजारन यार॥
पूंछ हिलायो विस्तारित करि जस धरि गरुड़ हिलावैं सांप।
उछलन चाह्यो पुनि पर्वतते अतिबल बेशुमार परताप॥
दुःख निकंदन रघुनंदनके बंदन कीन अमल द्वउ पायँ।
उड़े सड़ाका भरि पर्वत ते जसनभ नभग वेग गतिजायँ॥
जौने पर्वतपर धारैं पद सो धँसि तुरत जाय पाताल।
पूंछ घुमायो धरि बंगीसम जंगी बीर पवनके लाल॥
उछलत बेरा भुजंकी ह्यों दृढ़ परिघाकार दीन फैलाय।
पायँ सिकोरे करिहायें लग तड़के जलधि ओर हहराय॥
गहिनभरस्ता मन मस्ता करि चले अपार पार हहकारि।
प्रिया पराक्रम वह हनुमतकर नहिं कहि सकैं जासु मुखचारि॥

स० गोला हवाई कि गाई यथा गति आई न कैस्यहु भाई समानमें।
पाई न सोसमताई क्यहू बिधि रामसुजानके बान पयानमें॥
यानमें भानमें भान हयानमें प्रान अपानमें ब्यान उदानमें।

देव विमानमें जानन जो गति सोगति वा क्षन श्री हनुमानमें॥
जो मनमें घनमें बनमें नहिं ओलन गोलन में नदधार में।
नारमें मारमें ना शिशुमारमें नेत्र पसारन मारुत हारमें॥
तार कतार न चाक कुम्हारमें खाँड़े दुधारमें ना तलवारमें।
यार तमारमें ना उरगार में वेग अपार जो वायु कुमार में॥
बाजमें गाजमें बाजि समाजमें ना गजराजमें ना मृगमालमें।
काल करालमें ब्रह्म मरालमें ना शशिभालके बैल विशालमें॥
भूत बितालमें तालमें ना कहुँ है खग जाल न बोहित पालमें।
लंक निशंक पधारतके क्षन चाल उताल जो अंजनि लालमें॥

हवाके झोंका महँ अगणित तरु जड़ते उखरि २ अनयास।
साथै लागे कपिनायकके जात उड़ात गगन महँ खास॥
जात सिपाही गण साथै जस जबकोउ कतौं जात नरनाथ।
तैसे अगणित तरु अंबर महँ धाये जात पवनसुत साथ॥
नभ पथ गमनत वहि समयापर कपिकी छटा कही नहिं जाय।
मनहुँ महेन्द्राचल पर्वत नभ विस्तृत कीन आपनी काय॥
भुजा भयंकर फैलाये द्वउ यहिबिधि गगन माहिं दरशायँ।
मानहुँ निकले गिरिकंदर ते ये पँचमुहाँ सांप द्वउआयँ॥
बिज्जु आबसम चषपीले द्वउ मानहुँ आफताब महताब।
लाल नासिका अरुलालो मुख संध्या यथा अरुण रबिदाब॥
पूंछपसारी जनु इन्द्रध्वज सज धज कछू कही नहिं जाय।
जानै नीकीविधि वाहीजन जेंकोहुँ लखाहोय दृगलाय॥
सिद्ध गंधरब सुर विद्याधर नभमहँ खड़े करत गुणगान।
धन्यतुम्हारे पितु माताको सबबिधि तुम्हैं धन्य हनुमान॥
अबतक निरखोनाहिं साहस अस नर सुर असुर चराचर माहिं।
पर उपकारी अब इनकीसम दूसर तिहूंलोक महँ नाहिं॥
होत बतकही यह ऐसी इत उत अब सुनो समुद कर हाल।
जातविलोक्यो नभ मारगमहँ चाल उताल पवन के लाल॥

लग्यो बिचारन मन अपनेमहँ जस कछु धर्म सज्जननक्यार।
येसुखदायक रघुनायकके पायक अति पियार बलभार॥
पारपधारन ये चाहतम्वहिं खोजन राम बाम के काम।
परम परिश्रम अनुमाना इन जानाचहत अगम अतिठाम॥
उतपति हमरिउ इक्ष्वाकुइते वेइक्ष्वाकु बंश शिरताज।
तिनरघुनायक कोपायक यह जायक चहत पारम्वहिं आज॥
करब सहारा यहि अवसर यहि वाजिबअहै मोहिं सब भांति।
नतरु कृतघ्निन की गणनामहँ इइहै प्रथमनाम ममख्याति॥
नागर सागर गुनि सम्मतअस अरुसुस्तान हेत कपिजात।
टेरि सुहाँकै मैनाकै तब लाग्यो कहन यथारथ बात॥
अहिपुर बासी खल दैत्यनको रोंकनहेत द्वार आगार।
तुमकहँ थाप्यो इत सुरपतिने करिकै मनहुँ परिघ आकार॥
ऊंचे नीचे और तिरीछे तुम सब भांति सको बढ़िभाय।
ताते तुमका समुझाइतहै यहि क्षण करो एक मनुसाय॥
उत्तम पायक रघुनायकके ये हनुमान पराक्रम धाम।
चहत उलंघनकरि जावा म्वाहिं करिबे हेत रामको काम॥
कर्मभयंकर यहकीन्हा इन दीन्हा देह दुःख बिसराय।
जन्मधरेको फल लीन्हाकर चीन्हा हृदय राम रघुराय॥
उठौझड़ाका तुम पानीते नभदिशि बढ़ो उच्चकरि काय।
जामहँ तुमपर बैठाढ़ेकपि थोड़िकदेर लेयँ सुस्ताय॥
बानि सयानी सुनि समुद्रकी देर न कीनि मेर मैनाक।
उठे समंदरके अंदरते बंदरजात लीन नभ ताक॥
देर न लागी प्रलयागी सम करि उत्तंग शृंग विस्तार।
लागे बढ़िकै नभ मण्डलमहँ बर्ण सुबर्ण बर्ण अनुसार॥
महाभयंकर उन शृंगनपर बैठे रंग रंग के साँप।
छाय उजेरिया गइ अंबरमहँ मानहुँ उदयभये शनिबाप॥
पर्वतबाढ़ो लखि मारगमहँ ठाढ़ो अग्रदेखि हनुमान।

लगेबिचारन मन अपनेमहँ करि उर विविध भांति अनुमान ॥
काढ़िकै बारिधिते बढ़िकै यह आगे भयो विघ्न कछुठाढ़ ।
रोकयोरस्ता बरिआईते अब सब भांति भयो दुखगाढ़ ॥
करिकै चिंतन इमि बानरबर धरिकै हृदय रामको ध्यान ।
चले अगारी किलकारीदै भारी बल निधान हनुमान ॥
पहुँचि झड़ाका लग पर्वतके ताका दृगपसारि रिसधारि ।
पक्का धक्कादै छातीकर नीचे मेरु दीन बैठारि ॥
देखि पराक्रम अस हनुमतकर अतिशै खुशीभये मैनाक ।
धारि तुरंतै तन मानुषकर बोलतभये मनोहर बाक ॥
हेरघुनायक के पायकबर लायक सर्वभांति बलधाम ।
दास सहायक सुखदायक कपि हैतुव पगनमाहिं परणाम ॥
कर्मअकारित अनुमानातुम ठानाकरब रामको काम ।
पूरणकैहै मन मानाअब जैहै छाय जगतमहँ नाम ॥
हैम्वहिं अज्ञा यह समुद्रकी बढ़िकै लगों गगन महँ जाय ।
जामहँ पायक रघुनायकको कैथित तनिकलेय सुस्ताय ॥
अर्जी गर्जी स्वइ सेवककी करि स्वीकार यार बलधाम ।
मर्जीआवै मनभावै तौ करिये ठहरि क्षणक बिश्राम ॥
सुनिबरबानी गिरिज्ञानी की मानी हृदय मोद हनुमान ।
बचन सयानी के भाषण करि गिरि प्रति लगेफेरि बतलान ॥
धर्म सज्जननको चीन्हा तुम कीन्हा करन योग्य जो काम ।
रामकामके करि आये बिन मोहिं हराम करब बिसराम ॥

स० लंघन पूरपयोधि किये बिन नाम न कूरनमें धरवैया ।
शोधिलिये बिनराम किबामहिं ठामहिंठामहिं जानकि मैया ॥
बोधि लिये बिनरामके बामहिं नामहिं गामहिंधाम धरैया ।
रामको काम तमाम किये बिनमोहिं बिरामहरामहै भैया ॥

यहि बिधि कहिकै वहि पर्वत ते लहिकै हिय अनंद हनुमान ।
गहिकै नभमगभे गमनत पुनि चहिकै रामचंद्रपद ध्यान ॥

षट्पदछंद ॥

जात बातगति देखि बातजातहि बल आतहि ।
यतसुपर्व गंधर्व सर्व शोचे यहि बातहि ॥
यहि बलजानब चही सहीअनुमानब गातहि ।
अस समुझाय बुझाय पठैदीन्ह्यों अहिमातहि ॥
पवनसुतहि रोंकहु द्रुतहि उताँहि जाय प्रगटायछल ।
ज्यहि दृढ़ाय कपिकायकर भटसुभाय व्यवसायबल ॥

कह्यो देवतन जब सुरसाते यहि बिधि मंत्र परस्पर ठानि ।
चली नागिनी तब तहँवां ते आय समुद्र मध्य प्रगटानि ॥
रूपराकसी दरशावति भै अति विकराल द्वितिय जनुकाल ।
रोंकि गगन मग भैठाढ़ी तहँ बाढ़ी मनहुँ महा विषज्वाल ॥
लख्यो समुंदर के अंदरते नभमग बातजात को जात ।
बोलन लागी हनूमानते सुनु बलवान हमारी बात ॥
तुम्हें पठायो इत ब्रह्माने हमरे देन हेत आहार ।
अवशि अघैहों अरुखैहों त्वहिं लैहों बे प्रयास मुखडार ॥
असकहि बायो फैलायो मुख आयो मनो भयंकर काल ।
नेकनलायो भयहिरदय महँ खलदलकाल अंजनी लाल ॥
हाल बतायो हँसि सुरसाते सुनिये नागमात मम बात ।
भूप अयोध्याधिप दशरथ के द्वै सुत रामलक्ष्मण भ्रात ॥
पितु वचपालनको आये बन लाये संगनारि सुकुमारि ।
बसे अनंदित नदगोदातट कूटी पंचवटी महँ डारि ॥
छल बल कैकै तहँ रावण खल लै मारीच नीचको साथ ।
अनरथ कैगा हरिलैगा सिय दैगा प्रभुहि महा दुख गाथ ॥
उन रघुनायकके पायक हम जायक चहत जानकी पास ।
तुमहूं रय्यतिहौ उनहिंनकी करौं निवास राज्य महँ खास ॥
ताते तुमकहँ है वाजिब अस यहि क्षण सुनौ अहिनकी माय ।
खाय हमारे की आशा तजि करौ सहाय दया उरलाय ॥

यदि रुचि हमरे खैबेहीकी जागी हृदय तुम्हारे माहिं।
तौ सुधि लकै हम सीता की आतुर रामचन्द्र ढिगजाहिं॥
सीय सँदेशा कहि रघुपतिते आवत पलटि तुम्हारे पास।
जस रुचि आवै तस कीन्ह्योंतब इतना करौ बचन विश्वास॥
सुनि असबानी हनूमान की सुरसा लगी फेरि बतलान।
जाय न पावै मम सन्मुख ते कौनौ जीव जियत लै प्रान॥
सदा सर्वदा की करणी यह ब्रह्मै यही दीन बरदान।
ताते तुमका हम भक्षब अब जीवत जान न पैहौ जान॥
कहि अस हनुमत ते सुरसा फिरि आगे ठाढ़िभई मुखबाय।
रिस कराल करि पवनलाल तब बोले वीररूप दरशाय॥
काह विचारे मन दुष्टातैं कबते रही वृथा बराय।
जल्दी उतना मुख चौड़ाकरु जामहँ ममसुकाय समिआय॥
इतना सुनतै मुखसुरसा कर भुरसा हृदय गई रिसछाय।
देरन कीन्ह्यसि मुख दीन्ह्यसि नभ चालिस कोस मध्यफैलाय॥
कोस चालिसक के कपिहू भे मेघाकार परे दिखराय।
दूनी बाढ़ी कपि देही लखि गाढ़ी खुनस कीनि अहिमाय॥
कीन्ह्यसि आनन नख योजन को मानहुँ मेरु कन्दरा आय।
योजन तीसकको बानरभो सबदिन ज्यहि सहाय रघुराय॥
चालिस योजनलग फैलो मुख पहुँचोकपि पचास महँ जाय।
साठिते सत्तरि अरु अस्सी इमि बाढ़त जाय एक अधिकाय॥
यहि बिधिबाढ़ो सौ योजनलग मुखनागिनीं केर जबभाय।
छोटरूप करि कपिनायक तब घुसिगे तासुमध्य हरषाय॥
गहरु न लागी बड़वागीसम निकसे कानडगर हनुमान।
जनुगिरि कंदरके अंदरते रामकमान बान बहिरयान॥
अथवा मानहुँ शबदेहीते कीनपयान प्रान अनुमान।
अथवा भेदन करि उदयागिरि मानहुँ कढ़े बढ़े बरभान॥
ठाढ़े ह्वैके अंतरिक्ष महँ सुरसै साविधि कीन परणाम।

पुनिकर संपुट करिबोलतभे हनुमत धीर बीर बलधाम ॥
हे अहिमाता तुव आनन महँ पैठिके निकासि भय हमपार।
देहु आज्ञा अबजैबेकी है त्वहिं नमस्कार शतबार ॥
ज्ञानी बानरकी बानी इमि सुनि भै मुदित अहिनकी माय।
लगी मनोहर बचबोलै तब जो लैचुकी परीक्षाभाय ॥
ज्यहि लगिदेवन म्वहिं पठवा इत सो सब मर्मलीन मैं पाय।
धन्य तुम्हारे पुरुषारथको जोनाहिं कबहुँ अकारथ जाय ॥
जाहु अनंदित अबलंका कहँ शंका सकलदेहु बिसराय।
प्रभु सुजान की प्रीय प्रानकी लैजानकी मिलावहु आय ॥
कौनौ कारज नहिं जगमा अस तुमका कठिन परै जो जानि।
सदा दाहिने रघुनायक त्वहिं त्यहिको कैहै लहै हित हानि ॥
तुव बलथाहै कहँ चाहै जो सोजन महा मूढ़ अज्ञान।
पवनौ समता करि पैहैं ना गैहैं सकल सुयशको गान ॥
यहि विधि आशिष दे सुरसा पुनि गमनत भई आपने धाम।
हर्षित चलिभे हनुमंतौ तब लैकै रामचंद्र को नाम ॥
नभ मग पगधरि करि मारुत गति मारुत सुवन चलेफहराय।
भयो अगारी अब कौतुक जो सो सब सुनौ प्रिया मन लाय ॥

स० मेरु प्रमान अमान बली हनुमान पयान कियो नभ माहीं।
भानबिमान कि क्यासमता भगवानकेबान समानमें नाहीं ॥
ज्ञान निधान सुजान महा गुण जासु जबान ते ना कहिजाहीं।
ताहि निदानहिं खानहिं खातिर सिंहिकाने पकरी परछाहीं ॥

बड़ उमाहते छांह खींचि कै लागी करन हृदय अस चाह।
सूखी भूँखी बहुदिबसन ते मैं जरि रहिउँ क्षुधा की दाह ॥
आजु विधाता ने दीन्ह्यों यह मो कहँ अनायास आहार।
है नहिं छोटो बहु मोटो तन दरशत अंग अंग बिकरार ॥
भक्षण कीन्हे ते जीवहि यहि कैहै उदर पूर मम आज।
भूंख बुभैहै कछु दिवसन लग भगवत कर्यो नीकयहकाज ॥

इतै सिंहिका अस सोच्यो मन उत अब सुनौ पवनसुत हाल।
छाया निशचरि के खींचेते जब परि गई धीमि कछु चाल॥
लग्यो बिचारन मन बानर तब भो उतपात अकारन काह।
पंगु पराक्रम करिदीन्ह्यों कै कीन्ह्यों भंग अंग उत्साह॥
बड़ी गैरभै परमेश्वर यह पैरन परै अगारी म्वार।
लगे सामुहँ जस बैहरि के चलै न पाव नाव नदधार॥
अस बिचारि कै कपिनायक पुनि इत उत लख्यो दृष्टिफैलाय।
जीव भयंकर यक बारिधि महँ बड़ मुख बाय रह्यो उतराय॥
चिंतन लागे तब हनुमत मन मोसन कह्यो रहै कपिराय।
दक्षिण वारिधि महँ निवसै इक अतिभयमान जीव हैभाय॥
उड़त विलोकै ज्यहि नभ मा वह जल महँ पाय तासु परछाय।
देर न लागै धरि खींचहि त्यहि निश्चय वही जीवयहआय॥
यहि ते उबरब अब मुश्किलहै अस अनुमानि बीर हनुमान।
देह बढ़ावत भे पर्वत सम करिउर रामचंद्रको ध्यान॥
लख्यो सिंहिका जब बानरकर बीर शरीर बढ़ा विकराल।
मुख फैलावा तब वाहूने काहूके कहन योग नहिं हाल॥
ओंठ ऊपरी नभ लाग्यो मिलि नीचे ओंठ लग्यो पाताल।
गर्जत दौरी त्वर बौरीसी मानहुं प्रलय काल करकाल॥
देखि तमाशा यह अंजनि सुत क्षणइक रहे मौन मनमारि।
फेरि विचार्यो निर्धार्यो उर यह सिंहिका राक्षसी नारि॥
अतिशय भारो विस्तारो मुख लेहैलीलि हमारो गात।
होय उबारो नाहिं कौनिउँ बिधि यहिक्षण महा विघन दिखरात॥
पुनि रघुनन्दन पद बन्दनकरि अति भट दुष्ट निकन्दनज्वान।
दीरघ मोटा तन छोटाकरि गे मुखमध्य पैठि बलवान॥
देखि तमाशा यह देवनकर नाशा हृदय जनित उतसाहु।
मनहुं पूर्णिमाके चन्दाको लीन्ह्यों लीलि भयंकर राहु॥
यहां विचारत अस देउतागण कीन्ह्यों वहां कीश जसहाल।

सो बतलावत कहि गावत सब सुनिये सावधान ह्वै बाल ॥
पैठि सिंहिकाके पेटमहँ बेटे वायुकेर बरियार।
नखन बिदारे यतमर्मस्थल फारे अंग अंग सुकुमार ॥
छेदन भेदनकरि हिरदयसब कीन्ह्यों महा शिथिल त्यहिगात।
तुरतै मुखते कढ़ि बाहरभे नाहर यथा कढ़ै तजिखात ॥
भये करेजे के रेजे जब औ ह्वैगये शिथिल सब गात।
प्रान पयाने तब निश्चरि के भइ अरराय समुद महँ पात ॥
मरी सिंहिका अवलोकी जब सुर गन्धर्व सिद्ध समुदाय।
लगे अशीशै तब कीशै सब हे हनुमान धन्य तुवकाय ॥
अब हम जाना अनुमाना यह बाना वीर पर्यो तुवबांट।
याहि सँहारन अरु मारनहित ब्रह्में तुम्हें कीन उदघाट ॥
सिद्ध मनोरथ अब ह्वैहैं सब पैहौ हेरि रामकी बाम।
जो कछु चैहौ करिलैहौ सब छैहौ सुयश जगत महँ आम ॥
यहि विधि आशिष सुनि देवनकी अतिव प्रसन्न भये हनुमान।
गमने आतुर गति तहँ ते पुनि बारिधि पारजाय नियरान ॥
स्वस्थ चित्त ह्वै पुनि बारिधितट लगे विचार करन मनमाहिं।
अवशि जानकी अब देखब हम लंक निशंक जाय शकनाहिं ॥
देह भयंकर यह धारेते म्वहिं संदेहहोत मनमाहिं।
मानि अचंभा सब राकस गण करिहैं अवशि हास शकनाहिं ॥
यह विचारिकै झट मारुतसुत लीन्ह्यों रूप प्रथमकर धारि।
लम्ब मेरु जो तट बारिधि के तापर बैठ शंक सब टारि ॥
लख्यो तहांहीं ते लंकापुरि शोभा जासु कही नहिं जाय।
ज्यहि लखि लोभा पुर देवनकर भेवन सकत शेशहू गाय ॥
बसीलसी जो गिरि त्रिकूटपर विकसी शशीसरिस शुभज्योति।
थर थर घर घर डगर बगरपर अतिशै जगर मगरद्युतिहोति ॥
लसे गसे से वन उपवन बहु फूले फले वृक्ष दरशात।
भ्रमर हजारन तिन डारन महँ मधुहित आय २ लपटात ॥

उड़ें विहंगम इक संगम बहु बोलत रंग रंग की बानि ।
विमल तड़ागन अरु बागन महँ सुन्दर स्वच्छ छटाछहरानि ॥
खिले बावलिन महँ अंबुज दल छहरे पत्र छत्रसे छाय ।
जोटा सारस अरु हंसन के बिहरत करत शब्द सुखदाय ॥
कतौं पहाड़िन पर झाड़िनकी झुमड़ी झुकी झुड़ीली पांति ।
धीर समीरन अवतीरन ह्वै तीरन शुचि सुगंध सरसाति ॥
यहिविधि शोभाअवलोकतशुभ सविधि अशंक बंकव्यवसाय ।
कपि मयंक सो इक फलंकमहँ लंक समीप पहूंच्यो जाय ॥
पनियांसोते लग खंदक ज्यहि पुर के ओर पास फिरि आव ।
ठावँ ठावँ पर खड़े सिंतिरी पकरे असी वसी चित चाव ॥
सोही चारिउ दिशि सुवरणकी शहर पनाह राह नहिं आहिं ।
काहबतावै छविवाकी कवि चम चम दिपै छिपै द्युति नाहिं ॥
शरद मेघसम अति उज्जलकल सोहत धाम धाम अभिराम ।
अटा के ऊपर अटा विराजैं लाजैं छटादेखि सुरधाम ॥
हाटक फाटक दिशि चारिउ महँ लागे बज्र सरिस दृढ़पाट ।
छुवा चहतहैं जनुअंबर कहँ उमड़ी अजब ठाटकी हाट ॥
रंग रंगके ध्वजा पताके बाँके अटन रहे फहराय ।
कनक किवाँरन मणिहारनकी द्वारन छटारही छहराय ॥
एकतारके बर बहारके बन्दनवार द्वार प्रति द्वारु ।
सोहे मोहे मन मुनियनके गुनियन चित्र उरेहे चारु ॥
ठाट निरालेहैं हाटन के अनुपम घाट बाट चौहाट ।
किला कँगूरन सों पूरन बर चाटन चहत मनहुँ नभपाट ॥
बेश बनाई त्रिसुकमैं जनु लंकापुरी सुंदरी नारि ।
ताको रूपक बतलावत कबि राम पदारबिंद हियधारि ॥
छहर दिवारी जनुसारी है खावां सुघर घांघरा आय ।
विमल जलाशय अरु उपबन बन ये आभरण रहे दरशाय ॥
तुपक तमंचा तरवारिन सह सुंदर शस्त्र केश रहे छाय ।

अटा अटारी त्यहि प्यारी के कर्णाभरण जानि ल्यो भाय ॥
यहि विधि शोभा शुभ लंकाकी को भा कहन योग मतिमान।
ताहि अनूपम अवलोकत अति हर्षित भये बीर हनुमान ॥

स० अलका भल तासम उज्ज्वलका हलका नलका पुर आवति है।
नरती सम भोगवती लगती जगती सब लाज लजावति है॥
द्विज वंदि अनन्दित जीव जहां उमहा सुख दुःख भगावति है।
सरसावति शोभ जगावति सी अमरावति पार न पावति है॥

शरद मयंका सम लंकाकी दीपति देखि लेखि सब ठाट।
उत्तर फाटक पर आये चलि जाये अनिलकेर कपिलाट ॥
लगे विचारन तब हिरदय महँ द्रग मग उञ्चफाटकहि डाटि।
है अति ऊंचा शिव पर्वत सम मानहुँ लेत अकाशहि चाटि ॥
मेरु कंदरासम लंकायह बंका महा मोहिं दिखराति।
भरे असंख्यन जन राकसगन बिषधर मनहुँ सर्पकी जाति ॥
घिरो समुंदर चौगिर्दा ते राक्षस करैं चौकसी झारि।
गम्य न बैहरिके जैवेकी मगपग सकै अन्यको धारि ॥
भलभा बानर नाहिं आयेइत पौरुष सबै बृथा ह्वै जात।
लंका जीतनकी देखत नहिं कोहु सुर असुर माहिं औकात ॥
कीश बिचारे क्यंहि गिन्तीमा करि हैं काह आय इतराम।
कछु न बिसै है इन दुष्टनते नहिं कछु साम दाम को काम ॥
जितने बानर हैं सेनामहँ तिनमहँ चारि बीर इत आय।
नील सुकण्ठी अरु तारासुत मैं कछु करिउ लेहुं व्यवसाय ॥
शक्ति न औरमहँ देखत हम जो कछु करै आय इतकाम।
यहिबिधि शोचत वहि फाटकपर ठाढ़ बायुपूत बलधाम ॥
घरियक धारे चुप ठाढ़ेरहे पुनि अस मंत्र कीन निर्धार।
नाहिं अब शोचनको अवसर यह श्री रघुनाथ लगै हैं पार ॥
देखाजैहै जो ह्वैहै कछु बिस्मय करत सरत नाहिं काम।
प्रथम जानकीको ढूंढ़न चलि बेष छिपाय धाम प्रतिधाम ॥

मिलिहैं जीवत जो कदापि कहुँ लंका मध्य जानकी माय।
तौ सब कारज बनिजैहैं फिरि ह्वैहैं जो सहाय रघुराय॥
यह दृढ़सम्मत धरि हिरदय महँ मारुतजात जात कछुराति।
दंश दशासी करि खाँसी तब लंक अशंक चले हर्षाति॥
मिली लंकिनी तब लंकातट बंका बीर देखि पुरजात।
दैकर हंका बिन शंकासो मारग रोंकि कहत भै बात॥
काह विचारी बनचारी तैं धारी हृदय नेक भयनाहिं।
पंथ सिधारी छलकारी तैं जैबे हेत लंकपुर माहिं॥
शंक बिसारी दशआनन की टारी सकल हमारी कानि।
अस बदकारी करि चाहत तैं भारी प्रान जानकी हानि॥
हैं निशिचारी रखवारी महँ सकत न जहाँ बयारी जाय।
करी तयारी तहँ जैबेकी डारी यातुधान कोउखाय॥
महा अनारी गति धारी तैं ठग मग यार लवारी केरि।
देर न लावसि बतलावसि इत आवसि कौन काज चितहेरि॥
सुनि असशंका बिन लंकाकी बंका बानि रोष उरआनि।
निज बल तोलत हँसि बोलतभे कपि हनुमान ज्ञान गुणखानि॥
इत पगधारन को कारन तुम मोसन सुना चहौ सविधान।
बार न लाउब बतलाउब सब करिकै समाधान यह जान॥
पहिले तुमते हम पूंछित है सो कहि अपन बताओ हाल
यहिपुर द्वारे क्यों ठाढ़ी हौ कीन्हे तन कराल चपलाल॥
अधर चबाती डरवाती सी माती महामोह मदमाहिं।
आनन बाती रिसवाती सी लाती तनक दया उर नाहिं॥
महादुष्टता दरशाती उर अतिरुष्टता दिखाती बाम।
विक्रम गाती बहु निश्चरकर कोतू अहै कहै निजनाम॥
गाम धामहै कौन ठाम तुव इत विश्राम करत क्यहि काम।
सो सब कारन निर्धारन करु बार न लाव गाव इतमाम॥
काम रूपिणी वह लंका इमि सुनिकै बड़े कड़े कपिबैन।

रोष सैनसी अति अचैनसी बोली बैन लालकरि नैन ॥
मोहिं न जानत बनचारी तैं आनत मुखहि करारी बानि।
आज्ञाकारी मैं रावणकी नारी रूप लंकिनी जानि ॥
करौं सर्वदा रखवारी मैं यहिपुर लंककेरि सबभांति।
चोर लवारी बदकारी ये जाय न सकैं तकैं दिनराति ॥
मोर अनादर करि जावाचहु कादर लंक नगरके मांझ।
छलकरि मेलत रज आँखिन महँ अबहीं भई देर नहिं सांझ ॥
आजु तुम्हारे यहि कर्मनते करि बेभर्म प्राणकी हानि।
शयन करैहों यहि अरुथल महँ आय बनाय आयु नियरानि ॥
सुनि असबानी दुष्टानी की ज्ञानी हनूमान रिससाधि।
परम सयानी सों भाखत मे माषत ताहि गाहि बड़ि ब्याधि ॥
रूप भयंकर दिखरायो पुनि गायो समय सरिस कहिहाल।
देखन चाहत हम लंकापुर शंकाकरत जासु सुरपाल ॥
सुनी प्रशंसा हम काननते जानन चहत तौन दृगलाय।
अटा अटारी फुलवारी बन उपवन भवन शोभ समुदाय ॥
किला कँगूरा अति रूरा अरु पूरा राज साज सामान।
भट निशिचारी तिन नारी अरु प्यारी चित्रसारि निर्मान ॥
भूरि दूरिते हम आये हन पाये बहुत दुःख मगमाहिं।
तापर तुमहूं अटकाये इत लाये दया तनिक उरनाहिं ॥
यहिविधि भाष्यो सुत समीर जब धीर गँभीर वचन खगराज।
तबौं कलंका रतलंका वह तनक न भई रोषते बाज ॥

स० बाजसि गाजसि रोष समाजसि दोष जहाजसि खाजसि बंका।
दुःख दराजसि कुत्सित व्याजसि रूप अकाजसि लाजकि रंका ॥
जीव विघाति महा उत्पातिसि जाति कुजातिसि राति कलंका।
भूरि रिसातिसि फारिहि खातिसि बोली हिये जरिजातिसि लंका ॥

हे खलबानर बरिआई करि परिहरि हृदय मोर भयभार।
चले अशंका तैं लंका कहँ लखन बहार राज दरबार ॥

पार न पावत सुर साँवत जहँ आवत कबौं नाहिं पुरद्वार।
तहँ कह चीते चले पिरीते जीते बिना मोहिं किमियार॥
असकहि रुष्टा ह्वै दुष्टाने करिकै महाभयंकर नाद।
लात प्रहारी बनचारी पै भारी बल बढ़ाय उरगाद॥
प्रलय आय गइ बसि इतने महँ नैनन जाय लालरी छाय।
दवलगाय दइ जनु हिरदयमहँ कपि उर गयो क्रोधअधिकाय॥
स० बालविभाकर प्रातःकाल सोजाल प्रवाल सोलाल लहूसा।
वृक्ष रसाल के पल्लव माल सो लाल गुलालसो बालबहूसा॥
अंजनि लाल सुआननलाल कै कालकराल सोकैउरगूसा।
दैकर हंक सुलंक हृदय महँ बंक अशंक धमंक्यहु घूंसा॥
लागत घूंसा वहि ससुरी की पँसुरी चूरण भईं बनाय।
छाय शिथिलता गइ देही महँ गिरी तड़ाक भूमि भहराय॥
अशनि प्रहारे जस सुरपति के भारे गिरैं मेरु ह्वै ढेरु।
गिरी लंकिनी तस मूकाते चूका यथा कला नट फेरु॥
व्याकुल लखिकै निशिचारिनिको नारिनिदान जानि हनुमान।
प्रान पयानत अनुमानतत्यहि हिय महँ बहुतु लाग पछितान॥
काम नकारो यह कीन्ह्यों मैं मारो बिन बिचार किय बाम।
राम रिसैहैं यहि करणी ते ह्वैहै मोर नाम बदनाम॥
यहि विधिचिंतन करिहिरदै महँ बिरदै सदै सवँरि करिख्याल।
धीरज दीन्ह्यों वहि लंका को बंका बीर पवन को लाल॥
लटपटि बानी कहि बोली तब हे भट हरी करीसम काय।
करौ अनुग्रह अनुगामिनि पर मैं तुव जानि लीन मनुसाय॥
लंका नगरी म्वहिं जानौ तुम मानौ कहौं सत्य जो बात।
जीति रीति सह तुमलीन्ह्यों म्वहिं कीन्ह्योंकछु न अन्यथा तात॥
पूर्वकाल महँ बर दीन्ह्यों म्वहिं हर्षि मरालगामि यहिभांति।
जाय बसेरो अरु फेरो करु लंका नगर निकट दिन राति॥
आय अचानक जब कबहूंकउ कपि त्वहिं जीतिलेयबलठानि।

तबतें जाने अनुमाने यह निश्चर बिपति आय नागिचानि ॥
कही विधाता की सांची भै सो अब समय आय नियरान।
भइउँ कृतारथ तुव दर्शनते बर्सन गये करत यह ध्यान ॥
आजु महूरत यह पूरनभो कूरन काल बोलायो टेरि।
विधि रचि राखी को मेटै को भेंटै एरि फेरि घर घेरि ॥

स० निश्चरराज अकाजकस्यो यहुलाज को साज धस्योकरिन्यारा।
है बरियार महा होनहार न पारकै आजु लगे कोहुँ टारा ॥
मारा मरै नहिं जाराजरै औ किनारा करेते न होय उबारा।
राकसपाल बोलायहु कालहि रामभुवाल कि बालके द्वारा ॥

ह्वै आनंदित कपि वंदित तुम प्रबिशि निशंक लंकपुर माहिं।
काज सवांरो निज स्वामी कर अब कोउ तुम्हैं रोकैया नाहिं ॥
कहो हमारो इक कीन्ह्यों यह लीन्ह्यों सुयश शीशपर धारि।
प्रथमजायकै पुरभीतर महँ खोजौ सविधि रामकी नारि ॥
पुनि तदनंतर जो करिबे कहँ सो सब कस्यो काज उरडारि।
चलत कि बेरा शवदेही मम दीन्ह्यों अवशि अग्नि महँजारि ॥
यहिविधि हारी बनचारी ते कहि सबहाल सिधारी बाम।
पैठ्यो बंका भटलंका महँ लैकै रामचंद्र को नाम ॥
अति बल कोटा तन छोटा करि सदर दुआर राह बरकाय।
छहर दिवारी को लंघन करि उचके चढ़ किला पर जाय ॥
चले बिलोकत धाम धाम प्रति अति अभिराम छटारहिछाय।
गगन घटा सम धवरहरा शुभ चूमत मनहुँ चन्द्रमहिं धाय ॥
सुमन सवांरी हैं सड़कैं शुचि भारी गंधिरही उमड़ाय।
मनहुँ पसारी चौगिर्दा ते प्यारी चंद उज्यारी लाय ॥
मन्दिर मन्दिर प्रतिन्यारी छबि देखत घूमि घूमि हनुमान।
गाथा सारी कहि गावै को पावै इतो कहां गुण ज्ञान ॥
कहूं किन्नरीवर कर मा लै वरकिन्नरी बजावैं यार।
कहूं बांसुरी महँ गावैंमिलि वरआसुरी सुरी नरदार ॥

कहूं सितारन यकतारन की बाजैं गती अती सुखदाय।
रती न भाजै मन जहवाँते लाजै रती मती सकुचाय॥
कहुँगण अबलन के तबलन के गहि गति ठाट दिखावत नाच।
हाथ उठावत मटकावत चष झुकि २ भाव बतावत सांच॥
गीत प्रीत सह कोउ गावत तिय छावत स्वर वितान असमान।
पायनखांसी चौरासीकी झनकत मंद मंद धुनिकान॥
बीन बजावत कोउ बाँकीगति बाल विशाल रूप की माल।
चाल लजावत ऐरावत की आवत समन अस्म शरबाल॥
कोउ बरबाला घर आलामहँ आपन लाला रही खेलाय।
कोउ करमाला लिय फेरति तिय पाला सुआ पढ़ावति जाय॥
कोउ मृगछाला पर आसन किये हाला पियत पियाला हाथ।
रूप कराला तन काला अरु लटकत जटा घटा से माथ॥
दिया जलाये कोउ मंदिर महँ सेजिया पिया लिटाये साथ।
हया हटाये लपटाये हिय रही बताय विषै की पाथ॥
कोऊ दुशाला सों ढाँपेमुख झाँपे मनहुँ उजाला चांद।
खोलत मूंदत पट घूंघट सों फाँदे मनौं प्रेमके फाँद॥
कोऊ नारी चित्रसारी महँ बैठे साजि रही शृंगार।
अंग अदूषण आभूषण को जगमग जगमगं होत उज्यार॥
नगी नचावैं कहूं पन्नगी उमगी महा मोद मन माहिं।
कोऊ सोहारी तरकारी की ब्यारी करत बैठि पिय पाहिं॥
सेज अकेली अलबेली कोउ मेली पिय बियोग के शोग।
चंपक बेली सी सूखत तन मानहुँ महारोग संयोग॥
कहूं दारिका गंधर्बन की वर सारिका बिठाये पास।
कोक कारिका सिख लावति हैं छावति परम मोद उल्लास॥
देखि तमासा कपि खांसा इमि भासा सब प्रकार सुखतार।
चले अगारी अवलोकत पुनि घर घर छटा छई जनुमार॥
कौन्यों राक्षस के मंदिर महँ बहु बिधि होत मंत्र को जाप।

यंत्र तंत्र की साधनि का कहुँ निश्चर करत अकेले आप॥
हवन होत है क्यहू भवन महँ कतहूं मवन बैठ निशिचारि।
मुण्ड मुड़ाये भस्म रमाये योगी रूप बनाये भारि॥
ताल ठोंकि कै यक मुश्ती कहुँ कुश्ती लड़त माल विकराल।
कौनौ योधा रत कसरत महँ उछरत करत अनूपम ख्याल॥
आगे चलिकै अवलोक्यो पुनि बैठि जमाति निशाचर पांति।
अद्भुत शोभा लखि लोभा मन सो सब कथा कही नहिं जाति॥
एकै आँखी कोहु योधा के बोधा एक हाथ बिन माथ।
कानन दारद हैं काहू के बाहू बिना अन्य दरशात॥
हैं बहु बाहू भट काहू के कोउ बिन पाँव भयानक गात।
करत कलोलैं बच बोलैं मुख गर्दभ वाजि यथा हेहनात॥
कोऊ सियारन के साजैं स्वर बोलत कऊ काककी नायँ।
सिंह दहारनि कउ दहरत हैं हहरत मनहुँ गगन घन आयँ॥
कसे निराले हैं आयुध तन भाले चोंचदार तलवार।
पटा कटारी धनु धारी कउ छूरी छुरा धरे बरधार॥
खड्ग दुधारा कहुं धाराकर शकती काल पांस अहिपास।
सरकस तरकस करिहायें महँ बायें परी फरी अनयास॥
यहि बिधि देख्यो पुर शोभा शुभ इतउत घूमि घामि हनुमान।
सुनो अगारी कर कौतुक अब प्यारी धारि रामपद ध्यान॥
मध्य भाग महँ पुनि पहुँच्यो कपि जहँगिरि शृंगउच्च अभिराम।
ताके ऊपर घर सोहत इक मोहत जाहिदेखि सुरधाम॥
बनी देवालै वर सुखमालै आलै स्वर्ण बर्ण बरभास।
नजरि न ठहरै छबि छहरै अति फहरै ध्वजा सजा आकास॥
अटाके ऊपर अटा विराजैं भ्राजैं लाल जवाहिर जाल।
होत चमाचम चौगिर्दा ते निमनी घनी मनी द्युति माल॥
रंगामेजी की प्रतिमा वर सति मालूम होत शक नाहिं।
भीतर प्यारी तिदवारी तहँ परदा परे दरीचिन माहिं॥

मणि अस्फटिकन के खंभा वर रंभा जिन्हैं देखि ललचायँ।
तनको गाफिल कै पावैं जो तुरतै घरैं खोदि लै जायँ॥
लगे झरोखे क्या नोखे अति चोषे चटक चमंकैं चारु।
भीतर प्यारी चित्रसारी लखि हलको लगत ब्रह्म व्यवहारु॥
रूप नवीनी रँगभीनी कहुँ कामिनि लिखीं सुदामिनि गात।
जिनकी शोभा लखि नैनन ते मैनन कबहुँ एन निज जात॥
कहूं सवाँरी पिय प्यारी की प्रतिमा अंग संग लपटानि।
लिखी पतुरिया कहुँ नाचत गति भौंह भ्रमाय उठावति पानि॥
बिम्ब उरेहे बिधु पूषन के चहुँ दिशि रहे मयूषन भासि।
कहुँ नखतावलि दरशावलि भालि बावलिकरतमुनिनमतिखाँसि॥
कहूँ उरेहे पिक वरही शुक चक बक हंस कबूतर बाज।
सारस श्यामा छबि धामा अति गो वृष बाजिराजि गजराज॥
बँधे बाहिरी दरवाजन महँ बन्दनवार स्वर्ण मय झारि।
कलश कँगूरन पर चमकेंवर भाकर प्रभाजात हिय हारि॥
बन्यो पाकगृह इक न्यारो तहँ लागे ढेर मांस मद केर।
खात खवावत हैं राकस बहु एकते एक छीनि मुख गेर॥
सभा सवाँरी इकन्यारी तहँ रावण करत खास दरबार।
घरबिहारको बन्यो एक दिशिनिशि निशिचर तहँ करत बिहार॥
खड़े हजारन हय वारन तहँ मद बहिरह्यो पनारन माथ।
सुघरी शिविका एकत्रित कहुँ जिनपर चढ़त निशाचर नाथ॥
अकथ अलौकिक रथ शोभा गथ कतहूँ खड़े जड़े मणिजाल।
अड़े अनेकन कहुँ रासभगण हिंकरत करत शब्द बिकराल॥
खड़े अनेकन भट पहरे पर गर्जत अतिव भयानक गात।
गम्य न पक्षी के जैबे की अन्य कि कौन चलावै बात॥
जाय बिलोक्यो पुनि अन्तःपुर जहँ पर शयन करै दशमाथ।
चंदन पलिका पर सोवत तहँ सुंदर देव बधुन के साथ॥
चाहिय सामा जो राजन घर सो सब भरी धरी अप्रमान।

बिभव बिलोकत तब रावण को जकिसे रहे बीर हनुमान ॥
लख्यो न सीता त्यहु मंदिर महँ सब बिधि लख्यो दृष्टिफैलाय ।
चल्यो अगारी बनचारी तब निरखत अपर भौन खगराय ॥
जाय बिलोक्यो गृह प्रहस्त को पुनि गे महापार्श्व के धाम ।
कुंभकरण को घरदेख्यो पुनि लेख्यो कहुँ न रामकी बाम ॥
गये महोदर के मन्दिर फिरि निरख्यो बिरूपाक्ष आगार ।
तहौं न पायो लखि वानरने श्री कौशलकुमार की दार ॥
वज्रदंत को घर देख्यो पुनि विद्युज्जिह्व केर अस्थान ।
विद्युन्माली अरुसारन कर निरख्यो भवन बीर हनुमान ॥
मेघनाद को घर देख्यो पुनि शोभा जासु कही नहिं जाय ।
तहौं बिलोक्यो नहिं नैनन सों शुद्ध सुभाय मैथिली माय ॥
जम्बुमालिके गे मन्दिर पुनि लख्यो सुमालिकेर बरधाम ।
पुनि निकेत लखि रश्मिकेत कर घरियक तहां कीन बिश्राम ॥
सूर्य शत्रुको घर देख्यो पुनि निरख्यो वज्रकाय गृहजाय ।
तहौं जानकी लखि पायोना लागे हृदय माहिं पछिताय ॥
भवन घन विघनको देख्यो पुनि गे धूम्राक्ष धाममहँ धाय ।
नाभचक्र शठ शुक लोमशके निरखे बिबिध भांति घर जाय ॥
कपटह्रस्व अरुसंपाती लै निरख्यो कर्णदंष्ट्र को धाम ।
काम न निकस्यो कछु तहऊँ पर लखी न नैन रामकी बाम ॥
मत्त प्रमत्ता रणमत्ता अरु सादी ध्वजग्रीव को धाम ।
भल्लकै देख्यो नहिं लेख्यो तहँ जनक कुमारि रूप अभिराम ॥
यहि बिधि शंका बिन लंका तिन लखी बनाय दृष्टि दृगलाय ।
पता न पायो कहुँ सीताकर लागे हृदय मांझ पछिताय ॥
सगरी नगरी मथि डारी हम कहूं न लखी जानकी माय ।
अहो बिधाता अब कै है कह जैहै वृथा मोर व्यवसाय ॥
घरि यक शोचे कपि नंदन इमि बंदन कीन फेरि प्रभुपाय ।
कछुक दूरिचालि भलि अस्थलि महँ निरख्यो भिन्नभवनइकजाय ॥

छटा अपूरब त्यहि मंदिरकी जात न कही रही छबिछाय ।
लक्षण हरिजनके चाही जस सो सब तहां रहे दरशाय ॥
हुलसी तुलसी चहुँ ओरन ते लागे कदलि वृक्ष अभिराम ।
द्वार दिवारन अरु आरन महँ चहुँ दिशि लिखो रामको नाम ॥
ठाकुर द्वारा बन्यो एक दिशि ऊपर ध्वजा रह्यो फहराय ।
प्रभु जनकीसी लखि प्रभुता इमि विस्मय करन लाग कपिराय ॥

स० राकसबंश नृशंसके मध्य में हंस समान सुअंश लस्योको ।
धाम ललाम प्रभा अभिराम अराम विराम सो ठाम ग्रस्योको ॥
आनँदकी अवलीसि भली प्रभु भक्ति थली विमली विलस्योको ।
ये अस मंजस होत हमैं खल मण्डलमें यह साधु बस्योको ॥

करै तर्कणा कपिमनमा इमि ताही समय विभीषण जागि ।
हरि यशसानी शुभ बानीते सुमिरण लगे राम मुदपागि ॥
सुन्यो सो बानर वरकाननते मनते अस विचार निर्द्धारि ।
निश्चय सज्जन जनकोऊ यह निवस्यो लंक कलंकहि टारि ॥
हठकरि मिलिहौं यहि साधूते ढिलिहौं क्यहु प्रकार अबनाहिं ।
हानि जानिये नहिं काहू विधि कबहूं सुजन सुसंगति माहिं ॥

कु० हनुमत हृदय विचारि अस सब संदेह बिसारि ।
नेह वारि विस्तारि चष देह विप्रकी धारि ॥
देह विप्रकी धारि जहां निशिचारि विभीषन ।
सुमिरत रामखरारि टारि कुल कुत्सित सीखन ॥
तहां जाय हरषाय पाय लीन्हे बिन अनुमत ।
सुंदर बचन सुनाय लगे भाषन यह हनुमत ॥

माथ नवावत तुव चरणन महँ हे हरिदास सिद्धि सुखरास ।
को तुम राकस गण ऋक्षन महँ चंद समान करत परकास ॥
अथवा लंका पुरढाबर महँ को तुम करत हंस समबास ।
अथवा कीकरके जंगल महँ दरशत अमर वृक्ष समखास ॥
क्षार वारिनिधि समराकसकुल त्यहि विच रहे कमल कल फूलि ।

खलदल मण्डल महँ सज्जन तन को तुम रहे आपु कहँ भूलि ॥
सुनि असबानी कपि ज्ञानीकी सज्जन जानि मोद उरआनि।
माथ नवावत बरसावत चष भाषण लगे विभीषण बानि ॥
अहो महीसुर सुख सुखमाधुर आपनि कथा सुनावो गाय।
को तुम अमृत सम भाषण करि मो कहँ कियो कृतारथ आय ॥
स० हौ अनुराग कि राग विराग कि भाग हमार तमारसे जागहु।
कै करतारकि तार पयारकि धौंकोउ विप्र कुमारसे लागहु ॥
सत्य सनेह कि देह धस्यो तुम अमृत मेह सही कहि बागहु।
नाम कहा अरु धाम कहा कहँ ग्राम औ काम कहा कह माँगहु ॥
कह्यो विभीषण यहि भांतिन जब तब हनुमान हृदय हरषाय।
कथा मनोहर रघुनायककी भाष्यो सकल आदिते गाय ॥
सुन्यो विभीषण जब आछी विधि श्री रघुनाथ केरि शुभगाथ।
चीन्हि पवनसुत श्री हनुमत कहँ बोल्यो पुनः जोरि द्वउहाथ ॥
भागि बड़ाई कह गाई हम जो भइ उदय अकारण आज।
कीनि सहाई रघुराई यह अब सब सुधरि गये ममकाज ॥
दुर्लभ दर्शन हरि सेवक के मिले सो आज मोहिं अनयास।
पांसापलट्यो अब जान्यो मैं मान्यो भई विपति सबनास ॥
काह बताई हे भाई हम आपनि रहनि नग्र यहिमाहिं।
बत्तिस दांतन बिचरसना जस बसना लहत रहत शकनाहिं ॥
यथा बहेलियन के बनमा परि मनमा मृगा एक पछिताय।
प्रान बचावै जान न पावै इतउतरह दुराय भयखाय ॥
यथा मूर्खन के मण्डल महँ पण्डित परे भरे उरताप।
तथा हकीकति मम बीतति अति गति लखि हृदय बिचारौ आप ॥
स० तात बतावहु बात हमैं यह ये उतपात कबै नसि जैहैं।
नाथ सनाथ कै मोहिं अनाथहि लैकर हाथ कबै अपनै हैं ॥
दर्शन दै दुख मर्शन कै तन पर्शन कै मन हर्ष भरै हैं।
यार कहौ कवराम उदार अपारके पार उतार लगै हैं ॥

कछू न साधन यहि तामस तन प्रीति न रामचरण महँमोरि ।
नहिं सत संगति हरिदासन की बाँसन बढ़त नित्त मम खोरि ॥
करौं भरोसा क्यहि विरते पर मिलिहैं अवशि स्वामि म्वहिं आय ।
सज्जत भाषत बै बानी इक आनी स्वइ उपाय हिय भाय ॥

स० टारि हैं जोनिज टेकन एकहि नेक विवेक न हारि हैं नामी ।
धारि हैं जोन कठोरता चित्त बिसारि हैं नित्तन जो अनुगामी ॥
फारिहैं फेलन पीछिलो जा महँ भारि लिखे तरे कामी हरामी ।
डारिहैं बानिन आपनि तौ क्यहि भांतिन तारिहैं मोकहँस्वामी ॥
जो हरिजी अरजी न सुनै गरजी जनकी तौ कहा करैकोई ।
जा सुनि देशके लेश खिलाफन होत विशेष चहा करैकोई ॥
दास कि आश बिसारी कबौं नहिं केतक सो बदमास हूहोई ।
मारिहै औ दुदकारिहै पैतऊ पार उतारिहै तारिहै सोई ॥

साधु विभीषण की बानी सुनि ज्ञानी कपि बनाय हरषाय ।
बचन सयानी के भाषत भो तुम सब कह्यो यथारथ भाय ॥
यही रीति है रघुनायक की सब दिन करैं दास पर प्रीति ।
दुख हरिलेवैं सुख देवैं बहु सेवैं नीति न सेवैं भीति ॥
कौन कुलीनो मैं बानर कुल खल आचरन पोच सब भाँति ।
चंचल चंचर हत साधन सब पापै करत जांत दिन राति ॥
नाम हमारो लैलेवै जो कबहूं प्रातकाल कोउ भाय ।
मिलै न भोजन त्यहि तादिन कछु असमैं अधम मनोबच काय ॥
सो प्रभु मोहूंपर दायाकरि आरत जानि लीन अपनाय ।
असगुण सुमिरण करि स्वामी को नैनन गयो प्रेम जलछाय ॥
महा मगन मन ह्वै दोऊ गे भरिगो हृदय प्रेम के भाय ।
दशा सो चिंतन करि दोउनकी गिरिजा कहा कछू नहिं जाय ॥
जानि बूझिकै अस स्वामी को जे मति मंद देत बिसराय ।
सो फिरि काहेन दुख पावै जग अन्तहु माथ पीटि पछिताय ॥

स० सब याम हराम के कामकरै इतमाम तमाम धरै पै धरै ।

धन धाम अराम में आमपरै बिसराम कुठाम करै पैकरै ॥
द्विजबंदि अनंदित ह्वै बिचरै मनबामके चाम अरै पै अरै।
हित भाव कुभाव कुसंग सुसंग में रामकहै सो तरै पै तरै ॥

यहि बिधि भाषत रामचंद्र गुण ह्वउ आनन्द माहिं अधिकाय।
लगे हिलोरन प्रेम सिंधु महँ दशा सो कहि न जाय खगराय ॥
घरियक बीते पुनि धीरज धरि कपि असकह्यो सुनो हे माय।
देखन चाहत निज नैनन अब कौनिउँ यतन जानकी माय ॥
हाल बतावो वहि अस्थलकर है ज्यहि ठाम राम की बाम।
काम न पूरण भो स्वामीकर सहज्यहि गई राति द्वै याम ॥
सुनि असबानी कपि ज्ञानी की दई विभीषण युक्ति बताय।
बिदा माँगि कै तब ताहीक्षण तहँ ते चल्यो हर्षि कपि राय ॥
राम लक्ष्मण को सुमिरण करि किय जानकी पगन परणाम।
आय बाटिका के द्वारेपर पहुंच्यो तुरत बीर बल धाम ॥
लख्योबाटिका की शोभा तहँ चहुँदिशि बनी छहर दीवार।
गहिरी खाईं है चारिउ दिशि फाटक लगो पुष्ट अति द्वार ॥
करत कोलाहल बहु निश्चरगण बांधे अतिकराल हथियार।
नियत चौकसी महँ चारिउ दिशि है न उपाय जायबेक्यार ॥
कठिन काम है यहि अरामके भीतर जान माहिं हे राम।
सफल मनोरथ सिद्धि धामकरु रातिउ रही आनि इकयाम ॥

स० शेश सुरेश महेश गणेश धनेश वनेश रमेश खरारी।
देव दिनेश बली नभगेश जगेश नगेश खगेशबिहारी ॥
शुभ्रकला कमलाअमला विमलावरदानि सुबानितिहारी।
वंदि बिनै मनलाय बनाय सहाँय करौ यहि ठायँ हमारी ॥

यहि विधि सबके पदबंदनकरि दशरथनंदन चरण मनाय।
दुष्ट निकंदन कपिनंदन तब रच्यो उपाय बुद्धि सरसाय ॥
एक फलंका महँ शंका विन बंका शूर पूर व्यवसाय।
छहरदिवारी को लंघन करि खाईं पार पहूंच्यो जाय ॥

पूर मनोरथ भो बंदर को अंदर लख्यो सुभग आराम।
ठाम ठाम प्रति अति शोभाकी उमड़ी धूम धाम अभिराम॥
को छबि गावै फुलवारी की प्यारी प्रभा रही दरशाय।
सोने चांदी की क्यारी बहु भारी छटा रहीं सरसाय॥
बूटा काढ़े बहु रतननके हीरालाल जवाहिर जाल।
चमचम चमकैं दीपति दमकैं जमकैं विविध मणिनके माल॥
झुके अनंदन सों वृन्दन द्रुम नन्दन बनहिं रहे सरमाय।
गसे रसीले गुल गुच्छनसों स्वच्छ सुगंधि रही उमड़ाय॥
काम सवाँरी जनु अपने कर न्यारी पाँति पादपन केरि।
तन मन लोभै जन छोभै तहँ थलथल बिमल बनीछबिहेरि॥
वृक्ष हजारन गुलभारनसों डारन झुके रुके भुवि माहिं।
धीर समीरन के झोंकन सों झूमत झुकत झूमि रहिजाहिं॥
विमल चमेलिन अरु वेलिनकी इक दिशिलगी मनोहरपाँति।
कहुँ २ एलिनकी हेलिन महँ लपटे उठैं अनोखी भांति॥
कहुँ २ चंपे द्रुम झंपे बहु उलही जुही एक दिशिझारि।
कहूं नैनियां के झाड़न महँ विकसे सुमन सुमन मुदकारि॥
कहुँ २ गेंदा गुलमेंहँदा के फूले स्वच्छ वृक्ष बहु जाति।
झुण्ड केवड़ा के झुमड़े कहुँ अतिशय सुभग गंधि उमड़ाति॥
कहूं केतकी तर्की अनूपम फूल्यो कहुँ गुलाब वर आब।
मालति मरुआ मौनसिरो की छबि लखि भूलिजातघरजाब॥
स्वच्छ कतारें कल्पबक्ष की कहुँ कचनार अनारन हार।
लगे पलासन के क्वासन बन मानहुँ डारन फरे अँगार॥
खिली नवीनी गुलचीनी कहुँ नरगिस गुलाबास शुचिबास।
कहूं निवारी वरक्यारी महँ कैरहि उज्ज्वल फूल बिकास॥
कहुं २ कुंदन मुचकुंदनकी शोभा अति अपार घनियार।
कतहूं बंदन द्रुम चंदनके कतहूं हरशिंगार के हार॥
कहुँ तिलकालक उद्दालक द्रुम बकुल कदंब वृंद अधिकान।

कहुँ गुलदावदि गुलसब्बो कहुँ रवि आननी घनी घुमड़ान ॥
कहुँ करसैले के फैले द्रुम छैले विष्णुकांता आदि।
लखि मनमोहत हैं देवन कर लागत तिन्हैं चैत्ररथ बादि ॥
लज्जावन्ती की पन्ती कहुँ छायापरे जौन मुरझात।
इक दिशि केला अलबेला के चिकने स्वच्छ बृक्ष दरशात ॥
कहूं अशोकनके थोकनकी पाँति दिखाति छटा छहराति।
कहूं बहारन सहकारन की झुमड़ी झुकी झुड़ीली पांति ॥
श्रीफल सुंदर कहुँ लागे अति कहुं अखरौट बेर बादाम।
पनस सरीफा नारिकेल कहुँ लागे स्वच्छ बृक्ष अभिराम ॥
यहि विधि शोभा फुलवारी की प्यारी देखि बीर हनुमान।
चले अगारी त्यहि देखतफिरि लेखत अति विचित्र निर्मान ॥
कछुक दूरिचलि अवलोक्यो पुनि पूरित बिमल बारिबर ताल।
कमल बिकासे बहुखांसे तहँ बिहरत जल बिहँग बहुजाल ॥
विमल बावली बहुसोहैं तहँ फूले विविध रंग कल्हार।
वृन्दन वृन्दन मकरंदनकी झौरहि अति अपार गुंजार ॥
चकवा चकई सारसादि खग बोलत मधुर २ आवाज।
बैठे डारनपर कोयल पिक करत कलोल बोल शुभसाज ॥
बीच बाटिकाके सोहे बहु सुवरण मयी अनूपम धाम।
अद्भुत रचनाके चितवत खन चक्रित होत चितेरो काम ॥
अटा अटारी गचकारी वर प्यारी प्रभा पसारी चारु।
जड़े अनूपम रतन यतनते दरशत घनी मणिन उजियारु ॥
राति अँध्यारी महँ लागत अस मानहुँ उये हजारन भान।
उन्नति खण्डा चौखण्डाते मानहुँ छुये लेत असमान ॥
किमि कहि गावै कविसबरी छबि पावै कहां इतो बड़ज्ञान।
बिभव बिलोकत यह रावनको तीनों लोक तुच्छ दिखरान ॥
देखि मन्दिरन की शोभा शुभ आगे चले पवन के लाल।
कछुक दूरिपर अवलोक्यो तब बृक्ष अशोक तरे इकख्याल ॥

भुण्ड निश्चरिनके ठाढ़े बहु कीन्हे महारूप बिकराल ।
बाल बढ़ाये फैलाये मुख दीरघ नाक नैन दुउ लाल ॥
मनहुँ अनेकन तनधारनकरि आई मीचु बाटिका माहिं ।
कलबल बोलैं कल्लोलैं बहु डोलैं वृक्ष निकट ते नाहिं ॥
लगे बिचारन कपि वारन तब इत कछु कारन परै दिखाय ।
हमरे मनमा अस आवतहै हैं यहि ठायँ जानकी माय ॥
चित्त चिंतवन करि याबिधि तब तुरत छिपाय आपनो गात ।
उचकि तड़ाका द्रुम ऊपरचढ़ि निरख्यो दृगपसारि सियमात ॥
दुष्ट निश्चरी चौगिर्दा ते घेरे तिन्हैं रहीं डेरवाय ।
श्री जगदम्बा की अवसर वहि शोभा कछू कही नहिं जाय ॥
नैन नवाये अति दुर्बल तन मुखते कढ़त बैन कछु नाहिं ।
परी लटुरिया हैं बारन महँ वेणी एक धरे शिर माहिं ॥
मलिन विभूषण सब अंगन महँ मैले वस्त्र विराजत गात ।
शुक्लपक्ष की शशिरेखा सम अतिकृश अंग अंग दरशात ॥
मुख मुर्झानो सकुचानो सो अंबुज सुमन मनौ कुम्हिलान ।
चलत अश्रुजल कल नैनन ते लागो राम नाम महँ ध्यान ॥
यदपि जानकी अस बिपदाबश दीपति तदपि अमल दरशाय ।
काढ़ि निकारी जनुकीचरते कोमल गात कमलिनी आय ॥
अथवा बरछिन के जंगल महँ बिछुरी बिमल मराली आय ।
परी भीलिनिन बश हरणी जनु वरणी दशा कछू नहिं जाय ॥
रहित हितूजन बिन सीतावे गीता सरिस जासु शुचि गाथ ।
देखि बँदरवा बहु व्याकुलभो कियसि प्रणाम नाय महि माथ ॥
हा ये रघुपति की प्यारी प्रिय जनकनरेश दुलारी सीय ।
भईं अधिकारी यहि विपदाकी हैं निर्दई दई तव हीय ॥
सती शिरोमणि पतिसेवी ये देवी सुमति सुगति शिरताज ।
सुखतजितेऊ दुखपावैंजग बिधि तव सकल व्यतिक्रम काज ॥
बिलसन वारी राज साज की सोवत सदा सुखासन सेज ।

बैठी सीता सो अशोकतर बिधि तव बड़ो कठोर करेज॥
पास न जावें भयलावें जे लखि तसवीर मन्दिरन माहिं।
परीं राक्षसिन वश सीता ते विधि त्वाहिं तनक सलीका नाहिं॥
जिन बन देखा नहिं स्वपन्यो महँ घरतजि गईं न बाहर द्वार।
करैं बसेरा ते जंगल महँ बिधना त्वाहिं हजार धिरकार॥
जन सुखदाता जगमाता यह सोउगै कर्म कीच महँ सानि।
अबहम जानी अनुमानी यह बिधिकी बुधि बनाय सठिआनि॥
है धिक हमरे बलपौरुष को जो हम दुखी लखत सियमाय।
दियो न आयसु रघुनायक कछु करौं उपाय कौन अब हाय॥
नतरु क्षणकमहँ हति निश्चरकुल लंककलंक पंकमहँ सानि।
तोरि दशानन दशआननके हठि लैजात सिया महरानि॥
धन्यबाद पै यह ईश्वरका जो सह कुशल मिलीं सियमाय।
तनिक अबेरा अब लगिहैना लै रघुपतिहि मिलौहौं आय॥
जिन रुचिराखत अभिलाषतअति दिनप्रतिसदालक्ष्मणराम।
बिपति बिलोकौ तिन सीताकी घेरे दुष्ट निश्चरी बाम॥
कानी खोथरी एक कानकी कौनिउँ बिना कानकी रांड़।
ठाढ़े काननकी निश्चरि कोउ मानहुँ महाजहर की भांड़॥
चिपरी लेंगरी यक हाथेकी माथेमाहिं नाशिका लागि।
बड़े मूड़की कोउ लंबीबहु मुखमा धरे प्रज्वलित आगि॥
मूड़खौरहे की निश्चरि कोउ शिरमहँ खड़े बाल बिकराल।
लम्बीडाढ़ी अरु ओठनकी दीरघ दांत आंतकी माल॥
लंबीजंघा द्रुम सांखूसम कुबरी बिकृत रूप इक पावँ।
रूप कराली कोउ कालीतन अति डरलगै सुनेते नावँ॥
शूल बिराजत है काहूकर मूसर धरे काँध कोउ बाम।
माला पहिरे कोउ खोपरिनकी मदिरा पियत हाथलै जाम॥
दुष्ट राक्षसी यहि भांतिनकी चहुंदिशि खड़ीं पांतिकी पाँति।
त्रास दिखावैं सियमाताको जनु तनु धरे अँध्यरिया राति॥

देखि दुर्दशा अस सीताकी हनुमत हृदय लाग पछिताय।
त्यही समइयाके अवसर महँ रावण तहां पहूंच्यो आय॥
रावण आवत लखि बानरबर लघुतन पत्तन माहिं लुकाय।
लगे निशाचरकी देखन छबि भयकर काय जासु दरशाय॥
मुकुट बिराजैं शिर सुवरण के लाजैं जाहि देखि मघवान।
शस्त्र सँभारे भुज बीसौंमहँ आवत करत मद्यको पान॥
मस्तावारन सों गमनत पथ सोहीं तिया हजारन साथ।
मारन आवत जनु बिरहिनको धारन किये धनुष रतिनाथ॥
सुवरण दीपक कोउ बारे कर धारे चली अगारी जाति।
चवँरडुलावति कोउआवति तिय घनसँगयथा बिज्जुदरशाति॥
कंचनझारी लिय नारीकउ कौनिउ व्यजन डुलावति जाय।
कोउ पिचकारी करलीन्हे तिय सींचत पंथ गंधि छिरकाय॥
रतन कलशिया मद पूरित कोउ हाथे धरे जाति बरनारि।
छत्र लगाये कोउ रावणके आवति चली भली सुकुमारि॥
अहै बामदिशि मंदोदरितिय त्यहि छबि कहै कौन कबिगाय।
प्रिय इंद्राणीको लीन्हें सँग मानहुँ इन्द्र अखाड़े जाय॥
आय सन्निकट सियासती के कुमती बैठि गयो मुसकाय।
रूप बिलोकत त्यहि रावणको भयबश कँपन लगीं सियमाय॥
पटझांपि कै द्वउ जंघनते अस्तन दुऔ हाथते छापि।
नैनलगाये निज पायँन महँ बैठीं सिकुरि बस्त्र मुखढाँपि॥
दशा बतावत वहिसमयाकी सियकी होश जात उड़िभाय।
किये इन्द्रियाँ निज काबू महँ हिय बिचरहीं सवँरि रघुराय॥
कटी वृक्षकी बरडारीसम प्यारी दीप्ति गई मुरझाय।
पंकलपेटी मृदुनालिनी इव मलिनी महा बिभासति काय॥
मंत्र औषधादिक करिकै जनु रूंधी जहर भरी अहि नारि।
राहुगरेसी जनु रोहिणि यह भयबश रही मौन मन मारि॥
दुर्जन दूषित बरकीरतिसम महा मलीन दीन दिखरायँ।

अथवा आदर हत श्रद्धाइव चिंताग्रसी बुद्धि जनु आयँ ॥
प्रतिहत आशाइव लागति जनु जागति आगि दिशासीजानि।
ग्रहगणन गाँसी शुक्ल निशासी भासी राम रहित सियरानि ॥
राहु गराँसी सूर्य प्रभासी धारा घटी तटी सी लागि।
छुई श्वपचकी बरबेदी सम खेदी सिंह मृगीसी भागि ॥
बुझी हुताशनकी चोटीसम सीता सुरति सूखि दिखराति।
लाग दुखावन दिल तिनहूंकर खल मलराशि राकसी जाति ॥
लाग बुझावन मृदुबानी ते ज्ञानी सरिस अयानी बात।
सुमुखि सयानी सियरानी तैं मानी कछु न मोरि भयगात ॥
काह समानी मन तुम्हरे महँ जानी कछु न मोरि मर्याद।
प्रीति न आनी कछु हमरी दिशि ठानी हृदय निठुरता बाद ॥
नेह दृष्टि सों अवलोको तुम मम दिशि एक बार करि प्यार।
मंदोदरिलै ये यावत तिय तुव दास्यता करैं स्वीकार ॥
देवि दयाकरु मम अनुचर पर इतना कहा मानि ले म्वार।
शोच बिसारो रघुनायक कर बासी सदा जौन वनक्यार ॥
अहै निर्गुणी त्यहि चाहौ तुम का सुख उदासीन पति माहिं।
यती तपस्वी द्विज दंडी तजि दूसर हितू जासु कउनाहिं ॥

स० दानी अमानीधरे धनुपानी दयाकी निशानी त्रिलोक नसानी।
ऐसे अज्ञानी कि रानी भये तुव शोभहि रानी भई सुखहानी ॥
मानी न बानी अबौंलगि मोरि बहोरि वही हठता उरठानी।
रावणराजकी रानी बनो करैं सेव सती रती बानी मृणानी ॥

महा अपावन शठ रावन की सुनि अति विपति जगावन बात।
प्रभु मनभावन के पावँन महँ कीन्ह्यों ध्यान जानकी मात ॥
तृण बिचवानी करि बोलीं पुनि रेशठ अधम मलिन विनलाज।
का बतियावत मुखलावततैं आवतनाहिं कुकर्म ते बाज ॥

स० केतौ प्रकासकरै जुगनू नलिनीन विकासकरै शशिपाली।
भूरिनछत्र उवैं नभ में विन चन्द न राति सुहात कुचाली ॥

पावसपानिके पाये विना न खुशालीलहै कहुँ शाली कि बाली।
कालकरालपरै कितनौ पैमराली न त्यागत मानस खाली॥

मानु सिखावन मन्द दुर्जनखल आनु न राम बामदिशि ध्यान।
नातरु देरी अबलागति नहिं जल्दिहि जानचहत तुवप्रान॥
स्यार सिंहिनीको चाहै जस गदहा गऊ देखि ललचाय।
शूकर हरिणी दिशिहेरै जस तस तुवदशा भई खलराय॥
राम बानकी सुधि भूली त्वहिं हते मरीच नीच के प्रान।
अमित निशाचर खर दूषण लै क्षणमहँ काटिकीन खरिहान॥
विभव बतावत यह यावत तुव आपन लंक रंक के माहिं।
रहित कलंक मयंक रामके पद रज अंक सरिस है नाहिं॥
सीयसयानी की बानी इमि सुनि जरि उठ्यो दुष्ट को गात।
रिस बश भौंहैं तिरछौंहैं करि लाग्यो कहन करेरी बात॥
अहो जानकी अति अज्ञानकी तैं यह कहे बानि डर डारि।
नहिं अवलोके चंद्रहास यह बांकी धार धरी तरवारि॥
मोर अनादर करि बोलत तैं तोलत रामचंद्र ते घाटि।
देर न करिहौं हनिडरिहौं त्वहिं अबहीं रती रती तनकाटि॥
भलाआपनो कछु चाहति तौ जो कछु कहौं शपदि सो मानि।
आनिकानि तजि वहितपसीकी आतुर बनसि मोरिपटरानि॥
जरीं जानकी ये बातैं सुनि शोषित लगीं फेरि बतलाय।
अरे बेशर्मा वेधर्मा शठ जलपत तनक नाहिं शर्माय॥

स० या असिधारमें सारकहा जो विदारहि शीश हमार अभागे।
हेरखवार सती सतधर्म वही असिधार भले तन त्यागे॥
मैं मनमें हठ ठानिचुकी शठ होत कहा है वृथा तुव वागे।
यातन होय सनाथतबै रघुनाथसे नाथके हाथके लागे॥

सुनि अस बानी सियरानीकी मानी मूढ़ गयो रिसिआय।
खड्ग काढ़िकै कर धायो तब मंदोदरी कह्यो समुझाय॥
यह न शूरता रणशूरनकी छाँड़त वृथा तिया पर हाथ।

कुमति नशानी नहिं अबलग तुव मैं समुझाय हारिगइउँ नाथ ॥
कहे मँदोदरिके मान्यसि कछु तबहूँन हट्यो हृदय ते क्रोध।
दांत पीसिकै तब लाग्यो शठ तुरतै देन निश्चरिन बोध ॥
त्रास दिखावो यहि सीता को औ समुझाय सुझाओ ज्ञान।
कहो न मनिहै इक महिना महँ तौ मैं मारिडारिहौं प्रान ॥
असकहि तुरतै घरगवनाशठ लै सुन्दरी हजारन साथ।
इतै हकीकति जस बीततिभै आगे सुनौ तौन खग नाथ ॥

इतिश्रीभार्गववंशावतंसश्रीमान्मुंशीनवलकिशोरात्मजश्रीमुंशीप्रया-
गनारायणस्याज्ञाभिगामीमसवासीनिवासीपण्डितवंदीदीन
दीक्षितनिर्मितश्रीविजयराघवखण्डेसुन्दरकाण्डे
प्रथमोल्लासः ॥ १ ॥

श्रीरघुनन्दन पदबन्दनकरि सीता चरण हरण दुख ध्याय।
बुद्धिनिधानहिं हनुमानहिं भजि भाषत रामसुयश शुभगाय ॥
शत्रु रोवावन वह रावन उत पहुंच्यो जाय आपने धाम।
इतै निश्चरी एकत्रित ह्वै आईं जनकसुता के ठाम ॥
लगीं दिखावन भय सीताको धरि धरि महारूप विकराल।
हे प्रिय गिरिजा वहि समयाकर मोसन कहोजात नहिं हाल ॥
जटाराक्षसी यह बोलीतब सुनिये जनकसुता मम बानि।
कहो हमारो अब धारोउर काकरि रहिउ वृथा हठ ठानि ॥
ब्रह्माजीके सुत पुलस्त्य ऋषि जिनको विदित जक्त महँ नाम।
तिनके लरिका सबगुण फरिका श्रीविश्रवा तेजके धाम ॥
पुत्र दशानन यह तिनहिनको कीरति जासु जक्त विख्यात।
इन्द्रहु हारे ज्यहि लरिबेते नहिं सुर असुर युद्ध ठहरात ॥
त्यहिकी लंका रजधानी यह आनो इन्द्रपुरी सम नाहिं।
त्यहिकी रानी ह्वै भोगो किन सुन्दर राजभोग सुखमाहिं ॥
जटा कहिचुकी यहिभांतिन जब तब हरिजटा कोप उरधारि।
लागी बोलन सिय मातासे सुनुरी जनकसुता सुकुमारि ॥

जौनें रावन यशपावन ने जीते तीनि लोक अनयास ।
शिव गिरिधारयो यक हाथे महँ लरिका यथा उठावै घास ॥
तौन प्रतापी यह रावण नृप आपनि प्रिय मँदोदरी त्यागि ।
साम सबेरे तुव दर्शन कहँ आवत नित्त नित्त अनुरागि ॥
प्रीति न आनौ तुम तापर कछु ठानौ बृथा मोह मनमाहिं ।
सीख सिखावन नाहिं मानौ कछु जानौ खैर कुशल निज नाहिं ॥
अधम मानुषी त्वाहिं सूझौकह बूझी एक न बात हमारि ।
देर न करिहैं यहि ढंगनमहँ डरिहैं अबहिं राक्षसी मारि ॥
रांड़ हर्जटा यह भाष्यो जब तबहुँ न कछू कह्यो सियरानि ।
महा करालौ तन कालीसी विकटा कहत भई यह बानि ॥
तोहिं सुझावत समुझावत महँ बीत्यो एकयाम बेकाम ।
एक न मानी मनआनी तैं निश्चय जानचहति यमधाम ॥
तोहिं न बूझत यह सूझत कछु बिक्रम कितक रावणा माहिं ।
तपैं न सूरज ज्यहि आगे खर मारुत बहत जोरते नाहिं ॥
वृक्ष गिरावत फल अपनेते ज्यहि दशमाथ केरि रुखपाय ।
झरैं पहारनते झरना अरु मेघा देत पानिबरसाय ॥
तौने रावणकी रानी तुम काहे न होहु प्रीति सरसाय ।
भोगो अभिमत सुख लंका महँ शंका सकल देहु बिसराय ॥
बात हमारी यह गांठीकरि आपन जन्म सुफल करिलेव ।
होहु पियारी नृप रावणकी करिहैं सकल देव तिय सेव ॥
भये तपस्वीकी तिरिया तुम का सुखलहौ देव बतलाय ।
निशिदिन डोलौ बन जंगल महँ सुन्दर जन्म अकारथ जाय ॥
भाषि सुनायो जब बिकटा ने यहिबिधि महा विनिन्दित बानि ।
क्रोधआनिकै तब बोलतभै अति पतिब्रता रामकी रानि ॥
अहो राक्षसिउ मन आवै जो भावै तुम्हैं कहौ सो बात ।
तुमकहँ लज्जा भय नाहीं कछु लोक बिरुद्ध निर्दयी गात ॥
आप बिचारौ नहिं मनमा कछु मुख से कहौ पापकी बानि ।

शुद्धमानुषी कहँ देख्यो तुम कतहूं होत निशाचर रानि ॥
यहि जगजाको ज्यहि प्राणीमहँ बिधि संयोग दीन सिरजाय।
सोई ताके सँग सोहत है मिथ्या किये धर्म नसिजाय॥
यथा इन्द्र के इन्द्राणी सँग औ शशि साथ रोहिणी नारि।
सत्यवान सँग सावित्रीकी शोभा कहत वेद निर्धारि॥
लोपामुद्रा सँग अगस्त्य के औ केशिनी सगर के साथ।
है दमयन्ती नल राजा सँग तैसे मोर स्वामि रघुनाथ॥
महा मलीने छबि हीने अरु दीने होयँ कैसहू राम।
मैं अनुगामी वै स्वामी मम सब दिन सब प्रकार सुखधाम॥

स० आब गुलाब कली कि भली नहिं कीकरडार फलीजब जायकै।
त्योंन सुवंसिनि हंसिनि सोहत हंस विहाय कहूं बक पायकै॥
चांदनि चंदतजै न सजै कहुँ राहु शनिश्चरके सँग आयकै।
हाल हमार विचारहु त्यों तुमकाकरिहौ समुझाय बुझायकै॥

यहि बिधि भाष्यो सियमैया जब भैया सुनौ हाल तिनक्यार।
ससुरी असुरी अति क्रोधितह्वै लागीं धरन रूप बिकरार॥
दंत कटकटाकरि नकटामुख बायहुवाय ओंठ फैलाय।
दौरीं बौरीसी एकैसँग लेहैं मनहुं सीय कहँ खाय॥
कांपन लागीं जगदम्बा तब भय वश अंग उठे थर्राय।
सुमिरण लागीं तब स्वामीको हे रघुराय दया दरिआय॥
हाय हमारी यहि हालतिपर तुम कहँ दया न आवति राम।
कस बिसरायो यहि दासिनिको आरत हरण शरण सुखधाम॥
देखि दुर्दशा यह सीता की करत बिलाप भूरि संताप।
जागी त्रिजटा तहँ सोवतते लागी बचन कहन तब आप॥
सुनौ निशचरिउ ममबानी इक धीरज धरौ क्रोध बिसराय।
वृथा सतावौ जनि सीताको ये शुचि सती बचन मन काय॥
इनकी सेवाते पैहौ सुख दुखके दिहे लगै दुख हाथ।
ये तिय नामी उन स्वामी की जे जगनाथ नाथ रघुनाथ॥

आजु सपनवाँ मैं दीख्यों इक ताकर हाल सुनौ मन लाय।
कछु दिन बीते फुर ह्वैहै सो यामहँ तनिक झूंठ नहिं माय॥
यहि बिधि त्रिजटा की बानी सुनि ससुरी सबै उठीं थर्राय।
हाथ जोरिकै यह पूंछत भइँ माई कहौ सपन समुझाय॥
धीरज दैकै तब सीताको त्रिजटा कहत भई असबात।
कहौं हकीकति का सपनाकी महिंका सपनु सांचु दिखरात॥
उज्ज्वल शिविका परमानहुँ चढ़ि आये राम लषण यहिठाम।
उज्ज्वल अंबर तनमा पहिरे धारे हृदय माल अभिराम॥
फेरिबिलोक्यों कछु बेरिया महँ मानहुँ चढ़े श्वेत रथ माहिं।
दोनौं भाई रघुराई ते आये मुदित जानकी पाहिं॥
बाहँ पकरिकै इन सीताकी पुनि रथ ऊपर लयो चढ़ाय।
तुरतै गमने दिशि उत्तरका बिहँसत मन्द मन्द मुसक्याय॥
सुनौ हकीकति अब रावणकी जो मैं दीखि स्वपनके माहिं।
निश्चै आतुर फुरह्वैहै सो महिंका जानि परति शकनाहिं॥
बार मुड़ाये सब मूड़के पोते तेल मनहुँ सब गात।
पहिने कपड़ा सब लाले तन काले सकल अंग दिखरात॥
कँदइल फूलनकी माला हिय चन्दन लाल लगाये माथ।
चढ़ो गदहना पर रोवत सो दक्षिण दिशहि जांत बिकलात॥
थोड़ी बेरिया महँ देख्यों पुनि मानहुँ एक बँदरवा आय।
आगि लगायसि सब लंकामहँ मास्यासि बहुत निशाचर माय॥
यावत राकस खल लंकामहँ सो सब भागिगये यमद्वार।
साधु विभीषणने पायो जनु लंकाधिपति केर अधिकार॥
फिरी दोहाई रघुराईकै लंक कलंक गयो सब भागि।
इतनो स्वपना लखिहकबाकिसी फिरि मैं परिउँ अचानक जागि॥
मोरे मनमा अस आवतहै यह न असत्य होय क्यहु भांति।
ताते तुमका समुझावतिहौं सेवो सिया सकल दिन राति॥
सुनिकै त्रिजटाकी बानी इमि सब निश्चरी हृदय डर पाय।

गिरीं जानकीके पायँनमहँ कलबल करब भूलि सब जाय ॥
अंजुलि बांधे सब ठाढ़ी रहिं थोरिक ठ्यार जानकी पास।
फिरि समुझाये ते त्रिजटाके इत उत गईं त्यागि भय आस ॥
शोक समान्यो तब सीताउर प्रथमैं कह्यो जौन दशमाथ।
कहो न मनिहै इक महिना महँ तौ मारिहौं आपने हाथ ॥
यह बिचारि उरसंदेहित ह्वै रोवन लगीं महा बिलखाय।
एक महीना के बीतेपर म्वहिं मारिहै निशाचर राय ॥
हे रघुनन्दन जन चन्दन तुम मोकहँ तज्यो कौन अपराधु।
ऐसिउ समया महँ आवत नहिं गावत तुम्हैं दयाकर साधु ॥
माता त्रिजटा दुख संगिनितैं मोरि छुटाउ बिपतिकी फांस।
चिता बिरचिदे धरि आगीतौ जारि यह करौं अधम तननास ॥
दुर्लभ दर्शन यहि तनमा अब स्वामीकेर लीन मैं जानि।
फिरिकाकरिहौं दुखपरिहौं हठि मरिहौं श्रवण शूल सम बानि ॥
सुनि असबानी सियरानीकी त्रिजटा कह्यो सबिधि समुझाय।
मिलिबो अनुचित है आगी को निशि में सुनौ जानकी माय ॥
धीरज धारौ गुनि हिरदयमहँ देखौ काहकरत हैं राम।
अस कहि अज्ञा लै सीताते त्रिजटा गईं आपने धाम ॥
बिलखनलागी जगदम्बा पुनि जागी प्रभु बियोग हिय आगि।
रोवत धोवत चष आँशुनते लखि दुख दुखौ जाय हठिभागि ॥
सत्य कहतहैं यह पण्डितजन मीचौ मिलत चहेपर नाहिं।
प्रान अभागे नहिं त्यागततन ऐसिउ कठिन दुर्दशा माहिं ॥
पोढ़ा वज्रौते हिरदय मम अब दिखरायपरत म्वहिं हाय।
बिन रघुनन्दन दुखफन्दनपरि निर्दय फटि न जाय धिक्खाय ॥
मीचु हमारी है रावणकर यह सारांश लीन मैं जानि।
नतरु सिधौतीं प्रभु औतीं इत लेतीं म्वहिं बचाय धनुपानि ॥
मारिउडारै जो रावण म्वहिं तौ अब करै नीक बहु काम।
मिथ्याजीहौंकै करिबेका जो ना मिले राम सुखधाम ॥

यहौ बिचारितहै अपने जिय जीवत होत स्वामि दुउ भाय।
शंक न लौतीं कछु अपने जिय औतीं तुरत लंक महँ धाय॥
मृगतनधारी निशिचारी ने मारे दूऊ भाय रघुराय।
चलत न देखन मुख पायों मैं बरबस मही दिह्यों पठवाय।
हा सत्यब्रत रघुनायक तुम मारे गयो मोर हित लागि।
सुखद्चरित्रे सौमित्रे हा म्वहिं तजि कहांगयो तुम भागि॥
हाय गोहारी नहिं लागतकोउ यहिक्षन मोर देखि दुखग्राम।
मिलै न आगिउ इत ढूंढ़े कहँ सबबिधि भयो बिधाताबाम॥
प्रकट अँगारे बहु अंबरमहँ गिरि नहिं परत एक मम पास॥
जाते अपनो यह निन्दिततन जरिबरि करत बेगिही नास॥
नीच चन्द्रमा यह पावक मय मांगे सोऊ देत नहिं आगि।
अहै बियोगिन दुखदायक यह दूसर लखत मोहिं हतभागि॥
हे अशोकतरु मम बिनती सुनि आपन सत्य करौ तुम नाम।
कोमल पत्ता तुव आगीसम दैम्वहिं करौ नीक बड़ काम॥
सुनि असबानी सियरानी की ज्ञानी कपि बिचार उरधारि।
जानि सुअवसर लखि लीन्ह्योभल दीन्ह्यो बिमल मुद्रिकाडारि॥
जनु अशोक तरुकरि करुणाउर सियहित डारिदीन अँगार।
परी सो आगे जगदम्बाके लीनि उठाय कीनि नहिं बार॥
यह तो शीतल बहुलागीकर आगी कैसि अहो भगवान।
दृष्टि निहास्यो शक टास्यो तब अति सुन्दरी मुन्दरी जान॥
उलटि पुलटिकै पुनि देख्यो त्यहि मणि नगजड़ीबड़ी अभिराम।
भई सशंकित तब हिरदयमहँ अंकित बाँचि राम को नाम॥
यह तो मुँदरी पिय राघवकी पहिरे लड़कपने ते हाथ।
सो अब बिछुरी क्यहि कारणते छोंड़्यो ककस स्वामिको साथ॥
जीति न पावै कउ रघुपतिको सब बिधि अजय तीनि पुर माहिं।
फिरि यह कैसेकै आई इत कारण जानि परत कछु नाहिं॥
जाय बनाई नहिं मायाते ऐसी असल वस्तु क्यहु भांति।

फिरिकोलायोयहिअस्थलमहँ क्यहिविधिलहौं कुशलकीपांति ॥
यह चितचिंतन करि सीता पुनि वहि मुँदरी सन लगीं बताय।
अहो मुद्रिका तुम आइउ कस तजि सुखदाय स्वामि रघुराय ॥
रीति पतिब्रततुमछाँड़्यो कस कीन्ह्यों अतिअयोग्य यहकाम।
मो मन शंका बहु उपजति है होत न क्यहु प्रकार बिश्राम ॥

स० मोमन कैस्यहु धीरधरै न भरै उरभीर करै मति कुंदरी।
दुर्गममारग माड़ि महावन छाँड़ि पहारनकी बहु तुंदरी ॥
गौनकियो इतकौनसे काज गहौ जनिमौन कहौ सबसुंदरी।
कौनदशा गुदरी मुँदरी कहु कैसे तरी उतरी तु समुंदरी ॥

कौन लयायो त्वहिं मोरे ढिग ताकर वेगि बतावहु नाम।
गम्य न काहूके आवनकी है सखि महाकठिन यह ठाम ॥
असकहि ऊपरको ताक्यो पुनि बंदरदीख बैठ इकडार।
भई सशंकित चितअंदर तब को यह कपटरूप कर्तार ॥
पूंछनलागीं पुनि हनुमतते दृढ़करि चित्तरोष उरआनि।
को तू बानरतन आयो इत मोकहँ छली परत अनुमानि ॥
यक्ष गन्धरब कै चारण तू कै कोउ सिद्ध सुरासुर माहिं।
रूपबनाये इत बांदरको आये मोहिं छलन शकनाहिं ॥
चित्त अपावन कै रावन तू धारे कपटरूप करिपाप।
हाल आपनो कहु बेगिहि सब नातरु देत भयानक शाप ॥
सीयसयानी की बानी सुनि ज्ञानी कपिउ समय शुभपाय।
उतरि तड़ाका तरुऊपर ते सियसामुहें ठाढ़भो आय ॥
हाथजोरिकै द्वउपायँन महँ कीन्ह्यों माथनाय परणाम।
हालबतावन निजलाग्यो फिरि है हनुमान मातु मम नाम ॥
मैंहौं पायक रघुनायकको लायक सब प्रकार जो आहिं।
पूत पवनको म्वहिं जानौ तुम मानौ सहीसकल शकनाहिं ॥
मातु मुद्रिका यह आनी मैं तुमकहँ राम निशानी दीन्हि।
मोहिं सँदेशा हितपठयो है तुम्हरे पास दासहित चीन्हि ॥

कह्यो बार्ता जब बानर यह तबसिय कस्यो कछुक बिश्वास।
फिरि असपूछ्यो बातजातते जो शुचिगात रामको दास॥
किन रघुनायक के पायक तुम तिनकर कहो नाम कुलग्राम।
चिह्नबतावो कछु उनके म्वहिं हैं कै भ्रात तात कहनाम॥
सुनि बरबानी महरानी की ज्ञानी कपिप्रमोद सरसाय।
अतिव अमोले बचबोले तब घोले अमल अमी समभाय॥
उन रघुनायक के पायक हम नायक जौन चराचर क्यार।
कर धनुशायक धरलायक बर घायक शत्रु सहित परिवार॥
दास सहायक सुखदायक सब गायक करत गुणनको गान।
शुद्ध सुभायक मृगनायक सम प्रबल प्रताप भानुकुलभान॥
श्री दशस्यन्दन के नन्दन प्रभु बन्दन करत अमर जिनपायँ।
राजा रघुके परनाती अरु नाती अजभुवाल के आयँ॥
नगर अयोध्या के भूपति बर नृप मणि मुकुट राज शिरताज।
बसुधामण्डन खलखण्डन भट जिनकी बँधी बिरद जगआज॥
मातु कौशला की कोषी ते सब सुखधाम अरामद नाम।
शशि ललाम सम सुभग काम सम प्रगटे रामचन्द्र अभिराम॥
मातु केकयी की कोषी ते सम्भव भये भरत महराज।
गावत जिनकर यश रातिउ दिन साधु समाज मध्य रघुराज॥
लषण शत्रुहन ये बालक द्वउ पालक राम प्रीति रस भाव।
मातु सुमित्रा के जाये बर आये बनै लषण जिन नावँ॥
श्रीरघुनन्दन तन लक्षन मैं इक मुख भाषि सकों नहिं माय।
शिव सहसानन चतुराननमति जिनके कहति माहिं सकुचाय॥
पदरजडारी मुनिनारी तन पाहन भइ जौन लहिशाप।
करि अविकारी हरितारी त्यहिभारी चरण कमल परताप॥
बाल अवस्था महँ नाश्यो जिन एकै बान ताडुका प्रान।
नीचमरीचहि पहुँचावत भे क्षनमहँ समुदपार शरतान॥
अमित राकसन सहमाख्यो पुनि अतिव उमाहु भरो शुभबाहु।

मुनिमखराख्यो अभिलाख्यो अतिमुनियन हृदय भख्यो उतसाहु॥
शिव धनुतोख्यो पुरमिथिलामहँ शिथिला कियो नृपनकीआश।
मान मरोख्यो अभिमानिन कर भृगुपति गर्व सर्व कियनाश॥
जनक महीपतिको पूख्यो प्रण सहित उछाह कीन तुवव्याह।
श्री दशस्यन्दन के नन्दनप्रभु सुरनरनाह सिद्धि सुखशाह॥

षट्पद॥

अंबुज दाम ललाम श्याम सम श्याम शरीरं।
मुखमयंक अकलंक शंकहरधर बरधीरं॥
भुजबिशाल खलकालशाल करजन मनपीरं।
परिधन मुनि तन बसन लसन कटितट तूणीरं॥
धनुतीर धरनकर भीरहर करनभरन उद्भवमरन।
जलदवरन अशरन शरन चरनचारु मंगलकरन॥

उत्तम बानी कपि ज्ञानीकी सुनि पुनि सिया सती सहुलास।
मनसि ध्यानधरि हरि सुजानको लागीं ढरन नयनते आंस॥
फिरि धरिधीरज कछु हिरदयमहँ हरिसन कह्यो बचन सुखरास।
हेबर बानर तुव बातन महँ मोहिं न तनक होत बिसवास॥
कहौ हकीकति अब मोसन तुम पूछत जौन तौन समुझाय॥
परै भरोसा तब जियरे महँ की यह राम दूत सच आय॥
भई बानरन की संगति कस औ क्यहि ठाम राम ते तात।
सो समुझाओ कहि गाओ सब लाओ तनिक शंक नहिं गात॥
कह्यो जानकी जबं याविधि बच तब हनुमान हृदय हरषाय।
लाग बुझावन प्रभु गाथा सब सहज सुभाय सत्य सरसाय॥
सुनु महरानी मम बानी तैं जानी कहत जहांलग बात।
भूप अयोध्याधिप दशरथके रानी तीनि मुख्य विख्यात॥
प्रथम कौशला दिशि प्राचीसम प्रगटे जहां राम शशिचारु।
केकय कन्या तिय मांझिलिहै अति प्रिय नृपहि प्राण आधारु॥
मातु सुमित्राहैं लहुरी तिय हिय अस समुझि लेहु महरानि।

सती शिरोमणि ये तीनिउँ तिय शील सनेह बुद्धिकी खानि ॥
एक समैया के अवसर महँ कारण पर्यो आनि असमाय ।
देव दानवनने आपुस महँ ठानी रारि महारिस छाय ॥
तौन लड़ाई महँ हारे सुर तिन दशरथते चही सहाय ।
बड़े महारथ रघुवंशिन महँ बिक्रम जासु बरणि नहिं जाय ॥
भये सहायक ते देवनके आपनि अनी घनी लैसाथ ।
लरे बहुत दिन लगि संगररचि असुरन संग अयोध्यानाथ ॥
गई केकई नृप साथै तहँ देखन महा भयानक रारि ।
बहु सुख दीन्ह्यसि तहँ भूपति कहँ कहैको कथा तौन विस्तारि ॥
परमानन्दित कै दशरथ त्यहि दीन्ह्यों तहैं उभै वरदान ।
जीति दानवनकहँ आये पुनि पुर आपने प्रजाके प्रान ॥
यहौ हकीकति अस बीततिभै कौतुक सुनौ अगारी क्यार ।
गये तीनिपन नृप दशरथके भोगत राज्य भोग अधिकार ॥
गतभे संबत नौहजार इमि विलसत इन्द्र सरिस शुभराज ।
पुरजन परिजन प्रतिपाल्यो बहु कीन्ह्यों धर्म पुण्य के काज ॥
शील सयानी सुख खानी बहु रानी सात शतक पञ्चास ।
पुत्र न जायो तिन एकहुने नेकहु शेषरही नहिं आस ॥
तिया सुधन्या इक तिनहिन में कन्या भूप भार्गव केरि ।
सुता बियानी इक रानीसो भाषत हेमलता ज्यहि टेरि ॥
पुत्र न पैदा भो काहूके आगे वंश बढ़ावनहार ।
भई अँदेशा मन दशरथ के सुत बिन सून देखि परिवार ॥
इक दिन भूपति मन आई अस होनी अवशि होय शकनाहिं ।
मृगया खेलन गे सैनासह तमसा नदी निकट बन माहिं ॥
डेरा परिगे वहि तमसा तट राजा टिके तहां पर जाय ।
जो जो अस्थल ज्यहि लायकरह तहँगज बाजि दीन बँधवाय ॥
तहां अपूरब इक कौतुकभो माता सुनौ धारिकै ध्यान ।
बसै अंधमुनि वहि जंगल महँ दंपति नयनहीन यह जान ॥

अकिलो लरिका तिन दोउनके सरवन नाम प्राण आधार।
तनमन सेवक पितु माता को जानत नहीं द्वितिय व्यवहार॥
भये पियासे पितु माता दुउ सुतते कह्यो पियावहु पानि।
रहै न वहि क्षन जल अस्थल महँ तब यह कही पुत्रने बानि॥
रह्यो न पानी पितु आश्रम महँ घरियक धीरधरौ मन माहिं।
घटभरि लावत मैं तमसा ते आवत अबहिं देर कछु नाहिं॥
असकहि सरवन घट झटपटलै तमसा भरन गयो बरबारि।
नृपके डेरा त्यहि नदिया तट इत उत परे सुभट सब झारि॥
लाग्यो भरिबेवन सरवनतब घटते भई भभक आवाज।
सुन्यो सोकानन ते दशरथ नृप जान्यो अवशि आय गजराज॥
तबहिं तड़ाका धनु धारनकरि मास्यो शब्द बेधि बरबान।
आय समान्यो सो सरवनउर गिस्यो उतान कंठगत प्रान॥
हाय उचास्यो रत आरतस्वर सो सुनि भूप सनाका खाय।
देर न लायो उठिधायो सो आयो नदी तीर सकुचाय॥
देखो अंधक सुत डारो उत आरोपार बिधो शरगात।
नैन उघारत अरु मूंदतहै आरत दशा फँसा दरशात॥
बचन न आवत कहि आननते अतिव मलीन दीन भइ काय।
हाल बिहालक मुनि बालक लखि नृप उर गयो शोक तम छाय॥
ठाढ़ समीपै अवनीपै लखि मुनिसुत हाथ अंजुली बांधि।
कस्यो इशारा जल पीबे कहँ कहि नहिं सकत व्याधि बिन साधि॥
बारि अंजुली महँ तुरतै भरि भूपति दीन तासु मुख डारि।
चेत आयगो तब बालक को ताक्यो नृप दिशि नयन उघारि॥
भई बिकलता तब राजा के शोचन लग्यो माथ धरि हाथ।
कुत्सित कारज मैं कीन्ह्यों यह लीन्ह्यों बेसहि पाप की पाथ॥
अनहक मास्यों मुनि बालक यह धास्यों उर बिचार कछु नाहिं।
जन्म बिगास्यों निज हाथन ते अयशी भयों आजु जग माहिं॥
यहिबिधि शोचत जल मोचत दृग अवधभुवाल देखि बेहाल।

तिन्हैं बुझावन हित पावन बच बोलत भयो अंधमुनिबाल ॥
शोच न करिये मनभूपति बर धरिये उरबिचार कछु नाहिं।
शाप न तुम कहँ मैं देहौं कछु लेहौं आप भोगि तनमाहिं ॥
लिखी बिधाताकी मेटैको भेंटै अवशि अचानक आय।
प्रथम जन्मकी सुधिआई म्वहिं सो मैं कहौं सुनौनरराय ॥
पूर्वजन्मको नृपबालक मैं घालक अमित जन्तु खगआदि।
नितप्रति धनुशरकर धारण करिमारे बिबिधजीव मैं बादि ॥
भयो निर्दई मम हिरदय बहु यहि बिधि गयो बीति कछुकाल।
एक दिनौनाको भूपतिबर तुम कहँ अजब सुनावत हाल ॥
लख्यों कबूतर इक बिरवापर दम्पति बैठ प्रेमके भाय।
मैं शरधारण करि ताहीक्षण दियो कपोत अंग बड़घाय ॥
गिस्यो लुढ़िकिकै वह धरतीपर बोल्यो मरत समय यह बात।
जन्म दूसरे महँ भूपति सुत तुम्हरिउ होय यही विधि घात ॥
सोई समया प्रगटानी यह बानी तासु सत्य भइ आज।
वाण अचानक तुम मास्यो म्वहिं धर्म समाज सेतु नरराज ॥
अन्ध हमारे पितु माता द्वउ श्रीफल बिपिन माहिं है बास।
लैघट भरिबे जल तमसा तट आयों तिन्हैं लागि बड़ि प्यास ॥
अन्धी अन्धा को मैंहीं इक रहौं कुमार प्राण आधार।
पालन करिहै को तिनकर अब हरिहै कौन बिपतिको भार ॥
होत पियासे तब प्यावत जल बनफल लायदेत आहार।
कोअब तिनकर दुखदेखै बिधि रेखै कौन मिटावनहार ॥
हा पितु माता को त्राता मैं सो इत गयो अचाका मारि।
डगर निहारत द्वउ ह्वैहैं अब आवनचहत पूत लै बारि ॥
खबरि हमारी के पावत खन तुरतै तजैं द्वऊ जन प्रान।
वृद्धावस्था महँ तिनकहँ यह अनहक परी आपदा आन ॥
हे नृप मोकहँ पहुँचावो उत लावो कछु बिलंब अब नाहिं।
पानि पियावो तिन दुखियनको पावो अतिव पुण्य जगमाहिं ॥

इतना कहिकै मुनिबालक वह भो बिन प्रान जानकी माय।
लखि यह करणी नृपतरणी कुल मनमें बहुतलाग पछिताय॥
कापछितायेते आवत कर होनी हती भई सो आय।
दाग बुढ़ापा महँ लाग्यो यह पाग्यो हृदय पाप पथहाय॥
यहिबिधि चिंतन करि राजा पुनि मुनिसुत मृतक देहधरिकंध।
जल परिपूरित घटहाथे गहि वहिदिशिचले रहत जहँ अंध॥
इतै हकीकति अस बीततिभै उत अब सुनौ अन्धको हाल।
मारग हेरा बड़ि बेरालग आयो जब न लौटि प्रियबाल॥
लगे बिचारन तब दंपति मन कारन भयो आजु यह काह।
जल फल लायो नहिं आयो सुत छायो कहां छोड़ि मम चाह॥
यहै बिचारत उर धारततब फरक्यो बाम इतर दृग बाम।
जानि अमंगल ग्लानि मानिमन शोचति अशुभ काहयह राम॥
लगी बतावन पति अपनेते फरकति मोरि अमंगल आंखि।
अबलौ बनते सुत आयोनहिं छायो उतै कहा मनमाखि॥
कही बतकही सुनि तिरियाकी रही न धीर जासु उरमाहिं।
अन्ध रिसायो समुझायो त्यहि तिय त्वहिं तनक सलीका नाहिं॥
संशय करिबे को कारण कह शोचत वृथा बुद्धिहत नारि।
यह न बिचारत मन अपने महँ गोबन सुवन लेन फलबारि॥
पावत औरेदिन निकटै महँ आवत चलो शीघ्र त्यहि हेत।
आजु न पायो कछु अन्तिक महँ ताते गयो दूरि चित चेत॥
देर लागिबे को कारण यहि धारण करत शोच क्यों गात।
शंक निवारण करु हिरदय ते आवत घरी एक महँ तात॥
यहि बिधि दंपति दूउ आपुस महँ सुत तन बँधे नेहकी दाम।
समय बितावत बतियावत तहँ सुमिरत बार बार सुतनाम॥
तबलौं पहुंचे नृप वाही थल कांधे धरे मृतक मुनिबाल।
रहिगो अंतर तनक दूरिको दम्पति जहां बैठ बेहाल॥
धीरे धीरे तब गमने नृप मग पग परे सुखाने पात।

खरभरात सो सुनि अंधकमुनि जान्यो आय गयो प्रियतात ॥
लागे कहिबे पितु माता तब सुत तुम आजु देर कहँ कीन ।
सुधि बिसरायो नहिं आयो त्वर भूख पियास दुःख बहु दीन ॥
कबहुँ न लागत अस समयो त्वहिं कारण भयो आजु कह तात ।
रहन उपासे दुइ दिन के हम जल फल बिना प्राण अब जात ॥
बोलत काहे नहिं साधी चुप यहि बिधि हँसी करत है कोय ।
सुनि अस बानी उन दुखियन की दशरथ दियो दृगनते रोय ॥
कहिनाहिं आवतवहि अवसरकछु दंपतिदशा दुखित अवलोकि ।
जो किनिरत अति सुतसनेह महँ बिलपत भूंख प्यास उररोंकि ॥
लौटेपाछे दुखकाछे नृप तब पुनि कह्यो अन्ध मुनि बानि ।
आजु सुहानी सुत तोकोकह जो अस हँसी करत हठठानि ॥
नेह बिसार्यो पितु माता कर मार्यो भूंख प्यास महँ प्रान ।
लाय पियावोजल आतुर अब चातुर पुत्र कहो मम मान ॥
यहिबिधि भाष्यो पुनि अन्धक मुनि तबहुं न पुत्रदीन कछुज्वाब ।
शंक समानी तब हिरदय महँ पानी बिना प्रान बेताब ॥
ध्यान लगायो तब अन्धक मुनि पायो नृपचरित्र सबजानि ।
सुत विनशायो शरबेधन करि लायो इतै तौन शवपानि ॥
शिर धुनि रोवन तब लाग्यो मुनि हे सुत कहां गयो म्वहिंत्यागि ।
दुष्ट महीपति ने मार्यो त्वहिं जार्यो मोहिं वृथा बिरहागि ॥
क्षत्रि बंध तैं यह नीको कछु कीन्हे नहीं जगत महँ काम ।
दीन्हे अतिशै दुख दुखियन को लीन्हे अयश न चीन्हे नाम ॥
मारि गिराये सुत शरते मम करते वृथा कमाये पाप ।
हृदय दुखाये सम दुखियन के ताये पुत्र शोक की ताप ॥
कहि अस बैनन लै नैनन जल दीन्ह्यो महाराज को शाप ।
पुत्र शोकबश जस बिनशत हम तस सुत शोक मरहु तुम आप ॥
ज्यहि बिधि दम्पति दुखपायो हम सुतके शोच होत तनहानि ।
अन्तावस्था महँ तुम कहँ तस परिहै पुत्र विरह दुखजानि ॥

सुनि असबानी मुनि ज्ञानीकी दशरथ अकथ अनंदहि पाय।
कह्यो कि होवे यह निश्चय करि जो कछु कही सही मुनिराय॥
प्रथम पुत्र को मुख पावों लखि फिरि नाहिं शोच गवाँवों प्रान।
शाप न दीन्ह्यों यह भगवन तुम दीन्ह्यों मोहिं पुत्र बरदान॥
भूप बार्ता सुनि याबिधि मुनि गुनि मन लख्यो भूप की भागि।
योग न एको सुत पावन को नृप की जरठ अवस्था लागि॥
अन्ध तपस्वी तब दशरथ ते भाषत भयो सत्य सब हाल।
शाप हमारी सुखकारी तोहिं भई भुवाल दानि शुभ बाल॥
माँगिपुत्र शवपुनि भूपतिते कंठलगाय ध्याय हरिनाम।
क्षणमहँ तनतजि मुनि दम्पति द्वउ गे चलि अमरराजके धाम॥
दशरथ दुःखित ह्वै अवसर त्यहि चिताबनाय मृतकपोढ़ाय।
अनल जलायो उनतीनिउँ कहँ पुनि निजठाम पहूंचे आय॥
आय अयोध्या महँ भूपतिपुनि गुरुसन कह्योसकल यह हाल।
काल व्यतीतो बहुयाबिधि तब आयो समय सुदायक बाल॥
यज्ञ कराई तब मुनियनने प्रकटे चारि पुत्र अभिराम।
रामलषण अरु भरतशत्रुहन सुन्दर नाम विदित जगआम॥
उतपति इनकी बतलायों मैं प्रथमैं तुम्हें जानकी माय।
कहों हकीकति अब आगेकी सुनिये सावधान मनलाय॥
व्याह तुम्हारो करि रघुबर पुनि घरमहँ कियो कछूदिन बास।
राजिदेन हित तिन राघवको भूपति कियो हृदय महँ आस॥
गुरु अरु सचिवनते सम्मतलै कीन्ह्यों तिलक हेत सामान।
तबहिं केकयीने कोपित ह्वै नृपसे लहे उभै बरदान॥
एक भरतको मिलै राजपद दुसरे रामचन्द्र बनजायँ।
असबरदैके वहिकेकयी को भूपति हृदय बहुत पछितायँ॥
सुन्यो हकीकति यह रघुपति जब तब पितुबचन मानिबेकाज।
तन महँ वल्कलपट धारणकरि गमने बनहिं त्यागिकै राज॥
तुमहूं गमनिउँ प्रभुसाथै महँ भाई लषण चले बरिआय।

भई उदासी बहुनगरी महँ सगरी प्रजा उठीअकुलाय॥
देखत बनकी शुभशोभा पुनि अरु मुनियनते करत मिलाप।
बसे आयकै चित्रकूटमहँ सीतालषण सहित प्रभु आप॥
प्यारे सुतको बनगमनब सुनि तापस अंधशाप अनुसार।
राजा दशरथ तन त्याग्यो पुनि जाग्यो हियेशोक बिकरार॥
भरत सँदेशा जब पायो यह आयो अवध छाँड़ि ननिहाल।
रामचंद्रको बनगमनब सुनि अरुभूपाल कालको हाल॥
भयोदुखारी महतारी की करणी विपति मूल सबजानि।
क्रिया सवाँस्यो नृपदशरथ की सब बिधि लोक बेदमतठानि॥
पुनि चलिआये रघुनन्दनाढिग पुरजन तात मातलैसाथ।
हित करिभेंव्यो प्रियभाई को मेव्यो बिरह गिरहकी गाथ॥
चित्रकूट महँ रहिकै यकदिन पुनि प्रभुचरण पीठ शिरधारि।
पलटि अयोध्या महँ आये तब निवसे नंदिग्राम दुखगारि॥
इतकी हालति यह गाई हम उतकर सुनौ चरित अबमाय।
चित्रकूट महँ रघुनन्दन जब बहुदिन बसे स्वच्छ थलपाय॥
इकदिन आयो तहँ सुरपति सुत महा उच्छिष्ट रूपधरिकाग।
चोंच मारिकै तुवपाये महँ फिरिखल डरपि तहांते भाग॥
हाल जानिकै रघुनायक यह रिसकरि तज्यो बाण बिकराल।
उईँ पछिआवा खल कागाको जागा मनहुँ अग्निकी ज्वाल॥
तीनिउँ लोकन महँ आवाभ्रमि पावा कउ न अपन रखवार।
हाल बतावा तब नारदते जो कछुकीन दुष्ट ब्यवहार॥
उन समुझावा बहु कुमतीको पठवा फेरि रामके पास।
आवा शरणागत ताकोलखि कीन्ह्यों प्रभुन प्राणको नास॥
एक नयन बिन करि छाँड़्यो त्यहि होई तुम्हैं बिदित यहहाल।
अन्तपधारे पुनि तहँ ते प्रभु लै सँग लषण जानकी बाल॥
भेंटि अत्रिमुनि पुनि आनँद सह मारग माहिं विराधहि मारि।
देत अनेकन सुख मुनियनकहँ आये पञ्चवटी चितधारि॥

कियो बसेरा तहँ कूटीरचि जूटी अति अनंद त्यहिठाम ।
लूटी बिपदा निजदासनकी फूटी भागिहते जेबाम ॥
कछु दिन बीते पर आई तहँ निश्चरि शुर्पणखा प्रभुपास ।
मीचु बुलाई जनु दुष्टन की चाहतहोन बेगिही नास ॥
प्रभुअज्ञा ते त्यहि दुष्टाके काटे लषण नाक औ कान ।
पुनि खर दूषण त्रिशिरादिक लैराकस अमित किये बिनप्रान ॥
हिरणा मास्यो पुनि राघवने तुम्हरो हरण भयो त्यहि साथ ।
लौटि आश्रम महँआये तब तुमबिन दुखीभये रघुनाथ ॥
ढूंढ़न लागे गिरिकानन महँ तुमकहँ खोजि २ द्वउभाय ।
पता न पायो दुखछायो बहु गे तुव बिरह माहिं अकुलाय ॥
खोजत खोजत गे आगेतब लख्यो जटायुकेर सब हाल ।
ताहि स्वर्ग दै अरु किरियाकै आगे हत्यो कबंध कराल ॥
फिरिगे शवरीके आश्रम महँ ताकर जन्म सफल करि राम ।
धाम आपने महँ पठयोत्यहि आयो ऋष्यमूक गिरि ठाम ॥
तहां मित्रता करि कपिपति ते कीन्ह्यों बालि प्राणको नाश ।
भये सहायक सुग्रीवौ तब पूरण होन हेत प्रभुआश ॥
कोटिन बानर बुलवाये तब चारिउ दिशा दीन पठवाय ।
खोजलगावन हित सीताको तिनमहँ एक महूँ हौं माय ॥
यहि बिधि संगति भै बँदरन की प्रभुते सत्य बानि यह मानि ।
मिथ्या शंका तजिमाता अब करौ प्रतीति रीति पहिंचानि ॥
यहि बिधिबानी सुनि हनुमतकी मानी सिया हिया विश्वास ।
जानी मनक्रम अरु बानीते है यह रामचंद्रको दास ॥
इतना निश्चय आवतही मन बाढ़ी अतिव प्रीति हिय माहिं ।
उठे रोमतन अरु नयनन जल क्षणइक रही देह सुधि नाहिं ॥
पुनि अस बोलीं बर बानरते हे कपि धीर बीर हनुमान ।
बिरह समुंदर महँ बूड़त म्वहिं सुत तुम भयो आय जलयान ॥
मैं बलिहारी सुतजाऊं तुव अब कहु स्वामि केरि कुशलात ।

दूनौ भैया हैं आनँद महँ क्यहि बिधि गये इते दिन तात ॥
बहु चितकोमल रघुनन्दनको।तिन उर निठुर कीन यहि भांति।
भई निरासिनि यह दासिनि इत बीते बहुत जानि दिनराति ॥
सहज सुभायक सुखदायक जन कबहूं करत मोरि उरयादि।
ठण्ढ नयनवाँ कब ह्वै हैं सुतनीके निरखि राम सुख मादि ॥
बात न आई कहि मुखते पुनि नैनन अश्रुबारि झरिलाय।
कह्यो कि करुणाकर स्वामी ने मोकहँ दियो निपट बिसराय ॥
राम बिरह महँ लखि ब्याकुलसिय बोले मधुर बचन हनुमान।
क्षेम कुशल हैं प्रभुभाईसह तुव दुख दुखी रहत यह जान ॥
जनि मन छोटा करुमाता तैं प्रभुकर दून प्रेम तुम माहिं।
घरी महूरत अरु एकौ क्षण तुव सुधि हृदय भुलावत नाहिं ॥
सुनौ संदेशा अब स्वामीको मोसन कह्यो जौन अकुलाय।
तुम्हैं सुनावतहौं नीकी बिधि असकहि मगन भयो कपिराय ॥
पुनि धरि धीरज बतलावतभो जो कछु कह्यो राम सुखधाम।
तुव बियोग महँ हे प्यारी म्वहिं उलटो कामलगत सबठाम ॥
नये पतौवा बर बिरवनके मोकहँ परत आगि सम जानि।
कालराति सम रातिजाति अरु शशिजस सूर्य किरणगरमानि ॥
बरछी बनसम बन कमलनको छेदत हृदय बारहीं बार।
मेघा बरसत जललागत सो मानहुँ तप्त तेलकी धार ॥
जौने तरुतर मैं निवसों प्रिय सो तन पीर देत उपजाय।
त्रिबिधि समीरै उरचीरै अस जैसे सर्प श्वास दुखदाय ॥
कहते दुख कछु घटि जैहैना क्यहि सन कहौं सकैको जानि।
प्रीति हमारी अरु तेरी प्रिय मोसन भलेपरत पहिंचानि ॥
सोमन मेरोहै तेरेढिग इतनेइँ माहिं प्रीति रस जानु।
कहौं अगारी अब प्यारी कहँ बानि सयानि सत्यकरि मानु ॥
यहिबिधि बरण्यो हनूमान जब प्रभु संदेश प्रीति दरशाय।
सो सुनि सीता प्रेम सिंधुमहँ डूबीं देहदशा बिसराय ॥

तब समुझायो फिरि हनुमतने माता धीर धरौ हियमाहिं।
सुमिरौ सेवक सुखदाता प्रभु समयो शोच करनको नाहिं॥
रघुपति प्रभुताको आनहुँउर मानहुँ मोर बचन सतिभाय।
होउ बिकलता बश व्याकुलजनिभागनचहतिबिपति बहिआय॥
निश्चर खलदल सब पाँखीसम रघुपति बान अग्निकीज्वाल।
तामहँ जरिबरि मरिजैहैं सब ह्वैहैं काल कौर अब हाल॥
खबरि तुम्हारी जो पावत कहुँ लावत इतक देर नहिं राम।
इत चढ़िआवत बिनशावतखल तुम्हैं लेवाय जात निजधाम॥
जस सूर्योदयमहँ नाशत है अगणित अंधकारको भार।
तैसे प्रभुके शरछूटेते खल दल सकल होय संहार॥
अबहीं माता लैजात्योंत्वहिं राकस धारि झारि मैं मारि।
नहिं रघुनन्दनको आयसु पै ताते रह्यों हृदय महँ हारि॥
कछुदिन जननी उरधीरज धरु ऐहैं कपिन सहित इतराम।
खलबधि तुम कहँ लैजैहैं यश गैहैं नारदादि सबठाम॥
सुनि असबानी कपिज्ञानीकी रानी सीय कह्यो यह बात।
हैं ऐसेही सब बाँदर उत तुम सम छोट गातके तात॥
इतै भयंकर तन निश्चर गन मेरु समान महा बलवान।
तिनते लरिकै बरि ऐहैं किमि म्वहिं संदेह होत हनुमान॥
सुनि असबानी महरानी की कपि निज गातकीन विस्तार।
समर भयंकर बल अगार अति कनक पहार तुल्य आकार॥
देखि भरोसा भौ सीताउर पुनि लघु गात कीन कपिजात।
हाथ जोरिकै यह भाष्यो पुनि माता मानु मोरि यक बात॥
नीच बाँदरन की देही महँ बल बुधि कछू न जानौ आप।
प्रभु प्रतापते खगनायक कहँ चहैं तौ खाय लेय लघुसाँप॥
अति मति सानी कपिबानी सुनि आनी सिया हिया संतोष।
जानी प्रभुता धनुपानीकी मानी कपिउ बाक्य निर्दोष॥
दूत पियारो रघुनायकको मन बच कर्म भर्म बिनजानि।

भक्ति शक्ति बल बुधि सानी शुभ आशिष दीनि हर्ष उरआनि ॥
टरौ न रणते लरि पछरौ जनि मरौ न कबहुँ परौ दुखनाहिं।
सबदिन सबछिन बिनकारण क्यहु रघुपति प्रीतिकरैं तुममाहिं ॥
आशिष सानी सियरानी की बानी सुधा सरिस सुनिकान।
अप्रमान हर्षान हृदय महँ भोतन प्रेम मगन हनुमान ॥
महा अनंदे पग बंदे द्वउ फंदे फाटि शोचके जायँ।
जिनपर दाया सिय मायाकी तेज न क्यों न ऐस हरषायँ ॥
हाथ जोरिकै पुनि बोल्यो कपि अब कृतकृत्य भयों मैं मात।
गात समातन सुख सुनिकै तुव आशिष सदा सफल विख्यात ॥
एक लालसा यहि अवसर म्वहिं स्वउ सुनि हुकुम देउ फुरमाय।
भूख बुझावों अमराई के सुंदर मधुर रूख फलखाय ॥
धीरज आवै नहिं काहू बिधि मोमन देखि देखि ललचाय।
हुकुम तुम्हारे की देरी है ना तरु म्वहिं बिलंब नहिंमाय ॥
यहि बारीकी रखवारी महँ हैं सुत सुभट निशाचर भारि।
माता तिनकर डर नाहीं म्वहिं जो तुम हृदय लेहु मुदधारि ॥
सुनि असबानी हनूमानकी मानी सिया हृदय उतसाहु।
क्षनक बिचार्‌यो मन अपने महँ पुनि भट प्रबल देखि कपिनाहु ॥
आयसु दीन्ह्यों तब हर्षित ह्वै कह्यो कि पुत्र बाटिकहि जाहु।
दुष्ट सँहारण पद धारण करि हिय महँ तात मधुर फलखाहु ॥

इतिश्री भार्गववंशावतंसश्रीमान्मुंशीनवलकिशोरात्मजश्रीमुंशी
प्रयागनारायणस्याज्ञाभिगामी उन्नामप्रदेशान्तर्गतमसवा-
सीग्रामनिवासीपं०बंदीदीनदीक्षितनिर्मितश्रीविजय
राघवखण्डेसुंदरकाण्डेद्वितीयोल्लासः ॥ २ ॥

गिरा गजानन अरु गिरिजापति गुरु गोबिंद चरण द्वउ ध्याय।
प्रभु मन भावनको पावन यश भाषत बंदि यथा मतिगाय ॥
पायसु आयसु सिय मैयाते करि द्वउ पगन माहिं परणाम।
ध्यान धारिकै प्रभु सुजानको चले अराम ओर बलधाम ॥

लाग बिचारन तब हिरदय महँ वारन रूप बीर हनुमान।
करौं उपद्रव अस अस्थल यहि जो रावणौं सुनै निजकान॥
क्रोधित ह्वै कै तब भेजिहै इत सैना सहित निशाचर ज्वान।
ठनै परस्पर कछु बेरिया लग हम अरु उन्हैं युद्ध घमसान॥
यह बिचारिकै मन अपने महँ पवन समान भीम हनुमान।
आय तड़ाका अमराई महँ लागे मधुर मधुर फलखान॥
वृक्ष उखारन पुनि लागे तहँ करि किलकिला शब्द भयमान।
कुआँ बावली अरु तालनके ढारे तोरि फोरि सबथान॥
तोड़त फोड़त लखि घाटनको अरु किलकिला शब्द सुनिकान।
दौरे सारे रखवारे तहँ यावत हते निशाचर ज्वान॥
आय गरांस्यो चौगिर्दा ते कपिको धारि २ हथियार।
मारन लागे ललकारन कै राकस प्रबल हजारन यार॥
देखि तमासा कपि नंदन यह बंदन कीन रामके पायँ।
लैकै बिरवा यक साखूकर खल दल माहिं गये समुहायँ॥
कूदि २ कै तब चारिउ दिशि दीरघ वृक्ष घुमाय घुमाय।
क्षण महँ मारे संहारे सब भारे सुभट निशाचर भाय॥
गिरे अधमरे ह्वै धरती पर कौनौ हलुक घाय तन खाय।
अतिभय पागे घरभागेते कौनिउँ भांति प्रान बचिजाय॥
रह्यो न विक्रमकोउ योधा महँ कपिते करै जौन संग्राम।
चढ़िकै फाटकके छज्जापर बैठे हनूमान बलधाम॥
देखि दुर्दशा यह बीरनकी बानर राजकेर ब्यवसाय।
डरीं निश्चरी सब तहँवां की औ सीतासन लगीं बताय॥
को यह योधा चलिआयो इत तुमते किह्यसि बार्तालाप।
बाग उजार्यासि अरुमार्यासि भट धार्यासि हृदयमाहिं बड़पाप॥
हाल बतावो कहि हमते यह नातरुनीक होय नहिंकाम।
सुनि असबानी उन रँड़ियनकी बोलतभई रामकी बाम॥
दुष्ट निश्चरनकी मायाको हम कछु जानिसकैं नहिं माय।

उनकी करणी को जानौ तुम जस अहिलखै अहिनके पाय ॥
हमहूं काँपितहै हियरे महँ यहिकररूप देखि बिकराल ।
सिद्ध गंधरबकी विद्याधर दानवदेव होयकी काल ॥
हमरे मनमातौ आवत अस निश्चय कोऊ निशाचर आय ।
सुनि असबानी महरानी की रावण निकटगईं सब धाय ॥
कनकसिंहासन पर बैठो जहँ आसन किये बीर दशमाथ ।
बहु बदमासनको लीन्हें सँग जासन हारिगये सुरनाथ ॥
हाथ जोरिकै वे दुष्टा सब माथनवाय महा भयलाय ।
हाल यथावत भटमर्कट को लागीं कहन आदिते गाय ॥
कहैं हकीकति का निश्चर पति दुर्गति भई आज शकनाहिं ।
महा भयंकर इक बन्दरखल आयनिशंक बाटिका माहिं ॥
उतरि अचानक तरुअशोकते सियते बड़ी देर बतलान ।
पुनि चलिआयो अमराई बिच कीन्ह्यों अमित वृक्षघमसान ॥
कूप बावली अरुतालनके घालन कीनघाट औबाट ।
चौपट कीन्ह्यों बरमंदिर सब फाटक लगेढहाये पाट ॥
कछुन उपद्रव तहँ कीन्ह्यों कपि जहँ पर करत जानकी बास ।
जेते भारे रखवारे उत कीन्हें मर्दि गर्दि सबनास ॥
बहु बिधि पूंछा हम सीताते उन नहिं कछू बताई बात ।
निश्चय पायक रघुनायकको आयो लेन सीय कुशलात ॥
यहि बिधि बातैं बतियातै सुनि उन निश्चरिन सुनौ हरियान ।
रिसभरि गातै रिसियातै सम अग्नि समान ज्वान गरमान ॥
तुरत बुलायसि सब सैना सह किंकर नाम बीर बरियार ।
जे लरि पछैं नाहिं काहूते बाहू यथा महा तरुडार ॥
महा भयंकर तन धारेकर मुदगर मुशल आदि हथियार ।
लंबे दांतन के आंतन के पहिरे हृदय बीर सबहार ॥
हुकुम पायकै भट रावणको लै बहु कुमक आपने साथ ।
चले सँहारन हित बानरको असीहजार शूर खगनाथ ॥

देर न लाये चलि आये तहँ जाये वायु केर ज्यहि ठाम।
बाहर फाटकपर बैठो कपि नाहर सरिस दीख बलधाम॥
दौरे हल्लाकरि एकै सँग अगणित यातुधान बलवान।
यथा अकेलो लखित्रारन दिशि दौरें भूंकि हजारन श्वान॥
जैसे दीपककी चोटी पर छोटी बड़ी पतंगे धाय।
देह जरावैं मरिजावैं सब तस गतिकीनि राकसन भाय॥
गदा प्रहारन तलवारन सों मारन लगे बानरहि गाँसि।
यह न बिचारत खल जियरेमहँ डारी अबहिं सबहिं यह नासि॥
मारे बाननके घानन सों दीन्ह्यों पूरि भूमि असमान।
छिपि हनुमंता गो ताके बिच जस घन गगन घटा महँ भान॥
बरछी तिरछी अरु भाला लै कौनौं करन लाग तहँ वार।
जाहि सहायक रघुनायक प्रभु मारन हार ताहिको यार॥
लखि यह कौतुक खल मण्डलको बंक अशंक बीर हनुमान।
भारी पर्वत सम बाढ़े तब लागी पूंछ जाय असमान॥
अप्रमान बल प्रभु सुजानको लीन्ह्यों हृदय माहिं धरि ध्यान।
गर्जे तर्जे बहु फाटकपर करमहँ खंभ खैंचि यक ज्वान॥
जैसे भेड़हा घुसि भेंड़न महँ अकिले हतै सबन के प्रान।
शशा सहस्रन संहारै जस कै निरशंक अकेलो श्वान॥
करिदल मारै जस कैहरिइक लावै तनक शंक हिय नाहिं।
तथा पवनसुत उत फांदतभो अकिलो निशाचरन के माहिं॥
घूमि घूमि कै दिशि चारिउ महँ खम्भ घुमाय चाक समभाय।
अगणित योधा हनि मारतभो दै दै असह खंभके घाय॥
हाथ टूटिगे कोहु निश्चरके कौनौं लुण्ड भये बिन पायँ।
फूटीं मस्तक कोहु शूरनकी चूरण भये भूमि गिरि जायँ॥
कोऊ भागे आसमान तन तिनको पकरि बीर हनुमान।
आय पछारै तल बसुधा महँ मारै तुर्त मर्दिकै प्रान॥
क्षण महँ मारे संहारे सब असीहजार शूर सरदार।

बचो न एकौ क्षत खाये बिन कपि कहँ बिजय दीनि करतार ॥
रह्यो न योधा कोउ बाकी जब सब संग्राम भूमिमे पात।
चढ़िकै फाटकपर बैठे तब अतिबल बातजात भटगात ॥
बचे अधमरे द्वै राकस जो भागि लुकाय खाय लघुघाय।
जाय सुनायो तिन रावणको जो कछु दशाकीनि कपिराय ॥
काह बताई महराजा हम मुखते कहिन जात कछु हाल।
होय न बाँदरु वह काहू विधि निश्चय निशाचरनको काल ॥
जितने योधा पठवायो तुम तिन महँ बच्यो एक नहिं ज्वान।
मारि खवायसि वैं संगर महँ हम लै भगे आपने प्रान ॥
सुनि अस बातें उनबीरनकी तीरन बिधो मनो कोहुँ गात।
अतिशय बाढ़ी रिस रावणके पटकत हाथ पीसिकै दांत ॥
नैन घुमायसि बिजुकायसि मुख लाग बतान भरा अभिमान।
कोउ न बंका भट लंका महँ यहै निदान लीन मैं जान ॥
अकिलो बाँदर यक आवा इत तौने हते हजारन ज्वान।
कबहुँक ऐहैं सजि सैना कपि तौ कह होय हाल भगवान ॥
इतना कहतै परलै ह्वइगै सहि नहिं सके शूर यह बात।
बोले तत्क्षन सुत प्रहस्तको भुज फरकाय लाय रिस गात ॥
ऐसी बातें जनि भाषौ प्रभु हैं इत अइस शूर सरदार।
कौन चलावै इक बांदरकी करैं हजार एक आहार ॥
हुकुम तुम्हारो जो पावों मैं लावौं अबहिं ताहि इत बाँधि।
देखौं विक्रम कस बानर महँ कीन्हीं ज्यहिं इत इती उपाधि ॥
जम्बुमालिको इमि गर्जत लखि रावण हुकुम दीन फुरमाय।
सुनौ हकीकति त्यहि योधाकी देर न लगी भवन महँ आय ॥
लाले कपड़ा तन धारण करि लाली हृदय माल लटकाय।
लाले कुण्डल धरि कानन महँ लीन्ह्यों बीर साज सजवाय ॥
अस्त्र सँभारे अनियारे कर तरकस कसी कमर महँ ज्वान।
जुतो खच्चरनको ठाढ़ो रथ त्यहि चढ़ि करत भयो प्रस्थान ॥

धनु टंकोर्यो धरि हाथे महँ पूर्यो दशोंदिशा आवाज।
आय पहूंच्यो फुलवारी महँ किलकत जहां बैठ कपिराज॥
आवत दीख्यो निशिचारी कहँ भारी बल निधान हनुमान।
गर्जे तर्जे अति उच्चस्वर फाटन चहत मनो असमान॥
गर्जत दीख्यसि हनुमन्ता कहँ हृदय प्रहस्त पुत्र रिसियान।
तड़पि तड़ाका धनु धारण करि कपि उर हन्यसि सैकरन बान॥
अर्द्धचन्द्र शर मुख महँ मार्यसि औ अंकुशाकार शिर माहिं।
दशशर मार्यसि द्वउ बाहुन महँ बाकी बच्यो अंग कोउ नाहिं॥
झलके बुन्दा मुख लोहूके शोभा तासु कहीना जाय।
सुवरण बुन्दनको सींचा जनु लालो फूल कमलको आय॥
तन महँ शायकके लागत खन अति रिस कीनि बीर हनुमान।
इत उत ताक्यो तौ निकटै महँ पर्वत खण्ड एक दिखरान॥
तड़पि तड़ाका वहि फाटकते पर्वत खण्ड लीन कर धारि।
गर्जि चलायो सो राकसपर मानहुँ दियो इन्द्र पवि डारि॥
शिला भयंकर उत आवति लखि राकस हने बेगि दश बान।
काटि छाँटिकै भुवि डार्यो त्यहि तब हनुमान अधिक रिसियान॥
वृक्ष उखार्यो इक साँखूकर ताहि घुमाय तानि पुनि पानि।
सो हनि मार्यो त्यहि छाती महँ हियमें सुमिरि सिया महरानि॥
लागत छाती महँ बिरवाके अद्भुत दशा भई खगराय।
सहरथ गदहा वहि राकसकी पता न लागि कहां गइकाय॥
भरी चौकरी तब हनुमतने मारो देखि बीर बरियार।
बचे बचाये ते भाग भट करते डारि डारि हथियार॥
सूनि बाटिका भै शूरन बिन कूरन पेट समानी हाय।
रह्यो न बाकी लड़वैया कोउ तब कपि लाग बैठि सुस्ताय॥
इतै हकीकति अस बीतति भै उत अब सुनौ लंककर हाल।
खबरि पहूंची ढिगरावण के भयो प्रहस्त पुत्र बशकाल॥
इतना सुनते मन गुनतै तब दशमुख गयो सनाका खाय।

काह गोसइँयाँ कै मर्जी है उलटो ढंग परत दिखराय ॥
जिते सुरासुर जिनशूरनने सन्मुख लड़ि न सकैं सुरराज ।
तौने शूरनको चूरन करि मारयसि नीच बँदरवैं आज ॥
असमन शोचत रिसबाढ़ी बहु तुरतै मंत्रि सुतन बुलवाय ।
हुकुम सुनायसि उन सातौ कहँ जाउ तुरंत बाटिकहि धाय ॥
बाँधि लयावो वहि बाँदरको ज्याहिं बहु शूर कीन्ह संहार ।
सुनि अस आयसु वे मंत्री सुत साजिकर धरतभये हथियार ॥
पहिरि बख्तरै अरु जिरहै तन लोहे टोप शीश औंधाय ।
मुकुट मनोहर धरि माथेमहँ कुण्डल कान लये लटकाय ॥
तरकस सर्कस करिहाये महँ बायें दहिन हाथ धनुबान ।
साज साजिकै सुरनायक सम बैठे रथन आनिकै ज्वान ॥
उत्तम जोड़े के घोड़े बर जोड़े रथन माहिं अभिराम ।
लागत कोड़ेके आतुर गति चहैं तौ फाँदि जायँ सुरधाम ॥
फ़ौजै सजिगइँ बरबीरनकी डंका बजन लाग घहराय ।
मारू मौहरि बाजन लागी गाजन लगे ध्वजा फहराय ॥
सुमिरि भवानी जगरानीको लड़िबे हेत बीर बहिरयान ।
धावा कीन्ह्यों फुलवारीको जहँ पर रहैं बीर हनुमान ॥
देर न लागी रिसजागी उर पहुँचे आय बाटिका द्वार ।
निरख्यो फाटकके छज्जापर बांदर बैठ काल अनुहार ॥
मारु मारुकै सब दौरे तब बौरे काढ़ि काढ़ि हथियार ।
बर्षा कीन्ह्यों बहु बाननकी सातौ मंत्रि पुत्र बरियार ॥
प्रलयकाल की झरिलागै जस चहुँदिशि छायजाय अँधियार ।
तैसे बानन की बर्षाकरि लोप्यो कपि केशरी कुमार ॥
घोर गर्जना करि गर्जे भट भादौं यथा मेघ घहरायँ ।
सुनि सो बानी उन बीरनकी कपिके नैन लाल परिजायँ ॥
दास सहायक रघुनायकको हियमहँ सुमिरि बारहीं बार ।
उचकि तड़ाका वहिफाटकते नभदिशि चले मारि किलकार ॥

वार बचायो रिपु बाननको आनन बाय घोर घहराय।
फाँदे दुष्टनकी सैनामहँ मानहुँ बज्र गिस्यो महराय॥
उछलि उछलिकै खलमण्डलमहँ करि करि लात घात परिहार।
मर्दा गर्दामहँ बीरनको करि करि प्रलयकार चिग्घार॥
बहुतक मारे हनि मूकाउर डारे बहुत नहन ते फारि।
बहुतक मींजे गहि छातीमहँ बहुतक हने पूंछ फटकारि॥
भागी सैना भय पागी तब भूल्यो अस्त्र चलाउब भाय।
रह्यो न योधा कोउ बाकी अस जो दुइघरी खेत अड़िजाय॥
भयेचेत बिन वेमंत्री सुत सातो गिरे परे भुवि माहिं।
चहुँदिशि ताक्यो तब अंजनिसुत बाकी रह्यो बीरकोउ नाहिं॥
आय तड़ाका वहि फाटक के छज्जा उपर बैठ चुपधारि।
बन्दि दाहिने रघुनन्दन ज्यहि त्यहि को सकै समर महँ मारि॥
सारी क्यारी फुलवारी की भरिभरि रुधिर चलीं उतराय।
काग सियारन के वरये दल भल हर्षाय माँस रहे खाय॥
मानहुँ लंकापुर तीरथ महँ अंजनि सुवन कीन भण्डार।
अतिथि बुलाये दिशि चारिउके तिनको बिबिध दीन आहार॥
इतै हकीकति अस बीतति भै उत की कथा सुनौ खगराय।
कायर भागे जे संगर ते पहुँचे तुरत लंक महँ जाय॥
खबरि जनायो खल रावण को मारे गये मंत्रिसुत सात।
शोक समान्यो बहु हिरदै महँ सूख्यो अंग अंग सब गात॥
क्षनक बिचास्यो मन अपने महँ का यह होन हार कर्तार।
फिरि बोलवायसि उनबीरनको जिनके सदा युद्ध आधार॥
काल दुसरिहा बहु दीरघ तन सहैं न कबौं शत्रुकी आंच।
विरूपाक्ष यूपाक्ष दुर्द्धरष प्रधरष भासकर्ण ये पांच॥
बहुतक जल्पत ते हिरदै महँ कबहुँक हमैं हुकुम ह्वै जाय।
देर न लागै द्वै घटिका महँ लावन मुसुक बाँधि कपिराय॥
आशा पूरी तिन शूरनकी रावण हुकुम दीन फुरमाय।

जल्दी जावो तुम बगिया महँ लखो खबीस कीस भटकाय ॥
कहँते आवा खल दावा सम छावा बाग मध्य उत्पात ।
नहिं भय लावा हिय मेरा कछु कीन्ह्यसि अमित निशाचरघात ॥
हुकुम पायकै पति रावण को चावन भरे लड़ाके ज्वान ।
घरी महूरत महँ साजतभे चतुरंगिनी अनी अप्रमान ॥
बजे नगारा हहकारा करि जनुघन प्रलय केर घहरान ।
ध्वजा पताका फहरनलागे छहरन लागे लाल निशान ॥
बड़ी बतकही कहिगावै को गर्जत चले लंकते भाय ।
धूरि पूरिगै नभमण्डल महँ चहुँदिशि जाय अँधेरिया छाय ॥
एक महूरत नहिंलागो मग पहुँचे आय बाटिका द्वार ।
घेर्यो फाटक चौगिर्दाते करिकै मारु मारु ललकार ॥
बैठे लखिकै बर बानर को ह्वै हुशियार बीर बरियार ।
तानि कमाननके रोदा को बर्सन लगे बान बिकरार ॥
वर्षा ऋतुमहँ जस पर्बत पर बर्सैं मेघ बुन्द झरिलाय ।
तैसे कपि पर चौगिर्दा ते बर्सैं सुभट शस्त्र समुदाय ॥
आय सामुहें तब दुर्द्धरने कपि तन हने पांच नाराच ।
शीश कीश के समियाने सो साने मनौं अग्नि की आंच ॥
लागत शायक के गाढ़ी रिस करि खल काल अंजनी लाल ।
मारि फलंका उड़ि ऊपर कहँ बंका रूप कीन बिकराल ॥
जहँ पर ठाढ़ो रथ दुर्द्धर को त्यहिपर गिर्यो आय अरराय ।
आठौ घोड़ा रथ दुर्द्धर सह गयो पताल माहिं समिआय ॥
देखि तमासा यह बांदर को अति भट बिरूपाक्ष यूपाक्ष ।
बढ़े अगारी रिस भारी कै काछे बीरपने को काछ ॥
आय सामुहें ललकारतभे कीश खबीश होसि हुशियार ।
तैं संहारे बहु शूरन का अब नहिं बार जात यमद्वार ॥
इतना कहिकै कर गहिकै द्वउ मुद्गर गदा बज्र समभाय ।
धाय धमंक्यो कपि कुंजर के हिय महँ हुमकि महा रिसिआय ॥

लागत छाती महँ मुद्गर के वहु रिसकीनि बीर हनुमान।
उतरि तड़ाका आसमान ते रणमहि माहिं आय नियरान॥
वृक्ष उखार्‍यो इक सांखूकर सो दृढ़ दुओ हाथ ते तानि।
बलके धमक्यो दुउ बीरन पर तुरतै भई प्राणकी हानि॥
तीनि अनीपति संहार्‍यो कपि बाकी रहे युगुल बलवान।
ते क्रोधित ह्वै कपि नन्दनपर लरिबे हेत आय समुहान॥
शूलरु पट्टिस लै हाथन महँ मारन लाग बानरहि गांसि।
इकदिशि प्रधरष ललकारतभो इकदिशि भास्कर्ण बलरासि॥
शूल घुमाई भास्कर्ण ने मारी हनूमान के गात।
घाउ आइगो तब छाती महँ पूरितरुधिर अंग दरशात॥
भरी रुधिर महँ कपि देही तब यहि बिधि परीजानि हरियान।
उदयाचल पर जनु उद्दितभो अरुण प्रभातकाल को भान॥
देखत लोहूके बाढ़ी रिस नैनन गई लालरी छाय।
भयो भयंकर तन पर्बत सम लियो उठाय शृंग इकधाय॥
पकरि घुमायो त्यहि बेगीसम औ दुष्टन दिशि दीन चलाय।
गिरी आयके सो दुनहुन पर रथ सह गिरे धरणि भहराय॥
प्रान पयानतभे ताही क्षन रही न तनक जियन की आश।
यहि बिधि सेना पति पांचौ वे भे हनुमंत हाथते नाश॥
खलभलि परिगै तब सैनामहँ भागनलगे भगैया ज्वान।
त्यही समइयाके अवसर महँ कौतुक एककीन हनुमान॥
एक एक सों गहि मर्द्योतन अगणित शूर मारि रणगाजि।
रथके ऊपर रथ पटकतभो गजपर गजहि बाजि पर बाजि॥
रह्यो न योधा कोउ बाकी तहँ सबरे हने हांकि हनुमान।
जिनको कागज नहिं फार्‍यो बिधि ते लैभगे आपने प्रान॥
अगणित लोथिन सों पाटी भुवि भयो मशान भूमि वह बाग।
स्यार चिह्लारिन को धावा भो बहु मड़रात कंक औ काग॥
भयो सनाका वहि अवसर पर शूर न रह्यो समर कोउ शेष।
- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

मौन धारिकै तब बैठो कपि भट महँ प्रथम जासु जग रेख ॥
इत की हालति अस गाई कहि उतकर कहौं हाल अब गाय ।
कायर भागे जे ख्यातन ते वे दशशीश पास गे धाय ॥
जोरि गदोरिया बोलन लागे ओ महराजा बात बनाउ ।
बड़ी दुर्दशा भै बगिया में एक न बचा बीर बिन घाउ ॥
पांचौ सेनापति मारेगे अगणित सैन शूर सरदार ।
एक अकेले खल बाँदर ने सब भट मींजि मिलाये क्षार ॥
खैर बिधातैं यह कीन्हीं बड़ि उबरे आजु हमारे प्रान ।
नातरु दुर्लभ तुव दर्शन प्रभु सब बिधि हमैं होत भगवान ॥
सुनि अस बानी उन क्रूरन की दशआनन के होश भुलान ।
मौन मारिकै मन शोचत भो घरियक हृदय धारिकै ध्यान ॥
किह्यों दिग्विजै ज्यहि अवसरमें तब कपि बहुतदीख बलवान ।
बालि सुकण्ठी द्विविदादिक लै नील सुषेन और जँबुवान ॥
यहिअसबांदरु कहुँदीख्योंना ज्यहिबल बिपुल बरणि ना जाय ।
अकिले निश्चर संहारे बहु मारे शूर पूर व्यवसाय ॥
देखा चहिये यहि बाँदर को तब कछु जानिपरैगो हाल ।
अस बिचारिकै मन अपने महँ टेर्यसि अक्षयपुत्र उत्ताल ॥
आय पहूंच्यो सो रावण ढिग कीन्ह्यसि हाथ जोरि परणाम ।
लगो बुझावन त्यहि रावण पुनि आयो कीश एक बलधाम ॥
बहुतक योधा वै मारे शठ डार्यसि सकल बाग संहारि ।
जाय बिलोकौ तुम ताकर ढँग है कस बल निधान बनचारि ॥
बाप आपने को आयसु लै अक्षयकुमार बीर बरियार ।
सैनापति ते यह भाषत भो जल्दी सैन होय तय्यार ॥
अक्षबीर को लै आयसु तब सेनप सेन सजावन लाग ।
जालिम योधा सजि ठाढ़े भे रण में जिन्हैं बहुत अनुराग ॥
पहिल नगारा मा जिनबंदी दुसरे बांधिलीन हथियार ।
तिसरे नगारा के बाजत खन सैना साजि भई तय्यार ॥

चढ़े शूरमा कोउ हाथिन पर घोड़न चढ़े छैल असवार।
रथी महारथि रथ पर चढ़िगे अपने बाँधि बाँधि हथियार॥
मारू डंका घहरन लागे फहरन लागे लाल निशान।
ढाढ़ी करखा बोलनलागे अपनि पराय सुनाय न कान॥
सजे दुलरुवा दशआनन को अछयकुमार नाम ज्यहिक्यार।
मुकुट बँधावे शिर सोने को सोने कवँच लीन तनधार॥
सुवरण तर्कस कसि कम्मर महँ सुवरण धनुष बान लैहाथ।
सुवरण रथ पै चढ़ि बैठत भो ऐंठत मुच्छ मनहुँ सुरनाथ॥
ध्वजा पताका हैं सोने के अरु सोने का परा वहार।
आठ बछेड़न सों जोतो रथ झनकत मंद मंद झनकार॥
निकलो लंका ते सैनासह अतिव जुझार अक्ष सरदार।
हाथी घोड़ा रथ आदिक के स्वर से पूरिगये दिशि चार॥
दबनि अँधेरिया दलमा आवे गर्दा चढ़ा बढ़ी असमान।
आय पहूँचे अमराई महँ बैठे जहां बीर हनुमान॥
बहिरी फाटक के छज्जा पर दीख्यो बैठ कीश बरियार।
अक्ष सामुहें रथ लायो तब बोल्यो गरू देय ललकार॥
खबर्दार हो भट मर्कट तैं मारे बहुत निशाचर ज्वान।
बाग उजारे द्रुम फारे बहु डारे तोरि फोरि मकान॥
काह बिचारे मन अपने तैं जो इत किहे उपद्रव आय।
देर न करिहौं हनिडरिहौं त्वहिं औ यमधाम देहौं पठवाय॥
बदला लेहौं सब बीरन को जो रणभूमि भागि नाजाय।
इतना कहिकै धनु गहिकै पुनि दीन्ह्यसि अमित बाण वर्षाय॥
हृदय बिचाखो हनुमंता तब है यह पूत रावणा क्यार।
बाण चलावन गति जानतबहु यहिसन लहब कौन बिधिपार॥
है लड़वैया भट बांका यह शाका रही लंक मा छाय।
संग सुरासुर कोउ जूटैना सुनतै नाम भागि घरजाय॥
इत हनुमंता मन शोचत अस उत अब सुनौ खलनको हाल।

घेर्यो फाटक चौगिर्दा ते दीन्हे छाय बाणके जाल ॥
वार बचावत कपिधारे चुप तबलौं अक्ष जोरि धनुबान।
हने तीनिशर शिरमर्कट के जिनमहँ धरी खरी बहुसान ॥
आय समाने सो खोपरी महँ लागी बहन रक्तकी धार।
घूमीं पुतरी तब हनुमत की तुरतै भये मेरु आकार ॥
छाय लालरीगें नैनन मा रिस सों पूरिगयो सबगात।
खलदल खण्डनको आयोजनु अति बिकराल कालरणतात ॥
जन सुखदाई रघुराई को हिय महँ सुमिरि शंक सबडारि।
उछलि उड़ाने नभऊपर को गर्जे मारि मारि किलकारि ॥
खगपति वहिक्षन रणशोभाको मोसन कहिनजाय कछु हाल।
सिद्ध गंधरब सुर विद्याधर कौतुक देखिरहे वहिकाल ॥
निश्चर बंचरके लरिबे महँ सम्भ्रम गई सुरन उरछाय।
शेश सकाने नाग लोकमहँ भूमि चलाय मान ह्वै जाय ॥
घामु मंदभा दिननायक का ह्वैगइ पवन मंद खगराय।
उछल्यो बारिधि मर्यादा तजि मानहु प्रलय कालगयो आय ॥
उड़ो देखिकै कपि अम्बर महँ पुनि धनुतानि अक्षबलवान।
बान अनेकन हनि मारतभो जस घन तजैं बुन्द के घान ॥
लाग न एकौ सो हनुमत के इत उत मुरकि गये बरकाय।
लगे विचारन तब हिरदै महँ है यह शूर पूर व्यवसाय ॥
इतना शोचत कपि नायक के औसर पाय अक्ष बलवान।
लैरथ पहुँचो आसमान महँ कपि तन हने फेरि बहुबान ॥
आवत शायक कपि नायक लखि पहुँचो अंतरिक्ष में जाय।
भे शर निष्फल खल निश्चरके तब कपिराय परम रिसिआय ॥
घोर गर्जना करि गर्जे अरु रथपर गिरे आय अरराय।
लात घात सों रथ घोड़ा सब दियो पताल मध्य पठवाय ॥
अक्षहि दाब्यो द्वउ जंघन बिच पंजन गहैं गरुड़ ज्यों नाग।
चक्कर दै दै नभ मण्डल महँ बहु झिझकोरि तोरि नसताग ॥

गिरे आयके पुनि बसुधा महँ ऊपर आप तरे करि ताहि।
पटक्यो पत्थर सम पृथ्वीमहँ अतिबल प्रबल बखानत जाहि॥
टूटि फूटिगे भुज जंघा शिर ह्वै गे रती रती सब हाड़।
प्रान निसरि गे खल देही ते कौतुक लखैं देव नभ ठाढ़॥
अक्षहि जूझत लखि सैना सब इत उत भागि गई भराय।
धन्य धन्य कहि हनुमानहिं तब देउता फूल रहे बरसाय॥
आय विराजे पुनि फाटक पर खल दल काल अंजनी लाल।
खबरि पहूंची उत रावण ढिग मारो गयो अक्ष तुव बाल॥
इतना सुनते भट रावण के गयो महान क्रोध तन छाय।
वेगि बोलायसि घननादै तब जिसने जिते समर सुरराय॥
हाल बतायसि सब वानर को जैं बहु सुभट कीन संहार।
अक्ष कुमारहु को मारयसि ज्यहिं सुतत्यहि बांधि लाउ दरबार॥
पिता आपने को आयसु अस सुनि कै इन्द्रजीत बलवान।
धरिकर आयुध अति क्रोधित ह्वै निकसो लंक नगर ते ज्वान॥
गरुड़ बेग सम अहि जोते रथ नभ महँ निराधार जे जात।
आय पहूंच्यो त्वर बगिया महँ ज्यहि लखि समर इन्द्र भयखात॥
बैठो देख्यासि कपि फाटकपर पर्वत सरिस जासु बड़िकाय।
कपिउ विलोक्यो त्यहि योधा कहँ निश्चय मेघनाद यहआय॥
दंत कटकटा करि गर्जे तब लीन उखारि वृक्ष इकधाय।
जाय धमंक्यो सो स्यंदन पर भो चकचूर धूर मिलिजाय॥
कूदि तड़ाका रथऊपरते उर रिस धारि कपिहि ललकारि।
अस्त्र अनेकनकी बर्षा करि चहुँदिशि रूंधि दियसि बनचारि॥
बचि उन अस्त्रन ते हनुमत तब महारिसाय बेगि सों धाय।
पहुँचि तड़ाका इन्द्रजीत ढिक पकयो भुज लपेटि चबुखाय॥
पकयो दृढ़कै घननादौ तब लागी होन परस्पर मारु।
देखि तमाशा द्वउ बीरन को देउता भूलिगये निज कारु॥
हनैं परस्पर इक एकहि तब मानत हारि हृदय महँ नाहिं।

जनु सुमेरुगिरि अरु कज्जलगिरि खेलत मल्लयुद्ध महिमाहिं ॥
लातन घातन नख दांतन सों काटत हनूमान त्यहि गात ।
कपिहि पछारन हित रावण सुत साधत दावँ पेच की घात ॥
छल बल कीन्ह्यों इन्द्रजीत बहु कपि ते नेक न पायो पार ।
हन्यो मुष्टिका तब हनुमत ने लागी हृदय चोट बिकरार ॥
पर्यो भड़ाका गिरि धरती पर रह्यो न तनक होश तन क्यार ।
तब हनुमंतें चढ़ि बिरवा पर कीन्ह्यसि प्रलय करनि किलकार ॥
मुर्च्छा जागी जब निश्चर की तब उरमाहिं बहुत रिसियान ।
उठ्यो भड़ाका पुनि लरिबे हित कपि के निकट जाय नियरान ॥
युक्ती उक्ती बहु साध्यसि खल बिरच्यसि छल प्रपंच दरशाय ।
पार न पायसि बर बानर ते साध्यसि ब्रह्म अस्त्र तब भाय ॥
ताहि अमावत लखि राकस को शोचन लगे बीर हनुमान ।
ब्रह्मपाश ते यह मोकहँ खल बांधन केर करत अनुमान ॥
जो नहिं मानत यहि महिमा मैं तौ मिटिजाय आजु ते आनि ।
परे बंधनौ महँ अवसर यहि होय न कछु हमारी हानि ॥
इत हनुमंता यह शोचत मन गिरिजा सुनौ गुनौ मनलाय ।
उत घननादौ मन ठानी अस बाँधौं कपिहि फांस महँ धाय ॥
अस उर आनत अनुमानत शठ तानत ब्रह्मफाँस कर माहिं ।
धायो बलकै कपि नायक तन जा कहँ तनक शंक उर नाहिं ॥
कर संधानित ब्रह्मअस्त्र को कपि पर डारि दिह्यसि बलसाधि ।
ताहि निवार्यो नहिं हनुमतने तब खल लिहृयसि तुरंतै बाँधि ॥
जासु नाम जपि भव बंधन ते ज्ञानी पुरुष जात छुटि भाय ।
आवै बंधन महँ ताको जन यह संदेह परत दिखराय ॥
काज पूर्ती लखि मालिक की बानर बँध्यो आपही आप ।
नातरु विक्रम कह राकस को जो त्यहि बाँधिलेत चुपचाप ॥
बाँधि लयायो कपि लंका महँ पायो जानि निश्चरन हाल ।
कौतुक देखन को दौरे सब स्त्री पुरुष वृद्ध औ बाल ॥

हल्ला ह्वइगा पुर सारे महँ कपि कहँ बाँधि लीन घननाद।
भे आनंदित शठ निश्चर बहु कौतुक करन लाग उरगाद॥
फिरि लैआये त्यहि बाँदर को जहँ दरबार दशानन क्यार।
भारी प्रभुता निशिचारी की निरखी तहां समीर कुमार॥
खड़े चारिहू दिशि जोरे कर यावत देव और दिगपाल।
दृष्टि बिलोकत दशआननकी डरपत यथा गरुड़ लखि ब्याल॥
भई न शंका कछु बानर के यद्यपि अस प्रताप खल क्यार।
जैसे हाथिन के हलका महँ जाय अशंक सिंह बरियार॥
ठाढ़ सामुहें लखि बाँदर को हँसि अस कही दशानन बात।
रे खल बंदर तैं काके बल कीन्हे अमित निशाचर घात॥
बाग उजारे सुत मारे मम सुने न मोर सुयश शठ कान।
अबलगि शंकित नहिं देखत त्वहिं प्रान निदान काल नियरान॥
कौन पठायो कस आयो इत काको दूत पूत क्यहि कार।
कहां धाम अरु काह नाम तुव बेगि बताव लाव जनि बार॥
सुनत बतकही अस रावण की लागे हनूमान बतलान।
रेशठ निश्चर तजि मिथ्या हठ सुनु मम वचन कानधरि ध्यान॥
जाके बल ते यहि दुनियां को माया रचै सदा अनयास।
बिधि उपजावैं सिरजावैं हरि आखिर ताहि करैं शिव नास॥
जाके बल ते यहि बसुधा को धरे अशेष शेश निज माथ।
सुरकुल पालन हित धारततन गावत सदा सुजन गुण गाथ॥
दण्ड देवैया खल पापिन को तुम सारिखे जौन जग माहिं।
काल ब्याल कर भखवैया जो पावत भेद वेद ज्यहि नाहिं॥
तोरि शरासन ज्यहिं शंकर को तुव सह हत्यो नृपन को मान।
भट खरदूषण अरु बिराधलै कियो निदान बालि के प्रान॥
जाको किंचित् बल पाये तुम जीत्यो जगत चराचर झारि।
त्यहि रघुनायक को पायक मैं जाकी चोरि लयायो नारि॥
नाम हमारो हनूमान है मंत्री भट सुकंठ को जानु।

शोध लगावन हित सीताको आयों इतै सत्य बचमानु ॥
तुव प्रभुताई मैं जानत सब जग महँ विदित भली बिधिहाल।
किहे लड़ाई सहसंबाहु ते ताको हृदय मांझ करुख्याल ॥
बालि बहादुर ते लरिकै फिरि जो यश लहे प्रकट सो आम।
जीते क्यहि सन बलरीते तैं रणमहँ वृथा धराये नाम ॥
सुनि असबानी कपि ज्ञानीकी हँसि बहिल्याय दिह्यसि दशमाथ।
पुनि असभाष्यो हनूमानने सुनु मम बचन निशाचर नाथ ॥
क्षुधा सतायो जब मो कहँ बहुखायों बाग मध्य फलजाय।
कपि स्वभाव ते तरु तोख्यों मैं यह अपराध कछू ना आय ॥
देह आपनी प्रिय लागति है सब कहँ सुनौ स्वामि यहबात।
खल निशिचारिन म्वहिं मारा बहु अबहुँ पिरात तासु वशगात ॥
जिन म्वहिं मारा तिन मारा मैं यामें कहा दोष है म्वार।
बांधि लयावाहै ताहू पर मो कहँ सुत तुम्हार बरियार ॥
मोहिं न लज्जा कछु बांधेकी चाहौं कौन स्वामि को काज।
सुनौ सिखावन मम पावन तुम बिनती करौं निशाचर राज ॥
हृदय बिचारौ हठटारौ निज धारौ पंथ सज्जनन क्यार।
भक्तभावते को सुमिरण करि सहजै उतरि जाहु भवपार ॥

स० काल कँपै ज्यहि भौंह बिगारत हारत युद्ध जुरे बलबाहक।
पालत शासन ब्रह्म वृषासन तासन बैर बेसाहत नाहक ॥
जो जग ढालत पालत घालत बंदि चराचर को उतसाहक।
जानकि देहु तौ जान कि खैर नहीं यह जानकि जान कि गाहँक ॥

रघुकुल नायक सब लायक वे घायक शत्रु सहायक दास।
गये सामुहें अपनें हें त्वहिं लैहैं बोलि आपने पास ॥
ख्याल न करिहैं तुव दूषण कछु डरिहैं सब बिसारि अपराध।
कहे हमारे ते सीतादै छोंड़ौ शत्रु भावकी साध ॥
हृदै धारिकै प्रभु पंकज पद लंका अचल करौ तुमराजि।
ऋषिपुलस्त्यके कुलमयंक महँ होसि न खल कलंक छलसाजि ॥

राम नाम बिन बरबाणीकी शोभा नहीं होति दशभाल।
जैसे कपड़ा बिन सोहत नहिं भूषण सजे अनूपम बाल॥
राम विरोधीकी संपति पति प्रभुता कछू काम की नाहिं।
पाई सोतौ बिन पाई सम रही न रही सरिस जगमाहिं॥
सोता नाहीं ज्यहि नदिया महँ सो बर्षा बिन जाय झुराय।
तैसे प्रभुता प्रभु द्रोहीकी लगै बिलात देर नहिं भाय॥
मैं प्रण रोपण करि भाषत यह करु बलवान बचन परमान।
राम विरोधीको रक्षक अरु नाहिंन कोउ जहान महँ आन॥
ब्रह्म विष्णु अरु शिवशंकर लग सकैं न राम शत्रुको राखि।
ताते तजिकै अभिमानै अब भजि प्रभु सुयश लेहु अभिलाखि॥
यद्यपि बंदर समुझायो बहु कहिकै नीति धर्मकी बात।
तद्यपि नीकी नहिं लागी वहि बोल्यो तबहिं फेरि मुसक्यात॥
मिला बँदरवा म्वहिं ज्ञानी गुरु भल समुझाय सिखावत ज्ञान।
यह नहिं शोचत खल बंचर मन अबहीं ज्ञान चहतहैं प्रान॥
नीति सिखावन म्वहिं आयो इत कीश खबीश कुमारग गामि।
उत्तर दीन्ह्यों तब बानर ने शठ तुव हृदै कुमति गै जामि॥
ताते भाषत तैं उलटे बच निश्चय यही लीन मैं जानि।
सुनि प्रत्युत्तर अस हनुमत को बोल्यौ अधम करेरी बानि॥
कौनो जोधा है नाहीं इत जो हरि लेय मूढ़ के प्रान।
इतना सुनते खल धाये बहु हनुमत ओर सुनो हरियान॥
त्यही समइया के औसर तहँ मन्त्रिन सहित विभीषण आय।
लाग बुझावन शठ रावन को नीति न तजो निशाचर राय॥
दूत मारिबो अति अनुचित है यह नहिं धर्म शूरमन क्यार।
दण्ड दीजिये अरु या कहँ कछु मारे सबै देय धिरकार॥
यह मत भायो सब काहू को तब अस कह्यो फेरि दशभाल।
अंग भंग करि यहि बंदर को पठ्यो स्वामि पास उत्ताल॥
पूंछ पियारी बहु बंदरको ताते करौ यत्न असभाय।

भिजै तेल महँ पट बाँधौ दृढ़ औ फिरि आगि देउ लगवाय ॥
बिना पूंछ को जब जाई यह अपने स्वामिहिं लाइ लेवाय।
तिनकी प्रभुता फिरि देखिहौं मैं जिनकी करत बड़ाई आय ॥
सुनि अस बानी अभिमानी की बांदर बीर बिहँसि मन माहिं।
हृदय बिचारत मुद धारत भो शारद भै सहाय शक नाहिं॥
जो कछु भाष्यो खल रावणने निश्चर करन लाग स्वइ ख्याल।
तेल भिगोवा पट चटपट लै बांधन लगे पूंछ ततकाल॥
पूंछ बढ़ाई तब बांदर ने जुर्यो न वस्त्र तेल पुरमाहिं।
आगि लगायो घुमवायो पुर बाजे बजत साथ बहुजाहिं॥
जरत विलोक्यो जब पावक कपि तुरतै छोट रूप लियधारि।
निसरि तड़ाका रजुफंदाते सुमिर्यो हृदै राम धनुधारि॥
उचकि अटारीपर चढ़िकै तब लाग्यो पूंछ घुमावन ज्वान।
देखि तमाशा सो बंदरको तिरिया सकल भई भयमान॥
प्रभुकी इच्छाते अवसर वहि डोलन लगीं पवन उंचास।
दै किलकारी बनचारी तब बढ़िकै लाग जाय आकास॥
एक अटारी ते दुसरीपर जाय लगाय देय तहँ आगि।
तहँते तिसरी फिरि चौथी पर यहि विधि प्रबल ज्वाल गे जागि॥
एक महूरत महँ सबरे घर दीन्हें फूंकि बीर हनुमान।
जागी आगी चौगिर्दा ते लागी लपट जाय असमान॥
भागन लागे कढ़ि धामन ते सिगरे बाल वृद्ध निशिचारि।
डरी निश्चरी कढ़ि भागीं सब लागीं देन रावणहिं गारि॥

स० पुर लंक कलंक के अंकन आंकि थपै अघ पंक कि थापन ते।
उर खैर न चाह्यसि चाह्यसि गैर जो बैर बेसाह्यसि बापन ते॥
उतपात सिरातन एकरती वहि सीय सती के सरापन ते।
जरिक्षार भयो घरद्वार हमार यही दहिजार के पापन ते॥

कौन रखावै यहि अवसर पर हमरी जरी गृहस्थी जाति।
कोऊ बपैया कोउ मैया कहि रोवत पीटि पीटि कै छाति॥

स० हाय उपाय न जाय कियो कछु आयपरी विपदा शिरगाढ़ी।
खाख भई जरि संपति लाख कि माख कि बात अजौं नहिंकाढ़ी॥
भागि बचैं किमिकै यहि आगिते ज्वाल कराल दशौ दिशिबाढ़ी।
ठाढ़ी सबै गरिआवती हैं वहि रावण दुष्टके दादे कि डाढ़ी॥
क़िला कँगूरा घर जरिकै सब ढहि ढहि गिरे भूमि भहराय।
अमित निशचरी अरु निशचर गण जरि मिलिगये क्षारमहँभाय॥
घोड़े हाथी रथ पक्षी पशु उपबन बाग भये जरिक्षार।
बच्यो विभीषण को मंदिर इक सांचो भक्त जौन प्रभुक्यार॥
उलटि पलटि कै पुरिलंका सब जारी हनूमान बलवान।
जाय समुंदर महँ फांदे तब पूंछ बुझाय क्षणक सुस्तान॥
करिकै छोटा तन आये पुनि आतुर जनक सुता के ठाम।
हाथ जोरिकै अति आनँद मन कीन्ह्यों पगन माहिं परणाम॥

इतिश्रीमान्भार्गववंशावतंसश्रीमुंशीनवलकिशोरात्मजश्रीमुंशीप्रयाग
नारायणस्याज्ञाभिगामीउन्नामप्रदेशान्तर्गतमसवासीग्रामनिवासी
पण्डितबंदीदीनदीक्षितनिर्मितश्रीविजयराघवखण्डे
सुंदरकाण्डेतृतीयोल्लासः ३॥

जलधि थहायो स्वाभाविक ज्यहिं सीता शोक नशायो जाय।
खलन खिलायो बन फल खायो लंक अशंक जरायो भाय॥
सिय सुधि गायो पुनि रघुपति ते पायो सुभग स्वामि बरदान।
बंदि सहायक सब लायक सो पायक प्रबल बीर हनुमान॥
लंक जराउब कपि हनुमत को सुनि गिरिराज सुता हर्षाय।
लगीं निहोरन शिव शंकर को पिय पुनि कहौ और कछु गाय॥
हँसि वृषभासन तब भाषत भे गिरिजा सुनौ अग्र इतिहास।
चरित अनंता हनुमंता को मति अनुसार करत परकास॥
जारि अशंका पुरलंका पुनि बंका वीर धीर हनुमान।
आय पहूंच्यो फुलवारी महँ जहँ पर सीय मातु को थान॥
हाथ जोरि कै तिन सीता सों कह्यो विनीत वचन कपिराय।

बिदा दीजिये अब माता म्वाहिं प्रभुसन कहौं खबरि तुव जाय ॥
राह निहारत प्रभु ह्वै हैं मम अब नहिं देर करन को काम ।
पाय तुम्हारी सुधि जामहँ फिरि आवैं इतै वेगिही राम ॥
अर्ज हमारी इक औरिउ है माता सुनौ ताहि मन लाय ।
उचित जानि कै त्यहि पूरण करि मो कहँ बिदा देउ फुरमाय ॥
तुव प्रतीति हित रघुनायक जस मो कहँ दीनि मुद्रिका माय ।
तैसे तुमहूं कछु स्वामी हित आपन चीन्ह देउ हरषाय ॥
सुनि असबानी कपि ज्ञानी की रानी सिया खुशी उरआनि ।
छोरि आपनी शिर चूड़ामणि प्रभुहित कपिहि दीनि सहिदानि ॥
भरि द्वउ नैनन महँ आंशू पुनि बोलत भईं मनोहर बानि ।
हेसुत मोरी हुति स्वामीसन कह्यो प्रणाम जोरि युगपानि ॥
फेरि सुनायो संदेशा मम तुव किंकरी कह्यो अस हाल ।
विरद आपने को सँवरन करि हरिये नाथ मोर दुख जाल ॥
कथा पुरानी बतलावत इक सो सुधि प्रभुहि दिह्यो करवाय ।
चित्रकूट पर जब ठहरे रहैं मोसह सुख निधान द्वउभाय ॥
इक दिन बैठे फटिक शिलापर आपुसमाहिं रहे बतलाय ।
दुष्ट जयंता चलि आयो तहँ भावी मनहुँ लीन बुलवाय ॥
धरे अभागा तन कागा को जागा दुष्ट वासना माहिं ।
मम ढिग आतुर चलिआयो सो लायो तनक शंक हिय नाहिं ॥
चोंच चलायो मम अंगन महँ आयो घाव महा विकरार ।
पुनि भय पागा वह भागा शठ मोतन चली रुधिर की धार ॥
सो लखि स्वामी उर जामी रिस तुरतै सींकबान संधानि ।
सो तकि छाँड़यो वहि कागादिशि प्रान निदान करब अनुमानि ॥
कबहुँन स्वामी रिस कीन्ह्यों अस वादिन जैसि कीन हनुमान ।
सो समुझायो तुम भाषण करि देख्यो काह कहत भगवान ॥
यहौ बतायो कहि नीकी विधि हनुमत पुत्र निहोरौं तोहिं ।
एक महीना महँ ऐहैं नाहिं तौ फिरि जियत न पैहैं मोहिं ॥

प्रान राखि हौं अब कौनी विधि तुमहूं तात कहत हौ जान।
हृदय जुड़ानो त्वहिं देखे सुत अब फिरि ग्रसी विपति बलवान ॥
शोचत शोचत दिन बीतत जस वैसे राति जाति बिलखाति।
एक महीना को अवसर यह कटिहै विपति माहिं क्यहि भांति ॥
अस कहि सीता शुचि गीता सम रोवन लगीं मारि डिंडकार।
धीरज दीन्ह्यों तब हनुमतने कीन्ह्यों पग प्रणाम बहुबार ॥
चले तहां ते पुनि आतुर गति देखन हेत स्वामि रघुराय।
एक कुदक्का करि वारिधि तट चढ़े अरिष्ट मेरु पर आय ॥
घोर गर्जना करि गर्जे तहँ जनु घन प्रलय केर घहरान।
डरीं निश्चरी सो सुनिकै धुनि भे बहु गर्भ पात हरियान ॥
उड़े तहां ते भट हनुमत पुनि चल्ले अकाश मारगहि धारि।
चाल उताहिल अति पवनौते मनौ न जात वेग असप्यारि ॥
पार समुंदर के आये जब जाये वायु केर वरियार।
तब आनन्दित ह्वै कीन्ह्यों तहँ अतिशै प्रलयकार किलकार ॥
टिके महेन्द्राचल पर्वत पर इत जे अंगदादि बलवान।
सुनि किलकारी तिन कानन सों जान्यो आय गये हनुमान ॥
ह्वै उत्साही सब वानरगण उठि कै भये मेरु पर ठाढ़।
ताकन लागे नभ मारग न बाढ्यो सुभट गात बेखाढ़ ॥
देर न लागी प्रलयागी सम पहुँच्यो बीर आय तिनपास।
लख्यो बाँदरन तब नीकी बिधि दरशत काज सिद्धि परकास ॥
भे आनन्दित सब हिरदै महँ जान्यो नयो जन्म भो आज।
मिले परस्पर सब हनुमत कहँ मानहुँ मिली दरिद्रिन राज ॥
मछरी बिछुरी जस पावै जल तस बाँदरन मिले हनुमान।
खगपति आनँद वहि समयाकर मोसन कहिन जात सविधान ॥
चले तहांते पुनि बाँदर सब पूंछत कहत लंकको हाल।
भीतर मधुबन के आये सब बहुभट करत जासु प्रतिपाल ॥
चढ़ि चढ़ि बिरवनपर बाँदर सब लागे मधुर मधुर फल खान।

बर्जन लागे रखवारे तहँ तिनकी कथा सुनौ हरियान ॥
इक इक घूंसा के मारे सब भागे अपन अपन लै प्रान ।
आय बतायो कपि राजाते बँदरन बाग कीन घमसान ॥
सुनि अस हालति हर्षान्यो अति नृप सुग्रीव लीन यह जानि ।
सुधि लै आये वै सीताकी निश्चय यही परत अनुमानि ॥
खबरि लयाये बिन सीताकी मधुवन सकत कौन फलखाय ।
यहि बिधि शोचत सुग्रीवा इत उत सब कपिउ पहूंचे आय ॥
नमस्कार करि कपि नायकको भेंटे सकल प्रेम सरसाय ।
पूंछि कुशलता सब आपुस महँ लागे सुष्टु बचन बतलाय ॥
नाथ तुम्हारी अनुकंपाते कीन्ह्यों स्वामि काज हनुमान ।
सुधि लै आये सिय माताकी राखे सकल कपिनके प्रान ॥
सुनत बानरनकी बानी यह आनी हृदय मोद कपिराज ।
मिले सहादर पुनि हनुमतको जिन परिपूर कीन प्रभुकाज ॥
साथ आपने लै बाँदर सब पुनि सुग्रीव चले प्रभुपास ।
राम विलोक्यो कपि मण्डल को आवत इतै चलो सहुलास ॥
हृदय विचार्यो तब राघव यह निश्चय पूरकीन इनकाम ।
सुधि लै आये सिय प्यारीकी मुख ह्वै रहे तेजके धाम ॥
इतना शोचत रघुनायकके सब कपि पास पहूंचे आय ।
दूनों भाइनके पायँन महँ गे सब प्रेम सहित लपटाय ॥
उठि द्वउ भाई रघुराई तब भेंटे सबहि प्रीति दरशाय ।
पूंछि कुशलता सब बीरन ते अपने पास लीन बैठाय ॥
हाथ जोरिकै तब भल्लुक पति बोल्यो माथ नाय यह बात ।
जापर दाया रघुरायाकी ताको सदा कुशल दिनरात ॥
सुरमुनि मानुष त्यहि ऊपर प्रभु रहत प्रसन्न अवशि सबयाम ।
एकौ क्षिन पल ज्यहि सेवक तन हेरौ नेक नजरि तुम राम ॥
जीति तासुकी है चारिउ दिशि सोई नम्रवान गुणवान ।
तीनिउँ लोकन महँ ताको यश फैलत ठाम ठाम भगवान ॥

नाथ तुम्हारी अनुकंपा ते सहजे सिद्धि भयो सबकाज।
जन्म सुफल भो हम सब हिनको पुनि तुव दरश पाय रघुराज॥
कीन्हीं करणी जो हनुमत प्रभु सो मुख लाख वरणि ना जाय।
गति मति दुसरे महँ नाहीं अस जो यह काज करत रघुराय॥
यहि विधि भाषण करि भल्लुक पति पुनि सब हनूमानको हाल।
कहि समुझायो रघुनायकको जो कछु कीन लंक महँ ख्याल॥
परमानन्दित ह्वै राघव पुनि भेंट्यो हृदय लाय हनुमान।
लखि सबलायक शुचि पायक निज कीन्ह्यों सबप्रकार सन्मान॥
खबरि जानकी की पूंछ्यो पुनि प्रियकी दशा कहो सुतगाय।
क्यहि प्रकारते निज प्राननकी रक्षा करति भरति दुखभाय॥
करुणासानी प्रभुबानी को सुनि हनुमान आंशु बरसाय।
भाषन लागे रघुनंदन ते सियकी कथा यथाविधि गाय॥
नाम पहरुवा तुव रातिउ दिन अहैं किवाँर तुम्हारो ध्यान।
लाग यंत्रिका चष पायन महँ निकसैं कौन राहते प्रान॥
चलत कि बेरा समुझायो म्वहिं कथा जयन्त केरि सबगाय।
जाय चेतायो रघुनायकको केहि अपराध दीन बिसराय॥
दीनि निशानी निज चूड़ामणि सो लै राम हृदय महँ लाय।
महा दुखी भे त्यहि अवसर पर जाय न दशा कही खगराय॥
तौलौं हनुमत फिरि भाष्यो यह हे प्रभु रोय रोय सियमाय।
कह्यो सँदेशा मिस बातैं कछु सुनो सो मन लगाय रघुराय॥
श्री रघुराई को भाई सह किह्यो प्रणाम मोरिहुति तात।
पुनि उर धीरज दै अज्ञालै पूंछ्यो पुत्र एक यह बात॥
मन वच क्रमते ज्यहि दासीकर पायँन माहिं लाग अनुराग।
ताहि निराशी करि दायाहरि क्यहि अपराध नाथ कियत्याग॥
जानत अवगुण मैं आपन इक बिछुरत त्याग कीन नहिंप्रान।
सोऊ दूषण मम देहैं नहिं लेहैं जो बिचारि भगवान॥
दोष हमारी द्वउ आंखिन को यह प्रभु सत्य लेहिं जिय जानि।

प्राण निसरिबेके अवसर ये बाधा करैं आपु हित मानि ॥
नातरुक्षन में तन निन्दित यह जरिबरि क्षारमाहिं मिलिजाय ।
सकल पदारथ हैं पासै महँ जिन महँ जरै वेगिही काय ॥
बिरह तुम्हारो प्रभु आगी है यह तन रुई लेहु अनुमानि ।
श्वास बयारी के लागे ते क्षण में जरै देह दुखखानि ॥
दरश पियासी ये अँखियाँ दुउ निशि दिन झरैं अश्रुकी धार ।
जरै न पावै त्यहि कारण ते यह तन बिरह आगि महँ यार ॥
संकठ भारी बहु सीता को है बिन कहे नीक भगवान ।
एक महूरत त्यहि संकठ महँ बीतत युग हजार परमान ॥
देर न करिये पग धरिये उत लै सब सैन साथ रघुनाथ ।
खल दल भंजन करि संगर महँ लाइय वेगि जानकी मात ॥
सुनि प्रभु सीता दुख बानर मुख अतिव उदासभये मन माहिं ।
अंबुज नैनन महँ आंशू भरि क्षण इक रहे होश में नाहिं ॥
शोचन लागे फिरि हिरदै महँ ज्यहि मन बचन कर्म ममआश ।
ताहि न स्वपन्यो मा चाही दुख यह सब भांति मोर उपहास ॥
भाषण कीन्ह्यों तब हनुमत ने सुनिये दीनबन्धु भगवान ।
बिपति समैया है वाही क्षन जब न तुम्हार होय गुण गान ॥
खल निशिचारिन के मारन को कितनो बात राम सुख धाम ।
शत्रु जीति कै लै आइय सिय यह कछु बड़ो कठिन नहिंकाम ॥
सुनि अस बानी हनूमान की बोले अति प्रसन्न भगवान ।
हे कपि तोसम उपकारी जन दूसर नहिं जहान में आन ॥
सुर नर मुनि गुनि हैं यावत जग कोहुन कीन अइस उपकार ।
धन्य तुम्हारी बल बुद्धी को यहि हित भयो तोर अवतार ॥
याको पल्टा में तोको कपि कबहुँ दैन सकत क्यहु भांति ।
तुम्हरे सन्मुख मुख करतै महँ अतिशै मोरि दृष्टि शर्माति ॥
तोरे ऋणते सुनु बानर बर ह्वैहों उऋण कबौं मैं नाहिं ।
कौनिउँ युक्ती नाहिं याकी अब देख्यों करि बिचार मन माहिं ॥

अस कहि बानर तन लागे पुनि चितवन बार बार करतार।
मारे करुणा के उमग्यो तन नैनन बहन लागि जल धार ॥
सुनि बर बानी निज स्वामी की मुख दिशि देखि हर्षि हनुमान।
ह्वै प्रेमाकुल गिरि पायँन महँ बोल्यो त्राहि त्राहि भगवान ॥
चहतउठावन त्यहि पुनिपुनि प्रभु कपिकहँ उठब नीकनहिंलाग।
लगे सराहन त्यहि औसर सुर हनुमत धन्य तोर अनुराग ॥
प्रभु पद पंकज पर कपि को शिर सो शिर धरे हाथ रघुनाथ।
दशा बिचारत अस हिरदै महँ भे मन मगन गौरि के नाथ ॥
पुनि चित चेतन करि शंकर प्रभु लागे कथा कहन खगराय।
कपिहि उठायो बरिआई प्रभु हृदय लगाय लीन हरषाय ॥
हाथ पकरि कै फिरि आदर सों अपने पास लीन बैठाय।
लागे पूछन पुनि लंकाको सबरो हाल स्वामि रघुराय ॥
रावण रक्षित पुर लंका वह अतिशै कठिन बीर हनुमान।
ताहि जलायो तुम कौनी बिधि मोरे हृदय न आवत ध्यान ॥
लखि आनंदित रघुनन्दन को बंदन कीन कीश द्वउ पायँ।
अतिव मुलायम ह्वै बोले कपि हे रघुराय दया दरिआय ॥
यह मनुसाई है बंदर महँ डारते कूदि डार पर जाय।
लंक जराउब बल मेरो नहिं यह सब प्रभु प्रताप तुव आय ॥
जापर दाया रघुराया तुव ताको कठिन काम कछुनाहिं।
तुव प्रताप ते बड़वागी को दहकरिसकै रुई क्षणमाहिं ॥
सुनि असबानी कपिज्ञानी की अतिव प्रसन्नभये भगवान्।
जानि आपनो शुचिसेवक त्यहि करुणा दृष्टिहेरि मुसक्यान ॥
अमृत बानी सों भाष्यो पुनि अहो सुजान बीर हनुमान।
जो रुचि आवै मन तुम्हरे महँ मोसन मांगि लेउ वरदान ॥
जो कछु चहियो अरु कैहो तुम लहियो स्वई आजु शकनाहिं।
जन मन राखनको भाषण अससुनि कपि मुदित भयो मनमाहिं ॥
अतिव नम्रता सों बोल्यो तब दूनौ हाथ जोरि शिरनाय।

जो मन लावों कहि गावों सुख पावों स्वई दया दरिआय ॥
स० खोजत जाहि यती विरती है अलक्ष्य गती बन में करि डेरो ।
शूरसती सुमती सुगती न लहैं कहुँ एक रती अति हेरो ॥
पारवती पति कीरति जा महँ अन्य लह्यो न चह्यो बहु तेरो ।
बंदि अनंदित है सुख गेहु सो देहु सनेहु सुपायँन केरो ॥
सुनि शुचिबानी कपि ज्ञानी की भाष्यो एवमस्तु रघुनाथ ।
परमानंदित ह्वै हनुमत तब कीन प्रणाम नाय महिमाथ ॥
गिरिजा रघुपति को स्वभाव जिन सूधो जानि लीन मनमाहिं ।
भजन भावतजि तिन प्राणिन को भावत अन्यवस्तु कछुनाहिं ॥
जाके हिरदै महँ आवै यह सेवक स्वामि सुभग सम्बाद ।
निश्चै प्रभु के पग पावन की पावै भक्ति तौन उरगाद ॥
सुनि सुख खानी प्रभुबानी को बंदर पाय अनंद अपार ।
लागे करिबे अति उच्चस्वर जय जयकार बारहीं बार ॥
यहाँ हकीकति अस बीतति भै अब आगे कर सुनौ हवाल ।
रामबोलायो सुग्रीवै पुनि लागे कहन बचन करि ख्याल ॥
करौ तयारी अब चलिबेकी है नहिं देरकरन को काम ।
देहु बाँदरन को आयसु अब मानहुँ बचन मोर बलधाम ॥
हुक्म पायकै रघुनंदन को कपिपति तुरत दूत पठवाय ।
टेरिबोलायो कपि बीरन को लैलै सैन पहूँचे आय ॥
भांति अनेकन के बंदर भट औ बहुभालु रूप बिकराल ।
आय आय कै प्रभुपायँन महँ करत प्रणाम नायमहि भाल ॥
गर्जैं तर्जैं किलकारैं सब धारैं महा हर्ष मनमाहिं ।
बहि कपि भालुन की सैनाकी गणना कहन योग प्रियनाहिं ॥
श्री रघुरायाकी दायाते भे सब अप्रमान बलवान ।
सिद्धिगजाननको सुमिरण करि कीन पयान राम भगवान ॥
शकुन सुमंगल बहु दरशे तब बरसे देव सुमन झरिलाय ।
अंग सुमंगल करफर्कत लखि जान्यो प्रभु पयान सियमाय ॥

भये सगुनवाँ जे सीता को असगुन लखे स्वई दशभाल।
काल चेतावत जनुताको यह अब तुम परन चहत ममगाल॥
डगरी सैना कपिभालुनकी लैकै रामचंद्रको नाम।
पर्वत बिरवालै हाथन महँ गर्जत चले सुभट बलधाम॥
अगणित योधा महिमारग गहि अगणित चले गगनकीराह।
डोली धरती खसि परती लखि शंकित भये अहिनके नाह॥
चिघरन लागे भयपागे अति दिग्गज देखिभार अधिकार।
शिखर पहारन के हालत भे सागर खलभलान बहुबार॥
सूर्य चंद्रमा नर किन्नरबर सुरमुनि सकल हिये हर्षान।
दंत कटकटा करि मर्कट भट धावत जातभूमि असमान॥
जय रघुनंदन जय सीतापति जै सुखधाम राम भगवान।
यहि विधि गावत गुणस्वामी के नामी कीश भालु बलवान॥
रहै न साधे शिर शेशहुके महाअपार भार महिक्यार।
उचकैं लचकैं फटकारैं फन मुर्च्छित होत बारहींबार॥
कच्छप पीठी को दांतन ते दाबैं बार बार उर क्रोधि।
लेखत कच्छप के खप्पर जनु राम पयान महूरत शोधि॥
यहि विधि सैना सह सागर तट उतरे जाय कृपानिधि राम।
चढ़ि चढ़ि बिरवनपर इत उत कपिदल फल लगेखान बलधाम॥
कथा सुनाई कहि इतकी अस उत अब सुनो खलनको हाल।
लंका दाहिकै पुनि जादिन ते आये इतै अंजनी लाल॥
भये सशंकित मन तादिन ते अतिशै यातुधान घबड़ान।
घर घर बैठे सब शोचैं यह बचत न क्यहूभांति अब प्रान॥
अदिन निश्चरन को आयो अब होय न क्यहुप्रकार कल्यान।
मौत मड़ैया अबडारी इत चाहत सकल राकसन खान॥
दूत विक्रमी है जाकर अस बाग उजारि निश्चरन मारि।
जारि अशंका पुर लंका कहँ पहुँच्यो फेरि आपनी पारि॥
त्यहि के स्वामी के आये इत होइ है कौन भलाई भाय।

यहि विधि निश्चर डरपागे सब आपुस माहिं रहे बतलाय॥
सुनि पुरवासिन की बानी अस मंदोदरी हृदय अकुलानि।
जोरि गदोरिया पति रावणसे लागी कहन नीतिकी बानि॥
कही हमारी हितकारी लखि हरिसन बैर करौ जनिनाथ।
अहैं चराचरके नायक वे कालहु जिन्हैं नवावत माथ॥
दूत अकेलो तिन स्वामीको इतकरि गयो कितक उतपात।
शोचत अबहूं डरलागत उर ह्वैगे गर्भ तियनके पात॥
चहौ भलाई जो आपनि पति तिनकी तिया देउ पठवाय।
नतरु कुशलता अब ह्वैहै ना जैहै लंक माहिं दुखछाय॥
तव कुल अंबुज बन जारनको सीता शीत निशासम स्वामि।
खैर न ताके दै दीन्हे बिन मानहुँ कही सुमति उरथामि॥
शंभु बिधातौ के चाहे ते होय न कछु तुम्हार कल्यान।
ताते रिपुता तजि रघुपति ते हितते धरौ चरण महँ ध्यान॥
हैं मेंढक सम ये निश्चर गण उरग समान रामके बान।
लीलत जौलौं नहिं तौलौपति करौ उपाय त्यागि अभिमान॥
सुनि अस बानी मन्दोदरि की हँसा ठठाय निशाचर राय।
नहिं शुमार ज्यहि अहंकार कर हठ नहिं तजै चहै तन जाय॥
सो हँसि बोल्यो मन्दोदरि ते अब मैं सांचु लीन यह जानि।
सहज स्वभावहि भयलावहि तिय मंगलमाहिं अमंगल ठानि॥
बाँदर सैना जो आवै इत तौ निश्चरन केरि बड़ि भागि।
खायँ पेट भरि कपि आमिष सब जाय बुताय भूखकी आगि॥
सब दिन काँपैं ज्यहि रावण के डरते लोकपाल दिगपाल।
ताकी तिरिया भय लावै अस करिकै वृथा कथा उर ख्याल॥
हँस्यो दशानन अस कहिकै पुनि मन्दोदरिहि लीन उरलाय।
गमन्यो तहँ ते पुनि संसदि कहँ ममता हृदय रही अधिकाय॥
आय बिराज्यो सिंहासन पर बर दरबार मध्य खगराय।
मिली खबरिया तब ताको यह सेना सिंधु पार गइ आय॥

सम्मत पूंछ्यो तब मंत्रिन ते देउ सलाह करिय अब काह।
तिन अभिमानिन बतलायो यह बैठो मौनमारि मन नाह॥
स० जीत्यहु देव अदेव नृदेव तबौं न कबौं कछु मंत्र विचारा।
तीनिहुँ लोक अशोक भ्रम्यो तुम सम्मुख अस्त्रकोहूं नहिंधारा॥
जीतन लायक को जगमें त्यहि है ज्यहिते सुरनायक हारा।
शोचत काह वृथा उर अंदर बंदर भालु अहार हमारा॥
वैद्य मंतिरी आचारज ये कहैं कदापि स्वहाती बात।
राज धर्म अरु तन तीनोंकर देर न लगै नाश ह्वै जात॥
परी आयकै सो रावण शिर भाषैं मृषा सलाही सार।
झारि मुहदेखा एकत्रित हैं झाँझरि नाव जाय किमि पार॥
समय जानिकै समुझावन को पहुँचे तहां विभीषण आय।
सुष्टु सलाही हैं साथै महँ बैठे भाय चरण शिरनाय॥
कह्यो विभीषण ते रावण तब भ्राता कहौ उचित सल्लाह।
शत्रु शीशपर चढ़ि आवा अब चलिये कौनि राह मतकाह॥
जेठ भ्राता को भाषण अस सुनि गुनि हृदय विभीषण साधु।
कोमल बाणी ते बोले बच प्रभु मम प्रथम क्षमौ अपराधु॥
अर्ज हमारी को सुनिये पुनि गुनिये ताहि हृदय धरि ध्यान।
अपनी मति सम मैं भाषत हौं जस कछु अहै ज्ञान को भान॥
चहौ भलाई जो आपनि प्रभु शुभगति सुयश जक्त महँ नाम।
चौथि चन्द्रमा के दर्शन सम तुरतै तजौ पराई बाम॥
भुवन चौदहौ कर स्वामी किन होवै एक भूरि परताप।
भूत द्रोह ते सोउ तिष्टै ना सब बिधि हृदय बिचारौ आप॥
सब गुणसागर अरु नागर नर होवै सुयश उजागर आम।
तनके लालच के कीन्हे पुनि जग में होय कलंकित नाम॥
काम क्रोह मद मोहादिक लै ये सब स्वामि नर्क के द्वार।
इनको तजिये अरु भजिये मन श्रीकौशलकुमार सह प्यार॥
रामहिं मानौ जनि मानुष तुम वे चौदहौ लोक के स्वामि।

काल करालहुके घालक वे तिनके क्यों न होहु अनुगामि ॥
ब्रह्मअनामय अजकरुणामय अजित अनादि अनंतअनाम ।
गो द्विज देवन हित आवत इत मानुष रूप धारि स्वइ राम ॥
खल दल गंजन जन रंजन प्रभु भंजनहार भूमि को भार ।
अलख निरंजन चख खंजन स्वइराघव चिदानन्द अवतार ॥
दास सहायक सब लायक वे श्री रघुनायक सूध सुभाय ।
बैर बिसारो तिन स्वामी ते हितसह सिया देहुपठवाय ॥
बिश्व द्रोहकृत अघलागो ज्यहि त्यागो शरण गये नहिं ताहु ।
ऐसे करुणाकर रघुबर की प्रभु तुम अवशि शरणमहँ जाहु ॥
बारबार तुवपद लागतहौं माँगत बिनय सहित यह बात ।
दुष्टनिकंदन रघुनंदन को दै जानकी लेहु यश भ्रात ॥
कहि पठवायो निज चेलाते मो ढिग मुनिपुलस्त्य यह बात ।
भाषि सुनायों सो तुमकहँ मैं औसर जानि मानि हित तात ॥
सुनत बिभीषणकी बानी यह मंत्री मालवंत मतिमान ।
नाना लागे सो रावणको अतिशै हृदय माहिं हर्षान ॥
लाग बुझावन सो रावनको कहि कै नीति रीति की बात ।
आनहुँ यह मत हित मानहुँ निज नीको कहत बिभीषण तात ॥
मालवंत को सुनिभाषण अस माषनलगो मनहिं दशभाल ।
लाखन गारीदै दोउन कहँ कीन्ह्यासि हृदय क्रोध बिकराल ॥
मोहिं सुनावत गुणगावत शठ रिपुकर नेक न लावत आनि ।
है नाहिं कोऊ इन दोऊ कहँ देय उठाय पकरि कै पानि ॥
निंदित बातैं सुनि कानन ते उठि गो माल्यवान निज धाम ।
साधु विभीषण फिरि भाष्योअस करि शठ पगनमाहिं परणाम ॥
गुण औ अवगुण सब काहू महँ भाषत श्रुति पुराण यह बानि ।
गुण ते सम्पति पति प्रापत है औगुण देत विपति महँ सानि ॥
सोई औगुण सब भांतिन ते तुव हिय बस्यो आनि कै भाय ।
उलटी सूझत त्यहि कारण त्वहिं रिपु हित हितू शत्रु दिखराय ॥

निश्चर कुलके संहारन को सीता कालराति सम जानि ।
तबौं न त्यागत अनुरागत त्यहि मिथ्या प्रीति रीति को ठानि ॥
स० माँगत हौं करजोरि निहोरि हया हिय तोरि बहोरि गोसाईं ।
थोरिसि मोरि विनय यह भोरि गुनौकिन खोरि करोरि किनाईं ॥
मानहुँ पैहित जानहुँ ताहि सराहि मृषा न कहौं कछु भाई ।
नेहु करो रघुराई के पायँन देहु सिया जग लेहु भलाई ॥
वेदपुराणन के सम्मत युत बुध मत सहित महा हित बानि ।
कही विभीषण शुचि सीखनरत सुंदर नीति रीति रसखानि ॥
सो सुनि रिसहा ह्वै रावण खल साधुहि कही असंगत बात ।
टरिजा आँखिन के आगेते नातरु अबहिं करत तुव घात ॥
मृत्यु समीपै शठआई तुव यह मैं जानि लीन भलिभांति ।
शत्रुबड़ाई मम आगे खल भाषत भय न तोहिं दर्शाति ॥
मोर जियावा तैं जीवत इत टहलू सरिस परो पुर माहिं ।
पक्ष विरोधी कर भावा त्वहिं आवा मोर ख्याल उर नाहिं ॥
को असयोधा जगबाकी शठ हठ तजि बेगिबतावसि नाम ।
जाहि न जीता मैं संगरमहँ भंगरबकै काह बेकाम ॥
स० ठानिचुको प्रन मानि चुको मन जानि चुको स्वइ बीसबिसेहौं ।
हानि गलानि कि कानि कछूनहिं आनिपरी शिर सो सहिलेहौं ॥
काह वृथा बकने झकने महँ ह्वै सकने पै यहो गहि लेहौं ।
जीयदेहौं सुत तीय देहौं धरतीय देहौं परसीय न देहौं ॥
हमरे पुरमा बसिचाहसि तैं तपी अनाथ साथ अनुराग ।
नीति सिखावसि जनि मोकहँ इत उन्हहिं बताउ जाय यह राग ॥
अस कहि गिरिजा वहिं रावण ने मारी विभीषणै इकलात ।
तबौं विभीषण दुखमान्यो नहिं आन्यो जेठ भ्रात को नात ॥
यहै प्रशंसा शुचि संतन की अहै अनंत गुणन की माल ।
करै भलाई रिपुताई महँ धरै न कबौं बदी को ख्याल ॥
कही विभीषण फिरि वाणीमृदु गही न हृदय अनादर ग्लानि ।

भल यह भ्राता तुम मास्यो म्वहिं यहिमा कछु न भई ममहानि ॥
बड़े हमारे पितु सदृश तुम मानत सही वही अधिकार।
अबहूं भाषत कहि माखत नहिं रामहिं भजे होय हित त्वार ॥
अस कहि गिरिजा फिरि साधू वह तजिकै सभा मंत्रिलै साथ।
नभ महँ आयो गोहरायो तब अबहूं सुनौ वचन मम नाथ ॥
सौंह राम की करि भाषत प्रभु भै यह सभा काल वश तोरि।
शरण सिधारत हौं स्वामी की अबना दिह्यो मोरि कछु खोरि ॥
जबहिं विभीषण असभाषणकरि परिहरि लंकचल्यो प्रभुपास।
आयु खोंटानी जनु तबहीं ते आयो निशाचरन को नास ॥
साधु अनादर के कीन्हे ते तुरतै होत बिभव की हानि।
बिपति गरेरत अघ घेरतहठि कबहुंन आनि मिलत मुदपानि ॥
जबहिं बिभीषणको त्याग्योखल रावण तबहिं भयो बिनभाग।
होय तेज बिन जस बिषयाबश परिकरि यती त्याग वैराग ॥
चले विभीषण आनंदित तब सब सुखधाम राम के पास।
गहि नभमारग श्रुतिपारग सम बहुमन करत मनोरथ आस ॥
लालकमल सम गंगाजलसम निर्मल अतिपवित्र सुखखानि।
सुमति करनके कुमति हरन के देखिहौं चरन जाय दृगतानि ॥
जिन सुखदायन प्रभु पायनको छुइ अविकारि भई मुनि नारि।
पावन कीन्ह्यों जिन दण्डक बन दीन्ह्यों शुक्र शाप को टारि ॥
हृदय लगायो जिन पायँन को सीता सब प्रकार सुखपाय।
कपट मृगा के सँग धाये जे बनमहँ खाय कंटकन घाय ॥
शिव मन मानस के अंबुज जे खोजत जपी तपी धरिध्यान।
आजु देखिहौं तिन पायँन को मोसम भाग्यवान को आन ॥
धरे खराऊँ जिन पायँनकी पूजत भरत नित्त सविधान।
ते पदपावन मनभावन के देखिहौं नैन निमेषन तान ॥
करत मनोरथ यहि भांतिन मन आयो त्वरित सिंधु के पार।
जहँ बर बानर दल संयुत उत उतरे रमारमण कर्तार ॥

कपिन विभीषणको आवत लखि जान्यो शत्रुदूत कोउ आय ।
जाय सुनायो सुग्रीवाको तिन रघुपति ते कह्यो बुझाय ॥
शत्रु सहोदर चलि आयो इत मंत्रिन सहित विभीषण नाम ।
है कह आयसु प्रभु ताके हित कहिये रामचंद्र सुखधाम ॥
सुनि असबानी कपिनायक की लायक जानि राम भगवान ।
राजनीति मत युत भाषत भे करिकै देश काल अनुमान ॥
बुद्धि विशारद तुम बानरपति सम्मति मंत्रि जनन की लेहु ।
होय यथोचित त्यहि कीजै फिरि सहसा शत्रु न आवन देहु ॥
कहि समुझायो जब या बिधि प्रभु अंगद हाथजोरि शिरनाय ।
मंत्र आपनो कहि भाषत भो सबहि सुनाय नीति सरसाय ॥
छोटो भाई यह रावण को अतिशै सुभट लिये भट साथ ।
कौनौ सम्मत करि आवा इत पठवा अवशि याहि दशमाथ ॥
यावत राकस खल लंका महँ सो सब शत्रु रूप दिखरात ।
तिन्हैं मारिबो मत निश्चै यह मिलिबो कौन नात सों तात ॥
यदि यहि साधू कहि भाषत सब आवत मनन सत्य यह डांड़ि ।
रावण लैगा हरि सीता जब तब यहिं क्यों न दीन त्यहि छांड़ि ॥
याते हमरो मत याही प्रभु कपटी सबै राकसी जाति ।
मुलाकाति महँ कछु नीको नहिं तजौ न राजनीति क्यहु भांति ॥
उलटा लौटै यह लंका को इत नहिं काम आइबे क्यार ।
तौलौ मंत्री नल बोलत भो अपने ज्ञान बुद्धि अनुसार ॥
बिन मत जाने लौटारब त्यहि वाजिब मो बिचार महँ नाहिं ।
ऊंचो आसन दै बैरी को बैठारिबो नीति के माहिं ॥
दूत पठावो प्रभु याके ढिग पूंछौ कहत काह यह बात ।
यदि यह मत में नहिं रावण के तौ राखिये शरण में तात ॥
नातरु मारिय भ्रम डारिय सब तनकौ शत्रु भाव बतलाय ।
सम्मत हमरो है स्वामी यह करौ विचारि योग्य जो आय ॥
शील सयाने बुधि साने तब बोले नील जोरि दुउहाथ ।

मर्जी आवै तौ अर्जी यक हमरिउ सुनौ नाथ रघुनाथ ॥
जो शरणागत यह आयो तुव सत्य अखेद भेद मिलिजाय ।
राजिव लोचन तौ राखिय यहि शोचन कछू करिय रघुराय ॥
करि अति पातक द्विज घातक किन आवै शरण चरणकी ताकि ।
अवशि राखिये त्यहि निर्भय करि जनि परिहरिय विरदकी बाकि ॥
नील शील युत यह भाष्यो जब तब फिरि बुद्धिवान हनुमान ।
कछुक हमारिउ कुविचारिउ की सुनिये प्रभु सुजान भगवान ॥
साधु विभीषणको राकस जनि जानिय रामचंद्र महराज ।
बुद्धि विशारद श्री नारद जस अरु प्रहलाद भक्त शिरताज ॥
तैसै सेवक यहि जानौ निज दीनदयाल अवध अधिपाल ।
सुजन सयानो यहि मानो प्रभु आनो मृषा हृदय जनि ख्याल ॥
कहन न पायो हनुमंता सब तबलौं दुखी विभीषण साधु ।
विरदकेरी कहि टेरी उत हे प्रभु क्षमौ मोर अपराधु ॥

स० कौशल पाल दयाल अहो तुव हाल विशाल सुन्यों बहुतेरो ।
पायँ पियादेहि धायगये उतबारन कै जब बारन टेरो ॥
ज्यों प्रहलादने यादकरी नरसिंह ह्वै राखि लियो लखिचेरो ।
बंदि पुकारत आरत त्यों हर आरत हे हरआरत मेरो ॥

आरतबानी सुनि साधूकी पुलके प्रेम भाय भगवान ।
परमानंदित ह्वै बोले तब सुनहु सुजान बीर हनुमान ॥
बेगि विभीषण को लावो इत सज्जन सरिस साधि सन्मान ।
सकौं न आरत लखि आरत को बिरद प्रमान देत नहिं जान ॥
करुणा सानी प्रभु बानी सुनि आनी हिय अनंद हनुमान ।
चले संग लै अंगदादि कपि साधुहि मिले सहित सन्मान ॥
तुरत विभीषण को आगे करि गमने राम पास सहुलास ।
भये विभीषण आनंदित तब जान्यों भई प्रपूरण आस ॥
देखि दूरिते रघुनंदन द्वउ नयनानन्द दानि सुखखानि ।
उत्तम सुखमा लखि राघव की रहा सो ठाढ़ एक पग तानि ॥

स० साँवल गात प्रभा सरसात लखात छटा बरसात घटा सम।
कामं लजात महा धिकखात दिखात न कैस्यहु गात लटासम॥
शारद चंदहु मंदलगै मुख चंद अमंद सोहात हटा तम।
बंदि अनंदित देखि कटा भ्रम शीश जटा द्युति विज्जुपटा सम॥
नैन नीर भरि उर धीरज धरि सविधि निहोरि जोरि द्वउपानि।
बानि मनोहर कहि भाषत भो हे छबि धाम राम सुखखानि॥
दुष्ट दशाननको भाई मैं अति अघधाम विभीषण नाम।
राकस कुलमें मो उतपतिहै रहत कुठाम लंकपुर ग्राम॥
सुयश सुजानन मुखकानन सुनि आयों शरण हरण भ्रमजाल।
विरद सँभारो दुखटारो मम दीनदयाल राम भूपाल॥
गिय्यो दण्डवत् भुवि भाखत यह निरख्यो ताहि अयोध्यानाथ।
देर न लाये उठिधाये त्वर कर गहि नाथ विभीषण माथ॥
झपटि उठायो हिय लायो त्यहि पायो मनहुं रंक बड़ि राजि।
प्रीति बढ़ायो हरषायो अति किय सन्मान मान शुभसाजि॥
निज समाज महँ लै आये त्यहि अपने पास लीन बैठाय।
अंतर्यामी शुचि स्वामी पुनि पूंछन लगे हाल हरषाय॥
कुशल आपनी कहु लंकापति सह परिवार पूत तियनाति।
निशिदिननिवसोखलमण्डलमहँ निबहतसखाधर्मक्यहिभांति॥
रीति तुम्हारी मैं जानी सब तुम्हें अनीति सोहात न तात।
बसिबो नरकौकर नीको बरु देइ न धात दुष्टको साथ॥
शारँगपानी की बानी सुनि गुनि अस कह्यो विभीषण बात।
प्रभु पदपंकज रज पायेते अब सब भई मोरि कुशलात॥
कुशल जीवको नहिं तबलौं कछु स्वपन्यो मन न पाव बिश्राम।
जबलौं जगके इतमामै तजि होय न दास तुम्हारो राम॥
निवसैं तबलौं हिय नाना खल मत्सर लोभ मोह मद मान।
जबलौं हिय में तुम बसि हौ नहिं धरि वर हाथ शरासन बान॥
हृदय कोठरी महँ तबलौं प्रभु ममता अंधकार रह छाय।

त्यहि अँधियारी महँ रागादिक बसैं उलूक आय सुख पाय ॥
जबलौं उज्ज्वल प्रभु प्रताप रवि करैन हृदय माहिं परकास ।
तबलौं कैस्यहु हिय कोठरी को होवै अंधकार नाहिं नास ॥
तीनिउँ तापैं त्यहि व्यापैं नहिं जापर तुम प्रसन्न भगवान ।
ताहि कुशलता सब ठामन महँ भाषत श्रुति पुरान परमान ॥
नीच जाति को मैं निश्चर खल कबौंन कीन सुकृत आचार ।
सब विधि तापर अनुकम्पा करि लीन्ह्यों राखि जक्त कर्तार ॥
रूप अनूप न लखि पावैं मुनि गुनि गुनि करैं सदा ज्यहि ध्यान ।
सो प्रभु अतिशै आनंदित ह्वै भेंट्यो मोहिं सहित सन्मान ॥
भागि हमारी नहिं जानित धौं कबकी उदय भई सुखकारि ।
अछत विलोक्यों पद कंजन को सेवत जिन्हैं विरंचि पुरारि ॥
सुनत विभीषण की बानी अस हँसि मुसक्यान भानु कुल भानु ।
कहि समुझावन पुनि लागे त्यहि सखा स्वभाव मोरयहजानु ॥
जानत नीकी विधि भुशुण्डि शिव मृषा न कहौं मोरि यहबानि ।
होय चराचर को द्रोहीनर कैस्यहुरहै शरण महँ आनि ॥
नाना औगुण तजिताके मैं साधु समान करौं गुणवान ।
यहि महँ शंका कछुनाहीं है अन्तहु ताहि देहुँ निजथान ॥

स० मात पिता हित पुत्रकलत्र जहां लगि नातरह्यो जगजोरी ।
धाम अराम धरा धन ग्राम सबै अनुराग के ताग बटोरी ॥
बंदि भले बटिकै मनसों कसि मो पदमें फिरि बाँधहि डोरी ।
सज्जन सो हिय कैसे बसै मम चोर हिये निवसै जसचोरी ॥

तुम सम सज्जन म्वहिं प्यारे अति तिनके हेत लेत अवतार ।
दूसर कारण कछु या महँ नहिं मानहुँ सखा सत्य व्यवहार ॥
सगुण उपासक परकासक हित अति शै निरतनीति पथमायँ ।
द्विज पद प्रेमी दृढ़नेमी नर मोहिं पियार प्राणकी नायँ ॥
ये गुण तुममें सब लंकापति ताते मोहिं प्रीय तुम लाग ।
भयो अनंदित अति हिरदै मम तुम्हरो देखि स्वच्छ अनुराग ॥

सुनि यह बानी रघुनंदनकी जै जै कार करन कपिलाग।
हृदय विभीषण हर्षाने अति जाने परम आपने भाग॥
शिरनवाय कै पद पंकज महँ करत प्रणाम बारहीं बार।
दया दयाकर की अतिशैलखि हृदय समात न प्रेम अपार॥
सुनौ चराचर के स्वामी प्रभु हिय कछुरह्यो प्रथम को भाव।
लखि पद पंकज त्यहि कारण ते बाढ़्यो प्रीति केर दरियाव॥
अब आनंदित कै सेवक पर इतनी अर्ज एक सुनि लेहु।
शिव मन भावनि सरसावनि सुख आपनि भक्तिनाथम्वाहिंदेहु॥
एवमस्तु कहि रघुनायक पुनि मांग्यो तुरत सिंधुको पानि।
कहि विभीषणै समुझायो अस सुंदर मधुर मनोहर बानि॥
यदपि तुम्हारी नहिं इच्छा कछु मानहु सखा तदपि यह बात।
दर्शन मिथ्या ममनाहीं जग करत पुराण वेद विख्यात॥
असकहि करुणाकरदीन्ह्यों करि निजकरराजतिलकत्यहिमाथ।
सुमन सुवर्षे सुर हर्षे मन कहि कहि धन्य धन्य रघुनाथ॥
क्रोध दशाननको आगी जनु श्वास समीर ज्वाल बिकराल।
जरत विभीषण को राख्यो प्रभु दीन सुराज कीन भूपाल॥
जो सुख संपति शिव रावणको दीन्ह्यों जबहिं दीन दशमाथ।
तौन विभीषण को संपति सुख क्षण महँ सकुचि दीन रघुनाथ॥
ऐसे स्वामीको त्यागन करि जो नर भजै अन्य प्रभुजाय।
निश्चय जानहुँ त्यहि मानुष को पशु बिन सींग पूंछको आय॥
जानि आपनो शुचि सेवक त्यहि लीन्ह्यों शरण माहिं अपनाय।
लखि यह करणी रघुनंदनकी गे कपि वृन्द महा हर्षाय॥
जानि सुऔसर पुनि बोले प्रभु सुनु लंकेश बीर कपिराज।
अगम समुंदर यह उतरब किमि कै हैं कौन भांति यह काज॥
कह्यो विभीषण तब सम्मत शुभ सुनियै बल निधान भगवान।
सिंधु करोरिन को शोषक यह यद्यपि नाथ हाथको बान॥
तदपि न त्यागिय राजनीति प्रभु अनुचित नृप सुभाव यहआय।

रिस जनि धरिये मुद भरिये उर करिये बिनै सिंधु पहँ जाय ॥
कुल गुरु तुम्हरो है वारिधि यह देहै अवशि युक्ति बतलाय ।
बिना परिश्रम कपि सैना सब ह्वै है उतरि पार रघुराय ॥
सखा बतायो तुम नीको मत करिबे यहै शोच बिसराय ।
दैव सहायक ह्वै जैहै जो तौ सब काज जाय बनि भाय ॥
नीक न लाग्यो यह लक्ष्मण को भे बहुदुखी सुनत प्रभुबात ।
हाथ जोरिकै तब बोलत भे बरबीरता जगत बिख्यात ॥
दैव भरोसा को मतलब कह सुनिये दीनबंधु भगवान ।
देर न करिये रिस धरिये मन सोखिय सिंधु एकही बान ॥
दैव भरोसा है कूरन हित जिनमें कछू पराक्रम नाहिं ।
युक्ति साधिबो नहिं जानत कछु दैवहि रटत रहत मनमाहिं ॥
हँसे अवधपति सुनिबानी अस पुनि लक्ष्मणैं कह्यो समुझाय ।
ऐसइ करिबे दैव बिसरिबे धीरज धरौ हृदय महँ भाय ॥
असकहि अनुजहि दै सीखनशुभ सिंधुसमीप गये रघुराय ।
अपनो कुलगुरु त्यहि बोधन करि प्रथम प्रणाम कीनशिरनाय ॥
डारि कुशासन पुनि आसन करि तटपर बैठिगये धरिध्यान ।
इतै हकीकति अस बीततिभै उतकर चरित सुनौ हरियान ॥
जबहिं विभीषण तजि लंकापुर आये इतै रामढिगभाय ।
हाल जानिबेहित पाछे तब रावण दूतदीन पठवाय ॥
सो चलिआयो जहँ राघवदल छलसे रूप कपिनको धारि ।
लख्यो विभीषणको कौतुक सब मिलतै रामदीन दुखटारि ॥
भूप बनायो त्यहि लंकाको शंका सकल नाशिभगवान ।
ये गुण रघुपतिके देखतचर हृदय अनंद माहिं अधिकान ॥
जाहिर ह्वैकै रघुनंदनको लग्यो स्वभाव सराहनचारु ।
प्रेमसमूल्यो तनफूल्यो अति भूल्यो कपटकेर व्यवहारु ॥
देखि निशाचर तनताको तब बँदरन शत्रुदूत पहिंचानि ।
पकरि तड़ाका करिबंधन महँ बहुदुख दियो कटकमें आनि ॥

पुनिले आये कपिराजा पहँ तिनअस हुकुमदीन फुरमाय॥
अंग भंग करि यहि राकसको पठवो जहां निशाचर राय।
हुक्म पायके कपिनायकको बंदर स्वइ उपाय रचिभाय॥
मसीलगायो त्यहि आननमें दलके ओर पास घुमवाय।
करन ताड़ना बहुलागे कपि बरणी जो न जाय खगराय॥
कान नासिकाके काटनको कीन्ह्यों हृदय माहिं अनुमान।
दूत दोहाई तब दीन्ही यह रक्षाकरिय राम भगवान॥
सौंह दिवायो पुनि बँदरनको काटै जो हमार श्रुति नाक।
ताहि दोहाई रघुराजाकी कीन्ह्यों श्रवण लषण यह बाक॥
पास आपने बुलवायोतिन दीन बिलोकि दीन छुड़वाय।
दीनि पत्रिका पुनि ताकोलिखि दीन्ह्यों दुष्ट रावणहिं जाय॥
कहि समुझायो त्यहि पापिहि यह लक्ष्मण बचन बाँचुमनलाय।
खैर आपनी जो चाहसि शठ हठ तजि सिया देहु पठवाय॥
काल तुम्हारो चलिआवानतु मानहुँ सत्य सत्य यह बात।
सुनि यह बानी भटलक्ष्मणकी चलिभे दूत हृदय हर्षात॥
आय पहूंच्यो पुरलंकामहँ रावण सभाजाय शिरनाय।
रह्योठाढ़ ह्वै त्यहि सन्मुखमहँ तब त्यहि लख्यो निशाचरराय॥
हाल हकीकति सब पूंछतभो कहुशुक दूत आपनि कुशलात।
खैर बिभीषणकी भाषसि पुनि राखसि जनि छिपाय कछुबात॥
मीचुहँकारी ज्याहिं आपने कर तपी अनाथ बनायसिनाथ।
छांड्यसि सुंदर सुखलंकाकर घुनसम पीसिजाय यवसाथ॥
रीछ बँदरवनकी सैनाको पुनिकहि मोहिं बतावसि हाल।
काल बुलाई जो आई इत सत्य दिखात जात यह ख्याल॥
अबलगि तिनके तनजीवनकर मृदुचित सिंधुभयो रखवार।
अबना बचिहैं क्यहु भांतिनते जैहैं अवशि वेगियमद्वार॥
भाषु तपस्विनकी बातै पुनि जिनके हृदय मोरि बड़ि त्रास।
रातिन निद्रादिन भोजन नहिं छांड़े बैठ जियनकी आस॥

तोहिं भेंटानेकी फिरिगे घर सुनिकै मोरि बीरताकान।
कसबतलावत नहिंरिपुदल बल खलक्यों भयोतोर मुखम्लान॥
हाथ जोरिकै चरबोलो तब खोलो मानहुँ जहर पेटार।
नाथ कृपाकरि जस पूँछ्यो यह तैसे सुनहु रोष मनमार॥
मिल्यो जायकै जब इततेचलि साधुविभीषण अनुज तुम्हार।
देर न लागी मुदजागी उर दीन्ह्यों रामतिलक त्यहिसार॥
म्वहिं पहिंचानत चररावणकर बँदरन बहुतु ताड़ना कीनि।
काटन लागे श्रुति नाशाजब तब मैं सौंह रामकी दीनि॥
बड़ी कठिनताते छांड्यो तब अति दुर्दशा माहिं म्वहिं डारि।
रिच्छ बाँदरनकी सैनाकर का मैं कहहुं हाल्ल अमरारि॥
शेष जोपावैं सौकरोरि मुख संख्या तबहुं न सकैं बताय।
रंग अनेकनके भालूकपि बिकटानन बिशाल सब काय॥
बाग उजारी ज्यहि बाँदरने जारी लंक शंक बिन आय।
बहु निशिचारी हनिमार्यो ज्यहिं सो उत छोट बीर दिखराय॥
वहिते भारी तहँ अगणितभट अति बलवान तेजकी रासि।
द्विविद मयन्दी कुमुदनीलनल दधि मुख अंगदादि विकटासि॥
येसब बाँदर कपिनायकसम विक्रमवान मोहिं दिखरान।
और करोरिन असयोधा तहँ सकै बखानि काहि असज्ञान॥
रामकृपाते बल तिनकेअस गनै न निज समान भटआन।
तीनिउँ लोकनमहँ आवैं फिरि सन्मुख कोउ न होय मैदान॥
सुन्यों दशानन मैं कानन जो सो कहि तुमहिं बताओंहाल।
पदुम अठारह कपि सेनापति हैं अतिबल विशाल बिकराल॥
कौनौ बाँदर अस नाहीं प्रभु दल महँ मोहिं पर्यो दिखलाय।
तुम्हैं न जीतै जो संगर महँ अधिकी कहौं काह बतलाय॥
मारे रिसके करमींजैं सब आयसु पैन देत रघुराय।
ना तरु सोखैं धरि सागर कहँ डारैं नक्रव्याल झखखाय॥
परबत फारैं नाखूनन ते मिलवैं मर्दि गर्दि दशमाथ।

देर न आनै हतिराकस कुल सानै लंक पंक महँ नाथ॥
गर्जैं तर्जैं अरु लर्जैं मन इत आइबे हेत अमरारि।
शंक न लावैं कछु हिरदै महँ धावैं मारि मारि किलकारि॥
इकतौ सहजै स्वाभाविक प्रभु बाँदर भालु होत बरियार।
दुजे सहायक रघुनायक प्रभु करैं अपार काल संहार॥

क० कौशलेश कुल दिनेश को अशेश ओजलेश श्री महेश औ गणेश शेश ते न गाय जाय। सुयश वेश देश देश पूरित जस शुचि निशेश रहत हरष महँ हमेशँ ज्यहि खगेश पाय पाय॥ शुचि सुवेश हर कलेश मानत निशिदिन निदेश सुर सुरेश औ धनेश पग सुदेश ध्याय ध्याय। बंदितासु आसुरेश भाषत तुम नर नरेश ज्यहि रमेश पारमेश भाषत श्रुति गाय गाय॥

सिंधु सैकरन को सोखै धरि यद्यपि रामकेर इकबान।
तद्यपि नीति न उनत्याग्यो कछु अस मर्यादवंत भगवान॥
युक्ति विभीषण सों पूछ्यो तब उनहुँन कही उचित सल्लाह।
मानि सो सम्मत अति बिनती सह माँगत बैठि सिंधुसोंराह॥
हँसा भवानी सुनि रावण अस दूतहि कह्यो बहुरि रिसिआय।
बकु जनि मिथ्या खल जान्यों मैं रिपु बल बुद्धि और व्यवसाय॥
ऐसी मति परका करिहैं वे दूजे कीश सहायक पाय।
तीजे कादरको सम्मत लै मचले सिंधुकिनारे जाय॥
यही बँभनई पर लावत मन करिबो निशाचरन ते रारि।
सचिव विभीषण अस कादर जहँ तहँ का देर होत मैं हारि॥
दुष्ट दशाननकी बाणी सुनि दूतहु हृदय गई रिसबाढ़ि।
जानि सुओसर निज फँटाते लीन्ह्यसि तुरत पत्रिका काढ़ि॥
दीनि पत्रिका यह लिखिकै प्रभु तुम्हरे हेत राम लघुभाय।
गहरु न लावहु बँचवावहु यहि सुनतै हृदय जूड़ ह्वैजाय॥
विहँसि दशानन त्यहि पातीको लीन्ह्यसि बाम हाथते भाय।
लाग बँचावन यक मंत्री ते अपना सुनन लाग मनलाय॥

मनहिं रिझावमि जनि बातन महँ नाशत वृथा दुष्ट परिवार ।
राम विरोधे ते बचिहै ना जो शिव विष्णु होयँ रखवार ॥
तजि अभिमानै हित आनै तौ प्रभुकी चरण शरण महँ आउ ।
रघुपति शायक सुठि पावक महँ जनि कुल सहित आपु जरवाउ ॥
सुनिकै पाती अस लक्ष्मणकी बोल्यो कछु सभीत मुसक्याय ।
मिथ्या बातनके सुनिबे महँ मोरे हृदय क्रोध अधिकाय ॥
वृथा बतकही लघु तपसीकी आवत सुने सबहि परिहास ।
जैसे कोऊ परि धरती महँ पकरा चहै हाथ आकास ॥
क्रोधित ह्वै कै शुक बोल्यो तब है सब सत्य स्वामि यह बानि ।
हृदय विचारहु रिसधारहु जनि है अभिमान माहिं बड़िहानि ॥
बैर बिसारौ रघुनायक सन डारौ वृथा मोहको ख्याल ।
मानुष मानौ जनि स्वामी त्यहि जो विकराल कालको काल ॥
देउ जानकी रघुनाथै प्रभु साधौ मित्र भाव व्यवहार ।
होय भलाई सब भांतिन ते इतना कहा मानिल्यो म्वार ॥
देबु जानकी को भाष्यो शुक सो सुनि दुष्ट दशानन तात ।
हिय महँ धारी अतिभारी रिस मारी दूत हृदय महँ लात ॥
माथ नायकै सो सज्जन चर आयो तुरत रामके पास ।
पग प्रणाम करिकहि भाष्योपुनि आपनि कथा सकलसहुलास ॥
राम कृपाते गति पायो निज छायो हृदय माहिं मुद आनि ।
शाप पायकै मुनि अगस्त्य को राकस भयो रह्यो मुनिज्ञानि ॥
बंदि रामपद आनन्दित पुनि आयो तुरत आपने धाम ।
इतै हकीकति असबीताति भै आगे सुनौ चरित अभिराम ॥
बैठे प्रभुको वहि सागर तट गे जबबीति तीन दिनभाय ।
बिनय न मानी जड़ सागर ने तब रघुनाथ उठे रिसिआय ॥
नीच नम्रतासों मानत नहिं निश्चय भई आज यह बात ।
उन्हैं ताड़नै फलवाजिबहै भय बिन कहुँन प्रीति दरशात ॥
लाउ लक्ष्मण धनुशायक मम सोकौं सिंधु अग्नि शरमारि ।

काम नम्रताको नाहीं अब मैं यह मंत्रलीन निर्द्धारि ॥
बिनती करिबो, जनमूरुखते धरिबो नेह कुटिलके साथ।
नीति उचरिबो कंजूसनते विषयीनरहि ज्ञानकी गाथ ॥
विरति बखानब बहुलोभीसे क्रोधिहि शांत होनकी बात।
बीज बवाउब महि ऊसर में निश्चय सकल वृथा ह्वैजात ॥
असकहि धन्वा संधान्यों प्रभु तान्यों गुनहिं जोरि नाराच।
उमड़ी सागर उरऔसर त्यहि अतिविकराल ज्वालकी आंच ॥
जीव बसैया जलभीतरके मछरी मगर गोह घरियार।
चिघरनलागे अति व्याकुल ह्वै जान्यो उदधिराम व्यापार ॥
सुबरण थाराभरि रतननसों धरिकै हाथ नाथके पास।
आयो चलिकै धरिभूसुर तन जागी हृदय महाभय त्रास ॥

स० चंदन गंधि घिसेही पसारत हारत ज्ञानहिं ते जिमिदंभा।
बंदेहिते सुख सज्जन मानत रंदेहिते सुधियात है खंभा ॥
जानेहिंते रुचिहोतहिये महँ छानेहिंते दरशै शुचिअंभा।
डाटेहिते सुधरै तिमिनीच औकाटेहिते सुफरै फिरि रंभा ॥

अंबुधि खंबुधि बहु डर्पतउर परस्यो प्रीति सहित प्रभु पायँ।
करहु क्षमापन मम दूषण यह हे रघुनाथ चराचर सायँ ॥
पानी पावक पवि पवनौ लै बसुधा सहित स्वामि आकाश।
इनकी करणी स्वाभाविकजड़ वेद पुराण करत परकाश ॥
तुम्हरी अज्ञाते मायाने बिरच्यो इन्हैं सृष्टिके हेत।
ज्यहिहित आयसु जस स्वामी तुव सोतस रहैं गहैं चितचेत ॥
मोहिं सिखायो भलकीन्ह्यो प्रभु तुम्हरिहि कीनि मोरिमर्याद।
पशुतिय ढोलक अरु अन्त्यजशठ ताड़ेहि सूधहोत असुराद ॥
तुव प्रतापते रघुनंदन प्रभु याहीक्षन सुखाय हम जाब।
उतरि जाइहै सब सैना तुव मोरि नशाय जायहै आब ॥
राउर अज्ञा अति अपेल जग भाषत भलीभांति श्रुतिचारि।
मनमें आवै सो करिये प्रभु हमको सब प्रकार स्वीकार ॥

देखि नम्रता इमि वारिधिकी बोले रामचन्द्र मुसकाय ।
ज्यहिविधि उतरै कपिसैना यह तात सो युक्ति देहु बतलाय ॥
नाथ नीलनल कपिभाई द्वउ बालक बिश्वकर्म के जानु ।
इनकी माताको दीन्हो यह इनके बाप सुभग बरदानु ॥
पुत्र तुम्हारे अतिकारीगर ह्वै हैं हम समान गुणमान ।
इनके परसे ते पानी महँ तरिहैं अति विशाल पाषान ॥
सेतु बाँधिहैं ये सहजे महँ ह्वै है बे प्रयास सब काम ।
हमहूं प्रभुता धरिहिरदै तुव बलसमहोब सहायक राम ॥
यहि विधि बंधन बँधवावो प्रभु सुंदर सुयश जायजग छाय ।
कायम रहिहै मर्यादा मम ज्यादा कहौं काह अबगाय ॥
नागर सागरकी बाणी सुनि बोले सुयश उजागर राम ।
तुम्हरे शोषनहित धार्यो हम जो यह सफल बाण मतिधाम ॥
कौनठामपर त्यहि छोंड़ैं हम सो तुवबेगि देउ बतलाय ।
सुनि यहबानी धनुपानी की सागर कहन लाग समुझाय ॥
बिदितलोक महँ जसराघव तुम अतिशय पुण्यवान गुणवान ।
तैसे उत्तरदिशि जाहिर यक शुचि द्रुमकुल्य नाम अस्थान ॥
तहँ दुख दायक दुष्कर्मीखल बहु आभीर करतहैं वास ।
तिनपर छोड़ो यहि बाणहि प्रभु औ करिदेव खलनको नास ॥
बचन मनोहर सुनि सागरके तज्यो नराच राम बलधाम ।
पहुंच्यो ज्यहिथल वहशायक त्यहि मरुकान्तार प्रकटभोनाम ॥
प्रविशि रसातल महँ पहुंच्यो शर तहँते कढ़ी प्रबलजलधार ।
नामकूपब्रण त्यहि भाषत सब जगमहँअहै प्रकट अधिकार ॥
भयोतुरंतै उन पापिनको शायक लगत नाश खगराय ।
भो आनंदित अतिअंबुधि तब प्रभुकहँ कियप्रणाम शिरनाय ॥
बिदामाँगिकै पुनि सागर वह गमन्यो तुरत आपने धाम ।
देखि सफलता निजकारजकी मनमुद लह्यो राम अभिराम ॥
आय पहूंचे पुनि सैना महँ लागे होन मंगलाचार ।

यह सुखदायक यशराघवको बरण्यो बंदि बुद्धि अनुसार ॥
कलि मलनाशक परकाशक बल बिद्या बुधि बिबेक बिज्ञान।
सुनैं सुनावैं अरु गावैं जे तिनकर करैं राम कल्यान ॥
यहि भवसागर के तरिबे कहँ नाहिंन अन्य पदारथ सार।
मंगल दायक अघ घायक यह जस श्री रामचरित आधार ॥
छंदप्रबंधित करिभाष्यो यहि जस कछु रही चित्तकी साध।
दोष न लावैं कछु सज्जन जन करिकै क्षमाबंधि अपराध ॥
प्रागनरायणकी अज्ञा लहि यह शुचि ग्रंथ कीन परकास।
श्री रघुराया की दायाते पूरण भयो चौथ उल्लास ॥

इतिश्रीभार्गववंशावतंसश्रीमान्मुंशीनवलकिशोरस्यात्मजश्रीमुंशीप्रयाग
नारायणस्याज्ञाभिगामीउन्नामप्रदेशान्तर्गतमसवासीग्रामनिवासी
पण्डितबंदीदीनदीक्षितनिर्मितेश्रीविजयराघवखण्डे
सुन्दरकाण्डेचतुर्थोल्लासः ॥

समाप्तोयंसुन्दरकाण्डः

इति ॥

---

केवल भाषाही मात्र जानते हैं उनके लिये भी यह काव्य भाषा टीका में बहुतही थोड़ी कीमत से मिलसक्ती है क्योंकि यह काव्य गान विद्या जाननेवालों तथा रसिक पुरुषों और श्रीभगवद्भक्तों व संस्कृत विद्या के सीखनेवाले विद्यार्थियों आदि इन सबको प्रियहै इस हेतु दो प्रकार से इस यंत्रालय में यह पुस्तक छापीगई है एक तो भाषा टीका युक्त दूसरे संस्कृत टीका सम्मिलित ॥

## दृष्टान्तप्रदीपिनी प्रथम भाग सटीक ॥

इसपुस्तकमें सैकड़ों दृष्टान्त बहुत उम्दा २ प्रमाणिक मय भाषाटीकाके वर्णितहैं जो लोग भाषा तथा संस्कृतकी रामायण या पुराण आदि कथामें कहते हैं उनके पास तो यह पुस्तक अवश्यही होना चाहिये इसके सिवाय अन्यभी महज्जन जिनकी अभिरुचि श्रीभगवत्सम्बन्धी कथाओं में रहती है और परमेश्वरके परमभक्त कहातेहैं तथा होनेकी रुचिकरते हैं वहभी इसके पढ़ने से कृतार्थ होंगे क्योंकि यह बहुतही अद्भुत ग्रंथहै इसमें एक और भी बड़ा गुणहै कि कैसाही आलस्यहोवै अथवा संसार जनित मोह भ्रम होवै और इस पुस्तकके पांच छः सफा पढ़े तो शीघ्रही आलस्य छूटकर ईश्वरकी ओर भक्ति उत्पन्न होतीहै और चित्तमें अतीव मोद होताहै मूल्य भी इसका बहुत थोड़ाहै ॥

# इश्तहार ॥

सम्पूर्ण महाशयों को प्रकट होवे कि इसपुस्तक को मालिक मतबा अवध अखबार ने बहुतसा रुपया व्यय करके अपनी ओर से उल्थाकरा के निज यन्त्रालय में मुद्रित कराया है इस कारणसे कोई महाशय इसके छापने का इरादा न करें –

मेनेजर अवध अखबार प्रेस

लखनऊ

# श्रीसियराघवेन्द्रखण्ड आल्हा

श्रीरामचन्द्र आनन्दकन्द का लङ्काकाण्ड सम्बन्धी
परमोदार चरित्र आल्हा की रीतिपर छन्द-
प्रबन्ध में वर्णन किया गया है

लक्ष्मणपुरस्थ भार्गववंशावतंस बैकुण्ठवासी श्रीमान् मुंशी नवलकिशोर
जी के पुत्र रायबहादुर मुंशी प्रयागनारायणजी की आज्ञानुसार
उन्नाम प्रदेशान्तर्गत ससवासी ग्राम निवासी स्वर्गवासी
पण्डित बन्दीदीनदीक्षित ने रामरस रसिक पुरुषों के
मनोविनोदार्थ अतिरोचक छन्दोंमें निर्मितकिया

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए., के प्रबन्ध से

# अथ श्रीविजयराघवखण्डे

## लङ्काकाण्डप्रारम्भः ॥
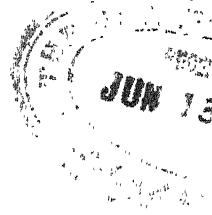
### सुमिरण ।

बन्दौं श्रीगुरुपद पङ्कजरज सिर्जकसुमति कुमतिकर नाश ।
मोद प्रसूती जन पूती कर भूती दानि खानि परकाश ॥
भव गद मर्दनि यशवर्द्धनि अति गति बर देनि श्रेनि सुरधाम ।
अमृतचूरण परिपूरण गुणदायक सेव्य सुकृत आराम ॥
जन मन दर्पण द्युति अर्पण कर निर्मल बुद्धि शुद्धि दातारि ।
मोह नशावनि सरसावनि सुख पावनि रामभक्ति उरकारि ॥
प्रेम दृढ़ावनि हरि पाँयन महँ ख्वावनि बिषै जनित सन्ताप ।
त्यहि करि अञ्जन दृग अञ्जित पुनि गावहुँ रामचरित हर पाप ॥
करौं बन्दना द्विज चरणन की जे श्रुति नीति शास्त्र बक्तार ।
परम पियारे नारायण के धारे राम भक्ति उर हार ॥
सुजन समाजन पुनि प्रणवत हौं जे परकाजन खड़े तयार ।
अड़े अहर्निशि उपकारै महँ हरि गुण गड़े बड़े दातार ॥
कड़े न होवैं जे स्वपन्यो महँ कबहुँ न पड़े बिषय के जाल ।

जड़े यथोचित नित धर्मै महँ नाहिंन हर्ष शोक क्यहु काल ॥
पुनि पद बन्दौं द्वैपायन के जिन अष्टादश रचे पुरान ।
सेतु बनायो भव उतरन कहँ करि हरि चरणकमलगुण गान ॥
तिन भजि भाषत हौं रघुबर यश कलिमल हरन करन बरज्ञान ।
जानि स्वकिंकर अनुकम्पा करि करिहैं सब प्रकार कल्यान ॥
पुनि पद बन्दौं मुनिनायक के ध्यायक जौन राम पद केर ।
हरि गुण गायक सब लायक ते देहैं बुद्धि जानि निज चेर ॥
पुनि पग परसौं तुलसिदास के जिनके राम नाम आधार ।
कामधेनु इव रामायण जिन रचि कलि मध्य कीन बिस्तार ॥

स० । देव अदेव ऋषी मुनि सिद्ध असिद्ध गुणी निगुणी गण जोऊ ।
शाकत वैष्णव शैव तपी श्रुति नीति पुराण प्रमाणक सोऊ ॥
थावर जङ्गम जीव जिते जग रामसों मानत नातहैं कोऊ ।
गावत तासु यशै सुदया करि दासके खास सहायक होऊ ॥

बचन समुन्दर के सुन्दर सुनि गुनि मन कह्यो मन्त्रिसन राम ।
करहु बिलम्ब न अब आनँद सह बिरचनकरहु सेतु अभिराम ॥
अटक न होवै जेहि कारणते उतरैं कटक भटक सब त्यागि ।
सुनि अस बानी धनुपानी की बोल्यो जामवन्त अनुरागि ॥
हे रघुनन्दन जन मन चन्दन है भव तरन सेतु तुव नाम ।
सहजे मानुष चढ़ि जापर त्वर गमनत अमरराज के धाम ॥
तौ लघु अम्बुधि यह तरिबे कहँ लागि है कितक बार हे नाथ ।
पलहु न बीतै मन चीतौ तौ सब दल तरै जलधि इक साथ ॥
यहि बिधि भाषत जामवन्तके मन अभिलाषत सुबुधि सुजान ।
प्रभु रुख राखत मुद चाखत इमि भाखत भयो बीर हनुमान ॥
शास्त्र बखानत जग जानत सब है बड़वानल नाथ प्रताप ।
आप आगमन लहि प्रथमैं तेइँ सोक्यो सकल जलधिको आप ॥
तव रिपु रमनी के रोदन ते नैनन बही जौन जलधार ।
ताते भरिगो पुनि सागर यह और न कछू बात कर्तार ॥

युक्ति उक्ति अस कपिनायककी सुनि मुसक्यान भानुकुलभान।
सबिधि प्रशंस्यो आनन्दित ह्वै हे हनुमान धन्य तुव ज्ञान॥
लखि अभिलाषा सीतापति की मन्त्री जामवन्त हर्षाय।
निकट बोलायो नल नीलहि पुनि सबरो हालकह्यो समुझाय॥
तुमपर दाया रघुनन्दन की परसत करहि तरत पाषान।
रचौ सेतु अति आतुरता ते धरि हरिचरण कमल को ध्यान॥
देर न लागै दल उतरै ज्यहि पूरण होय स्वामि को काम।
यह कहि पुनि गुनि पविलावनहित टेर्यो भालु कपिन लै नाम॥

क०। हे मतिसीव सुग्रीव गवय गय बालितनय अतिशय बल जोरा।
हे दधि आनन वीर गवाक्ष मयन्द गयन्द बली न अथोरा॥
सेतु समुन्दर बांधन के हित लावहु बेगि घने पवि रोरा।
एक तौ श्रीरघुराजको काज औ दूसर मानिकै मोर निहोरा॥

सुनि अस बाणी जामवन्त की कपि अरु भालु रामपद ध्याय।
चले असंख्यन भट जय जय करि दक्षिण दिशा गये हर्षाय॥
एक फलङ्का महँ शङ्का बिन तरु अरु शैल लेहि कर तानि।
आनि देहिं सो नल नीलहि पुनि लागे रचन सेतु सुखदानि॥
समय न बीतो मन चीतो शुभ सुन्दर सेतु कीन तय्यार।
लखि अति हर्षे रघुनन्दन मन जनु निर्मयो जक्तकर्तार॥
तब अस पूछ्यो नलनीलहि प्रभु इतकछु लखि न परत सामान।
कर्तब कीन्ह्यो कहजाते यह इक महँ जुरे सकल पाषान॥
इहि बिधिबाणी सीतापतिकी सुनि नल बिहँसिकह्यो समुझाय।
हे प्रभु संशय कछु यामहँ नहिं जो बिधि कियो कहत सो गाय॥

क०। राउर पावन की रजको प्रभु गारो बनायकै यामहँ पाग्यो।
भक्तिप्रभावको तावदियो मलजारिकै चूनाकियो सोइ राग्यो॥
नाम प्रताप को कै बरमा पुनि तासन ये पवि कोणन दाग्यो।
बन्दि जड़्यो यशके हथुरा अरु टांको रकार मकारको लाग्यो॥

यहि बिधि सुन्दर बच नलके सुनि अति आनन्द भये रघुराय ।
जामवन्त अरु शुभकण्ठहि पुनि बोलि समीप कह्यो समुझाय ॥
है मन रमनी यह धरनी अति बरनी छटा न मोपै जात ।
चित उतकण्ठा मन आवत इक तुमसन कहत बरणि सो तात ॥
इहां थापना शिवशंकर की करिहौं अवशि सहित उत्साह ।
करहु सो आतुर तेहिसामा तुम जेहि परिपूर होय मम चाह ॥
लखि यह इच्छा रघुनन्दन की बृन्दन चले बँदरवा धाय ।
बोलि लयाये बहु मुनियन कहँ आये ऋषि समूह हर्षाय ॥
बुद्धिबिशारद ऋषि नारद सह आये श्रीबिरञ्चि सुखपाय ।
हरि गुण गायन द्वैपायन सह पहुँचे मुनि पराशरहु आय ॥
भरद्वाज अरु घटसम्भव मुनि गौतम अत्रि अङ्गिरा गाधि ।
देवल लोमश मार्कण्ड मुनि आये सुष्ठु मुहूरत साधि ॥

स० । कण्व क्रतू कपिलादिकलै पुनि और ऋषी जग जौन गनाये ।
सिद्ध सुरेश गणेश जलेश समेत सबै सुर आनँद छाये ॥
योगी जपी बनबासी तपी द्विज बन्दि सदा जे रहैं हरि ध्याये ।
बोधि कै राम मनोरथ ते सब शोधि कै सुष्ठु मुहूरत आये ॥

नमस्कार करि तिन सबहिन को भेंटे कण्ठ लाय रघुनाथ ।
स्वच्छासन पर बैठाख्यो पुनि बोल्यो बचन जोरि युग हाथ ॥
हृदय कल्पना मम आई इक सो भाषत हौं सबै सुनाय ।
त्यहिसुनि मन गुनि शुभ सम्मतकरि वेश निदेश देहु फुरमाय ॥
अति प्रिय लागत यह अस्थल मोहिं है तट सिन्धुकेर सुखदाय ।
इहां थापना शिवशङ्कर की चाहत करन बेद बिधि लाय ॥
नहिं मोहिं प्यारो शिवशङ्करसम दूसर सुरन नरन महँ आन ।
बसौं सर्वदा हिय शम्भू के धारे रहत सदा हिय ध्यान ॥
शम्भु बिरोधी म्वहिं भावै ना होवै चहै मोरही दास ।
नहिं कोउ रक्षक शिवद्रोही को पावै अवशि नरकमहँ बास ॥

स० । है शिव ध्यान निरन्तर जाउर अन्तर मो शिवमें न विचारो ।

नाम जपै शिवको निशि बासर राखै पदाम्बुज प्रेम अपारो ॥
शम्भु स्वरूपहि पूजै सदा दृढ़ भक्तिके भावते होय न न्यारो ।
सो तन मानुष धन्य धरामधि है म्वहिं प्राणहुँते अति प्यारो ॥

सुनि इमि भाषण जगतारण को सुर मुनि सब समाज हर्षाय ।
अमृत बाणी कहि भाषत भे हे प्रभु! भक्तबछल मन काय ॥
यहि सम कारज परमोत्तम अरु नाहिन करन हेतु क्यहुकाल ।
अवशि थापना शिवशङ्कर की करिये सकल त्यागि जंजाल ॥
होय जो आयसु हम सबहिनको शीघ्र सो करहिं शीशपर धारि ।
जाते कारज मङ्गलीक यह पूरण होय बिघ्न परिहारि ॥
देहु सुआयसु कपिनायक को लावैं बेगि यज्ञ सामान ।
चन्दन अक्षत दधि दुर्वा अरु पल्लव पञ्च पुष्प दल पान ॥
सकल तीरथन को चाहिय जल कदली खम्भ अम्ब पालास ।
अरु खदिरादिक के खम्भा बर यव तिल धूप दीप कर्पास ॥
कुशा कलश घृत अरु पूगीफल शुभ मिष्टान आठहू धात ।
शहद शर्करा नारिकेल अरु हरदी दुग्ध तुलसि का पात ॥
इन्हैं आदि ले अरु सामा जे चाहिय शम्भु प्रतिष्ठा काज ।
बेगि सो आवन का चाही प्रभु है शुभ दिवस मुहूरत आज ॥
सुनि मुनि भाषण इमि सीतापति पुनि सुग्रीवहि कह्यो बुझाय ।
बेगि मँगावहु यह सामा तुम हनुमानादि बीर पठवाय ॥
पायके आयसु इमि स्वामी को शुभगर लीन बीर हंकारि ।
कहि समुझायो तिन सबहिन को चले निदेश बेश शिरधारि ॥
सप्त जलधि को जल लावन हित आतुर चले बीर हनुमान ।
शेष पधारे वन गावँन कहँ लावन हेत यज्ञ सामान ॥
मुनियन सामा बतलाई जो सो सब खोजि खोजि कपि भालु ।
बेगि लयाये रघुनायक ढिग को कहि सकै तौन सब हालु ॥
प्रापत ह्वैगइ सब सामा जब तब प्रभु बिधिसन कह्यो बुझाय ।
हे बिधि! दाया करि मोपर अब शिव थापना देहु करवाय ॥

हाथ जोरिकै बिधि भाष्यो तब करिये नाथ बचन परमान ।
शम्भु प्रतिष्ठा करवावन हित कोउ आचारज यहीं सुजान ॥
जबलग होय न आचारज कोउ केहिबिधि होय अरम्भन याग ।
योग्य होय जो आचारज के करिये ताहि सहित अनुराग ॥
यहि बिधि बाणी सुनि धाता की बोले व्यास देव हर्षाय ।
तुम सम उत्तम आचारज अरु है है अन्य कौन इत आय ॥
शम्भु प्रतिष्ठा बिधि ज्ञाता इत तुमसम नहीं और कोउ आन ।
ताते यहि क्षण रघुनन्दन के तुम आचार्य होहु सबिधान ॥
बचन मनोहर द्वैपायन के सुनि इमि सृष्टि करन शिरनाय ।
हाथ जोरिकै पुनि बोलतभे मुनिबर श्रवण करिय मनलाय ॥
यावत बैठे इत सुर मुनि ऋषि एकते एक बुद्धि आगार ।
लोक बेदकी बिधि जानत सब हैं अति दक्ष नीतिके कार ॥
पै शिव अर्चा की चर्चा बिधि करिबो बेद शास्त्र अनुसार ।
ज्ञाता रावण सम दूसर नहिं राखत जक्क मध्य अधिकार ॥
वा सम पण्डित मति मण्डित अरु दूसर शम्भु भक्त कोउ नाहिं ।
परम पियारो शिवशङ्कर को निशिदिन जपै शम्भु उरमाहिं ॥
उत्तम नाती मुनि पुलस्त्य को मुनि बिश्रवा केर है तात ।
सोहै लायक आचारज के कीरति जासु जक्त बिख्यात ॥
इमि बिधिबाणी धनुपाणी सुनि गुनिमनकह्यो बिधिहि समुझाय ।
केहि बिधि ऐहै इत रावण सो कहिये बृत्त तौन मन लाय ॥
भाष्यो धाता तब रघुबर ते करिये अस उपाय हे नाथ ।
पत्र निमन्त्रण को लेखन करि भेजिय हनूमान के हाथ ॥
प्रभुकर अङ्कित खत देखत सो अइहै अवशि इहां हर्षाय ।
है आचारज करवैहै सो शिव थापना बेद बिधि लाय ॥
यह मत भायो रघुनायक मन लै लेखनी मोद सह हाथ ।
नाम दशाननके लिखिकै खत पुनि सबलिख्यो आपनी गाथ ॥
आतुर सौंप्यो सो हनुमत कर औ सब दियो बृत्त समुझाय ।

करि रघुनन्दन पद बन्दन तब हनुमत चले लङ्कपुर धाय ॥
को छबि बरणै कपिनायक के पायक प्रबल राम को जौन।
पौन गौन करि आतुरता ते पहुँच्यो लङ्कबङ्क बल भौन ॥
कह्यो सँदेशा दरमानी ते सो रावणहिं सुनायो जाय।
पायक आयो रामचन्द्र का आवन चहत आपु ढिग सायँ ॥
आज्ञा दीन्ह्यो तब रावन ने पठवहु त्वरित दूत मम पास।
आय सो भाष्यो हनूमान ते पहुँचे सभा बीर बलरास ॥
स्वर्ण सिंहासन पर आसन किये राजत जहां निशाचर नाथ।
माथ नाय कै तहँ सम्मुख ह्वै दीन्ह्यो पत्र लङ्कपति हाथ ॥
लियो बाम कर हँसिपाती सो बाँचन लग्यो अधिक लवलाय।
जानि निमन्त्रण रामचन्द्र को उर असमंजस कियो बनाय ॥
शोचन लाग्यो त्यहि अवसर यह कारण कौन निमन्त्रण क्यार।
काह जानि कै रघुनायक म्वहिं प्रेख्यो बैर भाव परिहार ॥
चही जाइबो यहि अवसर म्वहिं आतुर रामचन्द्र के पास।
करि निर्धारन मन जैबे को कीन्ह्यो सभा बेगि बर्खास ॥
ह्वै आनन्दित कपिनायक सँग चलिभो बैर भाव बिसराय।
आय पहूंच्यो झट सागर तट जहँपर राम लषण दोउ भाय ॥
इकदिशि राजत मुनिमण्डल जहँ इकदिशि सुरसमाजको साज।
चहुँ दिशि सैना कपि भालुनकी मध्यम अवधराज बिरराज ॥
आय दशानन तहँ प्रापत भो कपि केशरी सुवन के साथ।
रावण आवत लखि ठाढ़े भये बिधि सह सुरसमाज रघुनाथ ॥
करि अभिवादन तब रावण को आसन स्वच्छ दीन बिछवाय।
लाय सहादर बैठाय्यो तहँ पूछ्यो कुशल प्रश्न हर्षाय ॥
बिहँसि दशानन तब भाषत भो सुनिये राम सन्त सुख धाम।
दियो निमन्त्रण केहि कारण मोहिं कहिये ममागमनको काम ॥
बचन मनोहर सुनि रावण के श्रीरघुनाथ हर्ष के साथ।
अमृत बाणी सों बोलत भे आशय सुनिय मोर दश माथ ॥

है मन रमनी यह धरनी अति अम्बुधिनिकट प्रकट शुभथानि ।
इहां थापना शिवशंकर की चाहत करन चित्त अनुमानि ॥
भाष्यों सम्मत सुर मुनियनते तिन यह कह्यो मोहिं समुझाय ।
शम्भु प्रतिष्ठा करवावन हित श्रीरावणहिं लेहु ब्वलवाय ॥
शम्भु समर्चा बिधि जानत सो जस श्रुति शास्त्र कीन निर्धार ।
ताहित तुमकहँ दियो निमन्त्रण उचित सो करहु लङ्क भर्तार ॥
सुनि रघुनन्दन मुख बाणी यह अति आनन्द भयो दशमाथ ।
उर मुद खोलत तब बोलत भो कीन्ह्यो पर बिचार रघुनाथ ॥
शिव आराधन सम साधन अरु है नहिं नरन करन अह्लाद ।
नर बर देवत सब सेवत ज्यहि तजि शिवभक्त और जग बाद ॥
धनि शिवसेवी नर दुनिया महँ पावत चारि बस्तु अनयास ।
सदा अनन्दित सो रैहै जग जो शिव चरण कमल को दास ॥
अज अबिनाशी सुखराशी नित बासी शुभ्र मेरु कैलास ।
नाशी पाशी यम समनक भ्रम जन मन रमन दमन भवपास ॥
ज्ञाता त्रय गुण तीनि काल के घालक भाल कुअङ्कन माल ।
धरिधाता तन जगसिरजत जो पुनि ह्वै विष्णुकरत प्रतिपाल ॥
शम्भुरूप धरि पुनि नाशत सोइ ज्यहिडरडरत काल को काल ।
निर्गुण सर्गुण निर्विकार सो ध्यावत भगत जगत जंजाल ॥
करत थापना तिन शङ्कर की हे अवधेश बेश यह काम ।
पूरण ह्वै है मन चिन्तित सो प्रापत होन यही सब साम ॥
श्रुति बिधि ज्ञाता बिधि बैठे इत ये आचार्य होहिं अभिराम ।
नतरु पराशर द्वैपायन मुनि ये हैं करन योग्य गुरु राम ॥
सुनत दशानन मुख बाणी यह बोले सृष्टि करन मुसक्याय ।
तुम हौ सेवक शिवशङ्कर के निश्चय सदा बचन मन काय ॥
बसें निरन्तर शिव मानस तुव पूजत रहत नित्त शिव पायँ ।
ताहित ह्वैबो आचारज को यहि क्षन उचित तुमहिं को आय ॥
ह्वै आनन्दित तब बोलत भो सांचो शम्भु भक्त दश माथ ।

है असमञ्जस इक यामहँ अरु तुमसन कहत तौन रघुनाथ ॥
शम्भु थापना बिन पत्नी के करब न उचित अहै क्यहु काल।
जेते कारज मङ्गलीक जग होत न बिना युक्त किये बाल ॥
प्रथम कीजिये निर्धारण त्यहि तत्पश्चात् होय कछु काज।
सुनि इमि भाषण दशआनन को शोचन लगे राम रघुराज ॥
युक्ति न भावै कछु हिरदै महँ तब दशबदन कह्यो मुसक्याय।
करिय याचना रघुनन्दन जो तौ सिय देहुं काज यह पाय ॥
शम्भु प्रतिष्ठा के करिबे हित केवल सीय देहुँ मँगवाय।
पुनि लैजैहौं मैं लङ्का को जब थापना पूरि ह्वैजाय ॥
लङ्कापति को सुनि भाषण इमि शङ्का युक्त भये रघुराय।
सम्मत पूछ्यो सब मुनियन ते रावण कथित बृत्त समुझाय ॥
मुनिन बुझायो कहि रामहिं तब है प्रभु काज शीघ्रता क्यार।
युक्ति न बनि है यहि अवसर अरु ह्वै है यही भांति निर्धार ॥
आकृति सुबरण कै जाते बनि पै यहि समय कठिन है राम।
ताते मांगिय सिय रावण ते जाते होय शीघ्र यह काम ॥
सुनि मुनि सम्मत चित चिन्तनकरि भाषतभये भानुकुल भान।
हम न माँगिबे सिय रावण ते लेबे जीति समर मैदान ॥
लागत लघुता यह कीन्हे ते रघुकुल रीति होत बिपरीति।
याते शोचिय कछु दूसर मत ज्यहि त्वर होय काज बिन ईति ॥
यहि बिधिबाणी धनुपाणीकी सुनि पुनिकह्यो मुनिन मन शोधि।
औरौ युक्ती है याको प्रभु चाहिय समय लेहु त्यहि बोधि ॥
अनुचित यामहँ कछु नाहीं है ना कछु शोच करन को काम।
है श्रुति सम्मत यह भाषतसो सुनि मन गुनिय ताहि हे राम ॥
आगे करि कै अपमानहिं अरु करि पश्चात् मान को ठान।
स्वारथ साधत सोइ ज्ञानी नर स्वारथ नशे कहत अज्ञान ॥
याते उत्तम शुभ कारज अरु दूसर करन हेतु जग नाहिं।
किये याचनौ जो पूरण होय तौ समझिये धन्य मन माहिं ॥

यहि बिधिभाषत सुरमुनियनके सुनिमनशोचि मोचिभ्रमजाल।
कियो याचना तब रावण ते सुनिये सत्य बचन दशभाल॥
देहु जानकी मोहिं माँगे ते केवल शम्भु थापना काज।
पुनि लै जायो तुम लङ्का को पूरहु मोरि याञ्चा आज॥
यहि बिधि भाषत रघुनन्दन के आतुर उठ्यो निशाचरराय।
रथ चढ़िलीन्ह्यो पथ लङ्का की पहुँच्यो भवन जाय हर्षाय॥
पुष्पवाटिका महँ प्रापत भो जहँ पर रहैं जानकी माय।
बोलि कहारन सजवायो शुभ शिबिका परम अनूपम लाय॥
बिहँसि जानकी सों बोलत भो हे रघुबंश बिभूषण बाम।
मोसन यांच्यो रघुनायक त्वहिं केवल शम्भु थापना काम॥
मुद सह गमनौ अब सागरतट तुवहित सज्यो सुखासन यान।
काज अवश्यक तुव स्वामी को चलिये बेगि न कारण आन॥
यहि बिधि भाषत सुनि रावण के हर्षित भईं जानकी माय।
ध्यान धारिकै रघुनन्दन को आतुर चढ़ीं सुखासन जाय॥
बढ़ी लालसा उर दर्शन की भरिगो महामोद सों गात।
बनै न बरणत त्यहि समया को सिय हिय प्रेम नेम नवजात॥
यथा चन्द्रमा निशि पूनो का निरखन हेतु जलधि सरसाय।
पावस आगम जस हर्षै शिखि रवि आगमन कमल बिकसाय॥
जानि अवाती जिमि स्वाती की चातक हृदय होय आनन्द।
तैसइ सीता मन बीता सुख पावत जानि भानुकुल चन्द॥
चढ़ीं पालकी जगदम्बा जब इत उत जुटे कहरवा चारि।
अति बल बगरे लैंडगरे तब ज्यहि दिशि परे भक्त भय हारि॥
चल्यो पछारी रथ ताही पथ अकथ जुझार लङ्कपति क्यार।
जोते खच्चर त्वर वाहक युग झनकत मन्द मन्द झनकार॥
समय न लाग्यो मुदजाग्यो हिय सिय पालकी सहित दशमाथ।
आय पहूंच्यो झट सागरतट ज्यहि थल सदलबसे रघुनाथ॥
सिय पिय आश्रम जब पहुँचतभईं कहरन पलकी धरी उतारि।

उतरि भूमिजा भुवि आईं तब साईं सुरति दीखि दृगपारि ॥
जलधिसमीपै विमलस्थल अति आसन बिछे सुभग मृगछाल।
डसे कुशासन तिन ऊपरबर तिनपर बैठ अवधनृपलाल ॥
जग अस को भा जो शोभाशुभ त्यहि क्षण केरि कहै सब गाय।
जिनगुण गावत श्रुति हारेहिय शेश न सकै लेशहू पाय ॥
खलदल दूषण रघुकुल भूषण निजजन पूषण भक्त अधार।
पार न पावत ब्रह्मादिक ज्यहिं छबिलखि मारखात धिरकार ॥
त्रयजग त्राता लघु भ्रातासह सोहत दीप्तिमान जनुभान।
चार शरीरन शुचि बल्कलके पूति बिभूति अङ्ग निर्मान ॥
शरद चन्द्र सममुख राजत शिर लटकत जटा छटा छहरान।
पान करनको जनु अमृत रस शशिमहँ शेश बाल लपटान ॥
लसै जनेऊ सुख देऊ हिय माल बिशाल ललत गलमाहिं।
सरकस तरकस शरनिकरनयुत औ पटपीत फँसितकटि पाहिं ॥
कञ्जन खञ्जन छबिहारी चष चञ्चल तकनि मन्द मुसकानि।
पाणि लजावत द्युति मृणाल की गोलकपोल माधुरी बानि ॥
यती सुबेषन सों सोहत युग बन्धव धरे हाथ धनुबान।
बामदहिन दिशि जामवन्त अरु शुभगल बालितनय हनुमान ॥
इत उत राजत सुर मुनियन गन नैनन लाहुलेत हर्षान।
धन्य जन्म जग उन पुरुषनको जे मन मगन सदा यहि ध्यान ॥
यहि बिधिबैठे लखि रघुबर को सिय मनहीं मन कीन प्रणाम।
सहित दशानन तब सीता को आवत निकट लखतभे राम ॥
भे उठिठाढे सुरमुनियन सह लीन्ह्यो मुदित अगारी आय।
लाय सुआसन बैठारतभे सीता सहित निशाचर राय ॥
यावत सैना कपिभालुनकै शुभ कण्ठादि वीर बलधाम।
श्री जगदम्बा के चरणन महँ हितसह करतभये परणाम ॥
पुनिकछु अवसरके बीततपर सुरमुनि मन्त्र पाय रघुनाथ।
बिहँसि दशानन सों भाषतभे अब जो उचित करिय दशमाथ ॥

तब दशकन्धर यह भाषत भो हे अवधेश बेश बरराम ।
आयसु दीजै कपि भालुन कहँ प्रापत करैं लाय इतसाम ॥
पुनि शुचितन ह्वै दृढ़ आसन लै करिये आप मन्त्र शिवजाप ।
जाते पूरैं तुव कारज सब मङ्गल सहित शम्भु परताप ॥
निश्चरपति को यह भाषनि सुनि मनगुनि त्वरित जानकी कन्त ।
प्रापत करिबे हित सामासब आयसु दियो बोलि हनुमन्त ॥
पुनितन पावनकरि आसन लहि अपना करनलाग शिवजाप ।
जेती सामा यज्ञादिककी रावण निकट कीनि कपि प्राप ॥
ध्याय सहायक शिवशंकर तब रावण बेदरीति सविधान ।
लैसुर मुनियन को सम्मत शुभ बरबेदिका कीन निर्मान ॥
पुनि मखमण्डल की रचना करि यज्ञस्तम्भ दीन गड़वाय ।
सविधि स्वस्त्ययन पढ़ि ताही क्षण घट अस्थापन दीनकराय ॥
पुनि गठिबन्धन सिय राघवको निकट सुआसन लीन बिठाय ।
लग्यो करावन सुरअर्चा सब जस कछु शास्त्र बेदमत आय ॥
पुनि गणनायक अरु गिरिजासह दशहू दिशाकेर दिग्पाल ।
कियो प्रतिष्ठा इन सबहिन की नाशन हेतु बिघ्न के जाल ॥
पुनि आवाहन अरु पूजन बिधि रघुनायकहि दीनि बतलाय ।
सो सब कीन्ह्यो प्रभु हर्षित ह्वै जामहँ सुफल काज ह्वै जाय ॥
लग्यो बतावन जस रावन पुनि तस बिधिकरन लाग रघुनाथ ।
गणपति गौरी को पूजन करि कीन्ह्यो ध्यान जोरि युगहाथ ॥
पुनि आचारज के करिबे हित कीन्ह्यो बरण दशानन क्यार ।
करि शुचिजल सों प्रक्षालन पग दीन्ह्यो शुभ रोचना लिलार ॥
सबरे जगको आचारज जो जाते प्रकट भये श्रुति चारि ।
कथैं निरन्तर गुण शारद सुर शेश महेश जात हिय हारि ॥
सो प्रभु लीला बिधि करिबे कहँ हरिबे हेतु धरा को भार ।
सो प्रभु दीन्ह्यो करि रावण को निज आचार्य केर अधिकार ॥
पुनि दशआनन यह भाषत भो सुनिये भक्तभावते राम ।

जाननवाले श्रुति चारिहु के मुनि इत करहिं आय तुव काम ॥
यजुर्बेद को अधिकारी जो सो अध्वर्यु होय यहि काल।
जो मुनि ज्ञाता सामबेद को सो उद्गाता होय बिशाल ॥
होता कीजै ऋग्बेदज्ञहि पोता ज्यहि अथर्व अधिकार।
बर्ण कीजिये इन चारिहु के तब कछु और काज निर्धार ॥
सुनि इमि भाषण भट रावण को प्रभु मुनियन ते कह्यो बुझाय।
आतुर चारिहु श्रुतिज्ञाता ते निज निज थलन बिराजे आय ॥
रामचन्द्र तब आनन्दित ह्वै तिनके बर्ण कीन मन लाय।
भयो अरम्भन तब बेदन को रहिगे दशौं दिशा स्वर छाय ॥
पुनि आचारज बिधि बिधान सों बाचन करत भयो पुण्याह।
जाके पढ़ते दुख भागत सब जागत हृदय बिबिध उत्साह ॥
पुनि ब्रह्मादिक सब देवन को क्रमते पूजन कीन खरारि।
पुनि सब देवन के मन्त्रन को कीन्ह्यो जाप प्रीति प्रतिपारि ॥
पुनि आवाहन नवग्रहन को कीन्ह्यो भिन्न भिन्न भगवान।
श्रुतिबिधि अर्चाकरि तिनहुनकी अस्तुति सहितकीन सन्मान ॥
पुनि आवाहन अग्नि देव को कीन्ह्यो रमारमण श्रीराम।
दिव्यरूप धरि त्वर प्रगटे सो आसन सुष्ठु लीन बिश्राम ॥
बिधि सह पूज्यो प्रभु तिनहूं को चन्दन गन्ध पुष्प दल माल।
शीश चढ़ायो मन भायो अति पुनि रोचना दीन दै भाल ॥
हवन करन की लै सामा पुनि अग्निकुण्ड तट धर्‌यो सँभारि।
सुर मुनि मण्डल आचारज सह लागे हवन करन भय हारि ॥
को छबि बरणौं त्यहि समयाकी धनि सो धरा सुमङ्गल भूरि।
हवन करत जहँ जनजीवन प्रभु स्वाहा शब्द रह्यो अति पूरि ॥
हवनौ होइगो परिपूरण जब तब दशबदन कह्यो हर्षाय।
शम्भु थापना बिधि करिबो अब वाजिब तुम्हैं अहै रघुराय ॥
मन अभिलाषा बतलाइय अब जाको पढ़ो संकलप जाय।
तब रघुनन्दन यह भाषत भे दशमुख सुनहुँ बात मनलाय ॥

तुम कहँ मारन हित संगर महँ पावन हेत बिजय संग्राम ।
करत थापना शिवशंकर की जाते होय प्रपूरण काम ॥
सुनि रघुनन्दन मुख बाणी यह दशमुख हँस्यो हृदय हर्षाय ।
सबहि सुनावत मन भावत इमि भाषत भयो रामरुख पाय ॥
हम कहँ मारन हित चाहत जो शिव थापना करन तुम राम ।
तौ कछु शङ्का म्वहिं नाहीं है पूरण करहु आपनो काम ॥
है असमञ्जस इक भारी यह तुम सन कहत तौन समुझाय ।
बिधि सह कारज करवावन को तुव आचार्य भयों इत आय ॥
क्रिया प्रथम की परिपूरण सब बिधि सह तुम्हैं करायों राम ।
पढ़ब संकलप को आयो अब रावणमारणार्थ यह काम ॥
डिगै कदाचित जो मेरो चित रावण मारणार्थ यहि ठायँ ।
औरक औरै पढ़िजावों मैं तौ तुव काज बादि ह्वै जायँ ॥
ताते तुमका समुझावत हौं हे रघुबंश बिभूषण राम ।
पढ़त संकलप मैं आदिहि ते जस कछु शास्त्र रीति अभिराम ॥
रावणमारण हित इतनो पद तुम निज मुख ते कह्यो उचारि ।
जामहँ तुव हिय अभिलाषा सब पूरण होय बिघ्न परिहारि ॥
यह कहि रावण पुष्पाक्षत अरु मुद्रा स्वर्ण पूगिफल साथ ।
देव आपगा को पावन जल लै धरि दियो राम के हाथ ॥
बिधि बिधान सों पुनि आदिहिते शुभ संकलप पढ़न तब लाग ।
तत्सत ते लै पढ़िहुवैं लगगो रावणमारणार्थ ज्यहि आग ॥
निज मुख भाष्यो रघुनायक सो आगे पढ़्यो फेरि दशमाथ ।
अहं करिष्ये तक पूरण कै भुवि जल छोड़ि दीन रघुनाथ ॥
पुनि शिव पूजन आरम्भित भो ज्यहि बिधि शास्त्र कीन निर्धार ।
शयन करायो अन्नादिक महँ करि २ सुष्ठु मन्त्र उच्चार ॥
पुनि प्रदक्षिणा वहि अस्थल की कीन्ह्यो यथालोक ब्यवहार ।
शिव अस्थापन करि बिधिवत पुनि लागो होन मङ्गलाचार ॥
नभते बर्षा भइ फूलन की हर्षित करन लाग सुर गान ।

बजे नगारा धुधकारा करि घण्टा शंख शब्द घहरान॥
नाम मनोहर श्रीरामेश्वर शिवको धर्यो मुनिन अभिलाषि।
भये अनन्दित कपि भालुन गन जय जय शब्द रहे सब भाषि॥
भयो प्रपूरण सब कारज जब तब मन मुदित भये रघुनाथ।
त्यही समइया के अवसर महँ बोल्यो मधुर बचन दशमाथ॥
हे रघुनन्दन यहि अवसर पर मैं आचारज अहौं तुम्हार।
हर्षित माँगो बर मोसन तुम तजि दुइ बस्तु केर अधिकार॥
इकतौ सीता कहँ मांग्यो ना सन्मुख भये बिना संग्राम।
बस्तुसु दूसरि यह मांग्यो ना तुमसन लरब नाहिं हे राम॥
सुनि दशआनन की बाणी यह रघुकुलचन्द मन्द मुसकान।
ह्वै आनन्दित यह भाषत भे सुनिये लङ्कनाथ बलवान॥
हिय अनुरागत बर माँगत मैं हर्षि सो देहु लेहु यश शाख।
तुम कहँ जीतन हम संगर महँ हैं जिय यही एक अभिलाख॥
सुनि मन बिहँसा दशआनन तब भरिगो रोम रोम आनन्द।
वचन अशङ्कित ह्वै भाषत भो सुनिये बिमल भानुकुलचन्द॥
तुव अभिलाषित मुखभाषित बर दीन्ह्यों अनायास मैं राम।
अब बर माँगत मैं तुमहूं सन हौ तुम जक्कनाथ अभिराम॥
जब लगि तुम सन रण सन्मुख करि जूझिनजाउँ मध्यसंग्राम।
तब लगि मेरी मति याही रहै बाम न देहुँ लरे बिन राम॥
हिय अभिलाषा सुनि दशमुख की कह्यो तथास्तु जानकीनाथ।
धन्य सराह्यो हित चाह्यो अति धनि रे धीर बीर दशमाथ॥
सबिधि प्रशंस्यो सुर मुनियन ने सुनि बीरता लङ्कपति केरि।
लखि शुभ अवसर त्यहि समया पर रावण कहत रामसन फेरि॥
हे रघुनन्दन तुव कारज सब पूरण भयो हर्ष के साथ।
देहु सुआयसु अब मुख ते कहि मांगत बिदा जोरि युगहाथ॥
यहि बिधि भाषण सुनि रावण को बोले रामचन्द्र हर्षाय।
जो अभिलाषा तुव लङ्कापति होय सो करहु शोच बिसराय॥

स० । श्री अवधेश के वेश निदेशहि पाय हिये हर्षाय दशानन ।
साज्यो महाछबिको गथसोरथ निन्दत जो सुरइन्द्र बिमानन ॥
लायचढ़ाय सियाशिविकापर हैमनमग्न सदाज्यहि ध्यानन ।
आतुरलै गमन्यो घरको सह राघवबन्दि मुनीन्द्र सुजानन ॥

गमनत सीता पुनि लङ्कापथ शङ्कित भईं अधिक मन माहिं ।
लगीं निहारन जगतारन मुख दुखसो कहत बनत कछु नाहिं ॥
भे असमञ्जस बश राघव तब कहि नहिं सके बचन कछु भाखि ।
भार उतारन हित बसुधा को लीला करत मनुज तन राखि ॥
अवसर बीत्यो कछु मारग महँ लङ्का पहुँचि गयो दशमाथ ।
सीय बाटिका पुनि प्रापत भईं हिय महँ जपत रामरघुनाथ ॥
सिद्ध उदासी बनबासी अरु मुनि ऋषि सुर समूह सुरराज ।
दिक्पत्यादिक लै जेते कोउ आये शम्भुथापना काज ॥
लै लै आयसु रघुनन्दन को ते सब गये आपने धाम ।
बिधिहू गमने ऋषि नारद सह हियमहँ जपत जगतपति राम ॥
शम्भु थापना बिधि पूरण यह मति अनुसार बखान्यो गाय ।
मातु शारदा की दायाते पूरण भयो प्रथम अध्याय ॥

इति श्रीभार्गववंशावतंसश्रीमन्मुंशीनवलकिशोरात्मजस्यश्रीमुंशी
प्रयागनारायणस्याज्ञाभिगामीउन्नामप्रदेशान्तर्गतमसवासी
ग्रामनिवासीपण्डित बन्दीदीनदीक्षितनिर्मितश्री
विजयराघवखण्डेलङ्काकाण्डेसेतुबन्धरामेश्वर
स्थापनावर्णनन्नामप्रथमोल्लासः ॥ १ ॥

होहु सहायक सिधिदायक शिव दे शुभ ज्ञान शारदा माय ।
श्रीरघुनायक यश घायक अघ गावत फेरि तोर बल पाय ॥
कथा मनोहर शिवअर्चा की सुनि मन मेरुसुता हर्षाय ।
पुनि यह पूँछत भईं शङ्कर सों हे रघुनाथ भक्त मन काय ॥
शम्भु प्रतिष्ठा परिपूरण जब बिधिवत कियो सन्त सुखसेतु ।
भयो अगारी फिरि कौतुक कह सो समुझाय कहहु वृषकेतु ॥

शम्भु भवानी की बानी इमि सुनि हर्षाय ध्याय रघुनाथ।
जनमनरञ्जनि भवभञ्जनि शुभ भाषण लगे मनोहर गाथ॥
मम मनभावन सुरसावन सुख है तुव प्रश्न नशावन पाप।
सोइ चितचावनसों बरणत मैं करिये प्रिये श्रवण त्यहिआप॥
भरद्वाज प्रति जो बरण्यो कहि श्रीमुनि याज्ञवल्कि सुखपाय।
कह्यो भुशुण्डी पक्षिराज सों कहत सो रामचरण चित लाय॥
विजय मुहूरत को सुन्दर दिन आयो जानि पाय रघुराय।
जामवन्त अरु कपिनायक सन सुन्दर बचन कह्यो समुझाय॥
हे दलनायक सुखदायक दिन लायक गमन करन को आज।
उतरिय सागर चलि आतुर अब करिये सिद्धि अग्रको काज॥
बारिधि उतरन की शङ्का कछु हती सो दूरिकीनि नल नील।
लै दल चलिये अब हर्षित ह्वै कारण कौन करन को ढील॥

स०। पाय सु आयसु या बिधि ते हर्षाय सुग्रीव बली बिन शङ्का।
धाय बोलाय कपीसमुदाय दियोबजवाय पयानको डङ्का॥
बन्दि अनन्दसों पूरि महा कपिवृन्द चले करिकै अहतङ्का।
मानो त्रिकूटसमेत उठाय पयोधिमैं बोरन चाहत लङ्का॥

जय रघुनन्दन आनन्दन जन जय अवधेश बेशवर राम।
यह कहि कपिदल बल पूरित ह्वै हरषे धारि बीर इतमाम॥
निज निज सैना सहचैना सजि इतउतगरजि तरजि हहकारि।
ह्वै मदमत्ता बलवत्ता भट डगरे करे अग्र दैत्यारि॥
कपिदल गमनत लखिअवसर त्यहि रघुपतिसन सुकण्ठ हरषाय।
पाणि जोरिकै यह भाषत भे हे प्रभु भक्तबछल मनकाय॥
यद्यपि मारग भइ अम्बुधि महँ उतरब बेप्रयास दिखरात।
तद्यपि चलिबो बहु परिहै प्रभु ताते कहत शोचि यह बात॥
अञ्जनिनन्दन की पीठीपर हर्षित आप होहिं असवार।
अङ्गद पीठीपर लक्ष्मण चढ़ि सहजै होहिं जलधि के पार॥
नभपथ गमनैं ये योधा दोउ क्षणमहँ उतरि सिन्धु को जायँ।

सुख सह जैहैं लै तुमकहँ प्रभु यहि हित खड़े आपु ढिगसायँ।
यहिबिधि बाणी शुभगरकी सुनि मन मुसक्यान भानुकुल भान।
मन्त्रमानिकै शुचि सचिवन को पुनि सोइ बात कीनि परमान॥
चढ़े सुमित्रासुत अङ्गद पर हनुमत पृष्ठि चढ़े भगवान।
सरकस तरकस करिहायें महँ बायें दहिन हाथ धनुबान॥
प्रभु पदपङ्कजरज हियमा धरि नभपथ उड़े युगल बलवान।
जुड़े बिहङ्गम द्वै मानहुं नभ जात उड़ान बायु परमान॥
उड़े सुकण्ठौ सँग तिनहींके नभपथ चले भले हर्षात।
इत उत गमने अरु बानरगण ऋक्षसमूह साथही जात॥
औरो बानर बहु धावत भे प्रभुके अगल बगल फहराय।
मानहुँ बाहन खलदाहन के सहसन रहे ब्योम मड़राय॥
सेतुकि रस्ता कोउ कोउ धाये इत उत पुच्छ भ्रमाये जात।
कोउ जल पैरत चले बिजैरत धरि जलचरन गात पर लात॥
चढ़ि गिरिशिखरनते फांदत बहु करि करि घोर शोर हहकार।
कोउ कोउ बन्दर जल अंदर महँ बुड़ी मारिजात वहिपार॥
तिनको कौतुक अवलोकन हित जलचर निकर महासुखपाय।
काढ़ि काढ़ि शिर चौगिर्दाते सागर उपररहे उतराय॥
दै दै तारी किलकारी करि भारी यूथ बानरन क्यार।
चल्यो बयारी सम दक्षिण तट सेतु मँझाय सिन्धुके पार॥
पुनि कछु अवसर के बीते पर अङ्गद और बीर हनुमान।
लै रघुनन्दन अरु लक्ष्मण कहँ सागर पार जाय नगिचान॥
रघुकुलभूषण के बैठन हित हनुमत धरा रम्य थलझारि।
डासि साथरी कुशपावन की दोऊ बन्धु दीन बैठारि॥
साथै पहुँचे कपिनायक अरु दलपति जामवंत बलवान।
निरखि शुभस्थलतट दक्षिणपर निवसितभये धारि प्रभुध्यान॥
जेती सैना कपि ऋक्षनकी बृक्षन छाहँ देखि किय थान।
जहां जलाशय जलपूरित अरु हैं फल मूल खान सामान॥

कर्म अकारित यह रघुबर को देखि सुपर्ब सर्ब हर्षाय।
आय आयकै रघुनायक ढिग किय अभिषेक नेक गुणगाय॥
दै दै आशिष पुनि गमनत भे तब रघुनाथ जानिकै शाम।
संध्याबन्दन करि बन्धव दोउ ह्वै आसीन लीन बिश्राम॥

स०। लक्ष्मण जानु पै माथधरे सुपरे रघुनाथ धराकुश आसन।
अञ्जनिनन्दन बालितनै कर लै पद चापत आपतनासन॥
दक्षिण बामबली बलधाम खरे सुधरे कर बान शरासन।
बन्दिअनन्दसदा नरसो यहिध्यान लुभानहै अन्य हुलासन॥

भोर भोरहरे पह फाटत खन दिनकर उदयकाल अनुमानि।
जागे रघुकुलमणि निद्रा तजि अशकुन लख्यो दृष्टि दृग आनि॥
बोलि सुमित्रासुत शुभगर अरु हनुमत जामवन्त युवराज।
लगे दिखावन समुझावन सोइ होइ जो रह्यो अमङ्गल साज॥
बीर अशेषहु दृग देखहु यह अशकुन जौन आय प्रगटान।
याते निश्चय मन आवत यह चाहत होन युद्ध सामान॥
हवा हहारा करि डोलत अरु बोलत काक भयंकर बानि।
बाज कुरेरत स्वर सेरत बहु टेरत शिवा गिद्ध मड़रानि॥
हालत पर्वत जनु चालत जग डोली धरा धराधरमाथ।
टूटत तरुबरतर फूटत थर छूटत रक्तबुंद जल साथ॥
नभ बिनबादर को गरजत अरु तर्जत देव नाथ हथियार।
लाली संध्या भइ चन्दन सम मानहुँ बन्दन केर पहार॥
प्रकट हुताशन रबिमण्डल सब बर्सत मनहुँ मणिन के जाल।
खग मृग सुर्धनतन करि करि मुख रोदन करत महाबिकराल॥
टूटत तारागण इत उत बहु ह्वै गो मन्द चन्द परकाश।
धूरि पूरिगै नभमण्डल महँ बौंड़र भूरि लाग आकाश॥
याते निश्चय मन आवत यह बीते दिवस अवशि दुइचारि।
प्रबल निशाचर अरु बनरनसों ह्वैहै महा भयानक रारि॥
शोणित आमिष के कीचड़सों जैहै पूरि लङ्क तट थानि।

तातें कर्तब अब कीजिय सोइ जाते होय बिघ्नकी हानि ॥
कोट बनाइय सजि सैनाको चहुँदिशि राखि बीर रखवार ।
भिन्न भिन्न दल थलन युक्त करि रचिये ब्यूह शास्त्र अनुसार ॥
नीलसहित लै दल अङ्गद निज पूरुष ब्यूह मध्य टिकिजायँ ।
तिनके दहिनीदिशि सैना सह निवसैं ऋषभ बीर बलसायँ ॥
अति मदमत्ता बलवत्ता जो भाषत गन्धमादनी नाम ।
सो निज सैना लै चैना सह निवसित होहिं जाय दिशिवाम ॥
हम अरु लक्ष्मण धनु धारण करि रक्षैं सैन्य केर शिरभाग ।
कुक्षिरखावैं जाम्बवान अरु बीर सुषेण सहित अनुराग ॥
घनी अनीके जघनभाग के रक्षा करहिं हर्षि कपिनाथ ।
जिमि सब लोकनके पीछे कहँ रक्षत अर्धभाग पति पाथ ॥
इहि बिधि आयसु जगतारणको सुनि मुदसहित शीशपरधारि ।
लैलै सैना सब रक्षक भे चहुँदिशि धीर बीर भट पारि ॥
रघुकुलभूषण की दाया ते जे ह्वै रहे अमित बलधाम ।
कालहु आवै चढ़ि सम्मुख जो तौ किलकारि करैं संग्राम ॥
निर्भय रक्षक भे सैना के बली अपार भये रखवार ।
गर्जैं तर्जैं निज पहरन पर करि किलकार देत ललकार ॥
फिरत निशाचर लखि पावैं जो इतउत कटक निकट भटसांच ।
आतुर धावैं गहिलावैं त्यहि सब मिलि घेरि नचावैं नाच ॥
कसि भुज दण्डै दोउ हाथन सों लातन घातन करैं प्रहार ।
मसी लगावैं गहि गातन महँ खर चढ़वाय लाय मुख क्षार ॥
सैन प्रदक्षिण करवावैं पुनि दांतन काटि नासिका कान ।
सुयश सुनावैं रघुनन्दन को यह रावण ते कियो बखान ॥
महा दुर्दशा महँ ब्याकुल सो लेवै राम शरण अपनाय ।
तब तेहि छोड़ैं दुख माड़ैं बहु भागि सो त्वरित लङ्क पुर जाय ॥
हाल बुझावैं सब रावण को कहि धृष्टता बानरन केरि ।
दलबल संख्या बतलावैं पुनि रघुपति सुयश सुनावैं टेरि ॥

कौनौं निशचर गहि तस्कर गति आवैं सिन्धु पास चुप चाप।
दल प्रबन्ध अरु जलधि बन्ध लखि सरहहिं रामचन्द्रपरताप॥
जाय सुनावैं सो रावण को जस कछु कर्म कीन रघुनाथ।
सुनि सो श्रवणनजरि तनमनते अतिशय कुपितभयो दशमाथ॥
निज मुख करणी कहि बरणी बहु सबहि सुनाय बीर रसछाय।
सेतु बँधाये इक बारिधि महँ का दुष्कर्म कीन रघुराय॥
चण्ड न जानत भुजदण्डन मम खण्डन खण्डन बिदित प्रताप।
बरबरबण्डन गहि जीत्यो मैं छापी दशौदिशा यश छाप॥
कितक नीरनिधि अरुजलनिधि मैं बाँध्यों उदधिसिन्धु नदिनाथ।
जलधि तोयनिधि अरु पयोधि पुनि बाँध्यों बारिईश इकसाथ॥
बिश्व करन के सुत बानर द्वै जिन कर बिदित नील नल नाम।
बिप्राशिष ते यह करणी तिन कीन्ह्यों कछु न राम को काम॥
काह बिचारे बयबारे वै धारे तपी बेश कृश गात।
धनु धरि लरि हैं मम सम्मुख महँ रन घनघोर देखि भय खात॥
यहि बिधि बातें युक्ति उक्ति की भाषि सुनाय सबहिं समुझाय।
सभा बन्द करि आनन्दित सो मन्दिर चल्यो बिहँसि मुसक्याय॥
बृत्त मँदोदरि सुनि राख्यो यह प्रथमैं चतुरचार मुख बानि।
बाँधिकै सागर गुणनागर प्रभु आये उतरि लङ्क तट थानि॥
जायकै प्रापतभो अन्तःपुर जहँ मयसुता बाम को ठाम।
लख्यो मँदोदरि पति आवत तब चलिकै अग्रलीन अभिराम॥
करगहि तुरतहि लै आवति भै जहँपर बनो शयन आगार।
चन्दन पलिका बैठावति भै पुनि बर बचन कीन उच्चार॥
हे पिय हियते तजि दुस्सहरिस मम शिषकरहु कानिमन मानि।
अचलरहै ज्यहि अहिवातो मम अरु निशचर कुल होय न हानि॥
बुधजन भाषत शुभ सम्मत यह बेद पुराण देत परिमाण।
ब्याह बैर अरु हितनिज समसन करिबो उचितकरन कल्याण॥
भूल तुम्हारी पिय अतिशय यह जो मन मानुष मानत राम।

खल दल घालक जनपालक वे हैं कालेश बेश बलधाम ॥
अलख अगोचर अविकारी प्रभु अनत अनीश ईश जगक्यार।
अगुण अलक्षण अन आतम जग पालत सृजत करत संहार ॥
भार उतारन हित बसुधाको टारन हेत भक्त उर ताप।
दुष्ट सँहारन हित आवत इत धरि सोइ सगुणरूप प्रभु आप ॥
कहिकहि हारे गुण शारद श्रुति शेश महेश सृष्टि कर्तार।
मर्म न पायो लेश मात्र ज्यहि सोइ भगधाम राम अवतार ॥
सतयुग धाखो जिन नरहरि तन माख्यो हिरणकशिपु बलवान।
आरत टाख्यो कायाधव को सोइ सुखधाम राम भगवान ॥
धरा उबाख्यो धरि शूकर तन माख्यो हिरण्याक्ष अमरारि।
शंख सँहाख्यो श्रुति राखनाहित मत्स्यस्वरूप धारि भय हारि ॥
प्रतिबल बाँध्यो बलि बामनह्वै छलिकै कियो इन्द्र को काज।
सोइ जगकर्ता भगधर्ता ये भर्ता गुनहु राम रघुराज ॥
बीर बिनाश्यो मधुकैटभ सो कीन्ह्यो सहसबाहुँ जिन नाश।
दुष्ट निकन्दन रघुनन्दन सोइ हियपिय भजहु तजहु सब आश ॥
राम दिवाकर के सम्मुख महँ जुगुनू सरिस तेज तुव नाथ।
किये ते रिपुता बरिऐहौ ना है गुण काल कर्म जिन हाथ ॥
मुनिमखराख्योहतिनिश्चरगण कीरतिबिमल कीनि श्रुतिगान।
खल सुकेतकी सुता ताडुका कीन्ह्यो एक बान बिन प्रान ॥
पदरज पावन तनपरशन करि क्षणमहँ तारिदीन मुनि बाम।
जनक स्वयम्बर प्रण पूरण करि भञ्ज्यो शम्भु धनुष अभिराम ॥

स०। बीर बिराध अगाध बली खर दूषण से खल बृन्दनको।
त्रयशीश कबन्ध सुबाहुहि लै जिननाशकियो दितिनन्दनको ॥
द्विजबन्दि सुकण्ठहि भूपकियो क्षण में हतिकै दुखद्वन्दनको।
तिनदुष्ट निकन्दनको भजिये तजिये पिय ये भ्रमफन्दनको ॥

जाहु शरण तकि तिन चरणनकी हियते बैर भाव तजि नाथ।
सौंपि जानकी क्षमामाँगि पुनि नायहु चरण कमलमहँ माथ ॥

तुम्हैं उचित है यह करिबो अब स्वामी करहु बचन परमान ।
राज काजदै सुत अपने कहँ बन महँ जाइ भजहु भगवान ॥
जीति सुरासुर निज भुज बल तुम बीरन मध्य बढ़ायो नाम ।
सुयश तुम्हारो जग छायो पिय कीन्ह्यो करन योग्य जो काम ॥
श्रुति असमसम्मत कहि भाषत प्रभु चौथे पनहिं बनहिं नृपजाय ।
भजि भगवानै मन आनै शुचि सुन्दर योग भोग बिसराय ॥
बिधि शिवदेवत सह सेवत ज्यहि निशिदिन किये गुणन उरमाल ।
नारद शारद सनकादिक पुनि ध्यावत रहत नाम त्रयकाल ॥
ज्यहि लगिसाधत मुनि जपतपअरु बुधजनकरत पुराणनगान ।
भूप बिरागी होत राज तजि बन बसि करत भजन पद ध्यान ॥
सन्त सहायक रघुनायक सोइ तुम कहँ करन कृतारथ नाथ ।
इत चलि आये लव लाये दृग देखहु जाय नाय पद माथ ॥
मोर सिखावन पिय मानहुँ जो पावन सुयश होय जग माहिं ।
विश्वकरण के चरण शरण सम सुख है अन्य बस्तु महँ नाहिं ॥
यहि बिधि भाषणकरि मयजा तव नव पाथोज दृगनभरिबारि ।
झम्पित मोहहि तन कम्पितबच कहत बहोरि जोरि करतारि ॥
अमला कमलाकर सेवित पग श्रेयद जगत सदृश जलजात ।
सन्तन प्रिय हिय भजहु कन्त जो होय अनन्त मोर अहिवात ॥
महिमा जिनकी प्रकट चहूँदिशि घटमहँ धरे रहत शशिभाल ।
कटत फटत त्वर भवबाधा सब सुमिरण करत बन्दि तत्काल ॥
जपत रहत अहनिशि नारद अरु शारद करत गुणन को गान ।
अजरज जिनकी शिरलावत अरु त्यहिबल करत सृष्टि निर्मान ॥

स० । गौतम नारि तरी जिनते दुख क्षार करी निसरी शुचि गङ्गा ।
शीश फणीश के थापित जो नित सेवत इन्दिरा लीन्हें उछङ्गा ॥
सन्तत सन्त जपैं जिनको भय अन्तक हन्तक दारिद दङ्गा ।
कन्त भजौ सब तन्त बिसारि सो होहु न निश्चर वंश पतङ्गा ॥

सुनि यह भाषण मन्दोदरि को रावण हृदय गई रिस छाय ।

नैन बङ्क करि निश्शङ्कित तब लाग्यो कहन आपु प्रभुताय ॥
बकत काह तैं प्रिय मिथ्या बच तकत न मम भुजान बलथाह ।
सकत न योधा कोउ सम्मुख लरि नर सुर नाग लोकके माहँ ॥
कसकत छाती दिग्पालन की जिनते भिरयों जाय बरिआय ।
तबते खसकत म्वहिं आवतलखि भागि छिपात भवनमें जाय ॥
धसकत बसुधा पग धारत ज्यहि ससकत शेश सहत नहिंभार ।
धनद पानिपति यम आदिक लै भुजबल जिते सृष्टिकर्तार ॥
देव दनुज नर बश राख्यों करि कोउ न करत समर समुहाय ।
तव उर उपजा भयकारण क्यहि कहु सो प्रिया मोहिं समुझाय ॥
कुम्भकरण अस भट बन्धव ज्यहि बेटा मेघनाद बलवान ।
ताकी नारी भयकारी इमि धिक मति पोच शोच अरु ज्ञान ॥
यहि बिधि शिषदै मन्दोदरि को पुनि उठि सभा गयो दशभाल ।
स्वर्ण सिंहासन पर राजत भो जा महँ जटित रत्नमणि जाल ॥
हिय अस जान्यो मन्दोदरि तब रावण मीचु आय नगिचानि ।
काल हवाले हालहि ह्वैहै मानत नहीं तासु हित बानि ॥
सभा जाय कै शुचि सचिवन सों बूझत भयो मन्त्र दशमाथ ।
रिपुसन करिये रण कौनी बिधि आवै बिजय जासु हित हाथ ॥
सुनि अस बाणी दशआननकी बोले सचिव बचन मुसक्याय ।
ऋक्ष बानरन रिपु मानत प्रभु डारत जिन्हैं निशाचर खाय ॥
राउर अज्ञा जो पावन हम यहि क्षण धाइ सिन्धु तट जाय ।
गहिगहिभक्षन कपिभालुन कहँ बिनरणकिहे सैन्यअधियाय ॥
यहिबिधि भाषत सुनि सचिवनको मन्त्रिप्रहस्त हस्तयुग जोरि ।
निश्चरपति सों इमि बोलत भो सुनिये बिनयनाथ इकमोरि ॥
मति अति थोरी तुव मन्त्रिन महँ भाषत ठकुरस्वहाती बात ।
तुम्हैं न चाहिय शिष मानब यह धीर गँभीर बीर बिख्यात ॥
मत सद्ग्रन्थनको याही प्रभु भूप न तजहि नीतिको पन्थ ।
नीति रीति है नृप भूषन तन मानिय सत्य बचन महिकन्थ ॥

षट्पद।

धर्म कर्म बिन बिप्र सुधिक क्षत्री रण चोरा।
धिक पातिब्रत बिना नारि धिक शूरभगोरा॥
राम भजन बिन भक्त सुधिक तड़ाग बिन नीरा।
धिक बिराग बिन ज्ञान ज्ञानधिक होय न धीरा॥
इन्द्रियजित बिनयोग धिकरोगग्रसिततनमानिये।
बिनानीतितिमि भूमिपति सत्यबचन प्रभुजानिये॥

भला न होइहै नय त्यागेते जोहै नृपन केर शृङ्गार।
केवल मन्त्रिन की सम्मति पर ना चित देहु लङ्कभर्तार॥
समुझि शोचिकै मन अपन्यो मा देखहु भलाबुरा परिणाम।
कारज करिबो आरम्भिय तब सहसा त्यागि देहु मतिधाम॥
समय समय पर सब नीको है सहसा धैर्य पराक्रम ज्ञान।
केवल एकै अनुमाने ते कहुँ कहुँ परत आपदा आन॥
मन्त्रिन जो मत कहि भाष्यो प्रभु सो यहि समय नीक बहु लाग।
पै दुख देहै सो पाछे कहँ अइसे मतै लगाइय आग॥
अबहीं थोरे दिन बीते प्रभु यहि पुर भयो रहै यक हाल।
ताहि भूलिगे तुव मन्त्री सब लागे फेरि बजावन गाल॥
सिन्धु नाँघिकै कपि आवो इक त्यहि यश करत अबै सब गान।
तुव अमराई सब नाशी ज्यहिं मारे अछै आदि बलवान॥
एक फलङ्का महँ शङ्का बिन लङ्का जारि कीन जैं क्षार।
करि अहतङ्का गो नीकी बिधि तुम सब लखत रह्यो दृगपार॥
काहुन कीन्ह्यो कछु ताको तब हाजिर रहे सकल बलवान।
चल्यो न बल कछु इन योधनको जे अब कहत बानरन खान॥
सोई बानर हैं सेना महँ जिनते करन कहत संग्राम।
गयो न जीत्यो इक अकिलो कपि सहसन कौन जीति है स्वामि॥
सहजै बाँध्यो जिन बारिधि को योजन सवक जासु बिस्तार।
लै दल उतरे कपि भालुन को करिकै घोर शोर ललकार॥

अति बल मार्‍यो मधुकैटभ जिन कीन्ह्यो भट बिराध संहार ।
मनुज बतावत हैं मन्त्री तुव तिन्हकहँ करन कहत आहार ॥
बानरदल लै दोउ वन्धव जब धनु धरि समर करहिंगे आय ।
काम न अइहै वहि समया पर यहि बिधि गाल फुलाउब भाय ॥
ताते तुमकहँ समुझावत प्रभु सुनि मम बचन करहु बिश्वास ।
ना तरु बहुमति यह मानेते होइहै बेगि बिभवको नाश ॥
कादर भाषौ कहि चाहे म्वहिं कहिहौं बात वाजिबिहि तात ।
जीति न पइहैं कपि भालुनकहँ निशिचर धरहिं जन्म जो सात ॥
हैं कहवैया सुनवैया बहु मीठी बात केर महराज ।
पै वह कहबे अरु सुनबे को है ना होत ताहि सों काज ॥
सुनतक लागत जे कठिने अति आखिर करत महा कल्यान ।
ऐसे बचनन के भाषी जग थोरेइ पुरुष जानु बलवान ॥
नीति तुम्हारी हैं स्वामी यह सो भाषत मैं सबहि सुनाय ।
जामें स्वारथ परमारथ दोउ औ तुव बिभव बादि नहिं जाय ॥
प्रथम पठाइय रामचन्द्र ढिग आपु बसीठ शोचि समुझाय ।
प्रीति कीजिये पुनि सीता दै जामहँ राजनीति दरशाय ॥
लौटि जाहिं जो सिय पायेते नाहक तौ न बढ़ाइय रारि ।
जोना लौटैं सिय पायेते तौ रण करहु अवशि अमरारि ॥
कहो हमारो प्रभु मानहुँ यह तौ सब भांति सुयश तुव हाथ ।
नतरु कुशलता नहिं कउनिउँ बिधि निशिचरनाश जानिये नाथ ॥
यहि बिधि बातैं सुनि प्रहस्त की ग्रस्त गरूर शूर दशभाल ।
दांत पीसिकै तब बोलत भो शठ कह जानु भटन को हाल ॥
तुव उर संशय भा अबहीं ते भाषत मूढ़ निशाचर नाश ।
बिदित बीरतामहँ मेरो कुल तामहँ भये घमौना बाँस ॥
गर्भ न गिरिगा मन्दोदरि का अस सुत प्रसव भये धिक्कार ।
छाँड़ि बीरता डर तपसिन के डारत मम भुजान पर छार ॥
निन्दित बाणी सुनि पितुकी इमि उठ्यो प्रहस्त त्यागि दरबार ।

रिसबश नैना अरुणारे करि बोला कठिन बचन ललकार ॥
हितकी बातैं तुम्हैं न भइहैं औरै होनहार हैं हाल ।
जैसे औषध नहिं भावत मन आतुर ग्रसन चहत ज्यहि काल ॥
यह कहि चलिभो निजमन्दिर को सुनिये अग्र चरित खगराज ।
जो कहि भाष्यो शिव गिरिजासन सोई तुम्हैं सुनावत आज ॥
गये दिवाकर जब अस्ताचल संध्याभई जानि दशमाथ ।
सभा बन्दकरि लहि मन्दिर मग चलिभो धीर बीर लै साथ ॥
ऊंच कँगूरा इक लङ्का को तापर बनो मनोहर धाम ।
त्यहि छबिभाषैकहिअसकबिको निरखतज्याहिलजातमनकाम ॥
बनी देवालैं शुभ सोनेकी चम चम चमकि २ रहि जायँ ।
मनहुँ चन्द्रिका शशिपूनोकी चहुँदिशि बिकसि रही छहराय ॥
सहसन द्वारे चौगिर्दा महँ जिनमा स्वर्णकेर दरवाज ।
बिच २ नोखा कटे झरोखा झँझरिन रहीं किंकिणी भ्राज ॥
लगे केवाँरा अष्टधातके उत्तम चित्र कीन निर्मान ।
फूल उरेहे तिनबीचन महँ खासी करी नक्कासी ठान ॥
मणि बैदुर्य कि बनी चौकठैं तिन महँ जड़ी रतन की पाँति ।
लटकैं तोरण मणि मुक्कन के लाल प्रबाल जाल बहुभाँति ॥
बर दरवज्जन के छज्जन पर मूँगा मोतिन केर चुनाव ।
तिनपर कलशी शुभ कञ्चनकी जामैं दियो अग्नि को ताव ॥
पवि बिल्लौरी की फर्शैं शुभ मानहुँ धवल फेन के ताल ।
मणि अस्फटिकनके खंभाबर जगमग होत दिब्य द्युतिजाल ॥
लाले पत्थर की सिढ़ियनपर हीरा लाल जवाहिर लाग ।
कहुँ२ पांती पुखराजनकी बिरची बेलि सहित अनुराग ॥
कहुँ२ गोली कटीं खिरकियां कहुँ चौकोण कीन निर्मान ।
तिनमहँ सुन्दर लगीं झिलमिली मानहुँ बिज्जु बृन्द लपटान ॥
शीत समीरन के झोंका शुभ भुकवन रहे भवन मधिआय ।
एला बेलाके इतरनकी भीतर दिब्य गन्ध रहि छाय ॥

अटाके ऊपर अटा बिराजै तिनकी छटा कहै को गाय।
मेघ घटा सम धवरहरा शुभ मानहुँ छुवत गगन कहँ धाय॥
तिनके ऊपर गुम्मज सोहैं मोहैं देखि सुरन के धाम।
जनु कारीगर कामदेव के हैं निर्मान कीन अभिराम॥
बँधे पताका छबि शाका सम ऊपर फहर फहर फहरात।
तिनमा झालरि मणि मुक्तनकी मानहुँ नखत पांति अधिकात॥
लागे फाटक दिशि चारिउमा हाटक जटित रहे छबि छाय।
नौबतखाना तिन ऊपर बर बाजत मधुर मधुर सहनाय॥
हंस कलोलैं जहँ छज्जन पर बोलैं मोर माधुरी बानि।
कोयल कूकैं सतखण्डन पर शुक सारिका बृन्द मड़रानि॥
निर्मल जलसों परिपूरित सर चारिउ ओर रहे उमड़ाय।
कमल बिकासे दल खासे जहँ पुरयनि सघन पांति रहिछाय॥
लता बितानन सों तानी तट छायो दशौ दिशा ऋतुराज।
सारस कूजैं मधु गूजैं बर मुनियाँ करैं मधुर आवाज॥
बिचरैं हरण गण चरि २ तृण कीर कपोत गोत दरशात।
सहित लवाइन सुर गाइन के झुम्मट चरत जात हरषात॥
अमले गमले गृह द्वारेपर बेला बिमल चमेला लाग।
घनी चाँदनी अरु चम्पा द्रुम मालिन रचे मनोहर बाग॥
लगीं कियारी गुलदावदि की छाई मधुर केतकी पांति।
झुकी निवारी बर डारिन सों है केतकी जकी बहु भांति॥
इक दिशि फूली गुलमेहँदी शुभ झूली पांति गुलाबन केरि।
हुलसी तुलसी इक क्यारी महँ रहे मुचकुन्द कुन्द द्रुम घेरि॥
गड़ा केवड़ा इक क्यारी महँ उलही जुही मालती जाति।
कहँ लग बरणौं अमराइन कहँ शोभा देखि बुद्धि थकि जाति॥
इक दिशि रानिन को मन्दिर बर मानहुँ शची केर आगार।
भवन रसोयां को इकदिशि शुभ जामहँ खान पान अधिकार॥
हयगय शाला दिशि राजत इक सुन्दर श्यामकर्ण हेहनात।

मत्त गयन्दा दिशि झूमत इक करैं जे इन्द्रहस्ति छबि मात ॥
इक दिशि मन्त्रिन के कमरा बर साजे सकल साजके साथ ।
मध्य बैठका दशआनन को मानहुँ रच्यो काम निज हाथ ॥
है गच रचनाकी चांदीकी तापर बिछे गलीचा चारु ।
धवल चद्दरैं तिन ऊपर बर मानहुँ शशी प्रभा बिस्तारु ॥
लागे गिर्दा चौगिर्दा ते तकिया धरी मखमली झारि ।
मध्य कटेहरा मलयागिर को मचवन रतन पांति अधिकारि ॥
पूरब दिशिमहँ सिंहासन शुभ राजत स्वर्णमयी छबिरासि ।
कञ्चनकलँगी झलझलझलकैं झालरिलगी मणिनकी खासि ॥
ऊपर चँदवा स्वर्णपत्र को गङ्गा यमुनी करी नखासि ।
चन्द्र सूर्यके मण्डल सोहैं मोहत चन्द्र सूर्य प्रतिभासि ॥
लगे फिरोजा अरु नीलम गण जगमग जगमग होत प्रकास ।
अतन चितेरे चित्र उरेहे शोभा केर करत जे हास ॥
तापर बैठो दशआनन भट रह्यो बिराजि मनहुँ सुरराज ।
छत्र सूबरण को माथे पर दशहू माथ मुकुट रहे भ्राज ॥
झीलम बख्तर तन राजत शुभ कण्ठा कण्ठरहे छबिछाय ।
बँधे बजुल्ला भुजदण्डन महँ कुण्डल श्रवण हलत सुखदाय ॥
लसी लपेटी कटि पेटीबर तामहँ परी तीव्र तरवारि ।
भुजा बीसहू महँ आयुध बर राजत धीर बीर मद हारि ॥
ढाल बिराजै इक[1] हाथे महँ इक[2] महँ धनुष हाथ इक[3] बान ।
तबल बिराजै इक[4] हाथेमहँ इक[5] संगीन बीन ज्यहि सान ॥
राजत छूरी इक[6] हाथेमहँ इक कँर[7] नागफाँस दरशाय ।
इककँर[8] तोमर इककँर[9] पट्टिश इककँर[10] रही कटारी छाय ॥
मुद्गर[11] राजै इक हाथेमा रिपु उन्मूल शूल[12] इक हाथ ।
तिरछी बरछी[13] इक हाथेमा इककर गदा फरी[14] के साथ ॥
इककर भाला[15] नागदौनि को इककर ब्रह्मशक्ति[16] बिरराज ।
परिघ[17] बिराजै इक हाथेमा इककर कड़ाबीन[18] शुभ भ्राज ॥

इककर राजत बर चक्र अरु इककर नाँगि साँगि दरशाय ।
सिंहकि बैठक सों बैठो भट नैना अरुण रहे छबि छाय ॥
बैठे झुम्मट बर मन्त्रिन के हैं भटबृन्द उठे दिशिचार ।
एँड़ी बेंड़ी शिरपागें शुभ सोहत करन तीव्र हथियार ॥
ओर दाहिनी दशआनन के बैठो मालवन्त मतिधाम ।
रावण पितुकर जो मन्त्रीवर ज्यहि बिश्रवा बखानत नाम ॥
इक दिशि बैठे सुत रावणके कीन्हे धीर बीर शृङ्गार ।
अजित अकम्पन अरिमर्दन अरु घनरव आदि शूरबरियार ॥
औरौ योधा बहु बैठे तहँ इकते एक दई के लाल ।
धूम्रनैन अरु बिकटानन अति तन बिकराल धरे जनु काल ॥
बीर महोदर ताम्रनैन अरु द्रोहीदेव रहे तहँ राजि ।
बज्रदन्त घटमुख रक्तप्रिय बैठे शूर साजको साजि ॥
मकरअक्ष अरु मदमादक प्रिय तरुणीसेन बिभीषणबाल ।
करीकर्ण अरु योधा त्रयमुख त्रयचख महाकाय बल शाल ॥
महापार्श्व अरु देवान्तक भट कम्पन शोणिताक्ष बलवान ।
इक दिशि राजे कुम्भकर्ण सुत कुम्भनिकुम्भ प्रजङ्घ ज्वान ॥
इन्हैं आदिलै अरु राक्षस बहु बैठे महाबली बरियार ।
रगरत कन्धा महँ कन्धा शिर कलँगी लगी एक समतार ॥
सबके हाथन महँ आयुध बर सोहत धरे जौन बर धार ।
बनी बराबरिकै बैठक शुभ मानहुँ इन्द्र केर दरबार ॥
स्वर्ण छरी सी परी किन्नरी नाचैं महा उमँग के साथ ।
भाव बतावैं सब अङ्गन सों लाजत जिनहिं देखि रतिनाथ ॥
राग अलापैं प्रिय बाणी सों करि बर स्वरन केर उच्चार ।
पायँन खांसी चौरासी की झनकत मन्द मन्द झनकार ॥
छइउ राग अरु छत्तिस रागिनि किन्नर रहे ताल सों गाय ।
तकधिन २ बजै पखावज आवझ झांझ शब्द रहे छाय ॥
बजै सरंगी स्वर रङ्गी अरु रहे सितार तार झहनाय ।

उड़ैं मँजीरा अर्धताल सों बर मुरचंग रही मननाय ॥
जो ज्यहि समया पर चाहिय सो गावत राग सहित अनुराग।
ज्यहि सुनि मोहत मन मुनियनके योगी परत योगते जागि ॥
प्रथम सुभैरवँ श्रीबसन्त अरु चौथो मेघ राग करनाट।
राग हिंडोला सह छह ये सब गावत बाँधि ताल स्वर ठाट ॥
छह छह रागिनि सब रागनकी इक रागिनी केर इक बाल।
इक २ तिरिया तिन बालन की इक २ सखा सखी प्रतिपाल ॥
ते सब गावत मन भावत अति बर गन्धर्ब बीच दरबार।
नाम गनावत तिन सबके कहि सुनिये सकल बुद्धि आगार ॥
राग सुभैरवँ की रागिनि षट आसांवरी[१] भैरवीं[२] जानि।
है माल[३]श्रीरामकरी[४] अरु सिन्धुर[५] धनासिरी[६] को मानि ॥
धौल[१] श्याम[२] शुध[३] मालकोस[४] अरु कन्हर[५] अजैपाल[६] षटबाल।
रेवा[१] सूही[२] अष्टीवहु[३] अरु सुंहो[४] रँभोलि[५] और भटियाल[६] ॥
ये हैं तिरिया उन बालन की अरु सोहिनी सखी को नाम।
सखा ऋषभ को कहि गावत यह भैरवँ राग बंश इतमाम ॥
नाम दूसरो मेघराग ज्यहि ताको कहत सकल परिवार।
गावत सर्बा गन्धर्बासो मोहत देखि देव दरबार ॥
कोड़ा[१] कान्हरा[२] केदारा[३] अरु पुरबी[४] बिलावली[५] सह पांच।
छठीं रागिनी मधुमालवि[६] है ये जानिये मेघ की सांच ॥
सांवंत[१] छायानट[२] सुधनट[३] अरु गौड़ हमीर[५] अड़ाना[६] नाम।
ये छः बालक मेघराग के गावत सुनत लगत अभिराम ॥
पुरियां[१] ईमन[२] अरु जैतश्री[३] जोगियाँ[४] बिजैराज[५] महराज।
छठीं देशिया सुत तिरिया ये गावत स्वरन केर सजि साज ॥
नट मल्लारी अरु गोरा ये भाषत सखा सखी के नाम।
उड़ि रहिं तालैं इन रागन की सुनि सब भूलिजात इतमाम ॥
रागतीसरो श्रीभाषत ज्यहि ताको कहत सकल परिवार।
गौरी शुभगा गन्धारी अरु चौथी बिलावली बर नारि ॥

कहत कुमारी पुनि पँचईं अरु षष्ठम अहै बिरागी बाम ।
इक २ लरिका इन षटहुन के सुनिये तिनहुँ केर बरनाम ॥
श्यामराम अरु बागेश्वर पुनि तीसर कह्यो जयत कल्यान ।
सुघट कल्यानी हेमै खेमै ये छः सुत सिरीराग के जान ॥
इक २ तिरिया इन षटहुन के जे रागिनिन मध्य सरनाम ।
पर्जे जजंती अरु सरसति सह सारँग देवकली अभिराम ॥
मांझ कहावत है छठईं तिय पञ्चम सखा कीन निर्धार ।
सखी सँकोची को भाषत कहि गावत इनहिं बिबिध परकार ॥
राग चतुर्थम है बसन्त पुनि गावत त्यहि कुटुम्ब के साथ ।
रहे झमाका परि तालन के सुनि मुद लहत निशाचर नाथ ॥
यहू राग की छः रागिनि हैं ललित बिभासे गूजरी नाम ।
पट्टमञ्जरी अरु टोड़ी पुनि पञ्चमि आदि भई षट्बाम ॥
इनके लरिका षट् बरणत कहि दीपक देशे सहाना राग ।
नट अँहीर अरु सारँगहि कहि छठवों बर बिहाग शुभभाग ॥
सुघर गुनकरी बंगाली अरु सोरठ देवकली ये चारि ।
हैं तिरबैनी खंभावति सह षटहू सुतन केरि षट नारि ॥
सखा मनोहर कल्यानी नट सारँग सखी कीन उद्घाट ।
दशमुख भावत ये गावत सब शुभ्र बसन्त राग के ठाट ॥
राग पांचवों करनाटक जो फाटक राग रागिनिन क्यार ।
सहित रागिनिन ठाटबाट सों ताहूकेर कहत परिवार ॥
नंटी कमोदा रामकेलि अरु है रागिनी चौथि कल्यान ।
पञ्चम गारा भूपाली ये षट् करनाट रागिनी जान ॥
गौरा मालव बहुनागर अरु मारू टङ्क लङ्कदह नाम ।
राग सागरोद्भव सह ये षट् हैं करनाट पुत्र अभिराम ॥
श्याम पूरिया समैफली अरु बृन्दाबनी अलाहियाँ चारि ।
ककुभ अहेरी सह षटहू ये हैं करनाट सुतन की नारि ॥
ललित पञ्चिमी है सुन्दर सखि अरु भाषत शुभ सखा पखार ।

ये आलापत गन्धर्बा सब हैं करनाट राग परिवार॥
राग हिंडोला पुनि षष्ठम अब ताको करत भेद निर्धार।
इन छः रागन को गाना शुभ ह्वै रह्यो लङ्कनाथ दरबार॥
मालेबि पहिड़ो तीय मरहटी दिपिको और जान सुबरारि।
देशकारि सह ये षटहू हैं शुभ हिंडोल रागकी नारि॥
तिलक मोद अरु नटकेदार पुनिहै संकराभैरन अभिराम।
सुमति बिलासक अरु कमोद सह संक्रमनादि बालषट् नाम॥
नायकि कोफी हरशिंगार अरु लीलावती चैति सुघराय।
ये षट् तिरिया षट् बालन की गायन रहे गाय मन लाय॥
भीम पलासी शुभ सहचरि अरु है बड़ हंस सखा को नाम।
समय २ पर ये गावत सब गहि गहि राग भेद इतमाम॥
सो स्वर भाषत कहि आगे अब मध्यम खर्ज और गन्धार।
ऋषभ सुधैवत अरु निषाद लै पञ्चम सात कीन निर्धार॥
परे सनाका चहुँ ओरन ते रहिगे दशौदिशा स्वर छाय।
उठे झमाका दश तालन के भाषत जौन अगारी गाय॥
ताल तिताला चौताला अरु है इकताल हाल विख्यात।
शूल फाकता झप रूपक अरु आड़ा आदि जानिये तात॥
कुण्डनाच अरु ईसंवारि सह ये दश कहत ताल के नाम।
सो दरशावत मिरदङ्गन पर करि करि उपज आदि के काम॥
कहँ लग गावै छबि कहिकै कबि चित्र बिचित्र होत उत्साह।
सह मन्दोदरि अवलोकत तहँ बैठे बीर निशाचर नाह॥
सुनासीर शत सम बैभव ज्यहि करत उमंग संग सुबिलास।
अति बल बैरी शिर ऊपर थित तदपि न कछू होत मन त्रास॥
यहि बिधि गाथा सुनि दशमुख की सुखसह गौरि शम्भु रुखपाय।
उत्सुक बोलीं पुनि शंकर सों हे प्रभु कहहु और कछु गाय॥
प्रश्न सुहाता गुहमाता को सुनि गुनि चन्द्रभाल खलकाल।
अवधपाल सुतपद सुमिरण कर भाषण लगे अग्र को हाल॥

हिय हरषाता गिरिजाता तुव सुन्दर प्रश्न मोहिं प्रिय लाग ।
सुनहुँ मनोहर बर रघुबर यश भाषत देखि तोर अनुराग ॥
सिन्धु नांघिकै इत सैनासह लै सब भीर भार रघुनाथ ।
शैल सुबेलापर निबसे जब तबकी सुनौ मनोहर गाथ ॥
उच्च कँगूरा लखि ताको इक जहँ रहिं लता बितानन तानि ।
खिले मल्लिका अरु मालति तरु बहत समीर धीर सुखदानि ॥
बोलत मधुरध्वनि चातक पिक मोर चकोर कहत मृदु बानि ।
सबदिन राजत ऋतुनायक जहँ भाजत देखि दोष दुखग्लानि ॥
चम्प चमेलिन की कलियां मृदु लक्ष्मण तोरि तोरि निजहाथ ।
बिमल बनायो मनभायो तहँ आसन महाशोभ के साथ ॥
रुचिसह तापर मृगछाला शुचि दियो बिछाय प्रेम लवलाय ।
मुदयुत तापर भे निबसित प्रभु शोभा अकह कही ना जाय ॥
कपिपति गोदी महँ राजत शिर दहिने धरो धनुष अभिराम ।
सरकस तरकस बामओरशुभ ज्यहि लखि डरत काल बलधाम ॥
बान सुधारत दोउ हाथन सों डारत जौन खलदलन मारि ।
आरत टारत प्रभु भक्तनको फारत बिषै फांस दुखकारि ॥
अञ्जनि नन्दन अरु अङ्गद दोउ चापत चरण कमल लवलाय ।
सचिव बिभीषण ऋक्षादिक तेउ निकटै रहे राजि सुखपाय ॥
कथैं निरन्तर गुण जाके श्रुति शेश महेश जक्त कर्तार ।
नारद शारद सनकादिक अरु योगी यती ज्ञान आगार ॥
पार न पावत इक रञ्चक ज्यहि धारे रहत सर्वदा ध्यान ।
धनि त्यहिपङ्कजपद चापत जे तिनसम पुण्यपुञ्ज नहिं आन ॥
प्रभुके पाछे बीरासन सों बैठे सुभग सुमित्रा तात ।
शरघर सोहत कटि मुनिपटसह लीन्हे धनुष बाण दोउ हाथ ॥
इहि बिधि राजत रघुनन्दन तहँ आसन शुभ समाजके साथ ।
धन्य सो मानुष धरत ध्यान यह हियते त्यागि जक्तकी गाथ ॥
सभा प्रभाकी बर पूरुबदिशि लख्यो सो प्रभाकरन दृगलाय ।

शशी प्रकाश्यो तम नाश्यो अरु सर्बदिशि गई चांदनीछाय ॥
कहि सब बीरनते भाष्यो तब अतिशय मधुर बचन घनश्याम।
बीर अशेषहु दृग देखहु यह पूरुब दिशा चन्द्र द्युतिधाम ॥
उयो अशङ्कित बर किरणनसों माहि अरु गगन कीन उजियार।
बिपति बियोगिन को दायक अरु है संयोगि जनन सुखकार ॥
यहि क्षण आवत कहि उपमा मोहिं होय न यह मयङ्क जनुभाय।
पूरुबदिशि के गिरि कन्दर को बासी प्रबल केहरी आय ॥
मत्तनाग सम तम नाशक यह बिचरत सघन गगन बनमाहिं।
बिकसे तारागण मानहुँ ये तन शृङ्गार निशाके आहिं ॥
देखि मयङ्का कहँ अवसर यहि मम हिय शङ्का भई अपार।
सो सब बीरन ते भाषत कहि करिये सकल तासु निर्धार ॥
यहि शशिमण्डल के अन्तर्गत जो यह परत श्यामता जानि।
कौन पदारथ है भाषहु कहि निजमति सरिस सकल अनुमानि ॥
सुनि यह बाणी धनुपाणी की देखि मयङ्क ओर सब ज्वान।
शोचन लागे बर बुद्धिन सों यावत हते तहां बलवान ॥
भाष्यो शुभगर तब रघुबर ते सुनिये बचन मोर नरनाह।
चित्त हमारे महँ आवत यह शशि महँ लसत भूमिकी छाहँ ॥
और न कारण है यामहँ कछु निश्चय यही बात महराज।
निज मति तोलत तब बोलतभे तारातनय बीर युवराज ॥
आय न छाया यह बसुधा की मो मन परत शोचि यह बात।
चोट चन्द्रमा उर लागी यह कीन्ह्यो जबै राहुने घात ॥
कह्यो अङ्गदो जब याबिधि बच औ सब सुनत भये मतिमान।
त्यहि के पाछे नल बोलत भे सुनिये दीनबन्धु भगवान ॥
ना यह छाया है बसुधाकी औ ना चोट ओट कछु लागि।
शाप बियोगिन को लाग्यो यह सोई रह्यो हृदय महँ जागि ॥
नल मति कल्पित सुनि बानी यह बोले जामवन्त शिरनाय।
हमरे मनमा तौ आवत अस शशि उर सुधाकुण्ड यह आय ॥

तब लग शोचें उर नीलौ कछु तेऊ कहन लाग मुसक्याय ।
हमरे मनमा तौ औरै कछु आयो शोचि सन्त सुखदाय ॥
लगे बनावन चतुरानन जब आनन कामनारि को नाथ ।
काढ़ि धवलता उन लीन्ह्योसब शशिउर छेदि भेदि निजहाथ ॥
छिद्र सो जाहिर यह चन्दा उर तेहि मग परत देखि नभ छाँह ।
सोई श्यामता यह दर्शत प्रभु और न कछू बात नरनाह ॥
पुनि तब लङ्कापति भाषतभे ऐसि न बात आय यह भ्रात ।
सुनहुँ बतावत हम याकी बिधि सोई सत्य सत्य घटि जात ॥
बन्धु हलाहल यहि चन्दा को जानत सकल बुद्धि के रास ।
परमप्रीतिबश निशिनायक निज दीन्ह्यो हृदयमध्य तेहि बास ॥
यहि बिधि सबकी बच रचना सुनि गुनिमन महा ज्ञानके खान ।
ध्यान धारिकै हरि चरणन महँ बोले धीर बीर हनुमान ॥

स० । है न सही यह छाहँ मही कि न राहु ग्रसे कर चोट चपेरो ।
कुण्ड सुधा को न छिद्र लसै यहहै न हलाहलहू को बसेरो ॥
बन्दि बखानत बेद सबै बसि मो मन सो शशि राउर चेरो ।
ताही सनेहके दाम फँस्यो उर श्यामस्वरूप बस्यो प्रभुकेरो ॥

सुनि चातुरता यह हनुमत की रघुकुलभान मन्द मुसक्यान ।
कियो प्रशंसा कपि भालुन सब हे हनुमान धन्य तुव ज्ञान ॥
पुनि प्रभु निरख्यो दिशि दक्षिणतन भाष्यो बिभीषणै समुझाय ।
देखहु लङ्कापति दक्षिण दिशि अति घन गगन घटा रहिछाय ॥
मधुरे २ स्वर गरजत घन प्रकटत दुरत दामिनी भास ।
मनहुँ बियोगिनको लखि २ यह बिहँसत करत हृदय उपहास ॥
होत सुबरषा जल बुन्दनकी मानहुँ धरा परत पविजाल ।
तब यह भाषत भे लङ्कापति सुनि राघवमुख बचन विशाल ॥
हे प्रभु ना ये जल बाहन दल औ ना तड़ित केर परकाश ।
बारि न बरसत यहि अवसर कछु गरजत नहीं मेघ मतिराश ॥
उच्च कँगूरा यह लङ्का को तापर बनो रुचिर आगार ।

होत अखारा तहँ रावण को जमक्यो महा सघन दरबार ॥
यह जो दरसत नभ परसत जनु अति उत्तङ्ग रङ्ग घन श्याम।
छत्र बिराजत सो रावण शिर सुन्दर मेघडम्बरी नाम ॥
दमक दामिनी सम दीसत ये मयजा श्रवणफूल हे राम।
मेघ गर्जना सम लागत जो सो मिरदङ्ग शब्द अभिराम ॥
सुनत बिभीषणकी बाणीइमि लखि दशमाथ केर अभिमान।
बिहँसि कृपानिधि बिधि बिधानसों कीन्ह्यो धनुषबाण संधान ॥
तकि सो मारयो शर दक्षिण तन फरफर चल्यो पवन की चाल।
राजत रावण मन्दोदरि जहँ पहुँच्यो ब्याल सरिस उत्ताल ॥
छत्र मुकुट दोउ दशआनन के मन्दोदरी केर श्रुतिफूल।
भूमि गिरायो अति लघुतासों पुनि उड़ि चल्यो राम के कूल ॥
आयकै प्रविश्यो प्रभु तरकसमहँ उत लखि मुकुट छत्रको पात।
भये अचम्भित सब योधागण यह का भई अजूबा बात ॥
मर्म न पायो कछु काहू ने भर्म भुलान सर्व बलवान।
काह कर्म भा यहि अवसर यह जो महि छत्र मुकुट भहरान ॥
हवा न डोली कछु चञ्चल गति औ ना बसुन्धरा थहरानि।
अस्त्र शस्त्र कोउ इत आयो ना कारण कछू परत ना जानि ॥
भयो भयंकर अति अशकुन यह शोचैं बिकल सकल बलवान।
लखि जन बिस्मय बश हँसिकै तब रावण युक्ति शोचि बतलान ॥
का जिय शोचौ मति पोचौ तुम लखौ न लङ्कनाह उत्साह।
शिरौ गिरेते शुभ संतत ज्यहि अशकुन मुकुट गिरे त्यहि काह ॥
करौ अकारण की शङ्का कह निज २ भवन जाहु हर्षाय।
पाय सुआयसु इमि रावण को चलिभे सकल सुभट शिरनाय ॥
कथा मनोहर सुनि गिरिजा यह अतिशय हृदय मध्य हरषाय।
हियअभिलाषतपुनिभाषतभइँ शशिशिरधरनचरनशिरनाय ॥
भयो बिघातित प्रभु शर से जब रावण मुकुट छत्र महिपात।
फिरिका कौतुक तेहि आगे भा कहहु सो राम भक्ति सरसात ॥

बोले गङ्गाधर अवसर त्यहि सुनु प्रिय कहत अग्र इतिहास ।
ज्यहि सुनि बिनशत भवबाधा सब आखिर मिलत रामपुर बास ॥
बसे मँदोदरि उर बिस्मय बहु जबते खसे भूमि श्रुतिफूल ।
सब सुख भूले त्यहि अवसर त्यहि हूले मनहु हृदय दुखशूल ॥
पकरिकै बहियाँ सो रावणकै लागी रोय रोय शिष दैन ।
बरसत आंसू दोउ नैनन सों कढ़त न कछु मयङ्क मुख बैन ॥
धरि उर धीरज छविपुतरी सी उतरी प्रभा ग्लानि बश म्लान ।
सविधि निहोरत कर जोरत दोउ बोली महा दुखारत बानि ॥
सुनहुँ सिखावन मनभावन मम जामहँ सब प्रकार कल्यान ।
त्यागहु रिपुता पति रघुपति ते हठ परिहरहु धरहु उर ज्ञान ॥
मनुज न मानहुँ रघुनन्दन कहँ यह मम बचन करहु परमान ।
लोक कल्पना अँग अङ्गन महँ जाके करत बेद निर्मान ॥
नागलोक है जेहि प्रभुको पद औ शुभ शीश ब्रह्म को धाम ।
लोक कहावत अरु जेते सब इक २ अङ्ग मध्य बिश्राम ॥
भौंह तरेरब नारायण को भाषत महा भयंकर काल ।
सूर्य बतावत दोउ आँखिन को बाल बिशाल बद्दलन जाल ॥
पलक चलाउब निशा दिवस अरु नासा शुभ अश्विनीकुमार ।
श्रवण कहावत हैं दशहू दिशि मारुत श्वास कीनि निर्धार ॥
हैं श्रुति बानी सुख खानी की लालच अधर नरकपति दांत ।
दिक्पति भाषत कहि बाहू बर माया जासु हास बिख्यात ॥
है मुख आगी जन रागी को जिह्वा बरुण अरुण द्युति केरि ।
दीप अठारह तन रोवाँ गण लक्ष्मी जासु चरण की चेरि ॥
हाड़ पहाड़न को भाषत कहि सरिता सकल देह नस जान ।
गुदा यमपुरी धर्मधुरी की पेट समुद्र रुद्र अभिमान ॥
बुद्धि बिधाता जनत्राता की निर्मल मन मयङ्क को मान ।
सकल चराचर उर व्यापक सो सुन्दररूप राशि भगवान ॥
अस बिचारि कै मन अपने महँ सुखसह मानि नारिकै बात ।

पारिजात पद भव पारद के सुमिरहु राखि मोर अहिवात ॥

स०। मोह न सोहत है तुम को पिय सोहत सो ज्यहिते यश पैहौ।

सो करिये धरिये प्रभु के पद ध्यान सयान सो जाते कहैहौ ॥

राम गुलाम समान न आन सुवन्दि अनन्दित या जग रैहौ।

अन्त समै तजि तन्त सबै प्रभु देवन धाम अराम सों जैहौ ॥

यहि बिधि बातैं मन्दोदरिकी सुनि दशकन्ध अन्ध निज कान।

मुख पसारिकै अति बिहँसत भा महिमा मोह महाबलवान ॥

कबि जन भाषत हैं सांची यह अवगुण बसत नारि उर आठ।

मोह चपलता डर साहस अरु करिबो सदा झूठ को पाठ ॥

अशुचि मूर्खता निर्दयता ये आठौ सदा रहत तिय पास।

कहो न मानत कछु तिरियन को जे जन महाज्ञान के रास ॥

निशि दिन गावब यश बैरी को औ त्यहि भुजबल करब बखान।

भय उपजाउब मम हिरदय महँ आयो यही सूझि त्वहिंज्ञान ॥

रूप बखानत सब जाको तैं औ अति कहत पराक्रम खानि।

सहज सो मोरे बश जानैं प्रिय मानैं सत्य बचन परमानि ॥

तोरि चतुरई मैं जान्यों यह रिपु कर पक्ष स्वच्छ उर आनि।

करत अलापन मम प्रभुता को है मृगनयनि गूढ़ तुव बानि ॥

यहि बिधि जल्पत अभिमानी को मन्दोदरी लीन उर जानि।

भयउकालवशयहिमतिभ्रमअब समुझतनहींहिताहितबानि ॥

यकेसि राति भरि यहि भांतिन बहु गो दरबार होत भिनसार।

सहज अशङ्का मद बङ्का शठ हठ बश लगत नहीं शिषप्यार ॥

स०। चाहै जितो करखा कहैं शूर पै कूर कबौं कटि अस्त्र कसैना।

वृष्टि अपार करैं घन अमृत बेत अरण्य तऊ बिकसैना ॥

नारि शिंगार रचै कितनौ पै नपुंसक के मन नेक बसैना।

होहि बिरञ्चि समान गुरू पै तऊ शठ की शठता बिनसैना ॥

इति श्रीविजयराघवखण्डेलङ्काकाण्डेरावणदरबारवपरस्पर

वार्तालापवर्णनोनामाद्वितीयोल्लासः ॥ २ ॥

बिघन बिदारण पद धारण करि उरपुर मदन कदन को ध्याय ।
श्रीरघुनायकयश घायकअघ भाषत बिजयखण्ड पुनिगाय ॥
जन मन रञ्जनि अघ गञ्जनि इमि सुनि रघुनाथ कथा हर्षाय ।
शिव प्रति बोलीं गिरिजाता पुनि हे प्रभु सन्तभक्त सुखदाय ॥
पावन लीला सियपिय की यह सुनि हिय बढ़ी अधिक उत्साह ।
है रुचि औरौ कछु सुनिबे की सो समुझाय कहहु बृषनाह ॥
बोले शशिधर तब अवसर त्यहि सुनि गिरिराजसुता मुखबानि ।
हे प्रिय सुनिये मन गुनिये शुभ भाषत राम चरित सुखखानि ॥
सहित सुमन्त्रिन दशकन्धर भट चढ़यो उतङ्ग धवरहर जाय ।
भाष्यो सारन तब देखहु प्रभु यह सब राम सैन समुदाय ॥
सुभट असंख्यन हैं यामहँ प्रभु जिनकी अकथ पराक्रम थाह ।
मनुज सुरासुर कोउ नाहीं अस इनते करै युद्ध की चाह ॥
ह्वै उत्साही रहे युद्ध के आयसु नहीं देत रघुनाथ ।
नातरु बानर बिन शङ्का ये लङ्का ग्रसत निमिष महँ नाथ ॥
सिंह सरिस ये किलकारत जो टारत समर अमर अभिमान ।
भुज बिस्तारित बल धारित अति उछलत सप्ततालपरिमान ॥
सहस कोटिभट कपि इनके सँग अँगअँग महा पराक्रम खानि ।
डरत न रणमहँ जे कालहु कहँ स्वन सुनि कँपत लङ्कगढ़ थानि ॥
लखहु लँगूरे नभ इनके ये पूरे छटा सहित दिखरायँ ।
मानहुँ पावसऋतु समयो लखि युगधनु उदय कीन सुरसायँ ॥
इन कर परसे पवि पानी महँ नलिनादल समान उतरान ।
सेतु समुन्दर महँ बांध्यो इन अतिशय कृपा करहिं भगवान ॥
नद गोदावरि तट निबसत ये सुन्दर ताम्र मेरु गुह माहिं ।
अति बल धावहिं दल आगे ये संगर सकत यमहुँ करि नाहिं ॥
घन तन भाजन हैं भाके जनु रघुपति सभा मध्य शिरताज ।
कस्यो प्रपूरण प्रभु आयसु अति इनतनु धस्यो राम के काज ॥
पद्म अठारह बर बानर दल इनकी चलत नाह भुज छाहँ ।

सुमन सुगन्धित लै अपने कर पूजी रामचन्द्र शुभ बाहँ ॥
खल दल घालक दोउ बालक ये हैं जग करन केर अभिराम।
परम अनूपम शीलडील महँ सुन्दर बिदित नील नल नाम ॥
मेरु घेरु सम यह दीसत जो चौदह तार ऊंच बिकरार।
उड़ि नभ पकरत कर बादर बर बीर गँभीर धीर जुझवार ॥
बसै पुलिन्दा तट बांको भट तारा सुवन बालिको लाल।
लेइ उछङ्गन महँ उदयाचल अङ्गन लखि लजात रिपु भाल ॥
बसैं निरन्तर इहि मानस महँ श्रीघनश्याम राम छबिधाम।
पांच पद्म है कपि सैना सँग अङ्गद नाम कहत अभिराम ॥
चतुर चलांको अरु बांको लखि किय प्रभु कटक केर युवराज।
समर अरोपै जो कबहूँ यह गृह भगिजायँ धाय सुरराज ॥
पद धरि चापै जो बसुधाको पन्नग उठैं कांपि पाताल।
निरखत लङ्का तन तीक्षन चष कीन्हे महाबदन बिकराल ॥
धवल कँगूरा समशूरा यह जो दिखरात श्वेत शुभ गात।
बाढ़ि २ जुलफै परि कुलफै रहिं दारुण भुजा धुजा बलख्यात ॥
है अधिकारी नृप शुभगर को चारी चपल ज्ञानकी खानि।
कबहुँ न आनत मन मुरिबो रण जानत सबिधि ब्यूह निर्मान ॥
पैदा होतै शशि ग्रसिबे को गगन उड़ान बायु परमान।
सत्तरियोजन उड़ि ऊपर गो पुनि तब फिरयो शीत भयमानि ॥
अति भट मर्कट कोटि पञ्चशत याके रहत सर्वदा साथ।
डरै न लरिबे महँ कालहुते सो यह कुमुद नाम कपिनाथ ॥
अब इत देखहु जिय लेखहु ये अगणित कपि समूह जेठादि।
चहुँ दिशि घुमड़े पुर लङ्का के मानहु सघन घटाकी बादि ॥
पुच्छ भ्रमावत कोउ धावत इत आवत शिलाशृङ्ग लिये हाथ।
बृक्ष उखारत महिपारत किलकारत घोर शोर के साथ ॥
सहस गयन्दन को पाराक्रम सब तन मध्य जानिये स्वामि।
सप्त पदुम है दल संख्या यहि अति बल चपल चाल के गामि ॥

हैं सब बासी पुर कासीके खांसी करत समर महँ शाक ।
द्वन्द्व युद्ध के लड़वैया ये भागत समर अमर सुनि हांक ॥
दीरघ दन्ता मयमन्ता सब खन्ता सरिस पानि नख आहिं ।
इनकर आधिपति है धूमध्वज निबस्यो जौन लङ्क तट माहिं ॥
अतिबल गूढ़ा यहु बूढ़ा जो भाषत जामवन्त कहि नाम ।
ज्येठो बन्धव है याही को बहु बीरता धीरता धाम ॥
ज्यहिकर धरती है कन्दुकसम को करि सकत समर त्यहिसाथ ।
नरबर निर्जर अरु आसुर कोउ गहैं न सशर शरासन हाथ ॥
नदी नर्मदा तट बासी यह सदा अखेद रहत हिय नाथ ।
तन अभेद अति इन्द्रायुधसम बिचरत सहज गगन महिपाथ ॥
है प्रधान यह नृप शुभगर को रघुबर चरण कमल को दास ।
महा मन्दमति त्यहि जानिय जो यहि ते चहै युद्ध जयआस ॥
पुनि अवलोकहु इतओकहु यह परत बिशोक देखि सबज्वान ।
पीतवरण है तन आभा अति प्राची प्रभा मनहुँ छहरान ॥
चौबिस अर्बुद दल गणना यहि जानिय हृदय लङ्क भर्तार ।
तन बिकराली बलशाली सब एक ते एक शूर सर्दार ॥
परै जो आगे गिरि पत्थर त्यहि पायँन मर्दि मिलावहिं क्षार ।
कञ्चनगिरि के ये बासी सब इन कर अधिप महाबल भार ॥
सबिधि सहायक सुरनायक को सखा सुकण्ठ केर सुखदाय ।
मेरु कँगूरा सम सोहत तन मानहुँ धरे पराक्रम काय ॥
सुख सह पीवै नित गङ्गाजल औ त्यहि निकट करै शुभ बास ।
गर्जत आवत यह केहरि सम मर्कट सोई जानु मति रास ॥

स० । भुजदण्ड प्रचण्डहैं चण्ड सनी निमनी तनभा तनभा हठि जीतति ।
बरिबण्ड महा नवखण्डन में मृगझुण्डन में ज्यों लसै करिनीपति ॥
हनुमन्त प्रमत्त बली सुत जासु उसासु दशेशहि बेश सुकीरति ।
द्विज बन्दिसोहै यह केशरीनाम कपीन्द्र महाकपि कोटिअनीपति ॥

अब इत देखहु यह बानर गण उत्तरदिशा कीन जिन थानि ।

जनु अकालबश उड़ि टीड़ीदल यहि थल धाय आय मड़रानि ॥
तजि बारिधि तट भट उत्कट सब आवतलङ्क शङ्क जनुत्यागि।
अति बल बाढ़े मद गाढ़े ये रहे सक्रुद्ध युद्ध महँ रागि ॥
है यहि लश्कर कर मालिकजो त्यहिबल सकैं न खालिक भाषि।
हैं बलशालिक रिपुघालिक युग भाय सुकाय युद्ध अभिलाषि ॥
रहैं हमेशा कपिवेशा महँ पै प्रभु समर अमर जय कारि।
तन अविनाशी सुखराशी अति वासी पारियात्र त्वर चारि ॥
गति मति स्वच्छा रण क्रिय दक्षा सुन्दर गवय गवच्छानाम।
अति अरामदा निज स्वामीकहँ इनपर कृपा करहिं बहु राम ॥
गर्जत लङ्का दिशि बङ्का जे करि अहतङ्क कार चिग्घार।
तार पञ्चदश तन ऊंचे दोउ दल सरदार मार अनुहार ॥
जल आधारी तुङ्गभद्र के बुद्धि समुद्र रुद्र के दास।
सहस सप्तदश बर बारन बल इक इक भुजन मध्य परकास ॥
गन्धमादनी लघु बन्धव यह अति अभिराम सर्व गुण धाम।
ज्येठो भैया है याको यह ज्यहि कहि पनस बखानत नाम ॥
बक्र शक्र सम यह देवन महँ भान समान मानभा खानि।
ज्ञानवान है गणनायक सम जानत नीति रीति सबिधानि ॥
शरद चन्द्र सम मुख दीपत अति बाहु उदण्ड चण्ड को धाम।
काम सवाँरक शुचि स्वामी के ध्यावत सदा राम को नाम ॥
नाथ बिलोकहु अब मर्कट यह निर्मल जलज सुष्ठु दल गात।
शरदनिशापति सम दीपति अति दिव्यअनङ्गअङ्गअधिकात ॥
पीतबरन शुचि छविनैननकी चितवत चकित छकित बलबाहु।
गर्जत तर्जत घन सावन सम अगरो गुणन भरो उत्साहु ॥
समर करन को इक अवसर यह गो सुरनाथ साथ सुरधाम।
इन्द्र अनन्दित बर दीन्ह्यों यहि तबते भयो रूप सम काम ॥
कियो मित्रता सुरनायक अति असमय होत सहायक आनि।
सहस कोटि दल भट मर्कट कर याके साथ नाथ त्यो जानि ॥

बचन अन्यथा जनि मानहुँ प्रभु जानहुँ याहि दूसरो बालि ।
समर सैकरन भट रोपैं जो तो पै यहै एक सब घालि ॥
दर्दुर पर्वत पर याके घर मन बच काय राम कर दास ।
देह जगमगत मन उमगत अति सुनतै श्रवण युद्ध की आस ॥

कु० । पर्वत मर्दत पद धरत, करत धराकर छत्र ।
लिय मचाय घनघोर यहिं, समर अमर जय पत्र ॥
समर अमर जय पत्र, दीन लखि कालहु कम्प्यो ।
अति अखण्डवर चण्ड, मार्तण्डहु कर झम्प्यो ॥
है सुषेण शुभ नाम, राम सेवक बल गर्वत ।
हृदय बसत अस हँसत, लसत जनु कञ्चन पर्वत ॥

निरखौ परखौ अब बानर यह मानहुँ गेरु मेरु प्रभु आय ।
रबिसम मुखछबि कबिभाषत कहि बलथल अङ्ग अङ्ग दरशाय ॥
मारिकै लङ्का दह कीन्ह्यों यहिं आयो जबै प्रथम इक दायँ ।
अब केहि कारण इत आवत यह कहिये मर्म भाषि सो सायँ ॥
ज्यहि दिन पैदाभो बानर यह अञ्जनि गर्भ लीन अवतार ।
कह्यो क्षुधारत तब माता सन जननी क्षुधा भई अधिकार ॥
कहि समुझायो तब माता ने हे सुत ढूंढ़ि खाहु फल लाल ।
सुनि चित चकित यहचितयो तब इत उत हेरि फेरि बिकराल ॥

स० । धाय उड़ाय चल्यो नभको अतिकाय सुवामन कौ सम बाढ़ी ।
लीलि दिनेश अशेश लियो अमरेशहिं शङ्क भई अति गाढ़ी ॥
बज्र हन्यो न गन्यो कछु बिक्रम याहित बक्र भई यहि दाढ़ी ।
पौन न गौन कियो त्यहि काल भई सुनई बिपदा उठि ठाढ़ी ॥

पवन बन्दभै त्रयलोकी मा रोंकी श्वास दुखित नर नारि ।
लखि अति अस्तुति किय देवनतब औ अस बरहु दीन निर्धारि ॥
होय कुलिशसम तव देही सब सवँरत बढ़ै पराक्रम भाग ।
सुनि पुनि अस्तुति मुनि देवनकी तब यहिं कीन भानुकोत्याग ॥
पवन पालना यहि कीन्ह्यों अति ताते भयो पवनसुत नाम ।

दूत पियारो रघुनायक को नूतन बुद्धि पराक्रम धाम ॥
कियो अध्ययन दिननायक ते उलटी चाल जाय रथ साथ।
रहै अगारी नित स्यन्दनते तब लिय बली जानि दिननाथ ॥

कु०। सागर शत योजन कहत, जाहि सकल बिस्तार।
इक फलङ्क महँ लंघि त्यहि, लङ्क गयो करि क्षार ॥
लङ्क गयो करि क्षार, बली बरियार प्रहारे।
लखि अपार भुजभार, समर सुर आसुर हारे ॥
किहि प्रकार त्यहि साथ, नाथ करिहैं हम भागर।
अति भट मर्कट कटक, मध्य झलकतबलसागर ॥

सैन मध्य महँ अब देखहु प्रभु मैन शरीर बीर बल धाम।
सावन घन सम तन शोभा शुभ राजत नीलकमल सम श्याम ॥
भार उतारन हित बसुधा को दारन हेत दुष्ट दल झार।
अगम अगोचर निर्बिकार प्रभु धारण कियो मनुज अवतार ॥
केश बेश शिर अहि बालक सम सोहत जटा छटा अभिराम।
बिच २ कलियाँ बर कुसुमन की गूंधी लषणलाल मतिधाम ॥
अलकैं ललकैं मुख मयङ्क पर उपमा रहे तासु कबिगाय।
सुधा पियनको अहिछौना जनु शशिपर रहे ललकि लपटाय ॥
मृगमद कुंकुम अरु केशरि के झलकत तिलक मनोहर भाल।
बारिजदल से रतनारे चष सोहत श्याम रेख द्युति जाल ॥
धनुसम सोहैं युग भौंहैं अति डरपत जिन्हैं बङ्क लखि काल।
शुक हिय लाजत लखि नासा शुभ चमकतबर बुलाक बिचलाल ॥
शरद चन्द्र छबि मुखनिन्दत मृदु अतिशय दशन पांतिकी कान्ति।
अधर लजावत कल बिम्बाफल देखतमन न लहतक्षन शान्ति ॥
दर छबिसींवां बरग्रीवां द्युति हलकत परो मधुर बनमाल।
मत्तशुण्ड सम भुजदण्डा दोउ धनु शर सहित शत्रु बल शाल ॥
थलकत बक्षस्थल दीपति युत कटि तट लसत पीतपट भाथ।
राजत त्रिबली ता ऊपर बर नाभि गँभीर कुण्ड जनु पाथ ॥

बाम बिभीषण अरु दक्षिणदिशि सोहत लषणलाल लघुभाय ।
हँसत हँसावत दरशावत सुख सेवत चरण कमल लवलाय ॥

स० । हैं दोउबंधु बली बलसिन्धु प्रभू इनके गुण जात न गाये ।
बन्दि अनन्दक दीन मुनीन सुमानस मानस मीन लखाये ॥
सच्चिदानन्द स्वरूप अनूप हैं गावत बेद अखेद बताये ।
तारन भक्त अभक्त सँहारन भार उतारन को महि आये ॥

युत अति भटका यह कटका प्रभु जो बिन खटका परै देखाय ।
सो अब देखहु बल बेषहु गत अयुतन रहे बीर बर छाय ॥
घटा घनेरी जनु भादौं की अम्बुधि निकट रही उमड़ाय ।
यावत योधा हैं यामहँ प्रभु ते सब महाप्रबल बल काय ॥
रवि छबि सरसत यह दरशत जो बरसत प्रभा जासु बर गात ।
बिलसत बिहँसतमुखनिशिपतिसमशुभगरपरमनाम बिख्यात ॥
स्वामि सहायक रिपुमद घायक नायक जानु कटक यहि क्यार ।
सकल बानराधिप भाषत यहि पुरवत हुकुम शीश पर धार ॥
यथा कथा है यहि उतपति की भाषत तथा सुनहुँ मनलाय ।
अचरज मनिहौ प्रभुसुनिकै सो बिधिगति अकह कही ना जाय ॥
काढ़िकै कीचर निज आँखी को बिधि धरतीपर दीन चलाय ।
बानर पैदा भो ताते इक सुन्दर बदन महाबल साय ॥
भये अनन्दित बिधि देखत त्यहि लेखत प्रभु चरित्र चित माहिं ।
अतिआश्चर्यितकह कौतुकयह भयोसो समुझिपरत कछु नाहिं ॥
हाथ जोरि कै भट मर्कट सो ठाढ़ो भयो ब्रह्म ढिग जाय ।
उर पुर तोलत सो बोलत भो मोहिं आदेश काह जग साय ॥
तब अनुमान्यो सृष्टिकरन मन तासन कह्यो बचन समुझाय ।
तुम कहँ कीन्ह्यों कपिराजा हम निबसौ धरा धराधर जाय ॥
घन बन बिचर्यो आनन्दित ह्वै सुन्दर मधुर मूल फलखाय ।
मारि गिरायो निशिचारिन कहँ यावत तुम्हैं परहिं दिखराय ॥
नाम तुम्हारो ऋक्षराज है नहिं जग तुम समान बलवान ।

ह्वै है दूसर अरु पैदा कोउ तुमसम तुम्हीं एक नहिं आन॥
सुनि अस बानी चतुरानन की हँसि मुसकाय नाय पदमाथ।
ब्रह्मलोक सों सो गमनत भो दक्षिण दिशा हर्ष के साथ॥
बिचरन लाग्यो मुद पाग्यो सो गिरि बन सघन मध्य बलशालि।
जो जहँ पायो लखि दानव तहँ डास्यो भुज प्रलम्ब सन घालि॥
इत उत बिचरत मधि काननमहँ इकदिन लख्यो कूप इकजाय।
देखत जल महँ निज छाहीं सो मन महँ गयो सनाका खाय॥
शोचन लाग्यो भ्रम पाग्यो सो को यह छिप्यो कूप महँ आय।
अवशि मेरही है बैरी कोउ मम डर छिप्यो आय इत धाय॥
बच्यो अकेलो यह मारन ते अस जिय ठानि कोप उर आनि।
फांदि झड़ाका पस्यो कूप महँ डस्यो न नेक चित्त भयमानि॥
अस कछु मंशा नारायण कै फँदतै कूप तासु त्यहि काल।
पलटि अङ्ग भे सब नारी के भारी भयो दैव कृत ख्याल॥
रूप अनूपम छवि यूपम सम ज्यहि लखि लजै कामबर बाम।
निकसि कूप ते सो बाहर भइ द्युति घर सुघर सुलक्षण धाम॥

स०। स्वर्ण छरीसी परीसी खरी सुघरी छबिता अगरी खरी ताक्षन।
औचक दृष्टि परी हरिकी बिगरी मति धीर धरी चित जासन॥
लागत गात अगातको बान गयो लुटि ज्ञान डिग्यो तन आसन।
शुक्र झस्यो सो पस्यो तियगात भयो सो मनौ त्यहिगर्भ प्रकाशन॥

भये प्रसवके जब पूरण दिन सुरपति अंश तेज बल शालि।
अरि मद घालिक हरि कुल पालिक पैदा भयो पुत्र भट बालि॥
बिदित बीरता है जाकी जग तुमहूं लख्यो निशाचर राज।
लरिका जाकर बर अङ्गद भट ज्यहि रघुराज कीन युवराज॥
पुनि कछु अवसर के बीते पर दिनकर लख्यो ताहि छबिधाम।
तेऊ तन मन ते मोहित ह्वै निरखत भये बाम बश काम॥
वीर्य पतनभो तब दिनमणिको सो तिय उदर आय प्रविशान।
गर्भ दूसरो त्यहिं धास्यो तब पूरण भये दिवस परमान॥

सुत उतकण्ठा सों ताके तब पैदा भयो सुकण्ठा बाल ।
सैन मध्य ज्यहि अवलोकत तुम भानुसमान तेज बल शाल ॥
पैदा ह्वै गये इन दोउन के पुनि जस चरित कीन कर्तार ।
सोऊ भाषत अभिलाषत सो चितदै सुनहु लङ्कभर्तार ॥
उतपति ह्वैगे जब शुभगर की भो पश्चात नाथ यह हाल ।
काया पलटी पुनि नारी की लह्यो सो प्रथम गात तत्काल ॥
भयो अनन्दित लखि दोऊसुत हित सह हृदय लीन लपटाय ।
गयो संग लै चतुरानन ढिग सन्मुख भयो ठाढ़ शिरनाय ॥
चरित बखान्यो कहि आदिहि ते उपजे जेहि प्रकार दोउ बार ।
सुनि त्यहि ब्रह्मा समुझावत भे है हरि इच्छा महा अपार ॥
अब हम तुमकहँ बतलावत जो सो शिष करहु जाय मनलाय ।
गमनौ मारग दिशि दक्षिण की लै दोउ सुतन संग हर्षाय ॥
है पर परबत ऋष्यमूक तहँ तासु समीप सुखद सब काल ।
राजत पम्पापुर सुरपुर सम तहँ तुम होहु जाय महिपाल ॥
लै तब आयसु हंसध्वज को आयो ऋच्छराज त्यहि ठाम ।
भोगनलाग्यो सुखनिवसितह्वै सह दोउ सुतन सुतन बलधाम ॥
पुनि कछु अवसर के बीततपर सुन्दर राज भोग सुख पाय ।
भये सयाने दोउ भैया ये इकते एक महाबल काय ॥
साठिसहस गज बल याके तन यहिते अधिक बालि बरियार ।
मयसुत मार्यो मायावी ज्यहिं मानिय सत्य लङ्क भर्तार ॥
यहिबिधि शुभगरकी उतपति प्रभु तुमसन कही यथोचित गाय ।
अतिबल योधा यहि शोधा हिय किय मित्रता राम मनलाय ॥
रघुकुल भूषण की सैना सब दशमुख लख्यो दृष्टि दृगलाय ।
पुनि चलि मन्दिर गो आनँदसह दिनकर अस्तकाल को पाय ॥

स० । याबिधि सारन शारँगधारन की सब सैन दिखाये दशाननै ।
लाग्यो शुभाशिष दै समुझावन पावनप्रीतिकरौ प्रभुपावनै ॥
आनत चित्त न सो गिरिजा न गनै निजज्ञानहुँ सों चतुराननै ।

भूलत नेक न टेक केहूविधि भूलत कालकरालके पालनै ॥

अशुभ निकन्दन पद बन्दन करि श्रीरघुनन्दन चरण मनाय।
भव भय पारद श्रीशारद भजि भाषत कथा मनोहर गाय ॥
रघुबर दल बलको बर्णन सुनि गिरिजा भई अधिक आनन्द।
मन्द मधुरता सों बोलीं पुनि हे जगपाल भालधर चन्द ॥
चरित अपूरब रामचन्द्रको सुनि उर महामोद अधिकात।
नहिंअघात मन तन पुलकत अति बाढ़त अधिक लालसाजात ॥
गाइय गाथा कछु औरौ कहि म्वहिं पद पदम किंकरी जानि।
सुनि इमि बानी भवरानीकी भे अति मुदित मोद की खानि ॥
उर पुर बासी को सुमिरण करि बोले मधुर बचन मुसक्याय।
हो अति धन्ये गिरिकन्ये तुम पूछ्यो प्रश्न परम सुखदाय ॥
तुव रुचि राखत मैं भाषत हौं सीतानाथ चरित की गाथ।
ज्यहि सुनि पापीजन प्रयास बिन सुरपुर लहत मोदके साथ ॥
पाय सुआयसु रघुनायक को अङ्गद गये लङ्क ज्यहि भांति।
भई वार्ता लङ्कापति सों सो सब कहौं कथा करि ख्याति ॥

स०। रैनि गये द्युतिऐन उये तब बारिजनैन सुशैन बिहायो।
शौचबिधानभलीबिधिठानसनानकै इष्टबशिष्टहिध्यायो ॥
प्रातर्वृत्तिसों कै निर्वृत्ति प्रभापति फेरि सभामधि आयो।
सम्मत शोधनके हित बन्दि अनन्दितह्वै सब मन्त्रिबोलायो ॥

जामवन्त शुभगर अङ्गद लै आये धीर बीर हनुमान।
नील बिभीषण नल आदिक सब बैठे चरणकमल धरि ध्यान ॥
त्यहि क्षण सीतापति भाष्यो इमि सुनिये सकल मन्त्रि बुधिधाम।
करिबो वाजिब अब आगेकह शोचि सो कहहु मन्त्र अभिराम ॥
सुनि निदेश इमि कौशलेश को कह ऋक्षेश चरण शिरनाय।
सब उरबासी अविनासी तुम सबकी गति जानत रघुराय ॥
तद्यपि हमसन जो पूछत प्रभु तौ हम कहत स्वमति अनुसार।
बड़े बड़े योधा तुव सैना महँ इकते एक शूर सरदार ॥

पै बतलैबो युक्ति उक्ति सों दैबो ज्वाब राज दरबार ।
दाब दिखैबो समुझैबो अरु यावत चार कर्म को कार ॥
नहिं कोउ जानत है अङ्गद सम मानिय सत्य जङ्क भर्तार ।
मम मन आवत अस याते प्रभु चार पठाइय बालिकुमार ॥
सुनि अस सम्मत जामवन्त को सबके हृदय भई आनन्द ।
तब त्यहि अवसर पर अङ्गदसन लागेकहन भानुकुल चन्द ॥

स० । हे रिपु भङ्गद सङ्गर सङ्गद सङ्गद अङ्गद बीर बिशेखी ।
बालिकुमार महामतिहार करौ यह चारक कार अशेखी ॥
लङ्क निशङ्क पधारहु धारहु मोर निदेश रहै ज्यहि शेखी ।
काजसवाँरि बुझैनिशिचारिहि राजकुमारिहि आवहुदेखी ॥

बैन माधुरे कमल नैन के सुनि इमि बुद्धिऐन युवराज ।
हाथ जोरि के यह भाषत भे हे रघुराज! राज शिरताज ॥
सुधि बुधि पूरो अरु शूरो सोइ जापर कृपा करौ तुम स्वामि ।
कर्ता धर्ता सब आपहि हौ म्वहिं आदरत जानि अनुगामि ॥
पहुँच्यो बङ्का भट लङ्कातट अतिहि अशङ्का बीर जुभार ।
सुमिरण करिकै रामचन्द्र को फाटक नाँघि गये वहिपार ॥
उत्तम शोभा लखि लङ्काकी मनमहँ क्षोभा बालिकुमार ।
धन्य सराह्यो पुरबासिन कहँ हैं अति धन्य बनावनहार ॥
जाकी उपमा कहँ सुरपुर नहिं उर महँ रहत देव ललचान ।
धन्य बिलासी त्यहि नगरी के सगरी जहां मोद सामान ॥
सब गुण अगरी प्रभा उजगरी बगरी धाम धाम अभिराम ।
अम्बुधि कगरी पर सोहत सुठि मोहत देखि चितेरो काम ॥
तेहरो खंदक पनियाँसोते जम्बूनद सो परै दिखाय ।
गम्य पियादे कै नाहीं जहँ तहँ असवार कहां ते जाय ॥
छहरदिवारी ताके ऊपर गाड़े तीब्र धार के काँट ।
फाटक लागे अष्टधात के जकड़े कठिन वज्र के पाट ॥
धरीं भुशुण्डी रण मण्डी तहँ जिन लखि भगैं घमण्डी ज्वान ।

अतिबल गहरे हैं पहरे पर पकरे खरे शस्त्र बलवान॥
चलो बांकुरो तब आगेको देखत लङ्क नगर को राग।
खिलीं मनोहर अमराई तहँ पाईबाग अनूपम लाग॥
पुष्प अमल के कोमल दलके मधुरे फलके बृक्ष अपार।
हलके हलके सों राजत हैं तिन पर नित बसन्त असवार॥
कहूं कदम्बन अरु अम्बनकी झुमड़ी झुकी झुड़ीली पांति।
ताल तमालनके जालनकी कहुँ कहुँ भिन्न जाति दरशाति॥
चन्दन वृन्दनसों लाग्यो कहुँ सुन्दर गन्ध रही उमड़ाय।
धाय धाय तहँ आय आयकै अनगिन नगिन रहे लपटाय॥
कहुँ नवरङ्गी नवरङ्गीके द्रुम बहु फरे खरे गरुआयँ।
मधुरे गूदन अमरूदन के सहसन स्वच्छ बृक्ष दिखरायँ॥
कहूं बहेरे लगे हरेरे अमले बिमले फरे बनाय।
कहूं फालसे गसे अनूपम कमरख रही एक रुख छाय॥
गोंदा गोंदा फरे करौंदा जम्बू निम्बू केरि कतार।
सेव सुपारी लौंग नारियर बड़हर हरहार यकतार॥
पाकरि आकरि इकदिशि दरशै है अश्वत्थ युत्थ बहुताय।
बीचन बीचन महँ लीचिन के सुन्दर बृक्ष रहे गरुआय॥
पनस सरीफा सहतूतन के नूतन जाल एक दिशि लाग।
अनन्नास अरु विनासपाती लाखन दाख और पुन्नाग॥
कहुँ कहुँ प्यारे लगे छोहारे मधु अखरोट बेर बादाम।
कहूं अनारन कचनारनकी है दरशाति पांति अभिराम॥
इक दिशि प्यारी लगीं कियारी बिकसे गसे सुमन नव डार।
उमड़ी गुमड़ी लता कतायें दीन बितान तानि जनु मार॥
एली बेली बिमल चमेली मेली चहूं ओर शुचि गन्ध।
डारन डारन भौंर हजारन करि गुञ्जार रहे मद अन्ध॥
कहुँ गुलमेहँदा अरु गेंदाके रहे प्रफुल्ल फुल्ल छबि छाय।
कहूं केतकी जकी अनूपम रही बसन्त तन्त दिखराय॥

बिकसी नैनी गुलचैनी कहुँ रबिश्राननी घनी घुमड़ानि ।
कहुँ मुचकुन्दन अरु कुन्दनके बृक्षन स्वच्छ छटा छहरानि ॥
कहुँ कहुँ प्यारी खिली नेवारी कहुँ दुपहारिन केरि बहार ।
कहुँ कहुँ उलही जुही मालती मरुआ गुलअनार गुल्जार ॥
कहुँ कहुँ छैला करसैला बहु फूले कहुँ गुलाब बर आव ।
कहूँ सुगन्धै देत केवड़ा चम्पा हरत स्वर्ण की दाब ॥
रङ्ग दिखावत गुलतरङ्ग कहुँ गुल्दावदी देत श्रमझार ।
कहूं कनेरा गुलखैरा अरु कतहूं हरशिंगारके हार ॥
लगे पलासनके कासन बन कतहूँ गुलाबास शुचि बास ।
कहूं कियारी बर गुड़हरकी देखे हरत भूख अरु प्यास ॥
घनी कामिनी इक ओरन महँ करि रहि जौन दामिनी मात ।
केशरि क्यारी की न्यारी छबि अमले गमले भले दिखात ॥
लज्जावन्ती की पंती कहुँ छाया परे जौन मुर्झायँ ।
स्वच्छ कतारैं कल्पबृक्ष की जिन्हैं बिलोकि देव ललचायँ ॥
मध्य बाटिकन के सोही शुभ बारहदरी जरी नग लाल ।
परी दरीचिन में जाली बर यूपन घनी मणिन के जाल ॥
करैं कलोलैं तहँ पक्षी गण बोलैं मन मोहनी अवाज ।
झुण्डन २ मृग बिचरैं तहँ कहुँ कहुँ लरैं मत्त गजराज ॥
पिया पिया कहि पपिहा बोलैं अमृत भरे पियारे बोल ।
मोरवा शोरवा करि नाचैं कहुँ कीन्हें भिन्न भिन्न बहु गोल ॥
जोटा सारस के घूमैं कहुँ कहूं उड़ात लालके जाल ।
लखत बाटिकन की छबि या बिधि आगे चले बालिके लाल ॥
लख्यो तड़ागन की शोभा तहँ पटतर नहीं मानसर आव ।
क्षीरसमान नीर परिपूरित नीरज बेश दिखावत भाव ॥
ठाट अनूपम हैं घाटन के जड़े अमोल रतन के जाल ।
बँधी नसेनी इक श्रेनी की तहाँ नहात अमित नर बाल ॥
नगी पन्नगी घनदामिनि सी भामिनि भरैं स्वर्णघट पाथ ।

जिनछबिउपमाकबिपावैंनहिं रतिअति लजाति मलति दुउहाथ ॥
तहँते आगे चलि अङ्गद फिरि देख्यो जाय सुघरि करिशाल।
खड़े पहारी से भारी गज मद की स्रवत पनारी भाल ॥
झूमैं भूमैं तल भूमैं अति जकरे परे जँजीरन पायँ।
शान लजावत ऐरावत की जलधर देखि देखि सकुचायँ ॥
अति उद्दण्डन शुण्डादण्डन सोखत सरित सुकुण्डन पानि।
झुण्डन झुण्डन मद मुकैं बहु धक्कन धुक्कि देत गिरि भानि ॥
चलत हलतभुवि शेषकलिमलत फणफटकारि करत चिग्घार।
दाढ़ दरक्कत कोलानन की कमठ पीठि फटिजात दरार ॥
बाँक हाँक सुनि सकात दिग्गज भागिलुकात जात भयखात।
दीरघ रद कदबिहद जलद सम पद मजबूत उच्च अति माथ ॥
अड़हिं ऐंड़करि जो मग्गनमहँ फिरि नहिं डग्गअग्ग कहँ लेत।
गिरि हहलावहिं भवन ढहावहिं धावहिं पवन चुनौती देत ॥
आनि न आनैं कछु अंकुश की भागैं तोरि तोरि आलानि।
कानि महावत की मानैं ना चूसैं शशिहि शुण्ड नभ तानि ॥
नभ पथ रोकैं दिननायक रथ बलगथ अकथनीय तिन क्यार।
समर शिंगारे कदवारे अति भारे जैतवार धजदार ॥
सोहैं हीरन के हौदावर जगमग होत जड़ाऊ काम।
घहरैं घण्टा घन घोरन सों दुन्दुभि बजैं मनहुँ सुरधाम ॥
झलकैं झूलैं कलधौतन की ललकैं लरी जरी मुकतान।
कनक पहारन के ऊपर जनु दीन्हीं तानि मयूखैं भान ॥
धरी अमारी तिन ऊपर बर सुबरण गढ़ी मढ़ी मणिजाल।
कञ्चन कलशा चम चम चमकैं झालरि लगे जवाहिर लाल ॥
बिछीं सफ़ेदी मसनन्दै ते शारद चन्दै रहीं लजाय।
साफ़ सुपरदा जरबाफ़न के गिर्दा बर दाबन दरशाय ॥
यहि बिधि देखत गज भीरैं पुनि आगे चले बीर युवराज।
बाजी शाला अवलोक्यो तहँ जिन लखि करैं सूर्यहय लाज ॥

भांति भांति के जाति जाति के बाँधे पाँति पाँति हय थानि।
जात बातगति मातकरत मग पग नहिं लगत भगत अतुरान॥
कच्छी मच्छी ताजी तुर्की करनाटकी अरब अपराक।
खलक मोहनी बाजि बलक के सुन्दर बेश बने यकताक॥
मनगति हारी कन्धारी हय करनाटकी काबुली बाजि।
सुभग कलङ्गी बहुरङ्गी बहु लखि छबि जात मीन मृगलाजि॥
अङ्गी बङ्गी और सुरङ्गी जङ्गी भरे जोम धजदार।
मुश्की अबलख सुरुख कुमैता जिन पर चढ़ें छैल असवार॥
नट से नाचैं उछरि उछरि भुवि घट महँ करत लीकसी जात।
नभ लग पूरत खुरथारन रज मानौं आहिं बात के भ्रात॥
बेष सुआछे अँग अँग काछे बाछे चलत लेत करछाल।
थहरत फहरत अन्तरिक्ष में धरणी उछलि देत खुरथाल॥
पैज करत जनु रबि बाजिन सों जकरे परम जेवरन गात।
कञ्चन जीनैं बँधी नवीनैं छबि की छटा छलकि छहरात॥
झलकैं झूलैं जरबाफन की ललकैं अलक लरी मुक्कान।
हलैं हमेलैं गल हीरन की कल हैकलैं खिलैं जनु भान॥
यहि बिधि आला हयशाला लखि जकिसे रहे बीर युवराज।
पुनि चलि आगे अवलोकत भे सुन्दर स्यन्दनादि के साज॥
सहसन सोहे रथ शोभा गथ मानहुँ देवराज के यान।
घनी किंकिणी चहुँदिशि मण्डित चमचम होत मणिनको भान॥
रतनन गूथी परी बरूथी जड़े अमोल जवाहिर लाल।
झालरि झलकैं नग जगमग कर मनहुँ इकत्र नछत्रन जाल॥
चक्र चमंकैं अष्टधात के कलसी कलसी परैं लखाय।
धनद बिमाननके निन्दक अस अङ्गद लख्यो सुरथ तहँ जाय॥
पुनि चलि तहँते अरु आगे गे जहँ सामन्तन केर अगार।
जे लड़वैया बिन अस्त्रन के कूदत फाँदत चलैं पगार॥
लगे अखारे तिन मल्लन के अति बिकरल्ल बल्ल बेथाह।

बरनी बरनी के सोहे भट उतरे धरणि मनौ जलबाह ॥
कसे जाँघिया करिहायें मा बलकत वेश भवाँये बाहु।
कोउ डँड़ पेलैं बैठक झेलैं खेलैं युद्ध सहित उतसाहु ॥
आगे चलिकै अवलोक्यो पुनि सुन्दर छटा बालि के जात।
ध्वजा पताके छबि शाके से दर दर फहर फहर फहरात ॥
थर थर घर घर डगर डगर प्रति अति द्युति जगर मगर रहिछाय।
द्वार द्वार प्रति मणि हारन बर बन्दनवार दीन बँधवाय ॥
कञ्चन कलसे कल झलमलसे निर्मल जल से भरे बनाय।
धरे दुआरन के आरन पर रम्भन खम्भ करे गड़वाय ॥
लखि दरवज्जन के छज्जन को लज्जन लगत इन्द्रपुर धाम।
ठाम ठाम पर काम रतन को काम गुलाम होत बिन दाम ॥
अटा अटारी चित्रसारी बहु प्यारी छटा घटा दरशात।
जहँ मन अटका तन लटका तहँ खटका भूलि चलन को जात ॥

स०। अलका भल ता सम उज्जलका हलका नलका पुर आवति है।
नरती सम भोगवती लगती जगती सब लाज लजावति है ॥
द्विजवन्दि अनन्दित जीव जहाँ उमहा सुख दुःख भगावति है।
सरसावति शोभ जगावति सी अमरावति पार न पावति है ॥

अस सुन्दरता लखि लङ्काकी मन मा खुशी भये युवराज।
धन्य बिलासी सुखरासी इत बासी जौन निशाचर राज ॥
अस अनुमानत मन अङ्गद भट आगे चले हृदय हर्षाय।
तहँ पर खेलत पुरबालक बहु तिनते कह्यो बात अस जाय ॥
काके बालक तुम खेलत इत हमसे सांच देउ बतलाय।
सभा दशानन की कौनी दिशि कहौ बुझाय दया उर लाय ॥
सुनि अस बानी भट अङ्गद की बोल्यो पूत रावण क्यार।
हैं हम बालक दशआनन के ताकत कत न मूढ़ कुबिचार ॥
रे खल बन्दर क्यहि कारण तैं आयो लङ्क निशङ्क पधारि।
कानि न मानत कछु निश्चर की है तू बड़ो ढीठ बदकारि ॥

रावणसुत की सुनि बानी इमि रिसहा भयो बालि को लाल।
करि अरुणारे चष बोल्यो तब रे खल तोहिं भखोचह काल॥
सीधी बानी ते बोलत नहिं रे शठ तोहिं इतक अभिमान।
एक थपेड़ा के मारेते देर न लगैं पधारैं प्रान॥
बढ़ी बतकही इमि दोउन ते दोऊ नव जवान बलवान।
बातन बातन बढ़ी कर्षता गातन भभकी कोप कृशान॥
लात उठाई त्यहिं अङ्गद कहँ अङ्गद पकरि लात गहि हाथ।
अतिहि भ्रमायो त्यहि बङ्गी सम जङ्गी बालिजात बिख्यात॥
झटक्यो पटक्यो पुनि धरणीपर जस पट रजक देत फटकारि।
प्राण सटकिगे तब देही ते गो चहुँ ओर शोर हहकारि॥
भागे निश्चर भय पागे तब लखि इमि बालितनय को कर्म।
मर्म न भाषै कोउ काहूसन सबके हृदय ब्यापि गै भर्म॥
सगरी नगरी महँ हल्ला भो डगरी डगरी हवा उड़ानि।
इत उत भागे भय पागे सब मुख ते कहि न जात कछुबानि॥
प्रथमैं लङ्का जेहिं दाही कपि आयो फेरि तौन बलधाम।
हे विधि अबधौं का करिहै यह परिहै देखि काह परिणाम॥
बुद्धि लड़ावैं नरनारी सब अति भ्रम डूबे सिन्धु अथाह।
ज्यहि मग आवैं कपिनायक चलि पूछे बिना बतावैं राह॥
एक मुहूरत महँ पहुँचत भो जहँ दरबार दशानन क्यार।
हाल पहूँच्यो दशआनन पहँ आयो राम केर प्रतिहार॥
भयो बुलौआ तब संसदि महँ गमनो घनो बीर युवराज।
दाखिल होइगो तहँ बनेश सम जहँ दनुजेश बेश बिरराज॥
स्वर्ण सिंहासन पर आसन किये मानहुँ श्याम मेरु सहप्रान।
नैन कान अरु मुख नासा ये गिरि कन्दरा खोह अनुमान॥
लता जतावत तन रोवाँ अरु अति उत्तङ्ग शृङ्ग दशमाथ।
शस्त्र धरे बल भरे बृक्ष सम दीसत तासु बीसहू हाथ॥
अति मदमत्ता बलवत्ता भट ऐंठत सभामध्य बहु बैठ।

श्री रघुनन्दन पद बन्दन करि तारातनय शनै तहँ पैठ॥
झट पट भट ठट उठि ठाढ़े भे उद्भट देखि राम प्रतिहार।
व्यापी शङ्का सब घट २ महँ काधौं होनहार कर्तार॥
उठत देखि कै सभासदन को गे दशवदन बदन रिस छाय।
चख पख तीखन करि ईषन युत अङ्गदओर लाग बतलाय॥
संसदि अन्दर चलि आयो तू बन्दर कौन भौन क्यहि ग्राम।
हाल बतावहि कहि आपन सब आयो कौन काम यहिठाम॥
बोले अङ्गद तब रावण ते मैं रघुनाथ दूत दशमाथ।
तुम्हैं बिलोकन को आयों इत सहज सुभाय निशाचरनाथ॥
बाप हमारे सों तुमसों अति रहि मित्रता नात स्वइ मानि।
तव हित कारण चलि आयों इत मानहुँ सत्य हमारी बानि॥
हौ तुम नाती मुनि पुलस्त्य के बर कुल माहिं लिह्यो अवतार।
बहु बिधि पूज्यो बिधि शंकर कहँ बरलै किह्यो अनूपम कार॥
लोकपाल अरु सुरनायक लै जीत्यो देव दैत्य रण माहिं।
भयो मोह बश नृप कैसे अब किह्यो बिचार तनक उर नाहिं॥
सिय जगदम्बा हरि आन्यो तुम ठान्यो बृथा हृदय अभिमान।
धर्यो कुमारग पग शोच्यो नहिं ह्वैकै अति सुजान मतिमान॥
अबहुँ तुम्हारो कछु बिगरो नहिं मानौ कही हमारी बात।
दोष तुम्हारो सब क्षमिहैं प्रभु यामहँ भल तुम्हार दरशात॥
दाबो तिनुका तुम दाँतन तर गल बिच लेहु अँगौछा डारि।
लङ्कनिवासी जन यावत सब लै सँग लेहु आपनी नारि॥
सादर सीता को आगे करि यहि बिधि चलौ सकल भय त्यागि।
शरण सुखद श्रीरघुनायक की पहुँचौ शरण माहिं अनुरागि॥
विनय सुनावो इमि हाहाकरि हे प्रभु त्राहि त्राहि अब मोहिं।
आरत बानी इमि भाषत सुनि तुरतै अभै करैं हरि तोहिं॥
बालिसुवन की सुनि बानी इमि क्रोधित कह्यो निशाचरराय।
रे शठ बन्दर कहु सँभारि बच नहिं यम धाम देहौं पठवाय॥

देव सतावन भट रावन म्वहिं जानत तैं न कीश अज्ञान ।
शङ्क न मानत कछु हिरदय महँ सुने न शठ प्रताप मम कान ॥
काको बालक कुलघालक तैं ताको मोहिं सुनावसि नाम ।
काह नाम है तुव भाषण करु हम से कौन हेत को काम ॥
नाम हमारो तौ अङ्गद है बेटा बालि केर विख्यात ।
तिनसों तुमसों केहु समया पर भै मित्रता कहौ सो बात ॥
कह्यो दशानन हम जानत नहिं को है बालि बसत क्यहि ठाम ।
सुयश बतावो कछु ताको तुम तासों रह हमार कह काम ॥
हँसि मुसकाने भट अङ्गद तब औ रावण से लगे बताय ।
बीत्यो औसर बहु कारण यहि तुम कहँ भूलि गयो सो भाय ॥
स० । बालि वही सुनु बीर दशानन आन न जासम बीर भयो ।
गयो भूलि अबै दिन थोरेहि में रणकारण को ज्यहि तीर गयो ॥
बिन माखसो काँखरि दाबि तुम्हैं षटमास भ्रम्यो न अधीर भयो ।
कढ़ि भाग्यो तबै द्विजबन्दिकहै रबिको जब अञ्जलि नीर दयो ॥
सुनि इमि भाषण भट अङ्गद को कह्यो लजाय निशाचरराय ।
रह कपिबाली बलशाली इक अब मोहिं गई कछुक सुधिआय ॥
त्यही बालिके सुत अङ्गद तुम उपज्यो बंश घमौना बाँस ।
बृथा बियानी तुव माता त्वहिं किन ह्वैगयो उपजतहि नास ॥
स० । लागत अङ्गद लाज नहीं अस बात कहे मुखजीभ न टूटी ।
बालिको पूत कहाय अरे बनि तापस दूत कहा मति लूटी ॥
बीरपनो तजि धूतबनो कुल छूत कपूत निलज्जता लूटी ।
गर्भखस्यो न बृथा जननी त्वहिं होतहि दीनि हलाहल घूंटी ॥
कहौ कुशलता पितु अपनेकी अब कहँ अहै रहै क्यहि भांति ।
बिहँसत अङ्गद अस बोले तब नहिं कछु कुशल तासु कहिजाति ॥
तुमहूँ दश दिन महँ ताके ढिग जैहौ अवशि निशाचरराय ।
मुलाकाति करि पुनि तासन तहँ पूछ्यो कुशल सखहि उरलाय ॥
द्विधा भेद है शठ जाके उर ताके हिय न बसत भगवान ।

प्रेमभाव सों प्रभु आवत ढिग भावत जाहि प्रेम पन्थान ॥
हम कुलघालक सच भाषो यह तुम कुलपाल प्रबल दशभाल।
अन्धौ बधिर न मुख भाषैं अस हैं तव बीस नैन श्रुतिआल ॥
शिव ब्रह्मादिक सुर सबरे मुनि चाहत जासु चरण सेवकाय।
तासु दूत ह्वै कुलघालक हम ऐसेउ मति न फाटि हियजाय ॥
कठिन बिभाषण सुनि अङ्गदको नैन तनेनि कहत दशमाथ।
सहौं कठिन बच खल तेरे मैं जानत नीति धर्म की बात ॥

स०। जानत हौं नृपनीति की रीति अहै उरधर्म प्रतीति घनेरी।
मानत बन्दि सुग्रन्थन को मत है रत शुद्धि पथै मति मेरी ॥
आनत हौं न अज्ञान मनैं कछु ताते सहौं खल बानि करेरी।
नातरु काटि मुखै असिना रखत्यों असना रसना शठ तेरी ॥

लङ्कापति की सुनि बानी इमि भाष्यो फेरि बीर युवराज।
धर्मशीलता सुनि पाई तुव परतिय हरब सदा यह काज ॥
लखि रखवारी निज दूतन की दीन उजारि बाग हनुमान।
डूबिमरयोना तुम निलज्जअस अब लगि जियत बेहयाप्रान ॥
नाक कान बिन लखि बहिनीको धर्म बिचारि क्षमा तुम कीन।
धर्मशीलता जग छाई तुव हम बड़भाग दरश करि लीन ॥
सहित सयानी कपिबानी सुनि रिसहा भयो निशाचरराय।
डाटि अङ्गदै पुनि बोल्यो अस शठ कह बकै बृथा मुखलाय ॥
काज सरै ना कछु बकबक ते बन्दर खल बिलोकु मम बाहु।
लोकपाल बल बिपुल चन्द्र सम ताके ग्रसनहेत जिमि राहु ॥
इन कर कमलन पर मराल सम शंकर शिवा सहित कैलास।
बार पचासक अनयासक शठ मैं आनन्द सहित दियबास ॥
भाषौ अङ्गद तुव सैना महँ मोसन भिरै कौन बलधाम।
तिय बियोग ते सदा शोगयुत निर्बल म्बहिं बुझात बहुराम ॥
तिनके दुखते दुखी लक्ष्मणो अतिव मलीन लीन मैं जानि।
नदी किनारे के बिरवा सम तुम सुग्रीव परत अनुमानि ॥

भाय हमारो है कादर अति रण को नाम सुने भयखाय ।
भल्लुकपति सोहै बुढ़वा अति काहेक लरी समर महँ आय ॥
ईटा जोरन को जानत ढँग द्वउ नल नील रचा जिन सेतु ।
एक बिक्रमी है बन्दर तहँ निश्चय पस्यो जानि अस हेतु ॥
प्रथम आयके पुर जारा ज्यहिं मारा अक्षय उजारा बाग ।
सुनि इमिबानी अभिमानी की अङ्गद फेरि कहन अस लाग ॥
का सति भाषत यह निश्चरपति की यह मृषा करत परिहास ।
लघु कपि जारै पुर रावण को सुनि अस कौन करै बिश्वास ॥

षट्पद ।

ज्यहिं कपि किय पुरदाह अवर कानन कृतभञ्जन ।
गिरि दरि असुरन भरी अक्षसुत कीन्ह्यो गञ्जन ॥
तुम जानत हो ताहि कछू करि है वह बिनती ।
पै हमरे यहि कटक बीच ताकी नहिं गिनती ॥
वह दूरदूर धावन बिषे बिदित बड़ो मजबूत है ।
संदेश इतै उत भेजिबे लावन कारण दूत है ॥

चलै बहुत सो कछु योधा नहिं पठवा खबरि लेन हम ताहि ।
ऐसे बीरन की गन्ती कछु हमरी सैन माहिं हैं नाहिं ॥
अब हम जाना पुर जास्यो कपि प्रभु आदेश दिये बिनभाय ।
गयो न फिरि तुम लग सुकराठ के रह्यो लुकाय तासु भयखाय ॥
हमैं न रिस कछु सुनि बानी तुव भाषत सांच बचन दशमाथ ।
हमरी सैना महँ कोउ न अस शोभा लहै लरे तुव साथ ॥
प्रीति शत्रुता बरबरिहा सँग करिबो चही नीति अस आहि ।
सिंह सँहारै जो मेढ़ा को जग महँ भला कहै को ताहि ॥
यद्यपि लघुता रघुनायक कहँ मारे तुम्हैं होत बड़ दोष ।
तद्यपि नीके तैं जानत शठ कठिनो क्षत्रि जाति कर रोष ॥
बिहँसि दशानन तब भाष्यो अस बड़गुण एक बानरन माहिं ।
जो प्रतिपालत है ताके हित करत उपाय लजत कछु नाहिं ॥

धन्य कीश जो निज स्वामीहित जहँ तहँ नचैं लाज बिसराय।
सबकहँ खुश करि नाचि कूदिकै पति हित करैं अमित चतुराय॥
स्वामिभक्त अति जाति तुम्हारी अङ्गद कहत सत्य हम बात।
कहौ न कसअस गुणस्वामी के यह गुणबड़ तुम्हार बिख्यात॥
मैं गुण गाहँक हौं चातुर अति तव कटुबचन करौं नहिंकान।
सुनि अस बानी दशआननकी अङ्गद बिहँसि लाग बतलान॥
दशशिर तुव गुण गाहँकता सब हमसे प्रगट कही हनुमान।
बन उजारि सुत बाधि जास्योपुर तद्यपि त्यहिं न कीन अपमान॥
सोई सुन्दर लखि सुभाव तुव मैं धृष्टता कीनि दशभाल।
आय बिलोक्यों कपिभाष्यो जोतुम्हरे कछु न लाज रिसख्याल॥
टेढ़ि उक्तिसो धनु बाणी शर रावण हृदय दह्यो रिपु कीश।
प्रतिउत्तर सो जनु सँगसी सम काढ़त खैंचि २ दशशीश॥
भयेते ऐसिय मति खाये पितु रे कपि मूढ़ महा अज्ञान।
भाषि तर्कणा युत बाणी अस बिहँसा लङ्कनाथ बलवान॥
उत्तर दीन्ह्यों तब अङ्गद अस रे मलराशि नीच निशिचारि।
पितहि खायकै अब खात्यों त्वहिं हिय कछु शोचिरह्यों चुप मारि॥
बालि सुकीरतिको भँड़वा लखि हतौं न तोहिं नीच अभिमानि।
केतरे रावण जग मोसन कहु मैं यत सुने कहत अनुमानि॥
बलि जीतन हित यक पतालगो राखा बांधि बालकन ताहि।
खेलहिं बालक हति लातन त्यहि गातन हनैं चपेटन चाहि॥
बलि छुँड़वायो करि दाया त्यहि ताको सुयश सुन्यो इमि कान।
फिरि इक देखा सहसबाहुने पकड़्यो जीव जंगली जान॥
घरै लयायो त्यहि कौतुक हित बहुबिधि भयो तासु उपहास।
जाय छँड़ायो त्यहि पुलस्त्य मुनि है यह जक्क माहिं परकास॥
एक कहत म्वहिं सकुच लगत है जो दबि रह्यो बालि की कांख।
कौन सो रावण तू इतनेन महँ मोसन सत्य कहसि तजि माख॥
सुनु शठ रावण बलशाली स्वइ भुजबल जासु शंभुगिरि जान।

जासु बीरता शिव जानत भल दीन्हों जाहि शीशको दान ॥
शिर सरोज निजकर उतारिकै पूज्यो अमितबार त्रिपुरारि ।
दिक्पति जानत बल बाहुनको जिन उर अजहुँ होत दुखभारि ॥
हृदय कठिनता दिग्गज जानत जब जब भिर्यो जाय बरिआय ।
जिनके दांत न फूट बज्र ते सो उर लगे टूटिगे भाय ॥
जासु चलत महँ धरा हलत इमि गजके चढ़े यथा लघुनाव ।
बीर सो रावण जग जाहिर है ओज अथाह सुयश दरियाव ॥
सुने न कानन शठ ताको यश बक बक बृथा करत बेकार ।
लघु करि भाषत त्यहि रावण कहँ नर कर सुयश करत उच्चार ॥
बातैं रावण की सुनिकै इमि बोले बालिसुवन रिसिआय ।
सुनु शठ परिहरि हठबानी मम क्यों न सँभारि अधम बतलाय ॥
सहसबाहु भुज घन जङ्गल सम दहन अनल सम जासु कुठार ।
तीक्ष्ण धार ज्यहि परशुसिन्धु महँ बूड़े नृप अनेक बहुबार ॥
प्रबल गर्ब तिन परशुराम को रामहिं लखत गयो सब भागि ।
सो नर कैसे रे निश्चर खल बोलत हया शरम सब त्यागि ॥
भाषत मानुष शठ रामहिं कस करि अज्ञानपने की बात ।
काम कि गणना धनुधारिन महँ सुरआपगा नदी क्यहि भांति ॥
कामधेनु को पशु भाषै को द्रुम सम कल्पवृक्ष किमि होय ।
अन्नदान नहिं अरु दानन सम शठ अमृतहि कहत रस कोय ॥
गरुड़ कि गणना कहुँ पक्षिन महँ को कहि सकै शेश को साँप ।
चिन्तामणि है कस पत्थर महँ जाकर जगत बिदित परताप ॥
लाभकि दूसर हरिभक्ती सम हरिपुर अन्य लोक सम नाहिं ।
तैसे रघुपति नहिं मानुष सम रे खल समुझु शोचु मनमाहिं ॥
मान मथन करि सब सेना सह बाग उजारि लङ्कपुरजारि ।
सो हनुमंता कपि कैसे शठ गयो जो तुव कुमार को मारि ।
छोड़ु चतुरता सुनु रावण खल भजसि न कृपासिन्धु श्रीराम
राखि सकैं ना त्यहि शंकर अज जो खल भयो राम ते वाम ।

गाल बजावसि जनि मिथ्या खल होइहै राम बैर असहाल ।
लगे राम शर शिर तेरे कटि परिहैं धरणि माहिं दशभाल ॥
गेंद सरिस सो शिर तेरे खल खेलिहैं भालु कीश चौगान ।
टूक टूक ह्वै शिर फुटिहैं सब देखब तब तुम्हार अभिमान ॥
रणमहँ कोपहिं रघुनायक जब छुटिहैं अति कराल शरजाल ।
गाल बजावबु तब भुलिहै यह नतु प्रभु भजो तजो यह ख्याल ॥
सुनि असबानी भट अङ्गद की रावण हृदे गई रिसछाय ।
बस्त महानल जनु डारो घृत उठै कराल ज्वाल धुधुआय ॥

षट्पद ।

कुम्भकरण मम भ्रात अखिल अरिकुलसंहारक ।
कालरूप बिकराल कलेवर भवभयहारक ॥
मेघनाद ममपुत्र पुरन्दर बन्धन कर्ता ।
चन्द्रहास मम खङ्ग सकल शत्रुन संहर्ता ॥
ममहैं सहायनिश्चरनिकर त्रिभुवनविजयीशत्रुसुर ।
रावणलसन्त अभिधानमम राजतराजालङ्कपुर ॥

जोरि सहायक शठ बँदरन कहँ बाँध्यो सिन्धु सेतु गिरिढोय ।
कौन बीरता महँ गणना यह यासे बीर कहै नहिं कोय ॥
सिन्धु अनेकन खग नाँघत हैं सो नहिं शूर होहिं शठ कीश ।
जल बल पूरित भुज सागर मम बूड़े जहँ अनेक अवनीश ॥
बीस बारिनिधि अति अगाध सो को अस बीर जो पावै पार ।
नीर भरायों दिगपालन ते जिनको सबै कहत बरियार ॥
ऐस प्रतापी के आगे शठ नरयश कहत बारही बार ।
कौन बीरता तुव स्वामी महँ भगि हैं समर सुने ललकार ॥
समरबाँकुरे यदि स्वामी तुव पुनि २ कहत जासु गुणगाथ ।
तौ चर पठवा क्यहिकारण इत रिपुसन प्रीतिकरत न लजात ॥
हरगिरि मन्थन मम बाहुनलखि पुनि शठ स्वामि सराहतजात ।
यह नहिं जानत बल रावण को दशहू दिशा माहिं बिख्यात ॥

कौन बहादुर है रावण सम ज्यहिं निजहाथ काटि निजमाथ ।
हुते अनल महँ अमित बार मैं हर्षित शाखि गौरि के नाथ ॥
जरत बिलोक्यों मैं कपालदिशि बिधिके लिखे अङ्क निजभाल ।
बाँचि आपनो बध मानुष कर हँस्यों ठठाय झूठ करि ख्याल ॥
भई न भय कछु मन समुझत सो बिधिकी बुद्धि गई सठिआय ।
बात न सांची बिधि बुढ़वा की यह मैं जानिलीन सतिभाय ॥
को भट दूसर मम आगे शठ पुनि २ कहसि लाज परित्यागि ।
मोरि बीरता जगजाहिर खल रह्यो प्रताप दशौंदिशि जागि ॥
निश्चरपति को सुनि भाषण इमि पुनि युवराज कह्यो मुसकाय ।
सत्य कहतहौ तुम लङ्कापति यामहँ कछु न झूंठ दरशाय ॥
सलज न दूसर तुव समान जग कतौं न सुना आजुलगि कान ।
हौ स्वाभाविक लाजवन्त तुम निजगुण निजमुख करत बखान ॥
शिर गिरि गाथा चित तेरेपर हरदम चढ़ी रहत हरयाम ।
बीसबार लगि कहि भाषी सो यहि ते बड़ो बनत बलधाम ॥
जीतनगे हत्यो सहसबाहु बलि बालिहि जबै निशाचरराय ।
तब यह भुजबल उरराख्यो धरि काहेन किह्यो तहाँ मनुसाय ॥
सुनु रे मूरुख तन सवियाँ अरु काटे शीश होत नहिं बीर ।
बाजीगर को भट भाषत नहिं निजकर काटै सकल शरीर ॥
धाय धाय कै यदपि मोहवश पाँखी जरैं अग्नि महँ जाय ।
बोझा ढोवत हैं गदहा बहु ते नहिं बीर कहावत भाय ॥
बतबढ़ावकरु जनि मूरुख अब सुनु ममबचन त्यागि अभिमान ।
मैं न बसीठी को आयों इत पठयो अस बिचारि भगवान ॥
बार बार इमि कहि भाष्यो प्रभु हने सियार हरिहि यश नाहिं ।
समुझि बचन सो प्रभु अपने के तुव दुर्बचन सह्यों उरमाहिं ॥
नातरु करिकै मुख भञ्जन तुव लै बरजोर जात सियमाय ।
नीच तिहारो बल जान्यों मैं परतिय हरे सून थल पाय ॥
गर्ब तिहारे उर याही शठ की मैं अहौं निशाचरराय ।

महूं दूत हौं रघुनायक को कीरति जासु रही जग छाय ॥
प्रभु अपमानहिं जो डराउँ नहिं देखत तोहिं करौं असख्याल।
तोहिं पटकि माहिं हानि सेना सब चौपट करौं लङ्क दशभाल ॥
बिनि २ मारौं सब राकस खल एक न बचै हते बिन प्रान।
सह मन्दोदरि सियरानी को लै बरजोर जाउँ युतमान ॥
करौं जो ऐसो यहि औसर पर तऊ न कछुक बड़ाई मोरि।
मृतकहि मारे मनुसाई का यह गुनि तजत तोरि सब खोरि ॥
सूम नपुंसक शठ बिषयाबश बूढ़ कलङ्क सहित अति दीन।
सदा रोगबश अरु क्रोधीबड़ श्रुतिमत सन्त अहित मतिहीन ॥
पापी निन्दक तनपोषक निज रघुपति बिमुख अहैं जन जौन।
चौदह प्रानी ये मुर्दा सम जियतौ जानु कुमति के भौन ॥
असबिचारि खलत्वहिंमारत नहिं अबजनिमोहिंक्रोधउपजाउ।
सुनि कपिबानी मन कोपित ह्वै बोल्यो फेरि निशाचरराउ ॥
मरन चहत है खल बानर अब लघुमुख कहत बड़ीसी बात।
जड़ कपि जल्पसि कटु जाके बल बुधि बल तेज न ताके गात ॥
अगुण अमानी त्यहि चिन्तन करि राज छँड़ाय दीन बन बाप।
इकतो यह दुख तियबियोग पुनि ममभयसहत रातिदिन ताप ॥
जाके बल को गर्ब तोहिं खल ऐसे नर अनेक जग आहिं।
खाहिं निशाचर भट रातिउदिन तजुहठ मूढ़ समुझिमनमाहिं ॥
जब इमि रावण ने रघुपति की निन्दा करी बहुत खगराय।
तब उर क्रोधित भा अङ्गद भट ओंठ चबाय दन्त कटकाय ॥
जे जन निन्दा हरि शंकर की कबहूं सुनैं आपने कान।
त्यहि अघ लागै गउ मारे को भाषत सत्य २ मतिमान ॥
काटै रसना त्यहि निन्दक की जोपै चलै आपनो दाउँ।
नतु तजि देवै त्यहि अस्थल को कबहुं न लेय तहां को नाउँ ॥
कटकटाय कै कपिकुञ्जर तब क्रोध अपार हृदय उपजाय।
हनी धरापर भुज दण्डै दोउ तब कर हाल सुनो खगराय ॥

थर २ वसुधा कांपन लागी सबके हृदय गयो भय छाय ।
गिरे सभासद सब औंधे ह्वै कायर भगे प्राण लै भाय ॥
गिरत दशानन सिंहासन ते उठा सँभारि क्रोध उर धारि ।
शङ्क समानी अभिमानी के भूतल परे मुकुट षट चारि ॥
कछु तौ माथेपर लीन्हें धरि कछुलै फेंकि दीन युवराज ।
सो उड़ि आये इत सैना महँ जहँ पर अवधराज विरराज ॥
मुकुटन आवत लखि भागे कपि दिनहीं लूक परन बिधिलाग ।
रिस करिफेंके की रावण शठ आवत कुलिश चारि अतिभाग ॥
तब हँसि भाष्यो रघुनन्दन प्रभु बीरहु हृदय शङ्क जनि खाहु ।
लूक न इन कहँ तुम मानौ मन ना ये बज्र केतु नहिं राहु ॥
ये किरीट हैं दशआनन के फेंके बालितनय बलवान ।
सो द्युति छावत इत आवत हैं मानहुँ सत्य बचन परमान ॥
कूदि तड़ाका तब मारुतसुत कर गहि आनि धरे प्रभु पास ।
कौतुक देखैं कपि भल्लुक सब दिनकर सरिस शुभ्र परकास ॥
इहां हकीकति अस बीतति भै उत अब सुनौ सभा को हाल ।
मुकुट गिरेते उर क्रोधितह्वै बोल्यो गर्जि तर्जि दशभाल ॥
भागि न जावै खल बन्दर यह मारो पकरि याहि ततकाल ।
दूर न लावहु भट धावहु सब जावहु समुद पार अब हाल ॥
खोजि २ कै कपि भल्लुक सब खाहु अघाहु मोद उपजाय ।
करिकै बसुधा बिन बन्दर की जीवत धरौ तपी ह्वउ भाय ॥
लङ्कापति की सुनि बानी इमि बोल्यो बालितनय रिसिआय ।
बकत बृथाही शठ निश्चर कह मैं लखि लीन तोरि मनुसाय ॥

स० । गालबजावत आवत लाज न रे खलराज बृथा बकठानै ।
देखि लियो मनुसाय सबै शठ बाय भरो न तजै अभिमानै ॥
जायकै सागर डूबि मरै किन सन्मुख बात करै मनआनै ।
नाशनहार निशाचरवृन्द तिन्हैं मतिमन्द तपी जनि जानै ॥

रे कुलघाती उतपाती खल मरु गल काटि निलज तियचोर ।

फटत न छाती बल देखत अस रे मलराशि नीच कुलबोर ॥
सन्निपात बश कटु जल्पसि अस चाहत परो कालके गाल ।
पैहै आगे फल याको अब हनिहैं जब चपेट कपि भालु ॥
रामहिं मानुष कहि भाषत शठ कटिनागिरै जीभ शिर साहिं ।
गिरिहैं रसना नहिं संशय कछु शिरन समेत समर महि माहिं ॥
रे दशकन्धर सो मानुष कस ज्यहिं संहर्यो बालि इकबान ।
बीसहु लोचन ते आंधर भो धिक तव जन्म मूढ़ हतज्ञान ॥
तेरे शोणित के प्यासे हैं श्रीरघुनाथ हाथ के बान ।
यही भरोसा ते छाँड़त त्वहिं नतु क्षण माहिं करत बेप्रान ॥
तोरे दांतन के तोरन हित है मम भुजन माहिं बल बेश ।
काह करौं कछु बनि आवत नहिं आयसु जो न दीन अवधेश ॥
नातरु रिसतौ अस लागतहै करि चकचूर कूर दशभाल ।
लङ्का बोरौं गहि बारिधि महँ देखौं कौन करत प्रतिपाल ॥
खल तुव लङ्का फल गूलर सम बसैं अशङ्क जन्तु निशिचारि ।
मैं कपि देर न फल खावे महँ आयसु पै न दीन धनुधारि ॥
बालिसुवन की सुनि युक्ती अस बोल्यो बीसनयन मुसकाय ।
मूढ़ झुठाई अस सीखे कहँ बक्कत बृथा नहीं शरमाय ॥
बाप तिहारे भट बाली ने कबहुँ न ऐस बजाये गाल ।
भये तपस्विन मिलि झूँठातैं मोकहँ बिदित भयो अब हाल ॥
क्रोधित ह्वैकै कपि बोल्यो तब सुनि इमि यातुधान की बात ।
सांचहु झूठा शठ निश्चर मैं जो भुज बीस कीन नहिं घात ॥
कहि अस बानी बलखानी कपि रामप्रताप सुमिरि उरमाहिं ।
प्रणकरि रोंपा पद संसदि महँ शङ्का जाहि काल की नाहिं ॥
पाउँ हमारो जो टारै अब कौनौ यातुधान बलवान ।
जनक दुलारी मैं हारी हठि थल फिरि जाहिं राम भगवान ॥
तारासुत को सुनि भाषण इमि कह दशमाथ गर्ब के साथ ।
देर न आनौ बलवानौ अब मानौ सही कही मम बात ॥

पाउँ पकरि कै यहि बन्दर कहँ महि महँ पटकि करौ बिन प्रान ।
सुनि अस बानी अभिमानी की अँकड़े बड़े २ बलवान ॥
मेघनाद से बलयोधा सब अङ्गद निकट गये नियराय ।
बल करि झपटैं पग लपटैं बहु करैं उपाय अनेकन भाय ॥
टरै न कपिको पग कौनिउँ बिधि गे सब हारि हृदै ते ज्वान ।
करि शिर नीचे को बैठे सब डूबे लाजसिन्धु हरियान ॥
पुनि उठि झपटैं अरु डपटैं पै टरै न कीश चरण यहि भाँति ।
यथा मोहतरु को बिषयी नर सक न उखारि उरग आराति ॥
भूमि न छाँड़त पग बानर को देखत रिपु मद गयो पराय ।
बिघन करोड़िन के आयहुपर तजत न नीति सन्त जस भाय ॥
कपि बल देखत हियहारे सब सारे यातुधान बलवान ।
उठा आपुही दशकन्धर तब कपि दिशि चल्यो हाँकि हरियान ॥
पाउँ गहत अस कह अङ्गद भट मम पद गहे न तोर उबार ।
जो जीवन चहु रामचरण गहु शरणहिं जाय सहित सुतदार ॥
तारासुत को सुनि भाषण अस तुरतै लौटि पर्यो शरमाय ।
भयो तेजहत श्रीनाशी सब जिमि दोपहर समय निशिराय ॥
बैठ जायकै सिंहासनपर महामलीन दीन शिरनाय ।
मनहुँ गँवाई निज संपति सब दशा सो कहि न जाय मुनिराय ॥
दीन दयाकर रघुनन्दन प्रभु जगदाधार विश्वभर्तार ।
तासु विमुख ह्वै सुखपावै किमि जो चर अचर केर सरदार ॥
भौंहँ बिगारत ज्यहि स्वामी के उपजै विश्व होय पुनि नाश ।
बज्र बनावै जो तिनुका को बज्रहि करै तिनूका भास ॥
तासु दूतको प्रण प्यारी कहु कैसे टरै जानि नहिंजाय ।
पुनि कपि बहुबिधि समुझायो कहि मानत नहीं निशाचरराय ॥
मान भञ्जिकै रिपु रावण को प्रभु अपने को सुयश सुनाय ।
चले तहां ते पुनि तारासुत यहि बिधि ओज आपनो गाय ॥
अबहिं बड़ाई कहि भाषौं कह हतिहौं तोहिं खेलाय रणमाहिं ।

बूझि परैगो तब तोकहँ उर यहि क्षन करत बनत कछु नाहिं ॥
पहिले ताको सुत मार्यो कपि सो सुनि हृदय उठ्यो अकुलाय।
अङ्गद बल लखि सब निश्चर गण महा सशाङ्क भये खगराय ॥
यहिविधि रिपुको बल चूरन करि पूरन बली बीर युवराज।
आय पहूंचो झट सागर तट जहँ पर अवधराज बिरराज ॥
करि पद बन्दन रघुनन्दन के सबसन मिल्यो मोद उपजाय।
इतै हकीकति असबीतति भै उतकर हाल सुनो मनलाय ॥
सांझ जानिके दशआनन तब मन्दिर गयो हृदय बिलखाय।
पुनि मन्दोदरि बहुप्रकारसों भाषन लगी ताहि समुझाय ॥
तजौ कुमति यह पति समुझौ मन सोह न राम तुमहिं संग्राम ॥
तिनते लरिकै बरिऐहौ किमि जिनके दूतन के असकाम।
खींची लक्ष्मण धनुरेखा सो सक्यो न नाँघि रह्यो भयखाय ॥
फिरि क्यहि बल पर तिन बीरनते चाहत करन युद्ध मनुसाय ॥
नाँघि समुन्दर कौतुकही कपि पवनकुमार लङ्क महँ आय।
अछत तुम्हारे अमराई हति मार्यसि अछयकुमारहि हाय ॥
पुरी जरायसि चौगिर्दाते हाजिर रहे सकल बलवान।
चलो न बिक्रम कछु काहूको तब यह कहाँ रह्यो अभिमान ॥
गाल न मारहु अब झूठे पति इतना कहा मानिल्यो म्वार।
मनुज न जानौ रघुनन्दनको जो सब विश्व केर कर्तार ॥
कहा न मान्यो मारीचहु को जानत जौन बाण परताप।
एकहि शरते समुद पारभो यह तौ हृदय बिचारौ आप ॥
जनक सभा महँ नृप बटुरे बहु तुमहूं रह्यो तहांपर नाथ।
देखत सबके शिवशंकर को तोर्यो धनुष नाथ रघुनाथ ॥
गर्व गिरायो भृगुनन्दन को कीन्हों जनक सुता को ब्याह।
काहे न तिन कहँ तब जीत्यो तहँ यह बल कहां रहा तब नाह ॥
जान्यो जिनको बल सुरपति सुत राखा जियत आँखि यकफोरि।
शूर्पनखा की गति देख्यो तुम तबहुं न हया हटत हिय तोरि ॥

बधि बिराध अरु खरदूषणको हन्यो कबन्ध बालि इकबान।
मानुष मानत त्यहि ईश्वरको पति तुव कहाँ गयो बुधिज्ञान॥
सिन्धु बँधायो ज्यहिं हेला करि उतरे पार सैन लै साथ।
शैल सुबेला पर आश्रम करि निवसे सदल राम रघुनाथ॥
रविकुल भूषण नयनागर प्रभु तुवहित हेत पठायो चार।
सभामध्य त्यहिं बल भञ्ज्यो तव करि दल मध्य यथा हरिबार॥
अङ्गद हनुमत सम जाके चर रण बाँकुरे बीर बलवान।
त्यहिकहँ पुनिपुनि नरभाषौ पिय मिथ्या हृदय मानि अभिमान॥
बिना बिचारे पिय रघुपति ते अनहक बैर लिह्यो उपजाय।
काल बिवश कछु मन समुझौना भावी प्रबल जानि नहिं जाय॥
कालदण्ड गहि केहु मारत नहिं हरै बिचार बुद्धि बल धर्म।
मौत जासु ढिग चलि आवत है तुम्हरिहि नायँ होत त्यहि मर्म॥
बाग उजारयो पुरजारयो अरु मारयो उभय सुवन शक नाहिं।
अबहुँ जानकी दै जगपति कहँ पति सुख सुयश लेहु जगमाहिं॥
बचन मँदोदरि के रावण उर लागे बाण सरिस खगराय।
होत सबेरा गो संसदि महँ आसन बैठ गर्ब उरछाय॥
उतै हकीकति असि बीतति भै इतकर हाल सुनौ मनलाय।
राम बोलायो तब अङ्गद कहँ पूँछन लगे हाल मुसकाय॥
जाय बालिसुत उत लङ्का महँ तुमका चरित लख्यो दृगलाय।
भई बतकही कह रावण ते सो तुम हमैं सुनावहु गाय॥
सुनि इमि बानी धनुपानी की बोल्यो बालिसुवन शिरनाय।
प्रभु आयसु लै उत लङ्का महँ जब मैं गयों राम रघुराय॥
पुर बिच रचना अवलोक्यों अस ज्यहि सम इन्द्रलोक है नाहिं।
काह बतावों मैं स्वामी ते शोभा जैसि लङ्कपुर माहिं॥
छहरदिवारी चौगिर्दा ते जगमग होत सुबरण केरि।
किला खिलाअति नभचूमैजनु चख चकचौंधिजात त्यहिहेरि॥
खिंचीं पियारी चित्रसारी जनु बिरची मदन आपने हाथ।

हाट बाट चौहाट घाट सर बिस्तृत बने सोहावन नाथ ॥
बाग बाटिका बन उपबन बर फूले फले भले छबिछाय ।
साज अनूपम ऋतुनायक कर निरखतजात चित्त ललचाय ॥
धवल धाम अभिराम उच्च अति चूमत मनौ लपकि आकास ।
रङ्ग रङ्गके तिन ऊपर बर फहरत ध्वजा पताका खास ॥
रति मद दमनी कल रमनी तहँ बिहरत झुण्ड २ भगवान ।
नरी किन्नरी अमरपरी बर त्यागत जिन्हैं देखि अभिमान ॥
लसैं अदूषण अँग भूषणबर जगमग ज्योति होति परकास ।
रेशमसारी जरतारी शुचि सोहत सुभग दामिनी भास ॥
कछुक दूरिचलिअवलोक्यों पुनि बने विशाल बाजि गजशाल ।
राजि २ गज बाजि बंधे तहँ ऊँचे मेरु शृङ्ग सम आल ॥
बने अगार द्वार सचिघन के जिनकी छटा बरणि नहिं जाय ।
रचे अखारे अति प्यारे बर तहँ पर लरत मल्ल समुदाय ॥
अस शुभ शोभा लखत लङ्क की गयों अशङ्क शत्रु दर्बार ।
अगणित निश्चर तहँ राजत प्रभु इकते एक शूर सर्दार ॥
स्वर्ण सिंहासन पर आसन किये सोहत तहां निशाचर नाथ ।
जाकी शङ्का ते शङ्कित सब दिशिपति आय नवावत माथ ॥
भई बतकही बहु आपुस महँ मैं बहु सीख कही समुझाय ।
एक न मानी अभिमानी शठ वाको लगी काल की बाय ॥
बालिसुवन को सुनि भाषणइमि हँसि असकह्यो रामभगवान ।
यातुधान पति भट रावण वह जाको बल प्रताप जग जान ॥
मुकुट मनोहर त्यहि माथे के तुम क्यहि भाँति चलाये चारि ।
क्यहि बिधि पायो सुत भाषो सो मोकहँ होत आचरज भारि ॥
कह्यो बालिसुत सुनु दायानिधि मुकुट न होयँ भूप गुण चारि ।
साम दाम अरु दण्ड भेद ये नृपउर बसत कहत श्रुति झारि ॥
नीति धर्म के पद चारिहु ये आये प्रभू पास अस जानि ।
काल बिवशभो शठरावण अब सूझन जाहि लाभ अरु हानि ॥

नाथ बिरोधी धर्महीन खल अति मलराशि दुष्ट दशमाथ।
त्यहि हित ताको तजि आयेगुण सुनिये सत्य बचन रघुनाथ॥
परम चतुरता सुनि कानन सों बिहँसे रामचन्द्र भगवान।
औरौ लङ्का को कौतुक पुनि भाष्यो बालिसुवन बलवान॥

इति श्रीभार्गववंशावतंसश्रीमन्मुंशीनवलकिशोरात्मजस्यश्रीमुंशी
प्रयागनारायणस्याज्ञाभिगामीउन्नामप्रदेशान्तर्गतमसवासीग्राम-
निवासीपण्डितबन्दीदीनदीक्षितनिर्मितश्रीविजयराघवखण्डे
लङ्काकाण्डेअङ्गदरावणसम्बादवर्णनोनामतृतीयोल्लासः॥३॥

गिरिजानन्दन पद बन्दनकरि श्रीरघुनन्दन चरण मनाय।
कथा अगारी की प्यारी अब बरणौं यथा बुद्धि व्यवसाय॥
पाय शत्रु के समाचार सब मन्त्रिन ढिग बुलाय रघुराय।
कीनि मन्त्रणा तब सबहिनते करिये कह उपाय अब भाय॥
चारि दुआरे बङ्क लङ्क के क्यहि बिधि नांघिय करहु बिचार।
सुनि इमि सम्मत शुचि स्वामी को शोचनलगे सकल सर्दार॥
बीर बिभीषण कपिनायक अरु मन्त्री जामवन्त मतिमान।
सुमिरि राम के पद पङ्कज उर सम्मत सुष्ठु कीन तिन ठान॥
चारि अनी करि कपिसैना की नायक नियत प्रबल कपि कीन।
बोलि यूथकन कहँ शिक्षा दै टुकरी बांटि यथावत दीन॥
चारि बीर गे पुर दक्षिण दिशि द्विविद मयन्द और नलनील।
कुमुद केशरी अरु तारासुत दधिमुख दिशि पछाहँ बलशील॥
पूरुब द्वारे पर गवाक्ष अरु पनस सुषेण बीर कपिराज।
उत्तर द्वारे पर भल्लुकपति औ हनुमान लषण रघुराज॥
प्रभु प्रताप कहि समुझाये सब सुनि कपि चले मारि किलकार।
सिंह गर्जना करि गर्जे तब करि करि प्रलयकार चिग्घार॥
प्रभुपद नावैं शिर हर्षितह्वै गहि गहि शिखर बृक्ष कर माहिं।
देर न लावैं त्वरधावैं सब शङ्का जिन्हैं कालकी नाहिं॥
जानत लङ्का अति दुर्गम तउ कोशलनाथ केर बल पाय।

चले अशङ्का कपि बङ्का सब गजदल माहिं सिंह जसजाय ॥
घटाटोप करि चौगिर्दा ते चारिहु द्वार लङ्क के घेरि ।
जय जय भाषैं रघुनायक की मुखहि निशान बजावैं भेरि ॥
भयो कोलाहल बहु लङ्का महँ पायो जानि हाल दशभाल ।
सेन बुलाई निशिचारिन की गर्वित लाग बजावन गाल ॥
लखौ ढिठाई इन दुष्टनकी बन्नर जाति महा बदकार ।
आय गरांस्यो मम लङ्कापुर चाहत होन काल आहार ॥
जाहु चारिहू दिशि योधा सब धरि धरि खाहु कीश अरु भालु ।
शङ्क न मानी इन दुष्टन कछु लायो इन्हैं घेरि कै कालु ॥
अट्टहासकरि शठ बोल्यो अस घर बैठे अहार बिधि दीन ।
गर्ब दशाननको गिरिजा अस सोवत यथा उतान टिटीन ॥
उर असठानत अनुमानत सो यदि कहुँ गिरै फाटि आकास ।
अपनेहिं पाँयन पर रोंकनहम तस दशमाथ दुष्ट को हास ॥
चले निशाचर लै आयसु तव तीखे अस्त्र शस्त्र गहि हाथ ।
बीर महोदर अरु त्रिशिरालै गयो प्रहस्त पूर्ब दल साथ ॥
तीनि सुभट गे दिशि दक्षिण कहँ दुर्मुख कुमुख बीर मकराक्ष ।
मेघनाद अतिकाय अनीये पश्चिम चले काछि भटकाछ ॥
उत्तर द्वारे पर रावण शठ औरो मुख्य मुख्य बलवान ।
गर्जत धाये अस्त्र शस्त्र लै करिकै महाघोर घमसान ॥
गहे धनुष शर कर कोऊ भट कोऊ भिन्दिपाल असि ढाल ।
तोमर मुदगर कर धारे कोउ भयकर गात मनहुँ खल काल ॥
शक्ति बिराजै कोहु हाथे महँ कोहु कर नागफांस बिधिपाश ।
गहे कुल्हाड़ा अरु त्रिशूलकोउ उछलत चले हृदय जय आश ॥
चले असंख्यन भट या बिधि ते पावस मेघन की अनुहारि ।
करत दोहाई दशकन्धर की गर्जत उच्च स्वरन हहकारि ॥
लाले पत्थर के टुकड़ा लखि आमिष जानि यथा खग जाल ।
शोच न लावैं उठि धावैं खल करत न चोंच भङ्ग दुख ख्याल ॥

त्यहि प्रकारते निशिचारी सब कपि दल ओर चले हहकारि ।
नाश न आपन मन जानत खल भावी कठिन होत उरगारि ॥
नाना आयुध धरि हाथे महँ अगणित यातुधान बलबीर ।
चढ़े किला के कंगूरन पर मानहुँ मेरु शृङ्ग घन भीर ॥
मारू बाजा बाजन लागे दुन्दुभि शंख घण्ट करनाल ।
झांझ पखावज अरु तुरही बर मौहरि रुद्र बीन करताल ॥
ढोल नफ़ीरी डफ ढक्का अरु स्वर बाँसुरी केर रहे छाय ।
बजैं हजारन अरु बाजा बहु तिन के नाम कहै को गाय ॥
रण तजि कायर भागन लागे शूरन हृदय भई उतसाह ।
इतै बँदरवा उत निश्चर गण जयजयकार करत खगनाह ॥
अति बिशाल तन कपि भल्लुक सब धावैं गनैं न औघटघाट ।
फोरि फोरिकै अति दीरघ गिरि क्षण महँ करैं सुहावनि बाट ॥
रिसबश गर्जैं अरु तर्जैं बहु दशनन डारैं ओंठ चबाय ।
कटकटाय कै भट कोटिन कपि धावैं हृदय सुमिरि रघुराय ॥
शिखर पर्वतन के करमा लै राकस देहिं उपरते डारि ।
कूदि बँदरवा कर गहिकै सो मारैं ताकि ताकि निशिचारि ॥
पाउँ पकरिकै निशिचारिन कहँ लेहिं घसीटि कीश बरियार ।
मीजैं धरती महँ आछी बिधि भागैं फेरि मारि किलकार ॥
अतिशै चञ्चल बलवन्ता कपि प्रबल प्रताप रामके दास ।
मारि कुदक्का गढ़ऊपर चढ़ि अगणित यातुधान किये नास ॥
चढ़े अटनपर कपि भल्लुक तब जहँ तहँ करत राम गुणगान ।
शङ्क न आनत कछु हिरदै महँ अतिशै बङ्क बयस के ज्वान ॥
इक इक निश्चर गहि इक इक कपि गढ़ ऊपरते चले पराय ।
अपना ऊपर तर निश्चर करि महिमहँ गिरैं आय भहराय ॥
यहि बिधि निश्चर संहारे बहु बँदरन मर्दि गर्दि हरियान ।
भागी सैना तब रावण की प्राण निदान काल अनुमान ॥
प्रबल बयारी के डोले जस देर न लगै मेघ भगिजायँ ।

तैसे भागे निशिचारी सब अड़े न क्यहू बीर के पायँ ॥
ब्याप्यो पुरमहँ खलभल्ला बहु रोवैं दुखी बाल अरु नारि।
गारी दै दै दशकन्धर को बहु दुर्बचन कहैं सब झारि॥
आछी बिधिते सुख भोगत खल लङ्का करत अकण्टकराज।
मृत्यु हँकारी कुबिचारी ने मरै न परै दुष्ट पर गाज॥
भगो आपनो दल कानन सुनि उर रिसिआय निशाचरराय।
बानि करेरी कहिटेरी तब अति अभिमान हृदै महँ लाय॥
जो कोउ भाग्यो रणसन्मुख ते मैं सुनि लिह्यों आपने कान।
ताको मरिहौं मैं अपने कर इतना बचन करो परमान॥
नाना सुखकरि अरु सर्बसभखि सब दिन चैनकीनि सब कोय।
भगे आजही दुख आये पर कोउ न समर सामुहें होय॥
उग्रबचन सुनि लङ्कापति के हृदय डरान सकल बलवान।
लौटे तुरतै मन लज्जित ह्वै प्रान पयान लीन अनुमान॥
शत्रु सामुहें रण महँ जूझब शोभा यही बीर की आय।
अस बिचारि कै जिन बीरन ने दीन्ह्यों प्राण लोभ बिसराय॥
तीषे आयुध धरि हाथे में आये समर मध्य बलधाम।
भिरे हाँकदै इक एकन सों लाग्यो होन घोर संग्राम॥
पैने बानन तन बेधन करि कोऊ गदा चोट हनि भाय।
ब्याकुल कीन्हे कपि भल्लुक सब अगणित घाय दीन तनताय॥
परम भयातुर कपि भागे तब आगे यदपि जीति हैं फेरि।
कहाँ पवनसुत अरु अङ्गद कहँ कहँ नल नील कहैं सब टेरि॥
कहाँ द्विबिद अरु कपिनायक कहँ यहि क्षण कोउ न होत सहाय।
मारु कठिन है निशिचारिन की अबना अड़त समर महँ पायँ॥
निजदल बिचलत सुन्यो पवनसुत पश्चिम द्वार रहा बलवान।
करै लराई तहँ रावणसुत माच्यो महाघोर घमसान॥
हटै न मुर्चा क्यहु योधा का एकते एक शूर शिरताज।
जैसे हनुमत घननादहु तस कोउन आव लरन ते बाज॥

मन रिसिआन्यो हनुमन्ता तब गर्ज्यो प्रलयकाल सम ज्वान।
चढ़ि भट बङ्का गढ़ लङ्कापर लीन्ह्यों हाथ मेरु यक तान॥
रावणसुत पर लैधायो सो करते तरकि चलायो भाय।
सहित सारथी रथ भञ्ज्यो त्यहि मार्यो लात घात रिसिआय॥
गिर्यो धड़ाका सो धरती पर मुर्छित पर्यो महा भँवखाय।
सारथि दुसरे लखि व्याकुल त्यहि रथधरि घरै दीन पहुँचाय॥
तौलौ अङ्गद सुनि पायो यह गढ़पर गो अकेल हनुमान।
मारि कुदक्का चढ़ि आपहु तब पहुँच्यो तहाँ जाय बलवान॥
युद्ध बिरुद्धे द्वउ बन्दर भट राम प्रताप सुमिरि उरमाहिं।
गे चढ़ि रावण के मन्दिर पर अवध अधीश दोहाई खाहिं॥
भवनढहावहिं सब कलशनसह लखि भयभीत होहिं निशिचारि।
आये द्वउ कपि उतपाती ये छाती पीटि कहत इमि नारि॥
तिन्हैं डेरावैं कपिलीला करि रघुपति सुयश सुनावैं टेरि।
कञ्चनखम्भा गहि हाथे महँ लागे करन उपद्रव फेरि॥
निश्चर सैना महँ कूदे पुनि अङ्गद हनूमान द्वउ ज्वान।
भुजबल मर्दत महि असुरनगहि इकते एक अधिक बलवान॥
लात घातते परिहारैं केहु काहू हनैं चपेटन मारि।
भज्यो न रामहिं सुखधामहिं सो फल यह लेहु दुष्ट कुबिचारि॥
इक के ऊपर इक मर्दैं धरि तोरि मिरोरि चलावहिं मुण्ड।
रावण आगे ते पातित ह्वै फूटैं मनहुँ दही के कुण्ड॥
मुखिया बीरन के पायँन गहि फेंकैं प्रभू पास सहुलास।
तिन्हैं बिभीषण बतलावैं कहि प्रभु निजधाम देहिं अनयास॥
दुष्ट द्विजामिष के भोगी जे पापै करत जिन्हैं दिनजात।
ते गति पावत जो याँचतमुनि दाहत जौन योगमहँ गात॥
राम दयानिधि अति कोमल चित यह हियमाहिं करत अनुमान।
बैर भाव ते ध्यावहिं निश्चर ये सुमिरत हिये माहिं धरि ध्यान॥
देहिं परमगति असबिचारि उर को प्रभु सरिस दया को भौन।

भजैं न भ्रमतजि जो ऐसो प्रभु तासम मन्दबुद्धि अरु कौन ॥
अङ्गद हनुमत गढ़ भीतर गे बारहिं बार कहैं असराम।
द्वउकपि सोहैं इमिलङ्का महँ उपमा सुनो तासु मतिधाम ॥
मथैं समुन्दर दुइ मन्दर जस सोहत तथा युगल बलवान।
लखैं तमाशा सब देउता गण कौतुक कहि न जाय हरियान ॥
भुजबल रिपुदल को मर्दन करि पुनि करि दिवस अन्त अनुमान।
कूदि तहाँ ते द्वउ मर्कट भट आये जहाँ राम भगवान ॥
माथ नवाये प्रभु पायँन महँ अति आदर्यो दयानिधि राम।
कृपादृष्टिसों द्वउ दिशि देख्यो भे श्रमरहित युगल बलधाम ॥
हनुमताङ्गदहि गये जानिकै लौटे भालु कीश भट भारि।
लहि प्रदोष बल निशिचारी सब धाये अस्त्र शस्त्र बहु धारि ॥
निश्चर सैना लखि लौटे कपि लै लै कुधरखण्ड तरु पानि।
दन्त कटकटा करि भिरिगे सब लागे लरन बीर बलखानि ॥
हारि न मानत कोउ कौनिउँ बिधि सब के मारु २ रट लागि।
प्राण आसरा तिन त्यागे तब लरत उछाहसहित भय त्यागि ॥
बीर निशाचर अति कारे सब भारे महा भयङ्कर गात।
नाना रङ्गन के बन्दर भट अद्भुत छटा बरणि नहिं जात ॥
दोऊ दलके बल योधा सम बिबिध प्रकार भिरत रिसिआय।
मनहुँ शरद अरु ऋतु पावस के मेघा लरत पवन बश धाय ॥
घात चपेटन अरु लातन की हानि हानि भालु कीश बरियार।
अगणित निश्चर संहारत अरु डारत मर्दि धरा की क्षार ॥
भागी सेना तब असुरन की मुर्चा छाँड़ि छाँड़ि हरियान।
अनी अकम्पन अतिकाया तब माया करन लाग निर्मान ॥
क्षणौ न बीत्यो रण बसुधा महँ छायो महा सघन अँधियार।
हाथ पसारा नहिं सूझत दृग बर्सत रुधिर उपल बहु क्षार ॥
कोऊ काहू को देखत नहिं मुख ते मारु मारु बर्रायँ।
रीछ बँदरवा अकुलाने तब निश्चर छली जीति नहिं जायँ ॥

मर्म जानि लिय रघुनायक यह बन्दर भालु सुभट अकुलान।
बालिसुवन अरु पवनपुत्र कहँ लीन बोलाय तुरत भगवान॥
कहि समुझायो समाचार सब धाये उभै कीश मृगराज।
झुराड बटेरन को देखत जिमि धावैं महा मुदित ह्वै बाज॥
चाप आपनो लै राघव पुनि कान प्रयंत तानि सविधान।
पावक शायक संधान्यो तब फर फर चल्यो प्रज्वलित बान॥
मिट्यो अँधेरा इक क्षनहीं महँ भान समान भयो परकाश।
ज्ञान उदय ते भ्रम भागै जिमि तिमि भो अन्धकार को नाश॥
देखि उजेरा कपि भल्लुक भट धाये कोपि बिगत श्रम त्रास।
कुधर खराड औ अति बिशाल तरु करमहँ तानि २ अनयास॥
अङ्गद हनुमत की हाँकै सुनि आवत देखि प्रबल बलवान।
भगे निशाचर तजि संगर महि लै लै दुष्ट आपने प्रान॥
भागत पटकैं भट धरणी गहि बरणी दशा जात सो नाहिं।
अद्भुत करणी कपि ठानत जो वहिक्षन उमा समर महि माहिं॥
पद गहि डारैं पुनि बारिधि महँ धरि २ खाहिं मकर झषब्याल।
मारु प्रबल लखि भट कीशन की भे सब यातुधान बेहाल॥
भागे गढ़ तन रन त्यागे कछु कछु महि परे खाय तन घाय।
जौन शूरमा सन्मुख जूझै त्यहि का इन्द्र परी लै जाय॥
गर्जे तर्जे तब भल्लुक कपि रिपुदल सकल दीन बिचलाय।
निशा जानिकै कपि चारिहु दल आये जहां राम रघुराय॥
दयादृष्टि सों अवलोक्यो प्रभु रणश्रम भयो तुरन्तहि दूरि।
निज निज अस्थल महँ आनँदयुत सोये सबै बीर सुख पूरि॥
इतै हकीकति अस बीतति भै उत को श्रवण करौ अब हाल।
भगी जानिकै निज सैना को अतिशै क्रोध कीन दशभाल॥
बोलि तुरन्तै तब मन्त्रिन कहँ लाग्यो गर्व सहित बतलान।
प्रथम सुनायसि समाचार कहि मारे गये जितक बलवान॥
कपिन सँहारा मम आधा दल यह कछु चरित जानि नाजाय।

प्रबल काल सम ये योधा मम तिनकहँ हनत क्षुद्र कपि हाय ॥
यतन बतावहु अबयाकी कहि यावत इत प्रधान मतिमान।
सुनि दशआनन को भाषण इमि शोचनलगे सबै करिध्यान ॥
बुढ़वा निश्चर मालवन्त इक नाना लगै दशानन क्यार।
बचन नीतियुत वह बोला तब सुनिये तात कहब कुछम्वार ॥
जबते सीता हरिलायो तुम अशकुन अमित होत दिन राति।
जाको गावत यश पुराण श्रुति तासु बिरोध कुशल केहिभांति ॥
बन्धुसहित हति कनककैन कहँ मधुकैटभ समान बलवान।
मारयोज्यहिं महि तनधारयो त्यहिं सुरहित कृपासिन्धु भगवान ॥
कालरूप खलदल भञ्जन कर निर्गुण ब्रह्म निरञ्जन जोय।
सेवत जाके पग शंकर अज ताके बैर खैर किमि होय ॥
देहु जानकी रघुनन्दन कहँ आपन भलाजानि दशभाल।
लायजानकी हित चीन्ह्यों कहँ कीन्ह्यों प्रान जानकी काल॥
अबहुँ तुम्हारो कछु बिगरोना मानहुँ कही बात ममतात।
सिया सौंपि कै रघुनायक कहँ सेवहु चरण कमल सुखदात ॥
उत्तम शिक्षा इमि बुढ़वा की बानसमान दुष्ट कहँ लागि।
दांत पीसि कै त्यहि औसर पर बोला गर्ब सहित रिसपागि ॥
निसरु अभागे मम संसदिते मुखमहँ मसि लगाय यहि काल।
अबन दिखाये मुख मोको खल लीन्ह्यों जानि तोरहू हाल ॥
बूढ़ जानिकै शठ छांड़तहौं नातरु अबहिं करत बिन प्रान।
सुनि इमि बानी अभिमानी की किय अस मालवन्त अनुमान ॥
मारन चाहत यहि राघव अब होवा चहत कालबश हाल।
याते हितकी यहि सूझत नहिं शठ बिन काज बजावत गाल ॥
गयो तुरन्तै उठि संसदि ते बोल्यो तब सकोप घननाद।
रञ्च न संशय उर आनहुँ पितु सुनि मम बचन गहहु अहलाद ॥
लख्यो सबेरे अब संगर मम करिहौं बहुत कहतहौं थोर।
मारि बापुरे बनचारिन कहँ लावौं तपिन बांधि बरजोर ॥

परा आसरा कछु हिरदैमहँ सुनि सुतबचन सहित अभिमान ।
प्रीति सहित त्यहि लै कनियाँमहँ कीन्ह्यसि बहुप्रकार सन्मान ॥
भयो सवेरा अनुमानत इमि तोलौ भालु कीश भटझारि ।
द्वार चारिहू अनुरोधन करि लागे शोरकरन किलकारि ॥
भयो कोलाहल अति लङ्कामहँ कीशन घेरिलीन गढ़आय ।
धाये निश्चर बहु आयुध गहि आये जहाँ कीश समुदाय ॥
शिखर अनेकन गढ़ ऊपर ते दीन ढहाय कपिन पर भाय ।
गोले ओले सम बरसे पुनि तोप लगाय सैन समुहाय ॥
घहरत फहरत ते अम्बर महँ अपन पराय सुनिय नहिं कान ।
प्रलय काल के जनु गर्जत घन तर्जत बज्रपात अनुमान ॥
अतिशै मर्कट भट मर्कट सब बलकरि जुटत कटत नहिं एक ।
झाँझर ह्वैगे तन सबही के तऊ न भजत तजत रणटेक ॥
निश्चर ढाहत जिन शैलन कहँ गढ़ते कपिसमूहपर भाय ।
ऊपर फेंकत कपि गहि २ सो निश्चर मरत खाय तनघाय ॥
मेघनाद अस सुनि पायो पुनि लेंकादुर्ग बँदरवन आय ।
उतर किलाते ततकालहि तब कपि दल सन्मुख चलाबजाय ॥
आय सामुहें ललकारेसि तब कहँ कोशलाधीश द्वउभाय ।
बड़े धनुर्धर जग जाहिर जे तिनकी लखौं आजु मनुसाय ॥
कहाँ नीलनल कपिनायक खल कहँ युवराज द्विविद हनुमान ।
निजनिज बिक्रम दिखलावहिं स्वहिं हरिहौं आजु सबनकेप्रान ॥
बन्धु बिरोधी अति कायर वह जाको कहत बिभीषण नाम ।
अहै कहां शठ हठि मारौं वहि निमकहराम बाम बे काम ॥
कहँ वह बुढ़वा है भल्लुकपति नाचत जासु शीश पर काल ।
समर सामुहें अब आवत किन अबलगि रहे बजावत गाल ॥
अस कहि धन्वा गहि हाथे महँ कानन तलक तानि गुनज्वान ।
बान असंख्यन संधानत भो फरफर चले दिपत जनुभान ॥
जनु सपक्षह्वै अहि धाये बहु दश दिशि महि अकाशगे छाय ।

रत देखि अहि कपिभल्लुकगण हियभयखाय उठेअकुलाय॥
भये न सन्मुख त्यहि औसर पर भागे युद्ध छांड़ि सब बीर।
दशा कहै को त्यहि समया की भये अधीर त्यागि सब धीर॥
सो कपि भालु न लख्यो समरमहँ जाहि न कीन प्रान अवसान।
भूलि बीरता गै बीरन की भा अति कठिन बचाउब प्रान॥
मारेसि दश दश शर हिरदै महँ मूर्च्छित परे भूमि सब बीर।
सिंह गर्जना करि गर्जा तब अतिशै मेघनाद रण धीर॥
देखि आपनो दल बिह्वल तब पवनकुमार बीर बरियार।
काल सरिस रिस करि धायो तब लैकर यक पहार बड़भार॥
सो तकि मार्‌यो मेघनाद पर ताकर चरित सुनौ हरियान।
अपने ऊपर गिरि आवत लखि उड़ि सो गगन माहिं प्रगटान॥
सहित सारथी रथ घोड़े सब चूरण भये मेरु की घात।
बचा दुलारा दशआनन का जो बड़ बली जगत बिख्यात॥

स०। बारहिं बार प्रचारत ताहि कुमार प्रभञ्जन को अति बङ्का।
जानत जाहि अपारबली ज्यहि छारकरी सगरी दहि लङ्का॥
पास न आवत सो नभ धावत लावतहै अतिही उर शङ्का।
राम समीप गयो तबहीं दुर्बाद सुनावत छावत हङ्का॥

बहुतक आयुध बर्साये तहँ दिय महि अस्त्र शस्त्र सों छाय।
अनायासही प्रभु काटे सब लखि बल मूढ़ गयो खिसिआय॥
लाग्यो करिबे छल माया तब जानत नहीं राम परभाव।
करै गरुड़सन जस कौतुक कोउ लैकर स्वल्प सांप डरपाव॥
अतिशै प्रबला ज्यहि माया बश शिव ब्रह्मादि सकल संसार।
ताहि देखावत शठ निश्चर इमि अपनो कपट केर ब्यापार॥
कबहुँ अज्ञ सो नभ ऊपर चढ़ि बरसै बिपुल ज्वलित अङ्गार।
कबहुँ धरातल महँ प्रगटै खल अति हहकारसहित जलधार॥
बिबिध भांति के तन धारे बहु भूत पिशाच प्रेत बैताल।
मारु २ धुनि उच्चारत मुख नचत बजाय गाल करताल॥

पीवत शोणित चामुण्डा गण पहिरे उर कपाल की माल ।
उछलत कूदत किलकारत बहु दशा सो कहि न जाय खलपाल ॥
कबहूं बरसे कच हाड़न को कबहूं रुधिर स्रवै झरिलाय ।
कबहूं पाथर बरसावै शठ मुखते मारु मारु बर्राय ॥
किहेसि अँधेरा दिशि चारिउ महँ नभते धूरि भूरि बरसाय ।
हाथ पसारा निज सूझै ना कहँ लग कहै कथा कोउ गाय ॥
देखि निशाचरकी माया इमि बन्दर भालु गये अकुलाय ।
उर भय आनत अनुमानत अस सबकर मरन बनो अब आय ॥
देखि तमाशा सो बिहँसे प्रभु जान्यो कीश भालु घबड़ान ।
पावक शायक संधान्यो तब श्रवण प्रयन्त शरासन तान ॥
एकहि शरसों हरि माया सब कीन्हों चहूं ओर उजियार ।
भानु उदयते द्युतिभासै जिमि नासै महासघन अँधियार ॥
आयसु लैके तब स्वामी ते अङ्गद आदि बीर लै साथ ।
चले सुमित्रा सुत क्रोधित ह्वै लै शर चाप हाथ कटि भाथ ॥
नैनन छाई अरुणाई भलि फर्कत भुज बिशाल खगपाल ।
शरद चन्द्रमा सम दीपत मुख रिस बश कछुक ह्वैरह्यो लाल ॥
छयो बीररस अँग अङ्गन महँ शोभा कहि न जाय कछु भाय ।
सजे शूरता को बाना जनु खेलन युद्ध बीररस जाय ॥
इतै हकीकति अस बीतति भै अब उत सुनौ लङ्क को हाल ।
अगणित बीरन को अज्ञा दै पठयो समर हेत दशभाल ॥
साज साजिगे ते शूरन कर लरिबे हेत भये तय्यार ।
झीलम बखतर तन धारन करि बाँधे घने घने हथियार ॥
छुरी कटारी तरवारी कर लै लै चले असंख्यन ज्वान ।
भाला आला कर कोऊ लै रण को करत भये प्रस्थान ॥
गदा भ्रमावत कोउ आवत है भावत मनहुँ भयङ्कर काल ।
लिये दुधारा कोउ हाथे महँ कम्मर कसे गैंड़ की ढाल ॥
इतै भालु कपि भट भारी सब लीन्हें शिला शृङ्ग तरु हाथ ।

देर न लाये चलि आये रण भाषत जयति राम रघुनाथ ॥
जोरी जोरी सों भिरनी भै इत उत जीति आश नहिं थोरि।
युद्ध अपूरब त्यहि औसर कर बर्णत सकुच करत मति मोरि ॥
मुठिकन लातन हनि गातन महँ बन्दर भालु करत किलकार।
दांतन काटत नख पाटत क्षत मारत तरु पहार करिवार ॥
भुजा उखारत शिर फारत हति धरु २ मारु २ धुनि छाय।
शब्द समान्यो नवखण्डन महँ अद्भुत चरित कहै किमि गाय ॥
रुण्डन मुण्डन सों तोपी महि शोणित सरित रही उमड़ाय।
रुण्ड प्रचण्ड दशौ दिशि धावत मुखते मारु मारु रटलाय ॥
जमिगो शोणित भरि कुण्डन महँ ऊपर रजउड़ाय इमि भाय।
बहु अङ्गारन के ढेरन पर मानहुँ चिता क्षार रहि छाय ॥
सोहैं घायल भट कैसे तहँ बिकसे तरु पलास जनु आहिं।
बानर असुरन को संगर अस देउता लखत खड़े नभ माहिं ॥
मेघनाद अरु भटलक्ष्मण द्वउ करि अति क्रोध परस्पर हाँकि।
भिरैं न पछरैं कोउ काहू सों एकहि एक लीन बल आँकि ॥
जीति सकैना कोउ काहू को छल बल बहुत करै घननाद।
तबहिं सुमित्रासुत कोपे रण कीन्ह्यों सरथ सारथी बाद ॥
हने बिशिख शर घननादहु उर राकस भयो प्रान अवसान।
तब इमि मन महँ अनुमानतभो संकटभये हरिहि मम प्रान ॥
अस बिचार करि खल राकस ने छाँड़ी बीरघातिनी साँगि।
होत न निष्फल ब्रह्मदत्त सों तेज समूह लषण उर लागि ॥
भये मूर्छित अहिनायक तब बिह्वल गिरे धरातल माहिं।
सो गति देखत सुर बृन्दन के धीरज रह्यो हृदय में नाहिं ॥
भये अचेतन अहिनायक जब खाय प्रचण्ड शक्ति को घाव।
हाल जानिकै यह रावणसुत शठ भय छाँड़ि पास चलिआव ॥
लग्यो उठावन धराधरन कहँ करि बल अप्रमान हरियान।
उठे न जब तब अरु निश्चर बहु लीन बोलाय हाँकदै ज्वान ॥

कोटिन योधा मेघनाद सम रहे उठाय अनन्तहि भाय ।
उठै कौन बिधि सो बसुधाधर भागे मूढ़ सकल खिसिआय ॥
गिरिजा जिनकी क्रोधागिनि महँ चौदह भुवन जरैं पल माहिं ।
जीति सकै को तिन्हैं समर महँ सेवत देव नाग नर जाहिं ॥
जानत वोई जन कौतुक यह जिनपर कृपा राम की होय ।
राम कृपाबिन गूढ़ाशय यह जानि न सकै कोटि बिधि कोय ॥
लौटीं सैना दुउ अस्थल कहँ संध्या समय जानि खगराय ।
लगे सँभारन तब निज निज भट ताकर हाल सुनौ मनलाय ॥
लख्यो न लक्ष्मण कहँ राघव जब पूछ्यो सब सेनपन बोलाय ।
तौ लगि आयो लै अञ्जनिसुत मुर्छित दशा माहिं अहिराय ॥
देखि मूर्छित प्रिय बन्धव कहँ अतिशै दुखी भये रघुराय ।
दशा कहै को त्यहि औसर की नैनन गयो प्रेम जल छाय ॥
तब समुझायो जामवन्त ने सुनिये दीनबन्धु भगवान ।
बैद सुखेना रह लङ्का महँ प्रभु पद भक्त महा मतिमान ॥
काहू योधा को पठइय तहँ लावै बोलि तुरन्तै साथ ।
बोलि तड़ाका हनुमन्तै तब आज्ञा दई राम रघुनाथ ॥
छोट रूप धरि हनुमन्ता तब पहुँच्यो तुरत लङ्क महँ जाय ।
त्यहि उठाय कै सह मन्दिर के लायो जहाँ राम रघुराय ॥
जागि सुखेना त्यहि औसर तब प्रभुपद माथ नवायो आय ।
गही नाटिका पुनि लक्ष्मणकी लाग्यो लखन हाल लव लाय ॥
दशा देखि कै अहिनायक की कह्यो सुखेन बैद पछिताय ।
लग्यो कठिन क्षत श्रीलक्ष्मण के सुनिये रमारमण रघुराय ॥
बैद सुखेना की बाणी सुनि श्रीरघुराय उठे अकुलाय ।
तबहिं सुखेना लखि सेनादिशि सबसन कहन लग्यो समुझाय ॥
अबलग सेवा रघुनन्दन की तन मन लाय किह्यो सब कोय ।
अब याहि औसर पर यहिते बढ़ि दूसरि टहल और नहिं होय ॥
उदै न होवैं रबि जौलौं इत तौलगि गन्धमादनहिं जाय ।

को लैआवै संजीवनि को हमसन कहै तौन समुझाय ॥
आपन आपन बल भाषौ सब करौ न राम काम महँ देर।
थोरा अवसर अब बाकी है पौरुष करौ त्यागि अवसेर ॥
यहि क्षण पौरुष दिखरैहौना तौ सब बनी बात गै खोय।
राम न पैहैं पुनि लक्ष्मण का आगे होनहार सो होय ॥
बैद सुखेना की बानी सुनि शोचन लगे सकल बलवान।
हाथ जोरिकै नल भाष्यो तब सुनिये दीनबन्धु भगवान ॥
तीन राति बसि लै आवौं मैं बूटी गन्धमादनहिं जाय।
यहिते बढ़िकै बल मोमें नहिं आपन पौरुष दीन बताय ॥
बिन्द कुबिन्दा कपि बोले पुनि द्वै निशि बीचमाहिं करिबास।
आय सकित है हम तिसरे दिन सुनिये रमारमण सुखरास ॥
बोले कपिपति तब औसर त्यहि बसि इकराति सकौं मैं लाय।
यहिते अधिकी मम पौरुष नहिं सुनिये दीनबन्धु रघुराय ॥
सभामध्य तब उठि अङ्गद भट बोल्यो पैज खैंचि यह बात।
कालिह दुपहरी लग लाऊं मैं जाऊं होय जो आयसु तात ॥
बीर बानरन को भाषण सुनि भो बहु शोच राम उर माहिं।
कल दृग जल सों परिपूरित भे बरणी दशा जात सो नाहिं ॥
भई निराशा सब काहू को लक्ष्मण जियन माहिं खगराय।
कही सुखेना दुख नाशै को है बहु पन्थ दूरि को भाय ॥
व्याकुल ह्वै कै तब सीतापति बोले हनूमान दिशि हेरि।
होहु सहायक यहि कुसमै महँ अञ्जनिसुवन बिनै सुनि मेरि ॥

स०। रुद्रऽवतार कहैं सब तोहिं समीरकुमार समीर सो बङ्का।
सिन्धु अपार उलङ्घन कै तुम राकस मारि किह्यो अहतङ्का ॥
बाग उजारि निहारि सिया जिमि लङ्कहि जारि हर्यो सब शङ्का।
लाय सजीवनि भाय जिआय त्यों बीर मिटाय दे मोर कलङ्का १
भानु अकाश पिता दिविवास सो जाउँ कहाँ क्यहिपास बताय दे।
डूबत है मँझ धार में नाव अहो कपिराव सो पार लगाय दे ॥

कोउ न या समया में, सहायक कै बल या बिरहागि बुझाय दे ।
हे हनुमन्त अनन्त बली अब लाय बुटी मम भाय जिआय दे ॥२॥

करुणा बाणी सुनि राघव की बोले धीर वीर हनुमान ।
धीरज धारिय रघुनन्दन मन सुनि मम बचन मानि परमान ॥

क० । धीर जनि त्यागौ धीरधुरि के धरनहार राउर कृपा ते सब कारज बनाइ हौं । धाइ हौं उताल हाल लंघि कै समुद्र क्षुद्र मेरुपर जाय खोज मूरि को लगाइ हौं ॥ पाइहौं न जोपै पहिंचानि बन्दि औषधि को तानि कै कमान सो सुजान पै उठाइहौं । रैनिहीं में आइहौं बिलम्ब ना लगाइहौं सजीवनि लयाइहौं अनन्तहि जिवाइहौं ॥

कौन कठिनता है या महँ प्रभु जासे आप रहे घबड़ाय ।
लक्ष्मण जीहैं ज्यहि उपाय ते करिहौं स्वई राम रघुराय ॥
मथ्यो जहाँ पर सुर दानव मिलि क्षीरसमुद्र जाय त्यहि ठाम ।
मथि लै आऊँ वहि अमृत कहँ आयसु होय सन्तसुखधाम ॥
ना तरु सुरपुर को जाऊँ चलि रोकौं बाट देवतन केरि ।
सीधे अमृत दे देवहिं नतु मारौं एक एक कहँ घेरि ॥
सात पतालन लगिजाऊँ चलि लाऊँ अमी अहिन ते छीनि ।
पकरि निचोवौं कहो चन्दा को मैं अस युक्ति हृदय धरिलीनि ॥
मेरु सुखेना बतलायो जो सो अस जानि परत म्वहिं नाथ ।
धरा यही थल कछु अन्तर नहिं हाजिर करौं बात के साथ ॥
जातन अबहीं निशि अधकी प्रभु लावौं चारि घरी महँ धाय ।
चिन्ता लक्ष्मण की करिये जनि धरिये धीर हृदय रघुराय ॥
आयसु पावौं तो जावौं मैं अबहीं उर उछाह उपजाय ।
सुनि अस बानी कपिकुञ्जरकी आनी धीर कछुक रघुराय ॥
लोचन खोले पुनि बोले अस हे सुत अब बिलम्ब जनिलाउ ।
प्राण दानदे भट लक्ष्मण कहँ यहि क्षन अपन ओज दिखराउ ॥
यहि बिधि आयसु सुनि रघुपति को उठे तड़ाक तड़पि हनुमान ।
देह भयंकर भै पर्वत सम भारी भुजा लाग असमान ॥

माथ नवायो प्रभु पायँन महँ कीन्ह्यों चलन हेत अनुमान।
तत्क्षण राघव प्रभु भाष्यो अस करिये बचन बीर मम कान॥
तुम्हरे गमनत सुधि आई त्वहिं सो संदेश सुनौ मन लाय।
नगर अयोध्या ह्वै जैहो तुम जहँ पर रहत भरत मम भाय॥
जात इतै ते मिल्यो न तिन कहँ ना कछु कह्यो समर को हाल।
नतरु अयोध्या महँ होई दुख रोई प्रजा वृद्ध औ बाल॥
होयँ दुखारी महतारी सब भारी बिपति जाय पुरछाय।
उत ते बूटी लै लौट्यो जब तब सब हाल कह्यो समुझाय॥
कुशल प्रश्न लै पुनि आयो इत सबहि बुझाय धीर धरवाय।
सुनि अस आयसु महराजा को हनुमत चले चरण शिरनाय॥
इतै हकीकति अस बीतति भै उतकर हाल सुनौ मनलाय।
चर चलिआयो दश आनन ढिग औ सब बृत्त दयो बतलाय॥
हाल पाय सो चलि आयो तहँ जहँ रह कालनेमि निशिचारि।
लियो सहादर त्यहि राकस ने तब त्यहिं कथा कही सब झारि॥
धुनि शिर बोल्यो कालनेमि तब स्वामी कहा करहु मम कान।
तुम्हरे देखत पुर जार्यो ज्यहिं मार्यो अछय आदि बलवान॥
पन्थ रोकइया जग ताको को इतना हृदय लेहु अनुमानि।
दुष्टनिकन्दन रघुनन्दन को भजि यह तजौ मोह की बानि॥
भला तुम्हारो है याही महँ लेहु बिचारि हृदय मतिमान।
काल ब्यालकर है भक्षक जो तासु बिरोध नहीं कल्यान॥
सुनि सिख कोप्यो दशकन्धर खल लाग्यो कहन ताहि दुर्बाद।
तब वहिं शोच्यो मन अपने महँ भो यह काल विवश मनुजाद॥
राम दूत कर है मरना भल सहजे राकस योनि नशाय।
दिहे सिखावन यह मनिहै ना हनिहै बृथा मोहिं रिसिआय॥
असकहि आयो चलि मारग वहि आवत जौन राह कपिनाह।
माया मन्दिर रचि अनुपम तहँ करि मुनि बेष बैठ सउछाह॥
सुन्दर आश्रम लखि मारुतसुत अति आनन्द भये खगराय।

पियों बारि चलि मुनिनायक ढिग तृषा बुझाय परिश्रम जाय ॥
आय पवनसुत शिर नायो त्यहि आयसु पाय बैठ हर्षाय।
लाग कहै सो रण गाथा सब बिस्तर सहित यथा बिधि भाय ॥
होत महारण हरि रावण ते जीतहिं अवशि राम शक नाहिं।
इत ते बैठे मैं देखौं सब है अति ज्ञान बुद्धि म्वहिं माहिं ॥
मारुतनंदन जल माँग्यो तब त्यहिं त्वर दीन कमण्डल लाय।
तृषा न जैहै जल थोड़े ते देहु तड़ाग मोहिं बतलाय ॥
सर बतलायो त्यहिं हनुमत को तुरतै तहाँ पहूंचे जाय।
सुनिये खगपति वह कौतुक अब जो उत जाय कीन कपिराय ॥
मकरी पकस्यो पग पैठत सर मास्यो ताहि बीर हनुमान।
दिव्य देह धरि त्यहि अवसर सो ह्वै अप्सरा चली चढ़ि यान ॥
करि कपिनंदन पग बंदन पुनि बोली मधुर मनोहर बैन।
मैं गंधर्बिनि देवलोक की राउर दरश सफल भे नैन ॥
इन्द्रसभा महँ नित नाचत मैं भाषत गंधकालि मम नाम।
सब दिन याही काम हमारो गान बिधान नृत्य इतमाम ॥
इक दिन नाचन को जाती मैं किये शृँगार धनद के धाम।
पथमहँ बैठे दक्षनाम मुनि गहे समाधि जपत हरिनाम ॥
तिनके तनमहँ तन छुइगो मम मुनि तप भंग भयो त्यहि हेतु।
शाप दीन तब मुनि रोषित ह्वै रह्यो न तनिक चित्त महँ चेतु ॥
तैं अब मकरी तन धारण करि रहु सर गंधमादनी जाय।
भार उतारन हित बसुधा को जब अवतार लेहिं रघुराय ॥
राम दूत कर तैं मरिकै तब ह्वै है शाप मुक्त शक नाहिं।
आजु सत्य भो मुनि भाषण सो मैं निष्पाप भइउँ क्षणमाहिं ॥
मुनि तन धारे यह बैठो जो निश्चर घोर लेहु त्यहि जानि।
ताके छलमहँ तुम आयो ना मानहुँ सत्य कही मम बानि ॥
अस कहि गमनी गंधर्बिनि तब निश्चर निकट गयो कपिराय।
रूप भयंकर करि बोले तब गै रिस अंग अंग महँ छाय ॥

लेहु प्रथम मुनि गुरुदक्षिण यह पीछे दिह्यो मंत्र उपदेश।
लूम लपेट्यो शिर कहिकै अस पटक्यो धरा माहिं नभगेश॥
मरती बेरा तन प्रकट्यो निज छांड़्यो राम राम कहि प्रान।
यहि बिधि हतिकै कालनेमि को आगे हर्षि चले हनुमान॥
एक महूरत महँ आये उड़ि गिरिके निकट पहूँचे आय।
इतै हकीकति अस बीतति भै उतकर हाल सुनौ मनलाय॥
बोलि पठायो सब देवन कहँ लंक भुवाल बीर दशभाल।
चन्द्र सूर अरु इन्द्रादिक सुर आये सुनि निदेश ततकाल॥
तिन सों रावण अस भाषत भो सुनिये सकल देव मम बात।
संयुग महिमहँ आज खाय क्षत घायल भये राम लघुभ्रात॥
ताते तुमका समुझाइत है हमरे वचन करौ परमान।
आजु चन्द्रमा यहि अस्थल रह अबहीं उवै जाय नभभान॥
तजैं लषन तन सूर्योदय महँ ताते होय मोर कल्यान।
मिटै लड़ाई सहजेही महँ दल सह भगैं राम लै प्रान॥
सुनि अनुशासन दशआनन को सविनय सूर्य कही यह बात।
अबै तौ बाकी है आधी निशि किमि ह्वै उदै करैं हम प्रात॥
ध्रुवा मिटावै को ईश्वर का जामहँ बँधा सकल संसार।
सुनि अस उत्तर दिननायक का रोषित भयो लंक भर्त्तार॥
मम निदेश को उल्लंघन करि तैं का वृथा बजावत गाल।
राति रहेते क्षति तेरी कह करत न कथन मोर प्रतिपाल॥
हानि हमारी तैं चाहत का जो अस मोहिं सुनावत ज्ञान।
लखि अस कोपित दशकंधर कहँ चुप ह्वै चले उदैगिरि भान॥
यान मनोहर अति सविता को को कवि करै तासु छविगान।
जुते तुरंगम चपल चाल के चमचम होत मणिन को भान॥
अति विचित्र है प्रभु लीला यह शिव अज जासु न पावत पार।
नित्त नचावत नट सदृश जो यह जग दारु नारि अनुहार॥
निज इच्छा सम यहि दुनियाँ को पालत सृजत करत संहार।

धूरि धराधर को डारत करि रज को मेरु न लागत बार ॥
ज्यहि सविता की बर किरणन ते जगको अन्धकार नशिजात ।
त्रास मानि कै सो रावण की कुसमय उवन चले पछितात ॥
चले दिवाकर इत उदयाचल चढ़िकै सुभग यान पर भाय ।
उतै अञ्जनीसुत पर्वत पर खोजत मूरि सविधि खगराय ॥
तौलौं निरख्यो नभ प्रकाश कछु हनुमत गये सनाका खाय ।
मारि कुदक्का अतिव बेग सों रथके निकट पहूँचे जाय ॥
रवि पथ रोक्यो अति क्रुद्धित ह्वै अचलित भयो भानुको यान ।
भयो सारथी सन्देहित तब लाग्यो करन चित्त अनुमान ॥
अचल भयो रथ क्यहि कारणते मोकहँ मर्म परत नहिं जानि ।
पश्चिमदिशि कहँ रथ हाँक्यो पुनि बाजि बढ़ाय कशाकर तानि ॥
रिस करि तबहीं हनुमन्ता भट आगे धर्‍यो चपल हय धाय ।
लाग घुमावन पुनि स्यन्दन कहँ यथा कुम्हार चक्र भहराय ॥
लगे पुकारन रवि तत्क्षण तब को यह मोर घुमावत यान ।
कह्यो सारथी प्रभु बानर इक बिकृताकार कुधर परमान ॥
यान घुमावत त्यहि कारण ते आगे चलन न पावत बाजि ।
कह रवि कोड़ा हनु अश्वन पर लैचलु रथ उड़ाय नभ राजि ॥
मार्तण्ड को सुनि भाषण अस सविनय कहन लगे हनुमान ।
मायाधारी तुम आहिउ को निशि महँ कहाँ चले चढ़ियान ॥
सुनि कपि बाणी रवि बोले तब हमरो अहै दिवाकर नाम ।
उदयाचल पर हम जाइत हैं जगमहँ उदै होन के काम ॥
रावण जीत्यो सब देवन को हमहूं अहैं तासु आधीन ।
अजहूं जाके गृह बाँचैं श्रुति ब्रह्मा जासु भीति बश दीन ॥
आजु लड़ाई अति भीषण भै लषणहिं दियो निशाचर घाव ।
तजैं प्राण सो निशि बीतेपर क्यहू उपाव न जीवन पाव ॥
यहै शोचिकै दशआनन ने आयसु हमैं दीन बोलवाय ।
जात उवन अब हम उदयाचल ताको हुकुम शीश धरि भाय ॥

लेन सजीवनि गो अंजनिसुत जबलगि वह न लौटि उत जाय ।
तौ लगि उदयाचल दाखिल ह्वै हम करिदेब सबेरा भाय ॥
राह हमारी तुम रोंकौना हमरे बचन करौ परमान ।
यहि विधि बातें सुनि सूरजकी भाषत भये बीर हनुमान ॥
मैंही मारुतसुत हनुमत हौं रघुपति दूत लेहु अस जानि ।
औषधि आनै हित आयों मैं बिनती करौं जोरि युग पानि ॥
जौलगि प्रभु पहँ मैं पहुँचौं ना तौ लगि उदै होहु जनिनाथ ।
नातरु कारज नशि जैहै सब प्रणवौं बार बार धरिमाथ ॥
तुमहीं मुखिया सब देवन महँ लषणहि देहु प्रान को दान ।
तुम्हरेहि कुलके तौ भूषण हैं दशरथ सुवन राम भगवान ॥
बोले सबिता सुनु मारुतसुत मैं जो कहत तौन धरि ध्यान ।
जितने देउता हैं दुनिया महँ सब कोउ चहत राम कल्यान ॥
का कछु साधन हम जाइत हैं करन प्रकाश सुनौ मतिमान ।
कठिन दशानन को आयसु है को अस जौन करै नहिं कान ॥
यह हम जानित हैं नीकी बिधि पैहैं समर विजय श्रीराम ।
पै नहिं जानित यह मरिहै कब रावण दुष्ट कलुष को धाम ॥
आजु न आयसु यदि मानी हम काल्हि को रक्षा करै हमारि ।
आयसु टारे ते कोपित ह्वै देहि प्रचण्ड दण्ड निशिचारि ॥
अस कहि सविता रथहाँक्यो पुनि तब अति कुपित भये हनुमान ।
मौन मारिकै यक लहमा भरि हिय अस ध्यान कीन अनुमान ॥
दुष्ट दिवाकर है दुर्मति अति रहिबे योग गगन महँ नाहिं ।
अस कहि कोपित कपि कुदक्किगहि दाब्यो रविहि काँखके माहिं ।
उड़यो तड़ाका पुनि छलाँक दै पहुँच्यो तुरत मेरुपर धाय ।
पौनहुँ ते बढ़ि बेग गौन है विक्रम जासु बरणि नहिं जाय ॥
घूमि घूमि कै कंगूरन पर खोज्यो दवा पवन के लाल ।
जानि न पायो त्यहि बूटी कहँ ढूँढ्यो विविध भाँति करि ख्याल ॥
शिखर दूसरे पर पहुँच्यो तब देख्यो तहँ चरित्र अलजाय ।

अति मुदछावत बाद्य बजावत गण गन्धर्व रहे तहँ गाय॥
कोकिल बैनी मृगनैनी अति सुन्दर रूप राशि सुकुमारि।
तिन गन्धर्बन की रमनी सत्र करें बिहार मोद मन धारि॥
कोइ गावत कोइ ताल लगावत कोई नचत बतावत भाव।
यहि बिधि जितने गन्धर्बा तहँ तत्पर गान बाद्य के चाव॥
गो हनुमन्ता चलि तिन के ढिग भे सब चकित देखि कपिजात।
तब मारुतसुत गन्धर्बन सों सविनय कहत भये असबात॥
को तुम नाचत अरु गावत इत बिनती सुनौ मोरि दै कान।
भूप अयोध्याधिप दशरथ के पूत सपूत राम भगवान॥
पितु बच पालन को आये बन लाये संग नारि लघुभाय।
दण्डक बनते तिन सीताको हरिलै आयो निशाचर राय॥
सेतु बांधि कै तब राघव प्रभु उतरे सदल सिन्धु के पार।
होत भयंकर रण लङ्कामहँ जूझे अमित शूर सर्दार॥
शक्तिघाय ते मृतकप्राय ह्वै लक्ष्मण परे समर महि माहिं।
औषध खोजन इत आयों मैं पायों तौन खोजि मैं नाहिं॥
रहे निशा कछु म्वहिं पहुँचब तहँ वाजिब अहै सुनौ बलवान।
बिगरै कारज निशिबीते सब इतना बचन करौ परमान॥
हम पर दाया करि भाई तुम देहु चिह्नाय सजीवनि मूरि।
सुनि अस भाषण कपिनायक को गे गन्धर्व सर्वरिसपूरि॥
आयो कितते यह बानरशठ का बकिरह्यो परत नहिं जानि।
सुना न अबलगि रामनाम हम धौं कहँ रहत कैस बलखानि॥
हाहा हूहू महराजा के हम आधीन रहत सब काल।
हम का जानैं अरु काहूको की कहँ रहत राम नरपाल॥
रसमहँ अनरस यहिं कीन्ह्यो खल सब मिलि करहु याहि संहार।
करि अस सम्मत गन्धर्बा सब मारन हेत भये तय्यार॥
आयकै लपटे हनुमन्ता पर जस मक्षिका चपिटि तन जायँ।
बार उखारै कोउ मारै हनि उर मुष्टिका वज्र की नायँ॥

पूंछ पकरिकै कोउ खींचत है यहि बिधि करन लाग उत्पात ।
तिन मधि मारुतसुत घिरिगेकस शशकन मध्य यथा गजजात ॥
भयो मारुती मन क्रोधित तब बढ़िकै भयो पर्वताकार ।
कह्यो हाँकदै सब देवन ते इन कर लखौ दुष्ट व्यापार ॥
निरपराध ये खल मारत म्वहिं भल कै जानि लेहु यह बात ।
पीछे दूषण कोउ दीन्ह्यों ना मैंहूं करत खलन की घात ॥
असकहि घूम्यो हनुमन्ता भट शङ्का जाहि काल की नाहिं ।
लाग पछारन गन्धर्बन कहँ धरि धरि पटकि पटकि महि माहिं ॥
कूदि कूदि कै कर फेंटागहि पद सों मर्दि मिलावै क्षार ।
बचै न एकौ कोउ भागे ते हनि हनि करै घोर ललकार ॥
एक एक पै फटकारै धरि कौनौ हनै चपेटा मारि ।
पांचक सातक गहि एकै सँग देय पषाण उपर फटकारि ॥
पग के नीचे पगदाबै इक पकरै एक हाथ सों पावँ ।
सींक कि नाईं धरि फारै त्यहि एक न चलै कहू को दावँ ॥
लूम लपेटै कोहु योधा का देय घुमाय फेंकि आकाश ।
जिते गन्धरब रहे तहाँ पर हनुमत हने सकल अनयास ॥
हाहा हूहू सुधि पायो अस जे गन्धर्ब राज बिख्यात ।
रथारूढ ह्वै सह सेना के घेर्‌यो आय बीर कपिजात ॥
धारि शरासन चौगिर्दा ते बर्षा करन शरन की लाग ।
तबहिं कोपि कै हनुमन्ता भट गर्ज्यो यथा भयङ्कर नाग ॥
मारि कुदक्का रथ ऊपर चढ़ि द्वउ करते लिय धनुष छिनाय ।
तोरि बहायो त्यहि धरती महँ तब गन्धर्ब उठे रिसिआय ॥
उतरिकै स्यन्दन ते आये भुवि दोउन लिय उखारि तरुताल ।
लगे प्रहारन हनुमन्ता पर कोप्यो तबहिं पवन को लाल ॥
झपटि एक कहँ हन्यो मुष्टिका दूजो पदाघात करि घात ।
भये प्राण बिन गन्धर्बा द्वउ गई पराय सेन सब भ्रात ॥
बिजय पाय कै पुनि मारुतसुत खोजन लगे सजीवनि आय ।

पता न पावैं त्यहि बूटी कहँ मन महँ बहुत लाग पछिताय ॥
इतै हकीकति अस बीतति भै उत अब सुनौ अवध को हाल ।
स्वपन सुमित्रा ने देख्यो जस तस मैं बरणि बतावों बाल ॥
काल भुअङ्गम लपट्यानो जनु बावाँ अङ्ग गयो सब खाय ।
जागि कै धाईं कौशल्या पै तिनते हाल कह्यो यह आय ॥
सुनि कौशल्या जल नैनन भरि लागी हृदय माहिं बिलखाय ।
भरत बशिष्ठै बुलवायो पुनि तिनते कह्यो दशा सब गाय ॥
करि उर चिन्तन मुनिनायक तब सबहि सुनाय कह्यो अस बात ।
स्वप्न नकारो अति देख्यो इन सकुशल होयँ राम द्वउ भ्रात ॥
चाहिय करिबो मन्त्र जाप कछु हवन बिधान अबहिं यहिकाल ।
जामहँ अशकुन कछु होवैना सकुशल रहैं राम द्वउ बाल ॥
मुनिबर पूजन प्रारम्भ्यो तब भरत कुमार भये रखवार ।
धनुष बाण लै तहँ ठाढ़े भे जो कोउ बिघन करै त्यहि मार ॥
भयो अयोध्या महँ कौतुक यह उत अब सुनौ हनूको हाल ।
चीन्हि न पायो जब औषध तब लीन उखारि मेरु बिकराल ॥
गहि गिरि मारुतसुत मारुत सम नभ पथ चले बेग सों धाय ।
पुरी अयोध्या पर आयो चलि तबकी दशा सुनौ खगराय॥
महा भयानक आकारहि लखि भरत कुमार निशाचर जानि ।
शायक मास्यो बिन गांसी की कानन लगे शरासन तानि ॥
पस्यो मुर्च्छि महि शरलागत कपि सुमिरत राम राम रघुराय ।
सो प्रिय वाणी सुनि केकयिसुत आतुर कपि समीप गे धाय ॥
हृदय लगायो कपि ब्याकुल लखि जागत नहिं जगाय गेहारि ।
शोचन लागे तब दुःखित ह्वै बृथा कलङ्क लीन उर धारि ॥

स० । हा हरिभक्त उठौ किनबेगि हमैं सुददै द्वउ नैन उघारौ ।
क्षेम कहौ करुणाकरकी फिरि रामरमा मुख बैन उचारौ ॥
बूड़तहौं दुख सिन्धु अपार दया करिकै किन पार उतारौ ।
जागौ तो जागौ नहीं तजौं प्राण हहाये कलङ्क कहाँलै पधारौं ॥

भरत भावते की बाणी सुनि जै जानकीरमण मुख ध्याय।
तड़कि तड़ाका उठि बैठ्यो कपि शाका जासु बरणि ना जाय॥
सजल बिलोचन तन पुलकित ह्वै भरत कुमार लीन उरलाय।
रघुकुल भूषण को सुमिरन करि भे मनमगन प्रेम के भाय॥
मातु जानकी लघुबान्धव सह प्रभुकी कुशल बतावहु तात।
केकयिसुत को सुनि भाषण इमि लागे कहन हाल कपिजात॥

स०। जानकि कानन आनिहरी दशआनन मूढ़ महामद छायो।
शोध सो पाय सहायकलै रघुनायक लङ्क निशङ्क ह्वै धायो॥
शक्तिहनी रण राकस घोर सो लक्ष्मण के उरमें क्षतआयो।
ताहित लेन सजीवनिको रघुबंश बिभूषण मोहिं पठायो॥
जाय उपाय न शोचि कछू सो बृथा अब मोर परिश्रम ह्वैहै।
भायके घायसों हायदुखी रघुराय तिन्हैं उत को समुझैहै॥
भो शरघात सों गात बिदीरण को यह मेरु तहाँ पहुँचैहै।
होत बिहान उदै भये भानके बीर अनन्तहि कौन जियैहै॥

जियैं न लक्ष्मण गिरि पहुँचे बिन तिन बिन बारि न पीवैं राम।
हाय बिधाता कह कीन्ह्यों यह दियो बेगारि बनावो काम॥
कठिन कुसमया भइ भरत्थ यह सूझत मोहिं न कछू उपाय।
करौ तुम्हारे मन आवै जस हौं मैं ब्यथित बाण के घाय॥
लीन परीक्षा चहैं पवनसुत भरत कुमार केरि खगराय।
ता हित ऐसे बच बोलत भे सुनिये अग्र हाल मनलाय॥
खबरि अयोध्या महँ फैली यह दौरीं कौशलादि सब माय।
सुनि रण घायल लषण कुवँर को रोवन लगीं महा बिलखाय॥
मातु सुमित्रा सुत अपने की बहु बिधि करन प्रशंसा लागि।
भइउँ सपूती मैं आजहि सुत दीन्ह्यों राम हेतु तन त्यागि॥
प्रभुहित सेवक मरिजावै जो शोच न करै तासु की माय।
प्रभु के देखत तन त्यागै रन भट की यहै बड़ाई आय॥
प्रभुहि छाँड़ि कै महि संयुग महँ सेवक जौन भजै भयलाय।

इक तौ अपयश लह दुनिया महँ दुसरे गीध माँस नहिं खाय ॥
कह्यो सँदेशा तुम रघुपति ते इतना कहा मोर हनुमान ।
शोच न लावैं कछु लक्ष्मण हित मारैं शत्रु समर मैदान ॥
समर किहे मा हैं बातैं दुइ कीतौ जीति होय कै हारि ।
जीते पावै यश दुनियाँ मा जूझे स्वर्ग केर अधिकारि ॥
शोच न याही ते मोको कछु लक्ष्मण जग यश लीन कमाय ।
शोच न रामहुँ उर लावैं कछु इतना कहा मोर मनलाय ॥
मातु कौशला अति रोदन करि लक्ष्मण पूत पूत गोहराय ।
भाषन लागी पुनि हनुमतते दशा सो कहि न जाय खगराय ॥
कह्यो सँदेशा रघुनायक ते की अस कह्यो कौशला माय ।
लौटि अयोध्यै तुम आयो ना लाये बिना संग लघुभाय ॥
जो घर लौट्यो तौ भाई द्वउ औ लै जनकदुलारी साथ ।
नातरु बनमा रहि काट्यो दिन लख्यो न भवन गवनकी पाथ ॥
मातु कौशला को भाषण सुनि क्षण यक दुखी भये हनुमान ।
जानि कुसमया पुनि धीरज धरि लागे भरत कुँवर बतलान ॥

स० । तात बिलम्ब लगे त्वहिं जात प्रभात भये सब काज नशैहैं ।
भाय बियोग सों हाय दुखी उत ताकत पन्थ कृपानिधि ह्वैहैं ॥
मो शर पै अब होहु सवार पहार समेत नहीं कछु भैहैं ।
भक्तन को प्रण राखनहार प्रभू क्षणमाहिं तहाँ पहुँचैहैं ॥

भरत भावते की बाणी सुनि कपि के हृदय भयो अभिमान ।
सहित धराधर मम दीरघ तन ताको भार सहै किमि बान ॥
प्रभु प्रभाव गुनि पुनि हियरे महँ बोल्यो हाथ जोरि शिरनाय ।
तुव प्रताप उर सुमिरि दयानिधि जैहौं बाण बेग बढ़ि धाय ।
है कैकेयी सुत हर्षित तब आयसु दियो तुरत फुरमाय
उड़यो भड़ाका तब अञ्जनिसुत राघव बन्धु पगन शिरनाय ।
भरत भावते को भुजबल अति शील स्वभाव दया व्यवहार
प्रीति पुनीतम प्रभु पायँन महँ सरहत जात समीर कुमार ।

उत करुणानिधि लखि बन्धव कहँ बोले बचन मनुज की नायँ।
अर्धराति गै कपि आयो नहिं असमन शोचि स्वामि बिलखायँ॥
हे सुखदाई प्रिय भाई तुम अस दुख कबहुँ दीन म्वहिं नाहिं।
तुम तौ कोमल चित सदैव के है यह बिदित बात जगमाहिं॥
मम हित कारन पितु माता तजि तृण सम गेह नेह को तूरि।
बन महँ आयो दुख पायो बहु आतप बात गात सहि भूरि॥
प्राण पियारे चषतारे मम सो अनुराग दियो बिसराय।
सोवत सुन्दर रण शय्या पर हम तन तनक न हेरत भाय॥
मम हिय पिञ्जर के तोता तुम बोलत क्यों न माधुरे बैन।
काह जानिकै चुप साध्यो है खोलहु कमल नैन सुख दैन॥
नैन चकोरन के प्रीतम शशि तुम का जानि रह्यो मलिनाय।
चैन कहाँ है तुम देखे बिन है अवलम्ब न दूसर हाय॥
जो मैं जनत्यों की कानन महँ जैहै बिछुरि मोर प्रियभाय।
कहना मनत्यों तौ बापहि का कहा न करत कहा जो माय॥
माय केकयी ने भाषा रहै तपसी वेष धारि कै राम।
चौदह वर्ष बसैं कानन महँ तजि कै नगर अयोध्या धाम॥

स०। मात पिता सुत दार अगार सखा परिवार सगे सुखदाई।
कोश भँडार उदार बिभूति मिलै जग बारहि बार के आई॥
बन्दि बिचारि भलेही लियो स्वइ बात कहौं तुमते समुझाई।
जागहु तात हिये हित कै जग फेरि मिलै न सहोदर भाई॥

दुखी बिहंगम जस पखना बिन जलचर यथा दीन जलहीन।
तुम बिन बन्धव मम जीवन तस का यह बाम बिधातैं कीन॥
मणि बिन व्याकुलफणि होवै जिमि कराबिन करी यथा अकुलाय।
दुखी चन्द्रमा बिन चकवा जस चितवै चकित चक्षु चकवाय॥
तुम बिन जीवन अस भाई मम जो जड़ दैव जियावै मोहिं।
किमि घर जैहौं दिखलैहौं मुख बन्धु गवाँय त्रिया हित तोहिं॥
अपयश सहत्यों बरु दुनियामहँ हानि न त्रियाहानि कछु आय।

देखि तुम्हारो दुख बन्धव अब मम उर निठुर सहै ये घाय ॥
एकहि प्यारे सुत माता के प्राण अधार हृदय के हार ।
तुमका थाती त्यहि सौंप्यो मोहिं तुमपर जानि मोर अतिप्यार ॥
जाय कै उत्तर त्यहि देहौं कह उठि किन मोहिं बुझावहु भाय ।
ना तरु मैं हूं तन त्यागत अब तुम बिन जक्त जियन अबजाय ॥
शोच बिमोचन प्रभु शोचत इमि मोचत कमलनैन ते नीर ।
दशा देखि सो त्यहि अवसर पर भये अधीर भालु कपिबीर ॥
दुख सुख कबहूं ज्यहि ब्यापत नहिं सदा अखगड वेद असगाव ।
सो प्रभु भक्तन हित लीलाकरि नरतन बिहित देखावत भाव ॥
आय पहूंच्यो त्यहि समयापर मारुतसुवन बीर हनुमान ।
करुणारस महँ यथा बीररस तैसे कपि देखान हरियान ॥
अति हिय हर्षे रघुनन्दन प्रभु भेंटे कपिहि ललकि लपटाय ।
यह कृतज्ञता करुणानिधि की कासन गाय जाय मुनिराय ॥
बैद्य सुखेनै लै बूटी तब तुरतै लषणहिं दई खवाय ।
ब्यथा पलानी इक पलही में झट उठि बैठ राम लघु भाय ॥
मिले ललकि कै प्रभु भ्राता कहँ हर्षी सकल भालु कपि धारि ।
भाषत जय जय दुउ भाइन की करत किलोल मारि किलकारि ॥
पुनि हनुमन्ता दिशि देख्यो प्रभु काँखरि मध्य होत परकास ।
उर पुर बिस्मय करि बोले तब सुत यह कक्ष मध्य कह भास ॥
लाग बुझावन तब अञ्जनिसुत सुनिये चरित अपूरब नाथ ।
तुमते आयसु लै पहुँच्यों उत गिरि पर क्षणक माहिं चलि पाथ ॥
खोजन लाग्यों तहँ औषध को तौलगि चितै लख्यों आकास ।
कछु प्रकास सो दिखलान्यो म्वहिं पहुँच्यों तुरत जाय त्यहिपास ॥
नभ पथ आवत दिननायक रथ तिन कहँ रोंकि लग्यों बतलाय ।
हाल बतायों कहि इत को सब घायल परे राम लघुभाय ॥
लेन सजीवनि में आयों है जब लगि फिरि न जाउँ प्रभुपास ।
उयो न तब लगि तुम बासरमणि नातरु होय मोर उपहास ॥

मोर निहोरा इन मान्यो ना नाकछु कीनि आपु की कानि।
कह्यो कि आयसु है रावण का मेटे ताहि होय मम हानि॥
उदै जरूरै हम ह्वैबे अब यह सुनि महूं उठ्यों रिसिआय।
झपटि झड़ाका गहि स्यन्दन ते लीन्ह्यों काँख चापि रघुराय॥
सुनि यह बानी कपि बारण की मन मुसक्यान राम भगवान।
मुक्त करायो दिननायक को गमने करत स्वामि गुणगान॥
पुनि कपि पर्वत पहुँचायो तहँ पठयो पुरै वैद्य सह धाम।
हाल दशानन सुनि पायो यह लाग्यो माथ पीटि पछितान॥

इति श्रीभार्गववंशावतंसश्रीमन्मुन्शीनवलकिशोरात्मजस्यश्रीमुन्शीप्रयाग
नारायणस्याज्ञाभिगामीउन्नामप्रदेशान्तर्गतमसवासीग्रामनिवासी
पण्डितबन्दीदीनदीक्षितनिर्मितश्रीविजयराघवखण्डेयुद्धकाण्डे
लक्ष्मणमेघनादसमरान्तर्गतलक्ष्मणशक्तिघातमूर्च्छा
चैतन्यतासवर्णनोनामचतुर्थोल्लासः॥ ४॥

गिरा गजानन गुरु गिरिजापति ध्याय नवाय चरण महँ माथ।
कथा मनोहर कहि गावत हौं उरपुर राखि अयोध्यानाथ॥
याज्ञवल्क जिमि भरद्वाज ते भाष्यो यथा गरुड़ सनकाग।
कह्यो भवानी प्रति शंकर जिमि गावत स्वई सहित अनुराग॥
बिगत मूर्च्छा भइ लक्ष्मण की कपिदल सकल उठ्यो हर्षाय।
हाल पाय यह दशआनन खल शिर धुनि बार २ पछिताय॥
जाय बिराज्यो पुनि संसदि महँ सबरे सचिव लीन बोलवाय।
आय पहूँचे सब योधा गण तिन ते कहन लाग अकुलाय॥
जाय न जानी गति ब्रह्मा की का शोचत का पर्यो दिखाय।
सब जग जीत्यो ज्यहि रावण ने सो अब रह्यो मनुज भयखाय॥
कथा पुरातनि सुधि आई म्वहिं सो भाषत हौं सबहि सुनाय।
शाप जो दीन्ह्यों म्वहिं नन्दी ने सो यहि समय उदय भो आय॥
जीति कुबेरहि एक बार मैं गो शिव दरश हेत कैलास।
तहँ पर नन्दीश्वर द्वारक रह जान न दीन मोहिं शिव पास॥

ताको मर्कट मुख देखत मैं हँसि हँसि बहुत कीन उपहास।
रिसकरि नंदीश्वर बोल्यो तब इनहीं मुखन तोर कुलनास॥
मैं शिव किंकर शठ जानत नहिं करु अब मोर शाप परमान।
करत हँसौआ मुख देखत मम राकस तोहिं इतक अभिमान॥
नन्दीश्वर को वह भाषण अब निश्चय उदय भयो यहिकाल।
हने हजारन मम बारन भट वन बानरन नरन करि ख्याल॥
अमर होन हित तप कीन्ह्यो बहु पुरयो सो न आश बिधि मोरि।
यहिबिधि ब्रह्में समुझायो म्वहिं मनशा पूरि करत मैं तोरि॥
दैत्य देवता अरु किन्नर अहि चारण यक्ष रक्ष गन्धर्व।
इनते शङ्का त्वहिं नाहीं कछु करि हैं बिजै सहज महँ सर्ब॥
सकल चराचर सो जीत्यों मैं नर कपि रहे शेष इकहाय।
तिन कहँ छाँड़यों तुच्छ जानि मैं सो यहिकाल भये दुखदाय॥
नर के बानन तन दाहत मम भो यह आजु बड़ो अपमान।
महीं न पायों जय जिनते अब जीतनहार तिन्हैं को आन॥
अति बलवन्ता कुम्भकरण भट सो रह सोय ब्रह्म के शाप।
त्यहि के जागे बिन केहू बिधि दूरि न होय दुःख की दाप॥
शोचि बतावो अब मन्त्रिहु यह कब जागि है मोर प्रियभाय।
अहै भरोसा भल जाको म्वहिं नर कपि जाय सहज महँ खाय॥
हाथ जोरि कै कह मन्त्रिन तव सुनिये महाराज लङ्केश।
तुम्हरे भ्राता के जागन महँ अबहीं एक मास है शेश॥
सुनि कै निश्चरपति बोल्यो तब छाई बिपति लङ्क महँ आज।
काह बनाई पुनि जागी तौ ज्यहि शिर अटकि रहा सबकाज॥
देर न लावो लैजाओ भट अबहीं बेगि जगावो जाय।
अस कहि योधा बोलवाये बहु आये दश सहस्र समुदाय॥
चले जगावन कुम्भकरण कहँ रचे उपाय तहाँ अस जाय।
भक्ष्य पदारथ किय संचय बहु महिषा मेष मृगादिक लाय॥
मदिरा पूरित घट कोटिन अरु सुन्दर पुष्प सुगन्धित हार।

कुंकुम चन्दन अरु कुरङ्ग मद गूगुल धूप आदि उपचार ॥
भेरि दमामे डफ ढोलक अरु नर केहरी शंख करनाल।
कीन उपस्थित बहु बाजन तहँ जिन महँ होत शब्द विकराल ॥
यहि विधि सामा एकत्रित करि गे सब कुम्भकरण के धाम।
त्यहि की शोभा कहि गावै को जाय न बरणि जौन इतमाम ॥
सुन्दर सुबरण को मन्दिर बर बिस्तृत छुयेलेत आकास।
मेरु शृङ्ग सम लसैं कँगूरे परिख गम्भीर तीर चहुँ पास ॥
बने झरोखा अरु नोखा बहु तिन महँ जड़े जवाहिरलाल।
यूप अनूपम बर मणियनके रबि शशि सरिस ज्योति सबकाल ॥
ध्वजा पताका बहु रङ्गन के शृङ्गन उपर रहे फहराय।
नील शैल सम त्यहि मन्दिर महँ सोवत कुम्भकरण अतिकाय ॥
श्वास नासिका सों निकसत जो मानहुँ प्रलय समय की बाय।
द्वार सामुहें भट पैठैं जो लागत श्वास जायँ उड़ि भाय ॥
लेय निशाचर भरि श्वासा जब तब वहि श्वास साथ उड़िजाय।
नासा अन्दर गिरि कन्दर सम जायँ समाय रक्ष समुदाय ॥
चतुर निशाचर ढँग जानत जे जबहीं होय श्वास अवसान।
धँसैं तड़ाका तब मन्दिर महँ श्वास बचाय देहिं हरियान ॥
परे अचेतन भट सोवत सो जब मुख खोलि घोर जँभुवाय।
विस्तृत गह्वर सम दरशै मुख देखत धीर जायँ भयखाय ॥
ताहि जगावन हित निश्चर गण लगे उपाय करन खगराय।
खोलि खोलि मुख घट मदिरा के दिये लगाय एक थल लाय ॥
पीवे खैवे की सामा जो ढेर लगाय दीन इकठाम।
कुंकुम चन्दन कस्तूरी लै लेपन लगे सकल बलधाम ॥
गन्धित फूलन की माला बहु दीन्ही कण्ठ माहिं पहिराय।
धूप जलायो बहु चारिहु दिशि कोउ २ व्यजन डुलावत भाय ॥
लाग बजावन कोउ बाजन तहँ कौनो करनलाग मृदुगान।
कोउ २ कर पग दाबन लागे जब नहिं जग्यो तौन बलवान ॥

झांझ दमामा डफ ढोलक लै अगणित यातुधान हरियान।
लाग बजावन करि भीषणस्वर कान समीप लाग चिल्लान॥
तबहुँ न जाग्यो सो निकषासुत तब अस युक्ति कीन त्यहि ठाहिं।
अगणित कलशा भरि सुगन्ध के डारन लगे नासिका माहिं॥
भो अति निद्रावश निश्चर सो सुन्दर शीत सुगन्धहि पाय।
शङ्ख असंख्यन लै राकस तब लागे कान निकट धुधुवाय॥
महा भयंकर रव प्रकट्यो सो छायो धरा और असमान।
तबहुँ न जाग्यो कुम्भकरण भट मानहुँ पर्यो मृतक बिनु प्रान॥
अगणित मेढ़ा अरु बोकरा पुनि लैलै भरे नासिका माहिं।
क्षणो न ठहरे ते एकौ तहँ उड़ि उड़ि सकल दिगन्तर जाहिं॥
कोटिन यतनै यहि भाँतिन करि निश्चर हारि गये खगराय।
पै बिधि बरते सो राकस भट सोवत रह्यो अधिक सुखपाय॥
तब सब निश्चर गण रावण पहँ भाषत भये वृत्त इमि जाय।
भाय तुम्हारो प्रभु जागत नहिं थाके हम करि अमित उपाय॥
आयसु दीन्ह्यो पुनि रावण ने जाय कै अस्त्रन करहु प्रहार।
लैलै अगणित अस्त्र शस्त्र तब आये रक्ष तासु आगार॥
शङ्क त्यागिकै त्यहि निश्चर पर लगे प्रहार करन हथियार।
बहुतक उलरैं चढ़ि छाती पर कोउ कोउ पकरि घसोटैं बार॥
हनि हनि मारैं शैल शूल बहु मुदगर मुशल गदा की घात।
लातन घूंसन सों मारैं कोउ सणशी पकरि घसीटैं गात॥
भरि भरि सहसन घट पानी के कानन माहिं देत हैं नाय।
तबहुँ न जाग्यो सो राकस भट यहौ उपाय व्यर्थ भो भाय॥
भाषि महोदर समुझायो तब आनहुँ सहस मत्त गजराज।
मड़नी माड़ौ कुम्भकरण पर तौ साधि जाय चहै कछु काज॥
धाये निश्चर हथिशाला कहँ सहस मतङ्ग लयाये जाय।
लागे मर्दन कुम्भकरण तन चढ़ि चढ़ि अङ्ग अङ्ग परभाय॥
कोउ पायँन पर कोउ हाथन पर कोऊ रहे हृदय पर धाय।

टक्कर मारत कोउ माथे महँ बहुतक ग्रीवा रहे दबाय॥
बहु सुख पायो कुम्भकरण तब अङ्ग मरोरि लाग जमुहाय।
जागि उघार्‌यो द्वउ नैना तब डकरत उठ्यो निशाचर राय॥
पुनि पुनि जृंभत मुख पसारिकै मानहुँ मेरु कन्दरा आय।
ज्वलित हुताशन सम नैना द्वउ दरशत महा भयङ्कर काय॥
कुशल पूँछि कै बड़भाई की उठ्यो तड़ाक सेज को त्यागि।
दूत सिधारे तब रावण ढिग कह्यो कि भाय पर्‌यो तुव जागि॥
कह्यो खुशी ह्वै दशआनन तब लावो भाइहि वेगि बुलाय।
आय कै दूतन तब ताके ढिग दशमुख कथित वृत्त कहगाय॥
करि मुख मज्जन कुम्भकरण तब माँग्यो खान पान सामान।
भक्ष्य पदारथ लै बीरन तब दीन लगाय राशि परमान॥
मदिरा पूरित द्वै हजार घट करिगो एक श्वास महँ पान।
महिष मृगादिक मेढ़ादिक पशु लागो पकरि पकरि कै खान॥
राशि राशि पशु द्वै घटिका महँ भक्षे कुम्भकरण बलवान।
क्षुधा बिगत भै तब हर्षित ह्वै बोल्यो बीर सहित अभिमान॥
तुम सब आयो क्यहि कारण मिलि कुसमय मोहिं जगायो आय।
संकट आयो कह लङ्कापर शंकित कैस निशाचरराय॥
यहि क्षण मोरे मन आवत अस सुरपति आय कीन संग्राम।
होत पराजित बार बार शठ बैठत नहिं चुपाय निजधाम॥
इन्द्र मूढ़ की का गनती है यदि सामुहें आव मम काल।
एक कौरकरि त्यहि भक्षौं हठि इतना बचन करौ तुम ख्याल॥
क्षण महँ नाशौं मैं तीनिहुँ पुर सुर सब हनौं समर ललकारि।
सुनि इमि बानी कुम्भकरण की कह यूपाक्ष माथ महिधारि॥
रिस ना करिये सुरनायक पर हैं निर्दोष देवगण भारि।
आय लङ्क महँ यहि औसर पर नर बानरन मचाई रारि॥
सन्मुख लोहा लै तिनहिन ते जूझे बड़े बड़े बलवान।
खाली लङ्का भै बीरन बिन इतना बचन करौ परमान॥

तुम्हरे जीवत लङ्कापुर महँ असकै रही आपदा छाय।
बाट तुम्हारी सब देखत हैं चलिये जहाँ निशाचरराय॥
कुम्भकरण भट सुनि बानी इमि बोल्यो बैन नैन करि लाल।
प्रथम मारिकै नर बानर पुनि ऐहौं जहां भ्रात दशभाल॥
अस कहि कोपित ह्वै उद्भट भट चाह्यो चलन युद्ध के काज।
आय महोदर तब रोंकत भो अबहिं न जाउ समर महराज॥
विना मन्त्रणा रण वाजिब नहिं अनुचित सदा कहैं मतिमान।
चलौ बोलावत हैं लङ्कापति करिये द्रुत पयान बलवान॥
यह सुनि थँभिगा तब निकषासुत कीन्ह्यासि फेरि मद्य को पान।
खायासि अगणित पशु आछीबिधि पुनि नृप सभा कीन प्रस्थान॥
ऊंच कंगूरा सब लङ्का के तिनते ऊंच पर्बताकार।
महा भयंकर तन निश्चर को दर्शत नीलमेरु अनुहार॥
मग महँ गमनत लखि दूरिहि ते गे बँदरन के होश उड़ाय।
युद्ध बासना सबहिन छाँड़ी चहुँ दिशि भगे चित्त भयखाय॥
देखि बिभीषण समुझायो तब बँदरन ठाढ़ कीन गोहराय।
तबहिं बिभीषण सों कौशलपति पूछन लगे समीप बोलाय॥
शैलराज सम यह निश्चर को महा दुरन्त परत दिखराय।
यहिते लरिकै जय पाई को सो तुम हमैं देउ बतलाय॥
कह्यो बिभीषण हे करुणानिधि यहिकर कुम्भकरण है नाम।
मध्यम भ्राता यह जानहु मम अतिशै धीर वीर बलधाम॥
गदा हाथ लै यदि संगर महँ यह निज विक्रम करै प्रकास।
एक महूरत महँ तीनिहुँ पुर यह करि सकै नाश अनयास॥
पैदा होतहि यह भूँखाभा देख्यासि इत उत दृष्टि चलाय।
रहैं मेहरिया जो खावारि महँ तिन कहँ पकरि पकरि गा खाय॥
युद्ध देवतन ते कीन्ह्यासि बहु रिस करि हन्यो बज्र सुरराय।
बज्र लीलिगा सो सहजे यह झपटा फेरि क्रोध करि धाय॥
दांत उखाख्यासि ऐरावत को हन्यसि तड़ाक इन्द्र उर माहिं।

गिरे विवश ह्वैकरि ऊपरते अमर प्रभाव मरण भो नाहिं ॥
तीनिहुँ भाई रघुराई हम तपबन करन लगे तप जाय ।
ध्यान लगावा बहु बत्सर लगि बिधि तब मुदित पहूँचे आय ॥
पहिले रावण को दीन्ह्यों बर पुनि करि कृपा अमर म्वहिं कीन ।
कुम्भकरण के ढिग आये फिरि भे तब सहसुरेश सुरदीन ॥
शोचन लागे अस हिरदय महँ लखि २ कुम्भकरण को गात ।
बिना बरहिके दुखदाता यह बर लै करै विश्व की घात ॥
यहिबिधि सम्मत करि देवन तब कीन्ह्यो अस उपाय रघुराय ।
कुम्भकरण की मति फेरन हित प्रेर्यो देवि शारदहि ध्याय ॥
कुम्भकरण के कण्ठ स्थित ह्वै बानी दीनि तासु मति फेरि ।
कह्यो बिधातैं बर माँगन को माँग्यासि नींद मास षटकेरि ॥
एवमस्तु तब बिधि दीन्ह्यो कहि तुरतहि भयो नींदवश नाथ ।
हाल जानिकै यह रावण तब बिधि ते कह्यो जोरि द्वउ हाथ ॥
यह बर दीन्ह्यों कह स्वामी यहि करिये दया नाति निज जानि ।
नियम बतावो यहि जागन को इतनी विनय लेहु मम मानि ॥
कह्यो ब्रह्म तब सुनु लङ्कापति यह जागि है मास षट बादि ।
जीति न पैहै कोउ रणमहँ यहि राख्यो कहा मोर तुम यादि ॥
यहि के सन्मुख कोउ ह्वै है ना यावत जगत सुरासुर झारि ।
जबहिं जागिहै यह कुसमय महँ तबहीं जाय मृत्यु वशमारि ॥
इमि समुझायो बिधि रावण कहँ पुनि चढ़ि हंस गये निजधाम ।
भयो नींद बश यह तुरतै तब मानहुँ सत्य बचन श्रीराम ॥
काँधे धरिकै द्वउ भाई यहि घर महँ लाय दीन पौढ़ाय ।
आजु जगायो यहि कुसमय महँ ह्वै अज्ञान निशाचरराय ॥
आपु चिन्तवन उर करिये जनि यहिबिधि ब्रह्म कथन अनुसार ।
प्रभु के तीक्षण शर जालन ते होई आज अवशि संहार ॥
बात बिभीषणकी सुनिकै इमि अति मन मुदित भये भगवान ।
रचि प्रतिपालैं अरु घालैं जग ते प्रभु मनहुँ भये अनजान ॥

जाय पहूँच्यो उत संसदि महँ वह भट कुम्भकरण हरियान।
माथ नवायो बड़भ्राता को पगन प्रणाम कीन सविधान॥
आशिष दैकै दशकन्धर त्यहि हृदय लगाय लीन हर्षाय।
बाँह पकरिकै अति सनेह सों आसन अर्ध लीन बैठाय॥
गिरिपर बैठे राहु केतुसम शोभित भये उभय बलवान।
लखि संदेहित तब रावण को लाग्यो कुम्भकरण बतलान॥
उतरी आभा शशिआनन की मनमहँ रही मलिनता छाय।
कौन बातते संदेहित तुम भ्राता हमैं देव बतलाय॥
हमरे अच्छत तुम चिन्तित अस तौ म्वहिं जियनकेर धिरकार।
यह तुम जानत मैं संगर महँ जीत्यों इन्द्र अनेकन बार॥
आयसु पावों यदि भ्राताकर अबहीं नाशकरौं संसार।
शोखौं बारिधि इक श्वासा महँ चर्वण करौं चन्द्र रवि तार॥
पीवों पानी सम पावक कहँ नाशौं सकल सुरन के प्रान।
मींजि सुमेरुहि द्वउ लातन सों करिहौं आजु रेणु परमान॥
रसा तानिकै द्वउ हाथन सों देहुँ बहाय रसातल माहिं।
कालदण्ड सम भुजदण्डै मम बलमहँ कबहुँ बिपोची नाहिं॥
कौनी गनती महँ बानर नर जिनते गयो शङ्क तुम खाय।
करौ न चिन्तन चित रञ्चक तुम मैं देखिहौं तासु ब्यवसाय॥
पै तुम इतना बतलावो म्वहिं इनते भा बिवाद क्यहि भाँति।
कुम्भकरण की सुनि बानी इमि बोलत भयो अमर आराति॥
अबलगि सोवत रहे बन्धव तुम हमपर रही बिपति बढ़िछाय।
तीनिहुँ भाइन बिच भगिनी इक प्यारी शूर्पणखा बहुभाय॥
जबते बिधवा भै तबते वह शोकित रहत सदा सब काल।
भई लालसा अस ताके उर बनवासि पुजौं शम्भु शशिभाल॥
बोलि पठायों खरदूषण कहँ मैं तब तासु आश असजानि।
सहस चारि दश दै निश्चर सँग रक्षक नियत कीन अनुमानि॥
पार समुन्दर के दण्डक बन तहँ सहसैन दीन पठवाय।

रही जाय सो त्यहि जङ्गल महँ आगे कहौं काह अबभाय ॥
जानिजात नहिं गति ईश्वर की करिबो काह करत धौं काह ।
नगर अयोध्या इक बस्ती है दशरथ तहां बिदित नरनाह ॥
चारि पुत्र भे तिन दशरथ के तिन महँ ज्येठ राम कुविचारि ।
बाल अवस्था महँ माख्यो ज्यहिं सुतसह प्रबल ताड़का नारि ॥
गाधिसुवन की मख रक्षा करि पहुँचो जनकपुरीमा जाय ।
चाप बिभञ्ज्यसि प्रभु शंकर को गर्ब गवाँय गये भृगुराय ॥
भर्थहि राजा किय दशरथ ने घरते काढ़िदीन बन ताहि ।
अनुज लक्ष्मण अरु युवती सह आयकै बस्यो पञ्चवटि माहिं ॥
फूल लेन को इक बासर गइ बहिनी शूर्पणखा त्यहि ठाम ।
लषण हँसौआ त्यहिसन कीन्ह्यों लीन्ह्यों काटि नाक अरु कान ॥
हाल पायकै खरदूषण यह चौदह सहस सैन लै साथ ।
गेलड़िबे हित तिन बीरन कहँ हन्यो ससैन एक रघुनाथ ॥
ममढिग आई सुपन्याखा तब सबरो हाल कह्यसि बिलखाय ।
देखि दुर्दशा तब बहिनी की मोरे हृदय क्रोध गो छाय ॥
कोपित ह्वैकै त्यहि कारण ते मैंहूं हख्यों राम कै नारि ।
मुख्य हेतु यह कहि गायों मैं बाढ़ी यही बात ते रारि ॥
खोजत सीता कहँ भाई सह आये ऋष्यमूक स्वइ राम ।
कीनि मिताई सुग्रीवा ते पठयो बालि मारि यमधाम ॥
कीन सुकण्ठहि किष्किन्धाधिप बानर सकल भये आधीन ।
आज्ञाकारी कपिनायक अरु भल्लुक मिला एक मतिहीन ॥
केतक छल बल शठ जानत सो सम्मत वहै देत सबकाल ।
पुनि सिय खोजन हित बानरपति पठये चहूँ ओर कपिभाल ॥
तिनमहँ अतिही खल बानर इक छल बल राशि नाम हनुमान ।
सिन्धु नाँधिकै सो आवा इत कीन्ह्यसि महा उपद्रव ठान ॥
सिया निहाख्यसि बाग उजाख्यसि माख्यसि अछै आदि बलवान ।
शङ्क न धाख्यसि पुरजाख्यसिखल टाख्यसि सदल मोर अभिमान ॥

लौटि राम के ढिग पहुँचा सो भाष्यसि लङ्कभेद सब जाय ।
सेतु बाँधि कै तब बारिधि महँ उतरे सैन सहित द्वउ भाय ॥
लङ्क किनारे करि डेरा तिन चारिहु द्वार लीन रुंधवाय ।
होत लड़ाई अब तिनहिन सँग जूझे बड़े बड़े भट भाय ॥
भीरु बिभीषण महा कुबुद्धी फेरन सिया मोहिं सिख दीन ।
पुनः लाज तजि कुलद्रोही ह्वै रिपुकी शरण जाय त्यहिं लीन ॥
बिपतिसिन्धु महँ मैं डूबत अब कछु न उपाय दीख जब भाय ।
तुम कहँ सोवत ते कुसमय महँ लिह्यों जगाय तुम्हैं भयखाय ॥
सुनिकै बातैं दशकन्धर की बोल्यो कुम्भकरण बलवान ।
बैन तुम्हारे सुनि भ्राता म्वहिं यह आश्चर्य परत सब जान ॥
कस साधारण नर राघव हैं प्रभुता कहत जासु अस भ्रात ।
शुष्कपत्र सम गिरि दीरघ बहु बारिधि सलिल माहिं उतरात ॥
अपने गुणते बश कीन्ह्यो ज्यहिं बनपशु भालु कीश समुदाय ।
क्यहि बिचार ते त्यहि मानव तुम मान्यो हिये निशाचरराय ॥
नारद मुख ते सुनि राख्यों मैं श्रीपति जक्कनाथ कर्तार ।
प्रबल निशाचर कुलध्वंसन हित रघुकुल माहिं लेहिं अवतार ॥
कर्म अमानुष ये रघुपति के सुनि अस होत मोहिं अनुमान ।
बंश नशैहै अब निश्चर को नारद कथन सत्य परमान ॥
यद्यपि मानौं मन याही मैं की ये राजपुत्र रघुराज ।
तदपि प्रशंसा के लायक यह कीन्ह्यों नहीं भ्रात तुम काज ॥
अब म्वहिं निश्चय यह मालुम भा की तुव सभासदन के माहिं ।
कार्य कुशल अरु दूर प्रदर्शी एकहु योग्य पुरुष है नाहिं ॥
बिना बिचारे यदि भ्राता तुम कीन्ह्यों अति अयोग्य यह काज ।
तौ सैनागृह सिन्धु पार फिरि काहे न नियत किह्यो महराज ॥
उतर किनारा यदि सागर कर रक्षित होत भली बिधि भाय ।
सेतु सिंधु महँ तौ बाँधत किमि पहुँचत लङ्क माहिं किमि आय ॥
रह्यो सहायक नहिं कोऊ जब बन बन फिरत रहे द्वउ भाय ।

तब तुम सेना सँग अगणित लै काहेन तिन्हैं सँहार्‍यो जाय ॥
शूर्पणखा जब खरदूषण कर तुम कहँ निधन सुनायसि आय।
तबहीं तुम कहँ अस वाजिब रह करत्यो समर सामुहें जाय ॥
बीर कर्म सो तजि दीन्ह्यो तुम औ डरपोक पुरुष की नायँ।
तिन की तिरिया हरिलायो इत दीन्ह्यों कुलै कलङ्क लगाय ॥
पापी पूरुष निज पापन कर ततकालहीं जात फल पाय।
बिना बिचारे हित अनहित यह कीन्ह्यों काज निशाचरराय ॥
कहा न काहू कर मान्यो तुम ठान्यो हृदय माहिं अभिमान।
नीति बिसार्‍यो हठि स्वामी तुम जासे लहत भूप कल्यान ॥
अनुज बिभीषण सिखदीन्ह्यों भलि सुन्योन तौन सीख हितमानि।
मारि निकार्‍यो त्यहि घरहू ते कहि कहि अनादरित दुर्बानि ॥
काठ के भीतर की आगी जस काठहि जारि करत है क्षार।
तैसे राजा को नाशत है यह अभिमान लङ्कभर्तार ॥
कहा हमारा प्रभु मानहु यह रामहिं मनुज न करौ बिचार।
छिपे हुताशन सम राखी महँ जानहुँ राम जक्त कर्तार ॥
कुम्भकरण की सुनि बानी इमि बोल्यो कुपित निशाचरराय।
मोहिं सिखाउब त्वहिं वाजिब नहिं पद महँ लगौं तोर बड़भाय ॥
अहंकार बश या जड़ता बश या भ्रम आनि किह्यों अस काज।
बिना बिचारे करि डार्‍यों जो शोचब ताहि अकारथ आज ॥
प्रीति तुम्हारी यदि हमपर है तौ संदेह छाँड़ि यहि काल।
करौ जो करिबे कहँ वाजिब है रिपु हति हरौ मोर दुखजाल ॥
होय सहायक जो संकट महँ सोई सुहृद भाय जग माहिं।
निन्दा करिकै दुख देवै जो गणना तासु सुहृद बिच नाहिं ॥
जो तौ त्वहिंमा कछु पौरुष है तौ हरु बिपति मोरि रिपु मारि।
बकबक करिबेको औसर नहिं सोवहु जाय फेरि चुप धारि ॥
बैर बढ़ावा मैं अपने बल लेहौं समर शत्रु ललकारि।
अब लग देखत बलबीरन को कोधौं कैसि मचावत रारि ॥

क्रोधित लखिकै इमि भ्राता को बोल्यो कुम्भकरण कर जोरि।
हे प्रभु गुस्सा तजि हिरदै ते तनि सुनि लेउ बिनै इक मोरि॥
कहब तुम्हारो सब सांचो यह मिथ्या तनिक बात कछु नाहिं।
प्यारे भाई वइ दुनियाँ महँ करैं उबार जौन दुख माहिं॥
पर यह बिपदा यहि औसरकी केहू बिधि न सकत हम टारि।
मुनिकी बानी को सुमिरण करि संशय देत करेजा जारि॥
मो बिचार महँ अस आवत है त्रिभुवननाथ नाथ रघुनाथ।
कर्म अमानुष हैं उनके सब करहु बिचार बुद्धि के साथ॥
सेतु पर्वतनको सागर महँ बाँधि न सकै मनुज क्यहु भाँति।
हन्यो ताड़का इक शायकते है यह बात जक्त महँ ख्याति॥

स०। गौतम नारि उधारि दई जिन डारि पदाम्बुज की रज वैसे।
मारि निशाचर तीनि करोरि सँहारि सुबाहु रख्यो मुनि भैसे॥
शंभु शरासन भञ्जन कै भृगुनायक गर्व गिरायहु जैसे।
है सबबात प्रसिद्ध तुम्हैं फिरि जानब सो प्रभु मानव कैसे॥

कर्म बानरहुके चिन्तन करि अस मम हृदय होत अनुमान।
सिन्धु उलङ्घन करि जारब पुर सुर बिन करि न सकै कोउ आन॥
ताते मानहुँ यह कहना मम आनहुँ हृदय अपन कल्यान।
दुष्टनिकन्दन रघुनन्दन कहँ जानहुँ अविनाशी भगवान॥
अबहुँ तुम्हारो कछु बिगरो नहिं सियहि चढ़ाय सहादर यान।
चलिकै सौंपो रघुनायक कहँ अविचल होय राज श्री प्रान॥
कुम्भकरण को सुनि भाषण इमि रहि कछुकाल मौन दशभाल।
रिस बश नैना अरुणारे करि पुनि अस कहन लाग खगपाल॥
बात नदानी की भाषत तैं यहि क्षण कहाँ अहै तुव ध्यान।
कहा तुम्हारा यदि मानहुँ मैं जानहुँ सत्य तोर अनुमान॥
निश्चरकुल के संहारन इत जो इन लीन मनुज अवतार।
करब मित्रता त्यहि के सँग महँ वाजिब अहै कौन परकार॥
हम सम सुर विजयी बीरन कहँ सब दिन त्राञ्छनीय यह भाय।

रण महँ सन्मुख बिश्वनाथ के त्यागहिं जाय आपनी काय ॥
नर शरणागत ते नीको बरु त्यागै काय जहर को खाय।
जानि परी अब मति तोरिउ म्वहिं तोरे हृदय बसो भय आय ॥
स०। काज न आज कछू बकवादको पाँय पसारि कै सोवहु जाई।
आपुहि जाय सँहारि हौं मैं नर वानर शत्रु चमू यत आई ॥
होत न पारिख बेसमयापरे तोरिहु जानि लिह्यो मनुसाई।
मोसम कौन बली जग में ज्यहिं कालहु पै करवाल चलाई ॥
अतिशय क्रोधित लखि भ्राता को कुम्भकरण अस कीन बिचार।
हित की बानी यहु मानी ना होइहि नीच मीच आहार ॥
जाय सामुहें विश्वम्भर के रण करि तजौं महूं अब प्रान।
योनि छुटावों यह निश्चर की पावों सहज मुक्ति पन्थान ॥
अस बिचारिकै फिरि बोलत भो रिस ना करहु लङ्कमहिपाल।
मो कहँ शङ्का नहिं लरिबे की हौं मैं प्रबल काल को काल ॥
अबहिं जायकै रणबसुधा महँ नर वानरन करौं आहार।
बैठो सुखते तुम मन्दिर महँ चिन्ता देहु चित्त ते टार ॥
अस कहि तुरतै उठि ठाढ़ो भो निरखे जाहि धीर भय खाय।
मानहुँ निश्चर को धारे तनु निश्चय नील मेरु यह आय ॥
हाथ पकरिकै तब रावण ने अपने निकट लीन बैठाय।
हँसिकै बोल्यो अभिमानी पुनि करिहै अब सहाय तैं भाय ॥
अस कहि रण को सब अभरण लै आपहि सजै लाग त्यहिगात।
शोभा त्यहि की कहि गावै को भैकर काल सरिस दरशात ॥
पहिरि जाँघिया करिहाँये महँ सुंदरी जड़ी रतन के जाल।
कण्ठम कण्ठा गज मुक्तन को उरमहँ लसै मणिन की माल ॥
कवच सनाहै सजि अङ्गन महँ लोहेटोप शीश पर धारि।
पहिने कुण्डल कल कानन महँ दीपित सूर्य चन्द्र अनुहारि ॥
मुकुट मनोहर धरि माथेपर सौगुन अधिक भानते भान।
कमर लपेटा दृढ़ फेंटा कसि सो बासुकी सरिस दृशान ॥

बाहु बजुल्ला कर कङ्कण बर अंगुरिन स्वर्णमुद्रिका धारि।
सज्यो शरीरमा इमि भीमाकृति ज्वलित कृशानुकेरि अनुहारि॥
गदा लोहकी लै हाथे महँ गमन्यो भाय पगन शिरनाय।
चल्यो अकेला तकि संयुगमहि राजत जहाँ राम रघुराय॥
ताके चलिबे ते हाली महि करवँटि गये कमठ अरु नाग।
सुरगण शङ्कित भे देखत त्यहि नभ महँ छाँड़ि बिमानन भाग॥
जात अकेले लखि भाई को सुभट बोलाय निशाचरराय।
अगणित सेना अरु सेनापति पठये समरभूमि सजवाय॥
युद्धभूमि महँ चलिआयो जब वह निकषाको पूत जुझार।
भये सशंकित सब बानरगण यह को आयो काल अनुहार॥
तिन्हैं बिभीषण समुझायो कहि पुनि चलिगयो तासु के पास।
नाम आपनो कहि नायो शिर गायो सकल पूर्व इतिहास॥
हृदय लगायो त्यहिं भाई को रघुपति भक्त जानि प्रियलाग।
पुनि समुझायो लघुभ्राता को भैया जग्यो तोर अब भाग॥
धन्य बिभीषण तव बुद्धी को कहँलग करौं तोर यश गान।
भये निशाचर कुलभूषण तैं यहिते बाढ़ि न बात कछु आन॥
किये उजागर तैं निश्चर कुल पाये दयाभवन भगवान।
कर्म बचन मन भजु सीतापति यामहँ होय तोर कल्यान॥
मोरे आगे ते जावहु अब निज पर सूझ मोहिं अब नाहिं।
भयों कालबश अस जानहु तुम अब मैं युक्त होत रणमाहिं॥
फिर्यो बिभीषण सुनि बानी इमि आयो जहाँ राम भगवान।
नाथ भूधराकृति गर्जत यह आवत कुम्भकरण बलवान॥
कहा बिभीषणको कानन सुनि धाये किल किलाय कपि भालु।
लैलै हाथन महँ पादप गिरि चहुँदिशि घेरिलीन जनु कालु॥
शिला शृङ्ग अरु तरु आदिक लै मारन लगे ताहि खगराय।
टरै न टारे रण पुहमी ते कौतुक देखि देखि मुसक्याय॥
जस मदार के फल लागेते हाथी अङ्ग न आवै घाव।

तैसिय गति है कुम्भकरण की बाढ़त जासु चौगुनो चाउ ॥
हन्यो मुष्टिका तब मारुतसुत धरती गिस्यो मूर्च्छा खाय।
पुनि उठि मार्‍यो हनुमन्ता कहँ घुर्मित पर्‍यो मुहँभरा जाय ॥
पटकि पछार्‍यसि नल नीलहि पुनि मार्‍यसि झपटि२ भटभूरि।
भागि बँदरवन की सेना तब सबके हृदय गयो भयपूरि ॥
घायल कीन्ह्यसि युवराजहु कहँ दाब्यसि काँख माहिं कपिराज।
चला तड़ाका उड़ि अम्बर कहँ सुनिये अग्रचरित खगराज ॥
गिरिजा रघुपति रण खेलत अस खगपति यथा सपेलवन साथ।
भौंह तेरेरे ज्यहि ईश्वर के काँपत काल नवावत माथ ॥
ताहि लराई अस सोहत नहिं पै निज भक्त उधारन हेतु।
चरित अनूपम बिस्तारत जग दीनदयाल भानुकुल केतु ॥
जागी मूर्च्छा हनुमन्ता कै खोजन तबहिं सुकण्ठै लाग।
इत उत कतहूं लखि पायो ना तब संदेह हिये महँ जाग ॥
उत कपिराजहु कै मूर्च्छा गै आयो निपुचि काँखते ज्वान।
पुनि धरि दांतन कुम्भकरण के लीन्ह्यों काटि नासिका कान ॥
वहिंतौ जाना की मरिगा यहु यहिं जब कीन ऐस उत्पात।
काटि नासिका श्रुति भाग्यो पुनि तबभा कुपित निशाचरजात ॥
धावा कपिपतिके पकरन कहँ कपिपति चल्यो गगनदिशि धाय।
पाउँ पकरिकै महि पटका त्यहिं विक्रम जासु बरणि ना जाय ॥
उठे तड़ाका सुग्रीवौ पुनि त्यहि उर हन्यो मुष्टिका धाय।
पुनि चलिआयो रघुनन्दन पहँ जय जयकार करत हर्षाय ॥
कुम्भकरण ने अनुमान्यो तब काट्यसि नाक कान कपिराय।
ग्लानि मानिकै फिरि लौटतिभा गुस्सा अङ्ग अङ्ग गइ छाय ॥
सहज भयंकर बिन नासा श्रुति देखत भई बानरन त्रास।
पुनि रघुनायक की जय जय करि धाये एक बार सहुलास ॥
तरु अरु पाथर लै डारे बहु घेर्‍यो चहूं ओरते ताहि।
सन्मुख धावा तब निकषासुत भट महँ प्रथम लीक है जाहि ॥

पकरि करोरिन कपि मेलै मुख शोभा तासु बरणि ना जाय ।
मेरुकन्दरा सम ताको मुख मानहुँ टीड़ी रही समाय ॥
कोटिन मींजे धरि देही महँ कोटिन मींजि मिलावै क्षार ।
आनन नासा अरु काननमग निकसि पराहिं भालु कपियार ॥
युद्ध बिरुद्धा इमि राकस भट लीला चहत मनहुँ संसार ।
भागी सैना कपि भालुन की सहि ना सके निशाचर मार ॥
कोउ न लौटै गोहराये ते सूझ न नैन सुनै नहिं कान ।
भूलि चपलता गै लरिबे की भागे अपन अपन लै प्रान ॥
बानर सैना बिड़राई सब निकषा सुवन बीर बलवान ।
सुनि अस निश्चर दल धायो बहु लै लै अस्त्र शस्त्र हरियान ॥
लख्यो तमाशा यह रघुपति ने रिपुदल प्रबल पहूंच्यो आय ।
कपिपति लक्ष्मण ते भाष्यो प्रभु तुम सब सैन सँभारहु भाय ॥
मैं अब खल दल बल देखतहौं अस कहि ठाढ़ भये उठि राम ।
अक्षय तर्कस करिहाँयें महँ करमहँ धनुषबाण अभिराम ॥
सिंह ठवनि सों रण गमनत भे जिनकी शोभा बरणि न जाय ।
प्रथम शरासन टंकोरयो प्रभु रिपुदल बधिर भयो सुनि ताय ॥
तानि शरासन पुनि कानन लग छाँड़े लक्षबान खरसान ।
काल सर्प सम ते धावत भे फहरत चले जात असमान ॥
खलभलि परिगै रिपु सेनामहँ जूझन लगे अमित बलवान ।
कर पग काहू के न्यारे भे मूड़न केर लाग खरिहान ॥
सौ सौ टुकड़ा भे देहिन के औ रुण्डन के लाग पहार ।
घुमिं घुमिं कै भट घायल ह्वै धरती गिरैं डारि हथियार ॥
हलुके घायन के योधा गण उठि उठि फेरि मचावैं मारु ।
अपन परावा कछु सूझै ना धरु धरु मारु मारु ललकारु ॥
शायक लागे ते गर्जैं कस मानौं सिन्धु रह्यो हहराय ।
बहुतक भागैं शर आवत लखि तीक्षण चोट सही ना जाय ॥
बिना मुण्ड के रुण्ड अनेकन धावैं मारु मारु गोहराय ।

एक मुहूरत महँ सीतापति रिपुदल मारि दीन अधिराय ॥
शोचन लाग्यो तब निकषासुत इन रण हने निशाचर मारि ।
सिंह कि नाईं तब गर्जत भा शोर कठोर घोर हहकारि ॥
बड़ बड़ पर्वत लै धावा तब डार्यासि कपि समूह महँ आनि ।
पर्वत आवत लखि कौशलपति रजसम कियो शायकनि भानि ॥
कोपि शरासन संधान्यो पुनि छाँड़े अति कराल बहुबान ।
कुम्भकरण के तन लागे ते जनु घन बिज्जु बृन्द लपटान ॥
शोणित बरसै तन कारे ते शोभा तासु कही ना जाय ।
मानहुँ कज्जल के पर्वत ते झरना झरत गेरु के भाय ॥
रह्यो न एकौ अँग बाकी अस लाग्यो जहँ न बान को घाव ।
तबौं न मुर्क्यो रण पुहमी ते नेक न शङ्क हृदय महँ लाव ॥
बिकल जानि कै त्यहि धाये कपि लै लै शिलाखण्ड तरु पानि ।
पास पहूँचत मुसक्यानो सो धावा कपिन ओर रिसआनि ॥
कोटिन बाँदर गहि पटकै महि औ दशभाल दुहाई खाय ।
मत्त मतङ्गम सम ताको लखि भागे भालु कीश समुदाय ॥
बिकल पुकारत अति आरत स्वर आश्रय राखिलेहु भगवान ।
है दुकाल सम यह निश्चर खल कपि कुल देश करत वीरान ॥
करुणा सागर बल आगर प्रभु मारौ याहि करौ जनि बार ।
नातरु यहि के रण सन्मुख महँ भला न देखि परत कर्तार ॥
आरत बानी सुनि बँदरन की धनुष सुधारि बान कर धारि ।
चले सकोपित त्वर सीतापति सैना सकल पछारी डारि ॥
तानि शरासन गुन कानन लग इक शत बान कीन संधान ।
सो हनि मारे कुम्भकरन तन छूटत तीर शरीर समान ॥
रिस करि धावा शर लागत खन मानहुँ महाभयानक काल ।
डगमग बसुधा डोलन लागी कम्पे कमठ शेष बेहाल ॥
शैल उपार्‌यो इक दक्षिणकर डारी भुजा काटि सो राम ।
ज्वलित हुताशन सम धावा पुनि लै उत्तंग मेरु कर बाम ॥

काटी पाटी महि सोऊ भुज प्रभु कौतुकी बिक्रमागार ।
बाहु कटेपर कस लागै खल जस बिन पंख मन्दराकार ॥
दृष्टि तिरीछी करि राघव दिशि ताकत नैन लाल बिकराल ।
ग्रसा चहतहै जनु तीनिहुँ पुर अस भय दशा प्रगट खगपाल ॥
मुख पसारि कै शठ धावा पुनि करि अतिघोर शोर चिग्घार ।
सिद्ध देवता नभ त्रासित सब करत पुकार महाहहकार ॥
भीत जानिकै तब देवन को दया समुद्र सन्त सुखधाम ।
तानि शरासन गुन कानन लग किय संधान बान अभिराम ॥
भरे अनेकन शर निश्चर मुख तदपि न गिर्‍यो भूमि बलवान ।
धावा सम्मुख शर पूरित मुख मानहुँ काल इषुधि सह प्रान ॥
तीक्षण शायक तब लीन्ह्यों प्रभु धरते भिन्न तासु शिर कीन ।
गिर्‍यो सो रावण के आगे शिर देखत भयो मूढ़ अतिदीन ॥
धाय धाय धर घसै धरा महँ तब प्रभु काटि कीन शतखण्ड ।
तेज समान्यो प्रभु आनन महँ भयो अनन्द सकल ब्रह्मण्ड ॥
भई अचम्भा मुनि देवन के हर्षित फूल रहे वर्साय ।
बजे नगारा हहकारा करि जय जयकार शब्द रह छाय ॥
गये देवता सब बिनती करि ताही समय देवऋषि आय ।
गावन लागे गुण राघवके जय जय रमारमण रघुराय ॥
जैसे आतुर प्रभु मार्‍यो यहि तैसे हतौ बेगि दशभाल ।
अस कहि नारद बिधिलोकै गे शोभित समर भये खलकाल ॥
दुष्ट निकन्दन रघुनन्दन प्रभु राजत समरभूमि सह सैन ।
मनहुँ पराजित करि तीनिहुँ पुर रह्यो बिराजि चैन सह मैन ॥
लसत स्वेदकण स्वच्छानन पर लोचन कमल फूलसम लाल ।
दर्शत अङ्गन महँ शोणित कन शोभा कहि न जात खगपाल ॥
सशर शरासन कर फेरत धरि शोभित चहुँओर कपि भालु ।
ज्यहि बिधि जूझ्यो कुम्भकरण रण तुमते भाषि कहा सब हालु ॥
सुर परितापी अति पापी खल निश्चर ताहि दीन निजधाम ।

गिरिजा वे नर निर्बुद्धी अति जो ना भजैं दयानिधि राम ॥

इति श्रीभार्गववंशावतंसश्रीमन्मुंशीनवलकिशोरात्मजस्यश्रीमुंशीप्रयाग-
नारायणस्याज्ञाभिगामीउन्नामप्रदेशान्तर्गतमसवासीग्रामनिवासी
पण्डितवन्दीदीनदीक्षितनिर्मितश्रीविजयराघवखण्डेयुद्धकाण्डे
कुम्भकरणवधवर्णनोनामपञ्चमोल्लासः ॥ ५ ॥

ध्याय भवानी सुखदानी को बानी माय चरण द्वउ ध्याय ।
शाका बाँका रण शूरन का गावत फेरि तोर बलपाय ॥
गये दिवाकर जब अस्ताचल द्वउ दल लौटि गये निजथान ।
घनी लड़ाई भै बीरन ते जूझे समर अनेकन ज्वान ॥
श्री रघुराया की दाया ते कपिदल बढ़त जात बल माहिं ।
दावा लागे तिनु बाढ़े जस शङ्का जिन्हैं काल की नाहिं ॥
निशिदिन निश्चर खल छीजैं कस निजमुख धर्म कहे ज्यहिभाँति ।
इतै हकीकति अस बीतति भै उत अब सुनौ उरग आराति ॥
कुम्भकरण के रण जूझे की पाई खबरि निशाचर राय ।
माथ पीटिकै बिलखन लाग्यो पुनि पुनि बन्धु शीश उरलाय ॥
उर ताड़न करि तिरिया रोवैं ताको तेज विपुल बल भाखि ।
महा उदासी भै लङ्का महँ धीर न जात हृदय महँ राखि ॥
त्यहि क्षण आयो मेघनाद तहँ लखि परिताप युक्त निजबाप ।
बिबिध कथा कहि समुझावत भो धारिय धीर हृदय महँ आप ॥
काल्हि मंसई अवलोक्यहु मम बढ़िकै काह कहौं बहु बात ।
इष्टदेव से बर पायों जो सो नहिं तुम्हैं सुनायों तात ॥
निशा सिरानी यहि भाँतिन ते भयो प्रभात आनि हरियान ।
लङ्का गढ़ के चहु फटकन पर अरुझे जाय कीश बलवान ॥
भयो कोलाहल तब लङ्का महँ हाहाकार गयो अतिछाय ।
प्रबल निशाचर दल सजिकै पुनि पहुँच्यो चहूं द्वारपर आय ॥
मुर्चा जुटिगा रण शूरन का बर्सन लाग घने हथियार ।
अपन परावा कछु सूझै ना चहुँदिशि मारु मारु ललकार ॥

आपनि आपनि जय इच्छाकरि जीवन आश छोड़ि बलवान ।
लरैं सामुहें ते पछरैं ना माचो महाघोर घमसान ॥
माया कीन्ही मेघनाद तब रथ चढ़ि गयो बीर आकास ।
घोर गर्जना करि गर्जत भो सो सुनि भई कपिन उर त्रास ॥
नाना अस्त्रन की बर्षा करि कीन्ह्यसि चहूँओर अँधियार ।
शक्ति शूल असि अरु अगणित शर बरसै गदा परशु खरधार ॥
पूरे बानन सों दशहू दिशि मानहुँ मघा नखत झरि लागि ।
खलभलि परिगै कपि सैना महँ कायर खेत छोड़ि कै भागि ॥
मारु मारु धुनि सुनि वानरगण चहुँ दिशि देखैं दीठि पसारि ।
मारन वाले को पावैं ना धावैं वृक्ष मेरु कर धारि ॥
माया बशते शरपञ्जर करि छायसि दशौ दिशा महँ बान ।
बच्यो न कौनौ थल लोपेदिन औघट घाट बाट हरियान ॥
जायँ कहाँ कित कपि ब्याकुल बहु योधा सकल उठे घबड़ाय ।
मानहुँ सुरपति के कारागृह परिकै मेरु रहे अकुलाय ॥
अङ्गद हनुमतलै बानर यत नल अरु नील आदि बलशील ।
सबकोउ ब्याकुलभे औसर त्यहि जीवन आश दीनि उरढील ॥
इत कपिसैना सब ब्याकुल करि फिरि उतगयो बीर घननाद ।
जहां बिभीषण अरु बानरपति राजत शेष सहित उरगाद ॥
अगणित बानन की बर्षा करि सब तन ताय दीन बहु घाय ।
पुनि रघुनन्दन के सन्मुख ह्वै कीन्ह्यसि बाण बृष्टि झरिलाय ॥
अहि ह्वै लागैं शर छोड़े जो फण फटकारि लेयँ फुफकार ।
ब्याल फांस बश भे सीतापति स्वबश अनन्त एक अविकार ॥
बिबिध तमाशा करि मोहैं खल नटइव इन्द्रजाल करि भान ।
सब सुखराशी अविनाशी प्रभु सदा स्वतन्त्र राम भगवान ॥
आपु बँधायो रण शोभालगि दशा सो देखि दुखित भे देव ।
सिद्ध मुनीश्वर सब त्रासित भे जानत जे न स्वामिको भेव ॥
छूटिजात नर भव बन्धन ते जपि जिन रामचन्द्र को नाम ।

सो प्रभु आवै कस बन्धन तर व्यापक विश्ववास भगधाम॥
सगुण चरित ये रघुनन्दन के तर्कि न जाहिं बुद्धि मन बानि।
अस मन निश्चयकरि पण्डितजन रामहिं भजें तर्क सब भानि॥
यहिबिधि व्याकुल कपि सैनाकरि पुनि भा प्रकट दुष्ट घननाद।
अहंकार करि वहि औसरपर लाग्यो कहन मूढ़ दुर्वाद॥
जामवन्त कह खल ठाढ़ोरहु सुनि अस महाक्रोध उरआनि।
भल्लुकपति ते अस भाषत भा तोरिहु मीच मूढ़ नगिचानि॥
बूढ़ जानिकै खल छाँड़्यों त्वहिं लागे अधम प्रचारन मोहिं।
अस कहि तीक्षण शूल चलायासि चली सो जामवन्तके सोहिं॥
करगहि धायो सो भल्लुकपति मार्यो मेघनाद उर माहिं।
पर्यो धड़ाका गिरि धरती महँ घुर्मित रह्यो चेत कछु नाहिं॥
इतनौ कीन्हे पर गै ना रिस तब गहि एक हाथ द्वउपायँ।
लाग घुमावन त्यहि वज्रीसम पुनि महि पटकि दीन कछदायँ॥
मर्यो न मारा बरदानी खल तब लङ्कापर दीन चलाय।
इतै हकीकति अस बीततिभै सुनिये अग्र चरित मुनिराय॥
अहि बन्धन लखि रघुनन्दन को नारद गरुड़हि दीन पठाय।
सपदि सो आयो रघुनायक ढिग धरिधरि सकल सांपगे खाय॥
बचे बचाये ते गिरिजा झट माया नाग भाग भयखाय।
छूटि ततक्षण गो बन्धन तब हर्षे भालु कीश समुदाय॥
गहि गिरि पादप अरु पत्थर नख धाये कीश बीर बरियार।
भगे निशाचर भय व्याकुल ह्वै छाँड़्यो समर लरन को कार॥
उत घननादहु के मुर्च्छा गै पितहि बिलोकि लागि बड़िलाज।
गयो सो तुरतै गिरि कन्दर महँ करिबे अजय यज्ञ के काज॥
खबरि बिभीषण ने पाई यह तब राघव ते कह्यो बुझाय।
यज्ञ करत है इन्द्रजीत प्रभु जो वह कबहुँ सिद्धि ह्वै जाय॥
तौ फिरि जीतबु मुश्किल ह्वै है इतना बचन करौ प्रभु कान।
बचन बिभीषण के सुनिकै अस अतिशै खुशी भये भगवान॥

अङ्गद आदिक भट बृन्दन कहँ लीन बुलाय राम रघुराय ।
हाल बतायो कहि तिनते सब लक्ष्मण संग जाहु सब भाय ॥
जाय बिनाशौ मख निश्चर की नातरु काज बादि ह्वै जाय ।
लक्ष्मण मारौ तुम ताको अब देउता सकल रहे भयखाय ॥
बीर बिभीषण अरु भल्लुकपति सह सुग्रीव रखावैं सैन ।
सुनि असबानी धनुपानी की भये तयार बीर रिपु जैन ॥
अहिपति बाँध्यो कटि तर्कस कसि कर महँ लीन शरासन बान ।
प्रभु प्रताप को उर धारण करि उठिकै सभा मध्य बतलान ॥
बारिदनादहि संहारे बिन जो मुख आनि देखावों आज ।
तौ रघुनन्दन को सेवक नाहिं अस कहि कुपित भये अहिराज ॥
एक यज्ञकी कछु गनती ना जो सौ यज्ञ करै मनलाय ।
आजु न छाँड़ौं त्यहि मारे बिन साँची शपथ स्वामि की आय ॥
श्रीरघुनन्दन पद बन्दन करि चले अनन्त बीर असभाषि ।
अङ्गद हनुमत से बाँके भट गमने साथ युद्ध अभिलाषि ॥
जाय कुम्भिला महँ दाखिल भे जहँ पर यज्ञ करत घननाद ।
शोणित भैंसा दै आहुति खल माँगत बिजय सहित अह्लाद ॥
लाग बिध्वंसै मख बानर भट सामा सकल दीनि बिथराय ।
उठा न तबहूं वह आसन ते तब धरि बार घसीटैं धाय ॥
लात मारिकै कोउ भागत भे कोऊ हनै मुष्टिका घात ।
भई दुर्दशा यहि भाँतिन जब तबखल उठा क्रोध भरि गात ॥
चला कपिन तन कर त्रिशूल लै भागे सकल कीश भय खाय ।
आय पहूँचे अहिनायक ढिग आवा तहौं इन्द्रजित धाय ॥
घोर गर्जना करि केहरि सम छाँड़न लाग घने हथियार ।
अङ्गद हनुमत कहँ मुर्च्छित करि प्रभु तन चला मारि ललकार ॥
भयो सामना द्वउ बीरन का इकते एक दई के लाल ।
शूल चलायसि अहिनायक पर सो प्रभु काटि गिराई हाल ॥
तौलौं अङ्गद अरु मारुतसुत मुर्च्छा बिगत उठे रिसिआय ।

मारन लागे इन्द्रजीत कहँ आवत पै न अङ्गमहँ घाय ॥
मरै न मारो रिपु आये फिरि धावा पुनि चिघारि घननाद ।
क्रुद्ध कालसम त्यहि आवत लखि भये सरोष शेष उरगाद ॥
तीक्षण शायक हनि मारत भे फर फर चले बान बिकराल ।
आवत देख्यसि शर निश्चर तब अन्तरधान भयो त्वरचाल ॥
बिबिध बेष धरि रण ठानै खल प्रगटै कबहुँ कबहुँ दुरि जाय ।
देखि अजयरिपु मन डरपे कपि भे तब महाकुपित अहिराय ॥
शोचन लागे मन लक्ष्मण अस अबलगि बहुत खेलायों याहि ।
जियत न छाँड़ौं अब मारौं यहि जाते सकल काज बनि जाहि ॥
अस बिचारि उर रघुनायक को प्रबल प्रताप सुमिरि मन माहिं ।
धनु गुन तान्यो संधान्यो शर तनिक बिलम्ब कीन तब नाहिं ॥
छाँड़्यो शायक अहिनायक ने लाग्यो तासु हृदय महँ जाय ।
गिरयो अचेतन ह्वै वसुधामहँ दीन्ह्यों कपट जाल बिसराय ॥
राम राम कहि रामानुज कहि दीन्ह्यसि छाँड़ि प्रान हरियान ।
धन्य इन्द्रजित तव माता को भाषत अस अङ्गद हनुमान ॥
तासु मरण सुनि सब देउतागण आये नभ महँ साजि बिमान ।
करि करि वर्षा बर फूलन की लागे करन स्वामि गुणगान ॥
बजे नगारा हहकारा करि जय जयकार शब्द रह छाय ।
जय रघुनन्दन दुष्टनिकन्दन जय अहिराय सन्त सुखदाय ॥
भले सँहारयो प्रभु पापी यह सुर परितापी दुष्ट महान ।
आपदि टारयो मुनि देवन की जय भगवन्त अनन्त सुजान ॥
यहि बिधि अस्तुति करि देउता सब हर्षित गये आपने धाम ।
लक्ष्मण आये रघुनायक ढिग कीन्ह्यों माथ नाय परणाम ॥
इतै हकीकति अस बीतति भै उत कर हाल सुनो खगपाल ।
भयो कोलाहल गढ़ लङ्कामहँ सुत को मरण सुन्यो दशभाल ॥
गिरयो धरित्री महँ मुर्च्छित ह्वै लाग्यो माथ पीटि पछिताय ।
हाय बिधाता का मर्जी भै जूझ्यो मोर पुत्र उमराय ॥

खोई ठकुरी सब लङ्का की बेड़ा कौन लगै है पार ।
हाय गोसइँयाँ यह कीन्ह्यों कह जूझ्यो मोर पुत्र सरदार ॥
यहि बिधि खलभलि भै लङ्कामहँ रोदन करै मँदोदरि रानि ।
छाती पीटै महि पटकै शिर कहि कहि महा दुखारत वानि ॥
भये दुखारी नर नारी सब आपस माहिं रहे बतलाय ।
नीच निशाचर पति समुझैना मानत मनुज ईश्वरहि भाय ॥
तियन बुझावै तब निश्चरपति धीरज धरो कुओसर जानि ।
शोच बिसारौ सब हिरदय ते मिथ्या जग प्रपञ्च यह मानि ॥
ज्ञान बुझावत खल औरन कहँ छोंड़त आपु दुष्टता नाहिं ।
पर उपदेशक बहुतेरे नर जे आचरैं ते न बहु आहिं ॥
निशा सिरानी यहि भाँतिन ते सविता उये भयो भिनुसार ।
बिषधर फौजै कपि भालुन की रूंध्यो लङ्क चारिहू द्वार ॥
खबरि दशानन ने पाई यह घेरी लङ्क बँदरवन आय ।
बेगि बुलायो रण शूरन का तिनते कहन लाग समुझाय ॥
डरै लराई ते जाको मन सो बरु अबहीं जाय पराय ।
जो कोउ भागी रण सन्मुख ते त्यहि के खाल लेहौं कढ़वाय ॥
बैर बढ़ायों मैं अपने बल देखिहौं शत्रु केरि मनुसाय ।
अस कहि साज्यो पवन बेग रथ शोभा जासु बरणि ना जाय ॥
करैं तयारी सब योधागण साजन लगे आपने साज ।
बजो नगारा तब लश्कर मा साजत शस्त्र निशाचरराज ॥
मारूबाजा बाजन लागे बैरख ध्वजा लाग फहरान ।
ढाढ़ी करखा बोलन लागे घूमन लागे लाल निशान ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे घोड़न चढ़े छबीले ज्वान ।
रथी महारथि रथपर चढ़िगे कीन्ह्यों युद्धभूमि प्रस्थान ॥
त्यहिक्षण रावणचल्यो समरका अशकुन अमितभये त्यहिकाल ।
गनै न तनकौ अभिमानी सो जावा चहत काल के गाल ॥
गिरैं हाथते छुटि आयुध महि रथते गिरैं लुढ़िकि सरदार ।

हाथी घोड़ा चिघरि चिघरिकै भागैं साथ छाँड़िकै यार ॥
गदहा रेंहकैं करि तीक्ष्णस्वर करैं सियार मङ्गलाचार ।
गीध चिल्हारिन मण्डल बांधे रोवैं श्वान छांड़ि बुँबुकार ॥
कालदूत सम गदहा बोलैं भीषण बोल सुने ना जायँ ।
तऊ न मानत भय निश्चरपति बलकरि जितो चहत जगसायँ ॥
ताको संपति सुख शकुनाकहँ किमिकै होय क्षेम कल्यान ।
भूतद्रोह महँ रत रातिउ दिन रघुपति बिमुख मूढ़ अज्ञान ॥
आगे स्यन्दन दशकन्धर का घन घंन घण्ट रहे घहनाय ।
जोते खच्चर त्वरबाहक युग बैरख ध्वजा रहे फहराय ॥
सब दल बादल त्यहि पीछे है चतुरंगिनी अनी अप्रमान ।
बिबिध भांतिके रथ वाहनवर शोभा करै कौन कबि गान ॥
चले दँतारे मतवारे गज पावस मेघ सरिस तन श्याम ।
नवल बछेड़ा चञ्चल गतिके अगणित जाति पांति अभिराम ॥
बिबिध वर्णके निशिचारी भट भारी शूरबीर सरदार ।
समर अशङ्का अति बङ्कारवल मायाकार माहिं हुशियार ॥
हहर छाय गै दशहू दिशि मा काधौं होनहार कर्तार ।
बजैं नगारा जहँ साँड़िनिन पर औ गजघण्ट शब्द झनकार ॥
मारु मारु कहि मोहरि बाजैं बाजैं हाव हाव करनाल ।
शंख नफीरिन की धुनि छाजे ह्वै रहे प्रलय काल के हाल ॥
डगमग डगमग धरती कम्पै डोलन लगे कमठ अहिराज ।
देउता कम्पे आसमान मा देखत महा समर को साज ॥
छई अँधेरिया चारिहु दिशि मा लोपे समर क्षारसों भान ।
गर्जैं योधा गज केहरि से एकते एक बीर बलवान ॥
कहै दशानन तब बीरन ते तुम रण हनो हाँकि कपिभालु ।
राजकुँवर द्वौ संहरि हौं मैं जिनको आय पहूँच्यो कालु ॥
अस कहि साम्हू चलि सैना सह आयो युद्धभूमि मैदान ।
खबरि पाय उत खबरदार ह्वै धाये भालु कीश बलवान ॥

जुटिगे मुर्चा दुहुँ ओरन ते ज्वानन धरे अस्त्र निज पानि ।
भिरे बीर इत रघुनायक के उत दशशीश ईश जय ठानि ॥
निकषा नन्दन है स्यन्दन पर बिन रथ रामचन्द्र भगवान ।
देखि बिभीषण मन चिन्तित भो औ राघव ते लाग बतान ॥
नाथ न चढ़िबे को स्यन्दन है औ ना चरणकमल महँ त्रान ।
कौन भाँतिते रण करिहौ प्रभु मरिहौ कसस शत्रु बलवान ॥
कहो बिभीषण को सुनिकै इमि बोले बिहँसि राम भगवान ।
सखा न संशय उर आनौ कछु ज्यहि जय होय तौन रथ आन ॥
धीर्य शूरता हैं पहिया ज्यहि ध्वजा पताक शील औ सांच ।
बल बिबेक दम अरु पराय हित जोते चारि अश्व करि जांच ॥
क्षमा दया अरु समदृष्टी ये तिलरी बाग डोरि है लागि ।
भजन ईश्वर को सारथि स्वइ सकै न भागि जौन रथ त्यागि ॥
ढाल बिरति की अति सुन्दरि दृढ़ संतुष्टता स्वई तरवारि ।
दान कुल्हाड़ा अरु सांगी बुधि ज्यहिते हनै शत्रु ललकारि ॥
अमल अचञ्चल मन तर्कस है संयम नियम अनेकन बान ।
ब्रह्म चिन्तवन सो धनुहाँ है कवच अभेद बिप्र सन्मान ॥
शत्रु जीतिबे हित यहिते बढ़ि दुजो उपाय नहीं है भाय ।
सखा धर्ममय रथ जाके अस ताके शत्रु न परै दिखाय ॥
जीति सकै सो भट सहजे महँ अतिशय अजय शत्रु संसार ।
अस दृढ़ स्यन्दन है जाके लग मानहुँ सखा कथन यह सार ॥
शारँगपानी की बानी सुनि निश्चर बंश हँस हर्षाय ।
माथ नवायो प्रभु पायँन महँ दीन्ह्यों भले नाथ समुझाय ॥
उत दशकन्धर ललकारत है अपनी घनी अनी के ज्वान ।
आजु बीरता को अवसर है सुभटौ गहौ समर मैदान ॥
इत युवराजा अरु अञ्जनिसुत हाँकत कीश भालु बलवान ।
जोरी जोरी कै भिरनी भै निज निज स्वामि केरि करि आन ॥
अपने अपने तब मुर्चन पर योधा करन लाग घमसान ।

बलकरि दपटैं इत उत झपटैं ताकि ताकि हनै सुघरुआ ज्वान॥
खटखट खटखट तेगा बरसै बोलै छपक छपक तलवार।
शेल दुधारा बाजन लागे गाजन लगे शूर सरदार॥
शायक बरसैं दूनौ दलमा मानौ मघा नखत झरि लागि।
शूल तमंचा कड़ाबीन औ भरि पिस्तौल चलावत आगि॥
गदा प्रहारैं मुद्गर मारैं झारैं कतौं तेग के हाथ।
छुरी कटारिन के झरि लागी गोली चलै हवा के साथ॥
खाँड़े दुधारा बाजन लागे भाजन लगे भगैया ज्वान।
तीर कैबरी छूटन लागे बरसन लगे अगिनियाँ बान॥
शिलाखण्ड अरु तरु आयुध लै कोपे समर कीश अरु भालु।
अगणित योधा भुइँमा गिरिगे लागे अङ्ग घाउ बिकरालु॥
सिद्ध मुनीश्वर ब्रह्मादिकसुर देखैं युद्ध खड़े असमान।
गिरिजा हमहूं रहे तहाँपर देखत समर चरित धरिध्यान॥
रणमहँ माते भट दोऊ दिशि पै जय होत बँदरवन केरि।
जिन्हैं सहायक रघुनायक प्रभु तिनको कहाँ कबहुँ अवसेरि॥
भिरैं प्रचारैं इक एकन कहँ मर्दैं एक एक महिडारि।
धरैं पछारैं नख फारैं तन शीशन हनैं शीश फटकारि॥
भुजा उखारैं उदर बिदारैं पदगहि पटकिदेयँ महि माहिं।
प्रबल लड़ाई त्यहि औसर भै निज पर सूझि परत क्यहु नाहिं॥
हनै भालुकपि ज्यहि निश्चर को ताको करैं फेरि असहालु।
गढ़ा खोदिकै महि गाढ़हिं भट ऊपर डारिदेहिं बहुबालु॥
युद्ध बिरुद्धे अति बन्दरगण क्रुद्धे मनौ अनेकन काल।
शोणित बुन्दा तनमहँ दरशैं फागुन मनौ रङ्गके ख्याल॥
कटक निशाचर भट मर्दैं बहु गर्जैं प्रलय मेघ की नायँ।
दांतन काटैं अरु डाटैं पुनि थपरन मारि मारि भगिजायँ॥
उदर बिदारैं मुखफारैं धरि पहिरैं गले आंतकी माल।
धरे अनेकन तन नरहरिजन खेलत समर [illegible] बिकराल॥

गरुई गाजै कपि भालुनकी निश्चर सहि न सकै खगराय ।
भगे भयातुर ह्वै संगर ते भूले युद्ध करन के चाय ॥
भागत सेना लखि लङ्कापति दश कोदण्ड धरे दश हाथ ।
रिसकरि गर्जा समरभूमिमा दशा सो कहि न जाय खगनाथ ॥
लौटौ लौटौ कहि योधन ते अपना धस्यो धनुष पर बान ।
सुमिरि भवानी जगदम्बाका लाग्यो करन युद्ध घमसान ॥
युद्ध उपस्थित लखि रावणको बानर भालुभये हुशियार ।
गहिगिरि पादपकर धावतभे सन्मुख मारि मारि किलकार ॥
बृक्ष पहारन सों तोप्यो रथ लागत शैलबज्र तन तासु ।
रुधिर पनारन बरसन लाग्यो फूट्यो अङ्गअङ्गको माँसु ॥
रह्यो रोंकि रथ तउ भाग्योना दुर्मद यातुधान वलवान ।
परम क्रोधते शर वर्षाकरि दीन्ह्यों तोपि भूमि असमान ॥
इत उत झपटै अरु डपटै कपि मर्दै परम क्रोध उर आन ।
भगे भालु कपि भय ब्याकुल ह्वै अङ्गद त्राहि त्राहि हनुमान ॥
पाहि पाहि हे रघुनायक प्रभु यह खल खाय कालकी नायँ ।
भगे भालु कपि अस देखा त्यहिं दश धनुधरे दशों कर मायँ ॥
तानि शरासन गुन काननलग बरसनलाग अग्निवत बान ।
लगैं उरगह्वै सों देहिनमा दशा सो कहि न जाय हरियान ॥
दशों दिशामहँ शायक पूरे धरणी आसमान रहछाय ।
भयो कोलाहल कपि सैनामहँ यहि क्षण राखिलेहु रघुराय ॥
बिचलत आपन दल देख्यो तब लक्ष्मण नाय राम पदमाथ ।
चले सरोषित कटि भाथा कसि लैकै बान शरासन हाथ ॥
आय सामुहे दशकन्धर के कह्यो पुकारि लक्ष्मण लाल ।
ऋक्ष बानरनका मारत खल मोहिं बिलोकु तोर मैं काल ॥
बांक हांक सुनि भट लक्ष्मण की बोल्यो कुपित निशाचरराज ।
रे सुतघाती तोहिं खोजत मैं हतिरण हृदय जुड़ावहुँ आज ॥
असकहिछांड्यसिअतितीक्षणशरत्यहिदुइखण्डकीन अहिराय ।

कोटिन आयुध फिरि छांड़तभो तिलसम काटि दीन महिनाय ॥
पुनि संधान्यो धनु लक्ष्मण प्रभु तीक्षण बान कीन परिहार।
चूरण कीन्ह्यों रथ रावणका औ सारथी कीन संहार ॥
सौ सौ शायक दश भालन महँ मारे तानि तानि अहिराज।
मेरु कँगूरन जनु प्रबिशैं अहि व्याकुलभयो निशाचरराज ॥
सौ सौ शायक उर मारे हनि धरती गिर्‌यो मूर्च्छा खाय।
एक मुहूरत महँ मुर्च्छा गै तब उठि ठाढ़ भयो रिसिआय ॥
साँगि बिधाताने दीन्हीसो लीन्ही अति प्रचण्ड करधारि।
ताकि चलाई सो लक्ष्मण पर लागी हृदय बीच उरगारि ॥
गिरे मूर्च्छित ह्वै बसुधा महँ रह्यो न चेत तनक तन माहिं।
चहत उठावा दशकन्धर खल जानत कछु प्रभाव ज्यहि नाहिं ॥
ब्रह्म अण्ड सब इक माथेपर राजत धूरि कनीकी नायँ।
चहत उठावन त्यहि रावणखल जानत नहिं त्रिलोक के सायँ ॥
देखतै धावा भट अञ्जनिसुत कहत कठोर बचन ललकारि।
आवत मार्‌यासि त्यहि छाती महँ मुष्टिप्रहार घोर निशिचारि ॥
गिर्‌यो न तबहूं महि अञ्जनिसुत रहिगो जाँघ टेकि कै ठाढ़।
रिसभरि धावा फिरि रावण तन अँग अँग बढ़्यो क्रोध बे खाढ़ ॥
मार्‌यो घूंसा इक हनुमत त्यहि धरती गिर्‌यो मुर्च्छि दशभाल।
गिरै मेरु ज्यों पवि लागे ते ह्वैगो महा हाल बेहाल ॥
एक मुहूरत महँ मुर्च्छा गै जागा तबहिं निशाचरराय।
लाग सराहन कपि विक्रमको धनि त्वहिं प्रसव कीन ज्यहिं माय॥
क्रोधित बोल्यो पुनि अञ्जनिसुत है म्वहिं सहसबार धिक्कार।
धिक है मोरे बल पौरुष का जो तैं जियत उठे बदकार ॥
असकहि आयो ढिग लक्ष्मण के लीन उठाय गोद अनयास।
देखि दशानन संदेहित भो आगे कथा सुनौ मतिरास ॥
लायो शेषहि कपि राघव ढिग तब रघुबीर कही यह बात।
हौ तुम अन्तक अन्तकहू के अस उर समुझि जागिये भ्रात ॥

उठे तड़ाका अहिनायक तब गगन गई सो शक्ति कराल ।
धरि धनुशायक पुनि आये चलि रण सामुहें जहाँ दशभाल ॥
तानि शरासन गुन कानन लग तीक्षण बान कीन संधान ।
स्यन्दन भञ्जन करि सारथि हति दश आननहिं कीन हैरान ॥
मारे बानन के छेद्यो तन धरती गिर्यो निशाचरराय ।
दुजो सारथी त्यहि रथमा धरि लङ्का लै गयो प्रान बचाय ॥
महा प्रतापी अहिनायक प्रभु प्रभु ढिग आय नवायो माथ ।
हाथ पकरिकै निज गोदी महँ लियो बिठाय राम रघुनाथ ॥
इतै हकीकति अस बीतति भै अब उत सुनौ लङ्कको हाल ।
बिगत मूर्च्छा ह्वै निश्चर उत कीन्ह्यों मखारम्भ ततकाल ॥
राम बिमुख ह्वै जय चाहत शठ हठ बश करत अज्ञ को काम ।
यह नहिं जानत रघुनायक प्रभु हैं खलघायक बिक्रम धाम ॥
इहाँ बिभीषण सुधिपाई यह प्रभु सों कह्यो जाय सब हाल ।
नाथ दशानन मख साधत यक बिगरै सिद्धि भये सब ख्याल ॥
मरी न कौनिउँ बिधि मारे फिरि इतना कहा मानिल्यो नाथ ।
बेगि पठावो भट बँदरन कहँ करैं बिध्वंस आव दशमाथ ॥
भये सबेरा पहु फाटत प्रभु लीन बुलाय कीश बलवान ।
भाषि बुझाये ते धाये सब अङ्गद हनुमदादि बहुज्वान ॥
कौतुक कूदि चढ़े लङ्कापर पैठ अशङ्क दशानन धाम ।
यज्ञकरत त्यहि अवलोक्यो जब कोपे सकल कीश बलधाम ॥
भागि समर ते शठ आये गृह इत बक ध्यान लगाये आय ।
शर्म न तनिकौ बेशर्मा त्वहिं है धिक बल पौरुष मनुसाय ॥
असकहि क्रोधित ह्वै तारासुत लात प्रहार कीन खगराय ।
चितवन तबहूं शठ स्वारथरत चाहन बिजय करन जगसाँय ॥
देखत नाहीं जब कीशन तन तब अस करन लाग उत्पात ।
कचगहि दांतन सों काटत अरु मारत गात मुष्टिका लात ॥
केश पकरिकै महरानिन के लावत खैंचि धाम के द्वार ।

बिकल पुकारत अति आरत ते दशा सो कहि न जातहै यार ॥
आरत बाणी सुनि रानिनकी उठ्यो कृतान्त सरिस रिसि आय।
गहि पदपटकै महि कौशन को भागे सुभट महाभय खाय ॥
पायबीच अस मख ध्वंसन करि कपि सब गये राम के पास।
चल्यो लङ्कपति तब क्रोधित ह्वै हियते छांड़ि जियनकी आस ॥

इति श्रीभार्गववंशावतंसश्रीमन्मुंशीनवलकिशोरात्मजस्यश्रीमुंशीप्रयाग नारायणस्याज्ञाभिगामीउन्नामप्रदेशान्तर्गतमसवासीग्रामनिवासीपण्डित बन्दीदीनदीक्षितनिर्मितश्रीविजयराघवखण्डेयुद्धकाण्डेमेघनादयुद्धव वधवश्रीलक्ष्मणवरावणप्रथमयुद्धवर्णनोनामषष्ठोल्लासः ॥ ६ ॥

श्रीरघुनन्दन पद बन्दन करि उरधरि चरण कमल अभिराम।
परम बीरता युत वर्णत हौं रावण राम केर संग्राम ॥
भये सबेरा पहु फाटत खन उठा सकोप निशाचरराय।
बोलि नगरची को आयसु दिय डङ्का ठोंकु बीर रसछाय ॥
बजो नगारा हहकारा करि निश्चर सकल भये तय्यार।
प्रथम नगारा मा जिनबन्दी दुसरे बाँधि लीन हथियार ॥
तिजे नगारा के बाजत महँ सब दल सजा निशाचर क्यार।
अस्त्र शस्त्र धरि सजि लङ्कापति अपनो रथपर भयो सवार ॥
गमन्यो आतुर युद्धभूमि को लैसँग अप्रमान बलवान।
अशुभ भयंकर भे गमनत महँ सो सब कहि न जायँ हरियान ॥
गीध शिरन पर उड़ि उड़ि बैठैं बोलैं काग अमङ्गल बानि।
रेंहकैं गर्द्दभ अति उच्चस्वर मानत सो न दुष्ट हठ ठानि ॥
मारूबाजा बजवावत खल पहुँच्यो युद्धभूमि महँ आय।
दल निशाचरी बतलावै को जाको वार पार नहिं भाय ॥
बाजि अपारन बहुवारन दल रथी पदादि सुतर असवार।
प्रभुके सोहीं खल धाये कस जस आगी पर शलभ अपार ॥
इत सुर बिनवैं रघुनन्दन को प्रभु यह दुष्ट महा दुखदाय।
अब न खेलावो यहि संगर महँ बहु दुख लहत जानकी माय ॥

देव बचन सुनि मुसकाने प्रभु धर्यो सुधारि शरासन बान ।
बांध्यो शिरपर जटाजूटकसि बिच २ सुमन गुच्छ अरुभ्मान ॥
अम्बुज दल सम रतनारे चष तन घनश्याम प्रभा अभिराम ।
कटि दृढ़ फेंटा अरु तर्कस कसि कर लै धनुषबाण बलधाम ॥
लसैं मनोहर भुज आयतउर तामहँ विप्र चरणको अङ्क ।
बीररूप इमि लखि प्रभुको तन खल दल सकल भयो युतशङ्क ॥
धनुशर कर लै प्रभु फेर्यो जब दिग्गज कमठ शेष थहरान ।
धरा धराधर डोलन लागे उछलन लग्यो सिन्धु को पानि ॥
अनुपम शोभा लखि राघव की देउता फूल रहे बरसाय ।
सुयश सुनावैं गुणगण गावैं जय जय शब्द रह्यो अति छाय ॥
त्यही समइयाके अवसरमहँ निश्चर सैन देखि कपि भालु ।
धाये इत उत करि उच्चस्वर नानारङ्ग रूप विकरालु ॥
प्रलयकालके जनुबादल दल शोभा कछू कही ना जाय ।
दूनौ फौजें इक मिल ह्वै गईं धरु २ मारु शब्द रह छाय ॥
खड्ग चमंकैं दुहुँओरन महँ दामिनि दमकि रही जनु भाय ।
चिघरैं हाथी रथ हिकरैं हय गर्जत मनहुँ मेघ समुदाय ॥
पूंछैं बँदरन की छाईं नभ मानहुँ उये इन्द्रधनु यार ।
उड़ैं क्षार जनु जल बर्सत है बाण बुन्द भइ बृष्टि अपार ॥
मेरु प्रहारैं दुहुँ ओरन ते जनु पवि पात होत बहुबार ।
लोपे दिनकर समर क्षार सों चहुँदिशि छाय रह्यो अँधियार ॥
कीन्ही शायक झरि राघव तब घायल भये निशाचर भूरि ।
शायक लागे ते चिघरैं भट जहँ तहँ गिरैं घूमि महि पूरि ॥
झरै पहारन ते झरना जनु शोणित नदी रही उमड़ाय ।
देखत डरपैं मन कादरजन दशा सो कहि न जाय खगराय ॥
ढूऊ किनारा हैं दोऊदल रथ सो रेत सरिस दिखराय ।
रथ के पहिया सो भवँरै जनु देखत हृदय जाय भयछाय ॥
हाथी घोड़ा अरु खच्चरखर प्यादे परे जूझि त्यहि माहिं ।

सो जनु जलचर हैं नदियामहँ बूड़त बहत परे उतराहिं ॥
तोमर शायक अरु सांगी अहि चाप तरङ्ग कमठ जनुढाल ।
गिरे जूझि भट सो तट के तरु मज्जा स्वई फेन खगपाल ॥
समर योगिनी मङ्गल गावैं धावैं भैरव भूत पिशाच ।
हार बिराजैं हिय आंतन के करैं अनेक भांति के नाच ॥
खप्पर साजे चामुण्डा गण लरि लरि माँसहि करैं अहार ।
झुण्ड चिल्हारिन के रणवर ये सब दिशि तोपे काग सियार ॥
अमित चुरैलैं रणमा घूमैं लीन्हे कुण्ड शीश साजि हाथ ।
उठैं कबन्ध बीर रण नाचैं भैरव भूत नाथ के साथ ॥
भयो कोलाहल अति संगरमा गीधन लियो सुमण्डफ छाय ।
भये बराती सब जम्बुकगण भैरव नाचैं मोर धराय ॥
काक कङ्कलै भुज बीरन के रहे उड़ाय गगन महँ भाय ।
धाय जाय कै इक एकन ते झपटि छँड़ाय लेत हैं खाय ॥
एक एक ते समुझावैं तब अरे दरिद्रिहु बात बनाव ।
यहि बहुतायत पर ऐस्यो क्षण छूटत नाहिं दरिद्रको दाव ॥
परे कराहैं भट घायल तट जहँ तहँ मनहुँ अर्ध जल आहिं ।
बहे जात भट खग बैठे तहँ खेलत जनु नेवार सरि माहिं ॥
गीध किनारे ते बैठे प्रिय आँतैं खींचि रहे यहि भाँति ।
बालक बंसी जनु खेलत हैं दशा बिचित्र बरणि नहिं जाति ॥
बिना मुण्डके धड़ धावैं बहु लीन्हें कर कृपान तरवारि ।
शीश परे महि जय बोलत हैं माची महा भयंकर रारि ॥
जे कोउ योधा सम्मुख जूझैं सुरपुर जाहिं बैठिकै यान ।
मारि निशाचर दल मर्दन करि बानर भालु लाग किलकान ॥
रामचन्द्र के शर घायन ते सोवहिं सुभट अजिर संग्राम ।
सैन सिरानी सब निशिचर की कोउ २ भगे प्राण लै धाम ॥
हृदै बिचास्यो दशआनन तब भे सब यातुधान संहार ।
मैं एकाकी कपि भल्लुक बहु सम्मुख लरे न पैहों पार ॥

माया बिरचौं यहि औसर पर तब चाहै कछु चलै उपाय।
करि उर चिन्तन इमि निशचर खल माया करनलाग खगराय॥
सुरन पयादे प्रभु देखे इत तब उर संशय भयो अपार।
सुरपति आपन रथ पठयो त्वर अति दृढ़ परम ज्योति आगार॥
मातलि सारथि लै आवा सो त्यहि पर चढ़े हर्षि रघुराय।
चारि बछेड़ा ज्यहिमा जोते चाल बिलोकि बाय सरमाय॥
रथारूढ़ लखि रघुनायक को धाये कपि बिशेष बलपाय।
लगे प्रहारन तरु पाथर गिरि व्याकुल भयो निशाचर राय॥
मारु कपिन की सहिजावै ना तब मायाकर किह्यसि पसार।
छाँड़ि अकेले रघुनन्दन को मानी सबन सत्य सो यार॥
सैन निशचरी बँदरन देखी ज्यहिमा अमित कीश बलवान।
अङ्गद लक्ष्मण कपिनायक बहु बहुनक जामवन्त हनुमान॥
देखि तमाशा अस बानरगण जहँ तहँ चित्र लिखे से ठाढ़।
चकित बिलोकैं दिशि चारिहु महँ शङ्कित हृदय भीतबेखाढ़॥
आपनि सैना लखि व्याकुल तब मन मुसकान राम भगवान।
तानि शरासन गुन कानन लग तीक्षण बान कीन संधान॥
एक मुहूरत महँ माया हरि कीन्ह्यो दशौदिशा उजियार।
कीश भालुगन हर्षाने मन जय जयकार करत बहुबार॥
देखि बानरन दिशि बोले प्रभु होवहु सावधान सब ज्वान।
द्वन्द युद्ध अब अवलोकहु इत करि रण थके सकल बलवान॥
दुष्टनिकन्दन रघुनन्दन प्रभु कहि अस सैनपतिन सों बात।
स्यन्दन हाँक्यो युद्धभूमि कहँ द्विजपद शीशनाय कै तात॥
रथ रघुनन्दन को आवत लखि क्रोधित भयो निशाचर राय।
सम्मुख आवा गर्जि तर्जि कै प्रभुतन चितै लाग बतलाय॥
खबर्दार हो समरभूमि मा तापस मोर बचन करु कान।
अब लगि योधा रणजीते जो मोकहँ तिन समान मति जान॥
जगमहँ जाहिर है कीरति मम जानत सकल मोर व्यवसाय।

लोकप जाके गृह बँधुआ हैं रावण नाम निशाचर राय ॥
मारि कबन्धहि खरदूषण कहँ छलसे हन्यो व्याध इव बालि।
अगणित निश्चर संहारे रण घनस्वन कुम्भकर्ण बलशालि ॥
बदला लेहौं इन सबहिन का पौरुष आज देखिहौं तोर।
समरभूमि ते जो भगिहैना तौ हठिकरौं कालको कौर ॥
पस्यो न पाले केहु योधा के ताते हृदय बढ़थो अभिमान।
आज सामना है रावण का बचिबो महाकठिन है प्रान ॥
दुष्टवार्ता सुनि रावणकी यहिविधि ताहि कालबश जान।
दुष्टनिकन्दन रघुनन्दन प्रभु हँसि मुसक्याय लाग बतलान ॥
सत्य वीरता जग जाहिर तुव जल्पसि जनि देखाव मनुसाय।
बृथा बार्ता करि नाशत यश सुनु शठ नीति रीति मनलाय ॥
तीनि भाँतिके नर दुनियाँमहँ पनस गुलाब आँबकी नायँ।
केवल फूलहि को दाता इक इक फल फूल सहित दरशायँ ॥
इक महँ केवल फल लागत हैं है यह बात बिदित जगमाहिं।
करत न एकै कहि डारत हैं यक कहि करैं तौन शक नाहिं ॥
एकै केवल कहिबेही के कछू न कीन होय तिन क्यार।
तिन महँ त्वहिंका मैं जानतहौं शठ बकवाद करत बेकार ॥
रामबचन सुनि हँसि भाष्योखल अबम्वहिं लगे सिखावन ज्ञान।
करत शत्रुता डरलाग्यो ना अब कसलगैं पियारे प्रान ॥
दुष्टवचन इमि कहि लङ्कापति कानन लगे शरासन तान।
बान बज्र इव संधानत भा भभकी हृदय कोपकी सान ॥
अगणित शायक वर्षावत भो महि आकाश दीन शर छाय।
लोपे दिनकर शर पञ्जर ते बिदिशा दिशा देखि ना जाय ॥
तजे हुताशन शर रघुबर तब क्षण महँ जरे निशाचर बान।
भयो उजेरा चौगिर्दा ते नशितम गयो भान प्रगटान ॥
मनखिसियानो तब निश्चरपति छांड़चासि ब्रह्मशक्ति रिसिआय।
फेरि पठाई प्रभु शायक सँग बसुधा गिरी जाय महराय ॥

कोप प्रज्वलित भो रावण को छाँड़्यसि कोटि कोटि हथियार ।
चक्र शूल शर बहु भाँतिन के बर्सत यथा मेघ जलधार ॥
बिना परिश्रम प्रभु काटे सब मिलिगे तौन भूमि रजमाहिं ।
बिफल होत कस शर रावण के उद्यम यथा खलन के जाहिं ॥
सौ शर मारयसि तब सारथि के धरती गिरयो भाषि जयराम ।
ताहि उठायो प्रभु दायाकरि कोपे हृदय माहिं भगधाम ॥
युद्ध बिरुद्धे रघुनायक तब शायक धनुष कीन सन्धान ।
भयबश निश्चर काँपनलागे सुनि कोदण्ड चण्ड घहरान ॥
काँपनलागो मन्दोदरि उर भूधर कमठ शेश थहरान ।
चिघरैं दिग्गज महि दन्तन गहि कौतुक देखि देव मुसकान ॥
तानि शरासन गुन काननलग करि चषलाल सन्त सुरपाल ।
झरि असि शायक बर्सनलागे गमने लहलहात जनु ब्याल ॥
पहिले सारथि हयमारयो प्रभु भञ्ज्यो केतु पताका यान ।
थाको अन्तर बल निश्चर को देखे प्रभाव मूढ़ खिसियान ॥
चढ्यो तड़ाका रथ दूजेपर कीन्ह्यसि अमित बान सन्धान ।
हनि हनि मारै सो रघुपति पर निष्फल जात तौन हरियान ॥
बिफल होयँ जस परद्रोही के उद्यम सकल भाँति ते बाम ।
ताहीं बिधि ते शठ रावण के आयुध सकल होत बेकाम ॥
शूल चलावा तब रावण ने कीन्हे ब्यथित मारि हयचारि ।
गिरे धरामहँ बिन चेतन ह्वै तब उर कोप कीन असुरारि ॥
बाजि उठाये रघुनायक पुनि धाये कोपि धारि धनुबान ।
अगणित शायक बर्सावत भे छाये भूमि और असमान ॥
मानहुँ दशमुख शिर अम्बुज सम तिनके नाश करन के हेतु ।
शायक रघुपति के बारन हैं मानहुँ सत्य बात खगकेतु ॥
इक इक माथे महँ दश दश शर मारे ताकि सिया भर्तार ।
प्रविशि निसरिगे सो बाहर का शोणित श्रवै पनारन यार ॥
शोणित स्रवते महँ धावत भो रिसकरि बीस बाहु बलवान ।

बाँक हाँक दै ललकारत भो पुनि प्रभु धनुष कीन संधान॥
तीस शिलीमुख हनिमारे प्रभु भुजन समेत शीश किये नाश।
भये नवीने काटतही पुनि काटे फेरि राम अनयास॥
कटे भड़ाका जमि आये फिरि बीसौ भुजा दशौ शिरभाय।
अमित बार लगि प्रभु काटे सो कौतुक नयो भयो खगराय॥
शिरभुज छाये आसमान महँ मानहुँ अमित केतु अरु राहु।
धावत आवत नभ मारग ते शोणित स्रवत देखियत ताहु॥
लागत बिषधर शर रघुबर के एकौ गिरन न पावत भूमि।
इक इक शायक महँ छेदे शिर अगणित रहे तौन नभ घूमि॥
उपमा तिनकी बतलावत इमि जनु करि हृदय कोप दिननाहु।
किरण समूहन बिस्तारित करि पोहे अमित केतु अरु राहु॥
ज्यों ज्यों काटत प्रभु ताके शिर त्यों त्यों बाढ़त जात अपार।
जैसे बिषयिन के सेवन ते नित नित नयो बिबर्द्धत मार॥
बाढ़ि शिरन की लखि लङ्कापति बिसरा मरण कोप अधिकान।
घोर गर्जना करि गर्ज्यो शठ दशकर दशौ शरासन तान॥
कोप्यो अतिशै रण पुहमी महँ वर्सन लग्यो बान खरसान।
तोप्यो स्यन्दन रघुनन्दन को दशा सो कहि न जाय हरियान॥
रथ न दिखानो द्वै घटिका लगि लोपे जस निहार महँ भान।
कीन देवतन अति हाहा स्वन प्रभु तब धर्यो कोपि धनुबान॥
अमित नराचन की बर्षा करि काटे शत्रु शीश बहुबार।
ते सब पाटे दिशि बिदिशन महँ महि आकाश कीन बिस्तार॥
नभ पथ धावैं उपजावैं भय जयजयकार शब्द मुखभाखि।
राम लषण कहँ कहँ बानर पति कहँ हनुमान कहतअसमाखि॥
यहि बिधि हल्लाकरि धावैं शिर लखि भयभीत भाग कपिभाल।
धरि धनुशायक रघुनायक पुनि बेधे शरनि शीश करिमाल॥
शीश मालिका गहि हाथन महँ घूमत समर कालिका माय।
शोणित सरिमहँ करि मज्जन जनु पूजन जात समर बटमाय॥

महाक्रोध करि पुनि रावण ने छाँड़ी अति प्रचण्ड खरसाँगि ।
चली बिभीषण के सम्मुख सो दशहू दिशा गई द्युति जागि ॥
कालदण्ड सम सो आवत लखि श्रीरघुराव दया दरियाव ।
तुरत बिभीषण को पीछेकरि अपना सह्यो शेल को घाव ॥
लगे शक्ति के कछु मुर्च्छा भै देउता सकल उठे अकुलाय ।
प्रभु को कौतुक यह जानत नहिं होवै समाधान किमिभाय ॥
लख्यो बिभीषण प्रभु पायो दुख धायो गदाधारि रिसियाय ।
खबर्दार हो अभिमानी शठ अब तुव काल गयो नियराय ॥
अरे अभागे अब भागेहु ते बचैं न तोर समर महँ प्रान ।
शिवहि सहादर शिर अर्पे स्वइ इक के भये अनेकन आन ॥
बाचे अबलगि त्यहि कारण ते अब तव काल आय मड़रान ।
राम बिमुख शठ सुख चाहसि तैं ह्वै अभिमान बश्य अनजान ॥
अस कहि मार्यसि बिच छाती महँ गदा प्रहार वज्र सम यार ।
गिर्यो मूर्च्छित ह्वै धरती महँ स्रावित मुखन रक्त की धार ॥
सावधान ह्वै द्वै घटिका महँ धायो महा क्रोध उर आनि ।
भिरे काल सम बलवत्ता द्वउ द्वऊ अपार ओज की खानि ॥
मल्लयुद्ध करि इक दूजे कहँ मारत लात मुष्टिका तानि ।
उभै प्रचारत ललकारत अति हारत कउ न हारि हिय मानि ॥
जासु सहायक रघुनायक प्रभु शङ्का ताहि कौन की होय ।
मारनवारो त्यहि दुनियाँ महँ देखि न पर्यो आजुलगि कोय ॥
उमा बिभीषण दशआनन तन चितयो कबहुँ स्वप्न में नाहिं ।
भिरत काल सम सो रावण ते जाहिर प्रभु प्रभाव जगमाहिं ॥
थके बिभीषण अनुमान्यो अस अति बलवान बीर हनुमान ।
धायो पर्वत कर धारन करि रावण निकट जाय नियरान ॥
हय रथ सारथि हनिमारे सब एकैबार पहार प्रहारि ।
हन्योलात इक त्यहि छाती महँ करि किलकार घोर उरगारि ॥
काँपन लाग्यो तन रावण को सम्हर्यो गिर्यो नहीं महि माहिं ।

गये विभीषण रघुनायक ढिग कौतुक देखि नाथ मुसकाहिं ॥
बङ्का हङ्का दै लङ्कापति पुनि हनुमन्तहि हन्यसि प्रचारि।
चल्यो अञ्जनीसुत अम्बर तन पूंछ पसारि मारि किलकारि ॥
पूंछ पकरि कै हनुमन्ता की नभ तन चल्यो रावणो धाय।
योधा अमिरे द्वउ अम्बर महँ एकहि एक हनत रिसिआय ॥
मल्लयुद्ध भा द्वउ बीरन ते मारत लात मुष्टिका तानि।
खेलत कुश्ती जनु अम्बर महँ कज्जल अरु सुमेरु गिरि आनि ॥
लरैं अञ्जनीसुत छल बल करि निश्चर प्रबल जीति ना जाय।
तब रघुनायकको सुमिरण करि इक मुष्टिका हन्यो रिसिआय ॥
उठ्यो निशाचर गिरि धरती ते पुनि हनुमन्तै हन्यो प्रचारि।
लखैं तमाशा सुर अम्बरते दुइमा एक न मानत हारि ॥
जय जय भाषत सुर दोउन कहँ इकते एक दई के लाल।
देखि दुखारी हनुमन्ता को गर्जत चले अमित कपि भालु ॥
युद्ध विरुद्धो भट लङ्कापति सब कहँ मारि दीन बिचलाय।
कौनौ योधा अस देख्यो ना जो दुइ घरी खेतआड़िजाय ॥
पाय सुआयसु तब स्वामी को धाई सैन बँदरवन केरि।
लै गिरि पादप करि हाहा स्वन चहुँदिशि लियो रावणै घेरि ॥
हृदै विचार्यो तब लङ्कापति मैं हौं एक अमित कपिभालु।
पार न पैहौं छल कीन्हें बिन जाना भली भाँति मम हालु ॥
असकहि माया दर्शावत भो ज्यहिते कीश जायँ घबड़ाय।
भो अन्तर्हित द्वै घटिका लग पुनि खल प्रकट कीन बहुकाय ॥
जिते भालुकपि प्रभु सैना महँ तहँ तहँ तिते प्रकट दशमाथ।
अमित दशानन लखि व्याकुल ह्वै भागे कीश भालु खगनाथ ॥

स०। बीर अधीर भये सिगरे तजि संगर भूमि जहाँ तहँ भागे।
त्राहि पुकारत आरत ह्वै न सँभारत काहु कोऊ भय पागे ॥
हे रघुनायक होहु सहायक कोप कियो दशमाथ अभागे।
होत उबार न याकरते अब मारत अस्त्र हुताशन लागे ॥

गर्जि भयावन स्वर दशहू दिशि कोटिन रावन रहे विधाय ।
भगे सशङ्कित सुर अम्बर ते जियकी आशा तजौ अब भाय ॥
एक दशानन सुर जीते सब अब बहु भये लेहु अस जान ।
छिपौ कन्दरनके अन्दर भागि तौ बचि जायँ बरुकु यह प्रान ॥
शिव ब्रह्मादिक मुनि ज्ञानी यत जानत प्रभु प्रभाव कछु लेश ।
रहे अशङ्कित थित नभ महँ ते मानो शत्रु सांच अवशेश ॥
भगे बँदरवा भय कातर ह्वै हाहाकार गयो अति छाय ।
जनसुखदायक हे रघुनायक या क्षन हम कहँ लेहु बचाय ॥
बड़े लरैया जे संगर महँ अङ्गद हनूमान नल नील ।
कोटिन रावन गहि २ मर्दैं करैं न नेक समर महँ ढील ॥
पार न पावैं मायावी ते कपटी यातुधान बलवान ।
हिये हारिगे सब योधागण जान्यो यह चरित्र भगवान ॥
व्याकुल देखे सुर बानरगण मन मुसक्याय अयोध्या नाथ ।
साजि शरासन यक शायकहनि क्षणमहँ हते सकल दशमाथ ॥
हरी मुहूरत महँ माया सब जिमि रवि उदय अँधेरा जाय ।
देखि दशानन इक हर्षे सुर नभते फूल रहे बरसाय ॥
भुज उठायके रघुनायक ने फेरे सकल भालु कपिवीर ।
एक दूसरे के टेरेते लौटे हृदय आनि कछु धीर ॥
पाय सहारा प्रभु अपने को पहुँचे आय समर महि धाय ।
लगे पवाँरन पुनि पादपगिरि ज्याहे दिशि खड़ो निशाचरराय ॥
करत प्रशंसा नभ देउतागण सो सुनि कुपित भयो दशमाथ ।
मोहिं अकेला करि जान्यो इन ताते बदत हर्षके साथ ॥
मोर मरायल तुम सब दिनके दुष्टौ भूलि गयो सो आज ।
असकहि धावा नभ मारग का भागे सुरन सहित सुरराज ॥
बाँक हाँकदै ललकाय्यासि तब अब कहँ खलहु भागिकै जाव ।
पाहिले मारिहौं अब तुमहीं कहँ नातरु हिये रहै पछिताव ॥
देखि देवतन को व्याकुल अति धायो बालितनय युवराज ।

कूदि चरणगहि निशिचारी कहँ पटक्यो धरा लवा जस बाज ॥
हन्यो लत्वारा इक ऊपर ते फिरि भजि गयो रामके पास ।
उठ्यो सँभरिकै दशकन्धर त्वर गर्जि कठोर घोर नभवास ॥
दशौ शरासन कर धारन करि कीन्ह्यों अमित बान संधान ।
झरि असि शायक बर्सन लाग्यो माच्यो महाघोर घमसान ॥
घायल कीन्हें बहु योधागण व्याकुल भये कीश अरु भालु ।
अपन पराया कछु सूझै ना लोपे समर क्षार दिनपालु ॥
देखि भयाकुल कपि सैनाको भयो प्रसन्न मूढ़ दशमाथ ।
दुष्टनिकन्दन रघुनन्दन प्रभु धास्यो फेरि शरासन हाथ ॥
खैंचि तड़ाका गुन कानन लग किय सन्धान सुतीक्षण बान ।
भुजा बीसहू विशिखासनसह दश शिर काटि कीन खरिहान ॥
देर न लागी जमि आये सब जैसे दुष्कर्मिन के पाप ।
शिर भुज बाढ़त लखि बैरीके उपज्यो भालु कपिन सन्ताप ॥
मरै न शठ शिर भुज काट्यहुपर धाये कोपि कीश अरुभालु ।
मारुतनन्दन अरु अङ्गद नल नील कपीश द्विविद बलआलु ॥
गय गवाक्ष अरु पनस दरीमुख दधिमुख जामवन्त बलवान ।
धावा बोल्यो इक साथै सब करत प्रहार वृक्ष गिरि तान ॥
चोट बचावत सब राक्षसपति आवत अङ्ग एक नहिं घाउ ।
स्वइ गिरि तरुगहि संहारे कपि चहुँदिशि मारुमारु करिधाउ ॥
कोपित ह्वैकै कपि धावैं तब एकै नखन बिदारैं गात ।
लात मारिकै भगिजावैं इक कौतुक देखि देव मुसकात ॥
अति बल शीला नल नीला द्वउ चढ़िगे शिरन कुदक्का मारि ।
नखन बिदारे दशौ भाल भल बह्यो अपार रुधिर उरगारि ॥
रक्त बहत लखि खल कोप्यो अति तिन्हैं गहनको भुजा पसारि ।
पकरन चाहत गहि पावत नाहिं पीसत दांत क्रोध उरधारि ॥
फिरैं शिरन पर नल नीला द्वउ भवँरा यथा कमल बन माहिं ।
धस्यासि कूदिकै तब दोउन कहँ रिस बश अङ्ग अङ्ग फरकाहिं ॥

पटकन चाह्यसि द्वउ धरती महँ भागे भुज मरोरि बलवान ।
बङ्क लङ्कपति पुनि कोपित ह्वै लीन्ह्यसि दशौ हाथ धनुतान ॥
झरि इव शायक बर्सन लागो धरती आसमान दिय छाय ।
घायल कीन्ह्यों कपिसैना सब भागे भालु कीश भय खाय ॥
मारुतसुतसे भट मुर्च्छित करि दीन्ह्यसि घाय सबन तनताय ।
तब हर्षान्यो दशकन्धर मन सन्ध्या समय सुऔसर पाय ॥
देखि अचेतन सब बीरन को धायो जामवन्त ललकारि ।
संग भालु भट तरु भूधर धर मारन लगे प्रचारि प्रचारि ॥
क्रुद्ध बिरुद्धो रण रावण तब बिक्रम बिदित जासु संसार ।
गहिपद पटकै महि नाना भट जस पट रजक देत फटकार ॥
निजदल मारत लखि भल्लुकपति माय्यो हृदय मांझ त्यहिलात ।
लात घातते अति ब्याकुल ह्वै धरती गिय्यो विकम्पित गात ॥
गहे भल्लुकन कहँ बीसौ कर शोभा तासु कही किमि जाय ।
बसे भवँरवा जनु कमलन पर रजनी समय जानि खगराय ॥
जानि मूर्च्छित त्यहि भल्लुकपति फिरि इकलात हृदय महँमारि ।
गयो भड़ाका निज सैना कहँ राजत जहाँ राम असुरारि ॥
इतैदशाननको मुर्च्छितलखि स्यन्दनहितिय आनि निशिजानि ।
गयो सारथी लै लङ्का कहँ गे कपि भालु आपनी थानि ॥
उतै दुर्दशा लखि रावण की उपजी निशाचरन उर त्रास ।
घेरि रावणहिं चौगिर्दा ते शोचत मलिन चित्त नमबास ॥
काह बिधाता कै मर्जी है कौतुक कछू जानि नहिं जाय ।
जिते चराचर ज्यहि रावण ने ताकी दशा आजु अस हाय ॥
अदिन आयगो अब लङ्काका बेड़ा दई लगावै पार ।
आयु खुटानी निशिचारिन की है यह होनहार कर्तार ॥

इति श्रीमुंशीप्रयागनारायणस्याज्ञाभिगामीउन्नामप्रदेशान्तर्गतमसवासी
ग्रामनिवासीपण्डितनन्दीदीनदीक्षितनिर्मितश्रीविजयराघवखण्डे
युद्धकाण्डेरामरावणसंग्रामवर्णनोनामसप्तमोल्लासः ॥ ७ ॥

गिरिजानन्दन पद बन्दन करि उर पुर मदन कदन को ध्याय ।
बुद्धि बिशारद श्रीशारद भजि भाषत युद्ध मनोहर गाय ॥
इते हकीकति अस बीतति भै उत अब सुनो सिया को हाल ।
पहुँची त्रिजटा लग सीता के वोही राति माहिं खगपाल ॥
कथा समर की बतलायसि सब जो कछु वृत्त भयो ज्यहि भाँति ।
शिर भुज बाढ़त सुनि बैरी के जगदम्बिका हृदय बिलखाति ॥
उपजी चिन्ता उर अतिशै करि मुख अरविन्द गयो मुरझाय ।
ब्याकुल बोलीं तब त्रिजटा ते होइ है काह कहसि किनमाय ॥
जग दुखदायी अन्यायी यह मरिहै कौन भाँति दशभाल ।
मरै न राघव शर काट्यो शिर है बिपरीत दई को ख्याल ॥

स० । मोर अभाग जियावत है त्यहि हौं ज्यहि ते निज स्वामि बिछोही ।
है बिपरीत सबै बिधि को कृत काह कहौं सखि जात न जोही ॥
मायिक स्वर्ण कुरङ्ग रच्यो ज्यहिं कीन कुरङ्ग दिखाय कै सोही ।
द्रोही भइउँ प्रिय देवर की बिधि वोही अबौं लगि मोपर कोही ॥

राम बिरह स्वइ बिष शायक खर ताकि २ हन्यो मोहिं बहुबार ।
रखे प्रान ज्यहिं यहु बिपदा महँ ज्यावत मोहिं स्वई कर्तार ॥
जनकदुलारी इमि ब्याकुल ह्वै बिलखत आँशु दृगन ते ढारि ।
करुणानिधि को करि सुमिरण उर शोचत बार बार उरगारि ॥
लागी त्रिजटा समुझावन तब राजकुमारि धरौ उर धीर ।
और भाँति ते यहु मरिहै ना मरिहै लगे हृदय महँ तीर ॥
बास तुम्हारो है ताके उर ताते प्रभुहिय हनैं न बान ।
कारण यामहँ प्रभु शोचत अस सुनिये जनकसुता धरि ध्यान ॥
बास जानकी को याके हिय जानकि हृदय माहिं मम बास ।
ब्रह्म अण्ड सब मम हिरदै महँ लागत बान होय सब नास ॥
सुनिकै बानी इमि त्रिजटा की शोचन लगीं जानकी माय ।
हाय गोसइयाँ तुम कीन्ह्यों कह दीन्ह्यों महा बिपति इतलाय ॥
देखि जानकी को आकुल अति त्रिजटा लगी फेरि बतलान ।

सुन्दरि संशय सब छाँड़हु अब यहि बिधि मरी शत्रु बलवान॥
होई ब्याकुल शिर काटे ते जाई छूटि तुम्हारो ध्यान।
बान मारिहैं तब रावण उर दयानिधान राम भगवान॥
जनकसुता को दै धीरज इमि करि उपदेश बेश समुझाय।
गमनी त्रिजटा निज मन्दिर कहँ सुनिये अग्र चरित मुनिराय॥
शुभ सुभाव श्रीरघुनन्दन को बारम्बार सुमिरि सियमाय।
भई दुखारी अति जियरे महँ भारी ब्यथा गई उरछाय॥
निशा निशाकर को निन्दति बहु युग सम भई सिराति न राति।
बिलखत ब्याकुल अति मनहीमन दुःखित दशा कही किमि जाति॥
बिरह दाह उर जब बाढ़ी बहु फरक्यो तबहिं बाम दृग बाहु।
शकुन जानिकै कछु धीरज धरि आन्यो हृदय मांझ उतसाहु॥
निश्चय मिलिहैं अब जीवन धन आरत हरन राम भगवान।
ताजि ब्याकुलता चुप बैठी तब धरि उर सुखद स्वामि को ध्यान॥
इतै हकीकति अस बीतति भै उतको हाल सुनौ खगपाल।
आधी रजनी के बीते पर जाग्यो महामूढ़ दशभाल॥
खीझन लाग्यो निज सारथि को शठ रणभूमि छुँड़ाये मोहिं।
दागु लगाये रणशूरी में धिक धिक अधम मन्दमति तोहिं॥
रोषित लखिकै निज स्वामी को सारथि शीश पगन महँ नाय।
लाग बुझावन त्यहि आछी बिधि सुनिये बिनै निशाचर राय॥
काम सारथी को याही है रक्षै रथी प्रान सब काल।
तुम्हैं अचेतन लखि लायों मैं प्रान बचाय धाम ततकाल॥
बचन सारथी के सुनिकै इमि कीन्ह्यों क्रोध शान्त दशभाल।
इतै हकीकति अस बीतति भै सुनिये अग्र चरित खगपाल॥
उदै दिवाकर भे पूरबदिशि निद्रा त्यागि निशाचर राय।
टेरि बोलायो सब बीरन का तुरतै हुकुम दीन फुरमाय॥
यावत सेना है लङ्कामहँ साजि साजि चलै समर के हेत।
आजु बीरताको अवसरहै माड़ो युद्ध घोर रण खेत॥

अमर न कोऊ है दुनियामा इकदिन काल सबहि को खाय ।
निर्भय जूझौ समरभूमिमा शोहरा चला अगारी जाय ॥
सुनि अस आयसु लङ्कनाथको सबरे सजन लाग सर्दार ।
प्रथम नगारा मा जिनबन्दी दुसरे बाँधिलीन हथियार ॥
तिजे नगाराके बाजत महँ सैना सबै भई तय्यार ।
मारू बाजा बाजन लागे जिनकी प्रलयकार हहकार ॥
अपनो रथपर चढ़ि बैठतिभा शोभा अङ्ग अङ्ग रहि छाय ।
धारे आयुधवर हाथन महँ मानहुँ इन्द्र अखारे जाय ॥
चल्यो निशाचर दल लङ्काते पहुँच्यो समरभूमिमा आय ।
आगे स्यन्दन दशकन्धरका गर्जत प्रलय मेघसम जाय ॥
इतै आगमन सुनि रावणका कपिदल खरभर भयो अपार ।
जहँ तहँ भूधर अरु पादपलै धाये बीर मारि किलकार ॥
दूनौ फौजैं इकमिल ह्वैगईं अपन पराव बूझि ना जाय ।
इत उत आयुध बर्सन लागे पावस बृष्टि होत जनुभाय ॥
झुके बँदरवा चौगिर्दा ते पादप पर्वत करत प्रहार ।
नखन बिदारत तन काटत मुख डाटत मारि चपेटन यार ॥
भगे सिपाही सब रावण के करते डारि डारि हथियार ।
गरुई गाजै कपि भालुन की सही न जाय भयंकर मार ॥
प्रखर लड़ाई लखि कीशन की रावण मनमा करै बिचार ।
मैं एकाकी अरु बानर बहु सन्मुख लड़े न पैहौं पार ॥
ताते माया बिस्तारित करि अन्तर्धान होहुँ यहिकाल ।
अस बिचारिकै दशकन्धर भट लाग्यो करन कपटको ख्याल ॥
जन्तु अनेकन प्रगटाने तब भूत पिशाच प्रेत बैताल ।
धरे शरासन शर धावतरण योगिनि गहे हाथ करबाल ॥
मनुज खोपड़ी इक हाथे महँ भरि भरि करत रुधिर को पान ।
नाचैं गावैं भाव बतावैं धावैं मुख पसारि हरियान ॥
कलबल बोलैं करैं कलोलैं धरु धरु मारु मारु रटलाय ।

को गति बरणौं वहि समया के भागे भालु कीश भयखाय ॥
जाहिं जहाँपर भाजि मर्कट भट तहँ तहँ बरत बिलोकैं आगि ।
अतिशै व्याकुल भे भल्लुक कपि सबके हृदय गयो भयपागि ॥
उष्ण बालुका पुनि बर्सत भो ताते अधिक बीर घबड़ान ।
तज्यो सहारा तब जीवन का अब धौं काह करैं भगवान ॥
यहिबिधि सैना सब व्याकुल करि गर्ज्यो बहुरि बीर दशभाल ।
भई सनाका कपि सैना महँ जनु प्रत्यक्ष आय गो काल ॥
सहित लक्ष्मण अरु सुकण्ठ के भये अचेत सकल बलवान ।
हाय राम हा रघुनन्दन कहि मींजैं हाथ महा हैरान ॥
पुनि शठ मायाकृति ठानत भो जानत कपट ख्याल बहुभांति ।
अद्भुत कौतुक अवलोकत सो बानर सैन महा घबड़ाति ॥
प्रगटि देखायसि बहु मारुतसुत धाये गहे हाथ पाषान ।
जाय गराँस्यो तिन राघव को चहुँदिशि पुच्छ कुण्डली तान ॥
जाय न पावैं धरि मारौ अब तपसी राम लषण दुउभाय ।
दन्त कटकटा करि भाषैं इमि पूंछ उठाय रहे डरवाय ॥
दशदिशि पूरे लंगूरे बहु तिन बिच अवधराज बिरराज ।
शोभा साँवल तन सोहत जस मोसन कहि न जात खगराज ॥
इन्द्र शरासन के थाल्हा महँ मानहुँ तरु तमाल दरशाय ।
ऐसी शोभा रघुनन्दन की गिरिजा बरणि कौन पै जाय ॥
हर्ष शोकबश सब देउतागण देखत यह चरित्र प्रभुक्यार ।
जय जय भाषत अभिलाखत अस अब प्रभु करहु दुष्ट संहार ॥
आपनि सैना अरु देवन को व्याकुल देखि दयानिधि राम ।
एकबान सों हरि माया सब कीन्ह्यों सत्य आपनो नाम ॥
नशी निशाचर की माया जब तब सब भालु कीश हर्षान ।
गहि गिरि पादप फिरि धावत भे कहि जय रामचन्द्र भगवान ॥
तानि शरासन गुन कानन लग छाँड़े अमित बान रघुनाथ ।
देव दुखारी निशिचारी के काटे सकल बाहु अरु माथ ॥

दोऊ दिशि ते शरछूटे तब छाये धरा और असमान।
दशौदिशा महँ अन्धकार भो लोपे बान जाल सों भान॥
दशरथनन्दन दशकन्धर को [illegible]चरित्र विचित्र अपार।
सबो कल्पलग कहि पावैं ना शारद शेष आदि वक्कार॥
उपमा अम्बर की अम्बर जिमि सिन्धु समान सिन्धु मतिधाम।
राम रावण के सङ्गर सम रावण रामकेर संग्राम॥
ताके गुणगण कछु गाये मैं आये यथाबुद्धि महँ भास।
अपने पौरुष के माफ़िक़ जिमि मशक उड़ाहिं जाहिं आकास॥
काटे शिर भुज बहु बारक प्रभु तबहुँन मरत दुष्ट लङ्केश।
प्रभु तौ क्रीड़त समरभूमि महँ सुरन अँदेश होत लखि क्लेश॥
बाढ़त अतिशय शिर काटेते जिमि प्रतिलाभ लोभ अधिकाय।
मरै न मारो अरि काहू बिधि गे थकि लरत लरत रघुराय॥
लगे बिभीषन तन देखन तब कौतुक हेत भानुकुल केत।
मरै कालहू ज्यहि इच्छा ते सो जन प्रेम परिच्छा लेत॥
कह्यो बिभीषण कर सम्पुट करि सुनु सर्वज्ञ चराचरनाथ।
नाभि कुण्ड महँ है अमृत रस तातल जियत नाथ दशमाथ॥
सुनत बिभीषण की बाणीवर धर्यो सुधारि शरासन हाथ।
विषधर शायक सन्धानित करि छोड़न चल्यो अयोध्यानाथ॥
अमित अमङ्गल दिखराने तब व्याप्यो चहूं ओर हहकार।
अन्धकार भो दशहूदिशि मा लोपे भानु समर की क्षार॥
हाव हाव करि जम्बुक बोलैं रथपर गीध झुण्ड मड़रायँ।
रक्त कि धारा बादर बरसैं कौवा कावँ कावँ चिचिहायँ॥
डगमग डगमग धरती डोलै हालन लगे कमठ अहिराज।
हवा हहारा करि हहरत भै घहरत मेघ गिरत भै गाज॥
देखि अमङ्गल यहि भाँतिन के जय जय वदत देव भयमान।
चरित अपूरब अब आगेकर सुनिये सावधान हरियान॥
देखि अमङ्गल मन कोप्यो अति बङ्क अशङ्क लङ्क भर्तार।

रथारूढ़ कर बिशिखासन गहि बर्सन लग्यो बान अनियार ॥
इतते धाये कपि भल्लुक भट लै लै शिला खण्ड तरुपानि ।
गर्जि तर्जिकै त्यहि सम्मुख भे लागे लरन अस्त्र संधानि ॥
सैना सेनाकै भिड़नी भै बीरन तजी जियन की आस ।
इत रघुनन्दन चढ़ि स्यन्दन पर दशमुख समुख भये मतिरास ॥
महा भयंकर रणमाच्यो तब जीवन आश त्यागि दशभाल ।
श्रीरघुनायक के सम्मुख ह्वै बर्सनलाग अस्त्र के जाल ॥
छुरी कटारी तरवारी अरु बिषधर साँगि नाँगि अहिपास ।
छाँड़न लाग्यो रघुनायक पर कौतुक लखैं देव आकास ॥
बर्से बिषधर शर निश्चरपति ब्याकुल कीन सुभट्टन मारि ।
भागि लुकाने प्रभुपाछे सब याक्षण राखिलेहु असुरारि ॥
देह आपनी की भूली सुधि दशमुख करत घोर संग्राम ।
ब्रह्मबाण तब लिय हाथे महँ खलदलदलन देव श्रीराम ॥
तानि शरासन गुनकाननलग किय संधान बान खरसान ।
सिद्ध देवता मुनि देखत छबि चढ़े बिमान खड़े असमान ॥
गढ़नि अजूबा त्यहि शायक की आनन बन्यो हंस आकार ।
चारु पुरट सम त्यहि आभाते भासित भयो सकल संसार ॥
गुप्तभाव ते त्यहि आनन महँ पावक बास करत हरियान ।
पशुपति ताके मध्यभाग महँ औ उंचास पवन सविधान ॥
बर्ण बिलक्षण नीलाञ्जन इव चमकत सकल अङ्ग ज्यों भान ।
बसै सर्बदा त्यहि अन्तर्गत अलाखित भाव मृत्यु हरप्रान ॥
करि अभिमन्त्रित रघुनायक त्यहि जब आकर्ण कीन संधान ।
तब शर आननते उत्थितभो कालो धुआँ शृङ्ग अनुमान ॥
तासों प्रज्वलित भै ब्रह्मानल उठी बिशाल ज्वाल ततकाल ।
प्रलय मेघसम शरगर्ज्यो तब करिकै शब्दमहाबिकराल ॥
तासु शब्द सों जगपूर्यो सब काँपी भूमि बारहीं बार ।
उखरि २ कै गिरि पादप बहु गिरिगे बसुन्धरा महँ यार ॥

उछलन लाग्यो जल बारिधि को भे जग जीव सकल बेहाल।
मनो उपस्थित भो तौने क्षण सचमुच प्रलयकाल खगपाल॥
मरणप्राय भो दशआनन तब आपन मृत्युबान पहिंचान।
जान्यो याही ब्रह्मअस्त्र ते निश्चय नाश होयँ मम प्रान॥
कौशिक पायँन को सुमिरण करि शायक तज्यो राम रघुराय।
महाबेग ते सो रावण उर लाग्यो आय घोर क्षत छाय॥

स०। बक्ष बिदारि दशानन को धँसि बान तुरन्त गयो पातालहि।
स्यन्दनते भुविमाहिं गिस्यो तनचेतन नाहिं रह्यो दशभालहि॥
बन्दि अनन्दित भे सुरबृन्द झरैं नभ ते कुसुमावलिमालहि।
जै रघुनन्दन दुष्ट निकन्दन जै जै जै दशस्यन्दन लालहि॥

गिस्यो मूर्च्छित ह्वै बसुधामहँ निश्चरनाथ बीर दशमाथ।
रक्त कि धारा बह आनन ते इत उत छटपटात खगनाथ॥
शेष निशाचर भय पागे अति भागे आपन प्रान बचाय।
हाय हाय करि रोवनलागे कही न जाय दशा सो भाय॥
भूमि गर्भ महँ जाय ब्रह्मशर करि पाताल गङ्ग असनान।
राजहंस को तन धारण करि आयो जहां राम भगवान॥
रूप आपनो पुनि धारण करि प्रबिश्यो रामतूण महँ जाय।
भये अनन्दित कपि भल्लुक सब जयजयकार करत हर्षाय॥
सूर्य चन्द्रमा बिधि देवाधिप बरुण कुबेर आदि दिगपाल।
तैंतिस कोटि देवता नभ महँ ठाढ़े लखैं हाल दशभाल॥
करैं चिन्तवन बहु भाँतिन सब जेते तहाँ अमर समुदाय।
कोऊ भाषत है अब की तौ निश्चय मस्यो निशाचरराय॥
करपग एकौ कछु डोलत नहिं अब सन्देह नाहिं मृतुमाहिं।
कोऊ कहै यहि बदकारी को है बिश्वास नेकहू नाहिं॥
निश्चय होवै हमैं कौनबिधि यह मरि जियो अनेकन बार।
कपटभाव ते परो समर महँ है यह महाछली बदकार॥
जीवत रहिगा यदि कौनिउँ बिधि अबकीबार लङ्क भर्तार।

याके करते तौ जान्यो ना हम सबको उबार दिन चार ॥
ताते लङ्काढिग धोख्यो महँ तबलग कोऊ जाय ना भाय ।
जबलग आछोविधि निश्चय नहिं दशमुख चिताधूम दरशाय ॥
होत बतकही यह देवन ते उत जहँ परो निशाचरराय ।
दूतआय तहँ हरिशंकर के वाको देखि देखि फिरिजायँ ॥
श्वास न आवत अब कोउकह कोउकहैं जियतभगैं भयखाय ।
रह्यो दशानन यहि बिधिको भट मस्यो न जासुत्रास बिनशाय ॥
इतै हकीकति अस बीतति भै उत अब सुनौ राम को हाल ।
करन चिन्तवन उरलागे अस यह मम परमभक्त दशभाल ॥
शाप पायकै सनकादिक को तन धरि भयो निशाचर आय ।
पस्यो दुखित अब यहि औसरपर तजै परान नहीं शकभाय ॥
दर्शन दैकै करौं मुक्तत्यहि यहि क्षण उचित अहै यह बात ।
पै उर आशय त्यहि जानन को भेजौं प्रथम तासु ढिगतात ॥
यह बिचारिकै प्रभु दायानिधि लषणहिं बोलि कह्यो समुझाय ।
तुमसन शिक्षा इकभाषौं मैं बन्धव बचन सुनौ मनलाय ॥
हम तुम दोऊ राजबंश महँ सम्भव भये लेहु असजानि ।
पै अभाग्यबश तजि आपन गृह बनमहँ बसे आनिकरि थानि ॥
रहे मुनिनसँग कछु वासरलगि अबसँग रहत कीश औ भालु ।
बीती इतनी बय ओऽहि महँ जान्यो कछु न नीति को हालु ॥
ब्याहि जानकी निमि मन्दिर ते आयन जबै आपने धाम ।
नीति महीपन की जानन को रह्यो हमार बहुत मन काम ॥
पै बिधि करणी अरु भावीबश भई न पूरि हमारी आस ।
होय वही जो होय भागमहँ प्रापत भयो आय बनबास ॥
नगर अयोध्या कहँ जैबे जब तब अब करन परी त्वहिंराज ।
पै बिनु सीखे राजनीति के करिबे कौन भाँति नृप काज ॥
नीति सीखिबो अब वाजिब है इतना कहा मानिल्यो तात ।
रावण राजा यह राजन महँ अहै प्रधान जगत बिख्यात ॥

बुद्धि निश्चरी महँ परिकै यहिं यदपि अधर्म कर्म बहु कीन।
राजनीति के ढँग जानन महँ है यह सब प्रकार परबीन॥
जाय तासु के ढिग आतुर तुम आवहु राजनीति सिखि भाय।
रत्न कुठामहुँ में त्यागिय नहिं आगम निगम कहत अस न्याय॥
पाय सु आयसु रघुनायक को लक्ष्मण गये जहाँ दशमाथ।
शराघात ते है व्याकुल अति शक्ति न उठन केरि खगनाथ॥
देखि लक्ष्मण कहँ आवत ढिग रावण बिनय सहित शिरनाय।
कोमल बाणी सों बोलत भो सुनिये नाथ दया दरिआय॥
महा मोहवश शत्रुभाव गहि तुम्हरे सङ्ग कियो संग्राम।
अति अपराधी मैं स्वामीकर कीन्ह्यो महा नकारो काम॥
मरण समैया अब पासै मम ताते क्षमो मोर अपराध।
धरौ शीशपर पद पङ्कज प्रभु पुरवो मोरि चित्त की साध॥
लषण लाल तब समुझायो त्यहि या महँ दोष तुम्हारो नाहिं।
लेख विधाता को होवै हठि है यह बात बिदित जगमाहिं॥
मुखिया भूपति यक क्षिति महँ तुम जानत सर्व शास्त्र मतिमान।
नीति सिखन के हित तुम्हरे लग पठयो मोहिं भानुकुल भान॥
लषण लालकी सुनि बानी बर लाग्यो कहन निशाचर राय।
कौन नीतिहै अस दुनिया महँ जानत ज्यहि न आपु रघुराय॥
हम कुमारगी नय कहिबे का निश्चर बुद्धि महा अज्ञान।
नीति रीतिहै यत दुनिया महँ उनहिंन सकल कीनि निर्मान॥
पै यदि सेवक के मुखते कछु स्वामी सुनन चहैं यहिकाल।
मम ढिग आवैं तौ दाया करि दर्शन देहिं हरण अघजाल॥
इक तौ यहि क्षन हौं निर्बल तन दूजे भये कण्ठ गत प्रान।
जाय सकौं ना प्रभु अन्तिक महँ इतना बचन करौ परमान॥
दाया करिकै यदि आवैं इत दर्शन देहिं आनि जनजानि।
थोर बहुत जो कछु जानत मैं कहिहौं तौन भाषि मृदुवानि॥
बैन दशानन के सुनिकै इमि लक्ष्मण कह्यो राम सों जाय।

नीति न भाषत प्रभु हमसों वह अस अभिलाष रह्यो दरशाय ॥
दर्शन चाहौं दीनबन्धु के पै अब उठन शक्ति म्वहिं नाहिं ।
नतु चलिजातिउँ ढिग स्वामी के यह लालसा तासु मनमाहिं ॥
सुनि यह आशय दशआनन को करुणासिन्धु राम रघुनाथ ।
गे चलि तुरतै त्यहि अस्थल कहँ जहँ पर पय्यो बीर दशमाथ ॥
जाय सामुहें प्रभु ठाढ़े भे दशआननहिं कीन परणाम ।
दिब्यदृष्टि ते दशकन्धर तब लख्यो बिराटरूप श्रीराम ॥
देखि विश्वमय रघुनन्दन कहँ रावण उर बढ़ाय अनुराग ।
हाथ जोरिकै मृदुबाणी ते प्रभु को करन संस्तवन लाग ॥

स० । हे प्रहलादपती धरतीधर शूकर मच्छप कच्छप नामी ।
बावन क्षत्रि नशावन पावन रावन दावन हे सियस्वामी ॥
हे भ्रम फन्दन दुष्ट निकन्दन हे नँदनन्दन हे खगगामी ।
भक्तनको बिसराम थली सियराम सबन्धु नमामि नमामी ॥
लाखनदासनकी अभिलाखन राखन सत्य बिभाखनस्वामी ।
हे बलसिन्धु दुखारिन बन्धु शुभानन इन्दव अन्तर्यामी ॥
बन्दि अनन्दन आनँदकन्दन हे दशस्यन्दन नन्दन नामी ।
भक्तन को बिसराम थली सियराम सबन्धु नमामि नमामी ॥

तुम सुखराशी अविनाशी प्रभु व्यापक विश्व ओज भगधाम ।
करुणासागर सब गुणनागर आरत हरण शरणप्रद नाम ॥
जानि आपनो जन दायाकरि धरिये चरणरेणु ममनाथ ।
दास पुरानो मैं स्वामी को निश्चर भयों शाप लहि नाथ ॥
जन्म बीति गे द्वै भर्मत जग सुनिये रमारमण भगवान ।
बुद्धि आसुरी ते कीन्ह्यों ना कछू अधर्म धर्म को भान ॥
करिकै करुणा अब करुणाकर क्षमिये सकल मोर अपराध ।
दास आपने को भूलौ जनि हेरिय नेक नजर पल आध ॥
मोसन पूछत राजनीति प्रभु यह तौ बातयुक्त कछु नाहिं ।
केवल कारण इक आपहि हौ जेतक नीति अहै जगमाहिं ॥

अस सामर्थी को दुनिया महँ सिखवै तुम्हैं नीति व्यवहार।
सुनि असबानी दशआनन की बोले रमारमण कर्तार॥
सत्यवार्ता तुम भाषत जो सुनिये लङ्कनाथ बलवान।
अवशि बतावो नयमारग कछु तुम प्राचीन भूप मतिमान॥
भल कै जानत राजनीति तुम भुजबल जित्यो सकल संसार।
सकल सुरासुर बश कीन्ह्यों तुम अति बिक्रमी बोध आगार॥
हाल तुम्हारो जो जानो है धर्माधर्म केर दशभाल।
यथातत्थ्य सो यहि औसर पर जानत नहीं अन्य महिपाल॥
भाषि सुनावो सो हमका कछु यहि बिधि कह्यो राम रघुनाथ।
कोमल बाणी ते बोल्यो तब अतिशै धीर बीर दशमाथ॥
अंतिम समया है स्वामीमम निकरत बचन न प्रान बिहाल।
तद्यपि मति सम कहि भाषत कछु सुनिये धर्मनीति को हाल॥
उत्तम कारज के करिबे कहँ आनै जबहिं चित्त में ख्याल।
तजि कै आलस त्यहि कारज को पूरण करै अवशि ततकाल॥
त्यहिमहँ आलस के कीन्हे ते महा असाध्य होत सो काम।
इक दुइ बातैं यही बिषय की सुनिये दयाधाम श्रीराम॥
इकदिन सुरपुर ते आवत मैं स्यन्दन चढ़ा गगन की राह।
तहँ ते यमपुर अवलोक्यों मैं बने दुआर चारि नरनाह॥
तीन द्वारमहँ तौ सज्जन गण आनँद सहित करैं तहँ बास।
चौथ दुअरवा दिशि दक्षिण जो तहँ पर रहैं पातकी खास॥
जानि जात नहिं तहँ निशिदिन कछु छायो रहै तिमिर सब काल।
विविध भाँति के नरक कुण्ड तहँ बने अनेक महा बिकराल॥
तहँ पर बोरैं लै पापिन को यम के दूत देयँ बहु त्रास।
मूंड़ निकारैं जब ब्याकुल ह्वै मारैं बिषम गदा यम दास॥
कठिन दण्ड ते अति आरत ह्वै त्राहि त्राहि सब करैं पुकार।
दशा देखिकै अस तिनकी तब मोरे हृदय भयो दुखभार॥
दाया लागी प्रभु मो कहँ तब मैं अस चितमा किह्यों बिचार।

अवशि एकदिन इन पापिन को देहौं मैं असह्य दुख टार॥
चिन्तित आयों चलि लङ्का कहँ उर सो ठनी रही रघुराय।
अवशि एकदिन चलि जैहौं तहँ देहौं सकल कुण्ड पटवाय॥
टारत आयों आजु कालिह करि यहि विधि बीति गयो बहुकाल।
मनकी चीती रहि मनहीं महँ अब तौ पर्यो काल के गाल॥
तत्पर होतयों यदि ताही क्षण पूरण होत संकल्प म्वार।
आलस कीन्हे ते रहिगा सो शोचे अब न होत कछुकार॥
कथा दूसरी बतलावत हौं सुनिये सावधान भगवान।
यकदिन मोरे चित आई अस वर्णत ताहि होत मनम्लान॥
लङ्क हमारी यह सोने की शोभा जासु बरणि ना जात।
जा महँ बसिबे की इच्छा करि सब दिन देव रहत ललचात॥
खार सिन्धु मधि सो राजत है अनुचित महा एक यह बात।
क्षीर घृतादिक के ब्रह्मा ने जग महँ रचे पयोनिधि सात॥
तीनि लोकको अधिकारी मैं ममपुर उचित नहीं निधिखार।
करौं क्षीरनिधि यहि सागर कहँ अस उर गुनत रह्यों कर्तार॥
काज करन को जब चाहौं वह तब फँसि अन्य बिषय महँ जाउँ।
करत हेलना दिन बीते बहु अब यहि दशा माहिं पछिताउँ॥
आलस करिकै फल पायों यह रहिगो तासु खेद हिय माहिं।
ताते स्वामी शुभ कारज महँ आलस करब नीक है नाहिं॥
अन्यवार्ता इक भाषौं प्रभु बिगरी वहौ आलसै माहिं।
अब तौ केवल कहिबेही को हिय ते मिटी खेद सो नाहिं॥
रचे बिधाता के जगती महँ यावत भूत प्रेत निशिचारि।
भूचर खेचर नागादिक नर अगणित जीव जौन असुरारि॥
सदा अमरपुर महँ जैबे को सब के हिये रहत अनुराग।
पै अति दुर्गम सो ठाहर है कीन्हे बिना योग जप याग॥
कोऊ कोऊ जन करणी करि आनँद सहित देवपुर जाहिं।
यावत पापीजन दुनिया महँ सुरपुर जाय सकत ते नाहिं॥

इकदिन मनमा मैं शोच्योंअस करिहौं जक्ककेर दुख नास।
जामहँ दिविके अभिलाषी जन सुरपुर चलेजाहिं अनयास॥
देहौं आयसु विश्वकर्मा को देई बाँधि स्वर्ग सोपान।
तत्पर होत्यों यदि ताहीक्षण बनि सब कामजाति भगवान॥
आजु शोचिबेका होतैना सबकर सिद्ध होत मनकाम।
कीरति अचला मम होतैजग रहतै युगन युगन लों नाम॥
पै आलसते फलपायो यह निष्फल भई रहीयत आस।
सुनि दशआनन की बानी इमि बोले रामचन्द्र सहुलास॥
पाप विषयकी अब शिक्षा कछु कहिये लङ्कनाथ मतिमान।
कहन लाग तब दशआनन पुनि सुनिये रामचन्द्र भगवान॥
पापकर्म मैं बहु कीन्हे प्रभु कहँलग कहौं तौन सबगाथ।
शर प्रहार ते तन व्याकुल अति बोलत पीरहोत बड़ि नाथ॥
तद्यपि तुमसन इक मिसाल मैं भाषत अहौं सुनौ भगवान।
शूर्पणखाके श्रुति नासा जब काट्योरहै लषण बलवान॥
रोवत आई वह मोरे ढिग बदन मलीन क्षीन तनदीन।
कहि निजगाथा सिय हरिबे की शिक्षा वहीं मोहिं प्रभुकीन॥
एक वार तो चितआई अस यहि क्षण नहीं उचित यह काम।
समय पायकै पुनि हरिहौं सिय असगुनि टारि दिह्यों मतिधाम॥
थोरि हि बेरामहँ शोच्यों पुनि राखत जो यह काज उठाय।
पूर न ह्वैहै तौ पाछे फिरि यहिते हरौं यही क्षण जाय॥
पाप लालसा बड़िभारी है वहि क्षण चल्यों लङ्कते धाय।
लायों सीता हरि कानन ते दीन्ह्यों बंशनाशि करवाय॥
केवल सीताहित मेरोकुल ह्वैगो नाथ हाथते नाश।
मैंहूं ताकोफल पायों यह मानिय सत्य बचन जगवास॥
ऐसि शीघ्रता जो करत्योंना यदि यहि पापकर्म के माहिं।
तौ प्रभु करते यहि अवसर पर होतै वंशनाश मम नाहिं॥
याते नरको अस वाजिब है करि चिन्तवन आनि उरज्ञान।

जात पापदिशि मन रोकै हठि तौ सब भाँति होय कल्यान॥
यहिबिधि कहिकै दशआनन ने प्रभु कहँ नीतिदई समुझाय।
गिरामूक ह्वै पुनि बिह्वल भो आयो मृत्यु समय नियराय॥
एक दृष्टिते प्रभु पायँन दिशि निरखत भयो सहित अनुराग।
त्रिभुवन बिजयी लङ्कनाथ ने कीन्ह्यो पुनः प्राण परित्याग॥
बजे नगारे तब देवन के नभते सुमनमाल झरिलाय।
गावनलागे गुण राघव के जय जय सियारमण रघुराय॥
सिद्ध देवता मुनि मोदित सब देखैं रामरूप सुखपाय।
देव अङ्गना आरति साजैं निर्तैं विविध भाव बतलाय॥
सूर्यकिरण सम दशआनन के तनते कढ़ी ज्योति इकभाय।
सकल देवतन के देखत सो प्रभुपद लीनभई खगराय॥
देखि तमासा यह देउतागण करि आश्चर्य लगे बतलाय।
लङ्काधिप सम बड़भागी कोउ जगमहँ अन्य नाहिं दरशाय॥
युक्त सत्त्वगुण हम देउता सब निशिदिन करैं विष्णुगुण गान।
तदपि भयापदि युत दुनिया महँ भर्मत सदा रहत हैरान॥
सुर द्विजघाती उतपाती यह रत परदार महा बदकार।
अधम निशाचर सो सहजे महँ प्रभुपद प्रविशि मुक्तभो यार॥
बिना परिश्रम लह्यो परमपद जो देवन को नहीं ठिकान।
काहे न पावै सो शुभगति अस ध्यावै वैरभाव भगवान॥
इतै हकीकति अस बीतति भै उत अब सुनौ लङ्कको हाल।
भयो प्राणहत जब लङ्कापति संगरभूमि माहिं खगपाल॥
गयोदूत तब रनिवासे महँ दुःखित कह्यो वृत्त सब जाय।
स्वामिमरण सुनि महरानी सब बिलखन लगीं महाअकुलाय॥
लाल कमलहू ते कोमल अति जिनके चरण अङ्ग सुकुमार।
ब्याकुल धाईं रण पुहमी कहँ रोवत झरत नैन जल धार॥
देखि दुर्दशा निज स्वामी की लगीं बिलाप करन सब बाम।
जे गजगमनी नृपरमनी सब लोटैं धरा रूप अभिराम॥

हाथ प्रहारैं दोउ छातीपर पटकैं बिकल धरातल माथ।
भुजबल सँवारि करि स्वामी को बिलपैं नाथ नाथ हानाथ॥
भीजि चुनरिया गईं आँसुन सों मिलिगे धूरि रेशमी पाट।
केश बिथुरिगे छुटि धरतीपर लागी हिये दुःखकी हाट॥
वहैं पनारा जलधाराहग मानहुँ गङ्ग यमुन की धार।
अङ्ग आभरण सब ध्वंसित भे सबतन मलिन भये शृङ्गार॥
हाय समानी सब तन मनमा मुखअरबिन्द गये कुँभिलाय।
बायु झकोरन ते मानौं भुवि कदली खम्भ गिरे हहराय॥
बदन सूखि गे व्याकुलताबश नशिगो हृदय केर उतसाहु।
धूरि धूसरित मुख मैले भे मानहुँ ग्रस्यो चन्द्रमन राहु॥
अति अधीर ह्वै मन्दोदरि तिय पुनि २ माथ पीटि बिलखाय।
गावनलागी गुण स्वामी के दशा सो कहि न जाय खगराय॥
मोहिं अकेली तजि लङ्कामहँ तुम केहि ओर सिधारे नाथ।
तुव वियोग महँ किमि राखौं मैं आपन प्रान नाथ हानाथ॥
कौन कुअवसर महँ लाये हरि तुम पिय काल अहिनि सियबाम।
रह्यो न बाकी कोउ लङ्कामहँ सूनो भयो राजसी धाम॥
हा शिवरानी शिवदानी अति जगमहँ बिदित तुम्हारो नाम।
लख्यो तमासा यह नैनन ते आये बिपति समय ना काम॥
बहिनि तुम्हारी पिय तुमहीं का भई कृतान्त सरिस यहिकाल।
जाके सम्मत ते लायो हरि बिना बिचार राम की बाल॥
बिदित बीरता तुव तीनिहुँ पुर भुजबल जिते चराचर झारि।
कँपैं सुरासुर तुव साहस ते कोउ न करत सामुहें रारि॥
खेल अनोखो पै बिधना को ऐसो समय दिखायो आनि।
नर औ बनरन के सङ्गर मा भई तुम्हार प्रान की हानि॥
रहैं सशङ्कित तुव शङ्का ते सर्बदिन धर्मराज सुरराज।
नर शर लागे ते लोटत भुवि लागत तुम्हें तनक ना लाज॥
जगत पुरन्दर बल मन्दर प्रभु खल दल दलन देव प्रतिपाल।

तिन सों रिपुता करि पायो फल आयो तुरत शीश पर काल ॥
काह बिगार्‌यों मैं विधना तव जो म्वहिं किये पुत्र पति हीन।
गये कौनदिशि तजि स्वामी म्वहिं तुमना कर्म उचित यह कीन ॥
शिव निवास गिरि अरु नन्दनवन मन्दर चैत्ररथादिक ठाम।
कहाँ न विहरिउँ पति तेरे सँग पूरण भये मोर मन काम ॥
नगर अनेकन दिखलाये म्वहिं सङ्ग लिये यान आरूढ़।
सो सुख दुर्लभ भा स्वामीबिन विधि कर्तव्य सत्य अरु गूढ़ ॥
मैं प्रिय कन्या मयदानव की लङ्का अधिप केरि प्रिय बाल।
इन्द्रजीत की महतारी मैं जो सुर दर्प दलन बिकराल ॥
आजु गर्ब मम यहु चौपट भा विधनै छीनि लीन अहिवात।
हाय गोसइयाँ गति जानी ना बिगरी बनी बनाई बात ॥
हा पति लोटत तुम बसुधा महँ भे सब धूरि धूसरित गात।
मुख कछु बोलौ दृग खोलौ तनि मोसन करत आजु किन बात ॥
त्यागि तुम्हारो भय लङ्का महँ देखौ घुसे जात शशिभान।
इन्द्र पवन सुर निश्शङ्कित सब घूमैं तुम्हैं परत नहिं जान ॥
शैन करत तुम निश्चिन्तित कस देखत लङ्क दशा कस नाहिं।
दया न आवत कछु तुम्हरे हिय हम सब तिया दुखित बिलखाहिं ॥
प्रभुता तुम्हरी जग जाहिर भल अतिबल सुत कुटुम्ब अधिकार।
राम बिरोधे गति ऐसी भै कुल कोउ रहा न रोवनहार ॥
वेही मुख हैं ये स्वामी के जिनको देखि चन्द्र सरमात।
तिनपर बैठे खल कागादिक मारत चोंच मांस लै खात ॥
नाथ माथ ये जिनपर रुचि सह धारत मुकुट सुबरण क्यार।
फोरत तिनको धरि दाढ़न सों निर्दय गिद्ध श्वान औ स्यार ॥
अञ्जन आँजे ये खञ्जन दृग जिन रुख देखि डरत सब ग्राम।
तिन्हैं चिल्हारिन खँदि चोंचन सों राख्यो नहिं निशान को नाम ॥
शाल शाख से भुज डारे ये जे प्रिय गरे होत जयमाल।
जिन भुज धार्‌यो शर धन्वन को जीत्यो बड़े बड़े महिपाल ॥

जे भुज देखे अरि कम्पैं हिय कोउ न समर माहिं समुहान।
ते भुज मेले रज बसुधा महँ दांतन दाबि चिचोरत श्वान॥
कितकबार मैं समुझावा पति किह्यो न काल बिवश कछु ख्याल।
मानुष मान्यो नारायण को जो बलशालि काल को काल॥
भज्यो न कबहूं त्यहि स्वामी को ज्यहि ब्रह्मादि नवावत माथ।
बैरौ कीन्हे सुर दुर्लभ गति तुमका दीनि नाथ रघुनाथ॥
रावण रानी की बानी सुनि सुर मुनि सिद्ध सबै हरषान।
शिव ब्रह्मादिक सनकादिक मुनि प्रभुहि सराहि करत गुणगान॥
देखि दुर्दशा प्रिय भाई की लाग्यो बिभीषणौ बिलखान।
आयसु दीन्ह्यो लघुबन्धव कहँ करुणासिन्धु राम भगवान॥
तिन विभीषणै समुझावा भल आवा तौन राम के पास।
राम बुझावा तब आछी बिधि रावण क्रिया करौ सहुलास॥
पाय सुआयसु रघुनायक को बिधिवत देशकाल गति जानि।
कर्म मृतक को यत कीन्ह्यों सब रानिन दीनि तिलाञ्जलि आनि॥
निबृत ह्वैकै क्रिया कर्म ते प्रभु ढिग गये बिभीषण फेरि।
माथ नवायो प्रभु पायँन महँ करुणादृष्टि दीन प्रभु हेरि॥
फेरि बुलायो लघुबन्धव कहँ तिनते वचन कह्यो समुझाय।
तुम कपिनायक नल मारुतसुत भल्लुक अङ्गदादि लै भाय॥
साथ बिभीषण के जावहु मिलि सारहु तिलक कह्यो रघुनाथ।
तबहिं बिभीषण उत्साहित ह्वै प्रभुसन कह्यो जोरि युगहाथ॥
हे प्रभु दाया करि सेवक पर सुन्दर चरण कमल रजडारि।
पावन करिये यह लङ्कापुर अनुचर बिनय मानि असुरारि॥
बिनय बिभीषण की सुनिकै इमि लागे कहन राम सुखधाम।
पिता बचनके प्रतिपालन हित जाय न सकौं सखा तुव ग्राम॥
प्यारो बन्धव निज समताको पठवत ताहि तुम्हारे साथ।
पाय सुआयसु इमि स्वामी को चलिभे सकल नायकै माथ॥
आय पहूंचे सब लङ्कामहँ करि एकत्र सकल सामान।

जन बिभीषणै सिंहासन पर दियो बिठाय लषण भगवान ॥
राजतिलक करि अति आशीर्बिधि दियो बनाय निशाचरराय ।
भेंट गुजारी सब काहूने अस्तुति करत महा हर्षाय ॥
फेरि बिभीषण सह आये सब जहँ सुखधाम राम भगवान ।
यहाँ हकीकति अस बीतति भै सुनिये अग्र चरित हरियान ॥
राम बुलायो पुनि बनरन कहँ बोले बचन सहित अनुराग ।
धन्य तुम्हारे बल पौरुषको हौ तुम सकल बीर बड़भाग ॥
तुम्हरे बलते रिपु मारा मैं कीन्ह्यो बिजय बिषम संग्राम ।
भये बिभीषण नृप लङ्कामहँ पूरण भये सकल मन काम ॥
सहित हमारे यश तुम्हरो यह प्रीति समेत करिहि जो गान ।
बिना परिश्रम नर तरिहै सो यह संसारसिन्धु बिन यान ॥
कोमल बानी सुनि स्वामीकी सब कपि भालु गये हरषाय ।
पुनि पुनि देखत मुख राघवको पायँन माहिं जात लपटाय ॥
पुनि प्रभु टेर्यो हनुमन्ता को तुरतै पास पहूंचे आय ।
पुत्र जाहु तुम अब लङ्का कहँ सीतहि खबरि सुनावहु जाय ॥
तासु कुशल लै चलि आवहु इत सुनि अस बचन वायुकेलाल ।
गये तड़ाका चलि लङ्का कहँ पहुँचे नगर मध्य उत्ताल ॥
अमित निशचरी अरु निशचरगण हनुमत निकट पहूंचे आय ।
पूजाकीन्हीं तिन आदर सों दीन्हीं जनकसुता दिखराय ॥
माथ नवायो कपि दूरिहिते चीन्ह्यो रामदूत सिय माय ।
पूछन लागीं मृदुबानी ते हे सुत! कहौ मोहिं समुझाय ॥
कुशल कोशलाधिप बन्धव लघु कपिदल सहित अहैं केहिठाम ।
सुनि अस बानी सियरानी की बोले हनूमान बलधाम ॥
कुशल अयोध्यापति नीकी बिधि जीत्यो समर माहिं दशमाथ ।
राज बिभीषण को अविचल भो भयो प्रसिद्ध जगत यशगाथ ॥
सुनि कपिबानी हर्षानी सिय नैनन प्रेम आँशु उमगान ।
तन पुलकावलि उठि आई भलि मनमहँ महामोद सरसान ॥

हे सुत हनुमत यहि औसर मैं प्रति उपकार करौं का त्वार।
सुखद पदारथ तुव वाणी सम मो कहँ लखि न परत संसार॥
आज राज मैं सब दुनिया की पायों मातु लेहु असजानि।
जीतिसमर रिपुदल बन्धव सुत सकुशल लखत स्वामि धनुपानि॥
यावत सद्गुण श्रुति भाषे सुत तुम्हरे हृदय बसैं हनुमान।
सदा सर्वदा सानुकूल रहँ बन्धव सहित राम भगवान॥
करौ यतन सो सुत वेगिहि अब देखौं नयन श्याम मृदुगात।
सुनि अस बानी सियरानी की गमने बातजात हर्षात॥
कुशल जानकी की राघव ते भाष्यो आय यथाविधि गाय।
बोलि बिभीषण अरु अङ्गद कहँ अस समुझाय कह्यो रघुराय॥
मारुतसुत के सँग जावहु तुम लावहु सियहि सहादर भाय।
पाय सुआयसु रघुनायक को गे सब जहाँ जानकी माय॥
रहैं निश्चरी जे सेवा महँ लङ्कप तिन्हैं दयो समुझाय।
सादर सीतहि अन्हवावा तिन भूषण बसन दिव्य पहिनाय॥
साजि सुखासन लै आये पुनि तापर चढ़ीं हरषि सियमाय।
चहुँदिशि रक्षक चोपदार बर गमने जहाँ राम रघुराय॥
त्रिजटा निश्चरि है साथै महँ आये राम ठाम नियराय।
देखन धाये कपि भल्लुक सब रक्षक मना करत रिसिआय॥
कह्यो बिभीषण ते राघव तब आनौ सियहि पियादे पायँ।
देखैं माता की नाईं कपि यहि विधि बिहँसि कहा रघुराय॥
राम बचन सुनि हर्षाने सब यावत भालु कीश समुदाय।
बजे नगारा नभ देवन के सुन्दर सुमन रहे झरि लाय॥
राख्यो सीता प्रथम अग्नि महँ चाहत प्रकट करन सो राम।
याही कारण ते करुणानिधि कछु दुर्बाद कह्यो मति धाम॥
सुनत निश्चरी सब शङ्कित ह्वै लगीं बिषाद करन मनमाहिं।
मेटिसकै को प्रभु आयसु पै अस जग देखि परत कोउ नाहिं॥
स्वामि बचन सो धरि माथेपर अतिव बिनीत गुणनकी खानि।

परम पुनीता यश गीता सम बोलत भईं जानकी रानि ॥
देवर लक्ष्मण यहि अवसर तुम होहु हमार धर्म रखवार।
आगि बेगही प्रकटाओ सुत लावो अब न नेकहू बार ॥
सुनि सियरानी की नानी प्रिय सानी धर्मनीति पथमाहिं।
ज्ञानी बिरह सों सरसानी शुचि उत्तर लषण दीन कछु नाहिं ॥
दृगन बारि भरि कर अञ्जलि करि प्रभुतन चितै रहे मनमारि।
भाषि सकैंना कछु आनन ते स्वामि निदेश सकैं नहिं टारि ॥
लखि रघुनायक रुख लक्ष्मण पुनि इन्धनलाय आगि दइवारि।
प्रबल हुताशन की ज्वाला लखि कह्यो अशङ्क बिदेहकुमारि ॥
कर्म बचन मन जो मोरे मन तजि रघुबीर आनगति नाहिं।
तौ तुम सबकी गति जानत हौ पावक मलय होहु हम काहिं ॥
असकहि प्रभुपद उर धारणकरि चन्दन सरिस हुताशन जानि।
भईं प्रवेशित जगदम्बा तब कीरति अति पुनीत सिधिखानि ॥

स०। यावत लोक कलङ्करहे प्रतिबिम्ब समेत दहे क्षणमाहीं।
देखत देव खड़े नभमें प्रभु कौतुक गुप्त लख्यो कोउ नाहीं ॥
ह्वै द्विज पावक सत्य रमाश्रुति भाषत सो सियकी गहिबाहीं।
क्षीरसमुद्र यथा कमला तिमि आनि समर्प्यो राघवकाहीं ॥

राम वाम दिशि सो राजत सिय शोभा सुभग कही ना जाय।
मनहुँ नीलनव बर बारिद ढिग कञ्चन कमल कली दरशाय ॥
देव अनन्दित ह्वै गावैं गुण सुन्दर सुमन रहे बरसाय।
नचैं अङ्गना मन मोदित अति जय जयकार शब्द रह छाय ॥
सहित जानकी रघुनन्दन प्रभु शोभा अति अपार रतिमार।
देखत हर्षे कपि भल्लुक सब जय जय करत मारि किलकार ॥

इति श्रीभार्गववंशावतंसश्रीमन्मुंशीनवलकिशोरात्मजस्य श्रीमुंशीप्रयागनारायणस्याज्ञाभिगामीउन्नामप्रदेशान्तर्गतमसवासीग्रामनिवासीपण्डित बन्दीदीनदीक्षितनिर्मितश्रीविजयराघवखण्डेयुद्धकाण्डेश्रीरामचन्द्र विजयवर्णनोनामाष्टमोल्लासः ॥ ८ ॥

श्रीरघुनन्दन पद बन्दन करि सब बिधि ध्याय जानकीमाय।
कथा अगारी की गावों पुनि करौ सहाय प्रभञ्जनजा॥
मातलि सारथि सुरनायक को त्यहि रघुनायक लीन बोलाय।
आयसु दीन्ह्यों त्यहि जैबे को मातलि चल्यो चरण शिरनाय॥
सदा स्वारथी सुर आये तब परमारथी सरिस कहि बैन।
गावन लागे गुण राघव के हे प्रभु कमलनैन सुखदैन॥
दायाकीन्ह्यों प्रभु दीननपर अहो दयाल देव प्रतिपाल।
विश्वद्रोहरत यह कामी खल निज अघ गयो क्रूर दशभाल॥
ब्रह्मरूप तुम अविनाशी प्रभु सहज उदास एक रसभास।
अनघ अनामय अज करुणामय निर्गुण निराकार जगवास॥
मीन कमठ नरहरि शूकर बर बामन परशुराम बपुधारि।
जब २ देवन दुखपायो प्रभु धरि तन तुमहिं दीन त्यहि टारि॥
सुरपरितापी अतिपापी खल कोही निरत मोह मद काम।
अधम निशाचर तन रावन यह सोऊ गयो नाथ तुवधाम॥
हमरे मनमा यह बिस्मय बड़ि सुनिये दीनबन्धु भगवान।
हम परपद के अधिकारी सुर स्वारथ रत तुव भक्ति भुलान॥
बूड़त उछरत भव बारिधि महँ पावत नहीं थाह नरनाह।
रक्षाकरिये उद्धरिये प्रभु हरिये महा बिपति की दाह॥
सिद्ध देवता करि बिनती इमि जहँ तहँ खड़े जोरि द्वउहाथ।
अतिव प्रेम सों चतुरानन तब अस्तुति करत नाय महिमाथ॥
हे रघुनायक धनुशायकधर हे सुखधाम राम घनश्याम।
सदा तुम्हारी जय दायामय आमयरहित रूप अभिराम॥
यहि भववारन के दारन हरि समरथ गुणागार कर्तार।
सुयश उजागर नय नागर प्रभु चरित उदार जक्त भर्तार॥
काम करोरन ते सुन्दरछवि रबिइव भासमान भगवान।
हन्यो दशानन अहि खगपति सम सुरमुनि सिद्ध करत गुणगान॥
शोक बिभञ्जन जनरञ्जन विभु गत अभिमान ज्ञान आगार।

ब्रह्म निरञ्जन महिभर भञ्जन धारत अति उदार अवतार ॥
सर्वव्यापक अज अनादि इक राम नमामि नमामि नमामि।
रघुकुलभूषण दुखदूषण हर दीनदयाल भक्त अनुगामि ॥
शरणागत के प्रतिपालक तुम कीन्ह्यों भूप बिभीषण दीन।
अतुल बाहुबल अबल सहायक खलदल दलन माहिं परबीन ॥
नाथ तवानन शशि देखत शुचि भे कृतकृत्य कीश समुदाय।
हम सब देवन को जीवन धिक भौ निधि अमत भक्ति बिसराय ॥
दायाकरिये अब दायानिधि हरिये बुद्धि भेद अज्ञान।
जाते दुख सुख को एकै सम गुनिकै सुखी होन भगवान ॥
हे खलखण्डन महिमण्डन कर सेवित शिवा शम्भु युगपाद।
देहु अनन्दित बर याही प्रभु बन्दौं चरण कमल करि याद ॥
बिबिध भाँति सों करि बिनती बिधि भये सप्रेम प्रफुल्लितगात।
बदन बिलोकत रघुनायक कर लोचन नहिं अघात ललचात ॥
आये दशरथ त्यहि औसर तहँ तनय बिलोकि नैन जलछाय।
देखत यकटक छबि राघव की गये सनेह भाय बिकलाय ॥
किय प्रणाम प्रभु लघुबन्धव सह आशिर्बाद पितैं तब दीन।
तात तुम्हारे शुचि प्रभाव ते रण महँ शत्रु बिजय मैं कीन ॥
बढ़ी प्रीति बहु सुत बानी सुनि दृग जल देह रोम उमगान।
प्रेमभाव लखि रघुनायक प्रभु दीन्ह्यों पितै चितै दृढ़ज्ञान ॥
भेद भक्ति महँ मन लायो नृप ताते मोक्ष न पायो वाम।
सगुण उपासकगति चाहत नहिं तिन कहँ भक्ति देत निज राम ॥
प्रभु पद बन्दन करि नीकी बिधि दशरथ हर्षि गये सुरधाम।
अनुज जानकी युत रघुकुलमणि राजत भूप रूप अभिराम ॥
अति आनन्दित ह्वै सुरपति तब अस्तुति करत भाषि गुणग्राम।
जय श्री रघुबर सुख शोभा घर अशरन शरन कल्पतरु नाम ॥
शारँगशर करवर तरकसधर प्रबल प्रताप शत्रुकर ताप।
खल दल खण्डन अतिप्रचण्ड भुज मण्डन मही सहीय शथाप ॥

अति अभिमानी शठ लङ्कापति सुर गन्धर्ब सर्ब बशकीन।
सिद्ध मुनीश्वर अहि मानव खग सब कहँ बिबिध भाँति दुखदीन॥
अतिशय क्रोही परद्रोही खल मल आगार महा बदकार।
ताको उत्तम फल दीन्ह्यो प्रभु दयाअगार चित्त औदार॥
सुनो दयानिधि अब बिन्ती मम मो कहँ रह्यो महा अभिमान।
मोसम नाहीं कोउ दुनिया महँ सो अब सबप्रकार बिनशान॥
भयों अनन्दित अब सबही बिधि लखिकै स्वामि चरण जलजात।
पूरण करिये अभिलाषा अब भाषत जौन हृदय की बात॥

क०। कमल ललाम दाम सुन्दर शरीर श्याम शोभा अभिरामकीट मुकुट कसे रहो। कर धनुतीर धीर बीर सो तुणीर कटि आनन अनन्द चन्दमन्द बिहँसे रहो॥ उर वरमाल सुबिशाल बलशाल बाहु स्वजन दयाल दया द्दग दरशे रहो। हर हृदि हेतु वन्दि रघुकुलकेतु भवसागर के सेतु मम मानस बसे रहो॥

दास आपनो म्वहिं जानिय प्रभु रमानिवास पूरि करु आस।
भक्ति आपने पद कञ्जन की हम कहँ देहु लेहु हरि त्रास॥
जनसुखदायक सब लायक तुम हे सुखधाम राम तन श्याम।
हे रघुनायक धनुशायकधर प्रणवत चरण कमल अभिराम॥
अब करि दाया अवलोकहु म्वहिं आयसु देहु करौं मैं काह।
सुनि पवि पानी की बानी इमि बोले बचन राम नरनाह॥
परे निश्चरन के मारे महि यावत भालु कीश समुदाय।
केवल ममहित तन त्यागे इन देहु जियाय सबहि सुरराय॥
गिरिजा रघुपति की बानी यह है अति गूढ़ लेहु अनुमानि।
जाहि जनावैं जन जानै स्वइ सकै न स्वामि दया बिन जानि॥
एक मुहूरत महँ त्रिभुवन को मारि जियाय सकैं भगवान।
केवल प्रभुता के देवेहित अस सुरपतिहि दीन फरमान॥
सुधा बर्षिकै सुरनायकने दीन जियाय सर्ब कपि भालु।
प्रभु ढिग आये आनन्दित ह्वै खगपति सुनो अग्र को हालु॥

सुधा वृष्टि भै ह्वउ सेना महँ केवल जिये कीश औ भालु।
जिये न निश्चर क्यहि कारण ते त्यहिकर सुनौ भवानी हालु॥
राममयी भे तिन सब के मन ताते मुक्त भये नभवास।
वैर भाव ते भगवन्तहिं भजि छूटे बे प्रयास भव पास॥
देवअंशभव कपि भल्लुक गण सब जी उठे राम रुख पाय।
दीनहितू को रघुनायक सम कीन्हें मुक्त अधम समुदाय॥
अतिशै बिषयी उत्पाती खल मल आगार निशाचर राय।
सुर मुनि दुर्लभ गति पाई सो अस रघुराय दया दरिआय॥
रुचिर बिमानन पर चढ़ि चढ़ि पुनि गमने देव फूल बरसाय।
जानि सुऔसर शिव आये तहँ राजे जहाँ राम रघुराय॥
परम प्रेम सों कर संपुट करि सुभग सरोज दृगन भरि बारि।
गदगद बाणी सों पुलकित तन लागे बिनै करन त्रिपुरारि॥
रघुकुलनायक धनुशायकधर स्वामी रक्षा करौ हमारि।
जन सुखदायक सब लायक तुम हे खरदूषणारि असुरारि॥
बायु बिड़ारै जस बादल दल औ जिमि अनल देत बनजारि।
तस प्रभु नाशत मोहादिक भ्रम समरथ सब प्रकार सुखकारि॥
प्रबल अज्ञता तमहारी रबि निगुर्ण सगुण गुणाकर नाथ।
बसहु निरन्तर मम मानस महँ माँगत बन्दि जोरि युगहाथ॥
काम कोह मद मोहादिक गज मारनहेत सिंहबल धाम।
बसौ सदा जन मन काननमा सीता अनुज सहित श्रीराम॥
बिषै मनोरथ बहु अम्बुज बन पाला सरिस बिनाशक ताहि।
भौनिधिमन्थन को मन्दर सम आपदिहरण बेदकह जाहि॥
दुस्तर संसृति ते तारहु प्रभु धारहु बेश बिरद की लाज।
बसौ निरन्तर उर अन्तर मम सीता अनुज सहित रघुराज॥
कौशलपुरमा ज्यहि औसर पर होइहि राजतिलक प्रभुक्यार।
चरित मनोहर अवलोकन हित ऐहौं तहाँ अवशि मैं यार॥
यहि बिधि बिन्तीकरि गिरिजापति गे जब बिदामाँगि निजधाम।

आय बिभीषण प्रभुअन्तिक तब कहशिरनाय वचन अभिराम ॥
मारि दशानन कुलसैना सह प्रभु जग सुयश कीन बिस्तार।
अधम हीनमति मो दुखिया पर कीन्हीं कृपा दीन अधिकार ॥
अब पुनीत करि घर अनुचर को मज्जन करिय युद्धश्रम जाय।
कोश संपदायत मन्दिर महँ देहु दयाल कपिन बँटवाय ॥
सबबिधि मोकहँ अपनाइय प्रभु फिरि पुरचलिय मोहिं लै साथ।
वचन बिभीषण के सुनिकै मृदु पुल के सजलनैन रघुनाथ ॥
धाम खजाना तुव मेरो सब मानिय सखा सत्य मम बात।
दशा भरतकी उर चिन्तन करि मोकहँ निमिष कल्पसमजात ॥
बेष तपस्वी को धारण किये कृशतन जपै निरन्तर मोहिं।
लखौं बेगिही प्रिय बन्धव को सो करु सखा निहोरौं तोहिं ॥
अवधि व्यतीते पर जैहौं जो पैहौं जियत नाहिं प्रिय भाय।
प्रीति भरत कै उर चिन्तन करि पुनि २ पुलकगात रघुराय ॥
सदा सर्वदा मोहिं सुमिस्यो मन मुदसह करौ कल्पभरि राज।
फेरि सिधास्यो मम मन्दिर कहँ जहँपर जात सन्त शिरताज ॥
बचन मनोहर सुनि राघव के गहे बिभीषण पद हर्षाय।
भये अनन्दित कपि भल्लुक सब जय २ कार करत गुणगाय ॥
फेरि बिभीषण गे मन्दिर कहँ मणिगण बसन यान भरवाय।
धस्यो आनिकै प्रभुआगे सो तब हँसि कह्यो राम रघुराय ॥
सखा बिभीषण चढ़ि पुष्पक पर नभमहँ जायदेहु बर्षाय।
जाय बिभीषण तब अम्बर महँ बर्षे पटाभरण समुदाय ॥
रुचि सह जाके मनभावै जो स्वइ स्वइ लूटि लेहिं उरगारि।
फलको धोखाकरि बानर कोउ मणि मुख मेलि देहिं महिडारि ॥
देखि तमासा यह बनरन को बिहँसैं अनुज सीय सहराम।
परमकौतुकी प्रभु दायानिधि दासन सदा देत बिश्राम ॥
ध्यान न पावत हैं जाको मुनि गावत नेति नेति कहि वेद।
सो करुणाकर कपि भालुन सँग करत बिनोद मोद बिनखेद ॥

योग तपस्या व्रत नानामख कितनो नेम धर्मकर कोय ।
इनते रीझैं ना रघुपति तस जस परसन्न प्रेम ते होयँ ॥
पहिनि पहिनि कै आभूषणपट आये भालु कीश प्रभु पास ।
नानारङ्गन के बानरभट देखत हँसत राम सहुलास ॥
चितै सबन तन करि दाया अति बोले मधुर बचन रघुराज ।
मार्‌यो रावण मैं तुम्हरे बल कीन्ह्यों बिभीषणै महराज ॥
निज २ मन्दिर अब जावहु सब सुमिरयो मोहिं डर्‌यो जनिकाहु ।
सुनि प्रभुबानी अकुलाने कपि सबकर भङ्ग भयो उतसाहु ॥
हाथ जोरि कै सब बोलत भे तुव मुख कहत नीक सब नाथ ।
मोह होत है हम सबहिन का सुनि तुव बचन अयोध्यानाथ ॥
दीन जानि कै अपनायो कपि तुम त्रैलोक्य ईश भगधाम ।
मशाकरैं कस हित खगपति को लेहु बिचारि दयानिधि राम ॥
प्रभु अनुमान्यो कपि भालुन की इच्छा गेह जानकी नाहिं ।
ताते इनकहँ दुख लागत है हैं सब मगन प्रेमरस माहिं ॥
हठकरि पठयो रघुनन्दन तब कपि अरु भालु बिनै बहु भाखि ।
हर्ष बिषाद सहित गमने तब सुन्दर रामरूप उरराखि ॥
जामवन्त अरु कपिनायक नल तारासुवन बीर हनुमान ।
सहित बिभीषण अरु सेनप जे रहिगे शेष कीश बलवान ॥
बिकल प्रेमवश कछु भाषैं ना भरि भरि नैन पुटन महँ बारि ।
सम्मुख चितवैं रघुनायक तन नैन निमेष टारि उरगारि ॥
बिकल प्रेमबश तिन सब को लखि लीनचढ़ाय यानपर राम ।
माथनाय कै द्विज पायँन महँ कीन्ह्यों गमन अयोध्याधाम ॥
भयो कोलाहल त्यहि औसर बहु जय २ करत कीश समुदाय ।
उच्चमनोहर सिंहासनपर बैठे सिया सहित रघुराय ॥
मेरु शृङ्गपर ज्यों दामिनिद्युति सोहत तथा राम सह वाम ।
गमन्यो पुष्पक अति आतुरगति हर्षित भये देवगण आम ॥
बजे नगारे हहकारे करि वर्सत फूल माल भरिलाय ।

जयरघुनन्दन जयसीतापति मुदसह कहत देव समुदाय ॥
चली बयारी सुखकारी त्रय शीतल मन्द सुगन्धित यार ।
सागर सरिता जल निर्मल भो सुरपुर होत मङ्गलाचार ॥
शकुन सुमङ्गलयुत आसा सब उज्ज्वल दिपन लाग आकास ।
मुद उमगानी मन सबही के कहत न बनै तौन नभबास ॥
कह्यो जनकजा ते राघव तब लखु प्रिय युद्धभूमि मनलाय ।
लषण सँहार्यो मघवारी को यहिठां बिषम युद्ध दरशाय ॥
बालिसुवन अरु हनुमन्ता के मारे यातुधान बलवान ।
अगणित डारे रण पुहुमी महँ मारे नील अचल अनुमान ॥
कुम्भकरण अरु दशआनन दउ मार्यों यही ठाम मैं बाम ।
जे दुखदाता मुनि देवन के जग बिख्यात नाम बलधाम ॥
सेतु विलोकौ यह बारिधि महँ बाँध्यों कीश भालु सहपाय ।
ताकी रचना प्रिय देखौ तौ तुम्हरेइ हेत भयो व्यवसाय ॥
यह गृह देखौ अहिभूषण को अतिउत्तङ्ग शृङ्ग दिखरायँ ।
किह्यों थापना जय आशाकरि पूरी तौन शिवा के सायँ ॥
असकहि सीता लघुबन्धव सह कीन प्रणाम राम रघुराय ।
चल्यो अगारी फिरि पुष्पक उड़ि गमनत यथा बेग गतिबाय ॥
जहँ जहँ कानन मधि करुणानिधि बिलँबे कीन बास बिश्राम ।
सकल दिखायो प्रिय सीता को कहि सब केर यथोचित नाम ॥
पुनि तहँ पुष्पक चलि आवत भो दण्डक विपिन जहाँ खगराय ।
कुम्भजादि जे मुनिनायकबर सब कहँ मिले थलन प्रभुजाय ॥
सकल ऋषीशन ते आशिष लै आये चित्रकूट रघुनाथ ।
तहँ संतोषित करि मुनियन को चल्यो बिमान बेग के साथ ॥
फेरि तरणिजातट आयोचलि तब प्रभु सीतहि कह्यो बुझाय ।
तरलतरङ्गिनि अघभङ्गिनि ये यमुना लखौ प्रिया चितलाय ॥
सुगति निसेनी तिरबेनी यह देखहु प्रिया करौ परणाम ।
दुखहरिलेनी सुखदेनी अति महिमा वदत वेद गुणगाम ॥

स०। तारत म्हातक के कुलसातक पातकघातक सिंहमतङ्गम।
नाशतहै यमफांसकि त्रास विकाशत दिव्यप्रभाअँगअङ्गम॥
बन्दि उधारत है जड़जंगम जारतहै दुख दारिद दङ्गम।
भङ्ककरै भ्रम भेक भुवङ्ग पतङ्गजा गङ्ग तरङ्गम सङ्गम॥

लख्यो अयोध्या अतिपावन पुर ख्वावन तीनिताप भवदाप।
दावन दूषण दुख दारिद को जग महँ अति प्रसिद्ध परताप॥
तब रघुनायक प्रभु सीतासह कौशलपुरै कीन परणाम।
सजल बिलोचन अति पुलकित तन हर्षित बार २ श्रीराम॥
आय त्रिवेणी महँ राघव पुनि आनँद सहित कीन असनान।
भालु कपिन सह महिदेवन कहँ दीन अनेक भाँतिके दान॥
निकट बोलायो हनुमन्तहि पुनि कह्यो बुझाय ताहि रघुराय।
रूप ब्राह्मण को धारण करि पहुँचौ बेगि अवध महँ जाय॥
कुशल हमारी कहि भरथते तिनके समाचार लै यार।
आवो बेगिहि तुम मोरेढिग जावो सुत न लगावो बार॥
पाय सुआयसु रघुनायक को गमने तुर्त प्रभञ्जनजात।
भरद्वाज पहँ चलिआये प्रभु सँगमहँ जनकसुता लघुभ्रात॥
पूजा कीन्हीं मुनि नानाविधि गये सनेह भाय हर्षाय।
अस्तुति करिकै पुनि आशिषदै कीन्हे बिदा राम रघुराय॥
मुनिपद बन्दनकरि आनँद सह श्रीरघुनन्दन बैठ विमान।
चल्यो अगारी अति आतुरगति गङ्गा निकट आय नियरान॥
मिली खबरिया गुहराजा को आये लषण सिया सह राम।
धाम छोड़िकै तब धावत भो सेवक वृन्द बोलाये आम॥
नाव किनारे लगवाईं सब इतने समय माहिं चलियान।
पार सुरसरी के आयो तब उतरन हुक्मदीन भगवान॥
उतरि तड़ाका सुर सरिता तट किय जलपान और असनान।
जनकदुलारी ने पूजाकरि बहुविधि दीन द्विजन कहँ दान॥
आशिष दीन्ही सुरसरिता ने होय अभङ्ग तोर अहिवात।

गङ्गा मुखकी सुनि आशिष शुचि भईं प्रसन्न जानकी मात ॥
सुनतहिं धायो प्रेमाकुल गुह आयो जहाँ राम सुखधाम ।
माथ नायकै अति आनँद सों कीन्ह्यों पगन माहिं परनाम ॥
सियसह शोभा लखि राघवकी मगन सनेह भाय अकुलाय ।
पर्यो धरातल महँ बेवश ह्वै दीन्हीं देहसुध बिसराय ॥
प्रेम अवस्था लखि ताकी प्रभु दयानिधान भक्तके प्रान ।
हर्षि उठायो उरलायो त्यहि सो मुद कहि न जाय [illegible] ॥
कुशल बूझिकै पुनि करुणाकर प्रेम समेत पास बैठाय ।
हाल हकीकति सब बूझत भे कह्यो निषाद पगन शिरनाय ॥
भयोंकुशल अब पदपंकज लखि सेवत जिन्हैं शम्भु अजदेव ।
आजु कृतारथ भे लोचन द्वउ प्रभु लखि मिटी अनट अवरेव ॥
नीच [illegible] बिधि तौन निषाद हृदयमहँ लाय ।
मिले प्रेमसह रघुनायक प्रभु भरत समान मानि खगराय ॥
ऐसे कृपानिधि स्वामी कहँ जे शठ भजत नाहिं मन लाय ।
तिनको जीवन धिक दुनियामहँ जन्मी [illegible] ॥
रावन अरिको [illegible] यह सब दुख दोष [illegible] हार ।
सिद्ध देवता मुनि गावत ज्यहि [illegible] सुगतिदातार ॥
युद्ध बिजै यश श्रीराघव को जे जन सदा सुनैं धरिध्यान ।
तिनकहँ सन्तति सुखसम्पति यश बिनय बिवेक देहिं भगवान ॥

स० । हे कलिकाल कराल महा भ्रमजाल बिषै बश कै बहँकावै ।
लालच क्रोध कुकर्मन सों यह माया मनुष्यन बुद्धि भ्रमावै ॥
बन्दि सहाय न राम बिना कोइ जो भवसागर पार लगावै ।
याते तजै सब राम भजै मन जानिभले भजिबो बनिआवै ॥

इति श्रीभार्गववंशावतंसश्रीमुंशीप्रयागनारायणस्याज्ञाभिगामीउन्नामप्रदे-शान्तर्गतमसवासीग्रामनिवासीपण्डितबन्दीदीनदीक्षितनिर्मितश्रीविजय राघवखण्डेयुद्धकाण्डेश्रीरामचन्द्रसमरविजयतथाअयोध्यागमनवर्णनोनामनवमोल्लासः ॥ ९ ॥ समाप्तोऽयंयुद्धकाण्डः ॥

इति ॥

# इश्तहार ॥

सम्पूर्ण महाशयोंको प्रकट होवे कि इस पुस्तकको मालिक मतबा अवध अख़बार ने बहुतसा रुपया व्यय करके अपनी ओरसे उल्था कराके निज यन्त्रालय में मुद्रित कराया है इस कारण से कोई महाशय इसके छापने का इरादा न करें—

मैनेजर—नवलकिशोर प्रेस,
लखनऊ.

| नाम किताब | कीमत |
|---|---|
| रामायणगुटका तुलसीकृत मूल सातोंकांड | ॥=) |
| रामायणछन्दावली तुलसीकृत मूल | )॥। |
| तथा मय टीका बैजनाथजी | -) |
| रामायणतुलसीकृत टीका बैजनाथ | ३॥) |
| रामायणमानसदीपिका | -)॥ |
| रामायण मानसप्रचारिका | ।-) |
| रामायण रामविलास | ॥=) |
| अद्भुतरामायण | -)॥ |
| रामाश्वमेध भाषा | =) |
| रामायण उमरावसिंह कृत | ॥) |
| गीतरामायण | -)॥ |
| श्यामरामायण [illegible] | ।-) |
| अध्यात्मरामायण भाषा टीकासहित | २॥) |
| अध्यात्मरामायण भाषा टीका व नक्शा सहित | ३) |

| नाम किताब | कीमत |
|---|---|
| अध्यात्मविलास रामायण भाषा कवित्त | २॥) |
| महारामायण | )॥। |
| श्रीपद्मचन्द्ररामायण | =)॥ |
| तुलसीकृतरामायण की मानसप्रचारिका | ।-) |
| अनर्घविलास रामायण | =) |
| बरवैरामायण सटीक | -) |
| कुंडलियारामायणसटीक | ।=) |
| उभयप्रबोधक रामायण भाषा | १) |
| शब्दार्थ किष्किन्धाकांड | )। |
| विजयराघवखंड आल्हा कामिल | ३॥=)॥ |
| तथा बालकांड | ॥-) |
| तथा अयोध्याकांड | ।=) |
| तथा आरण्यकांड | ≡) |
| तथा किष्किन्धाकांड | =)॥ |
| तथा सुन्दरकांड | ।) |
| तथा उत्तरकांड | -) |

# श्रीविजयराघवखण्ड आल्हा

## उत्तरकाण्ड

जिसमें

श्रीरामचंद्र आनन्दकन्द का उत्तरकाण्ड सम्बन्धी परमोदार चरित्र आल्हा की रीति पर छन्द प्रबन्ध में वर्णन कियागया है

जिसको

लक्ष्मणपुरस्थ भार्गववंशावतंस श्रीमान् मुंशी नवलकिशोरजी के पुत्र श्री मुंशी प्रयागनारायण की आज्ञानुसार उन्नाम प्रदेशान्तर्गत मसवासी ग्राम निवासी पण्डित वंदीदीन दीक्षित ने रामरसरसिक पुरुषों के अवलोकनार्थ अति रोचक छंदमें निर्मित किया

प्रथमबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर ( सी, आई, ई ) के छापेखाने में छपा

नवम्बर सन् १८९६ ई० ॥

२ जुज़ १ वर्क़

# श्रीगीतगोविन्दकाव्यम् ॥

वनमाली भट्ट कृत संजीविनी टीकोपेतम् ॥

यह गीतगोविन्द काव्य पण्डित जयदेवकृत वहीहै जो कि अतीव उत्तम होने के कारणइस संसार में प्रसिद्ध है प्रायः पंडित लोग इसको अच्छी भांति जानते हैं संस्कृत पढ़नेवाले विद्यार्थियों को तो यह काव्य बहुतही लाभकारी है क्योंकि इसका तिलक बनमाली भट्टजी कृत जिसका कि संजीविनी नाम है अर्थात् इस तिलक का जैसा नामहै वैसाही गुण है जो विद्यार्थी थोड़ी भी व्याकरण जानते हैं इस तिलकके द्वारा पूर्ण अर्थ मूल का लगा सके हैं पण्डित लोगों की रुचि संस्कृत पुस्तकों में अक्सर बम्बई की छपी हुई में अधिक होती है क्योंकि उम्दा कागज़ और अधिक शुद्ध छपाई यह सब उनपुस्तकों में मिलतीहैं यद्यपि वहां से यहांतक माल आनेमें खर्च महसूल आदि होनेके कारण वहांकी पुस्तकों का मूल्यविशेष है तथापि दूसरे यंत्रालयमें वैसा न छपने के कारण लाचार होके उन लोगों को लेना पड़ता है इस यंत्रालय में यह पुस्तक जो अब छपीहुई तैयारहै बम्बई से कोई काम न्यून नहीं हुआ अर्थात् बहुतउम्दा कागज़ सफ़ेद पर बहुत उम्दा छपाई की गई है शुद्ध होने में तो हम कहसके हैं कि बम्बई की छपीहुई पुस्तकमें चाहे पांच छः गलती भी होवैं परंतु यह पुस्तक ऐसे परिश्रमसे शोधीगईहै कि पण्डित लोगों को परिश्रम करके ढूंढ़ने पर भी गलती नहीं मिलैगी और मूल्य इस पुस्तक का बम्बई से बहुत न्यूनरक्खा गया है हम पूरे तौरसे उम्मैद करते हैं कि हमारे देशके रहने वाले पण्डितलोग इस पुस्तकको देखके बम्बई की पुस्तक लेना

श्रीगणेशायनमः

# अथ विज्ञापन

राम बाम दिशि बाम जानकी शोभाधाम रूप गुणवान।
लषण दाहिनीदिशि राजत शुचि जनकल्यान करनयह ध्यान॥
ध्याय गजानन गुरुगोविंद पद शेश महेश सिद्धि आगार।
बन्दि अनंदित वह गावत कहि ज्यहिविधि भयो ग्रंथअवतार॥
सुयश उजागर गुण नागर वर विदित जहान मध्य मतिधाम।
सुखद भार्गवकुल भाकर इव नवलकिशोर नाम अभिराम॥
शहर लखनऊ के बासी शुचि शील प्रताप तेजकी खानि।
जक्त विदित है यंत्रालय ज्यहि लक्ष्मी अप्रमान अधिकानि॥
इक दिन समया लगि आई असि जमक्यो महासघन दरबार।
सचिव सलाही सतराही सब बैठे निकट बुद्धि आगार॥
वर्षा ऋतुको रह औसर वह नभ घन घटा छटा रहि छाय।
वही मुहल्ला महँ समया वहि आल्हारह्यो एक जन गाय॥
कान शब्द सो पर्यो सबन के तब अस लगे फेरि बतलान।
अब रुचि पुरुषन की आल्हा पर है बहु परत बातयह जान॥
जो यहु आल्हा जन गावत हैं ताको ना कछु ठीक ठिकान।
लिख्यो न कतहूँ क्यहु ग्रंथनमहँ नाकछु मिलत ठीक परमान॥
छाँड़ि नरायण यश नरयश को गावब सुनब नीक कछु नाहिं।
इतको स्वारथ परमारथ उत कछु न दिखाय परत यहिमाहिं॥
यतन चाहिये अस याकी अब होवै यही भांति को गान।
पै यश होवै नारायण को जासे दुहूं ओर कल्यान॥
अस विचारि कै उर मुंशी जी कीन्ह्यो क्षणक हृदय महँ ध्यान।
पुनि तदनंतर वहि औसर पर हँसि अस उचित बातबतलान॥
एक बार्ता हम शोची चित जो कहुँ अस उपाय बनि जाय।

तौ यहि आल्हाको गावत्र फिरि जगमें सहज माहिं उठिजाय ॥
इतको स्वारथ परमारथ उत गावत सुनत माहिं अभिराम ।
लोक सिधरिहैं दउ नीकी विधि ह्वैहै एक पंथ दुइ काम ॥
कथा मनोहर रामायणकी तुलसी दास कीनि निर्मान ।
जा महँ उत्तम यश रघुवर को जग को करन हार कल्यान ॥
जौने ढँग पर यहु आल्हा है सोई छंद बनाई जाय ।
फिरि मुद्रित ह्वै यंत्रालय महँ जाहिर कीन जाय जग भाय ॥
सुनै सुनावै अरु गावै. सब होवै जगत केर उपकार ।
यहि उपाय ते बढ़ि दूसर अरु कोई देखि परत नहिंयार ॥
मुंशीजीको यह सम्मत शुभ सबको हृदय माहिं प्रियलाग ।
तब वहि औसर पर मुंशी जी मोसन कह्यो सहित अनुराग ॥
यहि रामायण को विरचौ तुम आल्हा रीति प्रीति सरसाय ।
यहिके बदले महँ तुम कहँ हम मुद्रा देव पांच शत भाय ॥
यह अनुशासन श्रीमुंशीको मैं स्वइ लीन शीश पर धार ।
लग्यो बनावन रामायण को अपने ज्ञान बुद्धि अनुसार ॥
भयो न पूरण यह आल्हासब बीचहि हाल कीन असराम ।
स्वजन सुखारी उपकारी पर नवलकिशोर गये सुग्धाम ॥
पुनि तदनंतर श्रीमुंशी के पूत सपूत बुद्धि आगार ।
सत मति पूरे द्युति रूरे अति सज्जन गुणिन मानदातार ॥
क्षमा छबीले युत शीले बहु दायक संत द्विजहि सत्कार ।
मान सरोवर श्री भार्गव कुल तामहँ अमलकमल अवतार ॥
प्राग नरायन सुखदायन अति तिन वह पूर कीन सबकाम ।
जस अभिलाषा रह मुंशीकी तैसे भयो सकल इतमाम ॥
सप्तकाण्ड शुचि रामायण स्वइ पूरण यथायोग्य बनवाय ।
निज यंत्रालय महँ मुद्रित करि दीन्ह्यों जगत रामयश छाय ॥
मति समभाख्यों यह रघुपति यश जस कछुहती चित्तकीसाध ।
सुनैं सुनावैं जन गावैं जे ते मम क्षमा करैं अपराध ॥

सवैया। जानत काव्य न एकहु अंग न ढंगहै छंद प्रबंध बनाइबो।
है बल बुद्धि विवेक नहीं विधि जानत नाहिंन लोक रिझाइबो॥
संग लह्यो न कहूं गुणियानको वंदि न चातुरी को दरशाइबो।
राह बताय दई गुरु एक यथा मति गोविंद को गुण गाइबो॥

( कविवंशतथानामग्रामवर्णन )

छंदककुभा

अवध देश महँ शुचि प्रदेश जाहिर उन्नामा। त्यहि अन्तर्गत बसत लसत प्रसवासी ग्रामा॥
चारि वर्ण प्रति राग बाग जहँ करत घनेरा। धर्म धुरी शुभ कुरी शिव पुरी सम द्युति हेरा॥

सवैया। दक्षिण में सुर आपग राजत धारसो नाशत भारधराका।
पूरब कोण तड़ाग तटस्थ अनंदित मंदिर श्री दुरगाका॥
पश्चिम नंद अधीश औ उत्तर गोकुलनाथ धरे वरनाका।
मंदिर मंजु रमापति को सुलसै बिलसै मधि ग्राम के बांका॥

दोहा। तीन ग्राम अभिराम में बनो मोरहू धाम।
पुरिखन तहँ वर वास लिय जानि सुथल अभिराम॥

छंदककुभा

लल्लू नाम ललाम अहै प्रपितामहँ केरो। रामदीन प्रति वीन पितामह श्री शिवचेरो॥
भागूलाल विशाल अहै मम पितुकर नामा। चंदीदीन प्रवीन मोर पितृव्य ललामा॥
अग्रगण्य जे भये मनीषिन महँ त्यहि पुरमें। श्रीमद्रामप्रसाद बिबुध एकहि बुध कुरमें॥
तिनसे विद्यालह्यो अनूपम गुरू बनायो। श्रीमद्राम प्रसाद सुयश उज्ज्वल तहँ छायो॥
चंदीदीन सुनाम धरयो गुरु मोर विचारी। विप्रवंश अवतंस दीक्षितास्पद अधिकारी॥
शिवनारायण गुरू मोर त्यहि थल विख्याता। संभव वंश त्रिपाठि विप्रकुल प्रवर कहाता॥
चारि वेद षटशास्त्र कथनमहँ जिन अतिशक्ती। जन अनंद ब्रजचंद चरणकी हियबहुभक्ती॥
अष्टादशहु पुराण जासु जिह्वा पर छाजैं। काव्यमाहिं जनु कालिदास अस दूसरराजैं॥
गान विधान निधान चित्र एकही बनावैं। कथाकहनके समय द्वितिय व्यासहिसमभावैं॥
तिन दिय विद्यादान चरणसेवक शिशुजानी। परमोदार अपार बुद्धि श्री गुरु विज्ञानी॥
यह रामायण रची तासु पद पंकज दाया। भाषा छंद प्रबंध माहिं रघुपति यश गाया॥
भूल चूकलखि क्षमहिं दोष मतिमान सुजाना। हौं मैं अति निर्बुद्धि नहीं कविता कर ज्ञाना॥

दोहरा। संवत् शशि[1] शर[५] नंद[९] चंद[1] में भयो ग्रंथ अवतार।
पुनि गुण शायक नन्द चन्द में भई पूर्णता यार॥

मत्तसवैया

**याको पिंगल महँ भाषत कहि मात्रिक मत्त सवैया नाम।**
**मात्रा इकतिस को इकपद है जानत छंद विज्ञ मति धाम॥**

रीति यथावत लहि आल्हाकी वहि धारणा माहिं कियगान।
जासे गावहिं सब सज्जन जन करिकै साज बाज को ठान॥
यह रामायण संपूरण करि जस मति दई शारदा माय।
प्रागनरायण की अनुमति लहि वंदीदीन बखान्यो गाय॥
श्री रघुनंदन की कीरति यह जो कोउ पढ़ै सुनै मन लाय।
कलिमल नाशै परकाशै बुधि ऋधिसिधि बसैभौनत्यहि आय॥
पर्व पर्वमहँ शुचि मानुष जो करि है श्रवण याहि धरि ध्यान।
पाप नशैहै सुर पुर पैहै ह्वैहै सदा तासु कल्यान॥
पितृ श्राद्धमहँ जो सुनिहै यहि करि एकाग्र चित्त मतिमान।
मुक्ति होइहै त्यहि पितृन की बसिहैं जाय अमर अस्थान॥
तन मन इन्द्रिन को पावन करि दिन महँ करै जौन यहिगान।
दिन कृत पातक त्यहि मानुषके विनशैं अवशि सत्यपरमान॥
करै निशामहँ जो पातक नर औ यहि श्रवण करै मन लाय।
देर न लागै अघभागै त्यहि प्रापत होय सिद्धि कर आय॥
विप्र जो बांचै यहि मंशाकरि होवै महा ज्ञान आगार।
सुनै जो भूपति यहि चिताहितकरि लहैसो विजययुद्ध अधिकार॥
नारि गर्भिणी जो सुनिहै यहि पैहै तनय सुष्ठु मतिमान।
स्वर्ग मँगइया स्वर्गौ पैहै जैहै हर्षि देव अस्थान॥
कन्या सुनिकै पति पैहै शुभ बंध्या अवशि पाइहै बाल।
संपति अर्थी संपति पैहै गैहै याहि जौन सब काल॥
बुध पारायण जो बँचिहैं यहि वक्ता होयँ ज्ञान की खानि।
जो कोउ सुनि है यह राघव यश होइ है महा द्रव्य को दानि॥
कामधेनु कहि यहि भाषत सब याके पढ़े होय अति ज्ञान।
कीरति बाढ़ै त्यहि दुनियाँ महँ होवै सब प्रकार कल्यान॥

इति

( मसवासी निवासी पण्डित
बंदीदीन कवि )

———

# श्रीविजयराघवखंड आल्हा

## उत्तरकाण्डप्रारम्भः ॥

सुमिरण ॥

मोरकंठ सम तन सांवल द्युति द्विज पग चिह्न हृदय दरशात ।
कटि तट सोहत सुभग पीत पट शोभाधाम राम को गात ॥
अंबुज दल सम अरुणारे दृग मुख लखि चंद मंद परिजात ।
खल दलघायकधनुशायककर ज्यहि लखिकाल हृदयभयखात ॥
बानरदल युत शुचि बंधवसे सेवित शुभ बिमान आरूढ़ ।
सहित जानकी तिन रघुबरको निशिदिन क्यों न भजत मनमूढ़ ॥
बिपिन बास महँ श्रीरघुबरके यक दिन रह्यो शेष जब आय ।
महा दुखारी पुर नारी नर भारी शोच रहे सरसाय ॥
भरे दृगन महँ जल दुर्बल तन राम बियोग माहिं अकुलात ।
कहूं न लागत मन काहूको कछु न सोहात चित्त घबड़ात ॥
होयँ शकुनवाँ अति सुंदर शुभ सब के मन प्रसन्न दिखरात ।
राम आगमन बतलावत जनु चहुँदिशि नगर शोभअधिकात ॥

कौशल्यादिक महतारिन के मनमा अस अनन्द दरशाय।
लषण जानकी युत आये प्रभु असकोउ कहन चहत इतआय॥
भुज दृग दाहिन भरत कुवँर के फरकत बार बार हरियान।
जानि शकुन शुभ आनंदित ह्वै लागे हृदय करन अनुमान॥
श्रीरघुनंदन के आवन महँ एकै दिवस रह्यो अब शेष।
असमन समुझत दुख बाढ़्यो बहु शोचनलगे बहुरि नगेश॥
केवल एकहि दिन बाकी है अवधि अधार माहिं अब हाय।
कौनसो कारण प्रभु आये नहिं म्वहिं खल जानि दीनबिसराय॥
अहो लक्ष्मण बड़ भागी धनि राम पदारविंद महँ प्रेम।
करिकै परिहरिकै झंझट सब प्रभु सँग लगे पगे शुचि नेम॥
मोकहँ कपटी पहिंचान्यो मन ताते नाथ लीन नहिं साथ।
होत कहा है पछिताये ते अब सब खेल नाथ के हाथ॥
कर्म हमारो जो समुझैं प्रभु तौ नहिं कोटि कल्प निस्तार।
पै निज सेवक के औगुण प्रभु कबहूं हृदय धरत नहिं यार॥
मोहिं भरोसा है याही दृढ़ मिलिहैं राम शकुन शुभ होय।
अवधिहु बीते रह्यों जियत तौ मोसम नीच और नहिं कोय॥
यहिबिधिरघुपतिबिरहासिंधुमहँ अति मनमग्न भरत खगराय।
बिप्ररूप धरि जनु जहाज सम अंजनि पुत्र पहूंचे आय॥
देखि कुशासनपर बैठे तहँ शिर पर जटा मुकुट कृशगात।
बहत अश्रुजल कल नैनन ते सुमिरत राम राम रघुनाथ॥
देखत हनुमत हिय हर्षे अति पुलक शरीर नीर भरि नैन।
मनमहँ बहुबिधि आनन्दित ह्वै बोले श्रवण सुधासम बैन॥

स० जासु बियोगते शोग भरे दृगमोचत शोचत हौ दिनराती।
जाहिधरे उर धाम निरंतर ध्यावत नाम सुकीरति पाँती॥
सो रघुबंश सरोवर हंस प्रशंस बिध्वंसक राकस जाती।
आवत सो सुनि लावहु धीर अहो बलबीर जुड़ावहु छाती॥

जीति समर महँ रिपु रावणको मुनि देवन को दुःख नशाय।

सकुशल आवत सिय बंधव सह रघुकुलराय दास सुखदाय ॥
भूले सब दुख सुनि बाणीबर गो सुख रोम रोम महँ छाय ।
पाय पियासा जिमि अमृत रस ह्वै सन्तुष्ट जाय हर्षाय ॥
बंधव कहँते चलि आये इत को तुम हमें देव बतलाय ।
वचन सुनाये अस प्यारे म्वहिं डूबत गह्यो हाथ करनाय ॥
पवन पुत्र हौं मैं दायानिधि कपि हनुमान मोर यह नाम ।
जन सुखदायक रघुनायक को पायक जानु मोहिं मतिधाम ॥
भरत भावते सुनि बानी अस उठि भरि भुजा अंक महँ लाय ।
मिले यथावत हनुमंतहि तब प्रेम बढ़ाय अश्रु बर्साय ॥
पाय दरशतुव दुख नाशे सब गो सुख रोम रोम महँ छाय ।
मिले आजु प्रिय रघुनायक जनु आनँद कहौं कहांलग गाय ॥
बूझि कुशलता पुनि राघव की बारहिं बार भरत्थ कुमार ।
देहुँकाह त्यहिं कपिनायक अब मोकहँ लखि न परत कछुयार ॥
यहिसँदेश सम यहि दुनियांमहँ देख्योंकरि बिचार कछु नाहिं ।
उऋण न ह्वैहौं अबतुमसन मैं जबलौं,जियौंरहौं जगमाहिं ॥
सुयश सुनावो अब स्वामी को यहसुनि प्लवँग नायपद माथ ।
भाषि सुनायो सब आदिहि ते श्री रघुनाथ केर गुणगाथ ॥
कह्योभरत तब हनुमन्ताते कहु कपि कबहुँ स्वामि रघुराय ।
केह्विधिते क्यहु औसर पर सुमिरत मोहिं दासकी नायँ ॥
कोमल बाणी भरत कुवँरकी सुनि कपि गिरयो पगन पुलकाय ।
बह्यो प्रेम जल कल नैननते दशा सोकहि न जाय खगराय ॥
अग जग स्वामी प्रभुनामी सो निजमुख करत जासु गुणगान ।
अति पुनीत चितहित विनीतयुत होय सोक्यों न ऐस मतिमान ॥
प्राण पियारे प्रभु रामहिं तुम भाषौं सत्य तात यह बात ।
असकहि भर्तहि पुनिभेंट्यो कपि प्रेम प्रमोद न हृदय समात ॥
माथ नायकै पुनि पायँन महँ कपि चलिगयो रामके पास ।
जाय कुशलता कहिभाषी सब प्रभु चढ़ियान चले सहुलास ॥

भरत अयोध्या महँ आये तब गुरुसन कह्यो भाषि सब हाल।
बातजनाई पुनि मंदिर महँ आवत नगर कुशल जनपाल॥
सुनतै माता उठि धाईं सब भरत समीप पहूँचीं आय।
कुशलयथावत कहिस्वामी की दीन्ह्यों भरतसबहि समुझाय॥
समाचार सुनि पुरवासी सब बालक युवा वृद्ध नर नारि।
प्रेम बढ़ाये उठि धाये त्वर आये नैन पुटन महँ बारि॥
दही दूर्वा नव तुलसीदल फल अरु फूल मूल शुचि माल।
रोचन अक्षत लाजांकुर बर मंगलमयी वस्तु सब आल॥
भरि भरि सुवरण के थारन महँ गजगामिनी भामिनी भूरि।
गीत मनोहर स्वर गावत बर गमनी हृदय महा मुद पूरि॥
जो जस तैसे उठि धावै सो लावै संग न बुढ़वा बाल।
धाय कै पूंछैं इक एकन सों देख्यो तुम दयाल जनपाल॥
स्वामिहिं आवतसुनिकोशलपुर अतिशैभयोशोभ सुखखानि।
निर्मल जलसों भरि सरयू सरि विमल तरंगन सों उमड़ानि॥

स० शीतल मन्द सुगंध समीर बहै तनपीर रहै नहिंलागे।
मोर चकोर कलोलत बोलत डोलत जीवमहामुद पागे॥
लैतब संग प्रजा गुरुमंत्रिन भाय भरतथहिये अनुरागे।
बंदि बिसारि सबै दुखफंदन लेन चले रघुनंदन आगे॥

चढ़ी अटारिन पर नारी बहु निरखैं गगन ओर प्रभुयान।
देखि मधुर सुर आनंदित अति लागीं करन सुमंगल गान॥
पूर्ण चंद सम रघुनंदन प्रभु नगर समुद्र देखि हर्षान।
करत कोलाहल उमगान्यो अति नारि तरंग सरिस हरियान॥
इतै हकीकति अस बीतति भै उत श्री रामचन्द्र भगवान।
कपिन देखावत पुरआवत तहँ निजमुखकरत तासु छबिगान॥
अहो वानराधिप लंकापति अंगद जामवंत ऋक्षेश।
अति मनभावन पुरपावन यह सबविधि सुखद मनोहरदेश॥
यद्यपि वरणैं बैकुंठहि सब वेद पुराण बिदित जग जान।

मोहिं अवध सम प्रिय सोऊनाहिं जानत यहप्रसंग मतिमान ॥
पुरी सोहावनि जन्मभूमि मम पावनि नदी बहै अति पास।
रहै न मज्जन ते रंचकदुख सरयू नाम अरामद बास ॥
जे जन मज्जैं ते सहजे महँ पावैं अवशि बास मम पास।
इतके बासी अतिप्यारे म्वहिं मम धामदा पुरी सुख रास ॥
हर्षेकपि सब प्रभुबानी सुनि पुनि अस कहन परस्पर लाग।
धन्य अयोध्या प्रभुबरण्यो ज्यहि पुरजन महा धन्य बड़भाग ॥
आवत देखे सबलोगन तब स्वामि सुजान राम भगवान।
नगर किनारे प्रभु आयसुते उतरयो भूमि माहिं सुरयान ॥
उतरि तड़ाकै प्रभु पुष्पकते कह्यो कि तुम कुबेरपहँ जाहु।
स्वामि सुआयसु लैगमन्यो सो हिय उत्साहु दुःखअतिताहु ॥
भरत संग महँ जन आये जे ते सब शोकसताये गात।
राम विरहते अति आरत रत डारत नीर नैन जलजात ॥
गुरुवशिष्ठ अरु बामदेव कहँ आवत देखि राम सुखधाम।
डारिधरापर धनुशायक त्वर बंधु समेत कीन परणाम ॥
गुरु उठायकै द्वउ भाइन कहँ हृदय लगाय लीन हर्षाय।
कुशल सहोदर ते बूझी पुनि प्रभुकह कुशल दया तुवपाय ॥
फिरि सब विप्रनको नायो शिर धर्म स्वरूप भूप रघुनाथ।
गहे भरत पुनि प्रभु पंकज पद नावत जिन्हैं शंभु अजमाथ ॥
प्रेम भरे उरपरे पुहुमि पर उठत न बहुत उठायो राम।
बलकरि भुजभरि उरलाये तब दायक जन अराम सुखधाम ॥
साँवल तनमहँ पुलकावलि भलि नव राजीव नैनभरि बारि।
मिले प्रेमसों प्रभु बंधव कहँ देह बिसारि नेह उरधारि ॥
भेंटत अनुजहि रघुनायक प्रभु उपमा कहि न यथावत जाय।
मिलैं परस्पर तनुधारे जनु प्रेम शृँगार मोद मनलाय ॥
बूझैं दायानिधि बंधवते कुशल सो वेगि न आवत बानि।
भिन्न तौन सुख मन बानी ते पावै क्यहिप्रकार कोउजानि ॥

भई कुशलता अब कोशलपति दर्शन दियो दीनजन जानि।
बिरह समुंदर महँ डूबत म्वाहिं कृपानिधान लीन गहि पानि॥
धाय समेट्यो पुनि प्रभु भेंट्यो हृदय लगाय शत्रुहन भाय।
मिले सुमित्रा सुत भर्तहि पुनि आँशुबहाय नेह सरसाय॥
भेंटे रिपुहन पुनि लक्ष्मणको तत्पश्चात् सीय पहँ जाय।
प्रेम बढ़ाये पुलकाये तन पायँन परे भरत द्वउभाय॥
पुरजन हर्षे सब रामहिं लखि गयो बियोग शोग सबभागि।
लखि प्रेमातुर सब लोगन कहँ कौतुक कीन राममुदपागि॥
रूप अनेकन धरि ताहीक्षण सबकहँ यथायोग्य मिलिभेंटि।
दयादृष्टि से लखि नारी नर कीन विशोक शोक सब मेटि॥
क्षणमहँ सबको मिलि लीन्ह्यों प्रभु काहूभेद न पायो जानि।
यहि बिधि सबको सुख आनँद दै आगेचले रामसुखखानि॥
कौशल्यादिक महतारी सब प्रेमातुरी चलीं कस धाय।
बालक बछवा को देखत जस धावै तुरत लवाई गाय॥
अतिव प्रेम सों सब मातन कहँ भेंटि प्रबोध कीन बहुराम।
बिरहा संभव दुख भाग्यो सब जाग्यो हृदय मोद विश्राम॥
मिलीं सुमित्रा सुत लक्ष्मणकहँ अनुचर रामचरणको जानि।
मिलतकैकयी रघुनन्दन कहँ उरमहँ ग्लानिमानि सकुचानि॥
मिले लक्ष्मण सब मातन कहँ आशिष पाय गये हर्षाय।
पुनि पुनि भेंटत भरत मातुको मनकर क्षोभ तबहुँ नहिं जाय॥
मिली जानकी सब सासुनको हर्ष बढ़ाय लागिकै पायँ।
देहिं शुभाशिष कुशल बूझि कै तुवअहिवात अचल ह्वै जाय॥
रामचन्द्र मुख लखि माता सब मंगल जानि रोंकि दृगपानि।
बारि आरती कनक थार महँ प्रभुके उपर उतारहिं आनि॥
करैं निछावरि बिबिध भांति ते परमानंद हर्ष उर छाय।
समर शिंगारे सुत प्यारे तन पुनि पुनि चितव कौशला माय॥
हृदय बिचारत शक धारत अस केहिबिधि हन्यो लंक भर्तार।

निश्चर सारे बलभारे भट अतिसुकुमार युगल ममवार ॥
लषण जानकी सहरघुपति को उरभरि प्रेम बिलोकहिं मात।
महा मगनमन आनंदितअति पुलकित गात नैन जलजाल ॥
कपिपति लंकापति अंगद नल ऋक्षप नील आदि बलवान।
हनुमानादिक कपि यावत सब नरतन दिव्यधरे हरियान ॥
भरत शीलव्रत प्रभु पायँन रति सादर सकल रहे बतलाय।
नगर निवासिन के अनुपम ढँग प्रभुपद प्रीति सराहत गाय ॥
सखा बोलाये रघुनायक तब सबते कह्यो सविधि समुझाय।
गुरुवशिष्ठ कुल इष्ट पूज्यमम इनके चरण छुवौ सब आय ॥
इन मुनिराया की दाया ते मार्यो समर दनुज समुदाय।
इनसमलायक सुखदायक मम दूसर जगमा नहीं दिखाय ॥
मुनिसों भाष्यों रघुनायक पुनि ये सब सखा सुनहुँ ममनाथ।
समर सिंधु महँ भे वोहित सम सबविधि दीन मोर इनसाथ ॥
ममहित कारन तन हारे इन भर्तहु ते म्वहिं अधिक पियार।
भये मगन सब प्रभु बानीसुनि क्षणक्षण लहत मोद अधिकार ॥
मातु कौशला के पायँन महँ पुनि तिन सबन नवाये माथ।
दीनि शुभाशिष आनंदित ह्वै तुम प्रिय मोहिं यथा रघुनाथ ॥
करैं सुमन झरि सुर अंबर ते ज्यहिक्षन भवन चले सुखकन्द।
रविकुल भूषण की देखैं छबि अटरन चढ़े नारि नर वृन्द ॥
कंचन कलसे निर्मल जलसे भरि भरि सबन धरे निजद्वार।
सुखद पदारथ मंगलीक शुभ सजि सजि रचे द्वार आगार ॥
केतु पताके बर बांके बहु बंदनवार मणिन के हार।
इत उत फहरैं छबि छहरैं जनु निजकर सुघर सवाँरे मार ॥
सकल सुगंधनसों सींची मग गजमुक्तन की चौक पुराय।
सजे सुमंगल बहु भांतिनके बाजन शब्द रहे बहु छाय ॥
जहँ तहँ तिरिया न्योछावरि करि हर्षैं सुखद अशीषै पाय।
कंचनथारन महँ आरति सजि मंगल गानकरैं मनलाय ॥

स० आरत द्वन्द निकन्दन श्रीरघुनन्दनके शिर आरतिवारैं ।
याचक वृन्द बोलायघने धन देत अनन्दित वित्तबिसारैं ॥
बंदिकहै कहँलौं सुखसो मुखभाषत शेश महेशहु हारैं ।
आनँदकंदको आननचंद निहारैं अशेष निमेष न टारैं ॥

ताल अयोध्या तियनलिनी जनु रघुपति बिरहभानुसमलेखि ।
अस्त भये पर फिरि फूलीं सब पूरण चंद राम मुखदेखि ॥
होयँ शकुनशुभ बहुभांतिन के बजैं निशान नगर नभथान ।
पुरनर नारिन को सनाथ करि मुदभरि भवनचले भगवान ॥
प्रभु मन जान्यो अनुमान्यो यह हृदय लजानि केकयी रानि ।
प्रथम पधारे घर ताही के कीन प्रबोध भाषि मृदु बानि ॥
बिबिधभांति के सुखताको दै फिरि निजधाम गये श्री राम ।
मंदिर भीतर गे राघव जब तब सब लोग लह्यो बिश्राम ॥
द्विजन बुलायो पुनि वशिष्ठ मुनि तिनते वृत्तकह्यो समुझाय ।
आजु महूरत शुभ सुंदर दिन मंगल समय महा सुखदाय ॥
देहु सुआयसु हर्षि बिप्र सब बैठैं राज्य सिंहासन राम ।
मुनि वशिष्ठकी सुनि बानी इमि बिप्रन लह्योमोद अभिराम ॥
हर्षित बोले द्विज अनेक तब जग अभिराम राम अभिषेक ।
देर न कीजे करिदीजे मुनि जग हित यही एक भलटेक ॥
जहँ तहँ धावन दौराये बहु मंगल द्रव्यलीनि मँगवाय ।
पुनि मुनिनायक के पायँन महँ शीश सुमंत्र नवायो आय ॥
तब मुनि भाष्यो पुनि मंत्री से सो सुनि तुरत चले हर्षाय ।
स्यन्दन वृन्दन गज बाजी बहु देर न लागि सजाये जाय ॥
पुरी अयोध्या चौतर्फा ते अतिव मनोहर रची बनाय ।
देव वृन्द अति आनंदित ह्वै नभते रहे सुमन झरिलाय ॥
बोलि सेवकन प्रभु भाष्यो अस पहिले सखन न्हवावहु जाय ।
भरत हँकारे पुनि दायानिधि निजकर जटा दये सुरझाय ॥
तीनिउँ भाइनके उबटन कैं पुनि नहवाय दयानिधि राम ।

वस्त्र रेशमी पहिनाये तन अंगन सजे आभरण आय॥
प्रभु कोसलता भाग्य भरतकी कोटिन शेष सकैं नहिं गाय।
सो सुखआनँद वहि समया को मैं कस कहौं कौन मति पाय॥
जटा आपहू वेवराये प्रभु मुनि आदेश वेश पुनि पाय।
मज्जन करिकै पट अभरन तन साजे अतिव अनूपम लाय॥
वहि क्षण राघवकी शोभा लखि कोटिन कामगये सर्माय।
अंग अंग प्रति अति सुखमा की लागी हाटठाट जनुआय॥
सासुन सादर पुनि सीता को शुचि अस्नान दीन करवाय।
दिव्य आभरण अरु अंबर वर सजे बनाय अंगप्रति लाय॥
राम वामदिशिमहँ शोभित सो सुंदर रमा रूप गुणखानि।
लखिकै माता हर्षानी सब जीवन जन्म सुफल निज जानि॥
खगपति सुनिये त्यहि औसर पर शम्भु अजादि देव मुनिवृन्द।
चढ़ि चढ़ि यानन पर आये सब देखन रामचन्द सुखकन्द॥
प्रभुहि विलोकत मुनिनायकके मनमहँ बढ़्यो अतिव अनुराग।
माँग्यो तुरतहि सिंहासन वर भानु समान तेज ज्यहि जाग॥
माथ नायकै द्विज पायँन महँ बैठे सिया सहित रघुराय।
देखत हर्षे पुरवासी सब बर्षे सुमन देव समुदाय॥
बाँचैं भूसुर वेद मंत्र वर जय जय करैं देव मुनिवृन्द।
मच्यो कोलाहल पुर अंबर महँ राजा रामचन्द सुखकन्द॥
जौन महूरत महँ रघुपतिको भाषत वेद अवध अवतार।
त्यही योग महँ राज्यासनपर बैठे रमा रमण कर्तार॥
सबते पहिले मुनि वशिष्ठने कीन्ह्यो तिलक राम के माथ।
पुनि सब विप्रनको आयसु दिय तुमहूं धरौ नाथ शिरहाथ॥
सुतहि विलोकत महतारी सब अतिशै खुशी भईं खगराय।
करैं आरती आरतहरकी निवछावरैं देहिं धनलाय॥
दान अनेकन दिये द्विजन कहँ याचक सकल अयाचककीन।
राजा होतै रघुनंदन के कोउ न रह्यो जगत महँ दीन॥

त्रिभुवनपतिको सिंहासनपर लखि आसीन देव समुदाय।
घनेदमामे हने गगन महँ अतिमन मगन रहे गुणगाय॥
किन्नर गंध्रब स्वर छावत अति गावत मुदित मनोहर राग।
झुंड अप्सरनके नाचैं नभ परमानंद मानि बड़भाग॥
छत्र केकयी सुत लीन्हें कर पाछे मध्य भाग महँ ठाढ़।
लषण दाहिनी दिशि रघुपति के राजत चवँर गहे छबिबाढ़॥
जनक दुलारी के बाईं दिशि रिपुहन ब्यजन लिहे बिरराज।
धरे बिभीषण धनुतर्कस शर दहिने लषण लाल के भ्राज॥
अंगद राजत हैं बाईं दिशि करमहँ लिहे ढाल तरवारि।
शक्ति बिराजत श्रीहनुमत कर प्रभु दाहिने खड़े उरगारि॥
छुरा कटारा कपि नायक कर लीन्हे खड़े शोभ सरसात।
दधिमुख दर्पण लिये हाथ महँ राजत परम छटा छहरात॥
खड्ग सँभारे जामवंत कर लिहे सुषेण कृपाणहिं हाथ।
प्रभु के इक दिशि सोउ ठाढ़े हैं शोभा कहि न जाय खगनाथ॥
बेत हेममय युत मणियन ते जिन्हैं बिलोकि बिज्जु सरमानि।
द्विविद मयन्दा गंधमादनी खड़े गवाक्षलिये सोपानि॥
दल सहस्र के पांच कमल कल लीन्हें खड़े पांच बलवान।
पनस दरीमुख कुमुद नील नल शोभा सुभग करै को गान॥
इन्हैं छाँड़ि बहु अन्य पार्षद लीन्हे साज अनेकन ठाढ़।
रविकुल भूषण की अद्भुत छबि यहिबिधि लसत चारु बेबाढ़॥
रामचन्द्र के राज तिलक की सुखद समाज मनोहर साज।
बर्णत शारद अहिराजहु को लागत हृदय माँझ बड़िलाज॥
सो शोभा लखि मन हर्षित ह्वै सुरगण हृदय पाय बिश्राम।
न्यारी न्यारी करि अस्तुति पुनि मुद सह गये आपने धाम॥
भाटरूप धरि श्रुति आये तहँ जिन कर रूप बरणि ना जाय।
न्यारी न्यारी करि अस्तुति सोउ लागे खुशी करन रघुराय॥
पहिले गाये गुण राघव के सुन्दर सामवेद मन लाय।

मति सम भाषत सो बंदी द्विज जस कछु शास्त्र रहे बतलाय ॥
जय नृप भूषण दुख दूषण हर निर्गुण सगुण रूप श्रीराम।
महा प्रबल खल दशकंधर से भुज बल हने घने भगधाम ॥

स० भारअपार उधारनको औ सँहारनको खल दुर्मगगामी।
दासनको दुख टारन कारन धर्म प्रचारनको प्रभुनामी ॥
धारतहौ अवतार धरापर बंदिकहै कहँलौ गुणस्वामी।
जै शरणागतपाल दयाल सशक्ति नमामि नमामि नमामी ॥

यहिबिधि विनती सामवेद की सुनिकै मुदित भये भगवान।
यजुर्वेदहू तब बोलत भो करिकै स्वामि पगन महँ ध्यान ॥
अतिशै प्रबला तुव माया बश देव अदेव नाग नरआदि।
निशिदिन भर्मत जग दुर्मग महँ पूरित काल कर्म गुणबादि ॥

स० जीव चराचर यावत हैं जग देव अदेव नृदेव से नामी।
तेऊपरे तुवशक्ति के फंद भ्रमैं मतिमन्द सदैव सकामी ॥
बंदि दयाकरि देखहु जादिशि सो उबरै त्रयतापते स्वामी।
हे भववेदन छेदन दक्ष सुरक्ष हमैं प्रभु राम नमामी ॥

यजुर्वेद की सुनि अस्तुति इमि अतिव प्रसन्न भये रघुनाथ।
वेद अथर्वणहूं बोल्यो तब माथनवाय जोरि युग हाथ ॥
भक्ति तुम्हारी भयहारी जग जिन आदरी धरी नहिं माथ।
ते अभिमानी जड़ज्ञानी जन सुर पद पाय गिरत भुविनाथ ॥

स० देखतनित्त यहै हम कौतुक सौंतुकसो सपन्यो नहिं स्वामी।
जे तुवभक्ति न आनत चित्त औ ठानतबाद बृथाको हरामी ॥
ते अतिउच्च पदोपर जाय गिरैं अरराय धरासुरधामी।
बंदि प्रयास बिना तुवदास तरैं भवसो प्रभु राम नमामी ॥
जे पदपंकज शंकर औ अज धारिहिये रजनित्य यजाकरैं।
तारिदई जिन गौतमनारि जिन्हैं सुमिरे यमहू न सजाकरैं ॥

देवसरी जिनतेनिसरी ज्यहि मज्जनते अघओघकजाकैं।
ते पद द्वंद मुकुंद रमेश अनंदित बंदि हमेश भजाकैं॥

वेद अथर्वण इमि भाष्यो जब तब अति मुदित भये रघुराय।
ताके पीछे ऋग्वेदहु पुनि लाग्यो विनय करन गुणगाय॥
देखि न पावत जड़ जाकी कोउ वृत्त अनादि कहत सवगाय।
चारि त्वचाहैं त्यहि बिरवा महँ ताकर हाल सुनो मनलाय॥
चित्त बुद्धि मन अहंकार लै अन्तष्करण चतुष्टय भाय।
कोऊ इनहिंनको भाषतहै ताकी त्वचा चारि यइ आयँ॥

स० जाग्रतस्वप्न सुषोप्तितुरीय यईत्वयचारि त्वचा कोउगावत।
कोईकहै युगचारिहुको श्रुतिचारि कोई उरगारिवतावत॥
कोईकहै फलचारित्वचासोइचारिहुखानिकोई गोहरावत।
बंदियहीविधिते सबभाषत जाकेहियेजितनीमतिआवत॥

पुनि षटकंधा त्यहि पादप महँ ताकर हाल सुनौ खगराय।
कामादिक जे षट विकारहैं तिनको कोई रहे बतलाय॥

स० जन्म विवृद्धि विवर्णरु चीण जरा मरणादिकहै षटकोई।
शोणित मांस बसामदवीरज अस्थिलै कोई कहैषटओई॥
इन्द्रिय ज्ञान कि पांचहुलै मन संयुत कोईकहै षट सोई।
कोईकहैषटशास्त्र अहैं यहिभाँति यथा ज्यहिकी रुचिहोई॥

डारै पच्चिस त्यहि बिरवा महँ सोऊ कहौं बुद्धि अनुसार।
तत्व पचीसौ बतलावत कोउ कोउ अस्मृती करै निर्द्धार॥
तत्व पचीसौ हैं कौनी अरु कौनी तौन अस्मृती आहिं।
मति सम सोऊ कहि गावत हौं आवत जस बिचार मन माहिं॥
पांच तत्व महँ पांच पांच पुनि प्रकृती वेद बतावत और।
भई पचीसौ यहि प्रकार ते लेहैं जानि विबुध करि गौर॥
अत्रि विष्णु मनु याज्ञवल्क्य यम आपस्तंब अंगिरा व्यास।

दक्ष[9] बृहस्पति[10] कात्यायन[11] अरु उसना[12] शङ्खलिखित[13] लैखास ॥
पाराशर[14] अरु हारीतकलै[15] गौतम[16] अरु वशिष्ठ[17] बिख्यात।
संवर्तकलै अट्ठारह[18] ये शुचि अस्मृती गनाई जात ॥
पुनि आचारज उपासना के वेदन चारि कीन निर्द्धार।
शिव[19] चतुरानन[20] अहिनायक[21] अरु सनत्कुमार[22] सहित ये चार ॥
तिन चारिहु की सम्प्रदायलै बाइस भईं सुनौ खगराय।
त्रय आचारज ज्ञान पंथके शंकर[23] कपिल[24] व्यास[25] कहगाय ॥
तिन्हैं मिलाये पचीसौ ये वेदन कही अस्मृती गाय।
सोई शाखा यहि बिरवा की क्रम ते जानि लेहिं बुधभाय ॥
कर्म शुभाशुभ सो पत्ताहैं जगकी अमित बासना फूल।
दुख सुख मीठे कटु दोई फल जिनको देखि रह्यो सब भूल ॥
पुनि त्यहिं पादपके आश्रित ह्वै एक अकेलि बेलि लपटानि।
ताको माया कहि गावत कोउ कोऊ भाषि बतावत बानि ॥
परम प्रफुल्लित अरु पलुहत नित सदा नवीन परै दिखराय।
जग तरु रूपी तिन रघुपति कहँ करत प्रणाम माथ महिनाय ॥

स० ब्रह्म अद्वैत अनादि अनंत परे मनते अस जेजन बागैं।
ते तस जानहिं मानहिं नाथ हमैं तौ भले सगुणैं यशलागैं ॥
हे करुणावर सद्गुण आकर देहु दयाकै यहै बरमाँगैं।
बंदि बिहाय कुभाय सबै हम नाथ के पायँन में अनुरागैं ॥

सबके देखत महँ वेदन ने यहिविधि बिनती कीनि उदार।
अति आनन्दित अन्तर्हित ह्वै पुनि चलि गये ब्रह्म आगार ॥
तब शिवशंकर चलि आये तहँ राजत जहां राम भगवान।
गद्गद बाणी सों पुलकित तन अस्तुति करन लाग हरियान ॥
भवभय प्रशमन दमन जनापदि जै जै रमा रमन श्रीराम।
जै सुरनायक सब लायक प्रभु घायक कुमति कुगति भगधाम ॥
संतन शुभ गति जै लक्ष्मीपति आनँद कन्द भानु कुल चन्द।

दहे अनेकन शर पावक के चंड प्रचंड निशाचर वृन्द॥
मारि खबीशहि दशशीशहि प्रभु हस्यो अपार धराको भार।
दूरि कस्यो दुख सुर मुनियनको जै अवधेश विक्रमागार॥
सशर शरासन बर तर्कस धर जै श्रीरघुवर धराशिंगार।
मार हजारन धिरकारन तन धारन जै प्रभु प्रभा अपार॥
महामोह अरु मद ममता सब जानहु महा अँधेरी राति।
ताहि विनाशन को स्वामी तुम भानु समान तेज की पांति॥
मृग सम बिषयी शठ लोगन के हियमहँहनि कुभोगके बान।
काम भीलने संहारे बहु जे बन बिषय भ्रमत अज्ञान॥
रोग ग्रसित ह्वै मरि केतन्यों गे शोग बियोग कीन बहुनाश।
किये निरादर तुव पायँन को याही मिलत आश फलत्राश॥
जे जन राउर पद कंजन महँ करत न प्रेम क्षेम मनजानि।
ते नर डूबे भवसागरमहँ लहत न पार अगम दुखपानि॥
अतिव मलीने दुख दीने नित भोगत शोक सदा अकुलात।
जे जड़ राउर पद कंजन महँ करत न प्रीति प्रतीतिहि तात॥
तन मन बानी ते जिनके उर प्रभु की कथा प्राण आधार।
ममता काहू पर नाहीं है संतत करैं संतको प्यार॥
मान मदादिक रागदोष कछु आवत जासु हृदय महँ नाहिं।
दुख सुख विपदा अरु प्रभुताको मानत इक समान मनमाहिं॥
यहि ते सेवक तुव दायानिधि सबदिन सुखीरहत सबकाल।
योग भरोसा तजि याहीते मुनिजन तुम्हैं जपत जनपाल॥
शुद्ध चित्तह्वै नियमादिक ते राखत एक तुमहिं से प्रेम।
सब दिन सेवत पद कंजन कहँ रंजन गहत लहत ते क्षेम॥
मानि निरादर अरु आदर सम घूमत सदासुखी जगमाहिं।
मुनि मन पंकज के मधुकर प्रभु तुमको भजैं तजैं छणनाहिं॥

स० हे रणधीर अजै रघुवीर हरौ भवभीर यही वरपावौं।
नामजपौं तुम्हरो निशि बासर आनँदसों तुम्हरो गुणगावौं॥

बंदि सबै खटराग बिसारि खरारि के पायँन में लवलावों ।
ज्ञानमें ध्यानमें जान अजानमें एकसुजानहिंको उरध्यावों ॥

शील गुणाकर बर दायाघर तुवपग बार बार परणाम ।
दया दृष्टि से दिशि देखहु मम जन मनधाम करन श्रीराम ॥
यहि बर माँगौं बार बार मैं ह्वै अनुकूल देहु श्रीनाथ ।
दुर्लभ भक्ती निज पायँन की सब दिन संत जनन को साथ ॥
रामचंद्र के गुण बर्णन करि शिव सानंद गये कैलास ।
प्रभु दिलवायो तब कपियनको सब सुखरास बासनभवास ॥

इतिश्रीभार्गववंशावतंसश्रीमान्मुंशीनवलकिशोरात्मजस्यश्रीमुंशीप्रयाग नारायणस्याज्ञाभिगामीउन्नामप्रदेशान्तर्गतमसवासीग्रामनिवासीपंडि तनंदीदीनदीक्षितनिर्मितश्रीविजयराघवखण्डेउत्तरकाण्डेरामराज्य तिलकवर्णनोनामप्रथमोल्लासः १ ॥

---

श्री रघुनन्दन पद बन्दन करि गणपति गिरा गिरीशहिध्याय ।
कथा मनोहर सिय सोहर की मति सम कहत बंदि फिरिगाय ॥
कथासोहावनि सुनु खगपति यहपावनि सबप्रकार सुखदाय ॥
त्रिविध ताप भवदापनशावनि स्वावनिविषै जनितव्यवसाय ।
महाराज को राज तिलक शुभ सुनि नरलहैं विरति विज्ञान ॥
सुनैं सुनावैं जन पावैं ते सुख संपदा सुमति कल्यान ।
सुख सुर दुर्लभ करि दुनियाँ महँ आखिर राम धामकहँ जायँ ॥
होय कामना परिपूरण सब विभव बिलास नित्त अधिकायँ ।
सुनैं कथा यह जे बिमुक्तजन ते शुचि भक्ति लहैं जगमाहिं ॥
श्रवण करें जे बैरागी यहि पावैं सुगति तौन शकनाहिं ।
सुनैं कथा यह जे विषयीजन ते नित नये विभव को पाय ॥
सब सुख भोगै यहि दुनियाँ महँ आखिर देव सदनकहँ जाय ।
राम कथा में कहि गाई यह पाई यथा हृदय मति थाह ।

शुभमति करणी दुख हरणी सबत्रास विनास करनि खगनाह ॥
मोह नदी कहँ है तरणी सम भरनी भक्ति ज्ञान वैराग।
दारिद दरनी अनुसरनी सुख धरनी धर्म भार अनुराग ॥
नित्त नवीने सुख मंगल भल कौशलपुर महँ परैं दिखाय।
सर्व जातिके जन आनँद युत निशिदिन रहे राम गुणगाय ॥
प्रीति नई नित प्रभुपायँन महँ ध्यावत जिन्हैं शंभुअजआदि।
कौशलपुरको सुख देखत वह लागत इन्द्रभवन सुखबादि ॥
विविध भाँति के पहिनाये पट विप्रन दिये अनेकन दान।
किये अयाचक बहु याचक गण राजा रामचन्द्र भगवान ॥
महा मगन कपि ब्रह्मानँद महँ सबके हृदय स्वामि पदप्रीति।
जात न जाने निशि वासर तिन यहिविधि गये मासषटबीति ॥
भूले घरपुर सुधि स्वपन्यो नाहिं जिमि परद्रोह संत मनमाहिं।
सखा बुलाये तब राघव सब आये सकल शेष कोउ नाहिं ॥
माथ नवाये पद कंजन महँ सादर तिन्हैं विठाये राम।
कोमल वाणी सों बोले पुनि दीनदयाल दयाके धाम ॥
भारी सेवा तुम कीन्हीं मम मुख पर करौं बड़ाई काह।
ताते तुमसब म्वहिंप्यारे अति ममहित तज्यो भवनसुखचाह ॥
धन प्रभुताई प्रियभाई सिय नेही देह गेह परिवार।
तुमसम मोकहँ प्रियनाहीं कछु झूठ न कहौं कहौं सबसार ॥
आपन सेवक प्रिय सबहीको है यह नीति रीति जगमाहिं।
प्रेम हमारो बहु सेवकपर सबते अधिक रंच छलनाहिं ॥
जाहुसखा सब अब निजनिज घर मोकहँ भज्यो धारि दृढ़नेम।
सदा सर्वहितहै सबही महँ अस जिय जानि करयो अतिप्रेम ॥
भये मगन सबयत वानर गण सुनिकै कमल नैन के बैन।
को हमहैं कहँ घरभूले सब यकटक खरे भरे जल नैन ॥
कहि न सकैं कछु अनुरागे अति आगे सकल रामके ठाढ़।
परम प्रेम लखि तिन सबहीं को कीन प्रबोध स्वामि बेखाढ़ ॥

स्वामि सामुहें कछु भाषें ना पुनि पुनि लखैं कमल दल पायँ ।
प्रभु मँगवाये तब भूषण पट नाना रंग रहे छवि छाय ॥
प्रथम पिन्हायो कपिनायक को निजकर भरत वस्त्र शुभसाजि ।
प्रभु आयसुते लषण लाल पुनि पट लंकपहि पिन्हाये आजि ॥
रह्यो विराजो वहि ठाँवें पर डोल्यो नहीं बालि को लाल ।
प्रीति देखिके प्रभु तासों कछु बोले नहीं जानि लिय हाल ॥
जामवंत नल नीलादिक कहँ पट पहिराय दीन रघुनाथ ।
हिय धरि रघुपति पद पंकज सब गमने भवन नाय पदमाथ ॥
उठिकै अंगद शिरनायो तब नैनन नीर पूरि करजोरि ।
अतिव नम्रता युत बोले बच मानहुं परम प्रेम रस बोरि ॥
हे सुखसागर सुयश उजागर नागर प्रणत पाल भगवान् ।
आरत बंधव सत्प्रण संधव सुनिये बिनै मोरि धरि कान ॥
मरतीबेरा म्वहिं बाली प्रभु तुम्हरे कोंछ माहिं गो डारि ।
विरद आपनेको सुमिरणकरि म्वहिं जनि तजौ भक्त हितकारि ॥
मोरे तुमहीं गुरु माता पितु स्वामी छाँड़ि चरण कहँ जाउँ ।
एक शरण तजि रघुरायाकी मोकहँ कहुँ दिखात नहिंठाउँ ॥
तुमहीं भाषौ प्रभु बिचारिकै प्रभु तजि भवन काज मम काह ।
बुद्धिहीन अतिदीन निबल शिशु राखहु शरण जानि नरनाह ॥
राउर घरकी नीचिटहल सब करिहौं मन लगाय सब याम ।
लखि पदपंकज भवसागर यह तरिहौं बे प्रयास भगधाम ॥
अस कहि पायँनपर धरिकै शिर बोल्यो पाहि पाहि नरराय ।
अपने मुखते प्रभु भाषौ जनि अब यह दास भवन कहँ जाय ॥
कोमल बाणी सुनि अंगद की श्री रघुबीर हरन जन पीर ।
त्यहि उठायकै उरलाये प्रभु छाये कमल नैन महँ नीर ॥
आपन माला मणि अंबर बर जन. अंगदै दीन पहिराय ।
विदा कीन तब श्री करुणानिधि ताको बहु प्रकार समुझाय ॥
भरत शत्रुहन सह लक्ष्मण के भक्तहि करन हार चैतन्य ।

चले पठावन तिन बँदरन को जिन सम सुकृत मान नाहिं अन्य ॥
बढ़यो प्रेम बहु उर अंगद के फिर फिर तकत रामकी ओर।
मन अस राखैं प्रभु मो कहँ इत मम तन हेरि दया की कोर ॥
फिर फिर आवै पग नावै शिर अश्रु अपार बहावै नैन।
सुमिरि २ कै उर शोचत बहु प्रभुकी मिलनि बिलोकनि बैन ॥
पुनि प्रभु रुख लखि बहु बिनती करि गमन्यो हृदय कंज पद धारि।
पठै कपिन कहँ पुनि भाइन सह आये लौटि भरत उरगारि ॥
तब पद गहि कै कपिनायक के कीन्हीं बहुत बिनय हनुमान।
दिन दश सेवा करि रघुपतिकी पुनि तव चरण देखिहौं आन ॥
तब कपिनायक ने भाष्यो इमि हौ तुम पुण्यमान हनुमान।
मनक्रम बानी ते आनँद ह्वै सेवहु जाय राम भगवान ॥
असकहि बानर सब चलिभे तब अंगद नैन नीर बर्साय।
अंजनिसुत ते इमि भाषत भो सुनिये बिनय मोरि मनलाय ॥
कह्यो दंडवत रघुनायक ते ममहाति तुम्हैं कहौं करजोरि।
बार बार श्री प्रभु उदार ते कहि कै सुरति करायहु मोरि ॥
असकहि गमने युवराजौ तब आये लौटि अवध हनुमान।
प्रीति तासु की कहि भाष्यो कपि सो सुनि मगन भये भगवान ॥
कठिन बज्रहू ते बढ़ि कै अति फूलते अधिक नम्र दरशाय।
अस सुभाव श्री रघुनायक को काको समुझिपरै खगराय ॥
पुनि बोलवायो प्रभु निषाद को दीन प्रसाद बसन मणिहार।
जाहु भवन अब म्वाहिं सुमिरयो तहँ मनक्रमवचन धर्म अनुसार ॥
भाय भरत सम तुम प्यारे म्वाहिं सखा निषाद कहौं सतिभाव।
सदा सर्वदा मम नगरी महँ आवत जातरह्यो करि चाव ॥
बचन सुनत ते सुख उपजावहु पायँन परयो नैन भरि नीर।
जानि दुखी जन निज सेवक प्रभु म्वाहिं जनितग्यो रामरघुवीर ॥
धरि पद पंकज उर आयो घर यावत रहे कुटुम्बी लोग।
तिनते भाष्यो प्रभु स्वभाव कहि को अस स्वामि सराहन योग ॥

चरित अनूपम लखि राघवके पुरजन करैं सराहना भूरि।
स्ववश विलासी सुखरासी को जन हित सुयश सजीवनि मूरि॥
राम राज्य के बैठतही खन तीनों लोक गये हर्षाय।
शोक नशाये सुख छाये सब जहँ तहँ रहे सकल गुण गाय॥
करैं न रिपुता कोउ काहू सन राम प्रताप विषमता खोय।
सुमति प्रकाशी सब दुनियां महँ गे सब पाप ताप जनु सोय॥
वेद पंथ अरु निज धर्मन महँ युत सब वर्ण आश्रम भारि।
चलैं सुमारग महँ पावैं सुख नाहिं भय रोग शोग डरगारि॥
भयो न काहुहि राम राज्य महँ पाप त्रिताप दाप मुनिराय।
प्रीति परस्पर नर ठानैं सब उरते कपट भाव बिसराय॥
धर्म प्रपूरित जग चारिहु पग सुंदर सत्य शौच तपदान।
पाप न दरशै कहुँ स्वपन्यों महँ बरसै सुख सुभाग कल्यान॥
राम भक्तिरत नर नारी सब साधे सकल सुगति अधिकार।
अल्प मृत्यु नहिं कोइ पीड़ातन सुंदर विरुज रूप जनुमार॥
दुखी दरिद्री कोउ दर्शत नहिं सब मतिमान ज्ञान गुणखानि।
नाहिं पाखण्डी धर्मवान सब गुणी प्रवीन गहे कुलकानि॥
कपट सयानी नाहिं काहू महँ बोलत सबै मुलायम बानि।
तन धन संपति सों पूरे सब रूरे सर्व सुलक्षण जानि॥
राम राज महँ खगनायक सुनु यावत जीव अहैं जगमाहिं।
काल कर्म गुण अरु स्वभाव कृत काहुहि दुःख होत है नाहिं॥
यावत धरती लखि परती यह खगपति सात सिंधु पर्यन्त।
ताके राजा इक कौशलपति रघुपति बल अनंत भगवन्त॥
रोम रोम प्रति ज्यहि स्वामी के रहे अनेक भुवन तन छाय।
बहुत न प्रभुता कछुताको यह महिमा कहत बुद्धि सकुचाय॥
सोऊ महिमा प्रियजानी जिन तिनहूं यही चरित रतिमानि।
गाये गुण गण सगुण रूपके,भूप अनूप राम धनुपानि॥
सो जाने कर फल लीला यह गावैं कहैं महा मुनिराय।

शमदम साधन तप बाधनकरि रघुपति चरण रहत लवलाय ॥
राम राजको सुख संपति सब शारद शेष सकैं नहिं गाय ।
प्रजा सुखारी उपकारीपर बुद्धिउदार नारि नर भाय ॥
सेवक सांचे द्विज पायँन के सब दिन सदा मनो वचकाय ।
एक नारि ब्रत रत पूरुष सब पति हितकारि नारि खगराय ॥
चारि अंग हैं राजनीति के सो अस तहां परैं दिखराय ।
केवल दंडिनके हाथे महँ दंड विराजि रह्यो मुनिराय ॥
नृत्य करैयन की समाज महँ केवल भेद गाइबे माहिं ।
दाम जीतिबो इक मनहीं को और दिखाय परत कछुनाहिं ॥
ठाम ठाम महँ साम प्रपूरित जहँ लग रामचंद्रको राज ।
समता दरशै सब जीवन महँ नहिं विषमता केर तहँ काज ॥
भये सदाफर बन बिरवा सब फल दल फूल भार गरुआयँ ।
रहैं एकथल हरि हाथी तहँ बिचरैं बाघ गाय इक ठायँ ॥
सहज शत्रुता तजि खग मृग सब रहे परस्पर प्रीति बढ़ाय ।
निर्भय डोलैं बन जंगल महँ मंगल शब्द रहे सरसाय ॥

स० शीतल मन्द सुगन्ध समीर बहै मन पीर बहावन हारी ।
गुंजत पुंज मधूकर बृन्द अनंद भरे मकरंद विहारी ॥
बृक्षलता मधु देहिं कहे बिन भूमि झुकीं फलफूलसों डारी ।
धेनु श्रवैं मन भावत क्षीर अहीरनते दुहि जात न सारी ॥

सदा धान्य सों परि पूरित महि त्रेता सतयुग परै दिखाय ।
गिरिन दिखानी मणि खानी बहु जगदातमा भूपको पाय ॥
बहैं मनोहर जल नदिया सब शीतल अमल स्वादसुखदाय ।
गहे आपनी मर्यादा निधि तट बहु रतन जाहिं जनपाय ॥
कमल तड़ागन महँ फूले बहु नाना रंग रहे छवि छाय ।
आनँद दरशै दिशि दशहू महँ कहँलग कहौं गाय खगराय ॥
चन्द्रमयूषन सों पूरित महि सबितातपैं जितनहीं काज ।
बारिद माँगेते बरसैं जल राजा रामचंद्रके राज ॥

किये करोरिन अश्वमेध प्रभु विप्रन दिये अनेकन दान।
श्रुति मर्यादा के पालक बिभु घालक अति अनीति अज्ञान॥
धर्म भार धर यश उदार बर अमित अपार राज शिरताज।
गुण अरु कर्मन ते न्यारे तउ भोगत इन्द्र सरिस सुखभोग।
योग वियोग न उरजाके कछु कबहुंन जाहि रोग अरुशोग॥
शील सप्रीता महा विनीता सीता रानि रूप गुणखानि।
पति रुख राखे रहै सर्वदा सेवै सदा कर्म मन बानि॥
दास दासिनी घर यद्यपि बहु चतुर सुजान सेव विधिजान।
गिरिजा ताहू पर आपहि नित घरकी टहल करैं सुखमानि॥
ज्यहि प्रकार ते रामचंद्र प्रभु लहैं अनंद ढंग स्वइ ठानि।
नीकी बिधि ते सेवकाई करि चापैं चरण सरोरुह पानि॥
कौशल्यादिक सब सासुन की सेवाकरैं मान मद नाहिं।
आदि शक्ति ज्यहि श्रुति गावतहैं अचरज काह ताहियेआहिं॥
रमा भवानी ब्रह्मानी लौं जागे पगन नवावैं माथ।
स्ववश विहारी सिय प्यारी सो जगदम्बिका जानु खगनाथ॥
सदा सर्वदा सुरलावत मन जाकी दया दृष्टि की चाह।
विभव आपनो तजि सीता सो सेवत सदाशुद्ध चितनाह॥
भैया सबरे रघुरैया के सेवत चरण प्रेम सरसाय।
रहैं विलोकत प्रभु अंबुज मुख आयसु कछुक देहिं रघुराय॥
श्रीरघुराई निज भाइनपर अतिशै करैं प्रीति अरु प्यार।
सदा सर्वदा सिखलावैं श्रुति सम्मत नीति रीति अधिकार॥
रहैं अनंदित पुरवासी सब ग्वांसी चलैं बेद पथ चाल।
देवन दुर्लभ सुख भोगत सो भूलि न रोग शोग क्यहुकाल॥
अस अभिलाषा उर सबही के देवमनाय कहैं खगराय।
ज्यहि ज्यहि योनिनमहँ जनमैं हम तहँ उर राम प्रीति अधिकाय॥
दुइसुत जाये सिय माताने लवकुश श्रुति पुराण बिख्यात।
बिजयी बिनयी गुण मंदिर दुउ हरि प्रतिबिंब सरिस छबिगात॥

दुइ दुइ लरिका सब भाइन के प्रकटे रूप शील गुणधाम ।
जस प्रताप गुण उन बापन महँ तस आपहु सुलक्षण भाम ॥
पुत्र पियारे श्रीलक्ष्मणके अंगद चित्रकेतु बल ऐन ।
पुष्कल तक्षक पुत्र भरतके रिपुहनके सुबाहु श्रुति सेन ॥
माया मनगुण अरु इन्द्रिनते न्यारो ज्ञान गिराके पार ।
सच्चित् आनँद घन सोइप्रभु करत चरित्र देह नरधार ॥
सरयू मज्जन करि भोरहिते सज्जन सचिव द्विजन लै साथ ।
आय विराजैं नित संसदि महँ माथ नवाय गुरुहि रघुनाथ ॥
कथा मनोहर श्रुति पुराणकी बाँचैं श्रीवशिष्ठ मुनिराय ।
यद्यपि रघुपति हैं जानत सब तद्यपि सुनैं श्रवण मन लाय ॥
भोजन भाइन सह पावैं नित लखि सो लहैं मोद सब माय ।
गुण अपार इमि रघुनंदनके कहँ लगकहौं गाय खगराय ॥
भरत शत्रुहन दुउ भैया जब उपवन जाहिं पवनसुत संग ।
बैठि एक थल गुण राघव के पूंछैं भरि उमंग अँग अंग ॥
माति समभाषैं सो अंजनिसुत सुनि सुखपाय जायँ हर्षाय ।
फिरि २ विन्ती करि भाषैं अस हनुमत कहौ और कछुगाय ॥
कथा पुराणन की चर्चा बहु श्रीरघुनाथ गुणन की गाथ ।
सबके द्वारन आगारन महँ नित प्रति होय सुनहुँ खगनाथ ॥
परम प्रेमसे नरनारी सब प्रतिक्षण करैं रामगुणगान ।
निरत सदाहीं शुचिभावन महँ निशिदिन जातन पावहिंजान ॥
नगर अयोध्याके बासिन कर सुख संपदा समाज सुसाज ।
शेषहजारन कहि पावैं ना जहँ रघुराज राज बिरराज ॥
नारद आदिक सनकादिक मुनि देखन हेत राम भगवान ।
पुरीअयोध्या महँ आवैं नित छबिलखि हृदय लगत ललचान ॥
जटी अटारी मणि सुवरण सों ढारी गच अपार विस्तार ।
कोट मनोहर पुरचारिहु दिशि अति उत्तंग शृंग प्राकार ॥
चित्र अनूपम नवोग्रहनके जहँ तहँ रचे विचित्र बनाय ।

इन्द्रपुरी की शुचि शोभा सब मानहुं टिकी अवध महँ आय ॥
फ़टिक खँचाई अँगनाई बर गच अति रुचिर कांचमयभाजि ।
परम रुचिरता कहि गावै को देखत जाहिं मुनिन मन लाजि ॥
उच्च धाम अति नभ चूमत जनु घूमत ध्वज निशान फहरात ।
चंद्र सूर्यकी द्युति निंदत अस उज्ज्वल कलश चारुदरशात ॥
रचे झरोखे बहु मणियन सों नोखे एक तार छवि सार ।
दरशैं बरसैं बर सुखमा जनु निजकर खँचे अनोखे मार ॥
राजैं घर घर प्रति मणियन के चारु चिराग बिमल परकास ।
धरी देहरी बरविद्रुमकी जगमग खंभ मणिन को भास ॥
मर्कत मणिकी दीवालैं जनु रचे बिरंचि विचित्रागार ।
वज्र केवाँरे द्वार द्वार प्रति शोभा कहौं कहाँलग यार ॥
अतिव निराला चित्रशाला छबि आला रचीधाम प्रतिधाम ।
चरित अनूपम लिखे रामके मुनिमन लोभि जात लखिआम ॥
सघन लगाई फुलवाई भलि करि २ यत्न अनेकन भाँति ।
छाई ऋतुपालिकी शोभा शुभ फूले लता ललित तरु जाति ॥
मधुप मनोहर स्वर गुंजत बहु त्रिबिध बयारि बहत सुखदाय ।
लरिकन पाले बहु पच्छी तहँ बोलत मधुर मधुर स्वर छाय ॥
हंस कबूतर शिखि सारस गण बैठे द्वार अगारन माहिं ।
बिबिध कलोलैं करि बोलैं बर शोभा कही जात कछु नाहिं ॥
जहँ जहँ देखैं परिछाहीं निज नाचैं कूजि कूजि बहु भाँति ।
उड़ि २ बैठैं पुनि छज्जन पर इक दुइनहीं पाँति की पाँति ॥
बाल पढ़ावैं शुक मैनन कहँ बोलौ सिया रमण रघुनाथ ।
सब विधि सुन्दर राजद्वार अति निमनो बनो छटा के साथ ॥
बाट सुगंधन सों सींची भल साजे रुचिर हाट चौहाट ।
शोभा वरणत बनि आवै ना दरशैं बिबिध छटा के ठाट ॥
बैठ सराफा अरु बनियां बहु बिबिध बजाज राजिकी राजि ।
देखि संपदा तिन धनिकन की मन महँ जाहिं कोशपति लाजि ॥

मिलै बस्तु सब बिन दामन तहँ जो जन जौन करै मन चाह।
तहँकी संपति कहि गावै को जहँ पर रामचंद्र नरनाह॥
सरयू सरिता बहै उत्तर दिशि निर्मल नीर महा गंभीर।
घाट मनोहर हैं चारिहु दिशि बांधे रंच कीच नहिं तीर॥
घाट विस्तरित इक दूरीपर जहँ जलपियैं बाजि गज आन।
रचे मनोहर बहु पनिघट तहँ भूलि न करैं पुरुष असनान॥
राजघाट सब भांति मनोहर तहाँ नहायँ पुरुष सब जाति।
तीर २ पर सुर मंदिर बहु सुंदर छटा छलकि छहराति॥
तिनके चारिहु दिशि उपबन बन फूले फले भले छबि छाय।
कहुँ २ नदिया तट तपसीगण निवसे कसे योग महँकाय॥
तीर तीर पर तरु तुलसी के बहुतक मुनियन दये लगाय।
जाय न वरणी पुर शोभा कछु बाहर नगर परम रुचिराय॥
खिले नवीने बन उपवन सब भुमड़े भुके वाटिका बाग।
निर्मल जल सों परिपूरित लखि कूप तड़ाग उपज अनुराग॥
नाना रंगनके अंबुज कुल फूले मधुप करैं गुंजार।
जात हँकारैं जनु पथिकन कहँ इमि खग करत उछलेलकार॥
जहँ पर राजा हैं लक्ष्मीपति सो पुर वरणि कौन विधि जाय।
सब सुख संपति अणिमादिकसिधि भलकैरहीं अवधपुरछाय॥
जहँ तहँ रघुपति गुण गावैं नर आनँद मगन सदासब काल।
यहै सिखावैं सब आपुस महँ भजिये रामचंद्र जनपाल॥
शील सुघरता शुचि शोभा नय गुण नम्रता दयाके धाम।
जलजविलोचन दुखमोचन प्रभु दायक सुखअरामतनश्याम॥
चारु शरासन शर तर्कस धर सरसिज संत विपिनके भानु।
बीर धीर धर समर अमरबर बल घर अप्रमान द्युतिमान॥
काल कराल व्याल मारनको गरुड़ समान जौन बल धाम।
ममता मारक संहारक अघ प्रणवत तौन अरामद राम॥
लोभ मोह मद मृग यूथनको घातक जो किरात विख्यात।

काम मतंगम को केहरि सम जन सुखदात गात बल ब्रा
महा अँधेरा दुख संशय त्यहि नाशक रवि प्रकाश कर ज्ञा
जंगल राकस कुल जारन को प्रबल कृशानु सरिस द्युतिमा
सिय समेत त्यहि सिय स्वामी को कसना भजौ मूढ़मतिमं
आरत फंदन दुख द्वंदन के नाशक रामचंद्र सुखकं
जगत बासना मसा डांस सम पाला सरिस बिनाशक जौ
सदा एकरस अविनाशी अज कसना भजौ दयानिधि तौं
मुनि मन रंजन सदा निरंजन भंजन धराभार कर्ता
निर्बिकार सो अति उदार प्रभु कसना भजौ तजौ जग जा
यहि बिधि पुरके नर नारी सब निशि दिन करैं राम गुण गा
संतत सबपर आनंदित प्रभु दयानिधान राम भगवान

इतिश्रीभार्गववंशावतंसश्रीमान्मुंशीनवलकिशोरात्मजस्यश्रीमुंशीप्रया
नारायणस्याज्ञाभिगामीउन्नामप्रदेशान्तर्ग्गतमसवासीग्रामनिवासी
पंडितवंदीदीनदीक्षितनिर्मितश्रीविजयराघवखण्डेउत्तरकाण्डे
द्वितीयोल्लासः ॥ २ ॥

मुंशीनवलकिशोर ( सी, आई, ई ) के छापेखाने में छापागया

नवम्बर सन् १८९६ ई० ॥

यह काव्य भाषा टीका में बहुतही थोड़ी कीमत से
ह क्योंकि यह काव्य गान विद्या जाननेवालों तथा
षों और श्रीभगवद्भक्तों व संस्कृत विद्याके सीखने
र्थियों आदि इन सबको प्रियहै इस हेतु दो प्रकार
ालयमें यह पुस्तक छापीगई है एक तो भाषा टीका
संस्कृत टीका सम्मिलित ॥

## न्तप्रदीपिनी प्रथम भाग सटीक ॥

तकमें सैकड़ों दृष्टान्त बहुत उम्दा २ प्रमाणिक मय
के वर्णितहैं जो लोग भाषा तथा संस्कृतकी रामायण
आदि कथायें कहते हैं उनके पास तो यह पुस्तक
होना चाहिये इसके सिवाय अन्यभी महज्जन जिन
रुचि श्रीभगवत्सम्बन्धी कथाओंमें रहती है और पर-
रमभक्त कहातेहैं तथा होने की रुचिकरते हैं वहभी
ने से [illegible]ार्थ होंगे क्योंकि यह बहुतही अद्भुत ग्रंथहै
और भी बड़ा गुणहै कि कैसाही आलस्यहोवै अथवा
न्त मोह भ्रम होवै और इस पुस्तकके पांचछःसफा
ीघ्रही आलस्य छूटकर ईश्वरकी ओर भक्ति उत्पन्न